



MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ  
No. 37

GENERAL EDITOR: PROFESSOR HIRALAL JAIN



THE  
**MAHĀPURĀNA**  
OR  
TISATṬHIMAHĀPURISAGUNĀLAMKĀRA  
(A Jain Epic in Apabhramśa of the 10th Century)  
OF  
**PUSPADANTA**

Vol. I.

CRITICALLY EDITED BY

Dr. P. L. VAIDYA, M. A. (Cal.); D. Litt (Paris)

Professor of Sanskrit and Allied Languages

Nowrosjee Wadia College, Poona

Published by

MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ, BOMBAY

1937

Price Rs. Ten



Text (pages 1-592) Printed by Ganesh Kashinath Gokhale, Secretary, Shree Ganesh  
Printing Works, 596-97, Shanwar Peth, Poona 2, and the rest by Anant Vinayak  
Patwardhan, B. A., at the Āryabhūshan Press Poona, Peth Bhamburda, House  
No. 915/1, and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary, Manikohand  
Digambara Jaina Granthamālā, Hirabag, Girgaum, Bombay 4.

( ५११ )

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचितं  
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम  
अपभ्रंशभाषानिबद्धं

महापुराणम्

तस्यायं

आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाडियाकॅलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन

संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन

वैद्योपाह्वपरशुरामशर्मणा

संपादितः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३ ]

[ ख्रिस्ताब्दाः १९

मूल्यं दश रूपिकाः



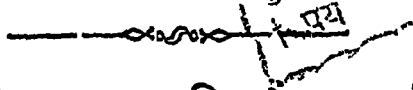
## TABLE OF CONTENTS

प्रकाशकका निवेदन ...	...	...	...	vii
INTRODUCTION ...	...	...	...	ix-xxxvi
Introductory ...	...	...	...	ix
The Critical Apparatus ...	...	...	...	x
The Praśasti Stanzas of the Mahāpurāṇa ...	...	...	...	xvi
Bharata, the patron of Puṣpadanta ...	...	...	...	xxviii
What is a Mahāpurāṇa ? ...	...	...	...	xxxii
Works on Sixty-three Great Men ...	...	...	...	xxxiv
Acknowledgment of obligations ...	...	...	...	xxxvi
ग्रन्थपरिचय ...	...	...	...	xxxvii-xlii
TEXT WITH CRITICAL APPARATUS AND FOOT-NOTES ...	...	...	...	१-५९०
NOTES. ...	...	...	...	593-662
Glossary of Important Prakrit Words ...	...	...	...	663
Addenda et Corrigenda ...	...	...	...	671

---



## प्रकाशकका निवेदन



अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो 'जैन-साहित्य-संशोधक' के जुलाई सन १९२३ के अंक में 'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्दर पं० हीरालाल जैन एम० ए०, एलएल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारंजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश-साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिह्वापर तो इस साहित्यकी सुललित सूक्तियाँ निरन्तर ही चृत्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकंडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आ गई और अर्थाभावेके कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी बिक्री इतनी कम है कि उसके भरोंसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना दरिद्र न रहने दे।

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है, जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस, सालंकार, सुपदन्यास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनाएँ घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितृप्त करती थी। परन्तु आज यह दशा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषायें इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बड़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। नाँम्बे, अलाहाबाद, बनारस और नागपुर यूनीवर्सिटियोंने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यको थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम्. ए., डी. लिट. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दरिद्र ग्रन्थमालाकी उन जैसे धुरंधर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही प्रो० हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा-सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

## INTRODUCTION

THE Mahāpurāṇa or Tisatthimahāpurisagūṇālamkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puṣpadanta in Apabhraṃśa. Of the two smaller works, the Jasaharacariu was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol. I, 1931. The Nāyakumāracariu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol. I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puṣpadanta's Mahāpurāṇa comprising the Adipurāṇa, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacariu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāṇa I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhraṃśa works of Puṣpadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Saṃdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Ādīparva or Ādīpurāṇa, and describes the lives of Rīśaha or Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth saṃdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining saṃdhis. Dr. Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāṇa under the title "Harivaṃśapurāṇa, Ein Abschnitt aus der Apabhraṃśa Welthistorie, Mahāpurāṇa Tisatthimahāpurisagūṇā-



lamkāra von Puṣpadanta, Hamburg, 1936", which contains saṁdhis S1-92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgarī characters and incorporated in the third volume, so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr. Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

The text of the entire Mahāpurāna will cover approximately 2000 pages of the royal size, of which the present volume contains 600. It is clear that the whole of the Mahāpurāna could not be conveniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only, reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover, Introductions to Jaśaharacariu and Nāyakumārariu already contain some information about the author, the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

### THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Adipurāna or of the present volume of the Mahāpurāna is based upon the following five Mss. fully collated.

1. G. This Ms. consists of 503 leaves measuring 11" × 5". It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written at Ghoghā Mandir, is dated 1575 of the Saṁvat era, or 1441 of the Saka era, corresponding to 1518 A. D. It uses pṛsthamaṭrās and has brief marginal gloss. It is a well-preserved Ms., belongs to the Balātkāra Gana Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins:—॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूणरज्जु etc., and ends:—  
 उय महापुराणे तिसष्टिमहापुरित्तगुणालंकारे महाकड्डुष्कयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे सगण-  
 हरत्तिहणाहमहणिव्याणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥ आइयं पव्वं समत्तं ॥ शुभं  
 भवतु संघस्स ॥ स्वस्ति श्रीं सं० १५७५ वर्षे शाके १२२१ प्र० दक्षिणायने ग्रीष्मकृतौ द्वि...ष्टवदि ७  
 र्तो घोघामंदिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्यनंदिदेवाः  
 तस्तटे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ०  
 श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनीश्रीनेमिचंद्र । देशावूवडज्ञातीयगांधी श्रीपति तस्यांगना वाई समू तयोः पुत्र  
 गांधी ऋषभा गांधी नाना । तेषा मध्ये वा० समू तथा लिखाप्य प्रदत्तमिदमादिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमि-  
 चंद्रेभ्यः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ग्रं० ८००० ॥ भ० लक्ष्मीचंद्रेभ्यः प्रदत्तं ॥ चिरं नंदतु ॥  
 शुभं भवतु ॥

This is one of the best and the most authentic of the Mss. of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2. K. This is a paper Ms. containing 732 pages measuring 16" × 4". Of these 732 pages, 288 are covered by the *Ādipurāṇa* or *Ādiparva* as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of *pr̥sthāmātrās* is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms. from which this Ms. may have been copied. I secured this Ms. through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur. It begins:—  
॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and the *Ādipurāṇa* portion ends:—  
इय महापुराणे तिसद्विमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरइए महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे सगण-  
हरिसहनाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्वं समत्तं ॥ It adds in  
a different hand : म० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे म० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे म०  
श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तकं ॥ The *Uttarapurāṇa* portion ends:—इय महापुराणे तिसद्वि-  
महापुरिसगुणालंकारे महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमणं णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाणं  
महापुराणं समत्तं ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं ॥ श्लोकसंख्या २०००० (!) ॥ शुभं भवतु ॥ We find on  
the final blank leaf :—म० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे  
म० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तकं ॥ It adds further in a different hand : म० श्रीवादि-  
चंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमहीचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमेरुचंद्राणां पुस्तकं ॥

The entire work seems to be written in one hand ; in fact this is the only Ms. of the whole of the *Mahāpurāṇa*, i. e., *Ādipurāṇa* and *Uttarapurāṇa*, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms. seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss., in a different hand. This Ms. thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the *Tippaṇa*

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms. although its original, probably a palm-leaf Ms., represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 170 leaves measuring 11" × 4½". It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Samvat era, i. e. in 1826 A. D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K. or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1050 of 1887-91. It begins:—ओं नमो वीतगगाय ॥ सिद्धिवद्मणरज्जु etc., and ends:—  
इय महापुराणे तिसष्टिमहापुरिसिगुणालंकारे महाकण्डपुष्कयंतविरुद्दे महाभयभरहाणुमणिए महाकण्डे सगणहरिसहनाहभरहनिव्वाणगमणं णाम सत्तनीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ संवत् १८८३ का  
मितीवैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे ॥ शुभ भद्रतु ॥ लिपिनं श्रीमयुगपरिणये जायते न्यामन्त्यात् ॥ श्रीजिनधर्म-  
प्रतिपालक श्रीमहाराजाधिराजश्रीकुमारजी चंपारामजी पठनाय ना परोषकार्य ॥ शुभ देवांशुभयनि  
पुत्रवृद्धिर्भवति ॥ श्रीजिनधर्मप्रवर्तन करानि ॥ श्री आदिनायेभ्यो नमः ॥ समाप्तोयं आदिपुराणः ॥ गुणं ॥

4. B. This Ms consists of 306 leaves measuring 11" × 5". It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line. It belongs to the Balātkāra Ganā Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 523 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jam of Amraoti. It was written at Yoginīpura, i. e., Dehli, in 1659 of the Samvat era, i. e., 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins —ओं नमो वीतगगाय ॥ सिद्धिवद्मणरज्जु etc., and ends:—  
इय महापुराणे तिसष्टिमहापुरिसिगुणालंकारे महाकण्डपुष्कयंतविरुद्दे महाभयभरहाणुमणिए महाकण्डे सगण-  
हरिसहनाहभरहनिव्वाणगमणं णाम सत्तनीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ आदिपुराण संद्वयेन  
जात ॥ श्लोकमानेनाष्टसहस्राणि अंकतो ग्रथ ८००० ॥ अक्षरमात्रपदरहीन व्यंजनमधिविधिवर्जितरेकं ॥  
साधुभिरेव मम क्षमितव्यं को न विमुच्यति शास्त्रसमुद्रे ॥ योगिनीपुरदुर्गस्थाने जलालदीनसाहिअकबर-

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६५९ पौषसुदि ४ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिंघक्रीर्तिदेवा.....

5. P. This Ms. is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measuring  $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ . It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms., edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The *pr̥sthamātrās* are used. The available portion ends with a part of the third *kaḍavaka* of the 28th *saṃdhi* (see foot-note 8 on this *kaḍavaka* on page 433 of our edition). This Ms. preserves a recension which is metrically correct, i. e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पणवेवि where पणविवि represents the metrically correct form. It begins:—स्वस्ति ॥ ओं नमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूणरंजणु etc., and ends with चामर° in XXVIII. 3. 11.

In addition to these five Mss. fully collated, I came across three more Mss. of the *Ādipurāna*. Of these one is deposited in the Sena Gaṇa Mandir at Kāranjā, (No. 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss. in C. P. & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms. was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhaṭṭāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the *Samvata* era, i. e., 1534 A. D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss. belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No. 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 *saṃdhis* only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyēṣṭha of 1848 of the *Samvata* era, i. e., 1791 A. D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms. from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891-95. It is dated Wednesday, the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Samvat era. i. e., 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen samdhis. The second part contains 177 leaves which are numbered from 1 to 177, and not from 143. The third part contains the remaining 33 pages, numbered from 178, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P, and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Tippana of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I Secured a Ms. of this Tippana on the Adipurāna portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 563 of 1876-77. This Ms. measures  $13\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like द्वितीय are written like द्विनाय. There is no indication as to its age, but from appearance it seems to belong to the 16th century A. D. It begins:—ओ णमो वीतरागाय ॥ प्रणम्य वीरं विबुधेन्द्रसंस्तुतं निरस्तदोष वृषभ महोदयम् । पदार्थसंदिग्धजनप्रबोधकं महापुराणस्य करोमि टिप्पणम् ॥ १ ॥ सिद्धीत्यादि सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिः सैव वधूस्तस्या मनोरञ्जनश्रित्तरञ्जकः . It ends:—इति सप्तत्रिंशत्तमसंधि समाप्ताः ॥ समस्तसंदेहहरं मनोहरं प्रकृष्टपुण्यं प्रभवं जिनेश्वरम् । कृतं पुराणे प्रथमे सुटिप्पणं सुखावबोधं निखिलार्थदर्पणम् ॥ इति श्रीप्रभाचन्द्रविरचितमादिपुराणटिप्पणकं पंचासश्लोकहीणं सहश्रद्धयपरिमाणं परिसमाप्ता ॥ शुभं भवतु ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Tippana on the Uttara-purāna which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sanghi of Jaipore. This Ms. measures  $12'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 57 leaves with 13 lines to a page and about 31 letters to a line. It begins:—ओं नमः सिद्धेश्वर्यः ॥ बंभहो परमात्मनः . It ends:—श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणा-मशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धान्तान् परिज्ञाय मूलटिप्पणका चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं अज्ञातात्मीतेन श्रीमद्वला...रगणश्रीसंघाचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डा-भिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचंद्राचार्यविरचितं

समाप्तम् ॥ अथ संवत्सरोस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवास्तुदि । बुद्धदिने । कुरुजांगलदेसे । सुलितानसिकंदरपुत्रु सुलितानब्राह्मि राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे । भट्टारकश्रीगुणभद्रसूरिदेवाः । तदाम्नाये जैसवाल्लु चौ. टोडरमल्लु । इदं उत्तरपुराणटीका लिखापितं ॥ सुभं भवतु ॥ मांगल्यं ददाति लेखकपाठकयोः ॥ This Ms. is dated Samvat 1575, i. e. 1578 A. D.

On examining the colophon of the author of the Tippiṇa we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tippiṇa was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D., i. e., within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puṣpadanta ; we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva ; that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippiṇa ; that he also consulted the original Tippiṇa, probably of Puṣpadanta himself ( मूलटिप्पणकां चालोक्य ), and prepared a collected Tippiṇa ( समुच्चयटिप्पणं ) on the Mahāpurāṇa, embodying the original Tippiṇa. An author's writing a Tippiṇa on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible ; for I had an occasion to examine Mss. written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puṣpadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work ; this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss. of our text is not identical with the Tippiṇa of Prabhācandra, but is one which is either abridged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction ( LXIII—LXIV ) to the Nāyakumārācariu refers to the colophon of a Ms. of the Tippiṇa of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā ( circa 1055 A. D. ) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D. and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms. of the Tippiṇa again does not contain the stanza तत्त्वाधारमहापुराण etc. Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasimhadeva.

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P, not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the Praśasti stanzas found at the beginning of several samdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu (page 21), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

#### THE PRAŚASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀṆA \*

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a samdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna, while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these praśasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the praśasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator, who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these praśasti stanzas, and was forced to advance a hypothesis that the poet himself, with the help he obtained from his patron, must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote, at leisure, at first in the margin perhaps, some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

---

\* Some of the Praśasti stanzas are put together, by Pandit Nathuram Premi in his article on Puṣpadanta in Jain Sūhitya Saṁśodhaka, Vol II No I 1923

page 21 of the Introduction to *Jasaharacariu*, enabled me then to fix up that Mss. S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the *Prasasti* stanzas of the *Mahapurāṇa*, viz.,

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं

मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।

धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं

केदानी वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the *Mahapurāṇa*, in as much as the plunder of *Mānyakheta*, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the *Kāranjā* Ms. at the beginning of the 50th *saṃdhi*, while the completion of the *Mahapurāṇa* in the *Krodhana* year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms. K. This fact coupled with the absence of *prasasti* stanzas in my best Mss. of the *Jasaharacariu* enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of *Mahapurāṇa* Mss. fully corroborates. The *Nāyakumāracariu* of *Puspadanta*, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any *prasasti* stanzas in any of his Mss., and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the *prasasti* stanzas occurring at the beginning of the *saṃdhis* of the *Mahapurāṇa*. I have not so far discovered a Ms. of the *Mahapurāṇa* which has no *prasasti* stanzas : at the same time I have found that Mss. do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss. G and K of the *Ādipurāṇa*, while the remaining Mss. gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the *Ādipurāṇa*. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the *Critical Apparatus*. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying *Bharata* to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas



long after he had completed the composition of the Mahāpurāna. At any rate the stanza दीनानाथधनं etc. he could not have written before 972 A. D., i. e., seven years after the completion of the Mahāpurāna. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e., (a) those found in G and K ; (b) those found in other Mss. of the Ādipurāna ; (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarapurāna portion ; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms.. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section.

- (a) 1. ( i ) आदित्योदयपर्वतादुरुतराच्चन्द्रार्कचूडामणे-  
 रा हेमाचलतः कुशेशानिलयादा सेतुबन्वाद् दृढात् ।  
 आ पातालतलादहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
 कीर्तियस्य न वेद्मि भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khaṇḍa, i. e., the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd samdhi in G and K, but at the beginning of the 2nd samdhi in the remaining Mss. ( See foot-note on page 18 and also note the variants ).

2. ( ii ) सोभाग्यं शुचिता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दर  
 सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
 हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-  
 स्यैकैकं गुणमङ्गमूर्जितधिया पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet's patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth samdhi.

3. ( iii ) धूलिला त्यज मुञ्च संगतकुचद्वन्द्वदिकं वक्षसा  
 मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिका तन्वाङ्गि कामाहता ।  
 मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्वन्धुगुणैरुन्नतः  
 स्वप्नेऽप्येव पराङ्गना न भरतः शौचोद्विवाञ्छति ॥

This stanza states that Bharata, the poet's friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th samdhi in G and K,

and in other Mss. also at the same place. (See footnote on page 72 and also note the variants).

4. ( iv ) एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः  
 एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।  
 एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां  
 द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth samdhi, but in all others at the beginning of the 9th samdhi.

5. ( v ) जगं रम्मं हम्मं दीवओ चन्दबिम्बं  
 धरिती पल्लंको दो वि हन्था सुवन्थं ।  
 पिया णिद्दा णिच्चं कव्वकीला विणोओ  
 अदीणत्तं चित्तं ईसरो पुष्पदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puspadanta is a king in as much as he has the nobility of mind : the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss. at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth samdhi of the Uttarapurāna in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss.

6. ( vi ) णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।  
 सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वार्हसी ॥
7. ( vii ) तन्त्रीवाद्यैरानिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः  
 कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।  
 काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यद्य विद्याप्रियो गां  
 सोऽयं ससारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puspadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th samdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th samdhi.

8. (viii) प्रतिगृहमटति यथेष्टं वन्दिजनैः स्वैरसङ्गमावसति ।  
भरतस्य बह्वभासौ कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however, strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned praśasti stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by a general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further, the fact that the number of praśasti stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Ms. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss., one from the Sena Gaṇa Bhāṇḍāra at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the Praśasti stanzas, (i) and (iii-viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

- (b) 9 ( i ) बलिजीमूतदधीचिपु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।  
संप्रत्यनन्यगतिः कस्यागुणो भरतमावसति ॥

( Found at the beginning of the third samdhi ).

## INTRODUCTION

10. ( ii ) आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनाऽतिशयः  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

( Found at the beginning of the fourth samdhi ).

11. ( iii ) श्रीवाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।  
भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

( Found at the beginning of the sixth samdhi ).

12. ( iv ) हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता  
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।  
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवल्यशोधौतधात्रीतलान्तः  
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

( Found at the beginning of the seventh samdhi ).

13. ( v ) मातर्वसुंधरि कुतूहलिनो ममैत-  
दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।  
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी  
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

( Found at the beginning of the eighth samdhi ).

14. ( vi ) सूर्यात्तेज ( ? ) गर्भारिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः  
सौम्यत्वं कुसुमायुधात्सुभगतां त्यागं बलेः संभ्रमान् ।  
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डः ( ? ) कवेर्वल्लभः ॥

( Found at the beginning of the eleventh samdhi ).

15. ( vii ) तीव्रापद्धिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

( Found at the beginning of the thirteenth samdhi and also  
at the beginning of the thirty-fourth samdhi ).

16. ( viii ) केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउगिण्णदन्तङ्कुरोहा  
सेसाहीबद्धमूला जलहिजलसमुब्भूयपिण्डरिवत्ता ।

वम्भण्डे विथरन्ती अमयरसमयं चन्दबिम्बं फलन्ती  
फुल्लन्ती तारओहं जयह नवलया तुङ्ग भरहेस किती ॥

( Found at the beginning of the fourteenth samdhi ).

17. ( ix ) त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्गुरोच्छेदनं  
कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।  
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेम्णोऽन्तरां निर्वृतिं  
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्बल भवेत्काभिर्गिरा सूक्तिभिः ॥

( Found at the beginning of the fifteenth samdhi. It is also found at the beginning of the 95th samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

18. ( x ) वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।  
अत्यन्तवृद्धिगतमपि भुवनं वि ( बं ? ) भ्रमति तच्चित्रम् ॥

( Found at the beginning of the seventeenth samdhi. It is also found at the beginning of the 102nd samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

19. ( xi ) शशधरविम्बात्कान्तिस्तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।  
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

( Found at the beginning of the eighteenth samdhi. It is also found at the beginning of the thirty-ninth samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

20. ( xii ) श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।  
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामारुतिमुपेतः ॥

( Found at the beginning of the nineteenth samdhi ).

21. ( xiii ) फणिनि विमुह्यतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-  
मलकिपु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।  
मद्मुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खङ्गणे ( ? ) ॥

( Found at the beginning of the twentieth samdhi ).

22. ( xiv ) यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि  
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरसि सदा विराजते ।

## INTRODUCTION

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुस्रमयममलमङ्गलः ॥

( Found at the beginning of the twenty-first sandhi ).

23. ( xv ) मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना  
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।  
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा  
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

( Found at the beginning of the twenty-second sandhi ).

24. ( xvi ) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुन्बकर्णिकं  
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।  
विलसदनुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-third sandhi ).

25. ( xvii ) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं  
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसंकरे ।  
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-  
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fourth sandhi ).

26. ( xviii ) उन्नतातिमनुमात्रपात्रता ( १ ) भाति भद्र भरतस्य भूतले ।  
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fifth sandhi ).

27. ( xix ) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्धमताम् ।  
गणनव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

( Found at the beginning of the twenty-sixth sandhi ).

28. ( xx ) गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितरुष्णार्जुनगुणोपेतम् ।  
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-  
seventh sandhis ).

29. (xxi) मुखनलिनोदरसदानि गुणधृतहृदया सदैव यद्वसति ।  
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥

( Found at the beginning of the twenty-eighth samdhi ).

30. (xxii) बम्भण्डाहण्डलस्रोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।  
सण्डेण समं समसीसियाइ कइणो न लज्जन्ति ॥

( Found at the beginning of the thirty-second samdhi ).

31. (xxiii) विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुपि क्रमेण ।  
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥

( Found at the beginning of the thirty-third samdhi. It is also found at the beginning of the fortieth samdhi of the Uttarapurāna in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K ).

32. (xxiv) इति भरतस्य जिनेश्वरसमयैकशिरोमणेर्गुणान्वक्तुम् ॥  
मातुं च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

( Found at the beginning of the thirty-fifth samdhi )

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss., one from Sena Gaṇa Bhāṇḍāra at Kāranjā and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Ādipurāna portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāna, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the Uttarapurāna also. Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāna is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gaṇa Bhāṇḍāra at Kāranjā. On examination I found that Poona and Kāranjā Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th samdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different samdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

## INTRODUCTION

- (c) 33. ( i ) वरमकरोदपारतरविवरमहिकिरणेन्दुमण्डलं  
यदपि च जलधिवलयमधिलंघ्य विधेस्तदन्तरं दिशः ।  
विगलितजलपयोदपटलद्युनि कथमिदमन्यथा यशः  
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत साप्रतम् ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 41st and the 47th samdhis. The Jaipore Ms. has it only at the 41st. K does not give it anywhere ).

34. ( ii ) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यत्राम तन्मङ्गलं  
सर्वस्यापि गुरुर्बुधः कविरयं चक्रे अयं च ( ? ) क्रमः ।  
राहुः केतुरयं द्विषामिति दधत्साम्यं ग्रहाणां प्रभुः  
सप्रत्योदय ( ? ) मातनोति भरतः सर्वस्य तेजोधिकः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 50th along with two following and जगं रम्भं हम्भं etc. ( see stanza 5 above ). The Jaipore Ms. gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere ).

35. ( iii ) सया सन्तो वेसो भूषणं सुद्वसीलं  
सुसंतुष्टं चित्तं सव्वजीविसु मेत्ती ।  
मुहे दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो  
अहो खण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, the Jaipore Ms. gives it at 49th, and K does not give it anywhere ).

36. ( iv ) दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं  
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।  
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं  
कैदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere ).

37. ( v ) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-  
मर्थालंकरणयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।  
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते  
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 59th samdhi ).



38. ( vi ) बन्धुः सौजन्यवार्धेः कविकुलधिषणाध्वान्तविध्वंसभानुः  
प्रौढालकारसारामलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।  
वक्त्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहर्षाव भाति  
प्रोद्यद्गम्भीरभावा स जयति भरते धार्मिके पुष्पदन्तः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd samdhi ).

39. ( vii ) आसृण्डोडुमरारवं उमरुं चण्डीशमाश्रित्य यः  
कुर्वन् काममकाण्डताण्डवविधिं डिण्डीरपिण्डच्छवेः ।  
हंसाडम्बराडिण्डमण्डलसद्गागीरधीनायकं  
वाञ्छन्नित्थमह कुतूहलवती स्रण्डस्य कीर्तिः रुनेः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th samdhi ).

40. ( viii ) आजन्मं ( ? ) कवितारसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरां  
दृश्यन्ते कवयो विशालसकलग्रन्थानुगा बोधतः ।  
किं तु प्रौढनिरूढगूढमतिना श्रिपुष्पदन्तेन भोः  
साम्यं विध्रति ( ? ) नैव जातु कविता शीघ्रं ततः प्राकृते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th samdhi ).

41. ( ix ) यस्येह कुन्दामलचन्द्रोचिःसमानकीर्तिः ककुभा मुत्तानि ।  
प्रसाधयन्ती ननु बंध्रमीति जयत्वसौ श्रीभरतो नितान्तम् ॥

42. ( x ) पीयूषसूतिकिरणा हरहासहार-  
कुन्दप्रसूनसुरतीरिणिशक्रनागाः ।  
क्षीरोदशेषबलसत्तम ( ? ) हंस ( ? ) चैव  
किं स्रण्डकाव्यधवला भरतः स यूयम् ( ? ) ॥

( Both these stanzas are found in all the four Mss. at the beginning of the 66th samdhi. )

43. ( xi ) इह पठितमुदारं वाचकैर्गीयमानं  
इह लिखितमजस्रं लेखकैश्चारु काव्यम् ।  
गतवति कविमित्रे मित्रता पुष्पदन्ते  
भरत तव गृहेऽस्मिन् भाति विद्याविनोदः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th samdhi ).

44. ( xii ) चञ्चच्चन्द्रमरीचिचञ्चुरचुराचातुर्यचक्रोचिता  
चञ्चन्ती विचटञ्चमत्कतिकविः प्रोद्दामकाव्यक्रियाम् ।  
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया बान्धुर्यधुर्या रसैः  
खण्डस्यैव महाकवेः सभरतान्नित्यं कृतिः शोभते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th samdhi ).

45. ( xiii ) लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णाकुले नीरसे  
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।  
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रतं  
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 80th samdhi ).

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

- (d) 46. ( i ) सौख्यं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः  
सञ्ज्योतिर्मणिराकरो पुत्र इवानर्घ्यो गुणैर्भासिते ।  
वंशो येन पवित्रतामिह महामन्त्राह्वयः प्राप्तवान्  
श्रीमद्वल्लभराज— कटके यश्चाभवन्नायकः ॥

( Found at the beginning of the 42nd samdhi ).

47. ( ii ) वापीकूपतडागजैनवसतीस्थित्वेह यत्कारितं  
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं सुराणां ( पुराणं ? ) महत् ।  
तत्कृत्वा पूवमुत्तमं रविकृतिः ( ? ) संसारवार्धेः सुखं  
कोऽन्यत् ( ? ) स्रसहसो ( ? ) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहते ॥

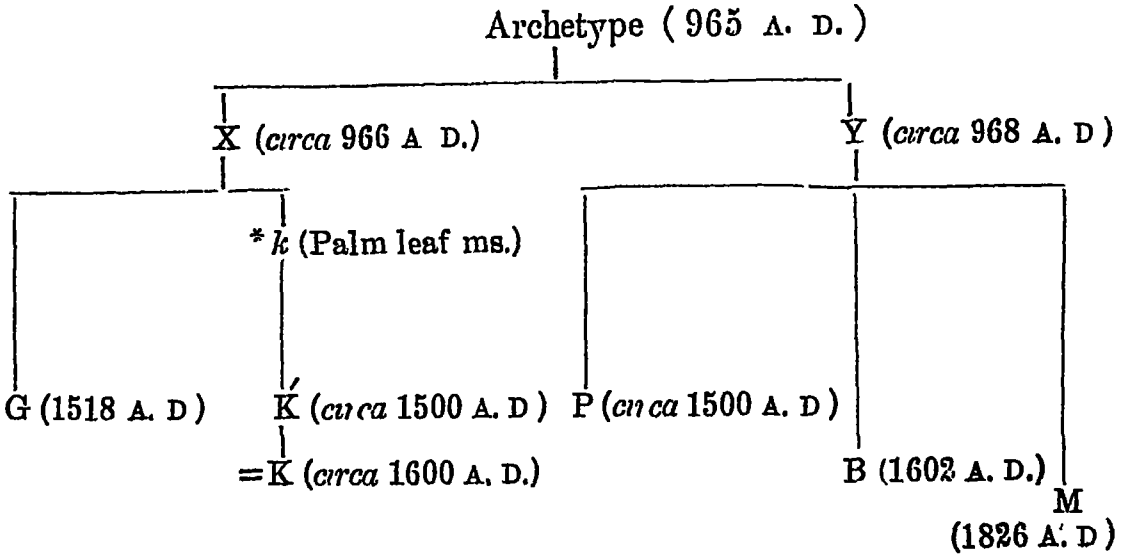
( Found at the beginning of the 45th samdhi ).

48. ( iii ) संजुडियजाणुकोप्परगीवाऋडिचन्धणावयवो ।  
अणुहवह वोरियं तुज्ज जं पावइ लेहओ दुक्खं ॥

( Found at the beginning of the 58th samdhi ).

It will be seen from the account of these praśasti stanzas that even the Uttarapurāna Mss. preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss. the middle and the Jaipore Ms. the youngest. Leaving the question of the genealogy

of the Mss. of the Uttarapurāṇa for the time being, I present below in genealogical form the relation of the different Mss. of the Ādipurāṇa :—



### BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss. of the Mahāpurāṇa. Of these stanzas, six, viz, 5, 6, 16, 30, 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often ( e. g. चोज्जं in 29 ). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning ( चार्द्धी, 6 ) and Ambikā ( 23 ), the poet Puspādanta himself ( 5, 30, 36, 39, 40, 45 ), the poet and his Mahāpurāṇa ( 37 ), the relation between Bharata, the patron, and the poet ( 1, 4, 14, 26, 35, 37, 38, 42, 43, 44 ), and the glorification of Bharata, the poet's patron ( remaining stanzas ). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work ( I. 3-8 ; XXXVII. 3-5 ; CII. 13 ) and also in the Ghattā lines and the puspikā at the end of each samdhi ( महाभक्वभरद्वाणमणिए महाकृवे ) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jasaharacariu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office ; and a long praśasti at the end of the Nāyakumārācariu ( page 112 ) gives some details about the same. On the strength of the information supplied by these it is possible to construct a short biography of Bharata to whose generosity the world owes this epic poem in Apabhramśa.

\* The asterics indicate conjectural Mss

We have now an excellent account of the *Rāṣṭrakūṭas and their Times* by Dr. A. S. Altekar ( Poona, 1934 ). We find that a few pages ( 115-123 ) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III ( 939-968 A. D. ). We also have there a section dealing with education and literature ( Chapter xiv ) of the period. And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet. On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period. Puṣpadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhramśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts. It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references, in the works of Puṣpadanta and the praśasti stanzas.

Kṛṣṇa III is known in Puṣpadanta's works by three names : Tuḍiga, Suhatuṅgarāya ( Sk. Subhatuṅgarāja ) and Vallabhanrpa. He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva. It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāṣṭrakūṭas, was plundered by the king of Dhārā. Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III. Bharata however was still living when Puṣpadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write Jasaharacariu and Nāyakumāracariu.

Bharata seems to have come from the family of Koṇḍella gotra ( Sk. Kaunḍiṅya ). This was a rich family and held the office of ministers ( महामन्त्राह्वयः वंशः, 46 ), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master ( संतानक्रमतो गतापि हि रमा रुष्टा प्रभोः सेवया ). His grandfather's name was Annaiya or Annayya. His

father's name was Aiyana or Airana and his mother was called Devi. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहितेन, 15). He was married to Kundavvā and had seven sons, viz., Devalla, Bhogalla, Nanna, Sohana, Gunavamma, Dangaiya and Santaiya. Nanna is mentioned as the son of Kundavvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D., while Nanna is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Nanna had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father.

Bharata is described by Puspadanta as possessing dark complexion (श्यामः प्रधानः, 12, श्यामरुचि, 20) He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20). He had a good physique (भारतमङ्ग, 23), and held the office of a general in the army of Kṛṣṇa III (बह्मभराज...कटकै यश्राभवन्नयकः, 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता, 12) He had a gentle dress and courteous manners and speech (सया सन्तो वेसो, मुहे दिव्वा वाणी, 35). He was fond of learning (विद्याप्रियः, 7). He combined in him wealth and learning (श्रीरुरासि, सरस्वती वदनपङ्कजे, 22). It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11; 12). He had a pure character (स्वप्नेष्येष पराङ्गना न वाञ्छन्ति, 3). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity. Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puspadanta became the friend of Bharata, his house became a meeting place of the learned (43) He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jimūtavāhana, Dadhīci, Vinayānkura and Śātavāhana (9, 31). His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (27), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puspadanta to write the Mahāpurāna and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsāra with comfort (47).

## INTRODUCTION

The poet Puspadanta came of a Brahmin family, of Masyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Siva, but were later converted to Jainism. Puspadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Virarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheta, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāṣṭrakūṭas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaiya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāṇa so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāṇa in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāṇa, i. e., the first thirty-seven sandhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodbana year of the Śaka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-  
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।  
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते  
द्वावेतौ भरतेशुष्पदशानौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ ( 37 )

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कचित् ।

For the Mahāpurāṇa is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāna, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puspadanta and asked him to write two more poems in Apabhramśa, Jasaharacariu and Nāyakumāracariu. The glory of the Rāstrakūtas, however, soon came to the end. Their capital, Mānyakheta, was plundered in 972 A. D., and the poet became destitute once more ( केदानी वसति करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्त. कविः, 36 ).

### WHAT IS A MAHĀPURĀNA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Pūrvas and Aṅgas is lost, they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon, according to the Digambaras, consists of four divisions : (i) Prathamānuyoga, lives of Tīrthamkaras and other great men of the faith ; in other terms, the kathā literature; (ii) Karanānuyoga, description of the geography of the universe, (iii) Caranānuyoga, rules of conduct for monks and laymen ; and (iv) Dravyānuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahāpurāna is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purānas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāna, on the other hand, describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāna as a synonym for Triṣaṣṭilakṣana, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭisālākāḥ puruṣacarita, i e., the lives of sixty-three prominent men ( Sālākāpuruṣa ). Puspadanta uses the term Mahāpurāna to alternate with Tisatṭhimahāpurisagunālamkāra, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term purāna is defined in the Hindu Literature as follows.—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The purāna deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well ; for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term. Jinasena who is a predecessor of Puṣpadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says :—

तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।  
 त्रिषष्टिलक्षणं वक्ष्ये पुराणं तद्विषामपि ॥  
 पुरातनं पुराणं स्यात्तन्महन्महदाश्रयात् ।  
 महद्विरूपदिष्टत्वान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥  
 कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।  
 महत्त्वं स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥  
 महापुरुषसंबन्धि महाभ्युदयशासनम् ।  
 महापुराणमास्नातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20-23.

“ I shall recite the narrative of sixty-three ancient persons, i. e., of the Tīrthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins ( i. e. Vāsudevas ) and of their opponents ( i. e., of Prati-Vāsudevas ). The work is called ‘ purāṇa ’ because it is a narrative of the ancients. It is called ‘ great ’ because it relates to the great ( persons ), or because it is narrated by the great ( sages ) or because it teaches ( the way to ) great bliss. Other writers say that, because it originated with the old poet it is called ‘ purāṇa ’ and it is called ‘ great ’ because of its intrinsic greatness. The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss.” A Tippana on I. 9. 3 of our text seems to make a distinction between *aihāsa* and *purāṇa* and says that *aihāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* i. e. Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men ( अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टि-पुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि ). The Mahāpurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importance as the Mahābhārata or the Rāmāyaṇa in Hinduism. The Mahāpurāṇa however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyaṇa and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term.

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads. I give their names below for ready reference :—

(a) The Tīrthamkaras ( 24 ) : ( 1 ) वृषभ or ऋषभ ; ( 2 ) अजित ; ( 3 ) शंभव or संभव ; ( 4 ) अभिनन्दन ; ( 5 ) सुमति ; ( 6 ) पद्मप्रभ ; ( 7 ) सुपार्श्व ( 8 ) चन्द्रप्रभ ;



(9) पुष्पदन्त or सुविधि; (10) शीतल; (11) श्रेयास; (12) वासुपूज्य; (13) विमल; (14) अनन्त; (15) धर्म; (16) शान्ति; (17) कुन्धु; (18) अर; (19) मल्लि; (20) सुव्रत; (21) नमि; (22) नेमि; (23) पार्श्व; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12): (1) भरत; (2) सगर; (3) मघवन्; (4) सनत्कुमार; (5) शान्ति; (6) कुन्धु; (7) अर; (8) सुभौम or सुभूम; (9) पद्म; (10) हरिषेण; (11) जयसेन or जय; and (12) ब्रह्मदत्त.

(c) The Vāsudevas (9): (1) त्रिपृष्ठ; (2) द्विपृष्ठ; (3) स्वयंभू; (4) पुरुषोत्तम; (5) पुरुषसिंह; (6) पुरुषपुण्डरीक; (7) दत्त, (8) नारायण; and (9) कृष्ण.

(d) The Baladevas (9): (1) अचल; (2) विजय; (3) भद्र; (4) सुप्रभ; (5) सुदर्शन; (6) आनन्द; (7) नन्दन; (8) पद्म; and (9) राम (बलराम).

(e) The Prati-Vāsudevas (9): (1) अश्वघ्नीव; (2) तारक; (3) मेगक; (4) मधु; (5) निशुम्भ; (6) बलि; (7) प्रह्लाद; (8) रावण; and (9) मगधेश्वर or जगत्सथ.

It is to be noted that Sānti, Kunthu and Ara are Tirthamkaras as well as Cakravartins.

#### WORKS ON SIXTY-THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahāpurāna or more accurately Ādipurāna of Jinasena (circa 850-875 A. D.). Jinasena calls his work Triṣaṣṭīlakṣaṇamahāpurāna-samgraha, and thus seems to have planned a complete Mahāpurāna. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two parvans only of the Ādipurāna, the remaining five parvans of the Ādipurāna and the whole of the Uttarapurāna being written by his disciple Gunabhadra and completed in 820 of the Saka era, i. e., in 898 A. D., at Vaṅkāpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarsa *alias* Kṛṣṇa II (880-914 A. D.). This Mahāpurāna is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāthi translation by Kallappa Niṭve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the Triṣaṣṭīśalākāpuruṣacarita by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170-72 A. D. It was published by the Jaina Dharma Prasāraka Sabhā of Bhavnagar in 1905-9, and a reprint of it is being issued at present.

The Jain Granthāvalī published in 1965 of the Vikrama era, i. e. in 1907-8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229. One of them is by Silācārya (circa 925 of the Vikrama era, i. e. 888 A. D.), is written in Prakrit and its Mss. are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No. 4 and also at Jesalmer Bhandar. The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Āmrasūri on the authority of Brhattippanikā. It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutuṅga, Mss. of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad. I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Guṇabhadra, Puṣpadanta and Hemacandra, as also of Silācārya and Merutuṅga if these two last-named works become available to me.

#### THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts. The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss. or recorded in the margin of Mss., and also in the Tippana of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit. I have culled it from the marginal notes in Mss. G, K, M and P, and also from the Tippana of Prabhācandra. In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhramśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss. Extracts from Prabhācandra's Tippana, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end. I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss. even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on कइवइ विहियसेउ on page 8).

#### ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another, assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puṣpadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Mānyakheta in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor, his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puṣpadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss. from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran savant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heartfelt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardha-Māgadhī at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona }  
August 1937

P. L. VAIDYA

## १ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलभ्य साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्संसार को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में इस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आदर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैंने सन् १९२४ में कारंजा के भंडारों का अवलोकन किया और वहाँ के उपलभ्य दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा इन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

## २ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से श्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनतामें, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड़, सबसे पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरिउ' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरिउ' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र-कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ बिलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

कराया है। इसमें उत्तरपुराण की वारह ( ८१-९२ ) संधियाँ हैं जो हरिवंशपुराण कहलाती हैं। जब जर्मनी से यह संस्करण प्रकट नहीं हुआ था तब विचार था कि डा. आल्सडॉर्फ द्वारा सम्पादित यह खण्ड भी एक ग्रंथ में स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित करा दिया जाय, और इसी विचार से मित्र आल्सडॉर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रेजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ, और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण निकालने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों को ग्रंथ उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रम-वद्ध प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर उसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

### ३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पाँच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्यों कि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा, की हैं; दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना, की और एक तात्यासाहिब पाटील, नांदणी ( कोल्हापुर ) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण-मंदिर की, संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे साम्हने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

### ४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्त्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महा-पुराण-टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक को भांडार-कर-इन्स्टिट्यूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तर-पुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात् महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'सागरसेन सैद्धान्तिक से परिज्ञात करके तथा 'मूलटिप्पणिका' का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

### ५ संधियोंके प्रारंभके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियोंके प्रारंभमें कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से छह की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्दिष्ट संधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रक्खे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ-नरेन्द्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुत्थी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ४९ वीं संधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाइयलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०२९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज ही समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पीछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

## ६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म-परिचय है; पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरित व णायकुमारचरित के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के लुडिग, शुभतुंगराय और बल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्होंने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोड्दिगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन् ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद परम्परागत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्दिन भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अन्नय्य,' पिता का 'ऐयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्वा' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम-देवल्ल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुदृढ और शूरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके भंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवनमें काव्य-रचना, काव्य-गायन, और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीसूतवाहन, दधीचि, विनयांकुर और शातवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी, कूप, तडाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुष्पदन्त को आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

### ७ कवि-परिचय ।

कविराज पुष्पदन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम सुग्धादेवी था। ये दोनों शिव के उपासक थे, किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुष्पदन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊंचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरराय नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यखेट आगये, और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और अन्नइया नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और इनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और धनिक समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वसन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्हीं के शुभतुंग-भवन में वे रक्खे गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ९५९ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ९६५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि “ इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय तब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिली। ” इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये बिना नहीं रहता—

‘ यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कचित् ’

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा; जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

### ८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह ‘अंग’ और चौदह ‘पूर्व’ में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतांबर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रैसठ शलाका-पुरुषों अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने “ तिसष्टि-महा-पुरिस-गुणालंकार ” नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि-लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका-पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

### ९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृत् डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्हीं पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य-कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने बिना नहीं रह सकते।



मैं उपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था; किन्तु पीछे इस ग्रन्थमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचन्द्र-ग्रन्थमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रन्थमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रन्थके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिक्यचन्द्र ग्रन्थमाला की ओर से मैं चवरे ग्रन्थमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धारकी भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

### १० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी, शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न रुकने-पर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के आद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे श्रद्धेय मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विषयरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने ने इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रन्थ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्हींने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रन्थ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रन्थ जसहरचरित और णायकुमारचरित अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिक्यचन्द्रग्रन्थमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रन्थ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रन्थ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }  
२८-८-३७ }

हीरालाल जैन  
सम्पादक और सहमंत्री

तिसाड्डिमहापुरिसगुणलंकारु

णाम

महापुराणु





I

सिद्धिवह्मणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥

पणचिवि विग्घविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ॥ ध्रु० ॥

I

सुपरिक्खिय रक्खियभूयतणुं  
पयडियसासयपयणयरवहं  
सुहसीलगुणोहणिवासहरं  
जुइणिज्जियमंदरमेहलयं  
सोहंतासोयरमियविवरं  
सुरणाहकिरीडपहिट्टपयं  
णवत्तरणिसमप्पहभावलयं  
हरिसुक्ककुसुमच्चित्तलियणहं

पंचसयधणुणयदिव्वतणुं ।  
परसमयभणियदुण्णयरवहं ।  
देविंदथुयं दिव्वासहरं ।  
पविमुक्कहारमणिमेहलयं ।  
उव्वासियबहुणारयविवरं ।  
अइपउरपसायपहिट्टपयं ।  
णिरुदुस्सहदुम्मयभावलयं ।  
अरुहंतमणंतजसं अणहं ।

६

10

1. १. B देविंदथुवं. २. M °दुम्मह°. ३. MBP अरहंत°.

1. 1. सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिरिव वधुस्तस्या मनोरजनश्चित्तरञ्जकः; णिरंजणु पापरहितः; णेसरु  
2. णिरुवमसासणु उपमातीतमतः; परमेसरु परा उत्कृष्टा मा समवसरणानन्तचतुष्टयादिलक्षणा  
3. a भूयतणुं भूतविस्तारः, पृथिव्यादिप्रपञ्चः. 4. a नयरवहं नगर-  
b दुण्णयरवहं दुर्गयाः सर्वथैकान्तप्रकाशकप्रमाणानि, तेषां रवाः प्रतिपादकशास्त्राणि तान् हन्ति निरा-  
5. b दिव्वासहरं नममुद्राकरम्, दिग्वासोधरम्. 6. a जुइ द्युतिः; °मंदरमेहलयं  
7. a असोय अशोकः; °विवरं पक्षिश्रेष्ठम्; b °विवरं  
8. a पहिट्टपयं प्रवृष्टपादम्; b °पहिट्टपयं आनन्दितलोकम्, ( प्रवृष्टप्रजम् ). 9. a °भावलयं  
10. a हरि इन्द्रः b अणहं निष्पापम्.

सीहासणछत्तयसहियं  
दुंदुहिसरपूरियभुवणहरं  
पुरुपैवजिणं जियकामरणं  
विरयं वरयं णियमोहरयं  
पणमामि रविं केवलकिरणं

उद्धरियपरं सकिवं सहियं ।  
बंधूअफुल्लसंणिहणहरं ।  
दूरुज्झियजम्मजरामरणं ।  
उद्धयभीमणियमोहरयं ।  
मत्तासमयं भणियं किरणं ।

15

घत्ता—अवरु वि पणविवि सम्मइं विणिहयदुम्मइं कोवपावविद्धंसणु ॥

जासु तिथि मइं लद्धउ णाणसमिद्धउ णिम्मलुं सम्मइंसणु ॥ १ ॥

## 2

णिम्माहियमाणमायामयाहं  
साहूण वि चरणंभोरुहाइं  
कयहरिसु सरसु सुमहुरु चवंति  
गंभीर पसणण सुवण्णदेह  
सालंकारी छंदेण जंति  
चोइहपुव्विल्ल दुवालसंगे  
चउमुहमुहवासिणि सइंजोणिं  
दुक्खक्खयकारिणि सोक्खखाणि  
धम्माणुसासणाणंदमरिउ

जिणसिद्धसूरिसुयदेसयाहं ।  
णहेदरिसियसुरणयमुहाइं ।  
कोमलपयाइं लीलाइ दिंति ।  
कंतिल्ल कुडिल णं चंदरेह ।  
बहुसत्थअत्थगारव वहंति ।  
जिणवयणविणिग्गय सत्तभंगि ।  
णीसेसहेउ सा सोहछोणि ।  
पणवेवि सरासइ दिव्ववाणि ।  
पुणु कहमि णिरहु णाहेयचरिउ ।

5

MBP सिंहासण° ५, MB पुरएव° ६. T notes पणयामिरविं as p and explains it as पणया-  
ति पाठे पणयो मोहः स एव यामी नाम रात्रिस्तस्या रविं स्फटकम्. ७. M णिम्मल°.

2. १. M °जिणदेवयाहं, but सुयदेवयाहं in the margin. २. MBG णहे दरिसिय°. ३. M  
अत्थगारवं संवहति, but adds सत्थ in margin; P बहुअत्थगंथगारव वहंति. ४. M चौइह°; P  
चोइह°; T चौइस°. ५. T मुणि° ६. M °विणग्गय°. ७. P सइत्यजोणि.

1. b उद्धरियपरं उन्मूलितभिथ्यावादिन उद्धृतभव्यं वा. 12. b आरक्तनखमित्यर्थः. 13. a जिय-  
मरणं जितकामसंग्रामम्. 14. a विरयं विरतं संयतम्, वरयं वरदम्; णियमोहरयं संयमौघरतम्;  
उद्धय° उद्धतनिजमोहरजसम्. 15. a मत्तासमयं परिग्रहसमकम्; मात्रा परिग्रहः तामस्यन्ति निराकुर्वन्ति  
ते मात्रासाः मुनयः तेषा मतम् अभीष्टम्; अथवा मत्ताना गर्वितानामा समन्तात् शमकं उपशमकम्; अन्यत्र  
त्रासमकं छन्दः 16. सम्मइं वर्धमानम्.

2. 1. b °सुयदेसयाहं °श्रुतपाठकानामुपाध्यायानाम्. 2. a पञ्चपरमेष्ठिनामित्यर्थः; b °णय° °नत°.  
b कुडिल कुटिला स्त्री, पक्षे वक्रोक्तिः. 7. b णीसेसहेउ° निःश्रेयसयुक्तिः; सा लक्ष्मीः; सोहछोणि,  
भाक्षोणिः, पक्षे, सा सोहछोणि सत्यौघक्षोणिः. 9. a धम्माणुसासणं धर्मप्रतिपादनम्; b णिरहु निष्पापम्.

घत्ता—जेण सुपण सुहोहइं तिहुयर्णखोहइं होंति चारुकल्लाणइं  
उप्पज्जांति पसत्थइं मुणियपयत्थइं मणुयहो पंच वि णाणइं ॥ २ ॥

3

तं कहमि पुराणु पसिद्धणासु  
उच्चद्धजूडु भूमंगभीसु  
भुवणेक्करासु रायाहिराउ  
तं दीर्णदिण्णधणकणयपयरु  
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु  
दुग्गमदीहरपंथेण रीणु  
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि  
णंदणवाणि किर वीसमइ जाम  
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्व  
परिभमिरभमररवगुमगुमंति  
करिसरवहिरियदिच्चक्कवालि  
तं सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु  
णउ दुर्ज्जाणभउँहावंकियाइं

सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरासु ।  
तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।  
अहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।  
महि परिभमंतु मेपाडिणयरु ।  
दियेहेहिं पराइउ पुप्फयंतु । 5  
णवयंदु जेम देहेण खीणु ।  
मायंदगोँछगोँदलियकीरि ।  
तहिं विण्णिण पुरिस संपत्त ताम ।  
भो खंड गलियपावावलेव ।  
किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति । 10  
पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।  
वरि खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु ।  
दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥

खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥ 15

८. P तिहुयणु खोहइं.

3. १. MP ओवद्ध° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्; B नवद्धजूड. २. M वंदीण°. ३. MP मेवाडि°; B मेवाड°. ४. K मायंदगोदिगोदलिय°. ५. MBP खज्जउ. ६. M हउँहावंकियाइं; BP भउहावंकियाइं.

10. सुहोहइं सौख्यसमूहाः. 11. पयत्थ पदार्थ.

3. 1. b सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे. 2. a उच्चद्धजूडु उच्चद्धजूटम्; b चोडहो चोड-  
देशनृपस्य. 3. b तुडिगु कृष्णराजः. 4. b यत्र मेलपाटीयनगरे. 9. a तेहिं ताभ्याम्. 11. a दिच्चक्क-  
वालि दिशामण्डले; करिसर° गजस्वर°. 12. a अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य विरुदमेतत्. 14. धवल-  
च्छिहे उज्ज्वललोचनायाः; सोणिमुहं कटिच्छिद्र°. 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि;  
भिउडिय° भुकुटित°.

4

चमराणिलउड्ढावियगुणाइ  
 अविवेयइ दप्पुत्तालियाइ  
 सत्तंगरज्जभरभारियाइ  
 विससहजम्मइ जडरत्तियाइ  
 संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु  
 तहिं अम्मह लइ काणणु जि सरणु  
 अम्मइयइंदरापहिं तेहिं  
 गुरुविणयपणयपणवियसिरेहिं  
 घत्ता—जणमैणतिमिरोसारण मयतरुवारण णियकुलगयणदिवायर ॥

भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कच्चरयणरयणायर ॥ ४ ॥

10

5

वंभंडमंडवारूढवित्ति  
 सुहतुंगदेवकमकमलभसलु  
 पाययकइकच्चरसावउडु  
 कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु  
 सविलासविलासिणिहिययथेणु  
 काणीणदीणपरिपूरियासु

अणचरयरइयजिणणाहभत्ति ।  
 णीसेसकलाविण्णाणकुसलु ।  
 संपीयसरासइसुरहिदुद्धु ।  
 रणभरधुरधरणेणुधुद्धुसंधु ।  
 सुपसिद्धमहाकइकामधेणु ।  
 जसपसरपसाहियदसदिसासु ।

5

4. १. MBP देसु. २. MBP आयणिय, G आयणवि. ३. MB तिउरोसारण.

5. १. MBPK °वलुद्धु, but G °रसावउडु and marginal gloss रसावउद्धु; T also रसाव-उद्धु and explains it as परिज्ञातरसः. २. MBP °धरणुविघट्टसंधु. ३. MP °धेणु.

4. 2. a दप्पुत्ता लियाइ दर्पोद्वृत्तया, दर्पोत्तालया. 3. a °भारिया °श्रुता; b पिउपुत्त° पितृ-मुत्रभर्तृविषदायिकया, अथवा, पितृपुत्राभ्या द्वाभ्यामपि क्रीडनासक्तया. 4. a विससहजम्मइ कालकूट-सहजन्मना; b विउसविरत्तियाए विद्वज्जनविरक्तया 5. a णिव्विसेसु अज्ञातभेदः, गुणागुणविचाररहितः; b वेसु द्वेष्यः. 7. a अम्मइय-इंदरायनामानौ द्वौ पुरुषौ. 8. b णायरणरेहिं चतुरनराभ्याम्. 10. तेमिरोसारण अज्ञाननिराकारकः.

5. 2. a सुहतुंगदेव कृष्णराजः, तत्प्रतिष्ठापितो जिनश्च. 4. a सच्चसंधु सत्यप्रतिज्ञः. 5. a °धेणु लैनः. 6. a काणीण° अकिंचित्कर°; °पसाहिय° °मण्डित°; °दिसासु °दिद्धुमुखः.

परमणिपरंमुहु सुद्धसीलु  
गुरुयणपयपणवियउत्तमंगु  
अण्णइयतणयतणुरुहु पसत्शु  
महमत्तवंसधयवहु गहीरु  
दुव्वसणसीहसंघायसरहु  
घत्ता—आँउ जाहु तहो मंदिरु णयणाणंदिरु सुकइकइत्तणु जाणइ ॥

उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु ।  
सिरिदेवियंवगभुभवंगु ।  
हत्थि व दाणोल्लियदीहहत्थु ।  
लक्खणलक्खंकियवरसरीरु । 10  
ण वियाणहि किं णामेण भरहु ।

सो गुणगणतत्तिह्लउ तिहुयाणि भह्लउ णिच्छउ पइं संमाणइ ॥ ५ ॥

6

जो विहिणा णिम्मिउ कव्वपिंडु  
आवंतु दिट्टु भरहेण केम  
पुणुं तासु तेण विरइउ पहाण  
संभांसणु पियत्रयणेहिं रम्मु  
तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाण  
पुणु एवँ भणेप्पिणु मणहराइं  
वरणहाणविलेवणभूसणाइं  
अच्चंतरसालइं भोयणाइं  
देवीसुएण कइ भणिउ ताम  
णियासिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु  
पइं मणिणउ वाणिणउ वीरराउ

तं णिसुणिवि सो संचालिउ खंडु ।  
वाइंसरिसरिकल्लोलु जेम ।  
घरु आयहो अब्भागयविहाणु ।  
णिम्मुकडंभु णं परमधम्मु ।  
तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु । 8  
पहँरीणझीणतणुसुहयराइं ।  
दिण्णाइं देवंगइं णिवसणाइं ।  
गलियाइं जाम कइवयदिणाइं ।  
भो पुक्कयंत ससिलिहियणाम ।  
गिरिधीरु वीरुं भइरवणारिंदु । 10  
उप्पणउ जो मिच्छत्तराउ ।

४. P सिरिअम्बदेवि° B सिरिदेविअव्व°. ५. M आउजाहं. ६. P °भात्तिह्लउ though marginal gloss °चिन्तकः.

6. १. B omits this line. २. B omits a of this line. ३. M पणु एण; P पुणु एम.  
४. MBP पहखीणरीणतणु°. ५. B दिण्णाइं देवगइणिवसणाइं. ६. B वीरभइरव. ७. MBPK °भाउं,  
but GT मिच्छत्तराउ and gloss °रागः.

7. b उद्धरणलीलु उद्धरणस्वभावः. 9. a अज्ञेयाकस्य तनयः ऐरणः, ऐरणस्य पुत्रो भरतः. 10. a °धयवहु  
महामग्निवंशध्वजपटः. 11. a सरहु अष्टापदः. 13. तत्तिह्लउ चिन्तकः; णिच्छउ निश्चयेन.

6. 3. a पहाणु मुख्यः. 4. b परमधम्मु जिनधर्मः. 9. a देवीसुएण भरतेन. 10. b भइरव-  
थरिंदु वीरभैरवः अन्यः कश्चिद्दुष्टमहाराजो वर्तते, कथामकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति; P वीरभैरवः  
कश्चिन्मिथ्यादृष्टी राजा. 11. a वीरराउ शूद्रकः.



पच्छित्तु तासु जइ करहि अञ्जु  
तुहुं देउ को वि भव्वयणबंधु  
अब्भत्थिओ सि दे देहि तेम

ता घडइ तुज्जु परलोयकञ्जु ।  
पुरुएवचरियभारस्स खंधु ।  
णिव्विग्घे लहु णिव्वहइ जेम ।

घत्ता—अइललियए गंभीरए सालंकारए वायए ता किं किज्जइ ॥

15

जइ कुसुमसरवियारउ अरुहु भडारउ सन्भावे ण थुणिज्जइ ॥ ६ ॥

## 7

सियदंतपंतिधवलीकयासु  
भो देवीणंदण जयासिरीह  
गोवज्जिएहि णं घणादिणेहिं  
मइलियचित्तहिं णं जरंघरोहिं  
जडवाइएहिं णं गयरसेहिं  
आचक्खियपरपुट्टीपलेहिं  
जो बालबुडुसंतोसहेउ  
जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ

ता जंपइ वरवायाविलासु ।  
किं किज्जइ कच्चु सुपुरिससीह ।  
सुरवरचावेहि व णिग्गुणेहिं ।  
छिइण्णेसिहिं णं विसहरोहिं ।  
दोसायरोहिं णं रक्खसेहिं । 6  
वरकइ णिंदिज्जइ हयखलेहिं ।  
रामाहिरामु लक्खणसमेउ ।  
तासु वि दुज्जणु किं परि मे होउ ।

घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिग्गहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ वल्लु ॥

भणु किह करमि कइत्तणु ण लहामि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥७॥ 10

## 8

तं णिसुणिवि भरहे बुत्तु ताव  
सिमिसिमिसिमंतकिमिभरियरंधु

भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव ।  
मिल्लेवि कलेवरु कुणिमगंधु ।

c. M पुरएव°. ९. M जय.

7. १. T जरहरोहिं. २. PG ण.

18. पुरुएव° आदिनाथ°.

7. 1. a धवलीकयासु धवलीकृतास्यः. 2. a जयसिरीह जयश्रीलक्ष्मीवाञ्छकः. 3. a गोवज्जिएहिं वाणीरहितैः, पक्षे किरणरहितैः. 6. a आचक्खिय भक्षित. 7. b लक्खणसमेउ व्याकरण-समेतः, पक्षे, लक्ष्मणसमेतः. 8. a सुम्मइ श्रूयते; कइवइ विहियसेउ कपिपतिर्हनूमाग् तेन कृतः सेउः, पक्षे, प्रवरसेनो राजा—स प्रवरसेनो जैनः—तेन कृतं सेतुबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8. 1. b विमुक्कगाव विमुक्तगर्व. 2. b कुणिम कुण्ठित.

ववगयविवेड मसिकसणकाड  
णिक्कारुणु दारुणु बद्धरोसु  
हयतिमिराणियरु वरकराणिहाणु  
जइ ता किं सो मंडियसराहं  
को गणइ पिसुणु अविसहियतेड  
जिणचरणकमलभत्तिल्लएण

सुंदरपएसि किं रमइ काड ।  
दुज्जणु ससहावे लेइ दोसु ।  
ण सुहाइ उल्लयहो उईउ भाणु । 5  
णउ रुच्चइ वियसियसिरिहराहं ।  
भुक्कउ छणयंदहु सारमेड ।  
ता जंपिड कव्वपिसल्लएण ।

घत्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणामि लक्खणु छंडु देसि ण वियाणमि ॥  
जा विरइय जयवंदहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समाणमि ॥ ८ ॥ 10

## 9

अकलंककविलकणयरमयाइं  
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं  
णउ पीयइं पायंजलेजलाइं  
भावाहिउ भारवि भासु वासु  
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु

दियसुगयपुरंदरणयसयाइं ।  
णउ णायइं भरहवियारियाइं ।  
अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।  
कोहलु कोमलगिरु काँलियासु ।  
णालोइउं कइ ईसाणु बाणु । 5

8. १. MBP सुहाय, २. P उयउ, ३. P छणइंदहु, ४. P पयासमि but marginal gloss कथं समानयामि वर्णयामि.

9. १. B दत्तिल्ल°, २. MBP पायंजलि°. ३. M भारहिं; B भारहभासु, ४. MBP कालिदासु, ५. MP णालोयउ.

8. ३ a ववगय विवेड नष्टविवेकः; °क सण काड °कृष्णशरीरः; b काड काकः. 4 b ससहावे स्वस्व-  
भावेन; लेइ गृह्णाति. 6 a मंडियसराहं मण्डितसरसाम्; b वियसियसिरिहराहं विकसितकमलानाम्. 7 b  
छणयंदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य; सारमेड कुक्कुरः. 8 a °भत्तिल्लएण °भक्तियुक्तेन; b कव्वपिसल्लएण काव्य-  
राक्षसेन पुष्पदन्तेन. 9 लक्खणु व्याकरणम्; देसि देशी भाषा. 10 विरइय विरचिता; जयवंदहिं  
जगद्वन्द्वैः; समाणमि वर्णयामि.

9. 1 a अकलंक न्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकारः; कणयर वैशेषिकदर्शने  
मूलकारः; b दिय वेदपाठकः; सुगय बौद्धः; पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकारः; णयसयाइं युक्तयोऽभिप्राया वा.  
2. a दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलकृतानि संगीतशास्त्राणि; b भरहवियारियाइं भरतमुनिकृतं  
नाट्यशास्त्रम्. 3 a पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; b अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिपष्टिपुरुषा-  
श्रिताः कथाः पुराणानि. 4 a भाषाहिउ भावाधिकः अर्थगौरववात्; वासु व्यासो महाभारतकारः; b कोहलु  
कूष्माण्डः कश्चित्कविः 5. a चउमुहु कश्चित्कविः; सयंभु पांथडीवद्धरामायणकर्ता आपलीसंधीयः.

णउ घाउ ण लिंगु ण गणं समासु  
 णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति  
 णउ बुज्झिउ आर्यमु सदधामु  
 पडु रुदुडु जडणिण्णासयारु  
 पिंगलपत्थारु समुहि पडिउ  
 जसइंधु सिंधु कल्लोलसिनु  
 हउं बप्प णिरक्खर कुविखमुक्खु  
 अइदुग्गमु होइ महापुराणु  
 अमरासुरगुरुयणमणहरेहिं  
 तं हउं मि कहमि भत्तीभरेण  
 एहु विणउ पयासिउ सज्जणाहं

णउ कम्मं करणु किरियाणिवेसु ।  
 णउ जाणिय मइं एक्क वि विहत्ति ।  
 सिद्धंतु धवँलु जयधवलु णामु ।  
 परियच्छिउ णालंकारसारु ।  
 ण कर्यो वि महारइ चित्ति चडिउ । 10  
 ण कलाकोसलि हियवउ णिहित्तु ।  
 णरवेसें हिंडमि चम्मरक्खु ।  
 कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।  
 जं आसि किर्यँउ मुणिगणहरेहिं ।  
 किं णहि ण भमिज्जइ महुयरेण । 15  
 मुहि मसिकुँचँउ कँउ दुज्जणाहं ।

घत्ता—घरे घरे भर्मँउ असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खए किं अक्खइ ॥

लँइ मइं सो मोर्कल्लिउ खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

## 10

चारणावासकेलाससेलासिओ  
 सामवण्णो सउण्णो पसण्णो सुहो  
 गोम्महो संमुहो होउ जक्खो महं  
 विग्घविहावणी चारुचक्केसरी  
 वेरिणिहारिणी सुंभणी थंभणी

किंणरीवेणुवीणाङ्गणीतोसिओ ।  
 आइदेवाण देवाहिभत्तो बुहो ।  
 चिंतयंतस्स एयं अमेयं कहं ।  
 सत्थसारंभकल्लोलमालासरी ।  
 आसि जम्मंतरे हौंतिया बंभणी । 5

६. BP गुण. ७. M कम्म. ८. MBP किरियाविसेसु. ९. M आयम°. १०. MBP धवलजयधवलणामु.  
 ११. M णालंकारु सारु. १२. B कयाइ. १३. K कहिउ. १४. MB कुचउ. १५. M किउ. १६. G भमइ.  
 १७. MB लहु. १८. MB. मोकल्लिउ.

10. १. MBP गोसुहो. २. MB °णिद्धारणी; P °णिहारणी.

7 a पयस मत्ति पदसमाप्ति; पदखण्डना. 9 a पडु पटुश्चतुरः; जडणिण्णासयारु जडत्वनाशकः. 12 a कुक्खि-  
 मुक्खु गर्भमूर्खः. 13 b कुडएण कुडवेन घटेन. 17 दुण्णयगारउ अन्यायकारकः; विवरोक्खए विपरोक्षे  
 18 दुब्बोल्लिउ दुर्वचनः.

10. 1 a चारणावास° मुनीश्वरवास°; °सेलासिओ °शैलाश्रितः; b झुणी घ्वनिः. 2 a सउण्णो  
 सपुण्यः; सुहो शुभः; b अमेयं कहं महतीं कथाम्; एता महतीं कथां चिन्तयतो मम गोमुखयक्षः संमुखो भवतु.  
 4 b सत्थसारंभ° शास्त्रमेव साराम्भः सुष्टु जलम्. 5 a सुंभणी हिंसिका.

साहृदाणेण संजाइया जक्खिणी  
उज्जयंतत्थलीकाणणावासिणी  
सुंदरे मंदरे कंदरे कील्लिरी  
पिक्कमायंदगोच्छेणे डिंभं णियं  
खुह्वाइविवेयावहा वाइणी  
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई  
कव्ववित्थारदुत्तारमग्गे सही  
होउ बुद्धी महासत्थसामग्गिणी

णाणसम्मत्तवंती गुणावेक्खिणी ।  
सव्वभासासमूहं समुम्भासिणी ।  
तुंगणग्गोहपारोहँहिंदोलिरी ।  
संथवंती हसंती चवंती पियं ।  
अंबिया गोरि गंधारि सिद्धाइणी । 10  
णायचूडामणी देवि पोमावई ।  
ठाँउ मज्झं मुहे देवया भारही ।  
एरिसो छंदओ भण्णए सग्गिणी ।

घत्ता-मइं णिम्मियहो उयारहो सइगहीरहो जो णरु भसइ णिवंधहो ॥

जणदुव्वयणहिं दडुहो तहो दुवियडुहो दुज्जसु होउ मयंधहो ॥ १० ॥ 15

## 11

अहवा हँउं णिग्घिणु पाँवयम्मु  
मिच्छाँहिरामरंजियविवेउ  
उग्गैयरसभावणिरंतराइं  
लइ हत्थेँ झंपमि णहु सभाणु  
लँइ तुच्छबुद्धि णिण्णट्टणाणु  
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण  
करिमयरमीणजलयरवमालि

ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।  
ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।  
अलियाइं जि कहमि कहंतराइं ।  
लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।  
लइ अक्खमि एउ महापुराणु । 5  
लइ कहँमि कव्वु किं वित्थरेण ।  
चललवणजलहिवलयंतरालि ।

३. P कीलिणी. ४. P °हिंदोलिणी. ५. MBP °गोछेण. ६. B omits this foot. ७. BP उवयारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा. ८. K होइ.

11. १. M पावकम्मु. २. MB मिच्छाहिमाण°; P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम°. ३. M उग्गव° and gloss उत्कट, ४ MBP अइतुच्छ°. ५. MBP करमि.

7 a उज्जयंत ऊर्जयद्रिरे, गिरिनगरपर्वतः 8 b णग्गोह वटवृक्षः. 9 a खुह्वाइ° क्षुद्रवादित्रिविकोप-  
घातिका. 11 a पोमवत्ताहवत्ता पद्मपत्राभमुखी; b. णायचूडामणी त्रिफणसर्पयुक्तमस्तका. 12 a सही  
सखी सहाया. 13 a महासत्थसामग्गिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता. 14 भसइ निन्दति; णिवंधहो  
महापुराणस्य. 15 दुवियडुहो दुर्विदग्धस्य; मयंधहो मदान्धस्य.

11. 2 a मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्यं यच्चित्रकथादिकं तत्राभिरामः अत्यासक्तिस्तया रजितो  
विवेको यस्य सः; b °भेउ °भेदो विशेषः. 3 a उग्गय उत्पन्नः. 4 a णहु सभाणु भानुयुक्तं नभः; b  
जलणिहाणु समुद्रः. 7 a °वमालि °कोलाहले.

दोचंदसूरपयडियपईवि  
 खारंभोणिहिसामीवसंगि  
 सरिगिरिदरितरुपुरर्वरविचिचु  
 तहु मज्झि परिट्टिउ मगंहेदेसु  
 मुहि घुर्लइ जासु जीहासहासु

जंबूतरुलंछणि जंबुदीवि ।  
 सुरसिहरिहि संठिउ दाहिणंगि ।  
 एत्थत्थि पसिद्धउ भरहखेत्तु । 10  
 जं वण्णहुं सक्कइ णेय सेसु ।  
 जसु णाणि णत्थि दोसावयासु ।

घत्ता—सीमारामासामहिं पविउलगामहिं गज्जंतहिं धवलोहहिं ॥

सोहइ हलहरसत्थहिं दाणसमत्थहिं णिच्चं चिय णिल्लोहहिं ॥ ११ ॥

## 12

अंकुरियइं णवपल्लवघणाइं  
 जहिं कोइल्लु हिंडइ कसणपिंडु  
 जहिं उट्ठिय भमरावलि विहाइ  
 ओयरिय सरोवरि हंसपंति  
 जहिं सलिलइं मारुयपेल्लियाइं  
 जहिं कर्मलहं लच्छिइ सहुं सणेहु  
 फिर दो वि ताइं महणुब्भवाइं  
 जहिं उच्छुवणइं रसगग्भिणाइं  
 जुज्झंतमहिसवसहुच्छवाइं  
 चेंवलुद्धपुच्छवच्छाउलाइं  
 जहिं चउरंगुल कोमलतणाइं

कुसुमियफलियइं णंदणवणाइं ।  
 वणलच्छिहे णं कज्जलकरंडु ।  
 पवरिंदणीलमेहलिय णाइ ।  
 चल धवल णाइं सप्पुरिसकित्ति ।  
 रविसोसभएण व हल्लियाइं । 5  
 सहुं ससहरेण वड्डुउ विरोहु ।  
 जाणंति ण तं जडसंभवाइं ।  
 णावइ कच्चइं सुकइहिं तणाइं ।  
 मंथामंथियमंथणिरवाइं ।  
 कीलियगोवालइं गोउलाइं । 10  
 घणकणकणिसालइं करिसणाइं ।

. M पुरवर, ७. B मगहएसु. ८. M घुलय. ९. MB °रामहि; P °रामारम्महिं.

12 १ M अवयरइ, BPT उवयरइ. २ MBP कमलहुं सहुं. ३ P °गग्भिराइं. ४ M धवलुद्धपुच्छ°.

७ सुरसिहरि मेरुः 11 ७ वण्णहुं वर्णयितुम्; सेसु धरणेन्द्रः ( शेषः ). 12 ७ दोसावयासु दोषावकाशः.  
 ३ °सामहिं °श्यामलै; धवलोहहिं वर्लावर्दसमूहैः. 14. हलहरसत्थहिं कर्षकसमूहैः; णिल्लोहहिं  
 लोभैर्निचितलोहैश्च.

12. 2 a कोइल्लु कोकिलः, कसणपिंडु कृष्णवर्णः कृष्णशरीर.. ३ a विहाइ विभाति; ७ °मेहलिय  
 मेखला. 4 a ओयरिय अवतीर्णा; 5 a मारुयपेल्लियाइ वायुना प्रेरितानि; ७ हल्लियाइं कम्पितानि. 7 a  
 इणुब्भवाइं समुद्रमयनोद्भूतौ; ७ जडसंभवाइं जलजन्मानौ अज्ञानत्वाच्च जानन्ति. 8 a रस° इक्षुरसः  
 द्वारादिश्च. 9 ७ °मन्यणि° गोपी. 11 ७ कणिसालइं कणिसयुक्तानि.

घत्ता-तर्हि छुहधवलियमंदिरु णयणाणंदिरु णयरु रायगिहु रिद्धउ ॥  
कुलमहिहरथणहारिए वसुमइणारिए भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

## 13

संकेयागयविरहीयणाइं  
बहुलोयदिण्णणाणाफलाइं  
जर्हि महुगंडूसर्हि सिंचियाइं  
सीमंतिणिपयपोमाहयाइं  
पियमणिणयसुहवाणासणाइं  
पडिखलियसूरभावियरणाइं  
उक्कलियालइं णवजोव्वणाइं  
जर्हि सीयलाइं झसमाणियाइं  
जर्हि जणुलुंचणु कंटयकरालु  
वाहिरि णिहियउ वियसंतु कोसु  
जर्हि भमरु तर्हि जि संठिउ सुहाइ

सासोयपवड्वियकंचणाइं ।  
णावइ कुलाइं धम्मुज्जलाइं ।  
विंभरियाहरणाहिं अंचियाइं ।  
वियंसंतविडववुड्डीगयाइं ।  
जर्हि संदरिसियवाणासणाइं । 5  
उज्जाणइं णं भावियरणाइं ।  
णिरु सच्छइं णं सज्जणमणाइं ।  
परकज्जसमाणइं पाणियाइं ।  
जलि णलिणें ल्हिक्कावियउ णालु ।  
भणु को व ण ढंकइ गुणर्हि दोसु । 10  
संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं ।

घत्ता—कुसुमरेणु जर्हि मिलियउ पर्वणुल्ललियउ कणयवणुणु महु भावइ ॥  
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसंति but gloss विकसित. २ M उक्कलिवालइं. ३ PK जणुलुंचणु. ४ M B P उद्धुल्ललियउ and gloss in P उच्छलित.

12 छुह सुधाचूर्णम्. 13 कुलमहिहरथणहारिए कुलपर्वता एव स्तनाः तान् धरति; आइद्धउं गृहीतम्.

13. 1 a संकेएत्यादि—संकेतेनागता विरहिजना येषूद्यानेषु, कुलपक्षे संकेतेन नागता विरहिजना येषु; b सासोएत्यादि—वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्धिता काञ्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षायेषु; अन्यत्र, अशोकैः हर्षैः सह प्रवर्धितानि काञ्चनानि सुवर्णानि यत्र. 3 a महुगंडूसर्हि मद्यचुलकैः; b विंभरिय विस्मृतानि साश्चर्याणि वा. 4 a °पयपोमाहयाइं °पदपद्माहतानि; b विडव विटपाः शाखाः, अन्यत्र विडव विटा इव. 5 a पियेत्यादि—वनपक्षे, पिकानामभिमताः सुभगाः आणाशब्दास्तेषामसनं प्रचरणं येषु; युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिताः अङ्गीकृताः सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दाः 'संग्रामं जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादयः येषु. 6 a पडिखलियेत्यादि—वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरणं यत्र; युद्धपक्षे, प्रतिस्खलितं शूराणां सुभटानां भावियरणं प्रतापप्रसरणं यत्र; b भावियरणाइं भावितं परिकलितं रणं यैः पुरुषैः. 7 a उक्कलियालइं कल्लोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि. 8 b परकजेत्यादि—परकार्ये सति जनाः शीतलाः, स्वकार्ये उतावलाः (?). 9 b ल्हिक्कावियउ गोपितम्. 13 परिहिउ परिहितः.

## 14

जहिं कीलागिरिसिहरंतरेसु  
 सिक्खंति पक्खि दरदावियाइं  
 जहिं पिक्कसालिछेत्तं घणेण  
 पंगुत्तं दीहें पीयलेण  
 जहिं संचरति र्हहुगोहणाइं  
 गोवालवाल जहिं रसुं पियंति  
 मायंदकुसुममंजरि सुएण  
 जहिं समयल सोहइ वाहियालि  
 हरि भामिज्जंति कँसासणेहिं  
 णिज्जंति णाय कण्णारएहिं  
 रुज्झंति गयासा ईरिएहिं  
 आसयर दिंति सिक्खावयाइं  
 कप्पूरविमीसु पवासिएहिं  
 यत्ता—ससिपहपायारहिं गोउरदारहिं जिणवरभवणसहासहिं ॥

कोमलदलवेह्लिहरंतरेसु ।  
 विडमणियमम्मणुल्लावियाइं ।  
 छज्जइ महि णं उप्परियणेण ।  
 णिवडंतरिंछपल्लवचलेण ।  
 जव कंगु मुग्ग ण हु पुणु तेणाइं । 5  
 थलसररुहसेज्जायलि सुयंति ।  
 हयचंचुएण कयमण्णुएण ।  
 वाहणपयहय वित्थरइ धूलि ।  
 अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं ।  
 णाय व्व णायकण्णारएहिं । 10  
 सीस व्व गयासाईरिएहिं ।  
 णं मुणिवर गुणसिक्खावयाइं ।  
 जहिं पिज्जइ सलिलु पवासिएहिं ।

मढदेउलहिं विहारहिं घरवित्थारहिं वेसावासविलासहिं ॥ १४ ॥ 15

## 15

जं सोहइ जहिं अविहंडियाइं  
 सिरि<sup>२</sup> णिहियकणयकलसइं घराइं

गंयणं व केउसयमंडियाइं ।  
 णावइ अहिसित्तजिणेसराइं ।

14. १ MP गईहणाइ. २ MBP तिणाइं. ३ MBP महु; gloss in M मिघरसम् but in P इक्षुरसम्. ४ MBPK कुसासणेहिं but gloss in K तर्जनकेन. ५ MBP जलपरिहापायारहिं.

15. १ MBP गयणयलि. २ M सिरिणहिय°.

14. 1 a कीला गिरि° क्रीडापर्वत°; b वेह्लि हरंतरेषु वल्लीगृहान्तरेषु. 2 a दरदावियाइं ईषद्दशितानि; b °मणिय° रतिकूजित विकासितकामोद्रेकवचनम्. 3 b छज्जइ छाद्यते; उप्परियणेण उपरितनेन वल्लेण. 4 a पंगुत्तं पंगुरणेन; b रिंछ° शुक्र°. 6 a रसु इक्षुरस°; b थलसररुह° स्थलकमल°. 7 a सुएण शुकेन; b कयमण्णुएण कृतमन्युना. भ्रमरैः सह संगः कस्मात्कृत इति कोपेन. 8 a वाहियाली वाह्याली राजमार्ग; b वाहण° अश्वादि°. 9 a हरि अश्वाः; कसासणेहिं तर्जनकेन. 10 a णाय नागा हस्तिनः; b णाय नागाः सर्पाः. 11 a गयासा गजा अश्वाश्च. आईरिएहिं आरोहकैः; b गयासाईरिएहिं गताशा आचार्यास्तेषां वचनैः. 13 a °विमीसु °विमिश्रम्; पवासिएहिं पथिकैः; b पवासिएहिं प्रपाश्रितैः 14 ससिपहपायारहिं चन्द्रप्रभावत् प्राकारैः.

15. 1 a अविहंडियाइं निरन्तराणि, अविच्छिन्नानि; b केउ केतुर्ग्रहो ध्वजा च, असंख्यातद्वीपापेक्षया केडु-शतानि कथ्यन्ते. 2 b अहिसित्तजिणेसराइं आभिषिक्तो जिनेश्वरो यैस्ते, तेषां मस्तकेऽभिषेकार्थं कलशाः सन्ति.

अवियाणियकरदप्पणविसेसि  
दीसइ सविंबु महुमत्तियाहिं  
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु  
अंगणवावीसयदलहु जाइ  
संजणियबहलमयरंदरंगु  
तं वेय खुडइ मत्तउ विहंगु

माणिकखइयभिच्चीपएसि ।  
मण्णिवि सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।  
णिद्धाडिउ सासाणिलि घुलंतु । 5  
जलकीलिरबालावयणि ठाइ ।  
जहिं सररुहु संबोहइ पयंगु ।  
सिरिहरहो असुंदरु दुट्टसंगु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससिरँविअंतविहूसिउ ॥

उवरिविलंबियतरणिहे सग्गे धरणिहे णावइ पाहुडु पेसिउ ॥ १५ ॥ 10

16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु  
जहिं णेहहो भरिउ विहाइ माणु  
कामिणिकमवियलियकुंकुमेण  
कणिरँणियसुकिंकिणिणीसणेहिं  
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि  
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ  
जहिं धूवधूमकयमणवियार  
जहिं विजयवडहदुंदुहिसरेहिं  
णवदिणयरकरतंबिरइ गोसि

बहुसंथउ णं जडचट्टवग्गु ।  
पूरिउ पत्थेणं कणेहिं दोणु ।  
णिल्हसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।  
गुप्पइ णिवडंतहिं भूसणेहिं । 5  
तंबोलुग्गालइ जणियसंकि ।  
णं अमराविमाणु णहाउ पडिउ ।  
जलहरभंतिणं णञ्चंति मोर ।  
सुव्वइ णं किं पि णारीणरेहिं ।  
वित्थिण्णइ जहिं पंगणपएसि ।

३ M °रविअंति विहूसिउ.

16. P पत्थेहिं. २ MBP कणिरणियकिंकिणी° ३ P सुम्मइ.

4 a स विंबु स्वप्रतिबिम्बम्; b सवत्ति सपत्नी; तियाहिं स्त्रीभिः. 5 a अलयावलि कुरुलकेशपंक्तिः; b सासाणिलि मुखश्वासानिले. 6 b पयंगु पतङ्गः सूर्यः. 8 a विहंगु हंसः. b सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपतेः पुरुषस्य दुष्टसंगोऽतीव दुःखदः. 9. णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्; ससिरविअंतविहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणि-विभूषितम्. 10. तरणि सूर्यः; पाहुडु प्राभृतम्.

16. I b बहुसंथउ बहु रत्नवस्त्रादिकं तेन संस्तृतः; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्गः. 2 b पत्थेण प्रस्थेन, पक्षे पार्थेन बाणेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्यः. 3 b णिल्हसइ स्वलति; जंतु गच्छन्. 4 b गुप्पइ पतति. 5 a खुप्पइ स्वलति. 6 a राउलु राजगृहम्; रेहइ शोभते. 7 a °कयमणवियार °कृतमनोविकाराः °कृतसंदेहाः मयूराः 8 a विजयवडह° विजयपटह°. 9 a-गोसि प्रभाते.



घत्ता-झेंदुउ जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं चलचोवाणहिं ताडिउ ॥ 10

जणियजणाणूरायहिं परकइवायहिं णावइ लोउ भमाडिउ ॥ १६ ॥

## 17

तहिं सेणिउ णामें अत्थि राउ  
कज्जेसु दच्छु संजायवेउ  
सीयामणु व्व रामाहिरामु  
णियसमयणिसेवियइट्टकामु  
पविदंडो इव णिदलियलोहु  
वयधारि व गुरुयणि मुक्कमाणु  
जोईसरु व्व हयरोसहरिसु  
जाणइ विग्गह संधाण ठाणु  
सत्तंगु वि पालइ रज्जु केम  
पवणो इव फेडियमंदमेहु  
मंडलियमउडपरिहिट्टवरणु

गारुडगुरु व्व विण्णायणाउ ।  
रिउवंसडहणि णं जायवेउ ।  
सूरो इव परदुल्लंघधामु ।  
पावणि व पयंडुदामथामु ।  
मयमारउ व्व णासियमओहु । 5  
सुरवरकरि व्व अविहंडदाणु ।  
णं खत्तधम्मु थिउ होवि पुरिसु ।  
णं वेर्योयकरणु महापहाणु ।  
पयईणिबहु णियदेहु जेम ।  
गोवालु व कयमहिसीसणेहु । 10  
जिणणाहु व णिहिलणिरायसरणु ।

घत्ता—णैवरेक्कहिं दिणि राणउ सो आसीणउ सिंहासणि दीहरकरु ॥

चेल्लिणिदेविई मंडिउ णं अवरुंडिउ वल्लरीइ सुरतरुवरु ॥ १७ ॥

17. १ MBP विग्गहु संधाणु ठाणु. २ MBP वइयाकरणु. ३ MBP अवरेक्कहिं. ४ P सह आसीणउ. ५ M चेल्लणदेवी°; B चेल्लिणि° P चेल्लणदेविहि.

10 झेंदुउ कन्दुक्कः; चो वा ण गेडी ( यष्टिः ). 11 परकइ वा य हि मिथ्यादृष्टिकविभिः.

17. 1 b विण्णायणाउ न्यायकुशलः; पक्षे विज्ञातसर्पः. 2 a संजायवेउ शीघ्रकारी. 3 b परदुल्लंघधामु शत्रुभिरलंघ्यः, सूर्य इव अजिततेजाः 4 b पावणि पवनपुत्रो हनूमान भीमो वा; पयंडुदामथामु उत्कट-पराक्रमः 5 a पविदंडो वज्रदण्डः; णिदलियलोहु निर्दालितलोभः, पक्षे °लोहः; b मयमारउ व्याधः; णासियमओहु नाशितमदौघः, पक्षे नाशितमृगौघः. 6 b अविहंडदाणु अविखण्डदानः, दानं मदस्त्यागश्च. 7 a °जोईसरु महामुनिः. 9 b पयई° प्रकृतयो लोका वातापित्तश्लेष्माणश्च. 10 a °मंदमेहु °अल्पमैघः, पक्षे, अल्प-मैघाः, मन्दमैघाः इतिकर्तव्यतासूदाः. 11 a °परिहिट्टु° °परिघृष्टु°; b णिहिल णिरायसरणु निखिलचरानशरणं, पक्षे, निर्गतरागाणां मुनीनां शरणम्. 12 अवरुंडिउ आलिङ्गितः.

## 18

अतुलिय<sup>१</sup>बलखलकुलपलयकालु  
 तामायउ तर्हि उज्जाणवालु  
 अणवरयविहियसामंतसेव  
 कुसुमसरपसरपसमणसमत्थु  
 अहिमयरखर्य<sup>२</sup>रणरणामियपाउ  
 आहंडलणिम्मियसमवसरणु  
 चउतीसातिसयविसेसवंतु  
 परमप्पउ परमु महाणुभाउ  
 उप्पाइयकेवलु<sup>३</sup> विमलणाणु  
 जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु  
 तं णिसुणिवि दुज्जणहिययसल्लु  
 परिवड्ढियजिणधम्माणुराउ  
 लहु पणविउ सत्तपयाइं गंपि

जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।  
 सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।  
 सो पभणइ भो भो णिसुणि देव ।  
 णीसेसमंगलासउ पसत्थु ।  
 तेल्लोक्कणाहु जिणु वीयरउ । 5  
 चउदेवणिकायाणंदकरणु ।  
 अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।  
 तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।  
 अट्टविहपाडिहेराहिहाणु ।  
 विउल्लइरि पराइउ वड्डमाणु । 10  
 परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।  
 आसणु मुएवि रायाहिराउ ।  
 एहउ थुइवयणु कैरंतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥

जय णिहयणियामय भरहणियामय फुप्फयंततेयाहिय ॥ १८ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सम्मइसमागमो णाम

पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥

॥ संधि ॥ १ ॥

18. १ B °वलु. २ M °खयरणिव°. ३ MB °केवलविमल°. ४ M विउलइर. ५ MBP कहंतु.

18 1 b जामच्छइ यावदास्ते. 2 b °बाहुडालु °प्रलम्बहस्तः. 4 a कुसुमसर° काम°, b णीसेस-  
 मंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रयः 5 a अहिमयर° आदित्य°. 6 a आहंडल° इन्द्र°. 7 b अणंतु शुद्धात्म-  
 द्रव्यापेक्षयानन्तः, संतु पर्यायापेक्षया सान्तः. 10 b विउलइरि विपुलाचले; पराइउ प्राप्तः. 13 a गंपि गत्वा;  
 a करंतु उच्चरन्. 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित. 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग; भरहणियामय  
 भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामकः; पुप्फयंततेयाधिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोधिक.

II

पणिवाउ करेवि पसणमणु भत्तिरायरहेसुच्छलिउ ॥

सो णरवइ सहुं णियपरियणिण पासु जिणिंदहु संचलिउ ॥ ध्रुवकं ॥

I

पहयाणंदभेरि वल्लु चल्लिउ  
भाविणि का वि देवंगुणभाविणी  
का वि सचंदण सहइ महासइ  
कुवलउ का वि लेइ जसधारिणि  
रुप्पयथालु का वि घुसिणालउ  
पवरकसणगंधोहकरंबउ  
कणयवत्तु काइ वि करि धरियउ  
णावइ णहयलु उडुविप्पुरियउ  
का वि ससंख समुइसही विव  
का वि सदप्पण वेसावित्ति व

पुरणारीयणु हेरिसुप्पेल्लिउ ।  
चलिय सँ कमलहत्थ णं गोमिणि ।  
णं मलयइरिणियंबवणासइ । 5  
णं वररायवित्ति रिउदारिणि ।  
ससिबिंबु व संझारायालउ ।  
उवरजंतु व णँवरविबिंबउ ।  
इंदणीलमउ मोत्तियभरियउ ।  
गुरुचरणारविंदु संभरियउ । 10  
का वि सकलस णिहाणमही विव ।  
का वि सरस कइकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron.—

आदित्योदयपर्वताद्गुरुतराचन्द्रार्कचूडामणे—  
रा हेमाचलतः कुशेशानिलयादा सेतुबन्धाद् दृढात् ।  
आ पातालतलादहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
कीर्तिर्यस्य न वेद्मि भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

GK give it at the beginning of the third Samdhi and have उरुतरात् for गुरु-तरात्; चूडामणे: for चूडामणे: and कीर्ति. कस्य न वेत्ति for कीर्तिर्यस्य न वेद्मि.

1. १ M पणवाउ. २ MB °रयसु°. ३ MBP रहसुप्पेल्लिउ. ४ MBP देवगुरुभाविणी. ५ MBP सहत्थकमल. ६ P णं रवि°.

1. 1 रहसु च्छ लि उ हवेंण उद्गतः 2 पासु पार्श्वम्. 3b उ प्पे ल्लि उ प्रेरितः 4 a भा वि णि भामिनी स्त्री; °भा वि णि °भावनायुक्ता, b गो मि णि लक्ष्मीः 5 b °व णा स इ °वनस्पतिः. 6 a कु व ल उ नीलोत्पलं पृथ्वी-मण्डलं च. 7 a घु सि णा ल उ कुङ्कुमयुक्तम्; °रा या ल उ °रागयुक्तम्. 8 a °क स ण गं धं कृष्णागुरु कस्तूरिकादि वा; b उ व र जं तु राहुणा प्रस्थमानम् . 9 a क ण य व तु कनकपात्रम्. 10 a उडु° नक्षत्रं. 11 a स सं ख शंखयुक्ता; समु इ स ही पृथिवी, b णि हा ण म ही निधानघटयुक्ता पृथ्वी. 12 b सर स इक्षुरसादियुक्ता शृंगारादि-रसोपेता च.

का वि जिणिंदमत्तिपब्भारें  
काहि वि दिट्ठउ पयडु थणत्थलु  
मयणंकुसवणरेहाँरुणियउ  
काहि वि घुलई हारु मणिमंडिउ  
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं

णच्चइ भरहभाववित्थारें ।  
णाइं णिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।  
समवंतेण पिर्णण ण गणियउ । 15  
णावइ कामे पासउ मंडिउ ।  
वज्जंतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

घत्ता—आरूढंउ महिवइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥

णं महिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

## 2

चोइउ कुंजरु कमसंचारें  
चामरचवलें छत्तंधारें  
पत्तु णरेसरु तियसरवणणउं  
णिम्मिउं सइं सोहम्मपहाणें  
माणखंभमणितोरणदामहिं  
जलखाइयधूलीपायारहिं  
वैल्लीवणपरिभमियमरालहिं  
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं  
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं  
सरि ग म प ध णी सरसंघायहिं  
उच्चसिरंभाणच्चणभावहिं  
जं रेहइ तहिं राउ पइट्ठउ

गंडालीणभमरझंकारें ।  
गच्छमाणु संहुं णियपरिवारें ।  
दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउं ।  
ठियउ एकजोयणपरिमाणें । 5  
कप्पियकप्पपायवारामहिं ।  
तियससरासणवण्णवियारहिं ।  
चेईहरणाणाणडसालहिं ।  
खयरुच्चाइयकुंसुमोमालहिं ।  
वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।  
तुंबुरुणारयगेयणिणायहिं । 10  
कणरणंतआलावणिरावहिं ।  
परमेसरु सवडंमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ. ८ BP पिएण व. ९ MBP घुलिय. १० MBP आरूढु महीवइ.

2. १ M छत्तें धारें; P छत्ताधारें. २ P णिय सह परिवारें. ३ M वल्लिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं.

13 b भरह भा व वि त्थारें संगीतभावविस्तारेण. 14 b णि रं ग कुं भि कुं भ त्थ लु काम एव गजंस्तस्य कुम्भस्थल-  
मिव. 15 a मयणंकुस° नख°; b समवंतेण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भर्त्रा. 16 b पासउ बन्धनपाशः.  
17 a °सहासहिं °सहस्रैः. 18 मत्तगइ मत्तगजे. 19 महिहरि पर्वते.

2. 1 a कमसंचारें चरणसंचरणेन. 2 a °चवलें °चपलेन. 3 a °रवणणउं रम्यम्. 5 b कप्पिय°  
विकुर्वणया कृत°. 6 b तियससरासण° इन्द्रधनुः. 7 b णडसालहिं नाट्यशालाभिः. 8 a °वमालहिं  
°कोलाहलैः; b कुसुमोमालहिं कुमुमानामव समन्तान्मालाभिः. 11 b आलावणि वीणा. 12 a जं रेहइ  
यत् समवसरणं शोभते; b सवडंमुहु संमुखः.

घत्ता—सीहाँसणसिहरासीणु जिणु णिम्मलु जर्णजणणत्तिहरु ॥  
पारद्धउ थुणहुं णराहिविण भुवणंभोरुहदिवसयरु ॥ २ ॥

## 3

जय सयल-	भुवणयल-	
मलहरण	इसिसरण ।	
वरचरण-	समधरण ।	
भवतरण	जरमरण-	
परिहरण	जय वरुण-	5
वइसवण-	जमपवण-	
दणुदमण-	सिरिरमण-	
दिवसयर-	फणिखयर-	
ससिजलण-	सिरणमण-	
मउडयल-	मणिसलिल-	10
धुयैविमल-	कमकमल ।	
जय णिहिल-	विहिकुसल ।	
णयमुसल-	हयपवल-	
सुयसवल-	दियकविल-	
सिवसुगय-	कइकुणय-	15
वहदलण	मयमलण ।	
सवरहिय	दुहरहिय ।	

५ MBP सिंहासण°. ६ B जिणु जणणत्ति°

3. १ B जलमरण. २ BP धुवविमल ३ MBP कयकुणय° but GK कइकुणय and T कवि-  
कुनय°. ४. MBP मयमहण. ५ B omits दुहरहिय.

13 °जण णत्ति °संसारदुःखम्. 14 थुण हु स्तोतुम्.

3. 2 b इसि° ऋषि°. 7 a दणु दमण° इन्द्र., b सिरिरमण° विष्णु., वरुणादिज्वलनपर्यन्तानां देवाना  
शिरोनमनमुकुटतलमणिसलिलधौतक्रमकमल. 12 a-b णिहिलविहि° सागारानागारसंबन्धि सकलमनुष्ठानम्.

13 a णयेत्यादि - नया एव मुसलास्तैर्हताः प्रवलद्विजादीनां कुनयपथा येन. 16 b मयमलण मदचूर्णकर्ता.

17 a सवरहिय स्वपरहित,

मुणिमहिय	महमहिय ।	
सुरहिरस-	विससरिस ।	
कुसुमसर-	अणवसर ।	20
जय दुरह-	हरिसरह ।	
बुहतिलय	सुहणिलय ।	
रइविलय	जुइवलय-	
जियतरणि	जय करुणि ।	
जडदमिर-	मणभमिर-	25
घणतिमिर-	हरमिहिर ।	
जय सुमुह	जय समह ।	
जय सुमण	जर्यं गयण-	
चुयसुमण-	पहंगमण ।	
जर्यं चलियचमरिरुह	जय ललियसुरकुरुह ।	30
जर्यं गहिरमहुरझुणि	जय चरमपरममुणि ।	
जय विसयविसिगरुल	जयधवल जसधवल ।	
जय रसियजसवडह	गयगरुह जय अरुह ।	

घत्ता—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेप्पिणु चउगइहे ॥

जर्यं मयमयणिवहमयाहिवइ मइं णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥

35

६ MBP गयणयल°. ७ B णहगमण. ८ B omits this line. ९ B omits this line. १० MB जय जय मयणिवह°.

18 b महमहिय मखाः यज्ञाः मथिता येन, अथवा, महेसु पूजासु महितः पूजितो वाञ्छितो वा.  
 19 a सुरहिरस° गोदुग्धम्; °विससरिस विषं तत्र समः 20 b °अणवसर °अविषय. 21  
 a-b दुरहहरिसरह दुष्पापसिंहस्याष्टापद. 24 b करुणि करुणायुक्त. 25 a जडेत्यादि—जडानां मूर्खाणां  
 दमकाः मनसा भ्रान्तिं प्राप्नुवन्तः ये मिथ्यादृष्टयः ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य. 32 a विसय-  
 विसिगरुल विषयाः एव सर्पास्तेषां गरुड. 32 b जयधवल जगतां मङ्गलध्वज. 33 b गयगरुह अनिन्य.  
 35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्; °मयाहिवइ सिंहः; पंचमगइ सिद्धावस्था.

4

इय वंदिवि जिणु पालियरड्डु  
 संभवंतभवभारभयंगउ  
 पुच्छइ महिवइ संजमधारा  
 पावणासु चउवग्गाइण्णउं  
 तं णिसुणिवि आघोसइ गणहरु  
 सुणि सेणिय मयमोहविहीणहि  
 णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ  
 पढमु समासमि कालु अणाइउ  
 जगपरिणामहु सो सहयारिउ  
 मुणइ को वि सम्मत्तवियक्खणु

एयारहमइ कोट्टि णिविट्टुउ ।  
 भूवइ भत्तिभारणवियंगउ ।  
 अक्खहि गोत्तमसामि भडारा ।  
 जेम महापुराणु अवइण्णउं ।  
 वासारत्ति पत्ति णं जलहरु । 5  
 अरहंतावलीहि बोलीणहि ।  
 एहउ वीरजिणिंदे वुत्तउ ।  
 सो अणंतु जिण्णणं जोइउ ।  
 अरसु अगंधु अरूउ अभारिउ ।  
 णिच्छयकालु पवत्तणलक्खणु । 10

घत्ता—भो मुणिपयपंकयभमर णिव तच्चु ण कासु वि हउं रहमि ॥  
 ववहारकालु परमेट्टिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अणुअंतरयरु समउ भणिज्जइ  
 ऊसांसु वि आवलिहिं दु संखहिं  
 सत्तहि थोवएहिं लवुं भणियउं  
 हौंति महामुणिचित्तावडियहि

आवलि तेहिं असंखहिं किज्जइ ।  
 सचूसासहिं थोवउ लेक्खहि ।  
 इह पियकारिणितणएं मुणियउं ।  
 सडु जि अट्टीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वंदिय. २ MBP भवभाव°, K भवभाव° but corrects it to भवभार°; T भवभाव° but explains it as संसारे परावर्ता प्रचुराः. ३ MBP जिण्णणं.

5. १ M ओसासु. २ MBP लक्खहि. ३ MBP लउ.

4. 2 a संभवतेत्यादि— उत्पद्यमानसंसारप्राचुर्यभयत्रस्त . 4 a चउवग्गाइण्णउ धर्मार्थकाममोक्षै-  
 राकीर्णः. 5 b वा सारत्ति वर्षाकाले. 6 b बोलीणहि व्यतीतायाम्. 7 a णाईत्यादि— भाविन्या अर्हदावल्या  
 आदिरन्तश्च नास्ति. 8 a समासमि संक्षेपतः कथयामि. 9 b अमारिउ अगुरु स्पर्शरहितः. 10 b पवत्तण-  
 लक्खणु प्रवर्तनालक्षणो निश्चयकालः. 11 तच्चु तत्त्वम्, रहमि गोपयामि.

5. 1 a अणुअंतरयरु अण्वोरन्तरं एकमाकाशप्रदेशं परित्यज्य यावता कालेन एक. अणुः द्वितीयमाकाशप्रदेश  
 गच्छति स कालः समय इति कथ्यते; b असंखहिं असख्यैयै. समयैः आवली; 2 a दुतु पुनः 3 b पिय-  
 कारिणितणएं महावीरेण. 4 b सडुत्यादि—घटिकाया सार्धा एवाष्टत्रिंशल्लवा भवन्ति.

घडियहिं दोहिं मुहुत्तहु अवसरु  
तेत्तियहिं जि दिर्यसहिं विरइज्जइ  
विहिं मासहिं उहुँमाणु णिवद्धउ  
विहिं अयणहिं संवच्छरु वुच्चइ  
विहिं जुगेहिं दसवरिसइं जायइं  
सउ दहेहिं ताडिज्जइ जामहिं

तसिहिं तेहिं जाइ णिसिवासरु । 5  
मासु महारिसिणाहिं गिज्जइ ।  
उहुहिं तीहिं पुणु अयणु पसिद्धउ ।  
पंचहिं वच्छेरेहिं जुगु वुच्चइ ।  
दहगुणियइं सयसंखइ आयइं ।  
आवइ अइसहासु वि तावहिं । 10

घत्ता--सो सहसु वि दहहउ दससहसु होइ समासिउ मइं णिउणु ॥

ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उप्पज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

## 6

संखाणाणिहिं णिम्मिउं चंगउ  
जाणिज्जइ फुडु अक्खियमेत्ती  
पुव्वंगे पुव्वंगु णिहम्मइ  
वरिसहं सत्तरि कोडिउ लक्खहं  
परमागमि जं देवे वद्धउ  
पव्वु णउट्टु कुमुट्टु वि पउमक्खउ  
अडहु अममु हाहा हूहू तिह  
मउलय लय वि महालइयंगउ  
सीसपकंपिउ हत्थपहेलिउ  
णाणाणामपमाणहिं भेज्जउ

चउरासीलक्खहिं पुव्वंगउ ।  
लक्खसएण जि कोडि पउत्ती ।  
जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।  
छप्पण्णेव ताउ संहसंखहं ।  
पुव्वपमाणु एउ तं लद्धउ । 5  
णालिणु कमल्लु तुडियउ वि ससंखउ ।  
जाणहि जिणवरेण जाणिउं जिह ।  
पुणु वि महालयणामपसंगउ ।  
अचलप्पु वि वीरे उम्मीलिउ ।  
एत्तिउ कालु होइ संखेज्जउ । 10

घत्ता--परमाणु अट्टु जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुब्भवइ ॥

अट्टुहिं तसरेणुहिं पिंडयहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं. ५ MBP रिउमाणु ६ MBP बुच्चइ. ७ MBP दससहस.

6. १ K सहसक्खहं. २ M पुव्वे पमाणु. ३ B हत्थपहिल्लउ; P °पहिल्लिउ. ४ MBP रहरेणु.

7 a उहु माणु ऋतुप्रमाणम्. 10. a ताडिज्जइ गुण्यते; b अइसहासु अब्दसहस्रम्. 11 दहहउ दशगुणितः.

6. 1 a संखाणाणि हिं गणितज्ञैः. 2 a अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण, 3 a णिहम्मइ गुण्यते.

6 a पउमक्खउ पञ्चसंज्ञम्. 8 a मउलय मृदुलता; लय लता; महालइयंगउ महालतिकाङ्गम्. 9 a हत्थपहेलिउ हस्तप्रहोलिका; b अचलप्पु अचलात्मकम्; उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम्. 10 a-भेज्जउ भेषः.



अट्टहिं रहरेणुयहिं समग्गहिं  
 लिक्ख भणिय पुणु अट्टहिं लिक्खहिं  
 अट्टहिं सरिसवेहिं परिमाणिउ  
 परमप्पयदिट्टउ को दूसइ  
 छंगुलु पाउ विहत्थि दुवाई  
 चउरयणिल्लु दंहु मणि भावहि  
 जोयणु तं पि सएहिं गुणिज्जइ  
 एम महाजोयणु वक्खाणिउं  
 तस्स पमाणे खम्मइ खोणी  
 कत्तरियहि अँविहायहिं सुहुमुहुं  
 होउ पहुच्चइ लेक्खे म गणहि  
 जइयहुं रोमरासि सा खिज्जइ  
 तेहिं असंखिहिं उद्धारुल्लउ  
 तं पि असंखगुणिउं अद्धारउ  
 होइ समुद्दोवमु चुअणाडिहिं

चिहुरग्गउ अट्टहिं चिहुरग्गहिं ।  
 सियसिद्धत्थु कहिउ णिहयक्खहिं ।  
 जवपमाणु देवागमि आणिउं ।  
 अट्टजवंगुल सूरि समासइ ।  
 दोहिं ताहिं किर रयणि वि हूई । 5  
 दंडहिं अट्टसहासिहिं पावहि ।  
 पंचहिं पुणु लोयहु दंसिज्जइ ।  
 जं जगमाणकरणु अहिणाणिउं ।  
 परिवट्टुलिय सँपरियरतिउणी ।  
 सा पूरिज्जइ सिसुअविरोमहुं । 10  
 संवच्छरसइ एक्कु जि अवणहि ।  
 तइयहुं पलिओवमु धुवु पुज्जइ ।  
 दीवसमुद्दपमाण परुल्लउ ।  
 भवँठिदिआउपमाणाधारउ ।  
 पल्लोवमदहकोडाकोडिहिं । 15

घत्ता--तेत्तियहिं जि सायरसमहिं फुहु कालचक्कु मइं लक्खियउ ॥

लइ एउ वि अवरु वि पुणु भणमि केवलणाणे अक्खियउ ॥ ७ ॥

7. १ MBP लिहक्ख. २ MBP लिहक्खहिं. ३ M जाणिउ. ४ MBP पंचहिं लोयहु पुणु दरिसिज्जइ  
 ५ MBP खोणी. ६ T<sub>p</sub> सपरिरय and adds सपरिरयेति पाठेऽप्ययमेवार्थः ७ MBP आविभायहिं. ८ MP  
 घुउ; B धुवु. ९ MBP हवइ तियआउ°.

7. 1 b चिहुरग्गउ रोमाग्रम्. 2 b सियसिद्धत्थु श्वेतसर्षपः; णिहयक्खहिं जितेन्द्रियैर्महामुनिभिः.  
 3 a परिमाणिउ एकत्र कृत्वा; b देवागमि जिनाग. 5 a दुवाई द्वाभ्या पादाभ्याम्, b रयणि हस्त.  
 (अरत्तिः). 8 b जगमाणकरणु लोकप्रमाणम्; अहिणाणिउं अभिज्ञातम्. 9 b सपरियरतिउणी स्व-  
 परिधिना त्रिगुणा. 10 b अवि° मेषकः. 11 b अवणहि स्फेटय. 13 b परुल्लउ परम्. 14 b भवँठिदि°  
 भवस्थिति°. 15 a चुयणाडिहिं गालितघटिकाभिः; पल्योपमैर्दशकोटिभिः सागरोपमं स्यात्.

## 8

सुसमसुसमु अण्णेकु वि सुसमउ  
 दुस्समु अद्दुस्समु पविहँत्ता  
 ए ओहामियदावियइड्डिहिं  
 भुयबलविहवसरीरिसरीरहिं  
 वडुंतेहिं होइ उच्छप्पिणि  
 सायराहं विंभियगिन्वाणहिं  
 तीहिं मि कालहिं तिणिण विहत्तइं  
 दरिसियमाणवदेहारोयइं  
 छँच्चउदुधणुसहाससरीरइं  
 तिणिणदुएक्कपल्लथियजीवइं  
 उत्तिममज्झिमाइं णिक्किट्टइं

सुसमंदुसमु पुणु दुस्समँसुसमउ ।  
 इय छक्काल वीरपण्णत्ता ।  
 परिभमंति जगि हाणिपवुड्डिहिं ।  
 धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं ।  
 ओहट्टंतएहिं अवसप्पिणि । 5  
 चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं ।  
 दहविहविडविपसाहियखेत्तइं ।  
 इच्छासंणिहमाणियभोयइं ।  
 वोरक्खामलमेत्ताहारइं ।  
 रयणाहरणविहूसियगीयइं । 10  
 भोयभूमिचिंधाइं पइट्टइं ।

घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मित्तु तहिं सीहु गइंदे सहं वसइ ॥

लायण्णवण्णविन्भमभरिउ जणवयजोव्वणु णउ ल्हसइ ॥ ८ ॥

## 9

बहुवोलीणइ तइयइ कालइ  
 अट्टारहधणुसयतणु थिरजसु  
 पडिसुइ णामे जायउ कुलयरु  
 अमममियाउ राउ मंथरगइ  
 पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ

थियपल्लोवमट्टभायालइ ।  
 पलिओवमंदहमंसु चिराउसु ।  
 पुणु तेरहसयचावपईहरु ।  
 अवरु वि हूवउ णामे सम्मइ ।  
 अट्टसयाइं सरासणत्तुंगउ । 5

8. १ MP सुसमुसुसमु. २ MBP सुसमुदुसमु. ३ MBP दुस्समुसुसमउ. ४ P पवहँता but gloss प्रविभक्ताः पृथग्गुणिताः. ५ MBP छचउदुधणुसहास°. ६ MBP विहूसियगीवहिं.

8. 1 a अण्णे कु द्वितीयः. 2 a पविहत्ता प्रविभक्ताः. 3 a ए एते षट् कालाः; ओहामियदाविय-इड्डिहिं स्फोटितदर्शितऋद्धिभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्; अवसर्पिण्यां ऋद्धिः स्फेद्यते उत्सर्पिण्यां ऋद्धिर्दृश्यते. 6 a सायराहं सागरोपमैः. 7 b दहविहेत्यादि-दशप्रकारैः कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि; मद्याङ्गतूर्यभूषास्वगज्योतिर्दापगृहाङ्गकाः । भोज-नामत्रवस्त्राङ्गा दशधा कल्पशाखिनः. 8 a °आ रो य °आरोग्य; b इच्छासंणिहं इच्छानुरूपाः. °मा णि य° प्राप्त. 9 b °अक्ख° विभीतकः. 10 a °पल्ल थिय जी व इं °पल्यस्थितिजीवितानि. 11 b पइट्टइं प्रविष्टानि. 12 णउ ल्हसइ न पतति.

9. 1 b °अट्ट भायालइ अष्टमे भागे काले. 2 b पलिओवमदहमंसु पल्योपमस्य दशमो भागः. 3 b पईहरु प्रदीर्घतरः. 4 a मंथरगइ मन्दगतिः.

अडडपमाणियाउ खेमंकरु  
 सत्तसयाइं पंचसत्तरि धणु  
 खेमंधरु णामें णं दिग्गउ  
 सयसत्तउ पंचासहिं जुत्तउ  
 कमलजीवि सीमंकरु भण्णइ  
 णलिणाउसु किर को णउ मण्णइ  
 सत्तसयइं पंचुत्तरवीसइं  
 सिरिकरपल्लवलालियकंधरु  
 पणुवीसुज्झिणहिं दिहिगारउ  
 तेत्तिणहिं पुणु गुणमणिमंडिउ  
 ऐक्कु वि पोमु जासु संजीविउ  
 छहसयपणहत्तरिइ पसाहिय  
 कैम्मयाहं कामिणिकयविंभउ  
 पउमंगाउ महीयलि अच्छिउ  
 पुणु वि जसस्सि पुण्णचंदाणणु

संभूयउ सुभूयखेमंकरु ।  
 उच्छिउ अण्णु वि उप्पण्णउ मणु ।  
 तुडियदइं जीवेप्पिणु सो भूउ ।  
 गैत्तपमाणउ जासु पउत्तउ ।  
 तहु चरित्तु जइ सुरगुरु वण्णइ । 10  
 वाणासणहं सरीरसमुण्णइ ।  
 जासु जिणिंदंभडारउ भासइ ।  
 सो संजायउ पुणु सीमंधरु ।  
 कोदंडहं सएहिं गरुयारउ ।  
 विमलबाहु हुउ पंडापंडिउ । 15  
 मुउ सुहकम्मं सुरहरु पाविउ ।  
 जासु देहउच्छेहु पसाहिय ।  
 णामें सुपसिद्धउ चक्खुम्भउ ।  
 पच्छा खयकालेण णियच्छिउ ।  
 उप्पण्णउ पत्थिवपंचाणणु । 20

घत्ता—उडुमाणइं सयइं कैणासणहं पण्णासाहियाइं गणमि ॥

तहु देहुच्चत्तणु एत्तउउ जीविउ कुमुदु एक्कु भंणामि ॥ ९ ॥

## 10

एयहु अक्खियाइं जेत्तियइं जि  
 पुणु जायहु वलतुलियगइंदहु  
 कुमुयंगाउणिबद्धपमाणहु

पंचवीसरहियइं तेत्तियइं जि ।  
 धणुसयाइं अहिचंदणरिंदहु ।  
 णिउ सो कालें अमरविमाणहु ।

9. १ MP मुउ. २ MBP पण्णासहिं. ३ MBP गत्तमाणु जगि जासु पउत्तउ. ४ MP जिणिंदु  
 भडारउ. ५ MBP एक्कु पोमु जा सो संजीविउ. ६ MBP कामुयाहं. ७ BP वाणासणह. ८ MBP गणिउं.  
 ९ MBP देहुच्चत्तणु. १० MBP भणिउं.

6 b सुभूय खेमंकरु सुष्ठु प्राणिना क्षेमकर्ता. 7 b उच्छिउ उच्छिन्नः. 10 a कमलजीवि कमलाङ्कप्रमा-  
 णायुः. 11 a णलिणाउसु नलिनाङ्कायुः 14 a दिहिगारउ धृत्तिकारकः. 15 b पंडापंडिउ पण्डा बुद्धि-  
 स्तया पण्डितश्चतुरः. 18 a कम्मयाहं कार्मुकाणा धनुषाम्. b चक्खुम्भउ चक्षुष्मान्. 19 b णियच्छिउ  
 निरीक्षितः. 21 उडु ऋतु, कणासणहं धनुषाम्. 22 कुमुदु कुमुदाङ्कायुः.

10. 2 a वलतुलियगइंदहु गजेन्द्रवलनिर्दलनस्य.

पंचसयइं पुणु सयसंजुत्तइं  
 णउदाउसु महिवइ संजायउ  
 तहु पच्छइ गच्छंतें कालें  
 अज्जवलोयहु आसि पहाणउ  
 साययवीढहं सयइं महिड्डिउ  
 गउ सो णउयंगउ जीवेप्पिणु  
 सड्डुइं पंचसयइं रणचंडहं  
 पव्वाउसु पय पालहुं जाणइ  
 कंडमोक्खकरणाहं सउण्णउ  
 पुव्वकोडिजीवियसंपुण्णउ  
 तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ  
 गुरुउद्धरियवंसु वरमेहलु  
 भूसणरयणकिरणहयतममलु  
 मउडसिहरु हारावलिणिज्जरु  
 णं अवयरियउ जंगंमु मंदरु  
 घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं बाहुद्धारियभुर्वणभरु ॥

जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुलयरु पवरु ॥ १० ॥

20

## II

णहयलि जंतजणेण णं याणिय  
 अण्णु वि रुइरुक्खक्खइ दिट्ठइं

पहिलएण रविससि वक्खाणिय ।  
 बिंदुयबिंदुएहिं उवरिट्ठइं ।

10. १ MBP चावहिं. २ MBP चंदाहणामु. ३ MBP उच्छज्जंतें. ४ MBP add after this line दीहवाहु उरयलविधिण्णउ. ५ B °वंसु णं मेहलु. ६ M °जोग°; BP °जोग°. ७ MBP जंगममंदरु. ८ MBP °भुवणहरु. ९ MBP कुलयरपवरु.

11. १ M ण जाणिय.

7 a अज्जव लो य हु आर्यलोकस्य; b बहु जा ण उ बहुश्रुतः. 8 a सा य यवीढहं धनुषाम्. 9 b सुर बों दि देवशरीरम्. 10 a रणचंडहं संग्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम्. 11 a पव्वा उ सु पर्वप्रमाणायुः. 12 a कं ड-मोक्ख कर णाहं धनुषाम्. 13 b स भ्मा वा उ ण्ण उ सद्भावपूर्णः. 15 b °अ म य ह लु अमृतफलम्. 16 b सयणु-तेयेत्यदि-स्वतनुतेजसांशोतितनभस्तलः. 19 आय हं एतेषाम्. 20 जिय लो य हो जीववर्गस्य.

11. 1 a णहयलीत्यादि-आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्वात् न ज्ञातौ; b प हिल ए ण प्रथमकुलकरेण प्रतिश्रुतिना. 2 a रु इ रुक्ख क्ख इ कल्पवृक्षस्य क्षयात्, ज्योतिरङ्गक्षयात्.

वीण वि लोयहु भयरिद्वं  
 ह्या जे मृग दारुण जइयहुं  
 सिंगि णक्खि दाढि वि परिहरिया  
 चोत्थण पुणु णउ उप्पेक्खिउ  
 ताडिय ते दढदंडपहारिहिं  
 वियलियफल तरु विरइयमेरइ  
 पविरलदुमकालइ कुज्झंता  
 छट्टण मणुणा अणुयंधे

अहरत्तइ णक्खत्तइं सिद्वं ।  
 तइयएण ते साहिय तइयहुं ।  
 सोम्मं सुलक्खण णियडंइ धरिया । 5  
 लोउ मृगंहिं खज्जंतउ रक्खिउ ।  
 पंचमेण बहुबुद्धिपयारिहिं ।  
 अज्जव सुणिरोहिय णियकेरइ ।  
 फललोहें कोहें जुज्झंता ।  
 वारिय णर कयसीमाचिंधे । 10

ग्रत्ता—कुलयरपवरेण वि सत्तमेण णियमइविहवें भाविउ ॥

पल्लाणिवि ह्यगयवरवसहभारारोहणु दाविउ ॥ ११ ॥

## 12

अट्टमेण चंगउ उवएसिउ  
 णवमएण सुयमुहससि दरिसिउ  
 खणु जीवेप्पिणु मुउ सोमालहुं  
 एयारहमइ कुलयरि जायइ  
 जीउ ण वच्चइ कइवयदिघसइं  
 णंदइ पय पयाइ संजुत्ती  
 विहियइं सरिसमुइजलजाणइं  
 तक्कालइ जायइं णिम्मगइं

डिंभयदंसणभउ णिण्णासिउ ।  
 तं जोईवि जणु हियवइ हरिसिउ ।  
 दहंमं केलि पयासिय बालहुं ।  
 णंदणि माणववंदहु ह्यइ ।  
 वारहमइ हुइ बहुयइं वरिसइं । 5  
 तेरहमेण वियप्पिय वित्ती ।  
 गयणलग्गगिरिवरसोवाणइं ।  
 कुसरि कुसायर कुकुहर दुगइं ।

२ MBP भिग. ३ M सिंगि य णक्खि, B सिंगणक्खि. ४ MBP सोम. ५ B णियडयधरिया. ६ P चउथएण.  
 ७ MBP भिगहि. ८ MBP अणुबंधे. ९ P सत्तमइ. १० MBP भाविउ. ११ MBP दाविउ.

12. १ P जोएप्पिणु हियवइ. २ P दहमइं. ३ MBP माणवविंदहु.

3 a ० रिद्वं उत्पाता. 4 b सा हिय साधिताः, मृगस्वरूपं कथितमित्यर्थः. 8 a ० मे रइ मर्यादया; b सुणि-  
 रोहिय सुनिवद्धाः. 10 a अणुयंधे अनुबन्धेन आग्रहेण.

12 2 a सुयमुहं पुत्रमुखं. 3 a सोमालहुं सुकुमाराणाम्. 5 a जीउ जीवः. 6 a पयाइ पुत्रा-  
 दिभिः; b वियप्पिय विकल्पिता रचिता, वित्ती जीविका. 8 a णिम्मगइं निश्चितमार्गाणि, कुसरि कुनदी;  
 कुकुहर कुपर्वत.

घत्ता—जांणं मणुणा चोद्देहमइण णरसिसुणालइ खंडियइं ॥

कसणब्भइं थियइं णहंगणइ चलसोदामणिमंडियइं ॥ १२ ॥

10

## 13

विसंकालिदिकालणवजलहरपिहियणहंतरालओ ।

धुर्यंगयगंडमंडलुड्ढावियचलमत्तालिमेलाओ ॥

अविरलमुसलसरिसथिरधारावरिसभरंतभूयलो ।

हयरवियरपयावपसरुगयतरुतणणीलसइलो ॥

पडुतडिर्वंडणपडियवियडायलरंजियसीहदारुणो ।

5

णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥

गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।

महियलघुलियमिलियदुंदुहसयवयसालूरपोसणो ॥

घणचिक्खेल्लखोल्लखणिखेइयहरिणसिलिंबकयवहो ।

वियसियणवकलंबकुसुमुगययपिंजरियदिसिवहो ॥

10

सुरवइत्तावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।

विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥

पियपियपियलवंतवैप्पीहयमग्गियतोयविंदुओ ।

सरतीरुल्लंतहंसावलिञ्चुणिहलबोलसंजुओ ॥

चंपयचूयचारचंवचंदणचिंचिणिपीणियाउसो ।

15

बुट्टो ज्ञत्ति जस्स कालम्मि जए सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायए, ५ MBP चउदहमइण.

13. १ MBP विसि° and gloss in P सर्पः २ P धुव°. ३ P °ताडिपडण°. ४ M डिंडुह; P डेंडुह; B डुंडुह. ५ MBP °चिक्खल्ल°. ६ MBP °कयंब°. ७ MBP °वव्वीहय°. ८ P °विंदओ. ९ MBP °धव°.

10 कसणब्भइं कृष्णमेघाः; °सो दा म णि° विद्युत्.

13. 1 वि स° विषवत्कृष्णमेघः; °का लिं दि का ल° यमुनासदशकृष्णमेघः 2 °मे ल ओ मेलापकः समूहः. 3 °थि र धा रा° अखण्डवृष्टिः. 4 °स इ लो° पत्रयुक्तः. 5 °त डि° विद्युत्; विय डाय ल° विस्तीर्णपर्वतः; रंजिय शब्दित. 7 °सर सर° °जलस्वर°. 8 दुंदुह° निर्विषः सर्पः; सयवय शतपदः सर्पः; सालूर भेकः. 9 खणिखेइय गर्तायां निक्षिप्ताः; सिलिंब शिशुः. 11 °घण करि° मेघ एव हस्ती. 12 °रो सिय° कोपित. 13 °वप्पीहय° चातकः. 14 °हल बोल° कोलाहलः. 15 पी णिया उ सो एषां वृक्षाणां प्राणसिञ्चनं कृतम्. 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले; सुहयारि सुखकारी.

मुग्गकुलत्थकंगुजवकलवतिलेसीवीहिमासया ।  
 फलभरणवियकणिसकणलंपडणिवडियसुर्यंसहासया ॥  
 ववगयभोयभूमिभवभूरुह सिरिणरवइरमासही ।  
 जाया चिविहधण्णंदुमवेल्लीगुम्मपसाहणा मही ॥

20

घत्ता—तं पेक्खवि<sup>१२</sup> जणवउ संचलिउ मउ मेलेप्पिणु झत्ति तहिं ॥  
 लच्छीथणपेल्लियवच्छयलु अच्छइ णाहिणरिंदु जहिं ॥ १३ ॥

## 14

किं तडयडइ पडइ फोडइ धर  
 वंकउं हरियारुणु किं दीसइ  
 गयकप्पहुम तेत्थु णिसण्णा  
 अण्णइं कणभरियइं णिप्फण्णइं  
 अम्हइं जड उवायअवियाणा  
 भोज्जाभोज्जु तेत्थु किं होसइ  
 जो रसंतु वरिसइ सो णवघणु  
 जा गिरि दलइ चलइ सा विज्जुल  
 सुरतरुवरविणासि सुच्छाया  
 कहुयगरलु णोरसु वंचिज्जइ  
 खत्तियवंसत्थलथिरकंदें  
 णिवडमाणु अब्भुद्धरियउ जणु

विप्फुरंतु णिरु भेसावइ णर ।  
 देव देव किं गज्जइ वरिसइ ।  
 एवहिं अवर के वि उप्पण्णा ।  
 णिच्चमेव खगमृगंसंचिण्णइं ।  
 दीहरभुक्खायासें रीणा ।  
 तं णिसुणेप्पिणु महिवइ घोसइ ।  
 जं वंकउं दीसइ तं सुरधणु ।  
 चंचरीयचुं वियकोमलदल ।  
 कम्मभूमिभूरुह संजाया ।  
 जं महुरउ सुसाउ तं चिज्जइ ।  
 एम भणेप्पिणु णाहिणरिंदें ।  
 हत्थिकुंभि किउ मट्टियभायणु ।

5

10

घत्ता—कणकंडणसिहिसंधुक्कणइं पयणविहाणइं भावियइं ॥

कप्पाससुत्तपरियंहुणइं पडपरियम्मइं दावियइं ॥ १४ ॥

१० MBP °सुयसमासया. ११ M °वण्ण°. १२ MBP पेच्छिवि.

14. १ MBP °मिग°. MB सिवघणु. ३ P पिज्जइ. ४ MBP परियट्टणइं. ५ P °पडियम्मइं.

17 कलव कलमशालिः सुगन्धशालिः; तिले सी तिला अलसी च 18 °सहासया °सहसकाः. 19 णरवइ-  
 रमासही राज्यलक्ष्मीसखी. 21 मउ मदम्.

14. 1 a तडयडइ शब्दं करोति; धर पर्वतान्. 4 a अण्णइं क्षेत्रे धान्यानि. 5 a उवायअवियाणा  
 उपायाज्ञानाः; b भुक्खायासें क्षुधाक्लेशेन. 7 a रसंतु शब्दायमानः. 8 b चंचरीय° भ्रमराः. 10 a कहुय-  
 गरलु निम्बगुड्वाप्रमृतिः; b चिज्जइ भुज्यते. 11 a थिरकंदें मूलभूतेन. 12 a णिवडमाणु निपतन् म्रिय-  
 माणः. 13 सिहिसंधुक्कणइं अग्निप्रज्वालनविधिः; भावियइं उत्पादितानि. 14 °परियट्टणइं परिकर्षणानि;  
 °परियम्मइं निष्पादनानि.

## 15

तासु घरिणि मरुएवि भडारी  
 अमरहं पंतिइ पयपणवंतिइ  
 कमयलराएं काइं गविट्टु  
 पण्हिहिं रत्तउ चित्तु पदंसिउं  
 अंगुट्टुणइं जं गूढइं  
 णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ  
 जंघउ कमहाणिइ ओहरियउ  
 गूढइं णरवइमंताभासइं  
 णिविडसंधिबंधइं णं कव्वइं  
 ऊरुखंभ णराहिवंदमणहु  
 जेण ससुरणरु तिहुयणु जित्तउ  
 दिण्ण थत्ति तहु सोणीबिबहु

जाहि रूवसिरि अइगरुयारी ।

लंघियाइं अमहइं णहयंतिइ ।

एम णाइं णेउरहिं पघुट्टु ।

अंगुलियहिं सरलत्तु पयासिउं ।

गुण्फइं तं किर पिसुणइं मूढइं ।

5

मसिणउ सोहियाउ उज्जलियउ ।

दिट्टुं णं खलमित्तहं किरियउ ।

वायरणाइं व रइयसमासइं ।

देविहि जणहुयाइं अइभव्वइं ।

तोरणखंभाइं व रइभवणहु ।

10

कामतच्चु जं देवहिं वुत्तउ ।

किं वण्णमि गरुयत्तु णियंबहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्जु किसु उयरु सतुच्छउ दिट्टु मइं ॥

संसग्गवसें गुणु कासु हुउ जो णवि जायउ जम्मि सइं ॥ १५ ॥

## 16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु

सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ

पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ

रोमावलिकुहिणी लंघेप्पिणु ।

लग्गउ वम्महु मोत्तियहारइ ।

सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15. १ T णहकंतीए but adds: णहयंतिइ इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः २ MBP वित्तु पदरिसिउ; T वित्तु वृत्तत्वम् ३ MBP गुंफइं. ४ P दिट्टा णं. ५ M °समाणइं ६ MBPK ऊरुखंभ. ७ MBP ससुरयणु. ८ M सवित्थरु.

15. 2 b ण ह यं ति इ आकाशादेन्त्या, अथवा नखकान्त्या. 3 a कमयलेत्यादि—नूपुरं इति हेतोः शब्दं करोत्यस्माकमवज्ञां विधाय चरणतलरागे किं दृष्टं देवपंकत्या; का इं किम्; ग विट्टुं दृष्टम्. 4 a रत्तउ चित्तु मर्तरि रक्तं चित्तम्. 6 a विसिरउ शिरारहिता; b मसिणउ स्निग्धा. 7 a ओहरियउ अपकर्षं गता. 8 a गूढइं प्रच्छन्नानि; णरवइमंताभासइं राजमन्त्रसदृशानि; b रइयसमासइं षट् समासाः कर्मधारयादयः, पक्षे मांसयुक्तानि. 9 a णिविडसंधिबंधइं सुश्लिष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च.

16. 1 a चडेप्पिणु आरुह्य; b °कुहिणी मार्गः. 2 a सिहिण° स्तन°; °दोरइ सूत्रे रज्ज्वाम्. 3 a पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्; b सुइ° निर्मलम्.



णेहबंधु मणिबंधि परिद्विड  
जाहि तणउं तं जणियवियारउं  
कंठलीह णउ कंबू पावइ  
णियँडणिविद्वुड जियससिकंतिहि  
अहरबिंबु रेहइ रायालउ  
अम्हहं ठाइ कयँइ ण संमुहु  
भउंहउं वंकत्तणु वि ण सहियउ  
णिसिदिणि ससि रवि गयणविलंबिय  
कुंडलसिरि वहंति धवलच्छिहि  
कुडिलालय भालयलि णिरंतर  
अंवरु वि ताहं भारु विवरेरउ  
तरुणिहे पँट्टि पइद्वँड दीसइ

लायण्णे समुँहु ण संठिउ ।  
महुरउ इयरहु केरउ खारउ । 5  
परसासाऊरिउ कँह जीवइ ।  
धोयहि धवलहि दंतहु पंतिहि ।  
मुत्तावलियहि णाई पवालउ ।  
उज्जुउ णासावंसु वि दुम्मुहु ।  
णयणहिं गंपि व कण्णहुं कहियउ । 10  
विण्णि वि गंडयलइ पडिबिंबिय ।  
जिणजणणियहि सँलक्खणकुँच्छिहि ।  
मुहकमलहु घुलंति णं महुर ।  
मुहससहरभएण णं तमरउ ।  
कुसुमरिक्खमीसियउ विहासइ । 15

घत्ता—पँणवंतिउ अमरविलासिणिउ छाहिणिहेण णिहीणियउ ॥

चारुत्तणकंखइ सुंदरिहि पयणहदप्पणलीणियउ ॥ १६ ॥

## 17

तियसमहीरुहपिहियदसासइ  
णं जियलोउ समुग्गयसंतिइ  
णं सज्जणु शुणिलोयपसंसइ

भारहवरिसहु मज्जुहेसइ ।  
सरयागमु णं छणससिकंतिइ ।  
णं आलिंणिउ धम्मु अहिंसइ ।

16. MBP मणिबंधु. २ BP समुहु णं. ३ MB कंबुउ; P कंबुउ and gloss शंखः. ४ M कहिं. M णिविड<sup>०</sup> ६ P कयावि. ७ MBP सुलक्खण<sup>०</sup>. ८ P<sup>०</sup> कुक्खिहि. ९ MB अविंबु, १० K पुट्टि. ११<sup>०</sup> बइच्छउ. १२ BP पणमंतिउ.

17. 1 a तियसमहीरुह<sup>०</sup> कल्पवृक्षाः; ०पिहियदसासइ<sup>०</sup> आच्छादितदशादिशि. 2 a समुग्गय-  
संतिइ समुद्रतशान्त्या.

पीवरपीणपयोर्हरकयकरु  
अच्छइ णाहिणरेसरु जइयहं  
सुरणरवंदणिज्जु जैंगि सारउ  
कामकंदकप्परणकुठारउ  
इय संचिंतिवि पुणु परिच्छिण्णउं  
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ  
ता तं पेसणु जक्खें लइयउं

हापाए ... ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।  
सुंयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं । 5  
गुरुसंसारमहणवतारउ ।  
होसइ एयहुं भवणि भडारउ ।  
इंदें धणयहु पेसणु दिण्णउं ।  
पुरवरु चउदुवारु सोहिल्लउ ।  
खणि साकेयणयरु पविरइयउं । 10

घत्ता—जहिं पवणायरियवसेण णंदणवणइं सुपत्ताइं ॥

णच्चंति फुल्लमुहमुक्केण मयरंदेण च मत्ताइं ॥ १७ ॥

## 18

जहिं सरवरि सिरिपयसंफासैं  
परभुत्तैं विमुक्कतमदोसैं  
तं तेहउ वि पीलु किं भंजइ  
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ  
वडपारोहइ हिंदोलंतिहिं  
जहिं कइ अइपहसणरसधारउ  
रत्तउ सारसियहिं जहिं सारसु  
सहइ तमालंधारयसारिउ

वियसइ कमलु णाइं संतोसैं ।  
अहवा णंदिउ को वै ण कोसैं ।  
महुयरउलु णं रोसैं रुंजइ ।  
अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।  
जोइउ जक्खिहिं दरपहसंतिहिं । 5  
सुइ णियदिट्ठि धिवइ सवियारउ ।  
को वि परिट्ठिउ अहिणवु सारसु ।  
जहिं कैलु कोइलु लवइ णिरारिउ ।

17. १ M पओरुह°. २ MPT सुमरइ; B सुअरइ and gloss स्मरति. ३ MBP जग° ४ B °समुण्णव°. ५ MB °कुठारउ; K °कुठारउ but corrects it to °कुठारउ. ६ MBP चउदुवारसोहिल्लउ. ७ MBP पवणायरिय°. ८ MBP °मुक्कण.

18 १ M परिभुत्तैं. २ P को वि. ३ P कह. ४ BP कइवइ पहसण°. ५ M को ण. ६ MBP अहिणव° ७ MBP कलु.

4 a °कयकरु °कृतकरः; b समउ सह. 5 b सुयरइ स्मरति. 7 a°कप्परण° °छेदन°. 8-a परिच्छिण्णउं ज्ञातम्, निश्चितम्. 10 a लइयउं गृहीतम्. 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्यः.

18. 1 a सिरिपयसंफासैं लक्ष्मीपदस्पर्शेन. 2 a परभुत्तैं हंसैः जनैश्च भुज्यते; विमुक्कतमदोसैं पापोज्झितेन, अथवा, तमः क्रोधः, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन; b कोसैं कर्णिकया द्रव्येण च. 3 a पीलु हास्तिवालः, b रुंजइ शब्दं करोति. 5 b दर° ईषत्. 6 a कइ कपिः, अइपहसणरसधारउ अतिग्रहसनधारकः हास्यं कारयतीत्यर्थः; सुइ शुकै. 8 a तमालंधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्या रिपुः; b णिरारिउ अनिवारितम्.

पवरंबयकलियहि ढोइयकरु  
जहिं भाविणि ण करइ परपइरइ  
अट्टारहवरसासविहत्तइं

महिलहि को ण होइ चाहुययरु ।  
बीउ धरित्तिहि को उं ण पइरइ । 10  
जहिं सयमेव सुपक्कइं छेत्तइं ।

घत्ता—जहिं धण्णइं कणभरपणींमियइं परिभमंति सच्छंद पसु ॥  
वणसेरिहसिंगपहारचुउ महिसिहिं पिज्जइ उच्छुरसु ॥ १८ ॥

## 19

छुडु छुडु भोयभूमि जहिं वित्ती  
चित्तिउ चित्तिउ देंति ण थक्कइ  
जहिं थलि थलकमलोवरि सुप्पइ  
दक्खारसु णरेहिं चक्खिज्जइं  
कुवलयधरणिउ णं णिवईहउ  
णं भविस्सजिणजम्मोयरियउ  
वहुमाणिकमऊहर्पहावहिं  
असियसियारुणवण्णवियारहिं

रिद्धिसमिद्ध विसुद्ध धरित्ती ।  
पुव्वब्भासु ण मेल्लहुं सकइ ।  
पइ पइ पँउमहु पंके लिप्पइ ।  
फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइं ।  
जहिं परिहाउ वहांति पईहउ । 5  
णहवणारंभहु णाणासरियउ ।  
णं गयणंगणु सुरचइचावहिं ।  
जं सोहइ ससहिं पायारहिं ।

घत्ता—जं दियहि दिवायरकंत रविकिरणहिं सिहिभावहु गयउ ॥

तं णीवइ णिसि ससियरपुसियससिमणिजलधाराहयउ ॥ १९ ॥ 10

८ P णउ. ९ MBP खेत्तइं. १० MBP पणवियइं.

19. १ BP °समिद्धिविसुद्ध. २ P मेलहुं. ३ MB पउमें पंक्हु धिप्पइ; P पउमहु पंकेहिं धिप्पइ. ४ MB दक्खारसु णरेहिं जहिं पिज्जइ. ५ M adds after this line: मुहमहुराति मिरिय भक्खिज्जइ, and gloss मुखस्य मधुरत्वे सति; P reads in its place मुहमहलंति मिरिय भक्खिज्जइ, and after it reads किंणरमिहुणिहिं लयहरि गिज्जइ, फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइ. ६ MB add after this line किंणर-मिहुणिहिं लयहरि गिज्जइ, जिणु गाइज्जइ जिणु पूइज्जइ. ७ M जहिं परिहा वहांति पयईहउ. ८ MBP °पहावें. ९ MBP °चावें.

9 a अं ब य क लिय आम्रकलिका. 10 a परपइरइ परपुरुषरतिम्; b बीउ बीजम्; पइरइ प्रकिरति; धरिन्त्यामकृष्टपच्यानि धान्यानीत्यर्थः. 11 a °सास° सस्य. 13 °सेरिह° महिषः.

19. 1 a छुडु छुडु यदा यदा, विती समाप्ता. 2 b पुव्वब्भासु कल्पवृक्षवद्वाञ्छितवस्तुप्रदानाभ्यासः. 3 b पंके मकरन्दकर्दमे. 5 a णिवईहउ नृपवाञ्छयेव. b परिहाउ खातिकाः; पईहउ प्रदीर्घाः. 7 a °मऊ-ह° °किरण° 8 a असियसियारुण° कृष्णश्चेतरक्त°. 9 दिवायरकंत सूर्यकान्तमणयः; सिहिभावहु अभिभावम्. 10 णीवइ विध्यापयति, °पुसिय °स्पृष्टाः; °ससिमणि °चन्द्रकान्तमणयः.

## 20

मरगयकयघरि पक्खविहूसिउ  
 इंदणीलघरि णहविप्फुरणें  
 जाणिज्जइ सामा पहसंती  
 कणयरइयमंदिरि वियरंती  
 करकंकणु करैफरिसें जाणइ  
 दहिकुट्टिमयलि दइएं आणिउ  
 तहिं जि पडीवउं जहिं सियणिवसणु  
 फलिहसिलालयमज्झि णिविट्ठुउ  
 पोमरायमंडवि आसीणी  
 घुसिणपिंडु ण णियंति विसूरइ  
 चंदणचिक्खिल्लें पडुं चिडुइ

जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ ।  
 विमलें मोत्तियदामाहरणें ।  
 णाहें णवकुंडुज्जलदंती ।  
 अवरविसंझाराउ वहंती ।  
 णेउरु सहेण जि अहिणाणइ । 5  
 कलरावेण हंसु परियाणिउ ।  
 ठविउ ण पेच्छइ अइभोलउ जणु ।  
 पिहियकवाडु वि बहुवरु दिट्ठुउ ।  
 जेत्यु का वि हरिणच्छि पहाणी ।  
 जहि सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ । 10  
 जहिं कप्पूरधूलि णहि उडुइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु संविहिउ ॥

वइसवणें एक्केक्कु जि मिहुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

## 21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइं  
 गिज्जंतें मंगलसंघाएं  
 घरसंचारियं कलस वि दिट्ठा  
 णिच्चुप्पाइयसुरयणहरिसहि  
 विहुतारावलिदिणयरपंगणु  
 गुरुअच्चासणभयवसणडियउ

तोरणाइं रयणहिं विप्फुरियइं ।  
 देवदिण्णपडुपडहणिणाएं ।  
 सरयब्भेसु वं चंद पइट्ठा ।  
 संमज्जियदप्पणयलसरिसहि ।  
 दीसइ भूमिहि सयलु णहंगणु । 5  
 णं सोहइ पायालइ पडियउ ।

20. १ B पंख°. २ MBP अवरु वि. ३ MBP करफंसें. ४ M फलिहसिलालयमज्झि; BP °सिला-  
 यलि मज्झि. ५ MBP पउ but gloss in P पन्थाः.

21. १ MBP °संचारिम°. २ MBK य.

20. 1 a पक्ख वि हू सिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूषा यस्य; b पूसउ शुक्रः. 5 b अ हि णा णइ अभिजानाति.  
 6 a द हि कु ट्टि म य लि धवलशिलोपरि; दइएं भर्त्रा. 7 a प डी व उं पतितम्. 8 a फ लि ह सि लाल य° स्फटिक-  
 गृहम्; b बहु व रु वधूवरम्. 9 b प हा णी चित्रकारिणी स्त्री. 10 a ण णि य न्ति रक्तत्वादपश्यन्ती; वि सू र इ  
 खिद्यते. 11: a प हु पन्थाः; वि डु इ आर्द्राभवति. 13 मा णि वि मानयित्वा.

21. 1 a सहसा शीघ्रम्; भरियइं बद्धानि. 5 a विहु° चन्द्रः. 6 a अच्चासण° हीलना,

इहु सो दिट्टउ इट्टु महारउ  
 भवणसिहरचडिणं खे लंबिउ  
 णउ चोरउल्लु<sup>३</sup>विरोहि ण राउल्लु  
 बंभणु वणिवरु ण हल्लु ण हालिउ  
 धम्मु ण धणुहुं ण जिणवइभासिउ  
 वेस ण कत्थइ वइसियजुत्ती  
 जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय

इय णं मण्णिवि णयणपियारउ ।  
 जहिं णवजलहरु मोरें चुंविउ ।  
 सूळभिण्णु णउ दीसइ देउल्लु ।  
 णउ पासंडिउ को वि कव्वाल्लिउ । 10  
 पसुवह वार्हिं ण वेणं घोसिउ ।  
 अज्जव सव्वं णारि कुलउत्ती ।  
 कुच्छियकारिणि णउ कारुय पय ।

घत्ता—सामण्णइं सयलइं माणुसइं जहिं एक्कु वि सुविसोसिउ ॥

सियपुष्पयंतु सो णाहिणिउ जो भरहेण विहूसिउ ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उज्झाणयरीवण्णं णाम  
 दुइज्जो परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥  
 ॥ संधि ॥ २ ॥

३ P विरोहु. ४ P कपालिउ. ५ MBP जिणवर<sup>०</sup> ६ M पसुवह वहणु ण, B पसुवहु वहणु ण; P पसु  
 अहवाइणु. ७ MBP णारि सव्व. ८ K णाहिणिवु

7 b<sup>०</sup>पियारउ<sup>०</sup>प्रियतमः. 8 a खे आकाशे. 9 b सूळभिण्णु शूलं कलशमध्ये प्रोत काष्ठं तेन युक्तं देवगृहं चैत्या-  
 लयादि न दृश्यते. 11 b वार्हिं व्याधेन. 12 a वेस वेश्या; वइसियजुत्ती वेश्याना युक्तिर्वञ्चनम्, b अज्जव  
 आर्या. 13 b कुच्छियकारिणि कुत्सितकारिणी; कारुयपय शिल्पजीविनां प्रजा.. 14 सामण्णइं समानविभूति-  
 युक्तानि. 15 सियपुष्पयंतु शुभ्रपुष्पतुल्यदन्तः, भरहेण भरतक्षेत्रेण, कारापकपक्षे भरतमहाभव्येन.

तर्हि जाम मणोज्जु भुंजइ रंज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥  
मंडियसविमाणु कालपमाणु चितइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवकं ॥

1

ऐहहि महिणाहें माणियहे	उयरई मरुएविहि राणियहे ।	
छैम्मासहिं होसइ परमजिणु	णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।	
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि	गब्भासयसोहणु लहु करमि ।	5
लइ एउ जि कज्जु महुं तणउं	दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।	
इयं चित्तिवि पुणु हियवइ धरिय	छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।	
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर	वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।	
छ वि एयउ चारु चवंतियउ	पणएण णएण णंवंतियउ ।	
इंदीवरदीहरणेत्तियउ	सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।	10
वेल्लहललय्याणिहगत्तियउ	देविदें झत्ति पउत्तियउ ।	

घत्ता—जाइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसँहु गेहु ॥

जिणगब्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुरुतरात् for which see footnote on Second Samdhi; MBP give the following stanza:—

बलिजामूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।

संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1. १ MBP भोज्जु. २ MP एयहि; B एवहि. ३ MBP छहिं मासहिं. ४ MBP इय चित्तेविणु हियवइ. ५ P णमंतियउ. ६ M °लयाणियवत्तियउ; BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु.

1. 1 म णो ज्जु मनोज्जम्; णिच्चलु निश्चलम्. 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्वविमानः इन्द्रश्चिन्तयति; कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तः कियान् वर्तते. 4 b णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽ-तरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति. 5 a सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्; संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः; b °सो हणु °शोधनम्. 6 b घण घणउं सातिशयम्. 8 a ललियकर कोमलहस्ताः b वरपराः उत्कृष्टाः. 9 a छ वि एयउ एताःश्रयादिषड्देवताः. 10 a इंदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्राः; b सुरणाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिरं, इन्द्रालयम्. 11 a वेल्लहललय्याणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्राः; b पउत्तियउ प्रयुक्ताः.

## 2

ता संचलियउ सुररमणियउ  
 कयसग्गालयाणिग्गमणियउ  
 तेल्लोक्कमारमणदमणियउ  
 कुंडलैचेंचइयकवोलियउ  
 जंतिउ जोयंति ण के सियउ  
 तणुतेउज्जोइयअंबरउ ,  
 णयसत्तभंगिविहिरसणियउ  
 णिरु सूहवदाणवारिरयउ

मेहलरंखोलिरेरमणियउ ।  
 मयमंथरसिंधुरगमणियउ ।  
 विरैयाहुं मि रयमणदमणियउ ।  
 णं मयणें बाणकओलियउ ।  
 अलिसंणिहभंगुरकेसियउ । 5  
 घोलंतविचित्तवरंबरउ ।  
 मिच्छाँमयहेउणिरसणियउ ।  
 णं भमरिउ दाणवारिरयउ ।

घत्ता—एयउ अण्णाउ सुरकण्णाउ धरिवि णिकामिणिवेसु ॥

आर्याउ परेण भत्तिभरेण सिरिमरुपविहि पासु ॥ २ ॥

10

## 3

परमेसरि सुरवरलोयच्युयां  
 दीसइ सुरणारिहिं अज्जसुया  
 सव्वंगावयवसुलक्खणिया  
 वंदारयवंदियपायजुया

कोमलमुणालवेल्लहलभुया ।  
 णं विहिविण्णाणसमत्तिहुया ।  
 फणिसुरणरमणमुसुमूरणिया ।  
 अइललियहिं थोत्तसएहिं थुया ।

2. १ T reads °रंखोलन° but adds: रंखोलिरेति पाठे मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः. २ MBP विरयाहिं but gloss विरताना यतीनाम्. ३ B कौंडलचेंचइय°; M °चिंचइय°. ४ B बाणकम्मु लियउ; P बाणकवोलियउ and gloss बाणकृतरेखा. ५ K मिच्छायम°; P मिच्छामय° but gloss मिथ्यागम°. ६ MBP आइयउ.

3. १ MBP °थुय. २ M विहिअण्णाण°.

2. 1 b मेहलेन्यादि—मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीया. 2 a कयेति—कृतं स्वर्गालयाग्नि-  
 र्गमनं याभिः; b मयमथर° मदेन मन्थरो मन्द ; °सिंधुर° हस्ती 3 a तेल्लोकेत्यादि—त्रैलोक्यस्य मारमणा लक्ष्मी-  
 पतय. तेषां दमानिका , b विरयाहुं यतीनाम्, रय मण द म ण ि य उ रते सुरते मन रतमनः तद्दातीति रतमनोर्द  
 मणितं यासाम् 4 a °चेंचइय° भूषिणौ, b मयणें बाणकओलियउ मदनेन कृताः बाणपंक्तयः इव. 5 a जो यं ति  
 ण के पश्यन्ति न के, अपि तु सर्वे मनुष्या देवा वा पश्यन्ति; सियउ श्रिय. 6 a अ व र उ आकाशम्; b °व रं-  
 व र उ देवाङ्गवस्त्रम्. 7 a णयेत्यादि—नयाः नैगमादयः सप्तभङ्गी च तेषां विधि रसनायां जिह्वायां यासां ताः; b मिच्छे-  
 त्यादि—मिथ्यामतं तस्य हेतवः तेषां निरसनिकाः. 8 a दाण वा रि° इन्द्रादयो देवाः; b दा ण वा रि र य उ मदवारिणि  
 रताः, अथवा मदजले रयो वेगो यासां ताः. 9 णि का मि णि° मनुष्यस्त्री ( नृकामिनी ).

3. 1 a °च्युया °च्युता, b °वेल्लहल° कोमल°. 2 a अज्जसुया भोगभूमिजस्य पुत्री; b वि हि वि ण्णा ण-  
 स म ति हु या विधिविज्ञानसमाप्तिभूता उत्तमरूपत्वात्. 3 b मणमुसुमूरणिया मनोद्राविका. 4 a वं दार य° देवाः.

अव्वो जय जय जगगुरुजणणि  
जय कम्मकाणणलअरणि  
पइं दिट्ठइ णिट्ठइ पावमलु  
पइं लद्धउं महिलाजम्मफलु

जय थणयलविलुलियहारमणि । 5  
जय धम्मविडवसंभवधरणि ।  
संपज्जइ संचित्तिउ सयलु ।  
तुह कुच्छिहि होसइ जिणधवलु ।

घत्ता—णिरु सरसु णडंतु पयहिं पडंतु विरइयपंजलिहत्थु ॥

संपाइय एव ईच्छइ सेव अमरविलासिणिसत्थु ॥ ३ ॥

10

## 4

क वि अलयतिलय देविहि करइ  
क वि अप्पइ वररयणाहरणु  
क वि णच्चइ गायइ महुरसरु  
क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी  
अक्खाणउं का वि किं पि कहइ  
क वि वारवार विणपं णवइ  
क वि मालउ चेळिउ उज्जलउ  
छम्मासु जाम संजणियदिहि  
णिवप्रंगंति णिहिणिहियधणु

क वि आदंसणु अग्गइ धरइ ।  
क वि लिप्पइ कुंकुमेण चरणु ।  
क वि पारंभइ विणोउ अवरु ।  
क वि वारि परिट्ठिय दंडधरी ।  
दिण्णउं कणइल्लु का वि वहइ । 5  
क वि सुरसरिसरसलिलहिं णवइ ।  
ढोयइ सवलहणु सुपरिमलउ ।  
पयडंतु समीहिय सोक्खणिहि ।  
बुट्ठउ रयणिहिं वइसवणु घणु ।

घत्ता—हंसि वं सरपोमि रम्मि सुहम्मि उरविलुलियहारावलि ॥

10

सोवंति समग्गि सयणयलग्गि सइं पेच्छइ सिविणावलि ॥ ४ ॥

३ P णट्ठइ. ४ MBP विरइयअंजलि°. ५ MBP संपाइउ. ६ MBP इच्छियसेव.

4. १ P कणयल्लु. २ P चेळउ. ३ M ढोइय. ४ MBP समलहणु. ५ MBP °पंगंति. ६ MB वइसवणघणु. ७ M हंसियवरपोमि; BP हंसि व वरपोमि. ८ MB पेच्छवि. ९ MBP सुइणावलि.

5 a अव्वो हे मातः. 6 a °अरणि अग्न्युत्पादककाष्ठम्, कर्मदहनसमर्थकरदेवोत्पत्तिहेतुत्वात्; b °विडव° पादपः.

7 a णिट्ठइ नश्यति. 8 b जिणधवलु जिनवृषभः. 10 सेव सेवाम्; °सत्थु सार्थः समूहः.

4. 1 a अलयतिलय अलिके ललाटे तिलकम्; b आदंसणु दर्पणः 3 b विणोउ विनोदम्. 4 b वारि द्वारे. 5 a अक्खाणउं कथानकम्; b कणइल्लु क्रीडाशुकः. 7 a मालउ पुष्पमालाः; चेळिउ वस्त्रशाटी; b सवलहणु विलेपनम्. 9 a प्रंगंति प्राङ्गणमध्ये; णिहिणिहियधणु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन; b रयणिहिं रत्नैः; वइसवणु घणु धनद एव मेघः. 10 सरपोमि सरोवरपद्मे; सुहम्मि शोभनप्रासादे; 11 समग्गि सम्मं अगं उपरितनभागो यस्य; सयणयलग्गि शयनतले अग्रे प्रधाने.



5

पत्तिया	सणाहणेहरत्तिया ।	
सुत्तिया	णिमीलियाच्छिवत्तिया ।	
कामए	णिसाविरामजामए ।	
इच्छए	सुहावहं णियच्छए ।	
कंतयं	चउप्पयारदंतयं ।	5
णिञ्जरं	झरंतदाणणिज्जरं ।	
संसयं	सरासणाहवंसयं ।	
तुंगयं	मिलंतमत्तभिगयं ।	
वारणं	गिरिंदभित्तिदारणं ।	
पंतयं	बलेण ढेक्करंतयं ।	10
गोवहं	अलद्धजुज्जगोवहं ।	
दुद्धरं	फुरंतणक्खपंजरं ।	
भासुरं	घुलंतकंधकेसरं ।	
कोवणं	जलंतपिगलोवणं ।	
भीसणं	मुँहा विमुक्कणीसणं ।	15
सीहयं	विलंवमाणजीहयं ।	
अंचियं	दिसागपाहिं १सिचियं ।	
लच्छियं	विवुद्धपंकयच्छियं ।	
रुंदयं	पहुल्लदामदंदयं ।	
संमुहं	समुग्गयं सुहारुहं ।	20
भाहरं	सुदूसहं तमीहरं ।	

5. १ PGT record a p अलट्ट and add: अलट्ट इति पाठे अलट्टो अशूरो युद्धे गोपतिर्यस्य. २ M कोअणं. ३ MB ०लोअणं. ४ MBP मुहोविमुक्क ० ५ M ०सिचयं. ६ MPT ०दुदयं.

5. 1 a पत्तिया पत्नी; b सणाह ० स्वनाथ ०. 2 b णि मी लिय च्छिवत्तिया निमीलिताक्षिपक्ष्मा. 3 a कामए कामदे वाञ्छितप्रदे कामोद्रेकजनके वा; b ०विरामजामए ०पश्चिमयामे. 4 a इच्छए स्वेच्छया; b णियच्छए निरीक्षते. 5 b चउप्पयारदंतयं चतुर्दन्तमित्यर्थः. 7 a संसयं प्रशंसनीयम्; b सरासणाहवंसयं धनुराकारपृष्ठम्. 11 b अलद्धजुज्जगोवहं अलब्धो युद्धार्थं गोपतिर्वलीवदो येन. 15 b मुहा विमुक्क ० मुखेन मुक्तः. 17 a अंचियं पूजितम्; b सिचियं स्नातम्. 18 b विवुद्धपंकयच्छियं विकसितपद्मनेत्राम्. 19 a रुंदयं गरिष्ठम्; b पहुल्ल ० प्रफुल्ल ०; ०दंदयं ०द्वन्द्वम्. 21 b तमीहरं रात्रिविनाशकं चन्द्रम्.

हंसयं	खमाणसेकहंसयं ।	
रत्तयं	सरंतरे तरंतयं ।	
रम्मयं	चलं झसाण जुम्मयं ।	
उब्भडं	धियंभकुंभसंघडं ।	25
मायरं	पहुंल्लपंकयायरं ।	
सायरं	रंसंतवारिभीयरं ।	
आसणं	मंयारिरूवभूसणं ।	
सुंदरं	पुरंदरस्स मंदिरं ।	
सोहणं	महाहिणो णिहेलणं ।	30
उंचयं	अणेयरंरणसंचयं ।	
दित्तयं	हुयासणं पलित्तयं ।	

घत्ता—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिबुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ॥

उइयइ पच्चूहे अरुणमऊहे रायहु तं तिहं सिट्ठु ॥ ५ ॥

## 6

ता णरवइ णारीसारियहे	अक्खइ मरुएविभडारियहे ।	
दिट्ठेण गइंवे गुरुहुं गुरु	होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।	
गोणाहे गोमंडलु धरइ	सीहेण सविक्कमु वित्थरइ ।	
सिरिदंसाणे लहइ तिलोयसिरि	दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।	
पावइ पविहररइयच्चणडं	जं दिट्ठुउ पइं मयलंछणउ ।	6

७ BT वियंभ and gloss in T वियंभोऽमृतजलम्. ८ P पफुल्ल°. ९ MBP सरंत°. १० M सयारि°. ११ MBP °भीसणं. १२ MBP उच्चयं. १३ B °रणं°. १४ B तिहे.

22 a हंसयं आदित्यम्; b खमाणसेकहंसयं गगनमेव मानसरोवरं तस्य हंसम्. 23 a रत्तयं अन्योन्यक्रीडारत्तम्. 24 b जुम्मयं युग्मम्. 25 a उब्भडं प्रकटम्; b धियंभ° धृतजलकुम्भयुग्मम्. 26 a मायरं लक्ष्मीकरम्. 27 b रंसंतवारिभीयरं शब्दायमानजलभयानकम्. 28 b मयारि° सिंहः. 29 b पुरंदरस्स मंदिरं विमानम्. 30 b महाहिणो नागेन्द्रस्य; णिहेलणं गृहम्. 31 b रणं° रत्न°. 32 b पलित्तयं प्रदीप्तम्. 34 पच्चूहे आदित्ये; अरुणमऊहे आरक्ताकिरणे.

6. 1 a णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्तमायाः. 3 a गोणाहे वृषभेण; गोमंडलु भूमण्डलम्. 4 b पुरिसहरि पुरुषसिंहः. 5 a पविहरं इन्द्रः.

तं होसइ सुउ जणमणहरणु  
 तं मोहंधारविणासयरु  
 झसजुयलें होही सोक्खणिहि  
 कमलायरसायरेहि विहिं मि  
 सिंहासणेण पंचमिय गइ  
 दिट्ठेहिं तियसणायहं घरेहिं  
 रयणोहें जिणसंपत्तिफलु

जं पुणु वि पलोइउ खरकिरणु ।  
 भव्वयणणालिणवणादिवसयरु ।  
 कुंभेहिं वि सुरअहिसेयविहि ।  
 गुणवंतु गहिरु भुवणहं तिहिं मि ।  
 पावेसइ दंसणसुद्धमइ । 10  
 सेवेवउ देविहिं विसहरेहिं ।  
 णिडुहइ हुयासें कम्ममलु ।

घत्ता—सिविणयफलु अज्जु णिरु णिरवज्जु कहमि ण रक्खमि गुज्जु ॥

जगलग्गणखंभु धम्भारंभु होसइ णंदणु तुज्जु ॥ ६ ॥

7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि  
 कप्पहुमच्छेयपयणियवियारम्मि  
 अवसप्पिणीसप्पिणीसंपवेसम्मि  
 मायामहामोहवंधणइं लुंचेवि  
 सोलहं वि तवभावणाओ पहावेवि  
 इंदियइं णिंदियइं णिग्घिणइं भंजेवि  
 जम्मंतरावद्धसुंक्रियपहावेण  
 आसाढमासम्मि किण्हम्मि वीयम्मि  
 सव्वत्थसिद्धीविमाणाउ ओयरइ

णक्खत्तसोहंतगयणंतरालम्मि ।  
 ससिर्विवरविर्विबधत्थंधयारम्मि ।  
 णरभोयपब्भारसुहभरियगासम्मि ।  
 साराइं पउराइं पुण्णाइं संचेवि ।  
 जगणमियतित्थयरणामं समज्जेवि । 5  
 तेत्तीसजलणिहिसमाणाउ भुंजेवि ।  
 हिमहारणीहारसियवसहरूवेण ।  
 संपत्तए उत्तरासाढरिक्खम्मि ।  
 परमेसरो जणणिगब्भम्मि संचरइ ।

6. १ M पुलोइउ; P पलोयउ. २ MB सेवेवउ.

7. १ B सुक्कय°.

6 b खरकिरणु सूर्यः. 8 a झसजुयलें मत्स्ययुग्मेन; b सुरअहिसेय° देवाभिपेक°. 10 a पंचमियगइ मुक्तिः. 11 a °णायहं °नागानाम्. 14 जगलग्गण° जगदाधार°.

7. 2 a कप्पहुमच्छेयपयणियवियारम्मि कल्पहुमविच्छेदेन जनितविकारे; b धत्थंधयारम्मि च्वस्ता-  
 न्धकारे. 3 a अवसप्पिणीसप्पिणी° अवसर्पिणीकाल एव नागिणी; b °गासम्मि भोगप्राप्ते. 5 a सोलहं दर्शन-  
 विशुद्धयादयः षोडश भावनाः; पहावेवि प्रभाव्य. 6 b °समाणाउ °समानं आयुः. 7 b हिम° अवश्यायो नीहारो  
 वा; °सियवसहं थवलवृषभः. 8 a किण्हम्मि वीयम्मि कृष्णाद्वितीयायाम्. 9 b संचरइ संचरणं प्रवेशं  
 करोति.

सरयन्ममज्जाम्मि रुइरुंदइंदु व्व  
आया सुरा गन्मवासं णमंसेवि  
तव्वासराए व देवाहिवाणाइ  
जक्खेण माणिक्खुट्ठी कया ताम

सयवत्तिणीपत्तए तोयविंदु व्व । 10  
सगं गया रीयदेविं पसंसेवि ।  
रिक्खिदणाइंदपालिजमाणाइ ।  
मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अवाहु वडुइ णाहु तणुकिरणइं पसरंति ॥

मरुदेविहि देहे णं णवमेहे णवरवियर णिगंति ॥ ७ ॥

15

## 8

मासम्मि चइत्ते पक्खे कसणे  
उत्तरआसाढारिक्खवरे  
जिणु तियसालावणीहिं झुणित  
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि  
णं विष्फुरंतु अरणीइ सिहि  
णं जीवसहाउ सिद्धसहए  
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ  
जगु णरर्थपडंतउ णंवि सहिउ

अहिमयरवारि फुंडणवामिदिणे ।  
जोयम्मि बंभि बहुसोक्खयरे ।  
मरुदेविइ णंदणु संजाणित ।  
सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।  
णं दिक्खालिउ धरणीइ णिहि । 5  
णं अत्थु महाकइकयकहए ।  
णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।  
णं धम्मं पुरिसरुवु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिण्णासु लोयपयासु किस्सिवेळ्ळिवरकंदु ॥

मयमलपम्भट्टु कुवलयइट्टु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

10

२ M °रुंदयंदु व्व; T °इंदु व्व. ३ MBP रायदेवी. ४ MBP जक्खिद°, but T रक्खिद° राक्षसेन्द्राः.

8. १ B चइत्तहो; P चइति. २ MBP फुडु. ३ MBP बंभि. ४ M मरुदेविं; B मरुदेवे; P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालिउ and gloss दर्शितः. ६ MP णरइ पडंतउ. ७ MB णउ.

10 a रुइरुंदइंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 a तव्वासराए तदिनादारभ्य; देवाहिवाणाइ इन्द्रस्याज्ञया. 14 अवाहु बाधारहितः. 12 णवरवियर बालार्करमयः.

8. 1 b अहिमयरवारि रविदिने. 3 a तियसालावणीहि त्रिदशवीणाभिः; झुणित गायितः. 4 a तवणीयछवि सुवर्णकान्तिः; b सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव. 6 a सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेण्या, यथा सिद्धध्यानेनात्मा दृश्यते. 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृगः एव मलः; कुवलय° पृथ्वीमण्डलं कुमुदसंघातश्च.

## 9

णाणतिएण णिएण णिरुत्तै	लक्खणवंजणचच्चियगत्तै ।	
उप्पण्णे णाहे ह्यदप्पो	जाओ इंदस्सासणकंपो ।	
कप्पेसुं ससहावै णाया	घंटाटंकारा संजाया ।	
उट्ठिय णिण्णासियदिण्णाया	जोइसवासे सीहणिणाया ।	
वेंतरदेवावासवैएसुं	गज्जंते पडहा विवरेसुं ।	5
संखरवो भावणभवणेसुं	संपण्णो खोहो भुवणेसुं ।	
णाउं णाणेणं णिप्पावं	भूमीभाए ह्यं देवं ।	
बुद्धो चित्ते धम्माणंदो	चलिओ संक्रो सक्रो चंदो ।	
हत्थिदो ऐरावयणामो	वेउव्वियसरीरपरिणामो ।	
गलियकवोलमओलजलदो	रण्णं तगेज्जावल्लिसदो ।	10
कच्छरिच्छमालाद्धुरियंगो	कण्णचमरविणिवारियभिंणो ।	
पत्तो भत्तो मंदरमेत्तो	लीलायंतो बहुविहदंतो ।	
कंतिपसाहियणहमित्ताइं	दंति दंति सरसयवत्ताइं ।	
पत्ते पत्ते सुरतरुणीओ	णच्चंतीओ थोरथणीओ ।	
इय दट्टूणं तमिहमलंघं	चडिओ सोहम्मीसो सिग्घं ।	15
सव्वत्थ वि धयच्छत्तरवणं	सव्वत्थ वि चामरसंछणं ।	
सव्वत्थ वि गयणाणाजाणं	सव्वत्थ वि धावंतविमाणं ।	
सव्वत्थ वि पसरियउल्लोवं	सव्वत्थ वि जयदुंदुहिरावं ।	
सव्वत्थ वि सरगेयरसालं	सव्वत्थ वि उच्चाइयमालं ।	
तरुपल्लवियं पिव णहवलयं	सोहइ सुरवरपायाउलयं ।	20

9. १ MBP णिउत्तै. २ P °पएसु. ३ MBP विपरेसुं but gloss in P विपरेसुं विवरेपु गगनेपु T परेसुं उत्तमेपु. ४ MB सक्रो सुक्रो. ५ P अइरावय°. ६ MB पत्तो. ७ MBP सुरवरतरुणीओ.

9. पादा कुलकं छन्दः. 1 b लक्खण° शखकुलिशादि; वंजण° तिलकमसकादि. 3 a णा या उपपन्ना.. 5 a °व ए सुं पदेपु स्थानेषु; b विवरेसुं विवरेषु गगनेषु 7 a णिप्पावं निष्पापम्. 8 b सक्रो शक्तः; सक्रो सार्कः आदित्यसाहितः. 10 a °म ओ ल ज ल दो मदप्रवाहजलेनार्द्रः. 11 a क च्छ रि च्छं मा ला छु रि यं गो कक्षया वरत्रया नक्षत्रमालया च स्फुरिताङ्गः. 13 a कं ति प सा हि य ण ह मि त्ता इं कान्त्या प्रसाधिता मण्डिता नभोमित्रा आकाशादित्या यैः; b सर स य व त्ता इं सरसः उच्छृतानि कमलानि. 15 a त मि हं तं ऐरावतम् ( तम्+इभम् ); अलंघं अलघनोयमतीवोच्चम्. 18 a प स रि य उ ल्लो वं प्रसृतोल्लोचं चन्द्रापकम्. 20 b सुर व र पा या उ ल यं देवेन्द्रपादैराकुलम्, अन्यत्र पादाकुलकं छन्दः.

घत्ता—णवतणुरोमंचु दावइ उंचु जिणभवि हरिसु वहंति ॥  
तरुं चलदलपाणि णडइ व खोणि भावे बहुरसवंति ॥ ९ ॥

## 10

महिसेहिं मेसेहिं	आसेहिं भासेहिं ।	
हंसेहिं मोरेहिं	कुंरेहिं कीरेहिं ।	
सरहेहिं करहेहिं	दुरएहिं वसहेहिं ।	
दीवीतरच्छेहिं	रिंछेहिं मच्छेहिं ।	
सारंगसीहेहिं	तरुगिरिहिं मेहेहिं ।	5
सिहि जम महाभीस	णेरिय समुद्देस ।	
मारुंय कुबेरंक	ईसाण णीसंक ।	
मज्झाम्मि खामाहिं	मुद्धाहि सामाहिं ।	
छणयंदवैयणाहिं	णवणलिणयणाहिं ।	
थणघुलियहाराहिं	पसरियवियाराहिं ।	10
धयरट्टुगांमिणिहिं	सोहंतकामिणिहिं ।	
गयणोवडंतीहिं	सरसं णडंतीहिं ।	
वज्जंतवज्जेहिं	कीलंतखुज्जेहिं ।	
बाहूरविल्लेहिं	दुकंतमल्लेहिं ।	
बहुविहविलासेहिं	मंगलणिघोसेहिं ।	15
संचल्लिया एम्ब	णाणाविहा देव ।	

घत्ता—पावेवि अउज्झ परमदुग्गेज्झ परियंचेवि तिवार ॥

फणि दिणयर चंडु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उच्चु, ९ MBP तरु वरदलपाणि.

10. १ BP कुरेहि. २ MB दुरहेहि ३ MB रिच्छेहि. ४ B मारुव. ५ MBP ०वयणेहि. ६ MBP ०णयणेहि. ७ MBP गामणिहि. ८ MBP परदुग्गेज्झ. ९ MP ०दिणयरु.

10. 1 b भासेहिं उल्लकैः. 3 b दुर ए हिं द्विरदैर्गजैः. 6 b समु देस वरुण. 7 b णीसंक इन्द्रः  
8 a खामा हि तुच्छोदरीभिः. 11 a धयरट्टु हंसः, 12 a गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 a  
बाहूर विल्ले हिं करास्फोटनशब्दैः 17 परियंचे वि प्रदक्षिणीकृत्य.

## II

गयणग्गलग्गहिमणिहसिहरु  
 जंपिवि पियवयणइं णिवपवरे  
 अमयासणगणसंमाणियए  
 सहसक्खे दिट्ठउ परमपरु  
 छज्जइ अण्णाणतमोहहरु  
 णं वद्धउ सिवसुहकणथरसु  
 णं सयलकलायरु उग्गामिउ  
 देविइ दिज्जंतुं णियच्छियउ  
 वरवंदारयवंदहिं णंविउ  
 को ण गणइ पुण्णपरिप्फुरिउ  
 चमरइं धिवंति अमराहिवइ

पइसेप्पिणु णाहिर्णरिंदघरु ।  
 मायहि मायासिसु देवि करे ।  
 कट्ठिउ देविइ इंदाणियए ।  
 कर्मलसरे णं णवदिवसयरु ।  
 णं अंकुरत्ति थिउ धम्मतरु । 5  
 णं पुरिसरूवि संठियउ जसु ।  
 णं एक्कहिं लक्खणपुंजु किउ ।  
 सोहम्मिदेण पडिच्छियउ ।  
 पणवेप्पिणु अंकग्गइ ठविउ ।  
 ईसाणं धवलछत्तु धरिउ । 10  
 साणक्कुमारमाहिंदवइ ।

घत्ता—जगु जित्तउ जेहिं णिम्मिउ तेहिं अणुयहिं देवहु देहु ॥  
 तं सुइरु णियंतु दससयणेत्तु विभिइउं पुलइयदेहु ॥ ११ ॥

## 12

पुणु पभणइ महुं हयकम्ममलु  
 एहउं तिहुयणपरमेसरहो  
 इय घोसिवि पुणु पुणु जोइयउ  
 परमेट्ठि एण्णियणु भमियगहे  
 भयसयइं सणउयइं जोणयहं

बहुलोयणत्तु जायउ सहलु ।  
 जं दिट्ठउं रूवु जिणेसरहो ।  
 इंदे अइरावउ चोइयउ ।  
 सच्छरु सामरु संचलिउ णहे ।  
 महि मुइवि ठाणु तारायणहं । 5

11. १ M °णरिंदु घरु. २ MB पोमसरे. ३ BP सयलु कलायरु. ४ MB णिजंतु. ५ MBP णमिउ.  
 ६ MB पुण्णपविप्फुरिउ. ७ MBP विभिउ.

12. १ T p णयसयइं and explains it as णयसयइं इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

11. 1 a गय ण ग ल ग्ग° आकाशारूढ°; हि म णि ह° हिमसदशम्. 2 a णि व प व रे नाभिराजे; b दे वि  
 द्त्वा. 3 a अ म या स ण° देवाः; b क ट्ठि उ आनीत., 4 a सह स क्खे इन्द्रेण. 5 a छज्जइ शोभते. 8 a  
 दिज्जंतु दीयमानः; b पडिच्छियउ स्वीकृतः. 9 b अं क ग्गइ उत्सङ्गाप्रे. 10 a पुण्ण प रिप्फु रि उ पुण्यप्रभा-  
 वम्. 11 a धि वं ति क्षिपन्ति. 12 जित्तउ जितम्; अणुयहिं परमाणुभिः. 13 सुइरु सुचिरम्.

12. 1 b बहुलोयणत्तु सहस्रनेत्रत्वम्. 4 a भमियगहे भ्रमितप्रहे आकाशे; b सच्छरु साप्सराः  
 अप्सरोभिः सहितः; सामरु देवैः सहितः. 5 a भयसयइं सप्तशतानि; सणउयइं नवत्यधिकानि.

तेत्याउ सुदूसहकरपसरु  
उप्परि दहहिं जि रवि परिभमइ  
चउहु जि रिक्खोहु णिरिक्खियउ  
तिहिं सुक्कु तिहिं जि सुरगुरु भणमि  
सउ एम दहुत्तरु लंघियउ  
सहसाइं गंपि अट्टाणवइ  
एत्तेण जि सोहइ दीहरिय  
अट्टेव समुण्णय हिमविमल  
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु  
देवाहिवेण तेल्लोक्कहिउ

जोयणहिं पसाहियसरयसरु ।  
पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।  
पुणु तेत्तिएहिं बुहु लक्खियउ ।  
तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।  
सुद्धायासु वि आसंघियउ । 10  
अवरु वि जोयणसउ तियसवइ ।  
जोयण पण्णास पवित्थरिय ।  
अद्धिदुसरिच्छी पंडुसिल ।  
जय जय पमणंते परमजिणु ।  
तहि उप्परि सीहासणि णिहिउ । 15

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥  
णं कुरुहकरेहिं वेळ्ळिहरेहिं मंदरु ढंकइ अंगु ॥ १२ ॥

## 13

जिणणाहहु भावे मेरुगिरि  
णं पर्णमइ फलभरणमियतरु  
णं कोइलकलरवेण चवइ  
पक्खालंतु व पहुकमकमलु  
लिंपइ व सविणय पणयवसेण  
जोयइ व रूवु सु सियासियहिं  
णच्चइ व पणच्चियणीलगलु

णं हरिसैं दावइ णिययसिरि ।  
णं घेळ्ळइ चमरीमय चमरु ।  
णं फलिहसिलासणाइं ठवइ ।  
आणइ जवेण णिज्झरणजलु ।  
करिणिहसणचुयचंदणरसेण । 6  
अहिणवणलिणच्छिहिं वियसियहिं ।  
गायइ व रूणुडुणियरंणिय भसलु ।

२ P सुदूसहु. ३ B णिरेखियउ. ४ M सहसाइं गंपिणु; BP सहसा गंपिणु. ५ M सवित्थरय; BP सवित्थरिय.  
13. १ M पणवइ. २ M घल्लय. ३ M सुद्धुणिय°. ४ MBP °रुणिय.

6 a ते त्याउ तस्मादागतः; b °सरयसरु शरत्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलाक्षितं सरः. 7 b सइं स्वयम्. 8 a रिक्खोहु आश्विन्यादिसप्तविंशानक्षत्राणि. 9 a तिहिं त्रिभिः; सुक्कु शुक्रः; सुरगुरु वृहस्पतिः; b अंगारउ अङ्गारकः कुजो भौमः; सणि शनैश्वरः. 10 b सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्; आसंघियउ आश्रितम्. 11 a सहसाइं सहस्राणि. 13 b अद्धिदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा. 15 a °हिउ हितः. 16 सहइ शोभते; 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः; वेळ्ळिहरेहिं वल्लीधारकैः; मंदरु ढंकइ अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.

13. 1 b णिययसिरि निजश्रीः. 2 b चमरीमय चमरीमृगः. 4 b जवेण वेगेन. 5 b करिणिहसण° हास्तिनिघर्षण°. 7 a °णीलगलु मयूरः.



णं कुसुमामोणं णीससइ

णं रयणरयणपंतिहिं हसइ ।

घत्ता—संठिउ मणिरंगि मंदरसिगि चंपयवासविमीसे ॥

जिणु सासयसोक्खु णावइ मोक्खु थिउ तेलोक्कहु सीसे ॥ १३ ॥

10

## 14

ता हयाइं भेरिङ्गल्लरीमुंइंगसंखतालकाहल्लंइं वज्जयाइं ।

खिब्बिसेहिं पाणिपायकुंचियाइं णच्चियाइं वामैणाइं खुज्जयाइं ॥

भूयजक्खकिंणरेहिं खेयरेहिं रक्खसेहिं णायणाइणीसएहिं ।

आयएहिं पूरियं णिरंतरं णहंतरं भवंतभावभाविएहिं ॥

वालहंसगामिणीहिं इंदचंदकामिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं ।

5

दब्बदोर्वपूयवीयमट्टियाकणेहिं ताइं णिम्मियाइं णिम्मलाइं ।

उद्धवद्धणिद्धचारुचीरमंडवे फुरंतमोत्तिएहिं मंडिऊण ।

लोयतावकारणाइं कुच्छियाइं वंछियाइं छंडिऊण ॥

सद्धिऊण णायरेण सायरेण सासणामरे वरे पओसिऊण ।

गंधधूवफुल्लदीवतोयतंदुलण्णजण्णभायण णिवेसिऊण ॥

10

सक्कच्चिकालणेरिअण्णवाणिले कुवेरसूलिणे समच्चिऊण ।

मंतपुव्वियं विहिं सुहावहं समागमे समासियं समासिऊण ॥

जीय देव णंद वद्ध सिद्ध बुद्ध सुद्धसील सामिसाल भाणिऊण ।

दोहएहिं दोधएहिं खंधएहिं चित्तचित्तसंथुईहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning पिंगलणदो णाम दंडओ; MBP have पिंगलणंदो णाम छंदो. १ M °मुयंग°. २ MB °काहलाइवज्जयाइं. ३ MB वावणाइं. ४ P °दोव्व° but gloss दूर्वा ५ K छंडिऊण. ६ M °जज्ञ°. ७ BP °सूलिणो. ८ KT दूहएहिं.

8 b रयणरयणपंतिहिं रत्नान्येव दन्तास्तेषां पंक्तिभिः- 9 मणिरंगि रत्नभूमौ.

14. 1 वज्जयाइ वाद्यानि. 2 खिब्बिसेहिं किल्विपिकदेवैस्तूर्यवादिभिः; पाणिपायकुंचियाइं संकुचितहस्त-पादाः. 3 णायणाइणीसएहिं नागनागिनीशतैः. 4 आयएहिं आगतैः; भवतभावभाविएहिं संसारविनाशरूपरिणामसहितैः उत्पद्यमानानुरागैर्वा. 6 °दोव्व° दूर्वा, °पूय° अपूपश्चरुर्वा; °वीय° बीज. 8 कुच्छियाइं दुःखकारणानि; वंछियाइं मानमायादीनि. 9 णायरेण व्युत्पन्नेन इन्द्रेण; सासणामरे शासनदेवान्; पओसिऊण प्रतीष्य. 10 °जण्णभायएयज्ञभागान्. 11 सक्केत्यादि-शक्रादीनष्टदियपालान्; °चित्ति° अग्निदेवः; °काल° यमः; णेरि नैर्ऋत्यदेवः; °सूलिणे °ईशानान्; 12 समागमे समासियं समासिऊण जिनशासने प्रतिपादितं समाश्रित्य. 14 दोहएहिं दोहकदोधकाथैः वृत्तैः; चित्तचित्त° चित्रवृत्त°.

मंदरं छिवंतियाइ वद्धदेवपंतियाइ खीरसायरंतियाइ । 15  
 वोमयं कमंतियाइ धंतियाइ थंतियाइ जंतियाइ एंतियाइ ॥  
 हारदोरं कंचिदामवंभसुत्तकंकणालिकुंडलाहिं भूसिएहिं ।  
 आइवीयकप्पपुंगमेहिं आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥  
 अट्टजोयणोयरोहिं एक्ककंठवित्थरोहिं अब्भयं णिसुंभएहिं ।  
 हुंदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयंबुथेंभएहिं ॥ 20  
 चंदणेण चच्चिएहिं पुप्फदामवेढिएहिं णं घणेहिं संभएहिं ।  
 एक्कमेक्कढोइएहिं पोमंपत्तछाइएहिं सायकुंभकुंभएहिं ॥  
 सिंचिओ पुणंचिओ णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइदेवो ।  
 कामकोहमोहलोहमाणडंभचर्पफलत्तवज्जिओ हयावलेवो ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्धु जिणु सइंबुद्धु सो ण्हाविउ लइ ण्हाइ ॥ 25  
 झसवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

## 15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ	मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेट्टिहि जाणियसंवरहो	किं अंबरु दिण्णु णिरंवरहो ।
किं भूसणु भूसणि संणिहिउ	किं जंगमंडणि मंडणु लिहिउ ।
पविसूइइ ववगयभवरिणहो	विंधेप्पिणुं सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइं मणिमयकुंडलइं	णं ससहरदिणयरमंडलइं । 5
चवलम्भपिसायहु णट्टाइं	णहियहु सरणु पइट्टाइं ।
किं कोसिएण जगसेहरहो	सिरि सेहरु बद्धउ मणहरहो ।

१ MB मंदिरं; K मंदिरं but corrects it to मंदरं. १० P °डोर.° ११ P कंकणाहिं° १२ MBP °विंभएहिं, but gloss in P उद्गतोच्छलितजलविन्दुभिः. १३ P पोमवत्त°. १४ P °चप्पलत्त°.

15. १ P जगमंडणु मंडणि. २ P विंधेविणु.

16 वो मयं कमंतियाइ व्योम व्याप्नुवत्या; धंतियाइ धावन्त्या. 18 आइवीयेत्यादि—आद्यद्वितीयकल्पपुंगवाभ्याम्. 19 एक्ककंठवित्थरेहिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णैः; अब्भयं णिसुंभएहि मेघपटलविध्वंसकैः. 20 हुंदहोपयच्छिएहिं 'गृहाण भोः' इत्येवं भणित्वा प्रदत्तैः; °थेंभएहिं °विन्दुभिः. 21 संभएहिं साम्भोभिर्जलयुक्तैः. 22 सायकुंभ° सुवर्ण°. 24 चप्फलत्त° बहुप्रलापित्वम्. 26 झसवासहु समुद्रस्य.

15. 2 a जाणियसंवरहो ज्ञातसंवरस्य. 3 a भूसणि भूषणभूते, b जगमंडणि त्रैलोक्यमण्डलस्य; मंडणु तिलकः. 4 a पविसूइइ वज्रसूचिकया. 5 a विच्छूढइं परिधापिते. 6 a अब्भपिसायहु अभ्रप्रिशाचो राहुस्तस्मात्. 7 a कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण.

गलरेहाजित्तं वलियएण  
हियउल्लउ हारं सेवियउ

हेट्टामुहेण परिघुलियएण ।  
जडजाएं किं पि ण भाँवियउ ।

घत्ता—जो सालंकारु किमलंकारु सुरवर तासु करंति ॥

10

महु हियवइ भंति णउ लज्जंति रूवु काइं ढंकिंति ॥ १५ ॥

## 16

किं वुद्धि ण हूई सुरयणहो  
कडिसुत्तउ कडियलि वलइयउ  
किं सीहंणियंवहु एह सिरि  
कमजुइ संणहियउ झणझणइ  
जं भव्वजीवसंतइसरणु  
कोमलसरलंगुलिदलकमलु  
मइं लद्धउ जिणवरपयजुयलु  
जं करणकालि सिहितावियउ

मणिवंधु महग्घउ कंकणहो ।  
किंकिणिसरु चवइ व पुलइयउ ।  
लइ अच्छइ तं सेवंतु गिरि ।  
मंजीरजुयलु इय णं भणइ ।  
संसारमहाजलणिहितरणु ।  
णहकिरणपसरहयतिमिरमलु ।  
महु जायंउ भूसणत्तु सहलु ।  
तं तवहलु णं विहिदावियउ ।

5

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरइयण्हाणु ॥

मंदरगिरिगुज्झि महिरुंहमज्झि णं घल्लइ अप्पाणु ॥ १६ ॥

10

## 17

दूराउ वहांतु णियच्छियउ  
वंदिज्जइ जिणतणु परिलुठिउ

सीसेण सुरेहिं पडिच्छियउ ।  
कक्करकंदरणिवंडाणि सुठिउ ।

३ MBP जाणियउ. ४ BP ढक्कंति.

16. १ P सिंह°. २ M भूसणत्तु जायउ. ३ P महिहर°.

17. १ P सीसेहिं. 2 MBP परिदुल्लिउ. ३ K °णिवडणसुठिउ.

8 b हेट्टामुहेण अधोमुखेन. 9 b जडजाएं जलजन्मना मुक्ताफलेन. 11 भति विस्मयः.

16. 1 b मणीत्यादि-प्रकोष्ठः कङ्कणान्महार्घ्य इत्यर्थः. 2 a वलइयउ वद्धम्; b पुलइयउ रोमाञ्चि-  
तम्. 3 a एह एषा. 5 a °सतइ° संततिः. 7 a सहलु सफलम्. 8 a सिहितावियउ आमितापितम्.  
9 सुरसायर° क्षीरसमुद्रः. 10 घल्लइ अप्पाणु आत्मानं निपातयति.

17. 1. a णियच्छियउ निरीक्षितं स्नानजलं वन्दितं च. 2 a °परिलुठिउ पतितम्; b कक्कर° कठिन°;  
सुठिउ दुःखितम्.

णिज्जइ देवेहिं करेणं करुं  
 पंकयकेसररयधूसरिउ  
 वणकुंजरकुंभत्थलखलिउ  
 संचलियसिलिम्मुहचित्तलिउ  
 परिघोलइ सिहरिंदहु तणउं  
 णहिं णहयरोहिं महियलि णरोहिं  
 धावंतु थंतु वियलंतु चलु

गुरुसंगे को णउ होइ गुरु ।  
 कस्सीरयराणं पिंजरिउ ।  
 करडयलगलियमयपरिमलिउ । 5  
 णाणामणिकिरणहिं संवल्लिउ ।  
 णं पंचवण्णु उप्परियणउं ।  
 पायालि पडंतउ विसहरोहिं ।  
 वंदिउ सव्वण्हुहि ण्हाणजल्लु । 10

घत्ता—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसैं कैहिं मि णमंति ॥

उद्धंत पडंत पुरउ णडंत वारवार षणवंति ॥ १७ ॥

## 18

केण वि वाइत्तउं वाइयउ  
 केण वि वहुसुक्किउ संचियउ  
 सवलहणउं केण वि ढोइयउ  
 केण वि थोत्तइं पारद्धाइं  
 पडिहारु को वि हुउ दंडधरु  
 पडु पढइ का वि अणुराइयउ  
 कासु वि आलावणि णिद्धतणु  
 सरलंगुलिताडिय रणझणइ  
 तहिं अवसरि कर्यणाणावयणु  
 आयासु जि आयासहु सरिसु

केण वि सुइमिट्टुउ गाइयउ ।  
 केण वि भावालउ णच्चियउ ।  
 केण वि आहरणु णिवेइयउ ।  
 केण वि तोरणइं णिवद्धाइं ।  
 कु वि पासि परिट्टिउ खग्गकरु । 5  
 केण वि मालउ उच्चाइयउ ।  
 जहिं छिप्पइ तहिं तहिं करइ मणु ।  
 णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।  
 थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।  
 उवमाणु ण तुज्झु को वि पुरिसु 10

४ P करेहिं. ५ PT कासीरय°. ६ MBP °सिलीमुह°. ७ MBP कहव. ८ MBP षणमंति.

18. १ B णाणावयणु तणु.

4 b कस्सीरय° काश्मीरजं कुड्कुमम्. 5 b करडयल° गजकपोल°. 6 a °सिलिम्मुह° भ्रमराः; चित्तलिउ कर्तुरितम्. 7 a सिहरिंदहु मेरोः. 9 a थंतु तिष्ठत्; b सव्वण्हुहि आदिजिनस्य. 10 चउविहदेव भुवन-वासिव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवाः.

18. 1 a वाइत्तउं वादित्रम्; b सुइमिट्टुउ कर्णामृतम्. 2 b भावालउ भावयुक्तम्. 3 a सबलह-णउ विलेपनम्; b णिवेइयउ दत्तम्. 6 a अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्तः. 7 a आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः. 8 a कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्रः; b दससयणयणु सहस्रलोचनः इन्द्रः. 10 a आयासु आकाशम्.

जइ पइं जि समाणउं पइं भणमि

तां परमेसर किं पइं थुणमि ।

घत्ता—जो कहइ कएण कह कव्वेण जिणवर तुह गुणरासि ॥

सो णिरे लहुएण करचुलुएण मूढु मवइ जलरासि ॥ १८ ॥

## 19

तुह थोत्तावित्तस्स चित्तं णंव देमि  
धणलहैल्लोलेहिं संगहियसंगेहिं  
पसुमंसमज्जंबुधाराविलुद्धेहिं  
मयधुम्मिरच्छीहिं मिच्छित्तिरूढेहिं  
असिवत्तदुग्गंतराले घडंताण  
जमपासणिप्पीडियाणं सवाहीण  
इणं मो जयंजम्मवासं णिहंतूण  
जय कालकालग्गिजालावलीकंद  
जय घोरसंसारकंतराणित्थार  
जय मारसिंगारपब्भारणिब्भेय  
जय दुब्बिणीयंतरंगाण दुण्णेय  
जय देव कंठीरवुब्बूढपीढत्थ

अहमांस धिट्ठत्तणेणेरुं वंदेमि ।  
परणारिहिंसामुसाणंदियंगेहिं ।  
कुलजाइविण्णाणं गावाचरुद्धेहिं ।  
कह दीससे तं महामोहमूढेहिं ।  
णरयम्मि धंते महंते पडंताण । 5  
जिण को करालंवरणं देइ देहीण ।  
परमं पयं णेइ को तं पमोत्तूण ।  
जय इंदणाइंदलच्छीलयाकंद ।  
जय दव्वपज्जायसंभावणासार ।  
जय दीहदालिइदोहग्गविच्छेय । 10  
जय णाह णीराय णीसल्ल णाहेय ।  
जय कूरचित्तेसु भत्तेसु मज्झत्थ ।

घत्ता—जय मंथरगामि तिहुयणसामि एत्तिउ मग्गिउ देहि ॥

जहिं जम्मु ण कम्मु पाउ ण धम्मु तहु देसहु मइं णेहि ॥ १९ ॥

२ P णह.

19. १ K वदामि, २ MBP °लाहलोहेहिं. ३ MBP °गारावलुद्धेहिं. ४ M मिच्छित्ति° ५ B जयजम्म°.

12 क इ कविः, 13 ज ल रा सि समुद्रम्

19. 1 a तुहेत्यादि—तव स्तोत्रमेव वृत्तमाचरण तस्य स्तवनाचारस्य तव स्तोत्राचरणे नवीन चित्तमहं ददामी-  
त्यर्थः. 2 a संग हिय संगे हिं संगृहीतपरिग्रहैः. 3 b °गा वा च रुद्धे हिं गर्वावरुद्धैः. 5 a अ सि व त्त दु ग्गं त रा ले  
असिपत्रनरके; b धंते अन्धकारे. 7 a जयंजम्म वास जगज्जन्मपाशम् 8 a कालेत्यादि—काले प्रलयकाले  
कालामिः प्रलयामिस्तस्य ज्वालानां कंदो मेघः. 9 a °णि त्थार पर्यन्तप्रापक, b °सं भा व णा° घटना. 11 a  
दु ब्बि णी यं त रं गा ण बाठानाम् ; दु ण्णे य ज्ञातुमशक्य. 12 a कं ठी र वु ब्बू ढ पी ढ त्थ सिंहासनस्थ. 13 म ग्गि उ  
याचितम्.

देवं सुणहविऊण	भत्तीइ णविऊण ।	
पडुपडहणाएहिं	थंगिदुगिगघाएहिं ।	
दुंणिकिटिमटकेहिं	झंझंसधोकेहिं ।	
भंभंतंभंभाहिं	ढक्काहुडक्काहिं ।	
करडाहिं काहलहिं	झल्लरिहिं मँदलहिं	5
तालेहिं संखेहिं	अण्णाहिं असंखेहिं	
वहिरियदसासेहिं	जयतूरघोसेहिं ।	
बहुवयणु बहुणयणु	करपिहियपिहुगयणु ।	
हरिसेण विच्छुरिउ	णियतरुणिपरियरिउ ।	
विविहंगहारेहिं	रसभावसारेहिं ।	10
उप्पयइ पँरिवडइ	आहंडलो णडइ ।	
धम्माणुराएण	पयजुयणिवाएण ।	
सुरमहिहरो फुडइ	महिवीदु कडयडइ ।	
परिभमइ थरहरइ	णियदेहु संवरइ ।	
रोसेण फुँफुवइ	फणि फरुसु विसु मुयइ ।	15
विसजलणु वित्थरइ	धगधगइ हुरुहुरइ ।	
तावेण कढकढइ	जलयरकुलं लुढइ ।	
जँलही वि झलझलइ	सेरं <sup>९</sup> समुल्लसइ ।	

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविवरइं फुट्टंति ॥

णच्चंते इंदे णयणाणंदे गिरिसिहरइं तुट्टंति ॥ २० ॥

20

20. १ MB ठगदुगिग°; P थगदुगिग°. २ MB दुणिकिटिमटकेहि; P दुणिकिटिमटकेहि. ३ MBP भंभंत°. ४ MBP मंदलहिं ५ MBP विप्फुरिउ. ६ P पडिवडइ. ७ MB पुप्फुवइ. ८ MBP जलणिहि वि. ९ MB सरसं.

20. 2 a पडु सर्वैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थः. 4 b हुडुक्का वाद्यविशेषः. 8 a बहुवयणु शेषनागः; बहुणयणु इन्द्रः; b °पिहु° पृथु. 10 a अंगहारेहिं अङ्गविक्षेपैः. 18 b सेरं स्वेच्छया.

## 21

इय णच्चिवि गिण्हिवि उसहसिरि  
 सच्छरु सविबुहु लहु संचल्लिउ  
 संगीयसद्दकोलाहलेण  
 तणुकंतिभारवारियविहुणा  
 दीसइ अहत्यु णक्खत्तगणु  
 णं मोत्तियमंडवु मेइणिहि  
 सियजलकणणियरु समुच्छल्लिउ  
 उज्झाउरि झत्ति पराइयउ  
 उत्तरिवि करिहि हरि आइयउ  
 तिहुयणपरिपालणपरमविहि  
 विसु धम्मु तेण भाँइ त्ति पहु

आरूढु सवारणखंधि हरि ।  
 पवणंदोलियधयवडल्लिउ ।  
 खे धावंतेँ सुरवरवलेण ।  
 उँप्परि एंतेण देवपहुणा ।  
 णं णँहसरि फुल्लिउ कम्मैलवणु । 5  
 जिणु ण्हाणंतिहि मंदाइणिहि ।  
 णं दीसइ दसदिसासु बुल्लिउ ।  
 रायंगणि लोउ ण माइयउ ।  
 मायापियरहुं सिसु ढोइयँउ ।  
 संगहिउ तेहिँ सो णाणणिहि । 10  
 भासियउ पुरंदरेण विसहु ।

वत्ता—जगभरहु समत्थु पुण्णपसत्थु णंदणु लेवि अदीण ॥

सुरसंथुयपाय हरिसिय माय पुष्पयंति आसीण ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे जिणजम्माहिसेयकल्लाणं णाम

तइओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥

॥ संधि ॥ ३ ॥

21. १ P उप्परि यतेण but gloss आगच्छता. २ B णहसरिफुल्लिउ, P णहसरफुल्लिउ. ३ K कुसुम-  
 वणु. ४ MBP add after this foot: संतोसवसेण पलोइयउ, G gives it in the margin in  
 second hand, but K does not give it at all. ५ M ताइ त्ति. ६BP पुष्पयंतआसीण.

21. 1 a उ सह सिरि श्रीवृषभ, b सवारण° स्वकीयगज°, हरि इन्द्र.. 2 a सच्छरु सह अप्सरसां  
 गणेन, स विबुहु देवै. सहितः. 4 a कंतिभारवारियविहुणा कान्तिभारतिरस्कृतचन्द्रेण. 5 a अहत्यु अध-  
 स्थः 6 b मंदाइणिहे गङ्गायाः. 8 a उज्झाउरि अयोध्यायाम् 10 a °परमविहि °परमो विधाता. 11 a  
 भाइ शोभते, वृषो धर्मस्तेन शोभते प्रभुस्तेन कारणेन इन्द्रेण वृषभः इति कथितः; b विसहु वृषभ. 12 अदीण  
 अदीना आनन्दिता मरुदेवी माता. 13 पुष्पयंति आसीण पुष्पैः पुष्पप्रकरैः कान्ते कमनीये स्थाने आसीना  
 उपविष्टा.

## IV

घरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजम्मुच्छवु जो रइउ ॥  
तं पेच्छवि विसंहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ ॥ ध्रुवकं ॥

### I

जंभेद्विया—तणुअणुरुवइं रंजियरुवइं ॥  
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलंतउ मालइमालियाउ	थणथण्णामयधारालियाउ ।	5
कंकेलिपल्लवाइयकराउ	धाईउ समप्पिवि अच्छराउ ।	
किंकर गिन्वाण अणंत देवि	सिसुणाहहु गिरु भावेण वेवि ।	
तं गुरुजुयलुल्लउं विमलणाणि	पुज्जेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।	
पुंच्छिवि गउ सयमहु सघरु जाम	कोसलपुरि वड्डइ बालु ताम ।	
उत्ताणसेज्ज णिम्मुकुगंथु	णं सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।	10

G.K. have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

सौभाग्यं शुचिता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दरं  
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-  
स्यैकेकं गुणमङ्गमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

MBP have the following stanza:—

आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

1. १ MBP पेच्छवि. २ M विसिहरु. ३ MB विंभयउ; P विंभियउ. ४ MBP धाइयउ. ५ MB तग्गुरु°. ६ P पुंछिवि. ७ P णिमुक्क°; K णिमुक्क° but corrects it to णिम्मुकु°.

1. 3 a त णु अ णु रू व इं शिशुशरीरयोग्यानि भूषावस्त्राणि; b रं जि य रू व इं अनेकवर्णयुक्तानि. 4. a दे वि दत्वा. 5 a घो लं त उ लोलायमानाः; b थ ण थ ण्णा म य° स्तनदुग्धामृतम्. 6 a कं के लि° अशोकः; b धा ई उ धात्रीभ्यः. 8 a गु रु जु य लु ल्ल उं नाभिराजमरुदेवीयुग्मम्. 9 a स य म हु शतमखः; b को स ल पु रि अयोध्यायाम्. 10 a णि म्मुक्क गं थु नमो बालः; b णि य इ पश्यति.



वडुंते वडुइ हिरिविसेसु  
 वइसंते वइसइ सिरि चलच्छि  
 पसरंते पसरइ सुथिरकंति  
 भासंतएण खलियक्खराइं  
 चिरु धरियइं दरदेते पयाइं  
 जिणससिणा लेंते तणुकलाउ

खेलंते खेलइ दिहिविलासु ।  
 रंगंते रंगइ समउ लच्छि ।  
 उड्डीहोते उग्गमइ कित्ति ।  
 बुद्धइं वावण वि अक्खराइं ।  
 संभरियइं पुव्वंगहं पयाइं । 15  
 विण्णायउ चउसट्टि वि कलाउ ।

घत्ता—करणिड्डिइ थिरसंभूयमइ मइइ सत्थु समाणियउं ॥  
 तं १ चित्तं परमेसरेण ओहिइ जगु परियाणियउं ॥ १ ॥

## 2

जंभेद्विया—समदममूलउ जमसाहालउ ॥  
 सुकयहलुग्गमो जिणकप्पद्दुमो ॥ १ ॥

अमरामएहिं सिचिज्जमाणु  
 देहे णिच्चं चिय णिम्मलत्तु  
 णसियेविंदु सुरहित्तु पँउरु  
 वरवज्जरिसंहणारायणामु  
 जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाणिहाणु  
 जंगसारु सुरुउ सुलंक्खणत्तु

सोहइ पुण्णेण पवडुमाणु ।  
 महिमंदरधरणु अणंतु सत्तु ।  
 वणरुहु वि हारणीहारगउरु । 5  
 संघड्डणु पहिल्लउ पवलंधामु ।  
 तहुं अवरु वि समचउरंसठाणु ।  
 पियहियमियवर्यणु णिहित्तचित्तु ।

८ MBP खेलते खेलइ. ९ MBP चरियइं. १० MBP णं चित्तं.

2. १ B जिण. २ MBP अणंतसत्तु. ३ MBP णिस्सेय°. ४ MBP पवरु but gloss in P प्रचुर°. ५ MBP °विसह°. ६ MBP संहणणु. ७ MBP पवलथामु but gloss in P प्रचुरतेजः बलं वा. ८ MB तह; P तहं. ९ MB जगसारसुरुवु; P जगसारसरुउ. १० MBP सलक्खणत्तु. ११ MB °वयणु विहत° and gloss in M निर्मलहृदयः P °वयणविहित्त° and gloss आरोपितचित्तः.

11 b दिहि° घृतिः संतोषः. 12 b समउ लच्छि लक्ष्मीदेव्या सह. 13 b उड्डीहोते उर्ध्वाभवता. 15 b पुव्वंगहं शास्त्राङ्गानि. 16 a लेंते गृहता. 17 करणिड्डिइ इन्द्रियवृष्ट्या; थिरसंभूयमइ दृढबुद्धिः; सत्थु श्रुतज्ञानम्; समाणियउ' सिद्धिं नीतम्. 18 ओहिइ अवाधिज्ञानेन.

2. 1 a सम° उपशमः, दम° इन्द्रियजयः, b जमसाहालउ यावजीवनियमशाखाकुलः. 2 a सुकयहलुग्गमो सुकृतफलपुष्पयुक्तः, b जिणकप्पद्दुमो जिन एव कल्पवृक्षः. 3 a °अमएहि अमृतैः. 4 b सत्तु वीर्यम्, अथवा सत्त्वं शक्ति. 5 a णीसेय° निःस्वेद°; पउरु प्रचुरम्; b वणरुहु रुधिरम्; °गउरु शुरुम्. 6 b पवलंधामु प्रकृष्टसामर्थ्यं प्रचुरतेजो वा. 8 a सुरुउ सौरूप्यम्; b °णिहित्तचित्तु आरोपितहृदयः.

अद्भसय दह जासु परं पसिद्ध

जम्मेण समउ धम्मं णिवद्ध ।

णं पुरिसरूवपरिमाणु लद्धु

विहिकरणब्भासविसेसुं सिद्धु । 10

घत्ता—जसु को वि ण संणिहु भुवणयलि परमजिणिदहु णिरुवमहो ।

ससि दिणयरु मंदरु मयरहरु किं उवमाणउं देमि तहो ॥ २ ॥

### 3

जंभेद्विया-गुणगणसण्णयं

ववगयदुण्णयं ।

तोसियजणमणं

को वण्णइ जिणं ॥ १ ॥

जो ससहरु सो तहु कंतिपिंहु

चितंतु व हुउ सकलंकु खंडु ।

दिणयरु तहु तेणं जित्तु णां

णहयालि भमेवि अत्थवणु जाइ ।

जो सुरगिरि सो तहु णहवणवीहु

जं महिमंडलु तं तेण गीहु । 5

जं जगु तं तहु जसपसरठाणु

जं णहु तं तहु णाणप्पमाणु ।

जो जलणिहि सो तहु कायकोहु

जो वम्महु सो भयमुक्ककंडु ।

जो वरकरि सो वाहणु मयंधु

सीहु वि तहु सिहासणि णिवद्धु ।

पसु कामधेणु हयसहियहेउ

जो वग्घु सो वि पाविट्टु जीउ ।

जो कप्परुक्खु सो कट्टु कट्टु

देवेण समाणु ण को वि दिट्टु । 10

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ घरि वावारि जहिं ॥

तिहुयणु कुडंबु परमेसरहो सिरिविलासु किं भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेससिद्धु but gloss in P °विशेषः सिद्धः.

3. १ MBP °पुण्णयं but gloss in P सान्वयम्. २ MBP वज्जिथ° but gloss in P व्यपगत°. ३ M णहयलु. ४ P तहु सो. ५ MBP णहाणपीहु. ६ MBT कायकुंडु; P णहाणकुहु. ७ P वग्घु वि सो. ८ M पाविट्टु°. ९ MBP तिहुयणपहुत्तु.

9 b जम्मेण समउ सहजोपनीताः. 10 b वि हि क र ण ब्भा स वि से सु ब्रह्मणः करणाभ्यासाविशेषः. 12 म य र-हरु समुद्र..

3. 1 a गु ण ग ण स ण्ण यं गुणगणानामन्वययुक्तम्, b व व ग य दु ण्ण यं व्यपगतमिथ्यानयम्. ३ b खं डु चन्द्रः. 4 b अत्थ व णु अस्तमनम्. 5. b गी हु गृहीतं स्वीकृतम्. 7 a का य को हु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्, b भ य मु क्क कं डु तद्भयान्मुक्तधनुष्यः. 8 a म यं धु मदान्वयः 6 a ह य स हि य हे उ हतस्वहितकारणम्. 10 a क ट्टु क ट्टु काष्ठ निकृष्टम्; कल्पवृक्षः रत्नमयः पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठं कथ्यते कष्टमेव.

५

जंभेद्विया—सेसवलीलिया

पहुणा दाविया

पविरइयविविहकीलावियार

तणुतेओहामियतरणिर्विचु

धूलीधूसरु ववगयकडिल्लु

णिवरमणिहिं लइउ महायरेण

णिज्जइ चिरंसंचियसुकयरयणु

सो तहिं जि णिवद्धउ केमं ठाइ

केण वि पहसाविउ हंसगांमि

केण वि काइं वि खेलणउं दिण्णु

गिन्वाणु को वि हुउ तंबचूलु

कु वि मेसुं माहिसु भुयवलमहल्लु

सोवंतउ कु वि सुइहारएण

कीलणसीलिया ।

केण ण भाविया ॥ १ ॥

समयं रमंति सुरवरकुमार ।

घग्घरमालालंकिर्यणियंनु ।

सहजायकविलकोतलजडिल्लु । 5

अमरिंदाणियहिं करंकरेण ।

जेण जि अवलोइउ मुद्धवयणु ।

णवकमलालुद्धउ भमरुं णाइ ।

केण वि चोह्लाविउ भव्वसामि ।

कइ कीरु मोरु अवरु वि रवण्णु । 10

कु वि वरतुरंगु कु वि दिव्वु पीलु ।

कुं वि अप्फोडइ होएवि मल्लु ।

परियंदइ अम्माहीरण ।

घत्ता—होहल्लरु जो<sup>१३</sup> जो सुहुं सुअहिं पइं पणवंतउ भूयगणु ॥

णंदइ रिज्जइ दुक्कियमलेण कासु वि मलिणु ण होइ मणु ॥ ४ ॥ 15

5

जंभेद्विया—धूलीधूसरो

णिरुचमलीलउ

काडिकिकिणिसरो ।

कीलइ वालउ ॥ १ ॥

4. १ MBP °लंबिय°. २ P चिर. ३ MBP सुद्धवयणु. ४ M जेम. ५ MBP भसलु. ६ M हंस-  
गमाणि. ७ MB खेलणउं. ८ MBP दिव्वु पीलु. ९ MBP माहिसु मेसु. १० B omits this foot. ११ P  
परिइंदइ. १२ MB हुल्लरु. १३ M जो हो, BP होहो.

4. 1 a से स व ली लि या शिशुत्वलीलाकेलि., 3 a प वि र इ य° प्रविरचित°; b स म यं सह. 4 a °ओ-  
हामिय° तिरस्कृतम्, °तरणि° सूर्यः; b °णियंनु° नितम्बः. 5 a क डिल्लु परिधानवस्त्रम्; b सहजाय° सहो-  
त्पन्न°; °जडिल्लु° जटासहितः मुण्डनकर्मरहितत्वात्. 6 b अ म रिं दा णि य हिं देवेन्द्रपत्नीभिः. 7 a णि ज्ज इ नीयते;  
°सुकयरयणु सुकृतमेव रत्न येन सः 9 a हंसगांमि मन्दगमन.. 10a खेलणउं क्रीडनवस्तु; b कइ कपिः.  
11 a तंबचूलु कुकुट°; b °पीलु गजवालः. 12 b अप्फोडइ करेण भुजं ताडयति. 13 a सोवंतउ सुप्तः  
सन्, सुइहारएण श्रोत्ररमणीयेन; b परियंदइ आन्दोलयति, अम्माहीरण स्वदेशीनालप्रसिद्धरागध्वनिना.  
14 होहल्लरु जो जो 'होहो जय जय त्वम्' इति शब्द.. 15 रिज्जइ द्रव्यादिविभूतिं प्राप्नोति.

रंगंतुःसंतु जं किं पि धरइ  
 धरणिदु वै चंदु व संवरेवि  
 बलु जोक्खइ को<sup>३</sup> जि जिणेसरासु  
 सो णीसासेण य जाइ तासु  
 पुणु चूलाकैरणिज्जइ कयम्मि  
 संपुण्णचंदमंडलमुहेण  
 देवंगंवरवरणिवसणेण  
 भुर्यहेलंदोलियदिग्गएण  
 हउ कंदुउ गयणे समुल्ललंतु  
 णिम्मुकुजीउ णिहिट्टमग्गु  
 णिवडंतउ संचारेवि णेइ  
 पहरें पहरें सो जाइ केम

इंदु वि ण हुं तं थामेण हरइ ।  
 लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।  
 कंपावियमेइणिमहिहरासु । 5  
 णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु ।  
 उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।  
 मरुएविमहासइतणुरुहेण ।  
 घोलंतविविहमणिभूसणेण ।  
 चलपाणिवेणुदंडंगएण । 10  
 णं दीसइ सयमहघरहु जंतु ।  
 गुणिसंगे को णउ लहंइ सग्गु ।  
 समवयसहुं तं छिवहुं मि ण देइ ।  
 दिसलाणिहे संसुहु सूरु जेम ।

घत्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाइं विहाएं संगहिउ ॥

15

णवजोव्वणभावि जाम चडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

## 6

जंभेद्विया—कंचणगोरउ

धीरो<sup>१</sup> गोरउ ।

परिरक्खियपउ

णिववंदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुहामरंगु

धरणिदुच्छंगे णिवेसियंगु ।

वरुणोवरि पाय परिट्टवंतु

पवणामरि करपेल्लव धिवंतु ।

5. १ MBP तं ण हु. २ P वि चंदु वि. ३ MBP जो जि. ४ MBP °करणुजइ. ५ MBP देवंगवत्थ-  
 वर°. ६ MBP भुयवलअंदोलिय°, but T हेला अनायासम्. ७ MBP दंडुगएण. ८ M गुणसंगे. ९ B  
 लहुउ १० M जाय.

6 १ MBP धीरउ. २ MBP °पल्लउ.

5. 3 b इंदु इन्द्रः. 4 a सं व रे वि प्रगुणीभूय; b ल हु या री लघुतरा. 5 a जो क्ख इ आकलयति. 7 a  
 चूला°क्षौरम्; उ म्मि ल्ल इ प्रकाशिते प्रकटीभूते; भ ल्ल इ रम्ये. 10 a हे लं दो लि य° अनायासेन क्षिप्तः; b दं ड ग-  
 एण दण्डाग्रेण. 11 a हउ हतः; समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन्. 13 a संचारे वि अग्रे गत्वा; b छि व हुं मि  
 स्पष्टमपि. 14 a प ह रें प्रहारेण; सो कन्दुकः; b दि स ला णि हे दिड्मर्यादायाः. 15 प डि छं द उ प्रतिविम्बम्;  
 वि हा एं विघात्रा.

6. 1 a कंचण गोरउ सुवर्णवर्णः; b धीरो समर्थः; गोरउ ज्ञानरतः. 2 a परि रक्खिय पउ प्रतिपालित-  
 प्रजः. 3 a र म णु हा म रं गु क्रीडार्थं विस्तीर्णा रत्नभूमिः.

पणवन्ति पुरंदरि दिट्टि दैतु  
 जक्खिदचमरविज्जिज्जमाणु  
 फणिदउवारियविणिरुद्धदौरु  
 णं छणससि पवरूययायलत्थु  
 तहिं पत्तउ कुलयरु भणइ एम्भ  
 किं ण हवइ कदमि कमलसंडु  
 आसामुहि मिहिरु महामऊहु  
 हउं पिउ तुहु सुउ इर्थं किमहिमाणु  
 णहभायहुं पासिउ को महंतु  
 णियणेहे अहव जडत्तणेण

उच्चसिहि सरसु णाडउ णियंतु । 5  
 समभाउत्तासियकुसुमवाणु ।  
 आलोइयतियसत्थाणसारु ।  
 जहिं अच्छइ पहु सिहासणत्थु ।  
 भो णिसुणि णिसुणि देवाहिदेव ।  
 पाहाणपुंजि णवकणयपिंडु । 10  
 सिण्णिउडि विमैलि मोत्तियसमूहु ।  
 भुवणत्तइ किर णाणु जि पहाणु ।  
 को तुज्ज वि अग्गइ वुद्धिमंतु ।  
 हउं भणमि किं पि थिट्ठत्तणेण ।

घत्ता—वालत्तणु दूरुज्जिउ जइ वि तो वि ण णारिहि उवरि मइ ॥ 15  
 किज्जइ विवाहु सुकुमार तुह जेण पवइइ लोयगइ ॥ ६ ॥

## 7

जंभेद्विया—पविमलवोहिणा	मोहविरोहिणा ॥
लद्धसमाहिणा	हयदप्पाहिणा ॥ १ ॥
विहुणा उत्तं	ताय ण जुत्तं ।
मणियमयणं	एयं वयणं ।
कयसंसारं	मोहंधारं । 5
अट्टिणिछण्णं	किमिउलपुण्णं ।
पयलियमुत्तं	मंसविलित्तं ।
णाउणिवद्धं	अइणोणद्धं ।

३ MB पणवन्तं. ४ MBP °वारु ५ MBP विमल°. ६ MBP इउ. ७ MP वुद्धिवंतु. ८ MBP पवत्तइ.

7 a °उउवारिय° दौवारिक प्रतिहार. 8 a उययायलत्थु उदयाचलस्थः. 10 a °सडु° संघातः  
 11 a आसामुहि दिड्सुखे; मिहिरु सूर्यः. 13 a णहेत्यादि—नभोभागपार्थात् को महान्, न कश्चिदित्यर्थः.  
 16 लोयगइ लोकगति. व्यवहार

7 1 b मोहविरोहिणा मोहशत्रुणा. 2 a लद्धसमाहिणा प्रातपरमधर्मसमाधिना, °दप्पाहिणा गर्वः एव  
 सर्पस्तेन. 3 a विहुणा प्रभुणा. 5 b मोहधार अज्ञानतिभिरजनकम्. 6 a अट्टिणिछण्णं आस्थिबद्धम्. 8 a  
 णाउ° नहारु° (स्तायु°); b अइणोणद्ध अजिनावबद्ध चर्मणा वेष्टितम्.

लालागिहं	रुहिरजलोहं ।	
बहुमलकलुसं	धरियपुरीसं ।	10
कुच्छियगंधं	णवविहरंधं ।	
णिद्दासत्तं	पडइ पमत्तं ।	
णिसि. णिद्दाणं	मडयसमाणं ।	
उड्डइ सुद्धं	धणकणलुद्धं ।	
पहसमसत्तं	कारिमजंतं ।	15
हिंडइ दियहे	णिवडइ विरहे ।	
तरुणियणकए	असुहरणहए ।	
वाहिविलीणं	भुक्खारीणं ।	
पित्तपालित्तं	संभपसित्तं ।	
पवणपहग्गं	माणवियंगं ।	20
सेवताणं	गुणवताणं ।	
होइ ण सोक्खं	वड्डइ दुक्खं ।	

घत्ता—परसंभउं वाहासयसहिउं विच्छिण्णउं रयबंधयरु ॥

इहं जं सुहुं लद्धउं इंदियहिं तं कंह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जंभेद्विया—ता कुलकारिणा

णायवियारिणा ।

सुहहलसाहिणा

भणियं णाहिणां ॥ १ ॥

१ भो भो कयसुरेणरखंयरसेव

सच्चउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।

वंछइ सुहुं भुंजइ णवर दुक्खु

वंडुंते विहडइ बुद्धिचक्खु ।

7. १ MB णिद्दामत्तं. २ MBP विद्दाणं and gloss in P ग्लानम्. ३ B पहसमसत्तं. ४ B कारिमजत्तं.  
५ MBP 'हरणभए. ६ MP संभपसित्तं; B संभपलित्तं. ७ MBP इय.

8. १ M वुडुंते; BP वुडुंते.

9 a °गिहं °भक्षकम्. 10 a ° कलुसं °मलयुक्तम्. 13 a णिद्दाणं निद्रायुक्तम्; b मडय° मृतक°. 15 a पहसमसत्तं मार्गश्रमश्रान्तम्; b कारिमजंतं कृत्रिमाश्व्यादियन्त्रसमानम्. 18 a वाहिविलीणं व्याधिभिर्नष्टम्. 19 b संभ° श्लेष्मा. 20 a °पहग्गं °प्रभग्गम्; b माणवियंगं मनुष्यस्त्रीणां शरीरम्. 23 परसंभउं परार्थीनम्; विच्छिण्णउं सान्तरं सच्छिद्रम्; रयबंधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम्. 24 विउसु विद्वान्.

8. 1 b णायवियारिणा न्यायविचारिणा. 2 a °साहिणा °वृक्षेणः

चुकइ ण कयंतहो मरणभीरु  
 सच्चउ इंदियसुहुं सुहु ण होइ  
 सच्चउ संसारु असारु जइ वि  
 कलहंसवाणि वरवयणकमलु  
 तं णिसुणिवि जिणु णियसीसु धुणिवि  
 वितइ परमेसरु अवहिवंतु  
 अज्ज वि महु चरियावरणु कम्म  
 ता जाणिवि णियतणयंतरंगु  
 सहसा कुलणाहें पेसिएहिं

सच्चउ जि असुइसंभउ सरीरु । 5  
 सच्चउ तुहुं परलोयावलोइ ।  
 लइ महु उवरोहें वप्प तइ वि ।  
 परिणहिं सपणय पणइणिहिं जैमलु ।  
 थिउ हेट्टामुहु भवियव्वु मुणिवि ।  
 णयविर्णयचारि सिरिघरिणिकंतु । 10  
 तेसट्टिलक्खपुव्वहं अगम्मु ।  
 समहिच्छियरमणीरमणसंगु ।  
 रयणाहरणोहविहसिएहिं ।

घत्ता—ता कच्छमहाकच्छाहिवइधूयउ थणभरभग्गियउ ॥

फलपत्तफुल्लपल्लवकरिहिं मंतिहिं जाइवि मग्गियउ ॥ ८ ॥

15

## 9

जंभेट्टिया—कयमहिराहहो  
 दिज्जउ सवलयं

तिहुयणणाहहो ।

कण्णाजुयलयं ॥ १ ॥

ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं  
 दिण्णउ णाहेयहु सुंदरीउ  
 पारद्धहु परमेसहु विवाहु  
 गैय कुसुमंजलिहर लोयवाल  
 कुंअरिहिं करि अंगुत्थलउ बूहु  
 गुमुगुमियभमियचलमहुयरोहु

घरु जाइवि सिरपणवियपएहिं ।  
 कामालवालरुहवैल्लरीउ ।  
 आयउ सुखयणु हरिकरिविवाहु । 5  
 सुहि बंधव पुण्णमणोहराल ।  
 पहिलउ पेमंकुरु णं विरुहु ।  
 कउ मंडउ विविहट्टुवारसोहु ।

२ MB सयणहं, P सपणहं. ३ MBP जुयलु. ३ MBP °विणयधारि. ४ MB चरियावरणु. ५ MBP °रमणरंगु.

9. १ P °पणमिय°. २ K °वेल्लरीउ. ३ MBP कय°. MP °कुसुमंजलियर. ४ MBP मणोरहाल  
५ MP कुवरिहिं; B कुवरोहिं.

6 b परलोयावलोइ परत्र वांछाकुशल. 7 b उवरोहें आग्रहेण. 10 b सिरिघरिणिकंतु लक्ष्मीपति.  
11 b अगम्मु दुर्लघ्यम्. 12 a °अंतरंगु मनः; b समहिच्छिय° समभिलषित°. 14 °धूयउ कन्ये,  
°भग्गियउ नम्रीभूते.

9. 1 a °राह शोभा. २ a सवलयं सकङ्कणम्. 4 b °आलवाल° वृक्षमूलजलस्थानम्. 5 b हरिकरि-  
विवाहु अश्वः गजाः पक्षिणश्च वाहु वाहनं यस्य सुरगणस्य. 7 b विरुहु प्रादुर्भूतः

माणिकमुक्कशुंबुकपुरिउ  
चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ

णवसायकुंभखंभेहिं धरिउ ।

महिदेविइ णावइ मउडु लइउ । 10

घत्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ ।

णं तिमिरहु रवियरतासियहो सरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेद्विया—भम्मपसाहिउ

विदुमसोहिउ ।

संज्ञामेहउ

णं महिमौगउ ॥ १ ॥

कथइ रुपयभित्तिहिं सुहाइ

सरयब्भखंड णिम्मविउ णाइं ।

कथ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु

णं गंगतरंगु पवित्तियंगु ।

कथ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ

णं णक्खत्तंविउ गयणभाउ । 5

कथ वि हरियारुणमणिवरिट्टु

आहंडलधणुमंडलु व दिट्टु ।

अहिणवदुमपल्लवतोरणेहिं

णावइ वसंतु माणिउ वणेहिं ।

पवणुद्धयणहयलघुलियकेउ

णरणिहयतूरमंगलणिणाउ ।

पाडहियकरंगुलिणिहसणेण

दककुंदकुंदकयणीसणेण ।

पडहुल्लउ कुडुवें छित्तु तेम

झं धो त्ति दो त्ति रउ हुयउ जेम । 10

घत्ता—भंभाभेरीसरसंखुहिउ पहु पुण्णाणिलेण चलिउ ।

आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10. १ M संज्ञसमेहउ. २ MBP महि आगउ. ३ MB °तरंगपवित्तिय°. ४ MBP हरियारुणु. ५ MBP दकुकुंदिकुंदि. ६ MBPT कुडुवें.

9 a °मुक्क° मौक्तिकानि; शुंबुकु° स्तवकाः. 11 अ म लि द णी ल° निर्मलः इन्द्रनीलमणिः; °क रो लि हिं किरणपंक्तिभिः.

10. 1 a भम्म° काञ्चनं सुवर्णम्. 3 b सरयब्भखंड शरन्मेघपटलम्. 4 a भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णः प्रदेशः; b पवि त्ति यं गु पवित्रीकृतगात्रः 5 a °दि ण्ण छा उ °दत्तशोभः 6 b °ध णु मंड लु °धनुर्विस्तारः. 7 b मा णि उ अवतारितः 9 a पा ड हि य° पटहवादकः; °णि ह स णे ण °ताडनेन; b °णी स णे ण शब्देन. 10 a कु डु वें वादनकाष्ठेन; छि त्तु स्पृष्टः ताडितः.



## II

जंभेद्विया—हं वइ सुहइउ

करडासइउ ।

रसइ मुइंगउ

हसइ अणंगउ ॥ १ ॥

दं दं दं दं टिविलाइ उंत्तु

जिणु भणइ हंउं मि दंदेण भुत्तु ।

अणुहुंजिउ जं भवसइ भमंतु

णं भासइ तं तं तं भणंतु ।

संसारु जि वीणाणिकलत्तु

मणि संजोइ वल्लहु कलत्तु । 5

वहुछिइवंसु जं विहु जेण

तं कहइ णां महुरे रवेण ।

किं महलु जो भोयणउ लहइ

सो परु वि परस्स तलप्प सहइ ।

काहलवयणइं वित्थारियाइं

णं मुहपवणेणोसारियाइं ।

आऊरिय णीसासेण संख

वहिरंधं मूयं पंगुं वि असंख ।

कंसालइं तालइं सलसलंति

विहडेप्पिणु मिहुणां इव मिलंति । 10

आलगदोरदंडुलयाइं

णं तूरियं णरंतरुफुल्लयाइं ।

घत्ता—संणद्धइं पहरपडिच्छिरइं आउज्जइं गज्जति किहं ॥

जिणाणाहहु धरि रइरंगि हुए मयणरायसेणाइं जिहं ॥ ११ ॥

## 12

जंभेद्विया—का वि णियाणणं

का वि सहीयणं ।

मंडइ वहुवरं

का वि हु मंदिरं ॥ १ ॥

ता तियसपुरंधिहिं वहुवराहं

णरणारीहिं मि पंकयकराहं ।

11. १ MBP हुवइ २ MBP वुत्तु. ३ MBP भवसयभमतु. ४ BP सजोइय. ५ MBP वल्लहु कलत्तु  
६ MBP संरेण. ७ M °दोरहिं दुल्लयाइ, BP °दोरदंडुल्लयाइं

11. 1 a सुहइउ सुभद्रो डुडिशब्दः, 2 a रसइ शब्द करोति. 3 b दंदेण नारीयुगलेन चित्तविक्षेपेण  
वा. 5 a °णिकलत्तु °शब्द. संसारमेव योजयति वल्लभं कलत्रमिति कथयतीव. 6 a वहुछिइत्यादि—यच्छिद्रं  
विद्धं कृतं रागवादानभिप्रायेण, तेन कथयतीव वधूरेव छिद्रं रमणस्थानम्; अन्यत्र वहुच्छिद्रो वशः. 7 b तलप्प  
करप्रहारम्. 8 a काहलवयणइं रणतूर्यमुखानि. 9 a णीसासेण निश्वासेन; अथवा निःस्वा दरिद्राः अस्वेन  
द्रव्येणापूरिता 11 a दंडुल्लयाइं वृन्तानि. 12 पहरपडिच्छिरइं प्रहारप्रतीक्षणशीलानि; आउज्जइं आतोथानि.  
13 रइरंगि हुए रतौ अनुरागे संभूते सति.

12. 1 a णियाणण निजाननम्.

पाडियउ सलोणहं काइं लोणु  
गाइज्जइ मंगलु अवरु धवलु  
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ  
तरुणिहिं उच्चोयवि कयउ णहाणु  
सोहइ लायणै विप्फुरंतु  
सियसुहुमइं वत्थइं परिहियाइं  
मंदारोमालिउ लइउ मउडु  
देवहु देवयठवणाइ काइं  
आणंदे णच्चिउ सयणु बंधु

चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।  
संणिहियउ कलसचउक्कु धवलु । 5  
णीसुत्तु ण जडसंगहु मुणइ ।  
गोरंगइ पाणिउ धावमाणु ।  
णावइ चामीयररसु गलंतु ।  
आहरणइं ससहररुइहियाइं ।  
दीसइ णं सुरगिरिसिहरु वियडु । 10  
लोइयमग्गे णिहियाइं ताइं ।  
बद्धउ कंकणु णं णेहबंधु ।

घत्ता—भमरावलिजीयारवमुहलु मणसंखोहणंपुलइयउ ॥

कंदणं रूसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेद्विया—विरइयठाणउ  
उग्गयरोमउ

संधियवाणउ ।

विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिल्लु भाउ  
हा वम्मह तुहुं मि णिवारिओ सि  
किं वग्गहु लग्गहु अज्जु ईसि  
णं गज्जिउ दुंदुहि भणइ एस्व  
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण

हा किं रईइ पयडियउ राउ ।  
हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।  
णिवडेसहु कइहिं वि तवहुयासि । 5  
किं तुज्जु वि रिउ देवाहिदेव ।  
विरसंततूरजयजयरवेण ।

12. १ M सलोयहुं; BP सलोणहुं. २ BP उच्चाइवि. ३ MB मंदारमालउल्लइय°; P मंदारयमालउ  
लइय. ४ MBP णच्चिय सयणबंधु. ५ MBP मणसंखोहणु.

13. १ MB तुहुं वि णिवारिओ. २ MBPT कइयवि. ३ MBP विलसंत°, K विरसंतु.

4 a पा डिय उ दत्तम्; स लो ण हं सलावण्ययोः; b सं ज णि य मा णु संजनितमानं चामरं पूर्वमुन्नतस्यान्ते नाभि-  
मानयुक्तं दृश्यते. 6 a सुत्ते ण जि सुत्ति उ आवेष्टितेन सूत्रेण बद्ध इव; b णी सुत्तु श्रुतरहितो मूर्खः जडसंगं न  
त्यजति. 7 b गोरंगइ गौराङ्गे. 9 b ससहररुइहियाइं चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि. 11 a देवयठवणाइ काइं  
कुलदेवतास्थापनया किम्; b लोइयमग्गे लौकिकाचारानुसारेण. 13 जीयारव° ज्याशब्द°.

13. 1 a °ठा ण उ मुष्टिवन्धः, धनुर्धराणामालीढप्रत्यालीढवैणवाषाढादीनि वाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति;  
पक्षे चित्ते कृतस्थितिः. 3 a अमुणंतियाइ अज्ञातवत्या रत्या. 5 a ईसि जिने. 7 b विरसंत° शब्दायमानः.

संचल्लिउं परिणहुं जिणकुमारु  
 णं संसारहु घोसिउ णिसेहु  
 तहि देवि णिबंधु चैवेवि चारु  
 फेडिउ मुहवहु णं मेहपडलु  
 कंप्पिउ कुंअरिहिं णववरभएण  
 कच्छाहिवेण भिंगारु लेवि

आवंतहु तहु तहिं धरिउ दाँरु ।  
 हा किं तुहुं परिणहि चरमदेहु ।  
 भवणंति पइट्टुउ भुवणसारु । 10  
 दिट्टुउ मुहु णं छँणयंदु विमलु ।  
 करु धरिउ णाइं तिलरिणकएण ।  
 पालिजसु धवलच्छिउ भणेवि ।

घत्ता—जं पाणिउं झूढउं तासु करे विविहासासाहंचियउ ॥

णं तेण मणालवालणिलउ मोहमहातरु सिंचियउ ॥ १३ ॥ 15

## 14

जंभेद्विया—कयसियसेविहे  
 वरहु अणिंदहे

जसवइदेविहे ।

अवि य सुणंदहे ॥ १ ॥

णयणेसु णयण लगा तिरिच्छ  
 पियणेहाऊरिय वित्थरंति  
 चित्ताइं चित्ति मिलियाइं केम  
 कमणीयकामिणीवद्धणेहि  
 दिट्टुउ पडिवक्खासंकियाहिं  
 एक्केणुच्चाइय एक्क तरुणि  
 बेणिण वि लेण्णिणु णीसरिउ णाहु  
 आसीससयहिं संथुव्वमाणु  
 उक्कोइयकामरसोल्लियाहिं

मच्छेहिं णाइं पडिखलिय मच्छ ।  
 णावइ सुइसुसिरहिं पइसरंति ।  
 गयवर णइसलिलइं सलिलि जेम । 5  
 णियतणुपडिंबिंबउ दइयदेहि ।  
 तं कह व कह व बुज्झिउ पियाहिं ।  
 बीएण भुएण दुइज्ज धरिणि ।  
 णं कप्परुक्खु वेल्लीसणाहु ।  
 वेइयमणिवट्टि जगेक्कमाणु । 10  
 आसीणउ समउं वहुल्लियाहिं ।

घत्ता—वइसाणरु जासु गहेहिं सहुं पणवइ पय महियलि घुलइ ॥

सो वरइत्तु जि कुलसंतियरु होमै<sup>३</sup> धूसु जि संभवइ ॥ १४ ॥

४ MBP वारु, ५ MB चरेवि, ६ P छणइंदु, ७ MB कुवरिहिं; P कुमरिहिं, ८ MB मुणालवाल<sup>०</sup>.

14. १ MB पडिंबिंबउ, २ MBP आसीसएहिं, ३ M सोमै, ४ MBP संगिलइ.

8a परिणहुं परिणेतुम्, 9 a णिसेहु निषेधः, 12 b तिलरिणकएण स्नेहऋणकृतेन, 14 छूढउं क्षितम्; विविहासासाहंचियउ विविधा आशा वाञ्छा एव शाखा तथा अश्वितः सहितः, 15 तेण मृद्धारजलेन; मणालवालणिलउ मनः एवालवालं तदेव स्थानं यस्य मोहमहातरोः.

14. 4 b सुइसुसिरहिं कर्णविवरेषु, 7 a पडिवक्खं सपत्नी, 10 a आसीससयहिं आशीर्वादशतैः;

b वेइयं वेदिका, 11 a उक्कोइयं प्रादुर्भूतं, 12 गहेहिं सहुं आदित्यादिनवग्रहैः सहितः; घुलइ पतति.

## 15

जंभेद्विया—मत्ताचारयं  
परिरक्खियजयं  
देवासुरेहिं संगीयमाणु  
रमणिहिं सहं रमणु णिविट्ठु जाम  
रत्तउ दीसइ णं रइहि णिलउ  
णं सगलच्छिमाणिकु ढल्लिउ  
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धएण  
अद्धउ जलणिहिजलि पइट्ठु  
चुँउ णियच्छविरंजियसायरंभु  
आहिंडिवि भुवणु अलद्धवासु  
लच्छीहि भरंतिहि कणयवणु  
वारिहिरहल्लिमालोवणीउ

विग्घणिवारयं ।  
तह वि हु तं कयं ॥ १ ॥  
चलचामरेहिं विज्जिजमाणु ।  
रवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।  
णं वरुणासावहुघुसिणतिलउ । 5  
रत्तुप्पलु णं णहसरहु घुँल्लिउ ।  
णियरायपुंजु मयरद्धएण ।  
णं दिसिकुंजरकुंभयलु दिट्ठु ।  
णं दिणसिरिणारिहि तणउ गब्भु ।  
णं गयउ रयणु रयणायरासु । 10  
णिच्छुट्ठिवि कलसु व जलि णिंमण्णु ।  
णं उल्लाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संज्ञादेवयसदिस महि रंजिवि राणं विप्फुरिय ॥  
कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहइ अवयारिय ॥ १५ ॥

## 16

जंभेद्विया—कज्जलसामलो  
पत्तउ भीयरो  
वियलंतउ मुक्कचउत्थपहरु  
महिपंकयमयरंदु व घणेण

उडुदसणुज्जलो ।  
तमरयणीयरो ॥ १ ॥  
ते<sup>२</sup> पीयउ संज्ञारायरुहिरु ।  
आवंते अलिउलसंणिहेण ।

15. १ MBP मंतुचारयं. २ P णिवट्ठु. ३ MBP घुलिउ. ४ MBP गलिउ. ५ MBP अरुणच्छवि-  
रंजियसारयब्भु. ६ MB णिच्छुट्ठिवि; P णिच्छुट्ठिवि. ७ MBP णिवणु. ८ MBP कोसुंभचीरु. ९ MBP °विवाहे.

16. १ MBP पत्तो. २ MBP तं.

15. 1 a मत्ताचारयं यद्यपि जगत्स्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचारः कृतः 5 b वरुणासावहु° पश्चि-  
माशैव स्त्री; °घुसिणतिलउ कुङ्कुमतिलकः. 6 a ढलिउ पतितम्. 8 a अद्धउ अर्धविम्बं सूर्यस्य. 11 b  
णिच्छुट्ठिवि स्खलित्वा. 12 a वारिहिरहल्लिमा° समुद्रलहरीलक्ष्मीः; °लोवणीउ लुप्तः; अथवा, वारिधिलहरी-  
मालयोपनीतः.

16. 1 b उडुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोज्ज्वलः.

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ  
 हालिहु वत्थु णं परिहरेवि  
 ता उइउ चंदु सुरवइदिसाइ  
 सइं भवणालउं पइसंतियाइ  
 णं पोमाकरयलव्हासिउ पोमु  
 सुरउब्भवविसमसमावहारु  
 णं अमयविंदुसंदोहुं रुंदु  
 माणियतारासयवत्तफंसु  
 आयासरंगि ससहावगीदु  
 णं इंदहु धरियउ धवलछत्तु

रविविरहे थिउ कालउं जि णाइ । 5  
 थक्कउ णीलंवरु पंगुरेवि ।  
 सिरिकलसु व पइसारिउ णिसाइ ।  
 तारादंतुरउ हसंतियाइ ।  
 णं तिहुयणसिरिलायण्णधामु ।  
 तरुणीथणविलुलिय सेयहारु । 10  
 जँसवेळ्ळिहि केरउ णाइं कंदु ।  
 णं णहसरि सुत्तउ रायहंसु ।  
 णं कामएवअहिसेयवीदु ।  
 तदेविइ णं दप्पणु णिहिचु ।

घत्ता—वरतारातंदुल धिविवि सिरि ससि परिवट्टुलु रइणिलउ ॥ 15

दिसिरमाणिइ णिसिहि वयंसियहि णावइ दहिणं कउ तिलउ ॥ १६ ॥

## 17

जंभेष्टिया—ससहरकंतिइ  
 सोहइ लोयउ

दिसि पसरंतिइ ।  
 दुंजुं व धोयउ ॥ १ ॥

ता णिसि पेक्खणउ विलासवंतु  
 आउज्जहुं जेण मुहेण वासु  
 तद्दाहिणि उत्तरमुहणिविट्टु  
 तहु संमुहियउ मउगाइयाउ  
 तहु दाहिणेण संठियउ सुसिरु

पारद्धु झसद्धयरिद्धि देंतु ।  
 सा पुव्विल्लीदिसंमंडवासु ।  
 गायणु तुंवरु देवेहिं दिट्टु । 5  
 उवइट्टु सरसइआइयाउ ।  
 तव्वामएसि वेणइयणियरु ।

३ M सुरवरदिसाइ. ४ B सुरतुब्भव°. ५ P अमिय°. ६ MPT °संदोहरुदु. ७ BP जय°. ८ MB °पीदु.  
 ९ MP दिसरमाणिइ.

17. १ M दुदु, BP दुद्धि. २ MB °दिसि°. ३ MBP उत्तरमुदु.

5 b कालउं कृष्णम्. 8 a भवणालउ भवणं मन्दिरम्. 9 a पोमा लक्ष्मीः. 10 a सुरउब्भवविसमसमा-  
 वहारु सुरतोद्भवविपमश्रमापहारो हार ; b सेयहारु स्वेद एव हार. 11 a अमयविंदुसंदोहु अमृतविन्दुपुञ्जः,  
 रुंदु विस्तीर्णः. 12 a तारासयवत्तफंसु तारा एव शतपत्र कमलं तस्य स्पर्शम्. 13 a ससहावगीदु स्वस्व-  
 भावयुक्तम्. 14 b तदेविइ इन्द्राण्या. 15 धिविवि क्षिप्त्वा. 16 दहिणं दध्ना.

17. 2 b दुंजुं दुग्धेन. 4 a आउज्जहुं वादित्राणाम्, वासुवास स्थितिः. 6 a मउगाइयाउ मृदु-  
 गायिकाः. 7 a सुसिरु शुषिरवाशिकवाद्यम्; b वेणइयणियरु वीणाकारनिकरः

इय एहउ अँणिणिवेसु गणिउ  
वज्जइं मज्जिवि साहारणाइ  
सहसा सुइसोकबुल्लोलएण  
थिरवण्णछडयधाराविसेसु  
उव्वसिरंभाणामालियाहिं

पच्चाहारु वि सो चेव भणिउ ।  
कम्मरवी य संमज्जणाइ ।  
उद्विक्खणु किउ हिंदोलएण । 10  
कउँ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु ।  
आहल्लामेणइवालियाहिं ।

घत्ता—अमेल्लियणवकुसुमंजलिहिं देविहिं रंगिं पइद्वियहिं ॥

मोहिउ जणु मग्गणमोयणिहिं णं वम्महंधणुलद्वियहिं ॥ १७ ॥

## 18

जंभेद्विया—अहिणयकोच्छरो

णच्चइ सुरवई

विरइय णडेहिं णाणावियार  
अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु  
चोइह वि सीससंचालणाइं  
णव गीवँउ णयणसुहावियाउ  
अंतिमरसविरहिय जणियहाँव  
एक्केँ ऊणा पण्णास भाव  
फुरणइं वल्लणइं अणिवारियाइं

भुवँणिहियच्छरो ।

डोल्लइ वसुमई ॥ १ ॥

चारी बत्तीस वि अंगहार ।  
करणहं अट्टोत्तरु सउ वि दिण्णु ।  
भूतंडवाइं रंजियमणाइं । 5  
छत्तीस वि दिट्टिउँ दावियाउ ।  
अट्टु वि रस सच्चेयणसहाव ।  
अवर वि अउँव्व भावाणुभाव ।  
णच्चंतहिं तहि अवयारियाइं ।

४ MBP कहव. ५ MBP किउ. ६ B रंग°.

18. १ MBPT अहिणव°. २ KT भुय°. ३ MB चउदह. ४ BP गीयउ. ५ MBP दिट्टुउ.  
६ MBPT °भाव. ७ P अपुव्व. ८ M करणइं. ९ MKT अवधारियाइं.

8 b पच्चाहारु स एव प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 a मज्जिवि मृदादिभिर्मार्जयित्वा; साहारणाइ युगपत्सर्ववाद्याविषयाय; b कम्मरवी सर्ववाद्यानां मृदादिसंमार्जनं कर्मारवी नाम. 10 b उद्विक्खणु आलतिकरणहिंदोलकरागविशेषः 11 a °वण्णछडयधाराविसेसु वर्णच्छटकधारात्रयस्तालविशेषाः. 14 मग्गणमोयणिहिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च.

18. 1 b अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्षः; b भुवँणिहियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन. 3 b चारी पदप्रचारः. 4 a अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु परस्परं शरीरावयवेषु, यथा पादो हस्ते, हस्तः पादे; b करणहं शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति करणानि 5 b भूतंडवाइं भ्रून्त्यानि. 6 a गीवउ ग्रीवाः; b दिट्टिउ प्रेक्षितानि. 7 a अंतिमरस° शान्तरस°; जणियहाव जनितस्थायिभावाः,

पुणु पत्तइं वंदियपयरयाइं  
मुद्धइं पेम्मंधइं रूसवंतु  
तारातारावइरुइ हरंतु

छंडर्णयपओएं णिग्गयाइं ।  
णिण्णेहइं मिहुणइं तूसवंतु ।  
विहडियंचक्कउलइं मेलवंतु ।

10

घत्ता—उट्टिउ रविर्बिबु दियहसिरिण अरुणकिरणमालाफुरिउ ॥

उर्ययइरि महारायहु उवरि णर्वरत्तउं छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

## 19

जंभेद्विया-ससिपायाहया  
अलिरवरसणिया  
दंसइ पविर्भलं  
तं<sup>३</sup> पसरियकरो

दुक्खं पिव गया ।

रुयइ व भिसिणिया ॥ १ ॥

ओसंसुयजलं ।

पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥

णं सोहइ दीविये जंबुदीउ  
अहुग्गमंतु णं लोयणयणु  
णं वाडवग्गि णहसायरासु  
णं ताहि जि केरउ अहरबिबु  
णं वासरविडवंकुरु विणित्तु  
ता तहिं सोहणि संसारसारु  
कासु वि हयगयचेलिउ रवण्णु

णहमहिसैरावपुडि दिण्णु दीउ ।

णं एंतहु सेसहु सीसरयणु । 5

णं दिसांणिसियरिमुहमार्सगासु ।

णं णिसिर्वहुवहि पयमग्गु तंबु ।

णं जगंकरंडि पवलउ णिहित्तु ।

कासु वि कडिसुत्तउ दोरं हारु । 10

कासु वि धणुं धण्णु सुवण्णु अण्णु ।

१० MB छहुणयपओएं; PT छहुणयपओएं. ११ MBP रूसवंतु. १२ BP विहडियचक्कउ. १३ MBP उवरयइरि. १४ MBP णं रत्तउ.

19. १ MBP रुवइ. २ BP पविउलं. ३ MBP ते. ४ MBP जं. ५ MBP दीवइ. ६ MBP ०सरावि पुडदिण्णु. ७ MB दिसि०. ८ MB ०मंसगासु; P ०मंसु गासु. ९ MBP ०वहुयहि. १० M जग-करडंवे विहुमु; B जगकरंडि धवलउ; P जगि करंडि विहुमु. ११ MBP हारु दोर. १२ M घणघण्णु; P धण्णु सुवण्णु.

10 a ०पयरयाइं पदरजांसि; b छंडणय० नृत्योपसंहारहेतुस्तालविशेषः छहुणकप्रयोगः. 12 a तारावइ० चन्द्रः.

19. 2 b रुयइ रुदति; भिसिणिया पत्निनी. 3 b ओसंसुयजलं अवश्यायः एव अश्रुजलम्. 4 b पुसइ मारिं; तमिहरो आदित्यः. 5 a दीविय दीप्तम्, b सेसहु धरणेन्द्रस्य. 7 b मासगासु मांसप्रासः. 9 a वासरविडवंकुरु दिवस एव वृक्षस्तस्याङ्कुरः; विणित्तु विनिर्गतः. 10 a सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो जं मग्गइ तं तासु दिण्णु  
संमाणियाइं सुहिपरियणाइं  
वित्तइ विवाहि विहवेण साहु

काणीणदीणदालिहु छिण्णु ।  
चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।  
थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणएं हियवइ भावियउ ॥

15

सियपुंफयंतु सो रिसहंपहु भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम  
चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥

॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो तासु. १४ MBP' सिरिपुप्फयंतु. १५ MBP रिसहु पहु.

१४ ष णएण न्यायेन. १६ सि यपुप्फयंतु शुक्कुन्दपुष्पवदन्ता यस्य.





सयदलदलालंबिरुंतंताभिगं	सरवरमसारिच्छतिंगिच्छंपिंगं । 10
दसदिसि बहुष्पिच्छरंगंतभंगं	जलखलणपक्खालियद्दिंसिंगं ।
अमरिसझसप्फालणुट्टंतसदं	करिमयरमालारउदं समुदं ।
सयलमवि अँलोयए संविसंतं	णियवयणपोमम्मि छोणीयलं तं ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परिहँच्छिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥

कयरीहहो गय णाहहो धँरु पुरंधिचूडामणि ॥ १ ॥

15

2

रचिता—पभणइ सुणंसु पुरिसहरि सुरगिरि ससि रवि सरवरोयँही ।

मइ णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ घोसइ	चक्कवट्टि तुह तणुरुहु होसइ ।
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ	महिरायाहिराय गरुयारउ ।
ससहरेण सूहउ सोमाणणु	कंतिवंतु कंतासुहमाणणु । 5
सूरँ सूरु पयावँ दूसहु	सरवरेण पयडियसिरिसंगहु ।
रयणायरेण संवंसपहायरु	चंडि चारु चोदहरयणायरु ।
महिआहारँ रिउ भंजेसइ	छक्खंड वि मेइणि भुंजेसइ ।
कइहिं मि दियहहिं होइ णिरुत्तउ	देवि <sup>३</sup> ण चुक्कइ जं मइं वुत्तउ ।
तो सब्वत्थसिद्धिअँहिहाणहु	सइं अहमिंदु चलिउ सविमाणहु । 10
पुव्वपुण्णसंपयसंपुण्णउ	जसवइदेविहि गब्भि णिसण्णउ ।

१ BP° रुदंत°. १० M °तिगंगंछ°; BP °तिगिच्छि°. ११ B समालोवए; P मालोयए. १२ MBP परि-  
यच्छिवि. १३ M कयरायहो. १४ M घर°.

2. १ MBP णिसुणि. २ MBP °वरोवही. ३ M देव. ४ MBP °अहिणाणहु.

10 a °रुदंत° शब्दं कुर्वन्तः; b असा रि च्छ° अनुपमम्, तिं गि च्छ° मकरन्दः. 11 a उ प्पि च्छ° उल्वण°;  
b अ हिं द° अदीन्द्र°. 12 a अ म रि स° अमर्षः काधः; b क रि म य र° जलहस्ती. 13 a सं वि सं तं प्रविशत्,;  
b व य ण पो म म्मि वदनकमले; छो णी य लं पृथ्वीमण्डलम्. 14 परि ह च्छि वि वितर्क्य; सु प्प हा इ सुप्रभाते.  
15 क य रा ह हो कृतशोभस्य; पुरंधि चूडाम णि यशोमती.

2. 4 a पि यारउ सर्वेषां प्रियतमः. 5 b कं ता सु ह मा ण णु कान्तायाः सुखं मानयति. 9 b प य डिय-  
सि रि सं ग हु प्रकटितलक्ष्मीसंग्रहः. 7 a सं व सं स प हा य रु कुलप्रभाकरः; b चं डि हे तरुणि.



4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।

विसरिससुंकयसाहिसाहासिउ वड्डइ रायहंसओ ॥ १ ॥

णामकरणचूलाकरणाइउ	सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।	
जणणीजोव्वणफल्लंगोछो इव	विहलियलोय कप्पवच्छो इव ।	
सुहिवयणामयविंदुपवेसु व	मित्तचित्तसंगहणणिवेसु व ।	5
गुणसंसापयासमग्गो इव	रोयसोयउज्झिउ सग्गो इव ।	
पिउसहावसंचउ रूढो इव	बंधुणेहबंधणवेढो इव ।	
किंकरयणमणचिंतामणि विव	अरिमहिहरसिरसोदामणि विव ।	
णिहिलणायसन्भावणिही विव	हरणकरणउद्धरणविही विव ।	10
भारसोदु गरुययरं मही विव	भूरिभोयभारिल्लु अही विव ।	
दुणिहालउ मज्झण्णरवी विव	वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।	
लायण्णंबुपवाहसरो इव	विलयावंदहुं कुसुमसरो इव ।	

घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुंइ जयसिरि जयकारिणि ॥

जसु णिवसइ मुहि सरसइ कित्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥ 15

5

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविसझसलक्खणाहिओ ।

सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

णं सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ	णाइं पयावेँ विहिणा घडियउ ।
जलिवि जलिवि उल्हाइ ण जीवइ	जासु भएण णाइं सिहि णीवइ ।

4. १ M सुकय°. २ MBP णामकरण. ३ P चूडा° ४ MBP °गुंछो. ५ P विहासिय°. ६ MB बुह-  
वयणामय°; P बुहणयणामय°. ७ MBP धण°. ८ P °सिरि. ९ MBP गरुययर. १० MBP भुयजुइ.

4. 1 °क र मं ज रि° किरणसंघाताः; °णि व इ वं स ओ °राजवंशः. 2 वि स रि स° अद्वितीयम्; °सु क य-  
सा हि सा हा सि उ पुण्यवृक्षशाखाश्रितः. 5 b °णि वे सु स्थानम्. 7 a पि उ स हा व° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो  
वा; रूढो प्रसिद्धः. 9 a णाय° न्यायः; b °वि ही विधाता. 10 b °भो य° भोगाः फटाटोपश्च. 11 b जं भा रि°  
इन्द्रः. 12 a अंबु प वा ह स रो समुद्रः; b वि ल या वं द हुं वनितावृन्दस्य. 13 अ सि द लि खड्गपत्रे; भु इ भुजे.

5. 1 वि स वृषभः; °अ हि ओ अधिकः. 2 °प सा हि ओ °मण्डितः. 3 a णि व्व डि उ कषोत्तीर्णः. 4 a  
ज लि वि ज लि वि प्रज्वल्य प्रज्वल्य; उ ल्हा इ ज्वालारूपतां परित्यजति, अङ्गारावस्थो भवति; ण जी व इ ज्वालारूप-  
यैव नावतिष्ठति; b णी व इ विध्याति, अङ्गाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थः

अइपर्मत्तु पुणरवि णासंगइ	जडसंगु वि मज्जाय ण लंघइ ।	6
पालियवेळड जन्मु मयरालड	जासु भएण जिं थिड जैंडं कालड ।	
णायगड ग्बुल्लड कीडल्लड	चंदु वि जायड चंदगहिल्लड ।	
पक्खि पक्खि सो दीसइ भग्गड	पवणु वि गमणब्भासहु लग्गड ।	
इंदु वि इंदधणुहु गुणिं णाणइ	अज्ज वि तं तेहड जणु जाणइ ।	
णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ	विणएण जि णवंतु घरु आवइ ।	10

घत्ता—अलिउलचल चुयमयजल महिहरभित्तिवियारण ॥

अविहियसर कुंचियकर जसु तसंति दिसिवाँरण ॥ ५ ॥

## 6

रचिता—करिसिरदलियरत्तलित्तुग्गयमोत्तियखइयकेसरो ।

सिसुससिकुडिलचडुलविज्जुज्जलदाढाजुयलभासुरो ॥ १ ॥

एहओ वि हरि विप्फुरियाणणु	जासु भएण व सेवइ काणणु ।	
णवजोव्वाणि चडंतु परमेसरु	सुरवरकरिकरथिरदीहरकरु ।	
सो सिक्खविड सपिडणा सब्बइं	कालक्खरइं गणियगंधव्वइं ।	6
णाडयाइं बहुभावरसत्थइं	णरणारिहिं लक्खणइं पसत्थइं ।	
तब्भूसायरणाइं विचित्तइं	वम्महचरियइं हियवहुचित्तइं ।	
गंधपउत्तिउ रयणपरिक्खड	मंत तंत वरहयगयसिक्खड ।	
कौंतगयासिघ्रायसंताणइं	चक्कचावपहरणविण्णाणइं ।	
देसदेसिभासालिविठाणइं	कइवायालंकारविहाणइं ।	10

5 १ B पमुत्तु २ MBP व. ३ MP जमु. ४ M इंदधणुहि गुण; BP गुण. ५ MBP दिसवारण.

6 १ MBP णरणारी°. २ P हयवरगय°.

७ जडसंगु जडेन जलेन सह संगो यस्य; मज्जाय मर्यादाम्. 6 a जसु यस्य भरतस्य; b जडं यमः. 9 a वि णाणट गुण नारोपयति, प्रत्यग्ना नानयति. 12 अ वि हि य सर अकृतशब्दाः; कुंचियकर संकोचित-  
शब्दाः.

6. 1 °रत्ते न्याः १-°रत्तलित्तोद्रतमौक्तिकजटितकेसर ३ a एहओ ईदशः; हरि सिंहः. 5 b कालक्ख-  
ः मर्यादित्ताक्षराणि. 7 a तब्भूसायरणाइं नरनारीभूषणकरणानि, b वम्महचरियइं कामशास्त्रम्, हिय-  
वहुचित्तइं रत्तलोत्तानि. 10 a देसदेसिभासा° देशानां संवन्धिनी देशभाषा; लिलिलिपिः; b कइवाया-  
लंकारविहाणइं कविनागलंकारविधानानि.

जोइसछंदतक्कवायरणइं  
वेज्जिणिघंटोसहिवित्थारु वि  
चित्तलेप्पसिलवरतरुक्कम्मइं

मल्लगाहजुज्झइं कयकरणइं ।  
बुज्झिउ सँव्वलोयवावारु वि ।  
एवमाइ अवराइं मि रम्मइं ।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ ।

अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ ॥ ६ ॥

15

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए ।

गिरिथणिधराणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए ॥ १ ॥

पभणइ पहु भो पढमणरेसर  
ववसाएं सुसहाएं संपय  
अलसत्ते खलसंगे णासइ  
असहायहु जगि किं पि ण सिज्झइ  
जाइ णाव मारुइण विलग्गे  
मंति सूरु दुहसहु सुहि सहयरु  
जगि कज्जु जि मित्तारिहि कारणु  
तं पि बुद्धदारेण समुब्भइ

अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर ।  
होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय ।  
सा मइ एहउ तुह सुय सीसइ । 5  
हत्थि वं सुत्तसमूहे वज्झइ ।  
जलइ जलणु तासु जि संसग्गे ।  
तासु करेज्जसु कज्जि महायरु ।  
तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु ।  
बुद्धि वि बुद्धेहं सेवइ लब्भइ । 10

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुँइ जराइ णिब्भच्छिय ॥

जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय ॥ ७ ॥

३ B वेज. ४ MBP सयल

7. १ MBP णिसुणिहि. २ MBP हत्थि वि. ३ MB सुहदुहसहु; P दुहसुहसहु. ४ MBP बुद्धि-  
चारेण. ५ B बुहसेवइ. ६ MP सिरि पलियहिं; B सरे पलियहिं. ७ MBP मुय.

11 b कयकरणइं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि. 12 a वेज° वैद्यकम्; णिघंट° कोशः. 13 a  
तरुक्कम्मइं काष्ठकर्माणि.

7. 1 णिवरिसि राजर्षिः. 2 गिरिथणि° गिरिः स्तनः यस्याः सा पृथ्वी, 3 b अत्थसत्थु नीतिशास्त्रम्.  
4 a सुसहाएं सुसहायेन. 5 b एहउ ईदृशम्; सीसइ कथ्यते. 7 a मारुइण विलग्गे वायुना पृष्ठतो लग्नेन.  
8 a सूरु सुभटः; दुहसहु दुःखस्य सोढा; सुहि सुहृत्; सहयरु मित्रम्; b महायरु महादरम्. 9 b अव-  
हेरणु अवगणनम्. 10 a समुब्भइ विचार्यते. 11 मुँइ मुञ्च; णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपाः. 12 कम्मत्थइ  
कर्मकरणे.

## 8

रचिता—णियमइणयणविहवपविलोइयपरणरछिइचारिणो ।

पहुविरइयविसालदोसेसु पिहाणय राहयारिणो ॥ १ ॥

बुद्धितुलातोलियमहिमंडल

बुद्धा जेहि ण सेविय भत्तिइ

ते सुंदर जाणसु दुवियड्डा

हॉनि अबुह बुहसंगं बुद्धा

बुहसेवाए बुद्धि उप्पज्जइ

सुस्ससा सवणु वि संधारणु

तिविह होइ मंतहु संबंधिणि

णिसुणिकखाउवंसमंडणधय

ताइ मंतु अवसें णिप्फज्जइ

मंतचारणिम्महियाहंडल ।

णउ मुच्चंति कयाइ वि यत्तिइ ।

कुलवलसिरिमयजलणं दड्डा ।

चंपयवासं तिले वि सुयंधा ।

सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।

मोयणु गहणु णाणु णिच्छयमणु ।

सा वि कैहवि तिजगचिंतामणि ।

गुरुयणगय सुयगय णियमणगय । 10

सो पंचविहु कहंति महामइ ।

यत्ता—आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुवाउ चितेवउ ॥

णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ ॥ ८ ॥

## 9

रचिता—अवि य सहरिस पुरिस दंडपोरिस सुकयावायरक्खणं ।

अविरलमिलियविउलफलसिद्धि वि जाणसु मंतलक्खणं ॥ १ ॥

सुयणुद्धरणु दुट्टणिग्गहणु वि

जणवयदोससमणु जा सुच्चइ

किसि पसुपालणु सहं वाणिज्जे

णाएं छट्टभायसंगहणु वि ।

दंडणीइ सा पुत्त पवुच्चइ ।

वत्त भणिज्जइ महिवइपुज्जे । 5

8. 1 MBP बहु°. 2 MBP तिल व. 3 MBP कहंति. 4 MBP णिप्पज्जइ.

9. 1 MBP दढपउरिम.

8. 1 °परणर° शत्रवः; °छिइचारिणो चारपुर्याः 2 पहुविरइय° निजस्वामिविरचित°; पिहाणय पिधानभुताः; राहयारिणो निजस्वामिशोभाकारिणः. 3 b यत्तिइ आर्त्या द्वन्द्वेन (च + अत्तिइ). 5 a दुवियड्डा इत्युत्पत्ताः, b °मय° °मदाः. 8 a संधारणु कालान्तराविस्मरणम्; b मोयणु हर्षः; णिच्छयमणु ऊहापोहविज्ञानानि. 11 a ताइतया त्रिविधया बुद्ध्या. 12 आढत्तइ कम्मत्तइ आरब्धे कार्ये; पढमुवाउ कार्यनिर्धारः.

9. 1 °सुकयावायरक्खणं सुकृतापायरक्षणम्. 3 a छट्टभाय° पट्टभागः करः. 5 b वत्त वार्ता नाम राजपिदा.

चउवण्णासमु धम्मु तइत्तिय  
ते अण्णु पइं पुरउ करेवा  
ताहं कम्मु जगसंतिपयासउ  
अय तिवरिस जव तेहिं हुणेवउ  
जं<sup>३</sup> जि पढेवउ तं जि करेवउ  
दंसंणणाणचरित्तु कहेवउ  
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती  
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु  
इय मज्जाय विलंघवि लंपड

अज्ज वि सुंदर होंति ण सोत्तिय ।  
हीण दीण दाणेण भरेवा ।  
जणियभूयर्गहयणसंतोसउ ।  
जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।  
असि ण धरेवउ दाणु लएवउ । 10  
तिउणउं सुत्तु सरीरि ठवेवउ ।  
अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती ।  
णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।  
ते खार्हिति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धराणिजणधारणु ॥

15

इय इट्टु मइं सिट्टु खत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुंमग्गयं परिकिखयं ।

पंसुसममिणमसेसमहिवल्लयमहो णरणाह रकिखयं ॥ १ ॥

पढेणहवणदाणइं वाणिज्जइं  
सुदहु भँणु वत्ताणुट्ठाणु वि  
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु  
कम्मरहिउ जगि भहु ण भुंजइ

इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइं ।  
वण्णत्तयपेसँणसंमाणु वि ।  
एम कम्मिं संजोएवउ जणु । 5  
धम्मविवज्जिउ तं पि ण किज्जइ ।

२ MBP गहगण°. ३ K तं जि पढेवउ जं जि करेवउ. ४ MBP दंसणु णाणु चरित्तु. ५ MBP धरेवउं.

10. १ T reads कमग्गयं and explains it as पादाग्रे स्थितम्; it however records a p कुमग्गयं and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. २ M पसुसिमं. ३ MBP पढणइं घणदाणइं. ४ P पुणु. ५ MBP °पेसणु संमाणु.

6 a आसमु आश्रमाः; तइत्तिय त्रयी विद्या; b सोत्तिय विप्राः. 7 a पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्याः.

8 b भूय भूत°. 9 a अय अजाः त्रिवर्षयवाः एव येषामङ्कुरोत्पत्तिर्न विद्यते. 11 b तिउणउं सुत्तु त्रिगुणं यज्ञोपवीतम्. 15 सुयसंगहु श्रुतसंग्रहः; करुणावहु दयामार्गः. 16 इट्टु इष्टम्.

10. 1 वियलियमलमईहिं विगलितपापमतिभिः; कुमग्गयं कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसुसममिणं पशुसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते. 4 a वत्ताणुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्.



मंतिठाणि कुल्लुबुद्धिइ चत्ता  
 अंतेउरि पमत्त कामाउर  
 ण थविज्जंति काइं वित्थारें  
 पडिवयणेण तासु मइपसरणु  
 सहवासेण सीलु जाणेवउ  
 जाणेवा राएं पेसिवि चर  
 सामभेयधणदंडसमागउ

तिक्ख पक्खपालणइ अभत्ता ।  
 लुद्ध धणाहियारि पसरियकर ।  
 णासइ पडु दुट्टे परिवारें ।  
 कलहे ण वि परियणपोरिसिगुणु । 10  
 ववहारेण सउच्चु मुणेवउ ।  
 कुद्ध लुद्ध माणिय भीरुय पर ।  
 झत्ति रइज्जइ जं जसु जोग्गउ ।

घत्ता—णियकज्जु वि परकज्जु वि कम्मद्धक्खसुइत्तणु ॥

जाणेवउ माणेवउ एत्तंउ पुत्त पडुत्तणु ॥ १० ॥

15

## II

रचिता—कुणसु सकलुसवइरिणिवपेसियपणिहीपडिविहाणयं ।

परियणसयणमित्तसंतोसयरं संमाणदाणयं ॥ १ ॥

दुविहु वि जणउवसग्गु हरेज्जसु  
 भाक्खिउं उप्पेक्खिउं वि मुणिज्जसु  
 सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि भावहि  
 अवलंबेज्जसु गुरुहिययत्तणु  
 चवलत्तणु अयालगामित्तणु  
 णारि जूउ मइरा मयमारणु

तिविहसत्तिसन्भाउ करेज्जसु ।  
 णिग्गहु अवरु अणुग्गहु देज्जसु ।  
 सव्वणिओयसुद्धि संदावहि । 5  
 मुयसु दिट्ठकामुयकामित्तणु ।  
 खलसंगु वि दुव्वसणपवत्तणु ।  
 कामुप्पणउ चउविहु दारुणु ।

६ M मंतिट्टाणेषु सुबुद्धिए चत्ता; BP मंतिट्टाणि कुबुद्धिइ चत्ता. ७ MBP एत्तिउं.

11. १ MBP विहावहि. २ MBP धिट्ठं but gloss in PT दृष्टे स्त्रीजने. ३ MBP अयालि.

7 a मंतीत्यादि—मन्त्रिस्थाने कुलबुद्धिहीना न कर्तव्या; b तिक्ख तीक्ष्णाः हिंसाः ये ते ग्रामनगरादिरक्षणे न स्थापनीया. 8 b धणाहियारि भाण्डागाराधिकारे. 10 b कलहे संग्रामकाले. 11 b सउच्चु निर्लोभिता. 12 b पर शत्रवः. 13 a °समागउ °प्राप्तम्. 14 कम्मद्धक्खसुइत्तणु कर्माध्यक्षणाधिकारिणां शुचित्वं निर्लोभत्वम्.

11. 1 °पणिहीपडिविहाणयं चारपुरुषप्रतिविधानकम्. 3 a दुविहु मराकदि देवकृतं घाटीप्रमुखं मनुष्यकृतम्; b ति वि ह स त्ति मन्त्रोत्साहप्रभुत्वशक्तयः 4 b णिग्गहु दण्डम्; अणुग्गहु प्रसादम्. 5 b णिओयसुद्धि संदावहि यत्कर्म येन नियोगिना कर्तव्यं तत्तरय दर्शय. 6 b दिट्ठकामुयकामित्तणु दृष्टे स्त्रीजने ये कामुकाः कामसेवोत्सुका. तेषु अभिलाषं मुञ्च. 8 a मयमारणु भृगया.

अण्णाएं ण दविणु णासेवउ  
रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं  
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ

इ सुंफेरुसु भासेवउ ।  
मइं महिवइसासाणि विण्णायउं । 10  
रिउच्छव्वग्गहु हियउं ण दिज्जइ ।

घत्ता—मुइ कोहु वि मउ लोहु वि माणु हरिसु सहु कामे ।  
गुरु घोसइ सिरि होसइ एयहु खयपरिणामे ॥ ११ ॥

12

रचिता—एकंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु भणंति सूरिणे ।  
तासु महंति मंतु पहुपेसिय गूढा लिंगधारिणे ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा  
कीरइ कालि गमणु ववगयमलि  
विग्गहु हीणे अहव समाणे  
दुग्गासिएण समाणु वि किज्जइ  
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु  
उप्पाइज्जइ दव्वु पसत्थहं  
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ  
सामि अमच्चु रट्टु धणु सुहि बलु  
इउ सत्तंगु जेम्ब णउ खिज्जइ

जे विरुद्ध ते तहिं णिहणेवा ।  
आसणु बहुकणतणजलमहियलि ।  
बलवंतेण संधि कैयदाने । 5  
मित्तु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ ।  
परिरक्खिज्जइ कय चितियफलु ।  
तं दिज्जइ अट्टारहतित्थहं ।  
रायाइल्लउ खयहु ण गच्छइ ।  
भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिबलु । 10  
तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्कवट्टिलच्छीहरु ॥

णियज्जणणे णं तवणे वियसाविउ कमलायरु ॥ १२ ॥

४ MBP सुफेरुसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पणु वसणु णिहणेव्वउ. ६ P adds after this line: णिच्छउं  
मइं हियवइ संभाविउ. ७ MP चित्तु.

12. १ MBP णेरंतरु. २ MBPK दीणे. ३ M कयमाणे. ४ MBP दुग्गासिए संमाणु जि किज्जइ.

10 a रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं अन्यायेन द्रव्यनाशः, तीक्ष्णदण्डः, परुषवचनं चेति रोषोत्पन्नं त्रिभेदं  
व्यसनम्. 11 a भरेण आतिशयेन. 12 मुइ मुच्च.

12. 1 एकंतरिउ एकदेशान्तरस्थं राजानं मित्रम्; णिरंतरु समीपस्थं शत्रुम्. २ तासु महंति मंतु  
तस्य शत्रोः भिन्दन्ति मन्त्रम्; लिंगधारिणे विविधवेषधराः. 5 a विग्गहु संग्रामः. 6 a दुग्गासिएण  
समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधिः क्रियते; ७ पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम्. 9 ७ रायाइल्लउ अनुरागयुक्तम्. 10 सुहि  
सुहृत्. 11 ७ वसुमइ पृथ्वी. 12 तवणे सूर्येण.

## 13

रचिता—गुणमणिकिरणपसरभरपसमियदुण्णयतिमिरमेलओ ।

हुउ वइसवणपवणजमससिरविहुयवहवरुणलीलओ ॥ १ ॥

धम्मत्थेसु कुसलु तेयंसिउ  
अपिसुणु वड्डुच्छाहु अरूसणु  
मइदिहिहरु समत्थु जिर्त्तिदिउ  
दूरालोउ अदीहरसुत्तउ  
थिरु संभरणसीलु णिम्मलवउ  
थूललक्खु मेहावि सयाणउ  
पुणु सव्वत्थविमाणहु आयउ  
जसवइदेविहि वीयउ णंदणु  
अवरु अणंतवीरु पुणु अच्चुउ

हियमियमहुरभासि णिवसंसिउ ।  
सुइ सुधीरु बलवंतु महासणु ।  
सहसुप्पण्णबुद्धि जगवंदिउ । 5  
पुरिसण्णउ पसण्णु गुरुभत्तउ ।  
सँल्लु अजिभचित्तु अइसूहुउ ।  
किं वण्णिज्जइ भारहराणउ ।  
वसहसेणु णामें संजायउ ।  
पुणु वि अणंतविजउ रिउमइणु । 10  
वीरु सुवीरु मत्तकरिकरभुउ ।

घत्ता—गंयभंगहं चरिमंगहं पुण्णपहावपउण्णउं ॥

गुणजुत्तहं सउ पुत्तहं एवमाइ उप्पण्णउं ॥ १३ ॥

## 14

रचिता—अणथणणयणवयणकरकमयलसयलावयवसोहिया ।

समियसविसयविरसेविसवेइणि सीलैसिरीपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सलक्खण कोमलगत्ती  
जसवइसइसरीरि संभूई

णक्खकंतिणिज्जियणक्खत्ती ।  
वंभी णामें अवर वि हूई ।

13. १ GK have दुवई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Samdhi. २ P पयसमिय. ३ B मइदिहिहरु. ४ B संतरणसीलु. ५ MBP सक्कु. ६ B अजिभचित्तु. ७ BP अच्चउ but gloss in P अच्चुतः ८ MBP सुधीरु. ९ MBPT गयरंगहं.

14. MB °कणयवयण°. २ MB °विरसवेइणि. ३ P सालसिरी°. ४ MB °पहासिया.

13. ३ a धम्मत्थेसु धर्मार्थयोः; तेयंसिउ तेजस्वी; 4 b महासणु गम्भीरशब्द; 5 a मइदिहिहरु मतिवृत्तिगृहम्; 6 a दूरालोउ दूरालोची दीर्घदृष्टिः; अदीहरसुत्तउ शीघ्रकार्यकर्ता; b पुरिसण्णउ पुरुषविशेषज्ञः; 7 a संभरणसीलु स्मृतिशीलः; णिम्मलवउ निर्मलव्रतो निर्मलवपुश्च; p अजिभचित्तु अकृतिलचित्तः; 8 a थूललक्खु बहुदाता वदान्यः; सयाणउ सज्ञानः 12 गयभंगहं गतभङ्गानामपराजितानाम्.

14. 2 समियेत्यादि—शमिता उपशमं नीता स्वविषयविरसविषयस्य वेदना यथा सा.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि  
 चुड सव्वत्थसिद्धि परमेसरु  
 सिसु अविपिक्कवंससुच्छायउ  
 तुच्छबुद्धि अप्पउ अवगणमि  
 गज्जमाणजलहरजलणिहिसरु  
 पुण्णमियंकवयणु जसहलतरु  
 पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु  
 दलियासामयर्गलगलसंखलु  
 तणुमज्झप्पएसि रइरंगउ  
 वियडणियंबु तंबबिंबाहरु

पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि । 5  
 हुउ मणहरु णं मरगयमैहिहरु ।  
 बालउ बाहुबलि वि तहि जायउ ।  
 पहिलउ काँमएउ किं वण्णमि ।  
 फलिइपईहथोरकरपंजरु ।  
 सिरिकीलागिरिंदसमभुयसिरु । 10  
 विससदूलखंधु अवियलबलु ।  
 णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।  
 अंगे सहु जि अउवु अणंगउ ।  
 उच्छुचावजीयासंधियसरु ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥

15

पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

## 15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।

विलवइ चंलइ घुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयणियतुट्टिहिं  
 का वि पएसु पडंती दीसइ

मउलियललियहिं वैलियहिं दिट्टिहिं ।  
 का वि सविणय किं पि संभासइ ।

५ M °गिरिवरु. ६ MBP °सच्छायउ. ७ MBP कामदेउ. ८ M °गलगयसंखलु. ९ P °कोतलु.

15. १ MBP चवइ. २ MPK चलियहिं.

7 a अ वि पि क्क वं स सु च्छाय उ अपक्कवंशवत्सुकान्तिः 9 b फ लि ह प ई ह ° अर्गलावत्प्रदीर्घ°. 10 a पु ण्ण-  
 मियं क व य णु पूर्णचन्द्राननः; b गि रिं द स म भु य सि रु गिरीन्द्रसमानोन्नतांसः. 11 b वि स ° वृषभः; अ वि-  
 य ल ब लु स्थिरबलः. 13 a द लि या सा म य ग ल ग ल सं ख लु दलिता आशामदकलानां दिग्गजानां गलशृंखला  
 येन. 13 a रं इ रं ग उ रतेः रङ्गभूमिः 14 a वि य ड ° विकट°; तं ब बिं बा ह रु ताम्रं रक्तं यद्विम्बीफलं तद्वद्रक्त  
 ओष्ठो यस्य; b उ च्छु चा व जी या सं धि य स रु इक्षुचापप्रत्यञ्चासंधितशरः. 15 पंच हिं ते हिं तैः पञ्चभिः पुत्रैः,  
 कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणैः. 16 को सु म कं ड हिं पुष्पमयैर्बाणैः.

15. 1 ° म य णे त्या दि- कामाग्निना जनितो यो रसः प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अज्ञानि यस्याः,  
 अत एव कालिया श्यामवर्णा. 2 घु ल इ पतति; सु ह य स्स क ए सुभगस्य कृते. 3 b म उ लि य ° मुकुलित°,  
 सलज्जतया किंचित्संकुचिताभिरित्यर्थः.

का वि भणइ दिज्जउ आलिंणु  
ता होसइ तुह तायहु केरी  
चंचलि चेलंचलइ विलग्गइ  
कंठाहरणउं रयणणित्तउ  
तग्गयणयण णियइ अवचिन्ती  
क वि तेल्लेणै पाय पक्खालइ  
दोरि विलंविउं कं वि भीभूयइ  
काइ वि जोयंतिइ मयरद्धउ  
काहि वि णीवीबंधणु ढलियउ

जइ मेल्लेसइ मेरउ प्रंगणु । 5  
आण सुरिंदभयाइं जणेरी ।  
क वि सोहग्गभिक्ख तहिं मग्गइ ।  
का वि देइ कंकणु कडिसुत्तउ ।  
क वि जामायहु साइउं देती ।  
धूवइ दुद्धु तक्कु ण णिहालइ । 10  
घडु मण्णंति धिवइ सिंसु कूवइ ।  
वच्छु भणिवि घरि मंडलु बद्धउ ।  
पेम्मसालिल्लु ऊरूयालि गलियउ ।

घत्ता—पइ भल्लउं कडउल्लउं का वि देइ करि णेउरु ॥

उहामे इय कामे संताविउ सयलु वि पुरु ॥ १५ ॥

15

## 16

रचिता—कुलधणसयणमोहमाणुण्णइवीलाहरणववसियं ।

इसिवयमिव वंहंति रमणीयउ जस्स सिणेहविलसियं ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदरु खेळइ रच्छइ  
सोममु सुदंसणु पढमु कुमारउ  
काइ वि कउ कवोलि करु कोमलु  
काहि वि विरहासिहिं पउलिउ पलु  
सहइ कामु महुसमयागमणे

तिह तिह हियवउ हरइ वरच्छहिं ।  
पेच्छंतिइ वाहुबालि कुमारउ ।  
तणुतावेण कढइ सरकोमलु । 5  
धवलु वि कमलु हुवउ णीलुप्पलु ।  
णिहय का वि पियसमयागमणे ।

३ MBP मेलेसहि. ४ MBP पंगणु. ५ M तिल्लेण. ६ MBP दोर°. ७ B कविलीभूयइ. ८ P उरूयायलि  
16. १ B हंति. २ MBP सोमु. ३ P विरहसिहिहिं.

5 b मेलेसइ मुच्चति. 6 b आ ण शपथः. 7 a चेलंचलइ वल्लाच्चले. 8 a रयणणित्तउं रत्तजडित्तम्.  
9 a अवचिन्ती उद्भ्रान्तमनाः; b साइउं आलिङ्गनम्. 10 b धूवइ वग्घारयति प्रलेहनिमित्तं 'कडी'  
इति. 11 a भीभूयइ भयानके; b धिवइ क्षिपति. 12 b मंडलु कुक्कुरः श्वा ग्रामशार्दूलः. 14 पइ पदे.

16. 1 ° वीलाहरण° ब्रीडापरित्यागः. 2 इसिवयमिव वंहंति ऋषित्रतामिव, यथा मुनिदीक्षायां  
कुलधनादिक न मन्यते. 3 b वरच्छहि सुन्दरलोचनायाः. 4 b कुमारउ कौ पृथिव्यां मारः कामः. 5 b सर-  
कोमलु सरोवरजलम्. 6 a विरहसिहिं विरहाग्निना; पउलिउ प्रज्वलित दग्धम्; पलु मांसम्. 7 a महुसम-  
यागमणे वसन्तागमनेन; b पियसमयागमणे आगो दोषः, समय स्वमदेन प्रियविषये कृतमागस्तेनोपलक्षितं  
मनः तेन; प्रियसमये आगमनेन वा.

मडलियं फुल्लियं मल्लियं काणणि  
 णिग्गयं पल्लवणवसाहारहु  
 पइ मेल्लेण्णिणु लवइ व कोइल  
 मुहमरुपरिमलमिलियंसिलिम्मुह  
 का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती  
 का वि भणइ पिय करि केसग्गहु  
 का वि कहइ लइ चुंबहि वयणउं

मंडणुं देइ पुरंधि ण काणणि ।  
 मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु ।  
 सुहयत्ते किर भूसइ को इल । 10  
 जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह ।  
 अज्जु गइयं महु दुक्खे रत्ती ।  
 वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु ।  
 अवरु मं देहि किं पि पडिवयणउं ।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि बोल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ ॥ 15

घरु वित्तु वि णियच्चित्तु वि सयलु वि तुज्जु समण्णिउ ॥ १६ ॥

## 17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया ।

पिययमवयणकमलरसलंपाडि तरुणीमहुयरुल्लिया ॥ १ ॥

जो सूहउ महिलहिं माणिज्जइ  
 गग्भि सुणंदहि रुवरवणी  
 णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ  
 रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ  
 भूवंकत्तणु थणथडुत्तणु  
 पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु

कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ ।  
 तासु बहिणि अवर वि उप्पणी ।  
 चंदु कलंकं वयणहु लज्जइ । 5  
 तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ ।  
 अहरहु केरउ अइराइत्तणु ।  
 जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु ।

४ B मंडलु. ५ K सिलीमुह. ६ MBP म किं पि देहि.

17. १ M अइरत्तत्तणु; BP अइरायत्तणु.

8 b ण काणणि का स्त्री मण्डनं न ददाति आनने मुखे, अपि तु सर्वा ददाति. 9 b साहारहु स्वाहारस्य; अथवा साहारहु हारस्य. 10 b इल पृथ्वी. 11 a °सिलिम्मुहु भ्रमरः; b °सिलिम्मुहु वाणः. 15 विप्पिउ विप्रियमनिष्ठम्.

17. 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्दं करोति; मणरुहविसिह° कामवाणाः. 2 तरुणीमहुयरुल्लिया तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी. 4 b तासु बाहुवलेः. 6 a पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 a थणथडुत्तणु स्तनकठिनत्वम्; b अहरहु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्वं दोषः, ओष्ठे तु गुणः. 8 a पडिआयहं पूर्वमेकवारं पतिताः पुनरुद्गतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्वं कथम्.

तुच्छोयरवासिहि गंभीरिम  
 कंचीदामणण दद्वंधहु  
 सीसारूढकेसकुडिलत्तणु  
 दिट्टदोसु अवसें असमेहलु  
 तुंगपयोहरविलुलियघणघण  
 सिंचिय तेहिं णाहं मइ सीसइ  
 इय रूवें जगणारिहि सुंदरि

णाहिदि अवरु णियंयहु वडिम ।  
 रहियंगहु परलोयविरुद्धहु । 10  
 पुरिसोवरि माणसकठिणत्तणु ।  
 मज्जु अमज्जत्थु व हुड दुच्चलु ।  
 चलहारावलिमोत्तिय जलकण ।  
 रोमराइ णववेह्लि व दीसइ ।  
 जाणिवि तांणं कोफिय सुंदरि । 15

घत्ता—एकुत्तरु रणदुद्धरु सउ तणयहं दुइ धूर्यउ ॥

कयसेट्टिहिं परमेट्टिहिं जायउ अणुवमरुवउ ॥ १७ ॥

## 18

रचिता—जयवइजणणचरणमूलमि महारिउवदंमहणा ।

वहुसुयणियरधरणपरिणयमइ जाया सयलणंणणा ॥ १ ॥

भावें णमसिद्धं पभणेप्पणु  
 दोहिं मि णिम्लकंचणवण्णहं  
 अत्यं सहेण वि सोहिल्लउ  
 सक्कउ पायउ पुणु अवहंसउ  
 सत्यकलासिउ सर्गणिवद्धउ  
 अणिवद्धउ गाहाइउ अन्निउ  
 वंभे सइ वक्खाणिउं जं जिह

दाहिणवामकरेहिं लिहेप्पिणु ।  
 अक्खरगणियइं फहियइं कण्णहं ।  
 गहु अगहु दुविहु फव्वुल्लउ । 5  
 वित्तउ उप्पाइउ सपसंसउ ।  
 णाहउ अक्खवाइय कहरिउउ ।  
 गेयवज्जलक्खाणु वि णिरिक्खाउ ।  
 कुंभरीजुयल्ले युज्जिउ तं तिह ।

२ M कंचीदामणण. ३ B ताइहं. ४ MBP धीयउ.

18. १ MBP °विद°. २ MBP रागि णिवद्धउ. ३ MBP करुद्धउ. ४ MBP गेयवज्जु लक्खाणु.  
 ५ MBP कुमरी°.

9 a तुच्छोयरवासिहि तुच्छ स्वल्प यदुदरमध्य तस्मिन्वसनशीलस्य गंभीरिमा दोषो नाभेस्तु गुणः. 10 b  
 रहियंगहु प्रच्छादितस्वरूपस्य; परलोयविरुद्धहु परलोकेन मोक्षेण परपुरुषायलोकनेन वा विरुद्धस्य. 12 a  
 असमेहलु असमामीहां चेष्टां लातीति अमध्यस्य; पक्षपाती वा. 13 a विलुलियघणघण लुठितसयनमेघः.  
 15 b ता एं पित्रा तातेन; को फिय नाम दत्तम्.

18. 1 जयवइ° जगत्पति°. 2 वहुसुयणियर° प्रचुरश्रुतसमूहः. 5 b अगहु पयम्. 6 a अवहंसउ  
 अपभ्रंशम्; b वित्तउ वृत्तम्. 7 a सत्यकलासिउ शास्त्राधित द्वाराप्ततिकलाप्रतिपादितम्; b कहरिद्धउ  
 कथामृतम्. 8 a अणिवद्धउ सर्गबन्धेन अरचितं गाथादिकम्; b गेयवज्जलक्खाणु गीतवाचलक्षणशास्त्रम्.  
 9 a वंभे वृषभेण.

सुयहं महंतु कहंतु अणेयइं विण्णाणइं णाणइं बहुभेयइं । 10  
एम भडारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्कालें तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घरु आइय चवइ जिणेण णिरिक्खिय ॥

पहु दहविह सुरमहिरुह अवसण्णियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

## 19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।

धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कण्पंधिवविणासि संहारहु	णउ परिरिक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णइं अंबराइं मलमलिणइं	कालें विहडियाइं आहरणइं ।
तणु लायणु वणु परिहसियउ	जठरहुयासैं रुहिरु वि सुसियउ । 5
लग्गणखंभु अणु को अम्हहं	एवहिं सरणु पइट्टा तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसंपत्तिहि	भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि	करि णिच्चिंतं असेसहि वित्तिहि ।
तं णिसुणेवि जायकारुणें	देवें पउरणाणसंपणें ।
करिसणकरणु धरणु मयाणिवहहं	हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं । 10
पडु घडु भोयणु भायणु रंजणु	घरु पर्यणविहि पीडु मणरंजणु ।
सेज्ज सरीरताणु जलधारणु	हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
असि मसि सिण्णु वि जं जिह जेहउ	अक्खिउ लोयहु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसरु सुंधरियधरु आइपुरिसु कमलासणु ॥

जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥ 15

19. १ MBP ° दारिणा. २ MB संघारहु but PGKT संहारहु. ३ MBP को वि ण उ अम्हहं. ४ K णिप्फत्तिहि. ५ P णिच्चंत. ६ K °संपुणें. ७ M °वस°. ८ MBP परियणु वि. ९ MBT जलवारणु, but T records a p जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्'. १० MBP सुधरियधरु.

11 b प य प्रजा.

19. 2 प इं मि त्वयापि; महा रि वा रि णा महादुःखनिवारकेण. 3 a संहार हु प्रलयकालात्; b भुक्खा-मार हु क्षुधामरीसकाशात्. 5 a परिहसियउं हीनं जातम्; b जठरहुयासैं जठराग्निना. 6 b एवहिं इदानीम्. 8 b वित्ति हि जीविकायाम्. 11 a रंजणु अलंजलः अलिंजरो वा; b पथण वि हि पचनविधिः 12 a सरीरताणु कवचादिकम्; जलधारणु छत्रादिकम्; 14 सुधरियधरु सुधृतभूमिः.



## 20

रचिता—अवर वि भणिय वणियवर हलहर सुयरियकहियकुलवहा ।

जड परिवडियधम्म चंडाल वि पयडियविचिहपंसुवहा ॥ १ ॥

लेहउ लोहयारु कुंभारु वि  
जेहिं जं जि णियकम्मु पयासिउ  
पल्लव सेंधव फौंकण कोसल  
अंग कलिंग गंगै जालंधर  
दविड गउड फण्णाड वराड वि  
सूर सुरट्टु विदेहा लाड वि  
मागह जट्टै भोट्टे णेवाल वि  
देवमाउसासुब्भव ससलिल  
गिरितरुसरिदुग्गेहिं दुसंचर

तिलपीलउ मालिउ चम्मारु वि ।  
ताह तं जि कुलदेवें भासिउ ।  
टक्का हीर कीर रास केरल । 6  
वच्छ जवण कुरु गुज्जर वज्जर ।  
पारस पारियाय पुण्णाड वि ।  
कौंग वंग मालव पंचाल वि ।  
उट्टु पुंड हरि कुरु मंगाल वि ।  
साहारण अपूव पर जंगल । 10  
अट्टदेस वरिक्कयधर ससवर ।

वत्ता—वइधरियहिं वणहरियहिं मदि सोहइ चउपासिहिं ॥

कयैंगामहिं आरामहिं छेत्तहिं पफडुकोसहिं ॥ २० ॥

## 21

दुवई—चउविहगोउराइं चउदारइं णयरइं भूमिभूसणो ।

कारावइ पुराइं पुरुपंचजिणो सुरेदिण्णपेसणो ॥ १ ॥

20. १ K पठिवडिय°. २ P °पसुविहा; MB °पसुवहा. ३ MBP वंग. ४ MBP वन्वर.  
५ MBP भट्ट. ६ MBP वरिक्कयवर. ७ MB कयगामिहिं. ८ MBP रोत्तहिं.

21. १ MBP call this couplet रचिता; GK call it दुवई which it is. २ MB पुरएव°. ३ B सुरवरदिण्णपेसणो.

20. 1 सुयरिय° सुचरिता: सज्जनाः; °कुलवहा कुलमार्गाः. 2 परिवडियधम्म धर्मात्पतिताः;  
पयडियविचिहपसुवहा प्रकटितनानापशुवधाः. 3 a लेहउ विसकारो लेखकश्च. 10 a देवमाउसासुब्भव  
भेघट्टिजनितासस्याः; ससलिल नदीजलसेकादिना निष्पन्नसस्याः; b साहारण नदीजलसेकादिना भेघट्टया वा  
निष्पन्नसस्याः; 11 b ससवर वचरैः भित्तैः सहिताः. 12 वइधरियहिं श्रुतियुक्तैः.

21. 1 भूमिभूसणो आदिनाथः.

खेडइं थियदुवासगिरिसरियइं  
 पंचगाँवसयसहियमडंबइं  
 दोणामुहइं जलहितीरत्थइं  
 सुणिरूवियसविणयसेवायर  
 पयणियरायसुरिंदाणंदे  
 वण्णचउक्कमग्गु उवएसिउ  
 तिहुयणरायहु महिरायत्तणु  
 कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु  
 पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइयहुं  
 णाहिणरिंदामरसंघायहिं

कब्बडाइं माहिहरपरियरियइं ।  
 रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।  
 संवाहणइं अदिसिहरत्थइं । 5  
 वइरायरपहूइ जे आयर ।  
 ते रक्खाविय कुलयरचंदे ।  
 दंढे दोसु असेसु पणासिउ ।  
 कवयु गहणु तदु णुयपहुत्तणु ।  
 कणयरयणधारहिं वरिसंतहु । 10  
 वहु पट्टु जगणाहहु तइयहुं ।  
 कच्छमहाकाष्ठाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिवसासणि आसीणउ परमेसरु ॥

जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

22

रचिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।

अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि छुहवेविरतणु  
 घरि उच्छुरसु पियहुं जेणायउ  
 सोमण्णहु कोक्किउ कुरुराणउ  
 हरि हरिकंतु कहि वि हरिवंसहु  
 कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ  
 अवरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ  
 चोइहमयकुलयरापियणंदणु

उड्डियकरयलु णीसेसु वि जणु ।  
 पहु इक्खाउवंसु ते जायउ ।  
 सो जायउ कुरुवंसपहाणउ । 6  
 कउ पुरिमिल्लु पुरसु सपससहु ।  
 उग्गवंसमूलिल्लु पयासिउ ।  
 णाहवंसि सो पहिलउ जाणिउ ।  
 मरुएवीमणणयणाणंदणु ।

४ MBP ° गाम°. ५ K कुवलयचंदे.

22. १ MBP पुरमिल्लु. २ MBP उग्गवंसु. ३ MBP चउदह°.

3 a दुवास° द्विपार्श्व°. 5 b अदिसिहरत्थइं पर्वतशिखरस्थानि. 6 b वइरायरपहूइ वज्राकरप्रभृति;  
 a आयर आकराः खनयः. 7 b ते आकररत्नानि. 14 उवणीय° उपदौकित°.

22. 1 हयमल° हतमलः परमेश्वरः; °भूयरो मनुजः. 6 a हरि हरिनामा पुरुषः; हरिकंतुकहि वि  
 चन्द्रवत् क्रान्त इति भणित्वा; b पुरिमिल्लु आद्यः. 7 b °मूलिल्लु प्रथमपुरुषः.

फणिवरसिरमणिहयपयणेउरु  
कहियणरेसरकुलेहिं विराइउ

सकलत्तउ सपुत्तु संतेउरु ।  
अच्छइ रज्जु करंतु महाइउ ।

10

घत्ता—पय पालइ दक्खालइ णायमग्गु भाभासुरु ॥

सिरिअरुहें सहुं भरहें पुष्पयंतु रिसहेसरु ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधौ णाम  
पंचमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ५ ॥

॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णरेसरकुलेहिं; K णरेसकुलेहिं.

11 क हि य ण रे सर कु ले हिं पूर्वोक्तचतुष्प्रकारराजकुलै ; ७ महा इ उ महार्थिकः. 13 सि रि अ रु हें श्रीयोग्येन.

## VI

अण्णाहिं दिणि सभवाणि सुरवरहिं संथुउ संपयगारउ ॥  
फणिदणुयहिं मणुयहिं सेवियउ थियउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

### I

<p>मलयविलासिया—कंचणघडियइ हरिवरधरियइ</p>	<p>मणिगणजडियइ । पहविप्पुरियइ ॥ १ ॥</p>
<p>आसणि आसीणउ परमपहु दिण्णइं चाउरिपट्टासणइं रयणंचियाइं लोहासणइं एक्केक्क पहाणा खँणि मिलिय कु वि णरवइ घुसिणें समलहिउ कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ मयणाहिविलित्तउ को वि णरुं णिवि कर्हिं मि घुलइ हारावलिय कासु वि पडंति चमरइं चलइं कप्पूरधूलिबहलुच्छलइं सो केण वि एंतु णिवारियउ</p>	<p>अम्हहिं किं वण्णिज्जाइ रिसहु । 5 सुविचित्तदित्तवेत्तासणइं । दंडुण्णयाइं दंडासणइं । तहिं संणिसण्ण बहु मंडलिय । णं सिरिकामिणिराएं गहिउ । पंडुरु णं णियजसेण भरिउ । 10 ससिरविभीयउ धरइ व तिमिरु । कसणइ णं जलहरि विज्जुलिय । णं कित्तिसुभिसिणिहि सयदलइं । रुणुंरुंइ तहिं महुयरु घुलइ । तंबोलहु पाणि पसारियउ । 15</p>

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:

श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।

भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

GK do not.

1. १ MBP चाउरिवित्तासणइं. २ MBP सुविदित्तचित्तपट्टासणइ. ३ G खणमिलिय. ४ MBPT कु वि णिवरु.

1. 1 स भ व णि स्वप्रासादे; संपयगारउ संपत्तिकारकः. 2 अत्थाणि आस्थाने सभायाम्. 4 a हरिवरुं सिंहवरः; b पहुं प्रभया. 6 a चाउरिं गार्दीति देशी. 7 b दंडुण्णयाइं दण्डवदुन्नतानि. 8 b संणिसण्ण उपविष्टाः. 9 b सिरिकामिणिराएं लक्ष्मीप्रेम्णा. 11 a मयणाहिं कस्तूरिका. 12 a णिवि नृपे; b कसणइ कृष्णशरीरे मेधे. 13 b कित्तिसुभिसिणिहि कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्याः; सयदलइं पद्मानीष, 14 b रुणुंरुंइ शब्दं करोति. 15 a सो भ्रमरः.

घत्ता—खगसामिहिं कौमिहिं सयलहि वि वंदारयवंदियणहिं ॥  
पणवंतहिं संतहिं रईणिवहिं जहिं विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

## 2

मलयविलसिया—जत्थ णिसण्णो पणयपसण्णो ।  
सिंगारहरो रामाणियरो ॥ १ ॥

णियमंति जणं जहिं भत्तियर कट्टियहर परंपडिहारणर ।  
पहुअग्गइ सेवादूसणउं णिट्ठीवणु जिंभणु पहसणउं ।  
कमकंपणु अहु णिहालणउं हिक्कारउ भंडंहाचालणउं । 5  
खासणु धम्मिल्लामेळणउं करमोडि परासणपेळणउं ।  
अवठंभणु दप्पणदंसणउं अइजंपणु सगुणपसंसणउं ।  
सवियारउ कायणियच्छणउं इट्ठागमदेवदुगुंछणउं ।  
संकेयवयणअवयारणउं परणिंदणु पायपसारणउं ।  
अवरु वि जं विणएं विरहियउं तं म कैरह गुरुयणगरहियउं । 10  
मण्णहु माँणुसु सामिहि तणउं ढंकहु दीणत्तणु अप्पणउं ।

घत्ता—इय लद्धियउ अक्खियउ सेवयहो अहिमाँणिहिं वणु चंगउ ।  
दउचारियपेरियदंडण मा छिप्पउ तहु अंगउं ॥ २ ॥

## 3

मलयविलसिया—सुरवरसारउ एम भडारउ ।  
अच्छइ जाँवहिं सुरवइ ताँवहिं ॥ १ ॥

५ MBP कामिहिं कामिणिहिं. ६ P रइणिवहिं  
2. १ MBP वर°. २ M भउहा°. ३ M करहि, BP करहु. ४ MBP माणसु. ५ MB अहि-  
माणहि.  
3. १ MBP जइयहुं. २ MBP तइयहु.

16 का मि हिं देशगजादीनां वाञ्छकै , व दारय° देवा. एव वन्दिजना तै . 17 रइ णिव हिं प्रीतिसमूहैः.

2. 3 a णियमति निषेधयन्ति; b कट्टियहर यष्टिधरा. 5 a अहु णिहालणउ वक्रावलोकनम्;  
b भउहा° भूः. 9 a सकेय° संदेशः. 11 a मण्णहु मानयत. 12 अहिमाणिहिं वणुचंगउ अहंकारिणां  
वनं चारु न तु सभा.

संचितइ अवहीणाणधरु  
 पुव्वहं परमेसरेण रमिय  
 भुंजंतहु महि तेसट्टि गय  
 अज्जु वि मणि मण्णइ मत्त गय  
 अज्जु वि घैरि रइ किंकरणिवहि  
 को हुयवहु इंधणेण धवइ  
 को भोएं जीवहु करइ दिहि  
 जाणंतु वि मुज्झइ देउं जहिं

बारहरविसंणिहकुलिसयरु ।  
 कुमरत्तै वीस लक्ख गमिय ।  
 अज्जु वि अवलोयइ चवल हय । 5  
 इच्छइ अज्जु वि संदण संधय ।  
 अज्जु वि ण विरप्पइ कामसुहि ।  
 सरिसलिलेँ सरिणियराहिवइ ।  
 वल्लवंतउ सव्वहुं कम्मविहि ।  
 अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं । 10

घत्ता—रइराविउ भाविउ एँउं जगु किं पि णं याणइ जुत्तउ ॥  
 सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्टाहुत्तउ ॥ ३ ॥

५

मलयविलसिया—दुट्टे धिट्टे  
 ण तुह धणेणं

डज्झसु तिट्टे ।  
 तित्ति इमेणं ॥ १ ॥

अज्जु वि णउ फिट्टइ भोयरइ  
 अज्जु वि पहुहियउ णउ उवसमइ  
 सरिणिहिसमाहं मइ पयडियउ  
 णट्टाइं धम्मकम्मंतरइं  
 आयारइं पंचमहव्वयइं  
 ण पयासइ णवपयत्थसहिउ  
 इय चिंतिवि इंदेँ जाणियउं

अज्जु वि णउ चितइ परम गइ ।  
 माणवरमणीरमणउ रमइ ।  
 अट्टारहकोडाकोडियउ । 5  
 दंसणणाणइं चरियइं वरइं ।  
 अणुवथगुणवयसिक्खावयइं ।  
 सिद्धंतु अणाइ अरुहेँ कहिउ ।  
 अवहिए भवियव्वु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरि. ४ B °णिवहो. ५ B कामसुहो. ६ M सरणियरा°. ७ MBP सव्वहं बलवंतउ. ८ MBP जाणंतउ. ९ K एहु. १० MBPK एम. ११MP ण जाइ, B ण जाणइ. १२ MBP हेट्टाहुंतउ.

4. १ MBP ण उवसमइ. २ T सरिणिहि°. ३ B Omits this foot. ४ MBP °महावयइं. ५ MB अरुहकहिउ.

3. 6 b संदण रथाः. 7 a किं कर णिव हि सेवकसमूहे. 8 a धवइ ध्मापयति; b सरि णिय रा-  
 हिवइ समुद्रः. 9 b कम्म वि हि कर्मप्रकारः, कर्मैव विधाता. 11 रा विउ रञ्जितम्; भा विउ पुनः पुनः प्रकर्ष  
 नीतम्.

4. 1 b तिट्टे हे तृष्णे. 5 a सरि णि हि स मा हं सागरोपमानाम्.

णाहहु अञ्जु जि चरियावरणु  
पुण्णौउस गीलंजस णडइ  
र्ता होइ विरायहु कारणउं  
जिणधम्मपवत्तणु होइ जणे

धुउ णिम्मइ गेणहइ तर्वचरणु । 10  
गयजीविय जइ अग्गइ पडइ ।  
ईह दुविहु संजमुद्धारणउं ।  
इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।

घत्ता—गीलंजस रइवस मृंगणयण इदं भणिय अणिंदहो ॥

तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमजुयलु णच्चहि पुरउ जिणिंदहो ॥ ४ ॥ 15

## 5

मलयविलासिया—ता तुंगथणी  
रयणमयघरं

सयमहरमणी ।  
साकेयपुरं ॥ १ ॥

आया णहेण छउओयरिय  
पांडहियगाणसुरपरियरिय  
पणवेप्पिणु पहु ओलगियउ  
णाडयपारंभि पढमु भणिउं  
वाइयउ तिपुक्खरु सुंदरउ  
चउमग्गु दुलेवणु छक्करणु  
तिगैयउ तिपंचारु तिजोयैयरु  
तिपसारउ अवरु तिमज्जणउं  
अट्टारहजाइहिं मंडियउ  
चच्चउडु भणिउं पुणु चाचउडु  
इय ताल्लहिं तीहिं अलंकरिउ  
वामुद्धालिं गियसंणियउं

विञ्जुलिय णां चलविप्फुरिय ।  
णाहेयणिहेलाणि अवयरिय ।  
पेक्खणयहु अवसरु मगियउ । 5  
वीसंगु वि पुव्वरंगु जणिउ ।  
सुपसिद्धउ सोलहअक्खरउ ।  
तियतिल्लउ तिलयउ मणहरणु ।  
तिकरिल्लउ पंचपाणिपहरु ।  
वीसालंकारसलक्खणउं । 10  
एयहिं गुणेहिं अवरुंडियउ ।  
छप्पियपुत्तु वि मणहारि फुडु ।  
बहुयहिं तब्भेयहिं परियरिउ ।  
ओणद्धउं वज्जउं वणिणयउं ।

६ MBP तवयरणु. ७ P पुव्वाउस. ८ P तो. ९ MBPK इय but G इह with gloss संसारे. १० MBP मयणयण.

5. १ MBP पाडहि गायण°. २ MB पेक्खणहो. ३ MB तिगइयउ. ४ MB तिचारु; P तिमचारु; T तियचारु. ५ MBP तिजोयघरु. ६ MB छप्पिउ वुत्तु; P छप्पिउडु वुत्तु. ७ MB ताडहिं.

10 b धुउ धुवं निश्चयेन; णि म्म इ क्षयोपशमं याति. 12 b दु वि हु संज मु इन्द्रियसंयम. प्राणसंयमश्च; अथवा निश्चयव्यवहाररूपः. 13 b सं भरे वि चिन्तयित्वा. 14 मृ ग ण य ण मृगनेत्ती; अ णिं द हो सर्वज्ञस्य.

5. 1 b सय म हर म णी इन्द्राणी. 3 a छ उ ओ य रिय क्षामोदरी. 5 a ओ ल गि य उ सेवितः. 14 b ओ ण द्दे त्या दि—इत्थंभूतं यदवनद्धं वाद्यं तत त्तिप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति.

घत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुइसंखाइ सुललियहिं ॥  
चल्लबद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलासिया—विरईपुसिरे वंजे सुसिरे ।  
नृकयपसंसे जाँयउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्युं झुणंति सुअत्थसुइ	थिय मुक्कंगुलि व सुअट्टसुइ ।
कंपंतियाइ उग्गमु तिसुइ	मुक्कंगुलियइ ह्यउ दुसुइ ।
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय	सहुं सज्जे मज्झिमपंचमय । 5
सरिसहुं धेवउ कंपंतियए	सामणसरंतरसंणियए ।
गंधारणिसायविचलिययाइ	अद्धइ मुक्कइ अंगुलिययाइ ।
पयणियवेणू णाणायरोहिं	तुंबरुणारयसंणिहसुरेहिं ।
पयडियउ जि देवागमि भणिउं	णिकलु तेप्पु वि तंतीरणिउं ।
घणु कंसतालजुयलाइयउ	समहत्थु देविं जहिं चालियउ । 10
अमरहिं जिणमणसंमाइयहिं	पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।
उप्पणणउ उरठाणंतरए	वावीस सुइउ णहंतरए ।
कमरइयपमाणहिं संछिवइ	वडुंतु णउ बुडिहि धिवइ ।
सुइसु वि सरि ग म प धीं णी यणाम	सर सत्त तेसु दोणिण वि जि गाम ।

c MBP चवलद्धहिं; T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्ताभिः.

6. १ MBP विरइयपुसिरे. २ MBPT वज्जियसुसिरे. ३ MBP णिकयपसंसे. ४ MBP जाओ. ५ MBP जेसु. ६ P सुअत्थवई. ७ BP कंपंतियाउ. ८ MBP उग्गउ, ९ P सहुं मज्जे. १० MBP धेयउ T धइवउ. ११ M सामणं सरंतरसंतियए; B सरंतरसनियए; सरंतरसंणियए. १२ M विचलियाइ; B विचलियाइ; P णिचलियाइ. १३ MB अंगुलियाइ; P अंगुलियाइ. १४ P तिपुव्वि. १५ MB समहत्थ. १६ K संचालियउ. १७ P जिणसमण°. १८ MBP वावीस वि सुइउ. १९ MP °पधणीसणाम; B °पधणिणाम.

16 वत्तावत्तंगुलियहिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिरव्यक्तव्यक्ताङ्गुलिभिः.

6. 1 a विरईपुसिरे विरतिप्रोञ्चके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थः. 3 a सरु खरः. 5 b सज्जे षड्जैन सह. 6 b सामणसरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 8 a णाणायरोहिं नानादरैर्ज्ञानादरैर्वा. 6 b णिकलु तेप्पु वि तंतीरणिउं तन्त्रीवाद्यं द्विविधं निष्कलं त्रिपंच (तेप्पु). 12 b णहंतरए आकाशे. 13 b णउ नादः.



घत्ता—सुरपुज्जइ सज्जइ किंणरहिं जाइउ सँत्त पउत्तउ ॥

15

एयारह सुयरह माज्झिमइ पीणियजणवयसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह

इय अट्टारह ।

जाइणिबद्धहं

लंक्खविसुद्धहं ॥ १ ॥

अंसहं सउ चालीसाहियउ  
तहिं होंतउ सवणरवणियउ  
सुद्धा भिण्णा पुणु वेसरिय  
तहिं गामराय अवर वि भाणिया  
इय तीस कमेण जि संगहिय  
पहिलारउ टँक्कराउ कहिउ  
अट्टहिं पंचमुं वि पयासियउ  
आवाहियमोहियजगविलउ  
मालविकेसिउ छहि बुक्कियउ  
सुद्धउ सज्जु वि सत्तहिं कलिउ

एक्कुत्तरु तं पि पसाहियउ ।

गईउं पंच उप्पाणियउ ।

गउडी साहारणिया सँरिय ।

5

भयवयमयगुत्तितच्चगणिया ।

उडुमाण जि माणवसवणाहिय ।

अणुवेक्खासमभासहिं सहिउ ।

“विहिं वि विहासहिं भूसियउ ।

हिंदोलउ चउभासाणिलउ ।

10

अवराहिं मि दोहिं मि अंकियउ ।

ककुडु मि तिहिं भासहिं संवल्लिउ ।

घत्ता—सुविहासहिं सरसहिं विहिं सहिउ सो गाइउ सुइलीणउ ॥

मणहरियउ किरियउ दावियउ जहिं परिगयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

२० BP सुत्तपउत्तउ.

7. १ MBP लक्खु वि सुद्धहं. २ MBP गीयउ पंचउ. ३ MBP भणिय. ४ MBPT टँक्कराउ.  
५ MP विहिं चैय विहासहिं, B तिहिं चैय हिहासहिं.

16 सुथरह स्मर्यताम्; °सोत्तउ °कर्णा.

7. 1 a सत्तेयारह सप्त एकादश च. 2 b लक्खु वि सुद्धहं गीतप्रयोगविशुद्धानाम्. 3 a असहं  
अंसानाम्, 4 a सवणरवणियउ श्रवणसुखदाः. 5 b सरिय स्मृताः. 8 b अणुवेक्खासमभासहिं द्वादश-  
भाषासमन्वितः. 10 a आवाहिये त्यादि-आवाहिता आकारिता मोहिता विह्वलीकृता जगविलउ जगति क्रियो  
येन एतादृशो हिंदोलकरागः.



## 9

मलयविलसिया—वियलियहरिसं  
झत्ति धरंती

स हि णवमरसं ।  
दिट्ठ मरंती ॥ १ ॥

जिणणाहें सा नीलंजसिय  
कंदप्पकंति णं पंमुसिय  
णं खणि विद्धंसिय रइहि पुरि  
णं रंगसरोवरि पउमिणिय  
णं चंदरेह णहि अत्थमिय  
रसवाहिणि दिण्णरवण्णसुह  
णउ थण णच्चणगुण णउ वयणु  
णउ केसभारु णउ हारलय  
सुण्णउं पंगणु हरिणीलयलु  
अमराहिवणारिरयणु मुयउ  
हा हा भणंतु सोपं लइउ

णं केण वि चित्ति लिहिवि पुंसिय ।  
लायण्णतरंगिणि णं सुंसिय ।  
णं हय जणणयणणिवाससिरि । 5  
कम्मेण कालरुवें लुणिय ।  
णं सुरधणुसिरि मरुणा समिय ।  
णं णासिय पिसुणें सुकइकह ।  
णउ विउलु रमणु संचियमयणु ।  
णउ जाणहुं सुंदरि कर्हि मि गय । 10  
णं विञ्जुविवज्जिउ मेहउलु ।  
तं पेच्छिवि कोऊहलु हुयउ ।  
अत्थाणु असेसु वि विम्हइउ ।

घत्ता—तहि मरणे करुणे कंपियउ भरहजणणु सवियक्कउ ॥

तुण्हिक्कउ थक्कउ तिजगगुरु कुंसुमयंतु रइमुक्कउ ॥ ९ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइण

महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे नीलंजसाविणासो णाम

छट्ठओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥

॥ संधि ॥ ६ ॥

9. १ MB फुसिय, २ MBP पयपुसिय, ३ MB सुसुय, ४ MBP सरोवर°, ५ MBP णउ कर-  
कम, ६ M विंभइउ; B विंभयउ; P विंभियउ. ७ MBP करणे, ८ MBP कुसुमयंत° and gloss in  
P कुसुमवदन्ता या नीलंजसा तस्या रतेर्मुक्तः.

9. 1 b स सा नीलजसा, हि स्फुटम्; ण व म र सं शान्तरसम्. 3 b पु सिय प्रोच्छिता, 4 a पं मु सिय  
प्रमुषिता, 7 b म रु णा पवनेन, 9 b जाणहुं ज्ञायते, 11 a ह रि णी ल य लु इन्द्रनीलमणिबद्धतलम्. 14 स-  
वि य क्क उ सविस्मयः. 15 कु सु म यं तु कुसुमवदन्ता यस्य तादृश आदिनाथः; र इ मु क्क उ रतेर्मुक्तः.

## VII

कयतिहुयणसेवें चित्तिउ देवें जगि धुउ किं पि ण दीसइ ।  
जिह दावियणवरस गय णीलंजस तिह अवरु वि जाप्सइ ॥ १ ॥

I

खंडियं—इह संसारदारुणे बहुसरीरसंधारणे ।  
वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसमु पयासइ	धणु सुरधणु व खण्णद्धे णासइ ।	5
हय गय रह भड धवलइं छत्तइं	सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइं ।	
जंपाणइं जाणइं धयचमरइं	रविउग्गमणे जंति णं तिमिरइं ।	
लच्छि विमल कमलालयवासिणि	णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।	
तणु लायणु वणु खणि खिज्जइ	कालालिं मयरंडु व पिज्जइ ।	
वियलइ जोव्वणु णं करयलजलु	णिवडइ माणुसु णं पिक्कउ फलु ।	10
तृयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ	सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।	
जो महिवइ महिवइहि णविज्जइ	सो मुउ घरदारेण ण णिज्जइ ।	

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥

इयं जाणिवि अद्धुउ अवलंबिवि तउ णिज्जाणि वणि णिवसिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza:—

हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता  
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।  
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः  
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read हंहो for हंहो; प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°; and °संख्यात° for °संख्यान°. GK do not give it.

1. १ M reads खंडियं throughout. २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्तः.  
३ P खणद्धं. ४ MBP तियहिं. ५ B इउ. ६ B अधुवु; P अद्धउ. ७ MBP अवलंबियमुउ but gloss  
iu P तपो गृहीत्वा.

1. 3 a संसारदारुणे दारुणे संसारे. 4 a वसिऊणं उषित्वा. 5 a सुसमु शोभनोपशमयुक्तः  
द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा. 7 a जंपाणइं पालखीति देशी. 8 b बुहउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी. 9 b कालालिं  
कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण. 11 a तृयहिं स्त्रीभिः; b तणि उत्तारिज्जइ तृणे तृणसंस्तारके तृणोपरि स्थाप्यते,  
मृते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थः. 13 जित्तउ जितम्. 14 अवलंबिवि गृहीत्वा.

## 2

खंडयं—वइरिरायदप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं ।  
मण्णइ अप्पाणं घणं सरणविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

जइ वि धरंति वीर णर किंणर	अरुण वरुण सपवण वइसाणर ।	
गरुड जक्ख रक्खस विज्जाहर	भूय पिसाय णाय ससि दिणयर ।	
पडिबलकुलकाणणकालाणल	इंद पडिंदहमिंद महाबल ।	5
पण्णारहखेत्तुभभव जिणवर	कुलयर चक्कवट्टि हरि हलहर ।	
जइ वि धरंति देहमा भासुर	पवराउहपवीण देवासुर ।	
जइ पइसइ मयरहरभंंतरि	किंकरहरिकरिरहवूहंतरि ।	
सरसरिगिरिदरिकक्करकंदरि	दुप्पवेसकुलिसायसि पंजरि ।	
बहलतमंघयारमहिमूलइ	जइ पइसरइ गंपि पायालइ ।	10
तो वि जीउ कंठिज्जइ कालें	हरिणा हरिणु व मिउडिकरालें ।	

घत्ता—इय बुज्झिवि असरणु रंभिवि तियरणु जेण चरित्तु ण चिण्णउं ॥  
तं माणुसवेसें वायाविसेसें भमइ कलेवरु सुण्णउं ॥ २ ॥

## 3

खंडयं—मित्तसयणसंजोयओ होउं होइ विओयओ ।  
एक्को च्चिय जगि जीयओ भमइ सकम्मविणीयओ ॥ १ ॥

एक्कु जि जइ जच्चंधु णउंसउ	दुग्गउ दुट्टु दुबुद्धि दुरासउ ।	
हुयउ कुमाणुसात्ति दुणिहालउ	एक्कु जि जीउ चंडु चंडालउ ।	
एक्कु जि धणुहरु सवरु वणंतरि	एक्कु जि सुरवरु मणिमयसुरहरि ।	5

2, १ MBP पण्णारस°. २ MBP देव भाभासुर. ३ MBP कुलिसायस°. ४ MBP °तमंघयारि.  
५ M कट्टिज्जइ.

3. १ P संजोयरु. २ P विओयरु.

2. 1 b भुयपहरणं भुजं च प्रहरणं च. 2 a घण समर्थ अत्यर्थं वा, b जयमिणं इदं जगत्. 3 b अरुण आदित्यसारथिः. 8 a मयरहर° समुद्र; b °वूहंतरि व्यूहान्तरे. 11 b हरिणा हरिणु व सिंहेन मृग इव. 12 तियरणु मनोवाक्कायक्रिया, चिण्णउ अनुष्ठितम्. 13 वायविसेसें वाचाविशेषेण वायुप्रेरणेन वा.

3. 1 b होउ भूत्वा. 2 b °विणीयओ प्रेरितः. 3 a णउंसउ नपुंसकः, b दुग्गउ दरिद्रः; दुरासउ दुष्टचित्तः. 4 a दुणिहालउ दुष्प्रेक्ष्यः. 5 a धणुहरु सवरु धनुर्धारी भिल्लः; b °सुरहरि °विमाने.

अप्पउ पुण्णहीणु पडिवज्जइ  
एक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु  
एक्कु जि मृंगजोणिहि उप्पज्जइ  
एक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ  
एक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि

सयमहविहवपलोयणि झिज्जइ ।  
एक्कु जि विलि विसहरु जलि जलयरु ।  
परिहि तलिवि पउलिवि खाणि खज्जइ ।  
णरयविवरि णारइयहिं हम्मइ ।  
चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि । 10

घत्ता—एक्कु जि भवकइमि णिवडइ दुइमि रइसुहपंकयछप्पउ ॥

एक्कु जि तवताविउ णाणें भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

## 4

खंडयं—इय णिसुणिवि एयत्तणं  
एक्कु जि जीउ वरायओ

गाढं णियमह णियमणं ।  
सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिवज्जइ  
अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु  
अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ  
अण्णु जि मित्तु सयंजि कयायरु  
अण्णु जि भिच्चु होइ धणलोहें  
अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ  
अण्णहिं जंति खणद्धें रहवर  
परमत्थें ण को वि जगि कासु वि

अण्णु जि पिंडु गग्भि संबज्जइ ।  
अण्णु जि सुक्कियउ अण्णु जि तहु फलु ।  
अण्णु जि को वि पुत्तु णिप्फज्जइ । 5  
अण्णु जि होइ सण्णेहउ भायरु ।  
जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहें ।  
णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।  
हयवरगयवरचिंध सचामर ।  
एक्कलउ जि जाइ पुहईसु वि । 10

घत्ता—राएण णिवद्धउ इंदियलुद्धउ सुहु अण्णु जि महुं भावइ ॥

ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP भिगजोणिहि. ४ M परिहि तलिज्जइ पउलिवि खज्जइ. ५ B खिज्जइ.

4. १ MBP सुक्किउ. २ MBP पुत्तु को वि उप्पज्जइ. ३ MBP सकज्जि. ४ M सण्णेहें. ५ MBP एक्किलउ. ६ MB जणि; P मणि.

6 b झिज्जइ खियते. 8 b परि हि परैविंप्रैः. 11 एक्कु जि असहाय एव; °पंकय छप्पउ कमले भ्रमेरः. 12 तवताविउ तपस्तापितः.

4. 1 a एयत्तणं एकत्वम्. 2 a वरायओ वराकः; b अण्णु जि भिन्न एव, लोयओ लोकश्चेत-  
नाचेतनपदार्थसंघातः. 3 b पिंडु देह. 4 b सुक्कियउ सुकृतम्. 5 b पुत्तेत्यादि-आत्मा वै. पुत्र इति वेदवाक्यं  
वृथेत्यर्थः. 7 a भिच्चु भृत्यः. 8 a मत्तउ विवेकशून्यः. 10 a पुहईसु वि पृथ्वीशोऽपि. 12 ससहाउ  
निजस्वरूपम्; महावइ महापतिं महतीमापदम्.

## 5

खंडयं—चउकसायरसरसियओ  
णाणाजैम्मु वियारए

मिच्छासंजमवसियओ ।  
आहिंडइ संसारए ॥ १ ॥

णरयगइहि उप्पण्णउ जइयहुं  
तिलु तिलु छिंदिवि दिसिहिं विहाइउ  
वारवार पच्चारिउ जूरिउ  
पक्कु जि बहुयहिं तहिं पारंभिउ  
ओहामिउ भामिउ ओणामिउ  
अच्छोडिउ मोडिउ महिं पाडिउ  
लूरियंतु कौंतेहिं विहिण्णउ  
सत्तिहिं हूलिउ जंतिहिं पीलिउ  
वम्मविहैट्टणेहिं दुब्बोलिउ  
पूयकुंडि उप्पेल्लिवि घल्लिउ

णारयणियरिहिं रुंभिवि तइयहुं ।  
कवलिउ धुणिउ वणिउ विणिवाइउ ।  
विज्जुतरलतरवारिवियारिउ । 5  
खलिउ दलिउ पयमलिउ णिसुंभिउ ।  
सूलि कयंतदंति संकामिउ ।  
विरसमाणु करवत्तहिं फाडिउ ।  
रुंदोदूहलि मुंसलहिं लुण्णउ ।  
जलियजलणजालोळिहिं जालिउ । 10  
सेल्लभल्लिवावल्लहिं सल्लिउ ।  
रुहिरोहलियदेहु ओणल्लिउ ।

घत्ता—माणि रोसु धरंतहं रणि पहरंतहं लग्गइ गत्तु विहत्तु वि ॥

सुहु णत्थि तमंधं णारयसंढं णयणणिमीलणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

## 6

खंडयं—सिंगीसु य पक्खीसु य  
भुंजंतो भवसंगमं

दाढीसु य णक्खीसु य ।  
ण लहइ जीवो णिग्गमं ॥ १ ॥

कायकंककोइलकारंडहिं  
सीहसरहसूयरसालूरहिं

सारसवासभासभेरंडहिं ।  
घारमोरमंडलमज्जारहिं ।

5. १ MBP संजमि वसियउ. २ MBP °जम्म°. ३ MB दिसहिं. ४ MBP मुसल्ले. ५ M °विहट्टणेण.

5. 1 a °रस° परिणतिः, °रसियओ आसक्तः. 4 a विहाइउ विभक्तः; b धुणिउ कम्पितः, वणिउ व्रणितः, विणिवाइउ पातितः. 5 a पच्चारिउ प्रचारित, जूरिउ दुर्वचनैर्निर्भत्सितः. 6 b णिसुंभिउ प्रक्षिप्तः. 7 a ओहामिउ अभिभूत; ओणामिउ ऊर्ध्वमुखो नामितः. 9 a लूरियंतु विदारितान्त्रः; विहिण्णउ विभिन्नः; b रुंदोदूहलि महोदूखले. 10 a हूलिउ प्रोतः. ११ a दुब्बोल्लिउ दुर्वचनैरुक्तः, b °वावल्लहिं सर्वलोहमयैः. 12 b रुहिरोहलियदेहु रुधिरप्रक्षालितशरीरः; ओणल्लिउ अध. पातितः. 13 विहत्तु विभक्तं खण्डीकृतम्.

6. 2 a भवसंगमं संसारसंबन्धम्. 3 a °कारंड° चक्रवाकः.

कीरकुररकुंजरसारंगहिं	लावयपारावयहिं तुरंगहिं ।	5
कुंकुडमकडमहिसमरालहिं	मेसवसहखरकरहसियालहिं ।	
सेढाँसरढतरच्छहिं रिँछहिं	मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।	
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं	संभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।	
बलणिम्मंथणु णियलणिबंधणु	भारारोहणु णाँणाबंधणु ।	
छिदणु भिंदणु ताडणु तासणु	उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।	10
सरपाहाणसंधसंधदणु	लोदणु आवदणु परिवदणु ।	
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु	पीलणु पउलणु दारणु मारणु ।	
छुँहतिण्हाकिलेससंतावणु	भारारूढदेसपुरगाँमणु ।	
एव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु	जीउ तिरियगइ कह व मुएप्पिणु ।	
घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु बब्बरु सिँहलु ॥		15
हुणचीणाणिवासउ अँमणुयभासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥		

## 7

खंडयं—मेच्छो ण कुणँइ णियहियं	करइ दुलंघं दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउदए	णिवडइ णरँयसमुदए ॥ १ ॥
जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु	हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं	तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुँमगँ मुज्झइ	जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु	लग्गइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मंडिवि मिसु	पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6. १ M लायय°. २ B कुंकुड°. ३ MBP सेहा°. ४ MP °रिच्छहिं. ५ MBP णासाविंधणु. ६ MBP छुहत्तणा°. ७ M °गावणु. ८ MBP सिंधलु. ९ MBP अमुणियभासउ, but gloss in P नरभाषारहितः.

7. १ MBP मुणइ. २ B णरइ समुदए. ३ P °कुसम्मै. ४ MBP °कम्महु. ५ MBP °धम्महु.

10 b उक्कत्तणु उत्कर्तनम्. 12 a मुसुमूरणु पिण्डाकरणम्. 15 ° वसायउ अधीनः. 16 अमणुयभासउ नरभाषारहितः; अज्जवकुलु आर्यकुलम्.

7. 1 a मेच्छो म्लेच्छः. 2 a विहुरावत्त° दुःखावर्तः. 3 a अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्. 6 a मयवह° मृगवधः. 7 a चंडिइ मंडिवि मिसु चण्डिकामिषं कृत्वा.



पुण्यसंग्रहं नृणां नृणां च यद्विष्णुः  
विष्णुसंग्रहं विष्णुसंग्रहं नृणां च यद्विष्णुः  
पुण्यसंग्रहं अस्मिन् भवति

मानुषं नृणां च यद्विष्णुः  
नो वि नृणां च यद्विष्णुः  
जो जे कस्य सो जिते तं पापम् ॥ १०

ननु—यत्पु नृणां च यद्विष्णुः  
जो जे कस्य सो जिते तं पापम् ॥ ७ ॥

S

संग्रहं—द्वयसंग्रहं विष्णुसंग्रहं  
आया येना जे अया

जंति पराधर्मसंग्रहं ।  
एतिस्यया द्वियवर्णया ॥ १ ॥

द्वयसंग्रहं विष्णुसंग्रहं  
नो वि नृणां च यद्विष्णुः  
विष्णुसंग्रहं अस्मिन् भवति  
ननु—यत्पु नृणां च यद्विष्णुः  
जो जे कस्य सो जिते तं पापम् ॥ ७ ॥

नो अयाण्ड फीस ण होमम् ।  
किं कुसरीं वल्ल उच्छ्रम् ।  
आयंनु आयत छम्मिउ छिन्दम् । ६  
वच्छु विरोतिवि अण्णे दुज्जम् ।  
दुस्सियहलेण सुरादि संभूम् ।  
धुत्तु अणुत्तम् वंचुं जाणम् ।  
सूरि इग्गिणि वि रोहिणि नेही ।  
नयहु नयविनि दरिसाविय । १०  
मंसंगं दु द्वियवर्णिय भवन्ति ।  
होइ कतिं मि इगालु ण भवन्ति ।  
विष्णुसंग्रहं अस्मिन् भवति ॥

१ MBP विष्णुः.

२ १ P दुष्कृतम्, २ M नृणां च यद्विष्णुः, B नृणां च यद्विष्णुः, P नृणां च यद्विष्णुः, ३ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ४ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ५ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ६ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ७ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ८ MBP नृणां च यद्विष्णुः, ९ MBP नृणां च यद्विष्णुः, १० MBP नृणां च यद्विष्णुः.

१ नृणां च यद्विष्णुः, २ नृणां च यद्विष्णुः.

३ नृणां च यद्विष्णुः, ४ नृणां च यद्विष्णुः, ५ नृणां च यद्विष्णुः, ६ नृणां च यद्विष्णुः, ७ नृणां च यद्विष्णुः, ८ नृणां च यद्विष्णुः, ९ नृणां च यद्विष्णुः, १० नृणां च यद्विष्णुः.

अण्णण्णै रंगै रंगिज्जइ                      परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।  
 मूढु जिणिंदसेव कहिं पावइ                      सवणु गहणु धरणु वि ण विहाँवइ । 15  
 घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ ॥  
 माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करेप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

9

खंडयं—ईसि<sup>१</sup> णिउंचिय जोव्वणं                      कामकोहतवभावनं ।  
 काउं सेवइ जो वणं                                      सो पावइ तं भावनं ॥ १ ॥

अवरु वि जायउ उववणठाणइ                      जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।  
 वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु                      वाइत्तयवायउ सन्भेयरु ।  
 णच्चणु गायणु सुइंसुहदावउ                      अण्णु वि होइ असम्मयभावउ । 6  
 णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ                      वेवइ चलइ घुलइ परिखिज्जइ ।  
 हा कप्पहुम हा माणससर                      हा णीहारहारसंणिहघर ।  
 हा अच्छरउलमणसंमोहण                      हा परियणपडिवक्खणिरोहण ।  
 हर्यवलिपलियरोयसयसंचय                      हा हा दिव्वदेह हा णववय ।  
 हाइलंकारसार सहसंभव                      हा गंधार महु र वीणारव । 10  
 हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल                      हा मंदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्जइ ॥  
 सग्गग्गु मुयंतहु पलयहु जंतहु कांसु सरीरु ण डज्जइ ॥ ९ ॥

१ M विभावइ.

9. १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा; P इसि. २ MP सुदूसहदावउ, ३ MBP चलइ. ४ MBP हा वलि°. ५ MBP °संचय but gloss in P देह. ६ सोलंकार°, ७ MB कासु ण हियवउ; P कासु वि हियउ ण.

15 b वि हा व इ विभावयति प्राप्नोति. 16 मा यार उ मातूरतं विप्रं संमानयति.

9. 1 a ईसि ईषत; णिउंचिय संवृतं कृत्वा. 2 b भा व णं भवनवासिदेवत्वम्. 4 a उ व व ण ठा ण इ व्यन्तरदेवस्थाने. 4 b सन्भेयरु भण्डो भवति सभ्यादितरः. 6 a उ व्विज्जइ चिन्तां करोति. 9 a °संचय देह. 10 b गंधार गीतम्.

## 10

खंडयं—सुललियमइलियचेलयं  
भोयविरायणिवंधयं

अइओहुल्लियमालयं ।  
जायं मह खयचिंधयं ॥ १ ॥

सयलजिणाहिसेयधुयमंदर  
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर  
हा मइं माणुसेण होएवउ  
सोणिविणिग्गमि दुक्खु णिएवउ  
हा हा देवलोय कंहिं पेच्छमि  
जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु  
अट्टरउद्दभावसंचोईय  
हा हा हा भणंतु उन्निर्भयकर

धूवधूमधूवियगिरिकंदर ।  
पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर ।  
किमिमलभरियइ गग्भि वसेवउ । ६  
णारिउरोरुहंछीरु पिएवउ ।  
कुहियकलेवरि वासु ण इच्छमि ।  
वैर वणि होसमि चंदणु वंदणु ।  
मिच्छादिट्ठि सुदिट्ठिविओईय ।  
एम मरतं होंन्ति सुर तरुवर । 10

घत्ता—जिणधम्मपरंसुहु दुण्णयसंसुहु खयकाले अच्छोडिउ ॥

बहुविहमयमत्ते ईयं मिच्छत्ते को भवगहणि ण पाडिउ ॥ १० ॥

## 11

खंडयं—तिप्पयारसंठाणयं  
जीवाजीवसुसंकुलं

चोईहरज्जुपमाणयं ।  
विस्सं णिच्चं णिच्चलं ॥ १ ॥

थिउ आयासि अजंताणंतइ  
गादु गादु छहिं दध्वहिं भरियउ  
पुग्गलजीवभावकयभेयहिं

केवलणाणविलोयणखेत्तइ ।  
केण वि कियउ ण केण वि धरियउ ।  
कालवसेण जाइ पज्जायहिं । ६

10. १ MBP °विराय°, २ B °भरियगग्भि, MK °खीरु, ४ MBP किं, ५ MBP वरि, ६ MBP °सचोइउ, ७ MBP °विओइउ, ८ MBP °करु, ९ M एम मरेवि होइ सुर तरुवर, BP एम मरेवि होइ सुरतरुवर; १० MBP इह.

11. १ MP चउदह°. २ P adds after this line: अच्छइ सयलु वि जीवहं भरियउ धियघडउल्लउ जिम तिम धरियउ.

10. 1 b अ इ ओ हु ल्लिय° अतिम्लान°. 2 a °णि बंधयं कारणम्; b मह मम, खयचिंधयं क्षयचिंह मरणचिहम्. 7 b कुहिय कुथित°. 8 b वंदणु वृक्षविशेषः, पिप्पल इत्यन्ये. 10 b होंति सुर तरुवर देवा वृक्षा भवन्ति. 11 अच्छोडिउ कवलितः. 12 °मयमत्ते जात्यादिमदमत्तेन.

11. 1 a तिप्पयार° शरावाद्याकृतिमांलोकः. २ b विस्सं विश्वं जगत्.

पहिलउ दाणवणरयाणिवासउ  
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु  
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ  
मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु  
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खामि

पल्हत्थियसरावसंकासउ ।  
वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।  
तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।  
जो तं पत्तउ सो अजरामरु ।  
संसारियहु सोक्खु किं अक्खामि । 10

घत्ता—चउगइहि भैरंते पुणु पुणु होंते विहसिवि देवे वुत्तउ ॥

सुहदुक्खणिरंतरि तिजगन्भंतरि जीवे काइं ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

## 12

खंडयं—सारमेयवुड्ढिगयं

सारमेयसिवजोगयं ।

एसो कम्मकले वरं

मण्णइ तहं वि कलेवरं ॥ १ ॥

अट्टिलट्टिकुड्डुयलणुत्तउ  
पांसुलियातुलाहिं घणघडियउ  
पट्टिवंसखंभुण्णयमाणउ  
मेज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ  
सेयसुक्कमत्थिक्कदुगंधउ  
वोक्कयंतकिमिउलमलपोट्टु  
अन्भंतरि किर केण पलोइउ  
णिच्चमुत्तलालाजलाधिप्पिरु

दीहरणाउणिबंधणवत्तउ ।  
संधिहि संधिहि खीलियजडियउ ।  
जंघाजुयलु समोड्डियथूणउ । 5  
णवदुर्वारु लोहियसंसित्तउ ।  
छिरंतुंदाहिजालसंरुद्धउ ।  
वियलियरसवसवीसंदु विट्टु ।  
बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।  
रोइ पूइ अद्धुउ संताविरु । 10

३ M भवेंते; BP भमंतें.

12. १ MBP सारमेयवुड्ढीगयं. २ P तह व. ३ MBP णिवंधणवत्तउं. ४ MB पंसिलिया°; P पंसुलिया°. ५ MBP खीलिहिं. ६ BP समोड्डिय°. ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार°. ९ B °मंथिक्क°. १० P थिर°; K छिर° but corrects it to थिर°. ११ MBP °वीउजि and gloss in P वीभत्सं अपवित्तम्.

7 b पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलनं प्रवृत्तिर्यस्मिन्. 8 a °णेवच्छउ मण्डनम्. 10 a परमाणुयेत्यादि- परमाणुमात्रमपि संसारिणां सुखं न.

12. 1 a सारमेयवुड्ढिगयं प्रचुरमेदसा वृद्धिगतम्; b सारमेयसिवजोगयं श्वानशिवादियोग्यम्. 2 a एसो जीवः; कम्मकले संसारे; b कलेवरं शरीरम्. 3 a °कुड्डुयल कुड्यतल°; b °णाउ ज्ञायु°. 4 a पासुलिया° पार्श्वस्थिसंघातः. 5 b समोड्डियथूणउ भग्नस्तम्भवत्. 7 b छिरंतुंदाहिजाल° शिरा एव गण्ड-पदास्तेषां समूहैर्भूतम्. 8 b °वीसदु वीभत्समपवित्रम्. 10 b रोइ सरोगम्.

सैंभपित्तमाख्यदोसायरु  
रमैणीरमणरायरहसुच्छवु

भूयगामदेहिहि देहु जि घरु ।  
असुइ जि भक्खइ असुइसमुब्भवु ।

घत्ता—करिमयरहिं माणिइ गंगावाणिइ ण्हाणिउ ण्हाणिउ मुज्झइ ॥  
मयकामे कोहे मायामोहे मइलिउ देहु ण सुज्झइ ॥ १२ ॥

## 13

खंडयं—दुविहतवस्मि सुलीणयं  
असुइमिणं मणुयत्तयं

जइ करेह अप्पाणयं ।  
ता हो होइ पवित्तयं ॥ १ ॥

पंचिदियसुहि मणु चोयंतहु  
णाणावरणिउ पंचपयारउ  
णवविहदंसणु गुणविणिवारउ  
दुविहु जि वेयणीउ गयसयणु व  
मोहणीउ मइरा इव मोहइ  
चउविहु चउगइगामिहिं दुक्कइ  
दोचालीसणामु णामंकउ  
दोविहु मइलसमुज्जललीलउ  
अंतराउ चउएक्कविहायउ  
पयडिड्ढिअणुभांगपएसहिं

तहु आसवइ कम्मु अतवंतहु ।  
दावियपडपंगुरणवियारउ ।  
तं णिज्जियणिसिद्धिपडिहारउ । 6  
अमहु समहु असिधारालिहणु व ।  
अट्टावीसभेउं जिणु ईहइ ।  
आउसु हाडि व णिरंभिवि थक्कइ ।  
चित्तवण्णपरिणामासंकउ ।  
गोत्तु कुलालमाणभावालउ । 10  
लगाइ कारिहिं वारियदायउ ।  
वज्झइ चप्पिवि वंधेविसेसहिं ।

१२ M रमणीरमणु रायरहसुब्भवु, B °रहसुच्छउ, P °रहसुब्भवु but gloss उत्सव..

13. १ MBP णाणावरणउ. २ T दसिय°. ३ MBP °भेय. ४ M ° अणुभाय°. ५ M वंधवसेसहिं.

11 b भूय गाम° पृथ्वीप्रमुखचतुर्विधभूतसमूह एव देहो विद्यते यस्य. 12 a °उच्छवु आनन्दः. 13 गंगा-  
वा णि इ गङ्गाजलै .

13. 2 a मणु यत्त य मनुजत्वम्, b हो हे नरा°. 4 b दा वि ये त्या दि—दर्शितः पटप्रावरण इव विकारो  
येन; यथैव पटेन प्रच्छादनेन सत्यात्मनोऽर्थोपरिज्ञानलक्षणो विकारो भवति तथा ज्ञानावरणे प्रच्छादने. 5 b णि जि ये-  
त्यादि—निर्जितनिषेधकरप्रतिहारसदृशम्. 6 a गय सयणु व रोगयुक्तस्य शयनीयमिव. 8 b आउसु आयुष्कर्म;  
ह डि व खोटक इव. 9 b चि ते त्या दि—चित्रवर्णपरिणतिवज्ञानारूपतया शङ्क्यते. 10 a म इ ल स मु ज्ज ल ली ल उ  
मलिनं समुज्ज्वल चेति द्विप्रकारम्, b कु ल ल भा ण भा वा ल उ कुलालस्य कुम्भकारस्य भाणानां भाजनानां भावोऽ-  
ल्पमहत्त्वादिपरिणाम°, तस्य आ ल उ आश्रयः. 11 a चउएक्क वि हा य उ पञ्चभेदम्, b का रि हि कारकस्य;  
वा रि य दा य उ निवारितदातव्यं दुष्टभाण्डागारिवत्. 12 b चप्पिवि हठात्.

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिबद्धउ ॥

जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्डुगामि संसिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खंडयं—एंतहु पावहु णिब्भरं

ताणं दुक्खद्वक्कडी

जे विरयंति ण संवरं ॥

पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु ज्ञाणवित्थारं

रसुं पसुपिंडग्गहणायारं

सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ

णासारंधु गंधंअविहत्तिइ

दुरियहु सुयरिउ रक्खणु दिज्जइ

अविणयगारउ माणु मउत्तं

लोहु सुपत्तदाणपविहाणं

मर्यविन्भमु परगुणसंभरणं

दंप्पु वि घोरवीरतवचरणं

फासविलौस धरणिसंधारं ।

दिट्ठि ण घेप्पइ कहिं मि वियारं ।

कीरइ पयलियरइआमरिसउ ।

मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।

रोसु खमाइ होंतुं णियमिज्जइ ।

मायाभाउ समुज्जुयचित्तं ।

अहवा सव्वसंगपरिचाणं ।

जिप्पइ हरिसु होंतु सुथिरमणं ।

राउ रंसियरामापरिहरणं ।

घत्ता—पिहियासवदारहु जुत्तायारहु अहिणउं कम्मु ण पइसइ ॥

जं चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसं णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारए

सासयसुहओ संवरो

एसो कीस ण कीरण ।

होहं होमि दियंबरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि.

14. १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्धः, तहु पावहु तस्य पापस्य. २ P °दुक्कडी. ३ MBP °विलासु. ४ MB रसवसु, P रस पसु°. ५ MBP गंधु अ°. ६ MBP एंतु. ७ M समुज्जल°. ८ P मइविन्भमु. ९ B omits this foot. १० MBP रसिउ रामा°.

15. १ मणमेत्तए.

13 दुअं ग णि ब द्ध उ तैजसकर्मणशरीरबद्धः. 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीरं गृहीतं तन्मात्रः.

14. 1 a एंतहु आगच्छतः, 2 a °दक्कडी असह्याशानिपातः; b तडी विद्युत्. 4 a रसु जिह्वा; पसुपिंडग्गहणायारं पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्यान्वारेण. 5 b पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम्. 6 a गव-अविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन; b °दुरीह दुष्टेच्छा. 9 a °दाणपविहाणं अतिथिसंविभागेन. 10 a मय° मदः. 13 अपोसिउ अपुष्टम्.

15. 1 a मणमेत्ते मनोमात्रे. 2 a °सुहओ सुखदः.

पुणु परमेसरु सच्चउ सुच्चइ  
जिह धरणीरुहहलु तिह दुक्किउ  
तणयराहं सुसैहावेँ सोम्महं  
दूसहदुक्खभावभयभरियहं  
विरइज्जइ वेरग्गपहाँणहिं  
सिसिरायासणिवासायरणहिं  
थियपलियंकधित्तमहिदंडहिं  
पक्खमासवैरिसंतुववासहिं

कालेँ अहव उवापं पिच्चइ ।  
कामाकामियाणिज्जरतक्किउ ।  
बंधणदारणमारणगम्महं । 5  
होइ अकामेँ णिज्जर तिरियहं ।  
कामेँ णिज्जर रिसिसंतौणहिं ।  
रुक्खमूलअत्तावणकरणहिं ।  
गोदुहआसणेहिं गयसौंडहिं ।  
देज्जवित्तिसंखाविण्णासहिं । 10

घत्ता—ढोइयणीसासहि मुणितणुमूसहि खरतवजलणेँ तत्तउ ॥

जीविउ हेमुज्जलु थक्कइ केवलु बहुंकम्ममलेँ वत्तउ ॥ १५ ॥

## 16

खंडयं—कुँवहे जंतं रुंभए  
वयपायवणिल्लूरणं

णाणंकुसिण णिसुंभए ।  
साहू णियमणवारणं ॥ १ ॥

एक्कगासदोगासाहारहिं  
दीहमंसुलोमहिं मलधरणहिं  
वोसट्टंगमुक्करइरंगहिं  
सुण्णावासमसाणागारहिं  
दंसमसयछुहतणहासोसहिं  
वायवहलुकंपियकायहिं

विविहावग्गहरसपरिहारहिं ।  
आयंबिलचंदायणचरणहिं ।  
वज्जियघरपुरदेसपसंगहिं । 5  
हयणेहहिं अणियत्तिविहारहिं ।  
खलकयकण्णकडुयआकोसहिं ।  
सीउण्हहिं परपहरणिहायहिं ।

२ P पच्चइ. ३ MBP ससहावेँ. ४ BP सोमहं. ५ MBP °पहाणहं. ६ M सिरिसंताणहं; BP रिसिसंताणहं.  
७ MBP °वरिसद्धुव° ८ MB वेज्ज°. ९ कम्ममलेँ परि°.

16. १ MBP कुपहे. २ P एक्कगासदुगासा°. ३ M अणियट्टि°.

3 b पिच्चइ पक्कं भवति. 4 b कामा कामियेत्यादि— कामो बुद्धिपूर्वको व्यापारस्तदभावोऽकामस्तौ विद्येते  
यस्याः सा तथाविधा निर्जरा तर्किता कलिता येन तादृशम्. 7 b रिसिसंताणहिं मुनिप्रवाहैः. 10 b देजे ति-  
देयाहारस्य वृत्तिः संख्या तस्या विन्यासा विरचनास्ताभिः. 11 मुणितणुमूसहि मुनिशरीरमेव मूषा तस्याम्.  
12 जीविउ इत्यादि— जीवस्वरूपं तदेव हेम सुवर्णं उज्ज्वलं निर्मलम्; सुवर्णं हि किट्टकालिकालक्षणमलरहितत्वा-  
दुज्ज्वलम्, जीवस्वरूपं तु द्रव्यभावकर्मलक्षणमलरहितत्वादिति.

16. 1 b णिसुंभए वश्यं करोति. 2 a °णिल्लूरणं °निर्मूलनम्. 5 b वोसट्टंग° विसृष्टाङ्ग° कायोत्सर्गः.  
6 b अणियत्तिविहारहिं अनियतविहारैः. 8 b परपहरणिहायहिं परप्रहारनिर्घातैः.

केसालुंचणणिञ्चेलत्तहिं कंचणतणंसुहिरिउसमचित्तहिं ।  
 विसमपरीसहसहणन्भासहिं रोयातंकहिं कासहिं सासहिं । 10  
 जम्मणमरणणिवंधुद्धाइउ एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ ।

घत्ता—जिह हर्यणिज्झरणे बद्धे वरणे रविकरोहिं सरु सोसइ ॥

तिह णियमियकरणे रिसितवचरणे भवकिउ कम्मु पणासइ ॥ १६ ॥

## 17

खंडयं—इय काऊण णिज्जरं  
 णीरोयं अजरामरं

जे हणंति भवपंजरं ।  
 ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ  
 खेमखमायलंतुंगयदेहउ  
 सच्चसउच्चमूलु संजमदलु  
 चउविहचायपसारियपरिमलु  
 दियसंदोहसइकयकलयलु  
 दीणाणाहदीहसमाणिग्गहु  
 बंभचेरछायाइ सुहासिउ  
 एहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ  
 झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ  
 सीलसलिलधारइ सिंविज्जइ

सो धम्मंधिउ एहउ गिज्जइ ।  
 महवपल्लउ अज्जवसाहउ ।  
 दुविहमहातवणवकुसुमाउलु । 5  
 पीणियभव्वलोयछप्पयउलु ।  
 सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।  
 सुद्धु सोम्मं तणुमेत्तपरिग्गहु ।  
 रायहंसणियरोहिं समासिउ ।  
 जीवदयावईइ रक्खिज्जइ । 10  
 मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।  
 एम पर्यत्ते वड्ढारिज्जइ ।

४ MBP° तिण° . ५ MB णिवंधे आइउ; P °णिवंधइ आइउ. ६ K हर° and gloss हत°.

17. १ BPK परं. २ M खमखमायलतुंगयदेहउ; B खमखमायलु तुंगयदेहउ; P खमखमायलु-  
 तुंगयदेहउ. ३ MBP सुरणरवर°. ४ MBP सोमु. ५ MP झाणठाणु; B झाणट्टाणु. ६ B पवत्ते. ७ M  
 पट्टारिज्जइ; B वड्ढारिज्जइ.

11 a णि बंधुद्धा इउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धा इउ प्रवृत्तम्. 12 हय णिज्झरणे हतनिर्झरणेन: वरणे  
 पालिवन्धनेन.

17. 1 b भवपंजरं संसार एव बन्दिगृहं संसारसंघातश्च. ३ b धम्मंधिउ धर्मवृक्षः; गिज्जइ प्रति-  
 पाद्यते. 4 a खमखमायलंतुंगयदेहउ क्षमैव क्षमातर्ल पृथ्वीतर्ल तदन्तान्मध्यातुद्गतः प्रादुर्भूतो देहो यस्य.  
 6 a चउविहचाय° अणुव्रतं महाव्रतं श्रुतदानमभयदानं च. 7 a दियसंदोह° मुनिसमूहः पक्षिसंघातश्च. 8 a  
 °दीहसम° दीर्घश्रमः. 9 a सुहासिउ सुष्ठु शोभितः. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्; b मिच्छामयहुं  
 मिध्यात्वमृगाणाम्.



घत्ता—कोवाणलच्चुक्कउ होइ गुरुक्कउ जाइं रिसिंदहिं सिट्ठइं ॥

जगि ताइं सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइं सुमिट्ठइं ॥ १७ ॥

## 18

खंडयं—जहिं होहिम्मि भवे भवे  
दुक्खलक्खणिण्णासणे

तहिं देहम्मि णवे णवे ।  
होउं भत्ति जिणासासणे ॥ १ ॥

अवरु णिरंतरु उज्झियगव्वे  
चित्तु धुत्तसिद्धंतपरंमुहुं  
पंचिदियपडिभडबलु भज्जउ  
विसयकसायरायपरिचत्तउ  
आसापासणिबंधणु तुट्टउ  
संजयसाहुंसंगसोहियमलि  
रयमूढह संबोहणगारा  
दीणि करुण उप्पेक्ख दयंतइ  
वयजोग्गउ सरीरु संपज्जउ  
धणु परियणु पुरु घरु मा दुक्कउ  
ण रमउ णारिरूवि हियउल्लउ  
ओसारियदहपंचपमाएं  
दंसणणाणचरित्तपयासें

इयं मग्गेवउ मणुणं भव्वे ।  
भवि भवि होउ जिणागमि संमुहुं ।  
भवि भवि विमलबुद्धि उप्पज्जउ । 5  
भवि भवि होउ तिगुत्तिपुत्तउ ।  
भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।  
भवि भवि होउं जम्मु सावयकुलि ।  
भवि भवि रिसि गुरु होउ भडारा ।  
भवि भवि रइ वडुउ गुणवंतइ । 10  
भवि भवि तवसिहितावें झिज्जउ ।  
भवि भवि उरि उवसमसिरि थक्कउ ।  
भवि भवि हवंउ णिरहु णीसल्लउ ।  
भवि भवि दियह जंतु सज्जाएं ।  
भवि भवि मरंणु होउ संणासें । 15

घत्ता—लद्धाइ समाहिइ भवि भवि बोहिइ जीवउ जीउ विरत्तउ ॥

संसारुत्तरणइं जिणवरचरणइं भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP होहिम्मि, २ B होइ, ३ P इउ. ४ MBP °पयत्तउ, ५ B °साहुसंगि, ६ MBP जम्मु होउ. ७ MBP रइमूढहु; T रयमूढहो. ८ MBP उप्पज्जउ, ९ M थक्किउ. १० MBP होउ. ११ MK मरण.

18. 8 a संजयेत्यादि—संयताश्च ते साधवश्च ते. संगं संसर्गस्तेन शोधितः स्फोटितो मलः पापं यस्मिन्. 9 a रयमूढह ज्ञानावरणादिरजप्रच्छादितत्वेन विवेकशून्यस्य. 10 a दयंतइ दयाशून्ये. 11 b तवसिहितावे तप एवाग्निस्तस्य तापेन. 13 b णिरहु निष्पाप निर्वाञ्छं वा. 16 समाहिइ रत्नत्रयैकाग्रतायाम्; बोहिइ रत्नत्रयप्राप्तौ.

खंडयं—इय जो चिंतइ णियमणे  
मोत्तूणं भवसंपयं

अणुवेक्खाओ थिउ वणे ।  
सो पावइ परंमं पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउं सिद्ध भडारा  
अक्खसोक्खपक्खे णिरु णिच्छिहं  
इयं चिंतंति वहंति समत्तणु  
सक्कं जिणमइ जाणिय जावहिं  
बंभसग्गलोयंतकयालय  
पुव्वजम्मकयधम्मपहावण  
घल्लियकुसुमंजलिकेसररय-  
ते भणंति भावे मडलियकर  
पइ ण मुण्डं जं तं किर केहउ  
सुसिरु अणंतु तिलोयणिवासउ  
जीउ कम्मु पोग्गलंवित्थिण्णउ  
तुहुं सइंभु सँसमाहिविसुद्धउ  
इंदियपाणासंजमु छंडिवि

दढकिम्मीरकम्मविणिवारा ।

भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।

पउणंती रइभूमिणियत्तणु ।

5

लोयंतिय संपाइय तावहिं ।

देहकंतिदीवियदिप्पालय ।

अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।

रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।

जय देवाहिदेव परमेसर ।

10

किं गिरि किं परमाणुउ जेहउ ।

किं आयासु अलक्खपएसउ ।

भणु तुह णाणे काइं ण भिण्णउ ।

चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।

अप्पउ सीलगुणोहे मंडिवि ।

15

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्चु सुसच्चउ अक्खहि ॥

पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19. १ B परमप्ययं. २ P दिढ°, ३ MBP °पक्खइ. ४ M णिप्पिह. ५ MBPT चित्तंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयति सति. ६ B संपावियभाविहिं; P संपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिब्बालय and gloss in MP दीप्तविमानाः, but T दिप्पालय दशदिक्पालाः. ८ P °केसररिय°. ९ MBP परिमाणु. १० BP पोग्गलु. ११ MBP सयंभु. १२ MBP सुसमाहि°.

19. ३ b °किं म्मीर° विचित्तम्. 4 a अक्खसोक्खपक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे; णिच्छिह नि-  
स्पृहाः; b °सिप्पीरभार° पलालसंघातः. 5 a चिंतंति चिन्तयति सति; b पउणंती प्रकुर्वती; रइभूमिणि-  
यत्तणु रतेर्भूमेश्च निवर्तनम्. 9 a b केसररयेत्यादि-केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तैः  
कृत्वा शबलितानि प्रभुपदानि यैर्लोकान्तिकैर्देवैः. 12 a सुसिरु अल्लोकाकाशम्; b आयासु लोकाकाशम्.

## 20

मंडुरं—तुह वयणंमुपनाहिप  
कुसमयग्वलखजोयया

जगकमले संबोहिप ।  
होति देव हयतेयया ॥ १ ॥

मोटजलणजालावलि गिरन्निहि  
पाववज्जलेवंतणिहित्तइं  
उत्तारहि परमपय भूयइं  
एम भणेपिणु गय लोयंतिय  
नहिं अचमरि वुहयणिहिं समन्थिउ  
पुत्त पुत्त लइ पालहि वसुमइ  
नं गिमुणेवि कुमारं वुत्तउं  
जं तुहं भुत्तुज्जियआहारं  
जं तुह गियडासणइ गिविद्धु  
जं महु तुह अग्गइ भावंतहु  
जं पायडियउ तुह पर्यछाहिइ  
मंतिमहासेणावइपुज्जं

धम्मामयअंबुहर पवरिसहि ।  
जरकसरा इव कहवि खुत्तइं ।  
रंगणडा इव णाणारूवइं । 6  
देवं परहियवुद्धि विचिंतिय ।  
भरहु महीसरेण अब्भत्थिउ ।  
मइं पुणु साहेवी पंचम गइ ।  
देव देव किं भणहि अजुत्तउं ।  
तं ण सोक्खु भोयणवित्थारं । 10  
तं ण सोक्खु हरिचीडि वइद्धु ।  
तं ण सोक्खु गयखंधहिं जंतहु ।  
तं ण सोक्खु महु छत्तहु छाहिइ ।  
पइं रहिणण ताय किं रज्जे ।

घत्ता—जंपियउ जिणेसें णाउ विसेसें जइ पहुपयहि ण जुज्जइ । 15

तो लोउ रउदं जुज्जवि मइं मच्छं मच्छु व खजइ ॥ २० ॥

## 21

गंडयं—कुरु कुरु धरणीपालणं

णायाणायणिहालणं ।

धरि धरि महिचउसासणं

एयं चिय मह पेसणं ॥ १ ॥

तं गिमुणेवि गिरत्तरु जायउ

थिउ तणुरुहु संभूयविसायउ ।

20. १ MBP धम्ममहामयजलहर वरिगति. २ MBP 'वज्जलेवत्त'. ३ MBP कहमि, ४ MBP भोयणं. ५ B तुहं भुत्तु उज्जियं ६ P पणछाण. ७ P जाण. ८ K जुज्जइ.

20. 1 a वयणंमु वनत्तहिणं. 2 a कुसमयग्वलग जोयया मिथ्यामतदुर्जनसद्योतकाः. 4 a पाववज्जलेवंतं पापमेत गच्छलेपः; b जरकसरा जीर्णवर्त्तगर्वा; कहवि कर्दमे. 11 b हरिचीडि सिंहासने. 15 णाउ भयता. 16 मइं पट्टाव.

21. 3 b संभूयविसायउ उत्पत्तिपाद.

सोणंदेयहु दिण्णु सुहंकरु  
 अण्णेक्कहुं अण्णण्णइं दिण्णइं  
 एत्थंतरि संपेसिय राणा  
 छक्खंडावणिपसरियतेयहु  
 णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं  
 धवलिहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं  
 कांमिणिमित्तगत्तरोमंचहिं  
 ससहरमणिमएहिं णिक्कलुसिहिं  
 जय रायाहिराय पभणंतहिं  
 हासससंककाससंकासइं  
 कण्णहि कुंडलाइं आइद्धइं  
 करि कंकणु गालि हारु विलंबिउ  
 कडियलि रयणकिरणविप्पुरियइ  
 वंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ  
 हरिकरिससिराविरूवणिबद्धइं  
 परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं  
 मय मायंग तुरंग सलक्खण

पोयणपुरु पविहिण्णवसुंधरु ।  
 मंडलाइं ढोइयधणधण्णइं । 5  
 देवें जे एक्केक्क पहाणा ।  
 लग्गा रायमहाअहिसेयहु ।  
 वज्जंतहिं चामयिरत्तूरहिं ।  
 खुज्जयवावणेहिं णच्चंतिहिं ।  
 होमदाणपारंभपवंचहिं । 10  
 सयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं ।  
 अहिसिंचियउ भरहु सामंतिहिं ।  
 पौरिहाविउ सुइसुम्भइं वासइं ।  
 चंदाइच्चहं तेयसमिद्धइं ।  
 सिरि सेहरु महुयरमुहचुंबिउ । 15  
 बद्धउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ ।  
 तिलएं तइयउ णयणु व दाविउ ।  
 उब्भियाइं विमलइं कुलविंधइं ।  
 णं जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं ।  
 पुज्जिय गह कार्णीण वियक्खण । 20

घत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिघोसहिं ॥

सिरिभरहकुमारहु महिभत्तारहु वद्धउ पट्टु णरेसहिं ॥ २१ ॥

## 22

खंडयं—सीहासणसिहरासिओ

सोहइ भुअणपसंसिओ ।

गिरिकडए धुयकेसरो

केसरि व्व भरहेसरो ॥ १ ॥

21. १ MBP °वावणेहि. २ BMK कामिणिसित्त°. ३ MBP पहिराविउ. ४ MBP °विच्छुरियइ.  
 ५ B पहु°.

4 a सोणंदेयहु सुनन्दापुत्रस्य बाहुबलेः 5 b मंडलाइं देशाः. 8 a कोण° वादनकाष्ठम्. 10 a °मित्त  
 मित्त°, b °पवंचहिं विस्तारैः. 11 a णिक्कलुसिहिं निर्मलैः. 16 b भिसिणिसयवत्तहिं कमलिनीकमलैः.  
 21 आयहिं एतैः; पइअणुरायहिं पत्यनुरागैः.

22. 2 b केसरि व्व सिंह इव.

दसंदिसिवहंसंप्राइयसुरवरु  
 बहुविमाणभारें णं णवियउ  
 आयवत्तुं फुल्लहिं णं फुल्लिउ  
 थियझसहंसचासवाहणगणु  
 णं तुरयहिं धावंतहिं धावइ  
 कुंजरेहिं णं मेहहिं छइयउ  
 हरियारुणरुइल्लु णं सुरधणु  
 विहुणिकखवणपयासणयालइ  
 गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजिर्यसहु

तहिं अवसरि दीसइ विउलंबरु ।  
 धयवडेहिं णावइ पल्लवियउ ।  
 तरुणीथणहलेहिं ओणल्लिउ । 5  
 णावइ जिणवरपुण्णमहावणु ।  
 संदणेहिं रविभरियउ णावइ ।  
 असिवरेहिं णं विज्जुवलइयउ ।  
 णं अवलंबइ णवपाँउसगणु ।  
 एम परायउ सुरयणु लीलइ । 10  
 रिसहणाहु णिण्णाहु महापहु ।

घत्ता—कमलासणु केसंबु ससहरु वासबु सिद्धु बुद्धु हरु दिणयरु ॥

चामीयरघडियइ रयणहि जडियइ पट्टि णिसण्णउ जिणवरु ॥ २२ ॥

## 23

खंडयं—केण वि गहिरं वाइयं  
 केण वि सरसं णच्चियं

केण वि महुरं गाइयं ।  
 पडुपयजुयलं अंचियं ॥ १ ॥

अमरविलासिणिकरसंगहियहिं  
 इंदजलणजमणेरियवरुणहिं  
 णल्लिणबंधुणाइंदहिं चंदहिं

णहविउ देहु धियंदुद्धहिं दहियहिं ।  
 पवणकुबेरतिसूलुद्धरणहिं ।  
 रुंदाणंदहेरेहिं णरिंदहिं । 5

22. १ B °दिसिवहं. २ MBP सपाइय. ३ M धयवडेण. ४ MBP आयवत्त. ५ M तरुणीथणहरेहिं ओहुल्लिउ; B थणहारेहिं ओहुल्लिउ; P थणहलेहिं सुफलिउ; but T ओणल्लिउ. ६ B भावइ. ७ P °पावस घणु. ८ M रजियसुहु. ९ MBP केसउ.

23. १ MBP देउ, K देहु but corrects it to देउ. २ M घय°. ३ T तिसूलुधरणु. ४ M °भरेहिं.

३ a °दिसिवहं° दिक्षु मार्गा, b विउलंबरु विस्तीर्णमम्बरम्. ९ a °रुइल्लु दीप्पियुक्तम्. 11 रंजियसहु रजितसभः, b णिण्णाहु निरार्थ, अयमेव सर्वेषा नाथ इत्यर्थः. 12 कमलासणु कमलाया लक्ष्म्या निवासस्थान-त्वात्; केसंबु हितोपायदर्शकत्वेन जगतो रक्षाहेतुत्वात्, ससहरु संसारदुःखस्फोटकत्वाज्जगत्कुवलयप्रबोधकत्वाच्च; वासबु परमर्द्धिसपत्तिवाचतुर्निकायदेवस्वामित्वाच्च, सिद्धु कृतकृत्यत्वात्, बुद्धु हेयोपादेयविवेकसम्यक्त्वाच्च; हरु कर्मणां तत्प्रभवससारस्य प्रलयविधायकत्वात्; दिणयरु भव्यपद्मप्रबोधकत्वादन्यतमोविध्वंसकत्वाच्च.

23. 4 b तिसूलुद्धरणु ईशानः. 5 a णल्लिणबंधु आदित्यः; b रुंदाणंदं महानानन्दः.

वयणुग्गीरियथोत्तवमालहिं  
 कंचणकुंभसहासहिं सिन्तउ  
 सण्हउं तिहुयणसामिहि जोग्गउ  
 ढोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउं  
 भूसणाइं दिण्णाइं ण मण्णइ  
 संतहु किहं रुच्चंति रसोल्लइं  
 होउ पहुच्चइ संभावइ जिणु

णिग्गयखीरवारिधारालहिं ।  
 देससयट्टलक्खणसंजुत्तउ ।  
 किं वण्णिज्जइ अंगि वं लग्गउ ।  
 तणुतावइ णं णाणावरणउं ।  
 मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ । 10  
 वम्महपहरणाइं फुडु फुल्लइं ।  
 मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

घत्ता—पज्जलियपईवहुं ससिरविभावहुं धूयंगारयधूमउ ॥

णिग्गंतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेर्वउ ॥ २३ ॥

## 24

खंडयं—दहिदूवंकुरचंदणं  
 वंदिवि मयणवियारओ

सियसिद्धत्थयचंदणं ।  
 सिवियारूहु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवंदहिं  
 तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिं  
 उट्टियदेवमहाकुलकलयालि  
 चल्लिउ अणुमग्गं सियसेविइ  
 आरणालणवदलललियंगउ  
 दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ  
 पियविच्छोयसोयखिज्जंतउ  
 वरकंचीकलावगुप्पंतउ  
 तुरिउ चलंतु खलंतु विसंटुलु  
 घणथणजुयलाणिवेसियकरयलु

पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।  
 वरविज्जाहरेहिं विहसंतहिं ।  
 पुणु वंदारणहिं णिय णहयलि । 5  
 णाहिणराहिउ सहुं मरुएविइ ।  
 जसवइणंदउ पच्छइ लग्गउ ।  
 णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।  
 णयणंजणमलमइलिज्जंतउ ।  
 तणुपासेयविंदुथिप्पंतउ । 10  
 णीससंतु चलमोक्कलकौंतलु ।  
 णिवडंमाणअणिहालियमेहलु ।

५ MBP दह°. ६ P विलग्गउ. ७ MBP किं. ८ M °विलेविउ.

24. M दूवंकुरु वंदणं; BPK दूवंकुरचंदणं. २ M वसंतु व संबुलु; B खलतु व संटुलु. ३ M णिवड-  
 माणु; P णिविडमाणु.

6 a °वमाल° कोलाहलः. 13 ससिरविभावहुं शशिरवीणां भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्.

24. 1 a °चंदणं रक्तचन्दनम्. 7 a आरणाल° कमलम्. 9 a विच्छोय° वियोगः, 11 a  
 विसंटुलु शिथिलम्.

पयन्नालणअंकारियणेरु  
एऊवार णिउ णिअभरभावहिं  
पुणु नेण जि कमेण आवेसइ

धाइउ णिरवसेसु अंतेउरु ।  
मंदरि णहाणिवि आणिउ देवहिं ।  
णंरवइ एत्थु जि पुरि णिवसेसइ । 15

ग्रन्था—पउरयणं वुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं दुक्करु आवइ ॥

जंडमइलकुचेली धरणिमहेली णाहं विणु किह जीवइ ॥ २४ ॥

## 25

खंडयं—भरहवाहुवलिसंणिहं  
चालियं चोइयहयगयं

गलियंसुयधारामुहं ।  
एऊणं णंदणसयं ॥ १ ॥

पराइओ जिणेसरो घणंवणालयं  
विसालवेह्लिजालरुद्धभाणुभावहं  
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं  
लयाहरन्थकिंणरीसुरत्तमाणवं  
पन्दवालकंदकंदलेहिं कोमलं  
दिमुच्छलंतदंतिदाणवारिवासयं  
महहिं थिप्पिरं पसामियावणीरयं  
महीरुहगसंणिसण्णमोरसारसं  
वहंतमंदगंधवाहकंपमाणयं

सुपोमसंपयार्जसोघणं वणालयं ।  
महामुणिंदजोग्गयं सपावभावहं ।  
पियाविवज्जियाण कामुयाण वाणरं । 5  
असोयचंपयाइरम्मरुक्खमाणवं ।  
पैसूणरेणुपिंगर्पेज्जरंतकोमलं ।  
रमंतणायरायदाणवारिवासयं ।  
समाणियामरिंदचंदभाविणीरयं ।  
पएहिं इच्छिएहिं लोयदिण्णसारसं । 10  
जलस्मि पोमिणीण जत्थ कं पमाणयं ।

४ MP णरवइ इत्थ णयरि B णरवइत्थ णयरि. ५ MP जड°, B जर°.

25. १ P °पमोहणं. २ P विलामवेह्लि°. ३ MB पमूय°, ४ MB °पवभरंत°. ५ P पसम्मिया°.

14 a णिउ नीत .

25. 3 a घ ण व णा ल यं घना निरन्तरा आप्रा नालकाश्च वृक्षाविशेषा यत्र, b सु पो मे त्या दि-शोभन-पदाना नंपरा गपत्तिन्त्या यज रत्यातिन्त्या घनम्, अथवा, सु पो म सं प या य सो ह णं सुपत्रलक्ष्मीवृक्षैः शोभनम्, व णा ल य व न जलमासमत्ता लनाश्च यत्र. 4 a °भा णु भा व ह आदित्यप्रभापयम्; b स पा व भा व ह स्वपापभाव-घातकम् 5 b वा ण रं वा न वे घ म्. 6 b °रुक्क र मा ण व °वृक्षाणा मा लक्ष्मीन्त्या नव प्रत्यग्रम्. 7 b प सू णे-त्या दि-प्रमूणरेणुना पुणमकरन्देन पिः पीतवर्णं प्रसरत् कोमल पानीय यत्र. 8 a दा ण वा रि वा स यं मदजलेन मुगन्धिः; b °दा ण वा रि वा स य दानवानामरीणा च वमनिर्यव. 9 a °ध व णी र यं भूमिधूलिः; b स मा णि य° इत्तत्, °भा णि णी र य र्मानम् 10 b °ना र नं लक्ष्मीरनम्, अथवा नारं स्वं द्रव्यम्. 11 a °ग ध वा ह क प-माण य वा कुना इत्तमानम्, b जलस्मीत्या दि-यत्र घनालये जलमध्ये पश्चिनीनां क ( किं ) प्रमाणम्, नास्ति प्रमाणान्वित्यर्थः, अथवा, कं जलं प मा ण य परिमितमित्यर्थः.

अलीहिं चंचलेहिं छण्णकंजकेसरे  
पलोइऊण तं सरीतुसारसीयलं

तरंति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे ।  
णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं ।

घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि गिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे ॥

ससिबिंबसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥ 15

## 26

खंडयं—विविहच्चणविहिकारिणा  
अइरावयकरिगामिणा

विप्फुरंतपविधारिणा ।  
पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेप्पिणु  
जाइं ताइं ससहावें कुडिलइं  
आलुंचेविणु घित्तइं केसइं  
चिहुर लुक्कं जे हयतमपडलें  
जणवयसंदरिसियझसमुद्दइ  
परिसेसियउ मउहु रइरंगउ  
मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइं  
कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें  
मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ  
अंबराइं मुक्काइं अमोल्लइं  
संसारासारत्तु मुणेप्पिणु  
किमलंकारें देहहु भारें  
मोहजालु जिह मेल्लिवि अंबरु

मुट्टिउ पंच झडत्ति भरेविणु ।  
धुत्तविलासिणिकुलइं व कुडिलइं ।  
एम मुणंति धम्मु जगि के सइं । 5  
लेवि पुरंदरेण मणिपडलें ।  
घित्त तुरंतें खीरसमुद्दइ ।  
णं वम्महासिहरेहि सिहरेग्गउ ।  
रविससिबिंबइं णं णिव्वडियइं ।  
सहुं णिज्जिय मियंकुं णीहारें । 10  
विज्जुलैया इव णहविप्फुरियइ ।  
जाइं सरीरहु सुट्टुं सुहिल्लइं ।  
पंचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु ।  
अप्पउ भूसिउ वयपब्भारें ।  
झत्ति महामुणि हुवउ दियंवरु । 15

26. १ MBP मुक्क. २ MB सिहरंगउ. ३ BP णिव्विडियइं. ४ MB मियंक. ५ BP विज्जुलदा.  
६ MB अइविप्फुरियइ. ७ M सुद्ध.

12 a छ ण्ण कं ज के स रे प्रच्छादितपद्मकेसरे; b तरंती त्या दि—यत्र वनालये सुरासुराः के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव, स रे सरोवरे. 13 स री तु सा र सी य लं नदीजलविषुषा शीतलम्, b रि सी ऋषिः; व सी जितेन्द्रियः; यलं च+अलं अत्यर्थम्. 14 णि व्वि ण्ण उ विरक्तः 15 सिव प य खो णि हे मोक्षस्थानपृथिव्याम्.

26. 1 b °प वि धा रि णा इन्द्रेण. 5 b के स इं के स्वयम्. 6 a लु क लुप्ताः. 7 a ज ण व ये त्या दि—लोकानामसंदर्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्; अथवा झसकुमत्स्यमुक्तं उदकं यत्.



उत्तरसाढरिक्खि णवमिइ दिणि  
 दुविहु वि मणि पडिवणणउ संजमु  
 परियंचिवि सामिउ णियमत्थउ  
 रायहं णेहालोइयवइयइं  
 अजयमल्लु महुणयरु पराइउ  
 गय णियगेहहु णयणाणंदण  
 पियविरहाणलेण अइत्तउ  
 जो वण्णहुं सक्किउ णाहीसैं

महुमासहं पक्खम्मि सियंचदिणि ।  
 गउ णियवासहु हरि हुयवहु जमु ।  
 अवरु वि जणु णामियणियमत्थउ ।  
 खणि चालीससयइं पाँवइयइं ।  
 णियपुरवरु बाहुबलि पराइउ । 20  
 अवर वसहसेणाइय णंदण ।  
 णारीयणु असेसु परियत्तउ ।  
 समउं तेण ताएं णाहीसैं ।

घत्ता—रणवडहहु केरउ जगभयगारउ देंतु दिसहिं भरहे सरु ॥

थिउ गंपि अउज्झहि वइरिदुसज्झहि पुष्पयंतु भरहेसरु ॥ २६ ॥ 25

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे जिणणिक्खवणकल्लाणं णाम  
 सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥

॥ संधि ॥ ७ ॥

८ MBP णवमइ. ९ MBP अचंदिणि and gloss in P कृष्णे. १० MBP पव्वइयइं. ११ MBK  
 अइत्तउ. १२ M वइरिदुगेज्झहि.

16 b सियचंदिणि श्वेततारके, कृष्णपक्षे इत्यर्थः. 18 a परियचिवि प्रदक्षिणीकृत्य. 19 a णेहालोइय-  
 वइयइं स्नेहालोकितापतिकानि, b पावइयइ प्रव्रजितानि. 22 a अइत्तउ अतीव तप्त. 23 a णअहीसैं  
 सर्पराजेन वर्णयित्तुशक्य इत्यर्थः, b णाहीसैं नाभिराजेन. 24 भरहे भरतक्षेत्रे, सरु श्रेष्ठम्.

## VIII

सीर्हासणु णरवइसासणु महियलु तणु अवियप्पिवि ॥  
गुणवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

### I

आवली—धरिऊणं इसी सुणिगंथवेसयं

दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।

तिस्सा रइकएण परिसैसियंगओ

5

एयत्तं भरेण झाणालयं गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइं चरियइं संभरेवि

जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।

मणमारहु मारहु करिवि छेउ

अइसच्चहु तच्चहु मुणिवि भेउ ।

तणुभरणइं करणइं णिज्जिणेवि

मयासिमिरइं तिमिरइं णिद्धुणेवि ।

घरवासहु पासहु णीसरेवि

विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि । 10

सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि

णियजणणि व बहिणि व गणिवि णारि ।

संकुज्झिवि बुज्झिवि सइं जि सिक्ख

सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः

एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।

एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां

द्वावेतौ साखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जनाः for विदाम् and भूषणौ for भूषणम्. At the commencement of this Samdhi they read the following:—

मातर्वसुंधरि कुतूहलिनो ममैत-

दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य साव्यम् ( शाठ्यम् ? ) ।

त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी

किं वास्ति नास्ति सदशो भरतार्यतुल्यः ॥

1. १ MBP सिंहासणु. २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तृणमिव गणयित्वा. ३ P गुण-  
वंतहो. ४ P ०कंतहो. ५ M तस्सा. ६ MBP एयंत and gloss in P एकान्तम्. ७ MB जयणी.

1. 1 तणु अ वियप्पिवि शरीरमाविगणय्य. 5 तिस्सा रइकएण तस्यास्तपःकान्तायाः सभोगार्थम्;  
परिसैसियंगओ त्यक्तकायः. 6 एयत्तं एकत्वम्; 7 b जगसामिणि लक्ष्मीः; गोमिणि पृथ्वी. 9 b मय-  
सिमिरइं मदस्य सैन्यानि. 11 a खेरि वैरम्. 12 a संकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा; b जइणी जैनी.

छम्मासमेरु मुणि मेरुधीरु  
कमजुयलि पाविमालि विहत्थिमेत्तु  
ओट्टुउडणिउडसंपुडियवयणु  
भूमंगावंगपसंगरहिउ  
णिदंदु नृयंदु विमुक्कतंदु

अणसणु अवसणु गेण्हिवि गहीरु ।  
णेरंतरु अंतरु करिवि जुत्तु ।  
आसासियणासियणिसियणयणु । 15  
खयरिंदफणिंदणरिंदमहिउ ।  
लंवियभुउ सुरथुउ जिणवरिंदु ।

घत्ता—वरतणुसिरि णं कंचणागिरि जगगुरु दुक्कियमंथउ ॥

थिउ सग्गहु अवि यपवग्गहु णं आरोहणपंथउ ॥ १ ॥

## 2

आवली—विसयवसा तिसाछुहातावसोसिया

भीसणवग्घासिंघसरहेहिं तासिया ।

जे समयं वयम्मि लग्गा महारहा

ते भग्गा दिणेहिंमसहियपरीसहा ॥ १ ॥

अणब्भत्थसत्था महामंदमेहा  
ण ण्हाणं ण फुल्लं ण भूसा ण वासं  
ण सीउण्हवाएण जित्तो महंतो  
ण जंपेइ णालोयए कं पि भिच्चं  
ण याणेमि किं चित्तए चित्तमज्जे  
ण दुक्खंति पाया फुडं वज्जकाओ

पयंपंति एवं समोरुद्धदेहा । 5  
पहू पाणियं लेइ णाहारगासं ।  
ण णिदाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।  
णिउब्भो थिरं संटिओ एम णिच्चं ।  
मइं कम्मि संजोयए संदुसैज्जे ।  
ण ओमिज्जए केम रायाहिराओ । 10

c MBP ओट्टुउडणिविड°. ९ MB °सपुरिय°. १० MBP णियदु.

2. १ MBP दिणेहिं असाहिय°. २ GK have before this line भुजंगप्पयावो णाम छंदो; MB have भुजगप्पयावो णाम छंदो, P भुयगप्पयाणाम छंदो. ३ MBPT समे रूद्धदेहा. ४ MBP कं पि भिच्चं. ५ T संदुगेज्जे, ६. MB उव्विज्जए, P उव्विज्जई.

13 a छम्मासमेरु षण्मासमर्यादम्, b अवसणु अव्यसन दु.सक्किष्टमित्यर्थः. 14 a विहत्थिमेत्तु वितस्ति-  
मात्रम्. 15 a ओट्टुउडणिउड° निष्पुटं निश्छिद्रसलममोष्ठपुट कृत्वा सकोचितवदनः; b आसेति-आसा-  
श्रितनासिकान्यस्यनयनः. 16 a अवंग° अपाङ्ग. 17 a चयदु चचन्द्रः, विमुक्कतदु आलस्यरहितः.

2. 1 विसयवसा विषयवशात्. ३ समयं सह, महारहा महारथाः उत्तमसत्त्वाः. 5 a अणब्भत्थ-  
सत्था अनभ्यस्तशास्त्राः; b समोरुद्धदेहा श्रमेण अवरुद्धदेहा. व्याप्तशरीराः. 6 a वासं वस्त्रम्. 7 b संतो  
श्रान्तः. 8 b णिउब्भो नियमेनोर्ध्वः. 10 b ओमिज्जए उन्मृज्यते.

अहो हो किमेयस्स एएण होही  
पुणो पट्टणं किं व जाही ण जाही  
ण कंताकुडुंबेण मोहं विणीओ  
जडाजालधारी सपारोहसोहो  
मणूमण्णणिजो णियारी णिसुंभो  
इमस्सेरिसो धीरिधीरावहारो

वणंते कहं वा णिसाहाइं णेही ।  
मणोहारि रज्जं पि काही ण काही ।  
ण सहूलपंचाणणाणं पि भीओ ।  
घुलंतंगसण्णो वडो णं कुरोहो ।  
इमो देवदेवो परो आइवंभो । 15  
परं दुव्वहो चारुचारित्तमारो ।

घत्ता—जं<sup>१</sup> धवलें अइअतुलवलें दुग्गु खुरेहिं णिभिण्णउं ॥

तं<sup>१</sup>हिं कसरहिं विहुणियसंसिरहिं एक्कु वि पउ णंउ दिण्णउं ॥ २ ॥

### 3

आवली—उन्भियधवलविंधमहिमावसारओ  
करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ ।  
परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ  
पियसहि रासहाण कह होइ णेयओ ॥ १ ॥

गयगंडकंडुं कंडुयणवाह	को वि सहइ किडिदाढावलेह । 5
को वि सहइ फणिमुहचुंबियाइं	ताणं चिय कंठोलंबियाइं ।
को वि सहइ दूसह दंस मसय	पोसियकसाय दुव्वार विसय ।
को वि सहइ णग्गत्तणु णिरासु	णिच्चं णिरसणु गिरिदुग्गवासु ।
पाउसजलधाराविप्पियाइं	को वि सहइ विज्जुझडप्पियाइं ।
को वि सहइ <sup>१</sup> सिसिरि पडंतु सिसिरु	उण्हालइ दिणयरकिरणपसरु । 10

७. B णीही. ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणां धैर्यापहारकः; P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहारः. ९ MB जें. १० MB खुरहिं णिभिण्णउ. ११ P जरकसरहिं. १२ M<sup>०</sup>सुसिरहिं. १३ MBP ण वि.

3. १ P किह. २ MBP<sup>०</sup>चंड<sup>०</sup>. ३ B कंठालंबियाइं. ४ MB ससिरि but gloss in M शीतकाले.

11 b णि सा हा इं अहोरात्राणि. 13 a वि णीओ विनीतः प्रापितः. 14 b कुरोहो वृक्षः. 15 a मणूमण्ण-  
णिजो मनुभिरपि पूज्यः. 16 a धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहारः. 17 धवलें धुर्यवृषभेण.  
18 क सर हिं वत्सतरैः.

3. 3 प रि रू ढ ते य ओ प्रख्यातप्रभावः. 4 रा स हा ण गर्दभानाम्. 3 a वाह वाधा; b कि डि दा ढा व-  
लेह सूकरदंष्ट्राविदारणम्. 8 a णि रा सु फलानपेक्षम्. 9 b<sup>०</sup>झ ड प्पि या इं पतनानि. 10 a सि सि रि शीतकाले;  
सि सि रु शीतम्.

परलोयकहाणी केण दिट्ठ	को वि सहइ एयहु तणिय णिट्ठ ।	
अण्णेण उत्तु किं एत्थु मरमि	घरु जाइवि तं णियरज्जु करमि ।	
अण्णेण उत्तु संभरमि पुत्तु	घरु जाइवि आलिंगमि कलत्तु ।	
अण्णेण उत्तु अलिचुंविआइं	सलिलइं मयरंदकरंविआइं ।	५
सरवरि पइसेप्पिणु पियमि ताम	तणहाइ ण वैच्चइ जीउ जाम ।	15

घत्ता—अण्णेक्के माणगुरुक्के विहंसिवि एहउ वुच्चइ ॥

परमेसरु ओलंविअकरु एकल्लैउ वणि किह मुच्चइ ॥ ३ ॥

## 4

आवली—झिज्जंते ससिमि झिज्जइ ससो सयं

वडुंतमि जाइ वुड्डीपयं पियं ।

अच्छामो वणमि सहिरुण दंडणं

णरवइचरियमेव भिच्चाण मंडणं ॥ १ ॥

विसमे वियणे	तरुगिरिगहणे ।	5
परलोयैरइं	मोत्तूण पइं ।	
गंतूण पुरं	तं विविहघरं ।	
भरहस्स मुहं	पेच्छामु कहं ।	
सव्वेहि घणं	पडिवण्णमिणं ।	
सुरणंविअपयं	दहंपंचमयं ।	10
उत्तुंगतणुं	पणवंति मणुं ।	
रंजियअलिहिं	कुसुमंजलिहिं ।	

५ B वंचइ. ६ MB वियसिवि. ७ MBP एकु जि.

4. १ MB झिज्जंते, K सिज्जते, but corrects it to झिज्जते. २ MBP have before this line ललियलया णाम छंदो, GK have ललिया णाम छंदो. ३ MBPT °गइं. ४ MBP पेच्छामि. ५ MBP °णमिय°. ६ M adds this foot in the margin and MB read after it णाहेयसुयं धणुपचसयं सो दिव्वमयं, after दहंपंचमय P reads परिगलियमयं धणुपचसय.

11 b णिट्ठ अनुष्ठानपरमकाष्ठाम्.

4. 1 स सो शशः. 2 वुड्डी प य उच्चैः पदम्. 3 द ड ण लुञ्चनादिकम्. 4 a वियणे विज्जे. 6 b पइ पतिम्.

गयजम्मरिणं	पुज्जंति जिणं ।	
जंपंति इमं	धीरो सि तुमं ।	
ण मुणसि कमं	गहियं णियमं ।	15
अम्हे चवला	पविलीणबला ।	
तुह मग्गचुया	हा किं ण मुया ।	
मणँधरियगई	इय भाणिवि जई ।	
अज्जवसवणा	णिम्मियभवणा ।	
थियहरिणगणे	णिवसंति वणे ।	20
कंदं पवरं	मूलं महुरं ।	
मालूरदलं	भक्खंति फलं ।	
सीयं विमलं	पपियंति जलं ।	
सिरघुलियजडा	वियरंति जडा ।	
किर ते वि मुणी	ता दिव्वञ्जुणी ।	25
ससिरविसयणे	उग्गय गयणे ।	
मा लुणह तरुं	मा धुणह मरुं ।	
मा खणह मर्हि	मा कुणह सिर्हि ।	
मा विसह सरं	मा हणह परं ।	
एसा ण विही	जइ णत्थि दिही ।	30
ता णिवसणयं	तणुभूसणयं ।	
गेण्हह तुरियं	दुट्ठं दुरियं ।	
असुविद्ववणे	भवसंकमणे ।	
जं आसि कयं	तं जाइ खयं ।	

घत्ता—जिणालिंगे उज्झियसंगे जं किउ पाउ दुरासें ॥ 35

तं तुट्ठइ कैह वि ण फिट्ठइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि. ८ MBP °हरिणयणे. ९ MP विरयति. १० MBP कह व.

19 b °भवणा गृहाणि. 20 a थिय हरिण गणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र. 23 a मालूरदलं वित्त्व-पत्रम्. 26 a ससिरविसयणे आकाशे. 27 b मरुं पवनम्. 29 a सरं सरोवरं पानीयम्. 35 पाउ पापम्. 36 जम्मसहासें जन्मसहस्रेण.

## 5

आवली—ता लग्गा णराहिवा भासियक्खरे  
 दुमदलमोरपिच्छवक्कलधरा परे ।  
 थियजिणवरणिरोहणिट्ठोहयट्ठिया  
 णाणाविहवियारवेसेहिं संठिया ॥ १ ॥

तो <sup>३</sup> कच्छमहाकच्छहं तणूय	पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।	5
कामियकामिणियणकामकील	मयमत्तचंडसौंडाललील ।	
परबलवलगँलहत्थणसमत्थ	दोण्णि वि भायर करवालहत्थ ।	
आया तहिं जहिं णिम्मुक्कडंभु	थिउ पडिमाजोएं सइं सयंभु ।	
पासहिं परिभमिवि महारिजूर	णं जंवूदीवहु चंदसूर ।	
णामें णमि विणमि णिवद्धणेह	णं सिहरिहि णिर्यडणिसण्ण मेह ।	10
जँयकारिवि तेहिं पवुत्तु एव	णियसुयहं विहंजिवि पुहइ देव ।	
दिण्णी अम्हहं दिण्णउ ण किं पि	महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि ।	
पइं पालियखत्तियसासणेण	पेसणयरपेसियपेसणेण ।	
एवहिं पच्चुत्तरु किं ण देसि	भणु कवणु दोसु गुणरयणरासि ।	
परमेट्ठि पियामह तिर्जगताय	अम्हारउ दुट्ठु ण होइ राय ।	15

घत्ता—तुह चलणहं णं णवणलिणहं मणमहुयरु रुणुंरंटइ ॥

उम्मेल्लहि काइं ण वोल्लहि जाम ण हियवउ फुट्टइ ॥ ५ ॥

## 6

आवली—पुणु पुणु पहुपसायदाणुग्गमे रया  
 पाएसुं पडंति गाढं कुमारया ।

5. १ MBP °पिंछ°. २ M°णिट्ठपहट्ठिया; B णिट्ठाहपठिया ३ MBP ता. ४ M °गलघल्लणं, B °गल-  
 त्यल्लण°. ५ P °णिमुक्क°. ६ MBP णियडणिविट्ठु. ७ MBP पणवोप्पिणु. ८ M तिजगभाय.

5. 3 थिये त्यादि— स्थितस्य जिनस्य निरोधनिष्ठा निश्चलस्थितिस्तया हत स्थितं स्थान येषां ते. 5 a  
 तणूय पुत्रौ. 6 b °सौंडाल° हस्ती. 8 b सयंभु आदिनाथ.. 16 रुणुंरंटइ अनुराग करोति. 17 उम्मेल्ल हि  
 अवलोकय.

6. 1 रया रताः.

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं  
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजणं ॥ १ ॥

रयणमयमइंदासणसमेउ	पोमावइपरमाणंदहेउ ।	८
जिणपुण्णपवणपरिच्छित्तकाउ	तहिं अवसरि कांपिउ णायराउ ।	
णियणाणु पउंजिवि तेण मुण्णिउं	जं साल्लएहिं जिणु पुरउ भाणिउं ।	
मग्गंति बाल किं भुअणभाणु	जइ देइ देइ ता तिजगदाणु ।	
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु	पारद्धउ विमल्लु मुणिंदधम्मु ।	
सामंतमंतिसेविउ णरेसु	महिवइ संतोसिउ देइ देसु ।	10
देसवइ गामु गामवइ छेत्तु	छेत्तवइ किं पि कुडैएण भत्तु ।	
घरवइ पुणु ढोवइ कूरमुट्ठि	तिहुयणवइ पाडइ पयहिं सिट्ठि ।	
जइ पत्थिज्जइ ता को वि गरुउ	लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।	
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु	सो पत्थिउ जो तेलोक्कणाहु ।	
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु	सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।	15

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पडिवण्णउं ॥

मोक्खत्थिउ सो जं पत्थिउ तं हउं करमि अंसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयम्मि ते हमिह खोहकारणं

जायं किं भर्णांमि सुकयावयारणं ।

अचवंता वि दैति तरुणो महाहलं

सुपुरिसदंसणं पि ण हु होइ णिप्फलं ॥ १ ॥

6. १ MBP सुंदरेहिं जिणपुरउ. २ MBP देउ. ३ P खेत्तु. ५ P खेत्तवइ. ५ MB कुलएण; P कुडएण in second hand. ६ MB तइल्लोक्क°. ७ MBP ण सुण्णउं.

7. १ MBP भणेमि.

6 b णायराउ नागराजो धरणेन्द्रः. 10 a णरेसु नराणामीशः; अथवा, पुरुपेषु. 11 b कुडएण प्रस्थेन. 12 b सिट्ठि जीवसृष्टिः त्रिभुवनम्. 13 b चरुउ हित्तरः.

7. 1 णरेत्यादि— नरलोके तौ नमिबिनमी तिष्ठतः, हमिह अहं तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारणं जातौ.



दुवई—तां णिग्गमणमेव धरणेण कयं संभरियजिणवरं ।	5
फारफणौकडप्पफुक्कारुल्लौलियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥	
महिहररुंदकंदरायंपणणिग्गयकूरहरिवरं ।	
हरिओरालिरोलवित्तासियणासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥	
कुंजरचहुलचरणपैडिपेल्लणपाडियपयडभूरुहं ।	
भूरुहखंधवुंधखरणिहसणरुहपज्जलियहुयवहं ॥ ३ ॥	10
हुयवहविप्फुलिंगजालावलिजलियसमत्तकाणणं ।	
काणणसंणिसण्णमुणित्तावासंक्रियसयलसुरयणं ॥ ४ ॥	
सुरयणभरियजलयजलधाराऊरियसुविउलंवरं ।	
अंवरयलफुरंततडिदंडाहंडलचावकच्चुरं ॥ ५ ॥	
कच्चुरदिच्चवत्थविट्थिण्णुल्लोवयल्लइयसंदणं ।	15
संदणयलविल्लंगविसहरमुहलालियविंझचंदणं ॥ ६ ॥	
चंदणकुसुमघुसिणफलदलजलतंदुलउवणियच्चणं ।	
अच्चणकामसामफणिरामारंभियसरसणच्चणं ॥ ७ ॥	
णच्चणमिलियललियलीलामरललणालुलियमेहलं ।	
मेहलियाविलंविचलकिंकिणिकलकलयलसुपेसलं ॥ ८ ॥	20
इय वरविवरकुहरतरुणहयलजलथलकंपकारिणा ।	
वियडफणाहिरूढचूडामणिकुवलयभारधारिणा ॥ ९ ॥	
पहुकमकमलणमियणमिविणमिणराहिवचोज्जदाइणा ।	
झत्ति समागण दिट्ठो रिसहो गरलहरराइणा ॥ १० ॥	

२ P तो. ३ MBP °फडा°. ४ P °उल्लासिय°. ५ MBP °परिपेल्लण°. ६ MBP °समंत°. ७ M °ताव-  
ससंक्रिय°; B °तावसरसंक्रिय°; P °तावसक्रिय° and gloss तापशङ्कित, K °तावासंक्रिय°, but in  
second hand °तावससंक्रिय°. ८ MBP °सविउल° ९ MBP °वल्लग°. १० MBP अच्चण°.

6 °कडप्प° सघातः. 7 °आयंपण °आकम्पनम्. 8 हरिओरालि° सिंहध्वनिस्तस्य रोलः कोलाहलः.  
10 °खरणिहसणरुह° अत्यन्तनिघर्षणप्रादुर्भूतः. 12 °तावासक्रिय° तापशङ्कितः. 13 °भरियजलय°  
भृतमेघाः 14 °कच्चुरचित्तवर्णं यथा भवति. 15 °उल्लोवय° चन्दोपकम्; °णदणं देवविमानम्. 16 °ला-  
य° चुम्बिताः. 18 °साम° श्यामा. 21 °कुहर° पर्वतः. 22 °अहिरूढ° स्थितः. 23 °चोज्ज° आश्चर्यम्.  
24 गरलहरराइणा नागराजेन धरणेन्द्रेण.

घत्ता—आवेप्पिणु कर मडलेप्पिणु थुड मुणिंदु थुइलक्खहिं ॥

25

मुहँधुलियहिं अक्खरलँलियहिं जीहहिं दसँसयसंखहिं ॥ ७ ॥

## 8

आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं

भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।

जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं

ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दूसियघरासमो

भूसियणियागमो ।

5

सोसियमईमलो

पोसियमहीयलो ।

मयगयणियत्तओ

कयवयपयत्तओ ।

भावियजयत्तओ

तावियसँयत्तओ ।

खंचियविसायओ

संचियविरायओ ।

लुंचियसिरोरुहो

वंचियदुरग्गहो ।

10

कुंचियगईवहो

अंचियजसावहो ।

मावईखोहओ

आवईरोहओ ।

छंडियकुसंगओ

खंडियअणंगओ ।

दंडियसइंदिओ

पंडियपवंदिओ ।

तवयरणपरियरो

जमकरणभयहरो ।

16

समसरणजोयओ

भवतरणपोयओ ।

सज्जणाणग्गणी

सिद्धचिंतामणी ।

संपयासंगमो

धम्मकप्पहुमो ।

११ P मुहि. १२ MBP °वलियहिं. १३ P दुसहससंखहिं.

8. १ GK have before this line:—अमरपुरी छंदो; MBP have अमरपुरी नाम छंदो.  
२ M °सगत्तओ. ३ B omits this foot.

8. 1 लालसं लम्पटम्. 4 मयणसिहिणा पलित्तयं कामाग्निना प्रदीप्तम्. 5 b °घरासमो गृहस्था-  
श्रमः. 7 b °पयत्तओ प्रयत्नः. 8 b °सयत्तओ °स्वगात्रः 11 a °गईवहो °गतिमार्गः; b अंचियजसावहो  
आधितयशोधारकः. 12 a मावई° लक्ष्मीपतिः. 15 a °परियरो सामग्री; b जमकरण° मरणं रोगो वा.  
16 a समसरण °उपशमगृहम्; b °पोयओ प्रवहणम्.

भवविणासी भवो	सिवपयासी सिवो ।	
चित्ततमहो इणो	दोसविजई जिणो ।	20
पावहारी हरो	तं पराणं परो ।	
देवदेवो तुमं	ताहि दीणं ममं ।	
णिग्गुणो णिद्धंणो	दुम्मई णिग्घिणो ।	
परहरावासओ	गहियपरगासओ <sup>५</sup> ।	
माणओ मेच्छओ	रोहिओ रिंछओ ।	25
जायओ हं भवे	णारओ रउरवे ।	
तुम्ह पडिकूलिमा	जा कया सा कमा ।	
एम भुत्ता मए	आसि काले गए ।	

घत्ता—जिणु वंदिवि अण्णउ णिंदिवि णाणं तमु पक्खालिउ ॥

णमिरायहु विणमिसहायहु मुहससिर्विबु णिहालिउ ॥ ८ ॥ 30

## 9

आवली—तेहिं पयंपियं सया सुहावणं

महिमहि दारिऊण पत्तो सि किं वणं ।

कस्स तुमं सुसील अम्हाण संमुहं

अणिमिसलोयणेहिं किं पेच्छसे मुहं ॥ १ ॥

णीसेसँतासियामियणरिंदु

तं णिसुँणिवि पडिजंपइ फणिंदु । 5

हउं भुवणि पसिद्धउ णायराउ

जंभारिणमंसिउ तिजगताउ ।

लोउत्तमु कुसुमसरंतयालु

इहु देउ महारउ सामिसालु ।

जइयहुं णिव्वेइउ मुक्कैरज्जु

तइयहुं जि एण महु कहिउ कज्जु ।

तं पेसियं केण वि कारणेण

विहलियजडजीउद्धारणेण ।

४ MB णिदुणो. ५ MP add after this: जीवआसासओ करणवलपोसओ, B adds only जीवआसासओ.

9. १ MBP णीसास°. २ B णिसुणवि. ३ MB मुक्कु रज्जु. ४ MBP सपेसिय.

20 a चित्ततमहो चित्ततमोघातक, इणो आदित्यः अथवा, चित्तस्य तमोऽन्धकारस्तस्य सूर्यः. 22 b ताहि रक्ष. 27 b कमा क्रमात्. 29 णाणं धरणेन्द्रेण.

9. 1 सया सुहावणं सदा सुखकरम्. 2 महिमहि दारिऊण हे अहे, महीं विदार्य. 5 a °अमिय° अमित°. 6 b जंभारि° इन्द्रः. 7 a कुसुमसरंतयालु कामघातक.. 8 a णिव्वेइउ वैराग्यं गतः.

एहिंति बे वि णमिविणमिणाम  
 तुहुं देज्जसु ताहं णयासणाउ  
 आसणथरहरणं ढलिउ संचु  
 पायाल्लु मुइवि अवयरिउ एत्थु  
 जो खंडइ लिंपइ सुराहिणण  
 एवहिं सो दीसइ धुंनु समाणु

मइं मग्गिहिंति सिरिसोक्खकाम । 10  
 खगसेट्ठिउ उत्तरदाहिणाउ ।  
 मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु ।  
 हउं अरुहदेवपेसणसमत्थु ।  
 देवेणं णिज्झाइयणियहिणण ।  
 परिचत्तउ पुव्विल्लउ विहाणु । 15

घत्ता—लहु आवहं काइं चिरावहं जोइ मुएवि सखयरइं ।  
 मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं ॥ ९ ॥

## 10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं  
 णवर णहयले विमाणं णियच्छियं ।  
 मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं  
 गुणिणा ज्ञत्ति णायणाहेण णिम्मियं ॥ १ ॥

णंविऊण सदोसारंभहरं  
 जुंज्झियहिंणियविसहरिणउलं  
 गयणंगणलग्गसिरं गरुयं  
 उक्खयपुलिंदकंदारुणयं  
 सीहाणुलग्गभीयरसरहं

सुरवरभवणेण सरंभहरं । 5  
 दुवंकुरपीणियहरिणउलं ।  
 ओसहिहयसत्तसिरंगरुयं ।  
 हरिणहहयकरिकंदारुणयं ।  
 सुररमणीवाहियहंसरहं ।

५ MBP अरुहदासपेसण°. ६ MBP धुउ.

10. १ All Mss. have before this line: मात्रासमकं. २ MBP जुज्झिरहिंणिर°. ३ MBP दुवंकुर°.

11 a णयासणाउ नगाश्रिते द्वे श्रेण्यौ; b खगसेट्ठिउ विद्याधरश्रेण्यौ. 12 a °थरहरणं कम्पनेन; संचु शरीरबन्धः. 14 b °णियहिणण मोक्षेण. 16 चिरावहं चिरं कुरुताम्; सखयरइं विद्याधरसाहितानि.

10. 5 a सदोसारंभहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्; b सुरवरभवणेण विमानेन; सरंभहरं सरोवर-जलधारकं विजयार्थं रम्भायुक्तगृहं वा. 6 a °विसहरिणउलं वृषसिंहनकुलम्; b °हरिणउलं मृगसंघातम्. 7 a गरुयं महान्तम्. b सत्तसिरंगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम्. 8 a °कंदारुणयं कन्दै-र्मूलैरुणं रक्तम्; b कंदारुणयं मस्तकैः कृत्वा दारुणं रौद्रम्. 9 a °सरहं अष्टापदम्; b °वाहियहंसरहं वाहितो हंसयुक्तो रथो यस्मिन्.

तीरासियखयरीवाहणयं	दुमघट्टणहुयहुयवाहणयं ।	10
णेउररवभरियल्लयाहरयं	वरखेयरपीयपियाँहरयं ।	
संदरिसियवहुरत्तामरसं	रवियरवियसावियतामरसं ।	
वीसरियहारभारियमहियं	जिणपडिमाकयमहिमामहियं ।	
चारणमुणिदेसियधम्मसुइं	झरझरियणिज्झरावाहसुइं ।	
फणिवयणविमुक्कविसग्गिवहं	दरिदाँवियविविहविसग्गिवहं ।	15
णरजुयलमलद्धपियालवणं	णीयं सेलं सपियालवणं ।	
पुव्वावरजलहिविलग्गसिरो	कंदरमुहेहिं वणयरगसिरो ।	

घत्ता—भडभीसहिं णमिविणमीसहिं गिरि वेयडु पलोइउ ॥

रयणालए सायरवेलए तुलदंडु व संजोइउ ॥ १० ॥

## 11

आवली—वियसियविडविकुसुमकिंजक्कपिंजरो

मणिमयकडयमंडिओ णं महीकरो ।

रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो

रयणायरविलुद्धओ हवइ थीयणो ॥ १ ॥

णं जगसिरिणट्टाधारवंसु

अहवा गोगाइसररीरवंसु ।

5

गंगासिंधूहिं विहिण्णदेहु

पडिगयसंकिरगयणिहयमेहु ।

रुक्खहुं णावइ रुक्खाउवेउ

देवहुं वल्लहु णं सग्गलोउ ।

४ M °लयाहरहं. ५ M °पियाहरय. ६ P संदरसिय°. ७ MBP दरिसाविय°.

10 a ° ख य री वा ह ण यं विद्याधरस्त्रीणा वाहन यस्मिन्, b ° हु य ° उत्पन्नः, b ° हु य वा ह ण य हुतवाहनमग्निम्.

11 a ° ल या हर यं लतागृहम्, b ° पिया हर य ° प्रियाधरम्. 12 a स द रि सि ये त्या दि— संदर्शितं वधूरक्ता-

नाममराणां सं सुख येन, b ता म र सं पद्मम्. 13 a ° म हि यं महीजं वृक्षम्, b ° म हि मा म हि यं माहिम्ना पूजे-

तम्. 15 a फ णी त्या दि— फणिवदनैर्विमुक्ताद्विषाभेर्वधो मरण यत्र, b द री त्या दि—दरीषु दर्शितो विविधैर्विभिः

पक्षिभिः स्वर्गिणा पन्था यत्र. 16 a ण र जु य ल णमिविणमियुग्मम्; अ ल द्ध पि या ल व णं न लब्धं वृषभनाथस्य

प्रिय आलपन येन, b स पि या ल व ण प्रियालाश्वरवृक्षास्तद्वनै सहितम्. 17 b ° ग सि रो असनशील.. 19 र य णा-

ल ए रत्नस्थानके.

11. 1 ° किंजक्क° मकरन्द°. 2 क ड य ° कङ्कणं गिरितटं च. 4 र य णा य र वि लु द्ध ओ रत्नानामाकरे

आश्रये पुरुषे विशेषेण लुब्धः, अथवा रते नागरे विदग्धपुरुषे विशेषेण लुब्धः. 5 b गो गा ई° पृथ्वी एव धेनुः.

7 a रुक्खाउवेउ वृक्षाशुर्वेदः वृक्षाणा वृष्ट्युपायप्रदर्शकं शास्त्रम्.

उवलोसहिरसासिहिजोयवणु  
णिसि चंदयंतसलिलेहिं गलइ  
माणिकपहादिण्णावलोउ  
रययमउ सव्वु रयणियरभासु  
गंयणंगणलग्गविचित्तसिंणुं  
दोवासहिं तासु थियाउ ताम  
उत्तरदाहिणियउ मणहराहं

रसवाइ व सइं णिवडियसुवणु ।  
वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।  
जहिं चक्कवाय ण मुणंति सोउ । 10  
पण्णास मूलि वित्थारु जासु ।  
जो पंचवीसजोयणइं तुंगु ।  
दीहत्ते लवणसमुद्दु जाम ।  
सेढीउं दोण्णि विज्जाहराहं । 15

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिणी ॥

एक्केकी विहवगुरुक्की णाणारयणरवणी ॥ ११ ॥

## 12

आवली—तत्थ चउत्थकालठिदिसंविहाणयं  
पंचधणूसयाइं मुणिरयणिमाणयं ।  
णीणं कम्मभूमिपरिणामजोयओ  
परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ  
पुव्वाउ ताउ णिच्चं हियाउ  
संहिउवसग्गे धीरे समेण  
पारंभियमुद्दामंडलेण  
विज्जाहराहं णियमं वएण

दूसहतवताववसंगयाउ । 5  
अवराउ पयत्तं साहियाउ ।  
सुइदेहं होमं संजमेण ।  
चरुगंधधूवफुल्लच्चणेण ।  
विज्जाउ हांति ससहावएण ।

11. १ MBP गयणंगललग्गसुविचित्त°. २ B °सेंगु. ३ MB सेढिउ दोण्णि वि; P सेढिउ बेण्णि वि.  
४ MBP णाणाणयर°.

12. १ P °कालठिदि°. २ T भयराणिमाणयं, but notes a p मुणिरयणीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.  
३ MBP कम्मभूमिणाम°, ४ MBP सहिओवसग्गधीरे. ५ MP °पुप्फच्चणेण; B पुप्फच्चणेण. ६ MBP कमेण.

8 a उ व ल° धातुपाषाण . 11 a र य णि य र भा सु चन्द्रकान्तिः. 13 a दो वा स हिं द्वयोः पार्श्वयोः. 15 मो इ वि मुक्त्वा; व रि उपरि.

12. 1 च उ त्थे त्या दि—चतुर्थकालस्थितेः शरीरोत्सेधादिलक्षणायाः सम्यग्बिधानम्. २ मु णि र य णि-  
मा ण यं सप्तहस्तप्रमाणम्. 3 णी णं नृणां मनुष्यानाम्, क म्म भू मि प रि णा म जो य ओ कृष्यादिकर्मयोगजः. 7 a  
स हि उ व स ग्गे सोढोपसर्गेण. 9 a व ए ण व्रतेन.

सिद्धउ पणत्तिपहूइयाउ	आणत्तु करिंति पराइयाउ ।	10
जहिं धम्मा इव संदिण्णकाम	णीरन्तरसीमाराम गाम ।	
जहिं दक्खामंडवयलि सुयन्ति	पेहि पंथिय दक्खारसु पियन्ति ।	
धवलूढजंतपीलिज्जमाणु	पुंडुच्छुखंडरंसु पवहमाणु ।	
कइकव्वरसु व जणु पियइ ताम	तित्तीइ होइ सिरकंपु जाम ।	
जहिं पिक्ककलमकणिसइं चरन्ति	सुय दूयत्तणु हलिणिहि करन्ति ।	15

घत्ता—सिरिसयणहिं णं बहुवयणहिं विलंसन्ती दिणि रायइ ॥

जहिं पोमिणि कलमहुरइणुणि णं भाणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

## 13

आवली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया

णिच्चं गंधधूर्वमल्लोहवासिया ।

लच्छिं भुंजिउं णरा देवयाणियं

सोक्खं जं लहन्ति तं केण माणियं ॥ १ ॥

कुसुमियणंदणवणसंकडाइं	कीलागिरिंदसिहरुम्भडाइं ।	5
परिहातिएहिं परियंचियाइं	पवणुधुयधयमालंचियाइं ।	
बहुदारगोउरट्टालयाइं	सोवण्णरयणरइयालयाइं ।	
मुहसालातोरणसोहियाइं	दाहिणसेठिइ जसाहियाइं ।	
सोहासमूहमोहियसुराइं	एयइं पण्णास जि पुरवराइं ।	
पहिलउ किंणर णरगीउ वीउ	बहुकेउ पुणु वि पुरु पुंडरीउ ।	10
हरिकेउ सेयकेउ वि रवणु	सप्पारिकेउ णीहारवणु ।	
सिरिवहु सिरिहरु लोहंगलोलु	अण्णेक्कु अरिंजउ सग्गलीलु ।	

७ MBP सुइयाउ. ८ MBP णेन्तर°. ९ M जहिं. १० MBP रसपवहमाणु. ११ M °कलमकणसइ; BP कलवकणिसइं. १२ MBPK विसयती.

13. १ MBP °मल्लेहिं वासिया; T °मल्लोह° and gloss पुष्पसमूह.. २ P °गोउरुहालयाइ. ३ MBP सेउकेउ. ४ MB लोयगलीलु, P लोहगलालु and gloss लोहार्गलायुक्तम्.

10 a प णत्तिपहूइयाउ प्रजसिप्रभृतय, b आ णत्तु आज्ञाम्. 12 b पेहि मार्गे. 13 a धवलूढ° वृषभवाहितानि. 15 b सुय शुकाः, हलिणिहि कर्षकल्लिया.. 16 सिरिसयणहिं पच्चैः, रायइ शोभते.

13. 2 मल्लोह° पुष्पसमूहः. 3 देवयाणियं विद्यासंपादिताम्. 6 a परियंचियाइं परिवेष्टितानि.

वज्रगलु वज्रविमोड अवरु  
सोलहमी पुरि सयडमुहि होइ  
रयविरयपउरखगजम्मखोणि  
अपरज्जिउ कंचीदामु दोणिण  
झसइंध कुसुमपुरि संजयंति  
विजया खेमंकरु चंदभासु  
सुविचित्त महाघण चित्तकूड  
ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि  
मज्झइ रहणेउरं चकवालु  
जायँउ जयमंगलजयरवेण

महिसारु पुरं जयपुँरु वि पवरु ।  
चउमुहि बहुमुहि जाणंति जोइ ।  
आहंडलणयरि विलासजोणि । 15  
सविणय णहु खेमँयरीउ तिणिण ।  
सुर्कउरु जयंती वइजयंति ।  
रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।  
अण्णु वि तिकूड वईसवणकूड ।  
सुमुहीपुरि णिच्चुज्जोइणी वि । 20  
तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।  
णामि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एकेकी पुरँहिं विरिक्की गामकोडिपाडिबन्दी ॥

णामिरायहु थुयणाहेयहु धम्मं संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

१४

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया

परउचयारवावडा होंति धीरया ।

एक्को अहव दोणिण पायालराइणा

सरिसा णत्थि भद् धरणिंदभोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाओ फुडं जाणिमो

अज्जुणी वारुणी वइरिसंघारिणी

विज्जुदित्तं पुरं गिलिगिलं पट्टणं

वंसवत्तं पुरं कुसुमचूलं पुरं

वामसेढीपुराणावलिं भाणिमो । 5

अत्रि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।

चारुचूडामणी चंदभाभूसणं ।

हंसगब्भं पुरं मेहणामं पुरं ।

५ B जलपुरु. ६ B सयडमुहि ७ M खेपुरीउ; BP खेमपुरीउ. ८ MBP सुकउरि. ९ P वइवसण°.

१० P णेउरु चकवालु. ११ MBP जोयउ. १२ M विहवगुरुक्की; BP पुरहिं गुरुक्की.

14. १ M सरसा. २ MBP भद् णत्थि. ३ MBP पुराणावली. ४ P विज्जदंतं. ५ MBP किलि-  
किलं. ६ MP वंसवतं; B वंसवसं.

28 पुर हिं वि रि क्की पुरैः विभक्ता.

14. 1 सुधीरया सुबुद्धिरताः. 2 वावडा व्यापृताः. 5 a वारुणा सामुहाओ पश्चिमदिशामुखतः  
प्रारभ्य.



संकरं लच्छिहम्मं पुरं चामरं  
 वसुमईणामयं सब्वसिद्धत्थयं  
 इंदकंतं णहाणंदणासोययं  
 अलयतिलयं च णहतिलययं मंदिरं  
 जुइतिलयमवणितिलयं सगंधव्वयं  
 अग्गिजालापुं गह्यजालापुं  
 रयणकुलिसं वरिडुं विसिद्धासयं  
 फेणसिहरं पि गोखीरवरसिहरयं  
 धरणि धारणि सुदंसणपुरं रुंदयं  
 विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं  
 सट्टिगामाण कोडीहिं सहं हारिणा

विमलमसुमक्कयं सिवसमं मंदिरं ।  
 सूरसत्तुंजयं केउमालं कयं । 10  
 वीयसोयं विसोयं सुहालोययं ।  
 कुमुदकुंदं च णहवल्लहं सुंदरं ।  
 मुक्कहारं पुरं अणिमिसं दिव्वयं ।  
 सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवासं पुरं ।  
 दविणजयमवि सभदं च भद्दासयं । 15  
 वेरिअक्खोहसिहरं च गिरिसिहरयं ।  
 दुग्गयं दुद्धरं हारिमाहिंदयं ।  
 सुरयणायरपुरं रयणपुरमवि पुरं ।  
 सट्टि तुट्टेण सुविसिद्धसुहयारिणा ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियखयरइं धणकणजणपरिपुण्णइं ॥ २० ॥

अणुराएं रिसहपसाएं णाएं विणमिहि दिण्णइं ॥ १४ ॥

### 15

आवालि—जाओ सौ णहयराणं पडू पिओ

णेहाणिवद्धओ ससुहिणा समं थिओ ।

सुयणुद्धारभारधरणुज्जयंगओ

ते आउच्छिऊण धरणो घरं गओ ॥ १ ॥

भुवणहु मंडणु अरहंतु देउ

वेसहि मंडणु वइसिउ णिरुत्तु

कुलमंडणु सीलु सुयस्स बुद्धि

माणिणिमुहमंडणु मथरकेउ । 6

ववहारहु मंडणु चायवित्तु ।

तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP सूरसत्तुज्जयं. ८ MBP महा°. ९ MBP कुमुदकुंदव्व. १० M जुवइतिलय सवणिय; P जुवइतिलय सविणियं. ११ MBP गरुयआलापुरं. १२ P रुह्य. १३ M सुरयणारय° १४ MBP सुट्ट. १५ P सुविसुद्ध° but gloss सुविशिष्ट.

15. १ B सुसुहिणा. २ P धरणुज्जयंगओ, but gloss ऋजुशरीरः. ३ BP वायवित्तु, and gloss in P वचनप्रतिपालनम्.

19 a हारिणा मनोज्ञेन. 21 णाएं धरणेन्द्रेण.

15. 6 a वइसिउ वैशिकं वेद्यावृत्ति..

कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति  
 माणहु मंडणु अदीणवयणु  
 कइमंडणु णिवाहियणिबंधु  
 पियपेम्महु मंडणु पणयकोउ  
 किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु  
 सिरिमंडणु पंडिययणु णिरुत्तु  
 पुरिसहु मंडणु परोवयारु  
 उद्धरिय बे वि णमि विणमि भाय  
 अहवा किं होसँइ किर परेण

असि रायहु मंडणु मंतसत्ति ।  
 भवणहु मंडणु वरणारियणु ।  
 गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु ।  
 आरंभहु मंडणु खलविओउ ।  
 णरवइमंडणु पाइकभरणु ।  
 पंडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु ।  
 धरणिंदे पालिउ णिव्वियारु ।  
 को पावइ एयहु तणिय छाय ।  
 परिणवइ दइउ सव्वायरेण ।

15

घत्ता—किं किज्जइ अण्णे दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ ॥

ते कित्तणु भरँहपहुत्तणु पुप्फयंतर्गयगामिउ ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे णमिविणमिरज्जलंभो णाम

अट्टमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ८ ॥

॥ संधि ॥ ८ ॥

४ M सोहइ. ५ MBP होइ. ६ MBP °गइ°.

10 a °णि बंधु काव्यम्; b क म ल बंधु सूर्यः. 18 ते पुण्येन; कि त्त णु कीर्तिर्यशः; पु प्फ यं त ग य गा मि उ आकाशगामि सर्वलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्.

## IX

ता झाइउ गिण्णेहु गियमणर्पसरु परज्जिउ ॥  
पुण्णइ छट्ठइ मासि णाहँ जोउ विसज्जिउ ॥ १ ॥

### I

हेल्लो—परिवितइ जिणेसरो दुक्कियं खवंतो ।  
महिमापारमासिओ सुद्धही महंतो ॥ १ ॥

<p>जिह तेल्लेण दीवु तरु णीरँ आहारु वि जो परह णिमित्तँ उज्झिउ आहाकम्मुद्देसहिं अज्झोवज्झहिं पूईकम्महिं लिंणिणीसणरसँत्तुगारहिं जीववहाइअसंजममीसहिं गणहरगणियहिं छायालीसहिं णीरसु सरसु ण किं पि भणेवउ रूवतेयबलच्चिताचत्तउ</p>	<p>तिह माणुससरीरु आहारँ । 5 सिद्धउ लद्धउ काँल भँवतँ । पुव्वं पच्छा संथुईभासहिं । देवयचरुयहिं वियलियधम्महिं । चोईहमलवित्थारवियारहिं । परंभयवसउच्चाइयगासहिं । 10 वज्जिउ अवरोहिं मि बहुदोसहिं । रसणु रसेँ रँसंतु णिहणेवउ । संजमजत्तामेत्तुँ समत्तउ ।</p>
--	---

MBP give, at the beginning of this Samdhi, the stanza एको दिव्यकथाविचारचत्तरः etc. for which see notes on page 121.

1. १ BP °पसरपरज्जिउ. २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place; throughout the rest of the Samdhi they call it हेला. ३ MBP सुद्धधी. ४ MBP कालि. ५ P भमतँ. ६ B थुइसंभासहिं. ७ M °सत्तुगारहिं. B सत्तुउगारहिं, P सत्तुगारहिं. ८ MP चउदह°. ९ M पयभर°. १० MBP रसे रमतु. ११ MBPT °मेत्तसमत्तउ.

1. 1 झा इउ ध्यात°, परज्जिउ पराजितो निर्जितः. 2 जोउ षण्मासकायोत्सर्ग°. 4 सुद्ध ही शुद्धबुद्धिः. 6 b काल युक्त कालम्. 7 a आहाकम्मुद्देसहिं अधःकर्म नीच कर्म स्वयपाकादिकम्, उद्देशिकं कर्म मुनि-मुद्दिश्य पाककरणम्. 8 a अज्झोवज्झहिं मुनिं दृष्ट्वा अधिश्रयणे अधिकजलस्य तदुलानां वा निक्षेपैः. 9 a णीस निस्वो दरिद्रः, b चोईहमल° चतुर्दशमलविस्तारविकारैर्वर्जितम्, ते च मलाः—नहरोमजन्तुअट्टिकणकुंड-पूयरुहिरमंसचम्माणि । फलफुल्लबीयमूलाछण मला चउदस भवन्ति. 11 a छायालीसहिं षोडश उद्गमदोषा, षोडश उत्पादनदोषाः, दश एषणादोषाः, सयोजनदोष, इगालदोषः, धर्मदोषः, प्रमाणदोषश्चेति षट्त्वारिंश-दोषा. 13 b संजमजत्तामेत्तु संयमयात्रार्थमेव.

सुखु लुखु सउवीरब्भुक्खिउ  
पाणिपत्ति सइं मइं भुंजेवउ

णवकोडीविसुधु सुपरिक्खिउ ।  
चरियाचरणु जगहु दरिसेवउ । 15

घत्ता—जइ हउं अच्छमि अज्जु केम वि ण करमि भोयणु ॥  
तो जिह ए णर भग्गीं तिह भज्जिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

## 2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणां जियक्खो ।  
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ घेत्तूण	जोयं पमोत्तूण ।	
सिद्धत्थणामाउ	तम्हा वणंताउ ।	
विहरेइ परमेट्ठि	जुयमेत्ति गयदिट्ठि ।	5
जीवे <sup>३</sup> ण दुम्मेइ	पेच्छंतु पउ देइ ।	
रमणीयथामेसु	णयरेसु गामेसु ।	
तं विणयणयभरिय	पणमंति णायरिय ।	
अब्भुवरसालीण	जोयंति <sup>५</sup> गामीण ।	
भइयाइ कंपंति	अण्णे पयंपंति ।	10
एसो महीराउ	एसो महादेउ ।	
धणकणयधण्णाइं	एएण दिण्णाइं ।	
मंडलिय महियलइं	काऊण बहुहलइं ।	
एयस्स पडिवत्ति	उवयरह सहस ति ।	
इय भणिवि सहलइं	विविहाइं फलदलइं ।	15

१२ MBP सउवीरें भुक्खिउ; K सउवीरब्भुक्खिउ. १३ M परिक्खिउ. १४ MBP भग्ग.

2. १ MBP तवें. २ MBP जुयमेत्तु. ३ MB जीवं ण दूसेइ; PT जीवं ण दूमेइ: ४ MBP जोयंत. ५ MBP मंडलइं.

14 a सउवीरब्भुक्खिउ काजिकेनाभ्युक्षितम्; b णवकोडीविसुधु मनोवाक्कायैः कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्वि-  
शुद्धम्. 17 तवोवणु तपोवनं मुनिसंघातः.

2. 1 वओ वपुः; तिणा तेन; जियक्खो जितेन्द्रियः. 2 समो कर्मक्षयः. 5 b जुयमेत्ति चतुर्हस्त-  
मात्रे. 10 a भइयाइ भयेन. 15 a सहलइं आर्द्राणि.

भमराहिरामां	णवकुसुमदामां ।	
कुंकुमं चंदणं	भायणं भोयणं ।	
सुराहियं सीलयं	भिंगारवरजलं ।	
सीसेण गहिऊण	पंथम्मि णिहिऊण ।	
णाहस्स ते देंति	बाला ण याणंति ।	20
अण्णे पसत्थां	देवंगवत्थां ।	
कडिसुत्तकेऊरु	मंणिहारु मंजीरु ।	
कंकणं कुंडलं	णं सूरमंडलं ।	
गलियावलेवस्स	उवणेंति देवस्स ।	
अण्णे कुलीणाउ	मज्झम्मि खीणाउ ।	25
लायण्णपुण्णाउ	ढोयंति कण्णाउ ।	
णररहतुरंगां	मायंगंडुंगां ।	
णिसियां पहरणं	उववणं पट्टणं ।	
वाइत्तजुत्तां	चमरायवत्तां ।	
सिसिखंडुरं	चिंधां मंदिरं ।	30
अण्णे समप्पंति	अण्णे पंभासंति ।	
भो मयणमयवाह	भो णाणजलवाह ।	
भो तरुणमिहिराह	भो तवासिरीणाह ।	
भो देवदेवेस	भो परम परमेस ।	
णिण्णग्गवेसेण	णिर्यदेहसोसेण ।	35
णालवसि किं भवसि	णउ हससि णउ रमसि ।	
इय भणिवि अज्जेहिं	चडुयम्मसज्जेहिं ।	

६ MB करिसुत्तकेऊर; P कडिसुत्तकेऊर. ७ MBP मणिहार मजीर. ८ Mp वररह°. ९ MBPT मायंग-  
 तुंगाइ and gloss in T समूहा १० B omits णिसियाइ पहरणं, P adds it in the margin in  
 second hand. ११ M adds after this: जोयंति किंकरं, P adds it in the margin in  
 second hand. १२ MBP add after this: पणयाइ परियणं. १३ MBP ससिखंड°. १४ MBP  
 पहासंति. १५ MBPT °मिहराह. १६ B णिव°. १७ MBP भमसि. १८ M चडुयम्मसज्जेहिं.

27 b °डुंगां वृन्दानि समूहा . 32 म य ण म य वा ह कामसृगस्य व्याध. 28 a त रु ण मि हि रा ह बालसूर्यसमान.  
 37 b चडुयम्मसज्जेहिं चाटुकारसज्जेहिं.

बोल्लाविओ जइ वि  
परणिहियणियविच्चु

पहु चवइ णउ तइ वि ।  
महिवीदु विहरंतु ।

घत्ता—हिंडइ जाम जिणिंदु चरियामग्गि पइइउ ॥  
ता सेयंसणिवेण गयउरि सिविर्णंउं दिइउ ॥ २ ॥

40

3

हेला—पल्लंकासिएण मउलंतणेत्तएणं ।  
रयणिविरामजामए संपसुत्तएणं ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा  
णिसायरो दिवायरो  
महण्णवो सुरंधिओ  
सबाहुजित्तसंगरो  
भेरक्खमेक्ककंधरो  
घुलंतपुच्छपच्छलो  
णियच्छिओ सकंदरो  
इमो सुदंसणोहओ  
णिसंतए पलोइओ  
पहायए महाउणो

भवाणुबद्धधम्मिणा ।  
करीसरो सरोवरो ।  
बलुद्धरो मयाहिओ ।  
रिऊण छेयणंकरो ।  
महामडो धणुद्धरो ।  
विसो विसाणउज्जलो ।  
घरे विसंतु मंदरो ।  
पणट्टुदिट्ठिमोहओ ।  
समाणसे विवेइओ ।  
समासिओ सभाउणो ।

5

10

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहँलु आहासइ ॥  
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१९ BP सुइणउं.

3. १ M बलुद्धुरो. २ MBP भरेक्खमेक्ककंधरो. ३ MPK °पुंछ. ४ MBP °फलु.

3. 3a स सि प्प हा णु ज म्मि णा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा. 5 b ब लु द्ध रो मदोत्कटः; म या हि ओ मृगाधिपः.  
7 a भ र क्ख मे क्क कं ध रो भ र क्ख मे क्क स्कन्धप्रदेशः. 9 b वि सं तु प्रविशन्. 10 a सु दं स णो ह ओ शोभनस्वप्न-  
संघातः. 12 a प हा य ए प्रभाते; म हा उ णो महायुषः. 13 कुरु णा हु सोमप्रभः.

हेला—ससिरविसुहडसीहसरसरहिगोगुणालो ।

जंगममंदरु व्व गइहसियपीलुलीलो ॥ १ ॥

णीलजडाकलावओमालिउ  
एरौवयकैरसंणिहवाहउ  
तावण्णाहिं दिणि णयरि पइड्डउ  
धावमाणजणपयसंमहें  
को वि भणइ अवलोयहि एत्तहि  
को वि भणइ सामिय दय किज्जउ  
को वि भणइ मेरउ घरु आवहि  
चंडु व रिक्ख रिक्ख वियरंतउ  
घरिणिहि घरंपंगणु संपाइउ  
णिग्गयाउ मणि तोसुं वहंतिउ  
मज्जणु मज्जणहरि संजोइउ  
णहाहि णाह लइ तणुउवयरणउं  
बइसहि पट्टि सुसरससमग्गउ  
बोलावियउ ण किं पि वि भासहि

सिहरि व जलहरमालइ कालिउ ।  
णग्गोहु व ललंतपारोहउ ।  
णारीणरहिं णिरंजणु दिट्टउ । 5  
उट्टिउ कलयलु जयजयसहें ।  
हउं पंजलियरु अच्छमि जेतहि ।  
एक्कवार पच्चुत्तरु दिज्जउ ।  
भिच्चमत्ति पहु किं ण विहावहि ।  
जइवइ गेहि गेहि पइसंतउ । 10  
ताउ व भाउ व देउ पलोइउ ।  
एम चवंति ताउ पणवंतिउ ।  
पोत्ति तेलु आसणु वि पढोइउ ।  
चंगउ चेलिउ हेमाहरणउं ।  
भुंजहि भोयणु तुज्जु जि जोगगउ ।  
भुर्वणुबंधु किं अप्पउ सोसहि । 15

घत्ता—पुरि कलयलु णिसुणेवि ससिभासें अहियारिउ ॥

कंचणदंडविहत्थु पुच्छिउ णियदउवारिउ ॥ ४ ॥

4. १ M °सरभूरुहगुणालओ; B सरसरेणे गुणालओ; P सरसरहिणा गुणालओ; T सरहि समुद्र..  
२ MBP ° पीलुलीलओ. ३ MBP अइरावय°. ४ M °करि°. ५ M घरपंगणु संपाइउ, B घरिणिघरपगणु  
संपाइउ; P घर पंगणु संपाइउ. ६ MBP हरिसु. ७ M सरसु सुसमुग्गउ, B सरसु समुग्गउ. ८ M  
सुयणबंधु.

4. 1 °सर हि° समुद्रः; °गो° वृषभः. 3 b का लि उ कलित. क्लृप्तः. 9 b विहा व.हि चित्ते किं न रोच-  
यसि. 15 a सु सर स स म ग्ग उ षड्सयुक्त भोजनं समग्रं च. 17 ससिभासें सोमप्रभेण. 19 कंचणदंड-  
विहत्थु काञ्चनदण्डविशिष्टकरः.

5

हेला—ता पडिहारण भणियं भवावहारो ।

जो लच्छीकडक्खविक्खेवे वि णिव्वियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ  
जेण पयासियाइं मइगम्मइं  
भरहहु तुम्हहुं मेइणि दिण्णी  
सो आयउ तेलोक्कपियामहु  
सहुं सेयंसकुमारै णिग्गउ  
संमुहुं एंतु णिहालिउ जिणवरु  
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु  
सामि सणेहभरेण भरेप्पिणु  
सोमप्पहेण पलद्धपसंसे  
मुहुं जोइयउ णेत्तसयवंत्तहिं

जो तियसेसरेण सइं णहवियउ ।  
बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं ।  
जेण णवल्लवित्ति पडिवण्णी । 5  
तं णिसुणिवि उट्टिउ सोमप्पहु ।  
ताम पलंबपाणि णं दिग्गउ ।  
णं वसुहंगणाए पसरिउ करु ।  
णं जगभवनखंभु भयंमयमहु ।  
कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु । 10  
देवि पयाहिण तहु सेयंसे ।  
हरिसंसुयओसाकणसित्तिहिं ।

घत्ता—अइपसण्णमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥

पुव्वभवंतरणेहु जणदिट्ठिए जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवलोइऊण कुंर्यरेण लोयसारो ।

सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

पउद्धो असेसो  
मुणीणं पहाणं

सवासो दसेसो ।  
वराहारदाणं ।

5. १ MBP भणियं. २ MBP ० विक्खेवणिव्वियारो. ३ MBP पसरियकरु. ४ MBP भयमयवहु.  
५ MB सणेहु भरेण. ६ BP अइपसण्णु. ७ P जणदिट्ठे.

6. १ MBP कुमरेण. २ M has before this line सोमराई छंद; BPGK have सोमराई;  
MBPK पबुद्धो. ३ MBP सदेसो.

5 3 a सुरायलि मेरौ. 4 a मइगम्मइं मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 b भयमयमहु  
भयानां मदानां च विनाशकः. 12 हरिसंसुयओसाकणसित्तिहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणसित्तैः.

6. 3 a पउद्धो प्रबुद्धः.



भवे जं विइण्णं	कयाणंतपुण्णं ।	5
समाहूयसक्कं	मणे तं पि थक्कं ।	
पुणो तेण उच्चं	अहो हो णिरुत्तं ।	
हुयं मज्झ णाणं	पणायं पुराणं ।	
असूई अराई	अमाई अणाई ।	
अमाणो अमोहो	अकोहो अलोहो ।	10
अछेओ अभेओ	अणेओ विं णेओ ।	
विमुक्कंधयारो	अणंगावहारो ।	
पवित्तो महंतो	अणंतो रुहंतो ।	
असंगो अभंगो	जहाजायलिंगो ।	
बुहाणं विहाओ	सुहाणं उवाओ ।	15
अहाणं विणासो	महाणं णिवासो ।	
अभावो असावो	इमो-देवदेवो ।	
कयत्थो विवत्थो	समत्थो पसत्थो ।	
सया वंदणिज्जो	ईमो पुज्जणिज्जो ।	
परो मोक्खगामी	इमो मज्झ सामी ।	20
सुराहिंदपूओ	इमो पत्तभूओ ।	

घत्ता—जगगुरु गुरुयणपुज्ज मोणव्वइ दिव्वासउ ॥

एहु आहारणिमित्तु भर्मइ समग्गपयासउ ॥ ६ ॥

४ M अजाई अमाई and adds: अणाई; B reads अजाई अमाई. ५ P वि एओ and gloss एकः.  
६ M अताओ अभाओ and adds: अराओ अंसोओ, P अताओ अभाओ अराओ असाओ. ७ M सया.  
८ MBP पहु. ९ B भणइ.

8 a प णायं प्रज्ञातम्; पुराणं वृत्तान्तम्. 9 a असूई अस्तवकः; b अणाई आर्गो दोषस्तेन रहितः. 11 b अणेओ वि णेओ गुणपर्यायापेक्षयानेकोऽपि द्रव्यपर्यायापेक्षयैकः. 14 b जहाजायलिंगो नम्रः. 15 a विहाओ विधाता. 16 a अहाणं पापानाम्; b महाणं तेजसाम्. 17 a अभावो क्रोधादिभावराहितः; असाओ सातरहितः. 21 b पत्तभूओ पात्रभूतः. 22 दिव्वासउ शुद्धहृदयः दिशावल्लधारको वा. 23 एहु एषः; समग्गपयासउ स्वमार्गो यतिमार्गस्तस्य प्रकाशकः.

7

हेला—अंबरमणिपसंडिदाणाइं देति लोया ।

ताइं इमे ण लेंति परिमुक्ककामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामें गंत्यउ  
मंचयसेजायलइं सभवणइं  
गाइ देहि देहि त्ति पघोसइ  
वित्तु लेइ जो इंदिय पुज्जइ  
बंभण तावस सँवसणभग्गा  
दुद्धरजीहोवत्थहिं दंडिय  
दुक्कियभरपरिर्वडुणरीणा  
जे लेंता ते विड विड देंता  
पत्थरणाव ण पत्थरु तारइ  
जासु अबंभारंभंपरिग्गहु  
धम्माभासु पाउ जो भावइ  
कत्थइ मिच्छामग्गि पइट्टुउ  
सीलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ  
सदहाणु णव पंचहुं सत्तहुं  
ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ  
मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ  
दूरुद्धुयसदण्णकंदण्णहिं  
भूसिउ संचियसासयसोक्खहिं  
उत्तमु पत्तु एउ पणाविज्जइ

भूमि लेइ जो लोहें घंत्यउ ।  
गेण्हइ जो माणइ रइरमणइं ।  
जो घण्ण अप्पाणउं पोसइ । 5  
मंसुं खाइ जो पुट्ठि समज्जइ ।  
पावयम्म संसारहु लगा ।  
अप्पउ पँरु वि हणिवि पासंडिय ।  
सूईमुहि णिवडंति अयाणा ।  
णँउ जाणहुं के गुणहिं महंता । 10  
अवस कुपत्तु भवण्णवि मारइ ।  
सरइ कया वि ण इंदियणिग्गहु ।  
अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।  
कुच्छियपत्त रिसीसहिं सिट्ठुंउ ।  
हवइ अवत्तु सइं जि मइं बुज्झिउ । 15  
करइ पयाहुं जिणेसपवुत्तहुं ।  
तं जँघण्णु मइं पत्तु णिहालिउ ।  
सम्महंसणि कहिं मि ण संकिउ ।  
णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं ।  
सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं । 20  
एयहु पँसुयभोयणु दिज्जइ ।

7. १ MBP घत्थउ. २ MB गुत्थउ; P गत्थउ. ३ P पेय खाइ. ४ MBT अवसण°. ५ MBP परु हणेवि. ६ M °परियट्ठण°; P °परिवडुण° but gloss परिकर्षण°. ७ B णं जाणहु. ८ MBP किं. ९ MB °रंसु परिग्गहु. १० MP दिट्ठुउ. ११ MBP जहण्णु. १२ MBP दूरुद्धुय. १३ MB फासुय.

7. 1 °प सं डि सुवर्णम्. 3 b घत्थउ ग्रस्तः. 6 a पुज्जइ पोषयति. 7 a सवसण भग्गा स्वव्यसन-भमाः. 10 a विडे त्या दि— विटाः ये ददति तेऽपि विटाः. 15 b अवत्तु अपात्रम्; 16 a णव तत्त्वानि; पंचहुं पञ्चास्तिकायानाम्; सत्तहुं सप्तानां पदार्थानाम्. b पयाहुं पदार्थानाम्. 19 a दूरुद्धुय° दूरोद्धूत°.

घत्ता—कुच्छियवत्ति कुभोउ दिण्णु अवत्तइ णासइ ॥

तहिं पत्तिहिं फलु तिविहु इय सुंदरु आहासइ ॥ ७ ॥

## 8

हेला—मज्झिमु मज्झिमेण अहमो अहमेण णेओ ।

उत्तमु उत्तमेण दाणेण होइ भोओ ॥ १ ॥

णिल्लोहत्ते चापं भत्तिइ  
एहिं गुणेहिं जुत्तु दायारउ  
मउलियकरयल्लु अइअवमत्तउ  
गुणवंतउ परलोयासत्तउ  
ठाहं भणिवि पणवियसिरु भासइ  
करइ चाडु संतहुं धण्णउं जणु  
मणवयतणुसुद्धिइ सुद्धासणु  
भेसहु सत्थु अभयदाणे सहुं  
बहिरंधलयहं मूयहं लल्लहं  
सव्वभूयहियकार्णो गणो  
परमारा पाविट्टु सुएप्पिणु  
देइ ण जो घरत्थु सो केहउ  
णिर्यंदिभउं णियपोट्टु जि पोसइ

खमविण्णाणे सुद्धइ भत्तिइ ।  
मज्झण्णइ अवलोयइ दारउ ।  
अच्छइ तिविहपत्तगयचित्तउ । 5  
सो पडिगाहइ प्रंगणपत्तउ ।  
उच्चठाणि गउरविइ णिवेसइ ।  
चरणधुवणु अच्चणु पुणु पणमणु ।  
देइ भरंतु जिणिंदहु सासणु ।  
देइ सजीविउ चलु माण्णवि लहु । 10  
काणकुंटमंटहं वाहिल्लहं ।  
असणु वसणु दीणहं कारुणो ।  
णियदव्वाणुसारु सुर्येरेप्पिणु ।  
घरयारउ चिडउल्लउ जेहउ ।  
सुवउ ण जाणहुं कहिं जायसइ । 15

घत्ता—माणसु जं णिद्धम्मउ तहिं उप्पेक्ख रइज्जइ ॥

दुत्थियम्मि अणुकंप गुणवंतउ पणाविज्जइ ॥ ८ ॥

१४ MB कुच्छियपत्ति. १५ MBP तिहिं.

8. १ M णओ, BP णओ. २ MBP खमविण्णाणइ सुद्धइ भत्तिइ. ३ MBP add after this सीलवत्तु जिणपेसणयारउ सारासारसरुववियारउ. ४ MBP अवलोयइ दारउ. ५ T अपमत्तउ; ६ MP पंगणु पत्तउ; B पंगणे पत्तउ. ७ MBP ठाहु. ८ MBP °कारणगणो. ९ MP सुमरोप्पिणु. १० MBP णिय-दिभइ. ११ MBP णिद्धम्मु. १२ MBPK दुत्थियम्मि.

22 कुच्छिये त्या दि—कुपात्रे दत्तं कुभोगं ददाति, अपात्रे दत्तं नश्यति.

8. 1 णेओ ज्ञेयः. 6 a °अवमत्तउ निरहंकार'. 10 b भरंतु स्मरन्. 12 a लल्लहं अस्फुट-वाचाम्; b मटहं निरुधमिनः. 13 a गणो परिज्ञानेन. 14 a परमारा परमारकान्. 15 b घरयारउ गृहकारकः; चिडउल्लउ चटक'.

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं ।

दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण	जलभरियदलपिहियभिंजारहत्थेण ।
परिदिण्णधाराजलुध्दुअतावेण	सद्धम्मसँद्धावसुप्पण्णभावेण ।
भवभरणसंभरियमुणिदाणँयम्मेण	वरचरमदेहेण विच्छिण्णजम्मेण ।
पियजंपणालोयणुब्भूयणेहेण	धरणीसतोसेण गुणरयणगेहेण ।
इसिकहियसुँयसूइसंभिण्णसोत्तेण	चंदक्कचारित्तचँचइयगँत्तेण ।
कुरुजंगलार्वाणिवइलहुयभाएण	मउमहुरणाएण सेयंसराएण ।
आओ गुरू सो जि णंतेण सीसेण	ठाभणिउ जिणु णमिउ पणवंतसीसेण ।
ता सरइ हिययम्मि रइकुमुइणीजूरु	तूसविय जगणलिणु हयमलिणु रिसिसूरु 10
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु	तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु	लयविरमु सुहुँ परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।

घत्ता—इय चिंतिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥

चिरु सेयंसवसेण सेयंसँ पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एवं कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।

केण भवंतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगब्भाणिउं

कुरुणाहँ पल्हात्थिउ पाणिउं ।

9. १ BP °सन्भावसुपसण्ण°, २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दाणधम्मेण, ४ MBP °सुइसूइ°. ५ MB °गोत्तेण but gloss in M भूषितं गात्रम्. ६ MBP °वणिवणिव°. ७ M सुइपरमु.

9. ३ a °णियत्थेण नेपथ्येन. 5 a भवभरण° भवस्मरणम्. 6 b धरणीस° राजानः. 7 a °सुयसूइ° श्रुतज्ञानसूचिः. 9 a णंतेण नम्मेण. 10 a °जूरु संकोचकः. 11 a ताइ तथा तन्वा; b खं ती इ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति. 12 b लयविरमु अविनश्वरम्. 14 सेयंसवसेण पुण्यविशेषवशेन; सेयंसँ श्रेयसा; पर मोक्षः.

10. 2 अ मो हो सफलं परिपूर्णम्.

जसससियरधवलियकुरुवंसें	पय पक्खालिय सिरिसेयंसें ।	
वंदिउ पायतोउ सुहगारउ	जम्मजरामरणावइहारउ ।	5
इंदचंदणाइंदपियारउ	उच्चासणि संणिहिउ भडारउ ।	
कुसधारहिं उच्छलियतुसारहिं	चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं ।	
फुल्लहिं फुल्लुधुयइंकाराह	अक्खयाहिं बहुगंधपयारहिं ।	
दीवयचरुयहिं धूवंगारहिं	करमरमाहुलिंगमालूरहिं ।	
अंबयहलहिं जंबुजंबीरहिं	पण्णहिं पूयप्फलकप्पूरहिं ।	10
णेउरणिहच्चुयवम्महणियलउ	पुज्जिउ परमेट्टिहि पयजुयलउ ।	
पुणु पणिवाउ करोप्पिणु भावें	जो छंडिउ णं वम्महचावें ।	
जइवरतवसंदरिसियमंगें	जो पुणु धणुहि ण णिहिउ अणंगें ।	
सो उच्छुरसु णिवारियदोसहु	णं सँम्महुं णिउ सुतवहुयासहु ।	
जुवरापं घडेण करि ढोइउ	वारवार जिणणाहें जोइउ ।	15

घत्ता—देहालइ मणकुंडे रसु पिज्जंतउ भाणियउ ॥

मयणसरासणसारु झार्णजलणि णं हुणियउ ॥ १० ॥

## II

हेला—ता दुंदुहिरवेण भरियं दिसावसाणं ।

भणियं सुरवेरहिं भो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवण्णमाणिक्कविसिद्धी

घरंप्रंगणि वसुहार वरिद्धी ।

णं दीसइ ससिरविबिबच्छिहि

कंठमट्ट कंठिय णहलच्छिहि ।

10. १ P पाय. २ M reads after this line चंदणकुंकुमेहिं घणसारहिं, पयसमलियइं तेहिं कुमारहिं, B also reads चंदणकुंकुमेहिं घणसारहिं, पयसमलियइं तेहिं कुमारहिं, P reads चंदणकुंकुमेण घणसारहिं, चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं, फुल्लहिं फुल्लधुवइंकाराहिं, पय समलियइं तेहिं कुमारहिं. ३ MBT फुल्लधुव°; P फुल्लधुव°. ४ MBP अक्खएहिं. ५ P चरुवहिं दीवय°. ६ MP छंडिउ ण वम्महु, B खंडिउ णं वम्महु. ७ MB संमुहं; P संमुहु. ७ P ज्ञाणजले but gloss ध्यानामौ.

11. १ M भाणियं. २ MBP घरपगणि.

5 a पाय तोउ पादजलम्. 7 a कु स धा र हिं जलधाराभिः. 8 a फु ल्लु ड्ढु य भ्रमरा. 10 b पण्णहिं पत्रैः. 12 a °णि ह° व्याजेन. 12 b जो रसः. 13 a ज इ व रे त्यादि—यतिवरतपसा संदर्शितो भङ्गो यस्य तेन. 14 b स म्म हु णि उ उपशमं नीतः.

मोहैबद्धणवपेम्महिरी विव  
 रयणसमुज्जलवरगयपंति व  
 सेयंसहु धणएण णिउंजिय  
 पूरियसंवच्छरउववौसै  
 तहु दिवसहु अत्थेण समायउ  
 घरु जायवि भरहै अहिणंदिउ  
 पइं मुएवि को गुरु संमाणइ  
 पइं मुएवि को चिंतहुं सकइ  
 पइं मुएवि दिसिपसरियजसैयरु  
 जय सेयंसदेव पभणंतहिं

सग्गसरोयहु णालसिरी विव । 5  
 दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।  
 एक्कहिं उडुमाला इव पुंजिय ।  
 अक्खयदाणु भाणिउं परमेसै ।  
 अक्खयतइय णाउं संजायउ ।  
 पढमु दाणतित्थंकरु वंदिउ । 10  
 पत्तविसेसदाणविहि जाणइ ।  
 परमप्पउ कहु मंदिरि थक्कइ ।  
 अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।  
 संथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियालि धम्मरहासु एयइं तोसियसक्कइं ॥

15

जिणसेयंसकयाइं वर्यदाणइं वरचक्कइं ॥ ११ ॥

## 12

हेला—धम्ममहारहो विलंबियदयावडाओ ।

एयहिं बिहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु  
 तिहिं णाणिहिं सुद्धे परिणामे  
 अड्डाइज्जहिं दीवहिं जं जं  
 उज्जुयवंकहिययमुणियत्थउ  
 पंचवीसवयमायउ भावइ

एत्तहि महि विहरंतु जिणेसरु ।  
 अचलचित्तु मणपज्जवणामे ।  
 माणसु चिंतइ जाणइ तं तं । 5  
 देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।  
 तिहिं गुत्तिहिं अप्पाणउं गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्ध°, ४ M adds after this line:—अहियं पक्ख तिण्ण सविसेसै । किंचूणे दिण  
 कहिय जिणेसै । भोयणवित्ती लहीय तमणासै । दाणतित्थु घोसिउ देवीसै. ५ MBP पढम°. ६ MBP  
 पत्ताविसेसु. ७ MB °जयसरु. ८ MBP तवदाणइं.

12. १ M माणस; BP माणसु.

11. 5 a मो हे त्या दि—मोहेन बद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ हीरिव लजेव. 9 a अत्थेण समायउ  
 अन्वर्थकम्; b णाउं नाम. 15 धम्मरहासु धर्मरथस्य.

12. 1 विलंबियदयावडाओ अवलम्बदयापताकः. 2 णिहयंगयारिराओ निहताङ्गजारिराजः,  
 7 a पंचवीसेत्यादि—एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावनाः पञ्चविंशतिव्रतमातरः.

इरियादाणु किं पि णिव्वेवणु  
रोसु लोहु भउ हासु पणासइ  
मिउ जोग्गउ अणुणायउ गेण्हइ  
णारीकहदंसणसंसग्गहु  
भुंजइ कहिं मि सुणिव्वियडिल्लउ

करइ कहिं मि कयसुकयालोयणु ।  
संगं विवज्जइ सुत्तु जि भासइ ।  
भात्ति पाणि संतोसु जि मण्णइ । 10  
करइ णिवित्ति पुव्वरइरंगहु ।  
वंभचेरु थिरु धरइ गुणिल्लउ ।

यत्ता—इंदियखलहं मिलंतु परमजोइ मेलौवइ ॥

खुभंतउ मणडिंभु रिसि णाणं खेलावइ ॥ १२ ॥

## 13

हेला—हो हे चित्तडिंभ मा रमसु णारिरूवे ।

रमिऊणं दड त्ति पडिहीसि मोहकूवे ॥ १ ॥

जीर्याजीयवत्थुभेयालइ  
संजमवायवुड्डजमसिहिसिहु  
दिहिखमझाणजोयकयसंगहु  
दंसण णाण चरिय तव वीरिय  
तेहिं भडारउ अणुदिणु वड्डइ  
अणंसण वुत्तिसंख ओमोयरु  
इय बाहिरतर्तु चरइ सुदारुणु  
वेज्जावच्चि विणइ सज्झायइ  
अब्भंतरतवि अप्पउ जोर्यइ

करणपोसणत्थि विरसालइ ।  
णिद्धंधंसु णित्तामसु णिप्पिहु ।  
वीसदुसंखपरीसहभरसहु । 5  
आयार वि जे पंच समीरिय ।  
हियर्यहु तिण्णि वि सल्लइं कड्डइ ।  
रसपरिचाउ कालजोयायरु ।  
अंतरंगसुद्धिहि सो कारणु ।  
तणुविसग्गि पच्छित्तणिओयइ । 10  
धम्मझाणु चउविहु णिज्झायइ ।

२ MBP संगु. ३ B मेल्लवइ. ४ BP खेलावइ.

13. १ MBB भमिऊणं. २ MBP जीवाजीव°. ३ MBP °जमसिहिं सहं. ४ P णिद्धंधंसु, T णिद्धंधंसु and gloss निष्परिग्रहः. ५ P हियर्यहि. ६ P अणसणु. ७ MBP वित्तिसंख ओमोयरु. ८ MP तव. ९ MBP जोवइ.

9 b सुत्तु जि भासइ आगममेवान्तर्जल्पेन परामृशति. 10 a मिउ मितं परिमितम्; अणुणायउ अनुज्ञातम्. 12 a सुणिव्वियडिल्लउ सुष्ठु निर्विकृताहारम्. 13 मेल्लवइ ध्याने मेलयति.

13. 3 a °भेयालइ °भेदाश्रये; b करण° पञ्चकुलमिन्द्रियाणि च; विरसालइ कुलपक्षे विशिष्टो रसो विरसः, नारीपक्षे विरामविरसता. 4 a संजमेत्यादि-सथमवातेन वृद्धा वृद्धिं नीता यमशिखिशिखा व्रताग्नि-ज्वाला येन; b णिद्धंधंसु निष्परीषहः. 8 b कालजोयायरु त्रिकालयोगादरः. 10 b तणुविसग्गि कार्योत्सर्गं,

आपाविचउ गामणित्तांयउ  
अवर विवायविचउ वित्यारइ

पुणु अवायविचयं पि महत्त्यउ ।  
धिर संठाणविचउ अवहारइ ।

घत्ता—इय विहरंतु घरणि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥

वरिसलहासं गाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तां दिहुं लवंगलवलीलयाहरालं ।

अलियालं पियालमाळूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडंगणेवैत्थहिं छइयउ  
णिच्चौसोयउ कंत्रणवंतउ  
रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ  
सुरभवणु व रंभाइ पसाहिउ  
सुइवयणु व चंगउ णिच्चप्फलु  
णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ  
रमणिणिडालु व तिलयालंकिउ  
तालं तूर व सज्जे गेउ व

पियमाणुसु व सरसकंटइयउ ।  
बंधुपुत्तजविहिं महंतउ ।  
रक्खसपुर व पलासणिउत्तउ । 5  
उज्जाउ व सुयत्तत्थहिं सोहिउ ।  
संगासु व वणवियसियउप्पलु ।  
धणजुयलु व चंद्रणिण पियल्लउ ।  
वहुवाहु व करवंदहिं संकिउ ।  
महं सोहइ णिवइणिकेउ व । 10

१० B अवायविरयं.

14. १ B तो. २ M विडंगणे क्त्यहिं; B विडंगणेवत्तहि. ३ MBP 'नाजुलु. ४ P सलु. ५ MB णिचासोयं. ६ P समुण्णयं. ७ MBP सुयत्तत्थं. ८ MP रमणिणिडालु. ९ P महं.

12 a आ पा वि च उ आद्याया द्वादशाङ्गायामस्य विचयस्तदर्शनां चेतसि स्वहयपरिभाषणम्; नान गि लो य उ शब्दोच्चारणरहितम्; b अ वा य वि च यं मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यः कथं जीवन्त्यायः त्यादिति चिन्तनमवायविचयः; महत्त्यउ संवरनिर्जराक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम्. 13 a वि वा य वि च उ कर्मविभाषणपरिचिन्तनम्; b सं ठा ण वि च उ लोकसंस्थानपरिचिन्तनम्. 14 घ र णि श्रराधे.

14. 2 अ लि या लं व्रमरयुक्तम्. 3 a वि डं ग णे व त्थ हिं वनपदे, विडङ्गइया एव नेपथ्यं आभरणानि तैः; प्रियमनुष्यपदे, विटानां कामुकानामङ्गनेपथ्यैराभरणैर्नेखादित्रणैर्वा. 6 b सु य त्थ हिं कुकसूहैराकर्णित-शास्त्रैश्च, अयत्र, श्रुतानि शास्त्राणि यैद्व्यत्रैस्तैः. 7 b व ण वियसियउप्पलु जले विचयितं पद्म, अन्यत्र त्रणे विकासितमूर्ध्वमुच्छासितं पलं मांसं यत्र. 9 b व हु वा हु सहस्रवाहुः; करवंदं हस्तवन्देन करवंदीवृक्षैर्वा; सं कि उ संकीर्णं सेवितम्. 10 a स ज्जे सर्जरसवृक्षेण षड्जेन च; b महं बलत्काररपेन.



णायवेल्लिरुद्धउ पायालु व  
अवसहु व कइवंदे लुक्कउ  
महिमाणिणिमुंडुं व महुलित्तउ

रत्तयंददाविरउ वियालु व ।  
असि व सुणीरेणेय विमुक्कउ ।  
सरयणभमियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामोयमिसेण जं संमुहंउं पर्वच्चइ ॥

णाणापक्खिसरेहिं पहुहि थोत्तु णं सुच्चइ ॥ १४ ॥

15

## 15

हेला—तहिं णंदणवणम्मि णग्गोहरुक्खमूले ।

आसीणो सिलायले णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकणियारकुसुमरयवण्णउ  
णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ  
णैट्ठु अजिण्णणासु णउ चंगउ  
कामु देहघट्टेणु रीणत्तणु  
तं सिवसारु किं पि भाविज्जइ  
सोवंगाहु वीरिउ सुहुमत्तणु  
अर्गुरयलहुयउ अब्वाबाहउ  
एम सामि संभावियमग्गउ  
तहिं दहपयडिहिं मुक्कउ जावहिं  
लग्गउ सुक्कझाणि पहिलारइ  
इसिणा संठिण्ण सविहत्तउ

सुंयरइ पहु पलियंकणिसण्णउ ।  
सोक्खायारु दुक्खु मइं दिट्ठउ ।  
आहरणें भारिज्जइ अंगउ ।  
गेयमिसेण रय्यइ मूढउ जणु ।  
जेण ण जीउ गन्धि उप्पज्जइ ।  
सहुं समत्ते णाणु सदंसणु ।  
झायइ वसुविहु सिद्धगुणोहउ ।  
अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ ।  
खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं ।  
भेयवंति ससुए सवियारइ ।  
अणियंदिहि छत्तीस जि जित्तउ ।

5

10

१ MBP कइवंदहिं. १० MBP °मुह इव. ११ M समुहउ. १२ B परच्चइ.

15. १ MP सुमरइ. २ M णहु व जिण्ण°. B णहु अजिण्ण°. ३ MBP °घट्टण°. ४ MBP रुवइ.  
५ P सोवग्गहु. ६ MBP अगुरुग°. ७ MP अणियदिहि.

13 b °भुयंगहिं सपैविंटेश्च.

15. 4 b सोक्खायारु सौख्याकारम्. 2 a णहु अजिण्णणासु नाट्यं अजीर्णस्य नाशकम्. 7 a सिवसारु सौख्यसारम्. 9 b वसुविहु सिद्धगुणो हउ अष्टविधः सिद्धगुणसमूहः—अवगाहः, वीर्यम्, सूक्ष्मत्वम्, समत्वम्, ज्ञानम्, दर्शनम्, अगुरुलघुत्वम्, अव्याबाधः इति. 10 a संभावियमग्गउ सम्यक्परिभाषितमौक्षप्राप्त्युपायः. 11 a दहपयडिहिं अनन्तानुबधित्तुष्कादिदशप्रकृतिभिः. 12 b भेयवंति वितर्कविचारलक्षणभेदयुक्ते; ससुए श्रुतज्ञानबलेन.

सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु  
पुणु जायउ उवसंतकसायउ  
खीणकसायचरिउ पडिवणुणउं  
तं सवियक्कु एक्कु सँवियारउ

तेण जि झाणें लोहु हणेप्पिणु ।  
कययहलेण जलु व मुणिरायउ । 15  
बीयउ सुक्कझाणु अवइणुणउं ।  
सोलहपयइरयक्खयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्टिपर्इहिं पहयहिं णाणसरूवउ ॥

परमप्पयहु सहाउ अमणु अणिदिउ हूवउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठं जिणेण तिजगं पि एक्कखंधं ।

तिमिरुज्जोयवज्जियं गयणममियरंधं<sup>२</sup> ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणें  
सुहुमइं दूरंतरियइं दब्बइं  
भाणु व भूरिकिरणसंताणें  
तहिं अवसरि जिण्णणाहभएण व  
असहंताइं व गव्वु अणिदहं  
सुरतरु साहाकर णच्चंति व  
संजायहिं दसादिसिवहपूरहिं  
कण्णवडिउ णउ काइं वि सुम्मइ  
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय  
संखड्डुणीहिं णाय संखोहिय

एक्कें भावाभावपमाणें ।  
पेक्खइ जाणइ सहसा सव्वइं ।  
सोहइ केवलि केवलणाणें । 5  
वीस तिण्णिण अवरइं भणियइं णव ।  
आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं ।  
कुसुमइं संतोसेण मुयंति व ।  
कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं ।  
जोइसवासहिं विणिहयदुम्मइ । 10  
वंतरेहिं पडुपडह समाहय ।  
अण्णें अण्ण देव संबोहिय ।

८ P छंडिवि. ९ MBP °चडिउ. १० MBP अवियारउ.

16. १ MBP तिजयं. २ MBP add after this: फग्गुणमासि किण्हएयारसि, उत्तराढरिक्खि ( P उत्तरसाढि रिक्खि ) जइ जाणसि । तहिं उप्पणु णाणु परमेट्टिहि, लोयालोयपयासणसोट्टिहि. ३ MBP जाणइ पेच्छइ. ४ MB जिणु णाह°. ५ MB गव्व. ६ MB सइं जायहिं. P सहजायहिं. ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत°. ८ MBP वित्तरेहिं. ९ MBP अण्णहिं.

15 b क य य ह ले ण कतकफलेन; मु णि रा य उ मुनिराजः. 17 a स वि य कु सवितर्कम्; b सो ल हे त्या दि- षोडशप्रकृतिरजःक्षयकारकम्.

16. 2 अ म्पि य रं धं अलोकाकाशम्. 5 a क मे ति—क्रमेणार्थसाधनान्द्रियाणि तैः प्रतिस्खलन् युग- पदशेषार्थपरिच्छित्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन. 6 b वी से त्या दि—द्वान्त्रिंशदिन्द्रा इत्यर्थः.

घत्ता—उग्गइ णाणससंकि अंमियगुणेहिं पउंजिउ ॥

बहुविहतूरवेण जगसमुहु णं गज्जिउ ॥ १६ ॥

## 17

हेला—ता सक्केण चिंतिओ पीणियालिर्विंदो ।

संपत्तो जवेण एरावओ गइंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरितुसारप्पहो  
गलियकरडयलमयकसणगंडत्थलो  
कामचिंतागई कामरूवी चलो  
कंठकंदलपएसम्मि परिवट्टुलो  
तंबताल्लुमुहो चारुतुच्छोयरो  
दीहयरमेहणो दीहउट्टासओ  
सवणपल्लवपवणपडियमहुलिहउलो  
चाववंसो महारावदुंदुहिसरो  
मुक्कसिक्कारकणासित्तसुरमेलओ  
धित्तिसिंदूरधूलीरयालोहिओ  
लक्खजोयणमहावड्ढिमावाड्ढिओ  
झत्ति कल्लाणपयई समुद्दाइओ

अद्धयंदाहविद्दुमविहाणिहणहो ।  
अमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्थलो ।  
पवलपडिवक्खबलदलणदुम्महबलो । 5  
दसणजुयलेहिं णयणेहिं महुपिंगलो ।  
दीहैरकरंगुलि सँरो व्व वरपुक्खरो ।  
दीहयरवालही दीहणीसासओ ।  
चलणपडिवल्लणखलखलियपयसंखलो ।  
घुलियघंटाट्टुणी तसियदिसकुंजरो । 10  
लक्खणसुवँजणणिरंजणगुणालओ ।  
कक्खणक्खत्तगेज्जावलीसोहिओ ।  
दंसियारेहिं वीरेहिं परियड्ढिओ ।  
जत्थ संकंदणो तत्थ संप्राइओ ।

घत्ता—मयणिज्झरण झरंतु चमरहंसकुलसुंदरु ॥

15

णं मायंगामिसेण आयउ वीयउ मंदरु ॥ १७ ॥

१० MBP अमय°.

17. १ P अद्धइंदाह°. २ P °करडयलकसण°, ३ MB दीहरंगुलि°. ४ MBP सरो व्व वरपुक्खरो,  
५ MBPT °मेहुणो. ६ M सवणपवणाहयपडियमहुलिहउलो; B सवणपडिवयणहयपडिय°; P सवणपवणाहय-  
पाडियमहु°. ७ B °पडिचलणखलिय°. ८ M °दिसिकुजरो. ९ MP सुवँजण°; B °सुवँजण°. १० MBP  
संपाइओ.

13 अ मिय गु णे हिं अमृतगुणैरनन्तगुणैश्च.

17. 2 जवेण वेगेन. 3 b विद्दुमविहाणिहणहो विद्दुमप्रभासदृशनख°. 4 b °संकास° °सदृशः.  
7 b °पुक्खर° शुष्ठाग्रम्. 8 a °मेहणो शिश्रम्; °उट्टासओ ओट्टाश्रयाश्विबुकम्; b °वालही पुच्छम्. 14 b  
संकंदणो इन्द्रः; संप्राइओ संप्राप्तः.

18

हेला—बत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसंतो ।

वयणविवरविणिग्यर्यद्वदंतवंतो ॥ १ ॥

दंति दंति सरु सरि सरि पोमिणि  
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइं  
णालिणि णालिणि तेत्तियइं जि पत्तइं  
पत्ति पत्ति एक्केकी अच्छर  
तं पेच्छवि सुच्छायउ सेंधुरु  
इंदंसमिंदसमाण जि साहिय  
परिसदेव देवेसकुमारा  
चलिय अणीयतियससेणा इव  
खिन्भिससुर पाडहिय पियारा  
अवर पइणय पउर पयाणिह  
जक्ख रक्ख गंधव्व महोरय  
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि  
दिक्कुमार तवणीयकुमार वि  
आइय आंवेतहं सविमाणहं

पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।  
तीस दोणिण छडयणरवरम्मइं ।  
णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइं । 5  
णच्चइ हावभावरसकोच्छैर ।  
सच्छरु सामरु चडिउ पुरंदरु ।  
तायतिस किर मंति पुरोहिय ।  
आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।  
लोयवाल दुगंतणिवा इव । 10  
अभिओय वि चल्लिय कम्मारा ।  
रिक्ख मियंरु सूर तारा गह ।  
किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।  
अग्गिवाउतडिथणियकुमार वि ।  
णायकुमार वि असुरकुमार वि । 15  
पेलावेल्लि जाय णहि जाणहं ।

घत्ता—संदाणियउ गएहिं हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥

ससि करडयलणिहट्टु मयंविक्खिल्लें लित्तउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP °द्वदंतो. २ MB छडयणरविं रम्मइं. ३ MB °कुच्छर. ४ MBP सिंधुरु. ५ MB इंदमहिंदसमाण. ६ MBP °सेणावइ. ७ MB णिवावइ; P णिवासइं. ८ MBP मयंक. ९ MB आवंते; P आवंतहं and gloss आगच्छताम्. १० K °विक्खिल्लें.

18. ३ b °गो मि णि लक्ष्मीः. ४ b छडयण° षट्चरणो भ्रमरः. ६ b °को च्छर दक्षा मनोज्ञा वा. ८ a इंदसम इन्द्रसमाः; इंदसमाण इन्द्रस्य सामानिकाः. ९ b आदरक्ख आत्मरक्षकाः. १४ a उवहिकुमारा; उदधिकुमाराः. b थणियकुमारा मेघकुमाराः. १६ a पेलावेल्लि ठेलाठेलीति देशी; b जाणहं यानानाम्. १७ संदाणियउ संघट्टितः.

## 19

हेला—अज्जि वि सो सुहाइ तेण य कालियंगो ।

जिणजत्ताहलेण मलिणो वि को ण तुंगो ॥ १ ॥

को वि भणइ मृगु किं पहि ढोयहि  
को वि भणइ भो हत्थि म चोयहि  
को वि भणइ लइ अच्छमि लग्गउ  
को वि भणइ किं मूसउ चालहि  
को वि भणइ मा वाहहि विसहरु  
को वि भणइ भो सणियउ चल्लहि  
को वि भणइ संकडि किं पइसहि  
को वि भणइ आवेहि समिच्छउ  
मोरें मोरु सवक्खीह्वणं  
को वि भणइ वेसाणरदूरें  
को वि भणइ मारुय तुहुं ओसरु  
को वि भणइ वोळउ आहंडलु  
पच्छइ पुणु अम्हइं जाएसहुं

वग्घु महारउ एंतु ण जोयहि ।  
जाँउ सीहु किं मुँहुं अवलोयहि ।  
हंसहु पक्खु वलहें भग्गउ । 5  
महु मज्जारु एंतु ण णिहालहि ।  
पेक्खहि किं ण णउल्लु कररुहकरु ।  
चल्लंउ रिंछु गवणण म पेल्लहि ।  
सरहें महुं सारंगु म तासहि ।  
पूसउ पूसएण सहुं गच्छउ । 10  
जाउ उल्लुवउ समउ उल्लुणं ।  
वहउ वरुणु किं एत्थ वियारें ।  
मा भंजहि मेरउ जलहरतरु ।  
पविरलतियसु होउ णहमंडलु ।  
जिणचरणारविंदु पणवेसहुं । 15

घत्ता—काइ वि देविइ लइयउ करि णालुप्पलु दीसइ ॥

मउडुग्गयहिं सिएहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ ॥ १९ ॥

## 20

हेला—अवरा सुरविलासिणी गहियकुसुममाला ।

णं बालासूरुविणी मयणसत्थसाला ॥ १ ॥

19. १ MBP अज्ज. २ MB तेणेय. ३ MBP मिगु. ४ MB जासु. ५ M महु. ६ MBP मज्जारु. ७ MBP चरउ. ८ MB समुच्छउ; P सइमुच्छउ, but gloss सम्यगिच्छामि. ९ MBP अम्हइं पुणु.

20. १ MBP सुरुविणी.

19. 1 तेण य तेन गजमदेनैव. 8 a सणियउ शनैः. 16 a समिच्छउ अहं सम्यगिच्छामि. 17 सिएहिं सितैः शुक्लैः.

अवरेक्का वि सचंदण दीसइ  
 सोहइ अवर वि कुंकुमपिंडे  
 अवर सदप्पण णं मुणिवरमइ  
 अक्खयधारिणि णं मोक्खहु सहि  
 अवर सुसेयदेह णं सुरसरि  
 मलविरहिय अवर वि विज्जा इव  
 णच्चइ अवर सरसु भावालउ  
 वायइ अवर तंतिवज्जंतरु  
 एम पसण्णपसाहियवयणहि  
 सोहम्माहिउ सत्तावीसहि  
 एम देव संचल्लिय जावहिं  
 इंदाणइ तं णिम्मिउं जेहउ

णं मलयइरिणियंबवणासइ ।  
 पुव्वदिसा इव सिसुमत्तंडे ।  
 अवर मयरच्चिंधे सरि णं रइ । 5  
 थणदुहडी णं सुहधणाणिहि महि ।  
 अवर सहंसमोर णं गिरिदरि ।  
 अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व ।  
 गायइ अवर कूडताणालउ ।  
 वण्णइ अवर परमतित्थंकरु । 10  
 अच्छरकोडिहिं चलमृगणयणहिं ।  
 ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहि ।  
 धणएं समवसरणु किउ तावहिं ।  
 मइं जडेण किं सीसइ तेहउ । 15

घत्ता—बारहजोयणरुंदु हरिणीलें तलु बद्धउ ॥

परिवट्टलउ विसुधु धूलीसालउ णंद्धउ ॥ २० ॥

## 21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो ।

रयणपंसुंविणिम्मिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छेच्छवि कहिं मि विरेहइ  
 कत्थइ लोहिउं संझाराउ व  
 अब्भंतरि जगईउ पहाणउ

कत्थइ अंजणपुंजु व सोहइ ।  
 कत्थइ पंडुरु कुंदणिहाउ व ।  
 ताउ होंति सोलह सोवाणउ । 5

२ MB मलयगिरि<sup>०</sup>. ३ MBPT add after this line: का वि गहियकत्थूरय ( P कत्थूरिय ) वररइ, सामलंगि णावइ घणघणतइ ( B घणवणतइ ); T also notes a p: घणघणतइ ति पाठे निविडमेघपंक्तिः.

४ MP <sup>०</sup>तालालउ, ५ MBP <sup>०</sup>मिग<sup>०</sup>. ६ B णट्टउ.

21. १ P पंसुणिम्मिओ. २ MB <sup>०</sup>पिच्छ; P पुंछ. ३ MBP सोहइ.

20. ३ b <sup>०</sup>वणासइ वनस्पतिः. 6 b थणदुहडी उन्नतस्तनी. 8 b सुरहि सुरभिः. 9 b कूडताणालउ कूटतानालयं विस्मृततानमाना. 10 a वज्जंतरु वाद्यविशेषः. 14 a इंदाणइ इन्द्रादेशेन. 16 <sup>०</sup>सालउ प्राकारः; णद्धउ वेष्टितः.

21. २ रयणपंसु<sup>०</sup> रत्नधूलिः. 4 b <sup>०</sup>णिहाउ निवहः. 5 a जगईउ उपर्युपरि त्रीणि पीठानि.

चउगोउरभूसियउ तिसालउ  
 माणखंभ ताहुप्परि संगय  
 चउहुं मि दिसहिं चयारि समुण्णय  
 अरुहणाहपडिमापरिवारिय  
 पुणु वावीउ सकमल ससलिलउ  
 तीररयणकरमंजरिदित्तउ  
 कुवलयधारिउ णं णिवसत्तिउ  
 दिसधाइयपाणियकल्लोलउ

पसरियणाणामणियरजालउ ।  
 सँघय सँचामर सघंटा णं गय ।  
 दंसणमेत्तेण जि हयजयमय ।  
 फणिदाणवमाणवजयकारिय ।  
 खगमाणियउ णाइं खगमहिलउ । 10  
 चउपइयापरियम्मविचित्तउ ।  
 भमियरहंगउ णं रहजुँत्तिउ ।  
 पुणु खाइयउ रमियइसमालउ ।

घत्ता—पहसियसररुहएहिं वाउग्गर्यतिगिंछिहिं ॥

परिहउ णाइं णियंति देवागमणु चलच्छिहिं ॥ २१ ॥

15

## 22

हेला—जहिं महिउ रईए हंसीहिं मत्तहंसो ।

सुरवहुकैरिणियाहिं सुरहत्थिहत्थफंसो ॥ १ ॥

पुणरवि अंतरि णवदुमवेल्लिउ  
 पँत्तिहिं रत्तउ णं वरवेसउ  
 कंटइयउ णं पिययममिलियउ  
 णं वरकइवायउ कोमलियउ  
 वित्थरियउ अहिणवरससारउ  
 का वि वेल्लि तहिं वेढइ कंचणु  
 लगी का वि ललंति असोयइ

कुसुमालउ णं वम्महभल्लिउ ।  
 फलणमियउ णं सुहिपरिहासउ ।  
 णच्चंति व मारुयसंचलियउ । 5  
 लाडालावहुं पासिउ ललियउ ।  
 णं कामुयमईउ सवियारउ ।  
 सयल वि णारि समीहइ कंचणु ।  
 जिहै तृय तिह किर रमइ असोयइ ।

४ B सवय. ५ MBK सचमर. ६ MBP वावियउ. ७ M णिवजुत्तिउ; B °जोत्तिउ. ८ M तिगिच्छिहिं; B तिगिच्छिहिं; P तिगिच्छिहिं.

22. १ P जाहिं and gloss यासु खातिकासु. २ M हंसहिं. ३ MBP करणियाहिं. ४ MBP पत्तहिं. ५ MB जिह तिह किर, P जिह तिय तिह and gloss यथा स्त्री; K तृय but corrects it to तिय.

10 a वावीउ वाप्यः. 11 a °करमंजरि° किरणसंघात; b चउपइया° चतुष्पथिका. चतुर्दिक्सोपानाः.

12 b °रहंगउ रथाङ्गचक्रं चक्रवाकश्च; रहजुत्तिउ रथयुक्तयः. 15 णियंति पश्यन्ति.

22. 1 महिउ वाञ्छितः; रईए रतिनिमित्तम्. 6 b लाडालावहुं लाटालंकारालापमिव. 7 b सवियारउ विचारसहिताः, अन्यत्र सविकाराः. 8 a कंचणु चम्पकवृक्षः.

लगी का वि गंपि पुण्णायहु  
क वि मायंदहुं संगु ण खंचइ

होई णियंविणि फुडु पुण्णायहु । 10  
णिवरोहिणिहि लील णं संचइ ।

घत्ता—किसलयदलफलगोछुं चलचंचुइ णिल्लुरइ ॥  
अंमरु कीरवेसेण तेत्थु को वि रइ पूरइ ॥ २२ ॥

23

हेला—चितियवेसधारिणो जणियकामभावा ।  
वेल्लीवणलयाहरे जहिं रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ रुइरिद्धउ  
अप्पवेसु णं कामकडक्खहु  
जहिं चउगोउराइं संविहियइं  
अट्टोत्तरसयसंखासइइं  
तहिं विंतर पडिहारसमत्था  
पुणु पंणिहिउ उहयम्मि विसालउ  
ताउ तिभूमिउ णवरसजुत्तउ  
बहुवज्जउ वइरायरभूमिउ

णं जिणेण वयपरियरु बद्धउ ।  
गुरुपायारु पारु णं दुक्खहु ।  
जहिं बहुमंगलदव्वइं णिहियइं । 5  
णव वि णिहाणइं हयदालिइइं ।  
भीयरकुलिसगयासणिहत्था ।  
चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।  
णाइं पउत्तिउ सुँकइपउत्तउ ।  
आयउ णं ओलग्गहुं सामिउ । 10

घत्ता—उहयदिसहिं कुहिणीहि पुणु वि कया वि ण णिट्ठिय ॥  
दो दो दिण्णसंधूव तहिं धूवहंड परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अवसें णारि होइ पुण्णायहु. ७ BP खंचइ. ८ M अंचइ. ९ B गोच्छु. १० MBP अमरु वि कीरमिसेण.

23. १ B वल्लीवण°. २ MT पणिही; BP पणहीउ. ३ MBP सुकइणित्तउ. ४ MB सुधूय; P सुधूवा. ५ M धूवहण.

10 b पुण्णायहु पुरुषप्रधानस्य. 11 a मायंदहुं वल्लीपक्षे आम्राणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मीश्चन्द्रश्च तयोः; b णिव° चन्द्रः.

23. 4a अप्पवेसु अप्रवेशः. 8 a पणिहिउ मार्गाः. 9 a तिभूमिउ त्रिभूमियुक्ता. 10 a बहु-वज्जउ बहुवादिना बहुहीरकाश्च. 11 कुहिणीहि मार्गस्य. 12 दिण्णसंधूव दत्तखधूपाः; धूवहण धूपघटाः.



## 24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।

णं जिणकम्मकालिया भमइ मुक्कदेहा ॥ १ ॥

पुणु खयरामररामारमियइं	चउणंदणवणाइं परिभमिर्यइं ।	
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलिणइं	कीलागिरिवरकेलीभवणइं ।	
चउगोउरतिसालपरियरियउ	पीहु तिमेहल्लु मणिविप्फुरियउ ।	5
तित्थु असोउ असोयवणंतरि	तहु पडिमाउ चयारि दियंतरि ।	
कोहमोहमयमाणे चत्तउ	सीहासणछत्तयजुत्तउ ।	
अत्थि अणेयदेवकयपुज्जउ	णिहयणिरंगउ णिरु णिरवज्जउ ।	
संझा इव सुवण्णरुइरुइय	पुणरवि चउदुवारवणवेइय ।	
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंथुय	थिय गयणयललगा पवणुधुय ।	10
मालावत्थमोरकमलंकहिं	हंसगरुडहरिविसकरिच्चक्कहिं ।	
भूसियपडिधयपहपइरिक्कहु	अट्टोत्तरु सउ सउ एक्केक्कहु ।	

घत्ता—अण्णहु कासु तिलोए सोहइ णहि घोळंतउ ॥

कुसुममालधउ तासु कुसुमाउहु जे जित्तउ ॥ २४ ॥

## 25

हेला—कहइ व किंकिणीण घोसेण घोळमाणो ।

अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा महु रुसेज्जसु	कुसुमकरालहु करुण करेज्जसु ।	
जो अंबरु तवचराणि ण भावइ	अंबरचिंधु तासु धुंनु आवइ ।	
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ	सिहिजयंति सो अवसें पेच्छइ ।	5
जो णिवकमलहि होइ परंमुहु	तहु कमलद्धउ णिच्छउ संमुहु ।	

24. १ MBPT add after this: कंकेलीचंपयसत्तयलहिं, संछण्णहिं साहारहिं सरलहिं.  
२ MBP राइउ. ३ MBP वेइउ.

25. १ MBP धुउ.

24. 12 a °पइ रिक्कहु प्रचुरतरस्य.

25. 5 a सि हि वे सु खियाः वेषः ७ °जयंति पताका ध्वजः.

परमहंसु जो सच्चउ बुज्झइ  
अमयबंभपउ जो जइ दावइ  
सीहेणेव जेण वणु सेविउ  
जेण ण पसु घाइउ णियमग्गइ  
पसुवइ सो जि भडारउ बुच्चइ  
जो पंचिदिय दुइम पीलइ  
मोहचक्कु जें चप्पिवि चूरिउ

हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।  
विणयासुयवडाय सो पावइ ।  
सीहचिंधु तहु केण ण भाविउ ।  
तासु जि वसहु थाइ चिंधग्गइ । 10  
दुट्ट अवरु किं अप्पउ सुच्चइ ।  
पीलु तासु धयवहु अणुसीलइ ।  
चक्कु चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवार सुपसत्थ ॥

जहिं थिय णायकुमार मरगयदंडविहत्थ ॥ २५ ॥

15

26

हेला—पुणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।

अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ  
पुणु दीहर दहविह कप्पहुम  
पुणु वेइय कल्लहोयहु केरी  
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं  
णिच्चु जि कीलियसुरसंघायहं  
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं  
पुणु थूहइं मँणितोरणमालउ  
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ  
सुद्धायासफलिहसंपत्तिउ

जहिं णडंति तियसाहिवरामउ ।  
दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।  
पियकंता इव सुहइं जणेरी । 5  
दरिसावियबहुमंगलवत्तइं ।  
भंभाभेरिपडहणिणायहं ।  
पंति हारतारासुच्छायहं ।  
पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।  
कप्पदेवपरिरक्खियदारउ । 10  
तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउ ।

१ MBP चक्रचिंधु.

26. १ MBP पुणरवि धूयदोउडी. २ B कल्लहोइय. ३ MBP णिण्णायहं. ४ MBP पुणु तोरण°. ५ B तित्तिउ.

8 b विणयासुय° गरुडः. 11 a पसुवइ पशुपतिः शिवः.

26. 1 °दो हडी द्विघटी घटद्वयम्. 2 अहिणवे त्यादि उव्वसिरंभादीनां विशेषणम्. 5 a कल्लहोयहु सुवर्णस्य. 9 a थूहइं रत्नस्तूपाः;

घत्ता—तहिं मंडवमज्झत्थु वेरुलिणहिं समारिउ ॥  
सोलहपयठवणेहिं पीदु सुहाइ गिरारिउ ॥ २६ ॥

## 27

हेला—चउदिसु तासु उवरि कल्लाणदविणसारा ।  
जक्खसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्रधारा ॥ १ ॥

अवरु हिरण्णवीदु तहु उप्परि  
रयणरहंगदुरयगोधारिहिं  
उरयवइरिदामयतणुअंकहिं  
पुणु वि तितीरु रइउ पीदुल्लउ  
जंबुण्णयचामीयरघडियउ  
मरगयणिम्मियदीहरदिन्वहिं  
छत्तइं तिण्णि ताइं उद्धरियइं  
दिसिगयपंडुरकरणिउरुंबइं  
भामंडलु मंडलु णं भाणुहि  
णिण्णासियदुइंसणदिट्ठिहि  
रत्तपुष्पथवणहिं पसाहिउ  
कंकेलि वं पल्लवसोहिल्लउ  
जिह जिह देवहुं दुंदुहि वज्जइ

अट्टकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।  
आरणालसुंसिचयहरिणारिहिं ।  
सोहइ धयहिं गलियमलपंकहिं । 5  
तासुप्परि सीहासणु भल्लउ ।  
विमल्लु समंतभद्दमणिजडियउ ।  
सहइ लट्ठि कक्केयणपन्वहिं ।  
णिम्मलाइं णं णाहहु चरियइं ।  
तिण्णि वि णावइ ससहरविंबइं । 10  
अइ आसंकेप्पिणु संभाणुहि ।  
सरणु पइट्टउ णं परमेट्ठिहि ।  
जिणमणणिग्गउ राउ व राइंउ ।  
मत्तसकुंतमिहुणु रमियल्लउ ।  
तिह तिह धम्मजलहि णं गज्जइ । 15

घत्ता—णं आघोसइ एम दुंदुहिसरेण गहीरें ॥

पर्णवहो तिहुयणणाहु जें मुच्चहु संसारें ॥ २७ ॥

27. १ M सुसिवय°, B ससिवय°. २ MPK सिंहासणु; B सिंघासणु. ३ MB विमल°. ४ B सुम्भाणुहि. ५ B रत्तउ पुष्प°. ६ MBP जिणमय°. ७ MBPT राहिउ. ८ MBP वि. ९ M मत्तसुकुंभ-सिहु णरमियल्लउ; BP मत्तसकुंतमिहुणु रमियल्लउ, but T सकुंता पक्षिणः. १० MBP पणवह.

12 समा रिउ वृतम्.

27. 4 a रयणरहंग रत्तचक्रवाकः, दुरय हस्ती, गोधारि वृषभः; b आरणाल कमलम्; सुसिचय शोभावन्नम्. 5 a उरयवइरि गहडः; दामय पुष्पमाला. 6 a तितीरु उपर्युपरि त्रिभिस्तीरैर्युक्तम्. 7 a जंबुण्णय° सुवर्णम्; चामीयर° रूप्यम्. 8 b कक्केयण° स्फटिकः. 11 b अइ आसंकेप्पिणु अतीव भीत्वा; संभाणु हि स्वर्भानो राहोः. 13 b राइउ शोभितः. 14 b मत्तसकुंतमिहुणु दृष्टपक्षियुग्मम्, रमियल्लउ क्रीडनयुक्तम्.

## 28

हेला—अविरलकुंदकुडयमंदारपंकयाइं ।

सभसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइं गयणहु  
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं  
जक्खकरयलंदोलणचवलइं  
खीरतरंगा इव परिघुलियइं  
पंडुराइं चमरइं सुविसिद्धइं  
जं जं सुंदरु लच्छिहि अंगउ  
तं तं सयलु वि तहिं जि समप्पिउ  
णियपहणित्तेइयचंदक्कउ  
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं

तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।  
पीयपासपडियाइं व हंसइं ।  
शुणठाणारुहणाइं व विमलइं । 6  
कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।  
दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।  
जं जं काइं मि तिहुयणि चंगउ ।  
को वण्णइ जंभारिवियप्पिउ ।  
समवसरणु गयणंगणि थक्कउ । 10  
सेणियं कहियउ जिणवरणाणइ ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिं दें धणुपंचसएहिं धल्लिउ ॥

तरुघरगिरिखंभाहं सो बारहगुणु बोल्लिउ ॥ २८ ॥

## 29

हेला—अट्टगुणेण रुंदभावेण संपउत्तो ।

गाढं थूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणपं वेउव्विउ जायहिं  
जय जिण कण्ह रुइ चउराणण

इं दें णविउ भडारउ तावहिं ।  
जय तवरामारइसुहमाणण ।

28. १ MB पियपायसपडियाइं: P पियपासपडियाइं. २ MBP तिहुयणि काइं मि. ३ MBP उण्णय-  
माणे. ४ MP add after this: विससहससोवाणविहाणे, चउदिसविरइयहत्थपमाणे; B adds these after  
सेणिय कहियउ जिणवरणाणइं. ५ MBP सेणिय कहिउ जिणे वरणाणे. ६ MBP पघल्लिउ; T पडुल्लिउ. ७ P  
पब्बुल्लिउ and gloss कथितम्.

29. MBPK अट्टगुणेण.

28. 4 a °प सं डि दंड इं कनकमया दण्डाः; b पी य पा स प डि या इं पीतपाशवन्धकनकदण्डैः पाशस्य  
उपमा घृता. 12. उ च्छेहु उत्सेधः; घ ल्लिउ कथितः.

जय केलिकलिलसलिलसोसणरवि	जय वासरईसरदेहच्छवि ।	5
जय मणतिमिरभारहरणखम	तियसकिरीडमउडमंडियकम ।	
जय तिसल्लवेल्लीवणल्लिंदण	जय कंदप्पदप्पभडमहण ।	
कोहकलंकपंकओसारण	जय माणइरिसिहरमुसुमूरण ।	
मायापावभावेविद्दावण	जय लोहंधयारउडुवावण ।	
तिट्टारयणीयरिसंधारण	जय सत्तभयकुरंगवियारण ।	10
जय मयमयंगलकुलकंडीरव	जय जगबंधव महियतिगारव ।	
पढमपुरिस परमप्पय संकर	जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।	

घत्ता—वंदिउ एम जिणिंदु तहिं बत्तीसहिं सक्हिं ॥

उज्जोइयभरहेहिं पुष्पयंतणामंकरहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे रिसहकेवलणाणुप्पत्ती णाम  
णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥

॥ संधि ॥ ९ ॥

२ M कयकलिल°, ३ M तिसल्लवल्ली°, ४ MBP °भावउडुवावण. ५ MBP °धयारविद्दावण; P लोहंधयारि  
विद्दावण.

29. 5 a °क लिल° पापम्. b वासरईसरदेहच्छवि वासरो दिवसस्तस्य ईश्वर आदित्यः तस्य  
देहस्य छविः कान्तिराकारो वा यस्य. 6 b °किरीड° त्रिशेखरो मुकुटविशेषः. 10 a तिट्टा रयणीयरि° तृष्णैव  
रजनीचरी राक्षसी. 11 b महिय° मथितानि.

X

परमेसरु शुणिउ पुरंदरेण परिसोसियभंवभयमरणरिण ॥  
परमप्पय महु पसीय सुसम सँमवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—तुह पहु वंदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहसि मच्छरं ।  
तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुहं वीयराउ णिध्दूयकम्मु	तुहं हिंसावज्जिउ परमधम्मु ।	5
जो पइं सेवइ तहु होइ सोक्खु	तुह पडिकूलहु संभवइ दुक्खु ।	
तुहं पुणु दोहिं मि मज्झत्थभाउ	इहं एहउ फुडु वत्थुहि सहाउ ।	
णिदिज्जइ रवि पित्ताहिएहिं	चंदु वि वाएण णिवाइएहिं ।	
ते दोणिण वि एयहं किं करंति	ससहावें णहयलि संचरंति ।	
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम	भुवणोवयारि जिण तुहं मि तेम ।	10
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि	तहु तण्हइ णिवडइ तिब्बमारि ।	
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु	सरवरहु ण एण णं तेण कज्जु ।	
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि	तिह तुहं वि सहावें दुरियहारि ।	
अणवरउ भडारा भूयसामि	जहिं तुम्हइं तहिं हउं समउ जामि ।	

All Mss. have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

जगं रम्मं हम्मं दीवओ चंदविंबं  
धरत्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्था ।  
पिया णिद्दा णिच्चं कव्वकीला विणोओ  
अदीणत्तं वित्तं ईसरो पुप्फयंतो ॥

MBP however read धरिती for धरत्ती; सुवत्थं for सुवत्था; and पुप्फदंतो for पुप्फयंतो in the above stanza.

1. १ MB ° भवभवणरिण; P ° भवभमणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण. ३ MBP पडिकूलहं. ४ M इय. ५ K णं तेण. ६ B तुम्हइं तहिं हउं सउं; P तुम्हइं हउं समउ.

1. 4 अणयपणयाण अनतानां प्रणतानां च. 8 a पि त्ता हि ए हिं पित्ताधिकैरैः; b णि वा इ ए हिं पीडितैः 12 a र स इ आस्वादयति; तिसणा सु तृषानाशः; सज्जु सद्यः. 13 a गरुलमंतु गरुडमन्त्रः; गरलंतयारि विषविनाशकः.

जहिं तुहुं तहिं ससुरु समग्गु सग्गु

जइं हउं तहिं मणिमउ भूमिमग्गु । 15

घत्ता—तहिं समवसरणि जंभारिकए परहियबुद्धिइ संचरइ ॥

सुरंणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—आरूढो वरम्मि उवयदिसिरम्मि व हरिणलंछणो ।

सोहइ सेंधुरारिवीढम्मि विहट्टियकम्मबंधणो ॥ १ ॥

अइसय दह जाया सह भवेण

चउवीस अवर णाणुब्भवेण ।

जगि अरहंतहु पर संभवन्ति

जे ते एहा गणहर कहन्ति ।

गव्वूइसैयाइं चयारि जाम

वित्थरइ सुँहिकखु सुखेउ ताम । 5

ण वि कासु वि प्राणिहि प्राणणासु

गयणयलि गमणु परमेसरासु ।

णँउ भुत्ति पवत्तइ णोवसग्गु

सरलक्खिपक्खँपक्खेउ भग्गु ।

छाहियइ विवज्जिउ होइ गत्तु

अवरु वि असेसुँ विज्जेसरत्तु ।

परिमिय थिय कररुह णील केस

भूएसु मेत्ति पिसुण वि ण वेस ।

भास वि णीसेससरीरिगम्म

णाणाभासहिं परिणवइ रम्म । 10

महु तित्त कडुय परिणइवसेहिं

जलधारा इव बहुदुर्मरसेहिं ।

७ MBP जहिं तुहुं तहिं; K जइं हउं but corrects it to जहिं, ८ MBP add after this the following line: पइ दिण्णाणइ वइसरामि जामि, तुह वयणामइ तित्ति ण जामि. ९ MBPT परिचितिय-सुवियारसहु and gloss in T भव्यैश्चिन्तितार्थानां शोभनो विचारः सभायां यस्य, शोभनं विचारं वा सहते क्षमते यः स तथोक्तः, but P records in the margin a p परहियबुद्धिइ संचरइ. १० MBP चउ-देवणिकायहिं ( M °णिकायहं ) परियरिउ आसणसंठिउ दिट्ठु पहु, but P records in the margin a p सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ.

2. १ MBP सिंधुरारि°. २ B णाणुब्भरेण. ३ L °चयारि सयाइं. ४ MBP सुभिकखु. ५ MBP पाणिहि पाण°. ६ M ण व. ७ MBP °विकखेउ. ८ MBPT असेस°. ९ P °दुमसरोहिं.

15 a ससुरु देवैः सह.

2. 1 उवयं हि सिरम्मि उदयाद्रिशिखरे. 2 सेंधुरारिवीढम्मि सिंहासने, विहट्टिय° विघटित°. 4 a पर केवलम्. 5 a गव्वूइ° गव्यूतिः. 7 b °पक्खपक्खेउ पक्ष्मणां प्रक्षेपो मेषोन्मेषगतः. 8 b असेसु विज्जेसरत्तु परिपूर्ण विद्येश्वरत्वं केवलज्ञानमागमो वा. 9 b वेस द्वेष्याः. 10 a °गम्म परिच्छेद्या.

छक्कालसमयसंपयकरेण  
आदंसणसंणिह महि विहाइ  
मंथरु सीयलु तरुसुरहिसारु  
अणुगच्छंतउ णाहहु सुहाइ

महिरुह णमंति गुरुफलभरेण ।  
परमाणंदे जणु जगि ण माइ ।  
जोयणपमाणु वियरइ समीरु ।  
पच्छइ लग्गउ णेहेण णाइ ।

15

घत्ता—जलं दुधु व्रहंति तरंगिणिउ सामिउ विहरइ जहिं जि जहिं ॥  
तणं कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं ॥ २ ॥

### 3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियालिकुलेहिं माणियं ।  
थणियकुमार मेह वरिसंति महावरगंधवाणियं ॥ १ ॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिघुलंति  
जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु  
एवहु पहुत्तणु भुवणि कासु  
अट्टारह वरधण्णइ धरंति  
णहु सदिसु वि रेहइ मलविहीणु  
दिव्वह्णुणि पवियंभइ पवित्ति  
जक्खिदसिरारूढउ विचित्तु  
लीलासंबोहियभव्वच्चंक्कु  
जो पेच्छइ दूरहु माणु खंभु  
णिज्जियवहुसमयणयंतराइं

णलिणाइं सत्त सत्त जि चलंति ।  
सुरसंजोइउ संचरइ विमलु ।  
हरि कुलिसधारि घरि जांसु दासु ।  
रोमंचिय णच्चइ णं धरित्ति । 5  
धोयंबणीलमाणिकभाणु ।  
वसुसमसहासधणुमाणछेत्ति ।  
रयणाररत्तु रविर्विबु दित्तु ।  
तहु अग्गग्गइ गच्छइ धम्मचक्कु । 10  
तहु विहडइ माणकसायडंभु ।  
परवाइ वि देंति ण उत्तराइं ।

१० MBP अणुगच्छंतहु. ११ MB जलु दुधु. १२ B तिण.

3. १ P वरिसंत. २ MBP महारव°. ३ P संचलइ. ४ B एवहु°. ५ MBP कासु. ६ MBP रयणारादंतुरदिव्वदित्तु. ७ MB °चक्खु. ८ MBP अग्गइ. ९ MB माणखंभु.

12 a छक्काल° षड्क्रतवः. 14 a मंथरु मन्दः; तरुसुरहिसारु तरुणां सुराभिः सौरभं तेन सार उत्कृष्टः.

15 a सुहाइ सुखायते.

3. 3 a परिघुलंति विलसन्ति. 6 a अट्टारह वरधण्णइं गोधूमशालियवसर्षपमाषमुद्गद्वयामाक-  
कहुतिलकोद्रवराजमाषाः । कानाशनालमथ वैणवमाढकी च शिम्वा कुलत्थचणकादि सुवीजधान्यम्. 7 a सदिसु  
दिशासहितम्; ७ °भाणु भाजनम्. 9 b रयणाररत्तु रत्नमयैरैः सहितं अत एव रक्कम्; 12 a  
समयणयंतराइं निर्जितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि युक्तिविशेषा यैः.



पंडिहाहय भंइयइ थरहरंति	अविहंडिउ मोणव्वउ वहांति ।	
अवियारु पहादूसियछणिंदु	दीसइ चउदिसहिं मुहारविंदु ।	
बारहकोट्टेसु वि जे वसंति	ते ते मुहुं महु संमुहु भणंति ।	15

घत्ता—मउलियकराँउ पणवियसिरउ सच्छँउ गव्वविमुक्कियउ ॥

परिवाँडिइ कोट्टि णिविट्ठियँउ तहिं पयाउ हयदुक्कियउ ॥ ३ ॥

4

दुवई—गणहर कप्पवासिसुररमणिउ अज्जियसंघं गइरई ।

देविउ वणणिवासदेवाण वि भावणतरुणिसंतई ॥ १ ॥

पुणु दह कुमार वैतरसुरिंद	पुणु जोइस कप्पामर णरिंद ।	
पुणु तिरिय विथेडदाढाकराल	केसरि कुंजर सहूल कोल ।	
बैइसंति गणेसाइ व कमेण	जिणभत्तिवंत भूसिय समेण ।	5
णव णव पंचविहहिं रूढएहिं	सव्वहिं सविमाणारूढएहिं ।	
सीहासणु मेळ्ळिवि खइयभाउ	अहमिंदहिं थुँउ विद्धत्थराउ ।	
जसरवितोसियजगपंकएहिं	उग्घोसियकुलणांमंकएहिं ।	
मउडावल्लिचुंबियमहियलेहिं	घोलंतकुसुममालाचलेहिं ।	
उवगीईगाहाखंधएहिं	उच्चारियल्लियथुईसएहिं ।	10
संथुउ सोहम्मीसाणएहिं	अवरोहिं मि तियसपहाणएहिं ।	

१० MBP पडिभा°; T परिहा° and gloss प्रतिभा. ११ B भइए. १२ MB अवियारपहा°; B अवियारपिया°. १३ MBP महु महु संमुहु. १४ MBP °करउ. १५ BP सव्वउ. १६ MP परिवारिए. १७ MB णिविट्ठउ.

4. १ MBPK °संघु. २ MBP फुरिय°. ३ M वइसंत. ४ MBP गणेसाइय. ५ M संथुउ, ६ P °णामकिएहिं.

13 a पडिहाहय आसूत्रप्रतिपत्तिः प्रतिभा सा हता येषाम्; b अविहंडिउ परिपूर्णम्. 14 a अवियारु अविकारः. 17 परिवाडिइ परिपाटिकया क्रमेण; पयाउ प्रजाः.

4. 1 गइरई ज्योतिष्कस्त्री. 2 वणणिवास° व्यन्तरा देवाः; भावण° भवनवासिनो देवाः; संतई श्रेणी. 5 a गणेसाइ गणधरादयः. 6 a रूढएहिं प्रसिद्धैः. 7 a खइयभाउ क्षायिकभावो जिनेश्वरः. 10 a °खंधएहिं स्कन्धकवृत्तैः.

यत्ता—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुपाससिहि ॥

जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविसहरविलयविरहिया ।

जय भगवंत संत सिव सकिव णिवंचियच्चरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकईकहियणीसेसणाम

वामाविमुक्क संसारवाम

जय पयडियधुयससंयंभुभाव

जय संकर संकर विहियसंति

जय रुह रउहृतवग्गामि

महएव महागुणगणजसाल

जय जय गणेस गणवइजणेर

वेयंगवाइ जय कमलजोणि

सहिरणविट्टिपडिवणगम्भ

जय परमाणंतचउक्कसोह

जय जणपुरिस पसुजणणासि

भीमंथण णियरिउवग्गभीम ।

जय तिउरहारि हर हीरधाम ।

जय जय संयंभु परिगणियभाव । 5

जय ससहर कुवलयदिण्णकंति ।

जय जय भवसामि भवोवसामि !

महकाल पलयकालुग्गकाल ।

जय बंभ पसाहियबंभचेर ।

आईवराह उद्धरियखोणि । 10

जय दुण्णयाणिहणण हिरण्णगम्भ ।

भावंधयारहर दिवसणाह ।

रिसिसंसअहिंसाधम्मभासि ।

5. १ MBP वलय°. २ P सुकय°. ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्वन्मनोज्ञ. ४ MBP °ससइंभु°. ५ B परिगलिय°. ६ P °गणविसाल. ७ M पावंधपारहर; BP पावंधयारहर. ८ M रिसिसंस अहिंसा°; BP रिसिसंस अहिंसा°.

12 °पसुपाससिहि पशुप्राशः पलालं तस्य शिखी अग्निः. 13 हरणकरणउद्धरणविहि हरणं मिथ्यादर्शनादेः; करणं सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरणं दुर्गतिकूपे पततामुद्धृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मात्.

5. 1 °कंदल° कपालम्; °विलय° विलयावनिता स्त्री. 3 b भीमंथण भयहारक. 4 a वामाविमुक्क श्रीविमुक्त; संसारवाम संसारप्रतिकूल; b तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा लिपुरस्य विनाशक; हीरधाम धैर्यस्य धाम. 5 b परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ. 6 a संकर संकरः सुखंकरः. 7 a रउहृतवग्गामि उग्रतपसामग्रगामी; b भवोवसामि संसारोपशमकः. 9 b गणवइजणेर वृषभसेनादीनां शिष्याणां जनक. 10 b वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन्. 12 a °अणंतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्; b भावंधयार° अज्ञानम्. 13 b रिसिसंस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक.

जय माहव तिहुवणमाहवेस  
जय लोयणिओइय परमहंस  
जगि सो केसउ जो रायवंतु  
के सव ते सव जे पइं हसंति  
जय कासव का सवविहि तुमम्मि

महुसूयण दूसियमहुविसेस ।  
गोवद्धण केसव परमहंस । 15  
तुह णीरायहु कहिं केसवत्तु ।  
जड पावपिंड रउरवि वसंति ।  
णेरंतरु चित्ति णिरोहु जम्मि ।

घत्ता—जय गयण हुयासण चंद रवि जीवय महि मास्य सलिल ॥

अट्टंगमहेसर जय सयल पक्खालियकलिमलकलिल ॥ ५ ॥ 20

6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा ।

जय वइकुंठ विट्ठु दामोयर हयपरवाइवासणा ॥ १ ॥

णामाइं पसिद्धइं जाइं जाइं  
इंदैं चंदै उरयाहिवेण  
मंइविहवविहीणहिं आरिसेहिं  
तविंत्तहिं पउरजसालएहिं  
एक्कहिं खणि भरहहु कहिय वत्त  
सयरायरवत्थुवियप्पजाणु  
राणियहि पुत्तु पप्फुल्लवयणु  
उप्पण्णु भडारा पुण्णवंतु  
ता राएं अवरोहिं मि णरोहिं

तुह देव अवंझइं ताइं ताइं ।  
तुह णामहु लक्खिउ छेउ केण ।  
किं थुव्वसि तुहुं अम्हारिसेहिं । 5  
कंचुइधम्माउहवाँलएहिं ।  
भुंजहि महि महिवइ एक्कलत्त ।  
परमेट्ठिहि अचलु अणंतु णाणु ।  
आउहसाँलहि वरच्चक्करयणु ।  
तुहुं जासु जणणु अरहंतु संतु । 10  
पणाविउ जिणवरु सिरकयकरेहिं ।

१ MBP वित्तणिरोहु, १० MBP जीव मही.

6. १ MBP मइं विभव°. २ MBP ता एत्तहिं. ३ P पवर°. ४ MB °बालएहिं; P °पालएहिं  
५ MBP एयलत्त, ६ MBP °सालइ.

14 b दूसिय महु विसेस मधु मयं क्षौद्रं दानवश्च. 15 b गोवद्धण ज्ञानवर्धक. 16 a सो केसउ जो राय-  
वंतु यः केशेषु रागवान् स केशवः, b केसवत्तु केशवत्वम्. 17 a केसवेत्यादि— के शवाः? ते शवा; ये त्वा  
हसन्ति. 18 a सवविहि मृतकाचारः. 19 जीवय यजमानः. 20 अट्टंगमहेसर गगनाद्यष्टाभिस्तनूभिर्युक्तौ  
महेश्वर; सयल परमौदारिकशरीरयुक्त.

6. 3 b अवंझइं सफलानि. 4 b छेउ प्रान्तः. 5 a आरिसेहिं अव्युत्पन्नैः. 8 a सयरायर-  
वत्थुवियप्प° सचराचरस्य सक्रियनिष्क्रियस्य चेतनाचेतनस्य च वस्तुनो विकल्पा भेदाः.

पुणु चिंतिउ किं जोयमि रहंगु  
मज्झत्थु सच्छु णिम्मुकुसंगु  
धम्मणेण सुरत्तु कलत्तु पुत्तु  
धम्मं संपज्जइ पुहविरत्तु  
गंभीरणायणिम्महियवेरि

किं तणयतोँडुँ दरियारिभंगु ।  
किं वंदमि मुणि सुद्धंतरंगु ।  
पहरणु वि होइ णिद्वलियसत्तु ।  
करणिज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु । 15  
देवाविय लहु आणंदभेरि ।

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥

वेयालियकयकलयलमुहल्लु भरहणराहिवु णीसरिउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं ।

मयराणणविणित्तमुत्ताहलमालाल्लुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु  
पउलोमीपियसेविज्जमाणु  
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण  
णं मत्तमऊरें वारिवाहु  
णं सिद्धें संभावियउ मोक्खु  
कंपावियदिच्चक्काहिवेण  
जय भुवणभवणतिमिरहरदीव  
जय भासियएयाणेयभेय  
सकयत्थइं कमकमलाइं ताइं  
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं  
ते धण्ण कण्ण जे पइं सुणंति

तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।  
चउसट्ठिचमरविज्जिज्जमाणु ।  
णं णेसरु णवपंकयसरेण । 5  
णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।  
णं हंसें माणसु जणियसोक्खु ।  
पारद्दु थुणहुं चक्काहिवेण ।  
जय सुइसंबोहियभव्वजीव ।  
जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय । 10  
तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं ।  
सो कंठु जेण गायउ सरेहिं ।  
ते कर जे तुहँ पेसणु करंति ।

७ MBP °तुंडु. ८ MP भरहु णराहिउ; B भरहणराहिउ.

7. १ MBP °सरणं असुहहरणं; KT °सरणमसुहरसरणं. २ B °विलित्त°. ३ BK °ललिय°.

४ M तुव.

12 b दरियारि° दृष्टाः शतवः. 16 a °णा य° नादः. 18 वेयालिय° भट्टचारणादिकाः.

7. 1 असुहहरणं अशुभनाशकम्. 2 °विणित्त° विनिर्गतः. 3 b तिउणिय° त्रिगुणितः. 4 a पउ-  
लोमी° इन्द्राणी. 5 b णेसरु सूर्यः. 6 a वारिवाहु मेघः; b वाइएण रसायनकारकेण. 8 a दिच्चक्काहिव  
लोकपालाः. 9 b सुइ° श्रुतिरागमः. 11 b तित्थु समवसरणं निष्कमणादिस्थानं वा.

ते णाणवंत जे पइं मुणंति  
 तं कच्चु देव जं तुज्जु रइउ  
 तं मणु जं तुह पयपोमलीणु  
 तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि  
 तं मुहुं जं तुह संमुहउं थाइ  
 तेल्लोक्कंताय तुहुं मज्जु ताउ  
 णिट्ठवियडुंढुकम्मट्ट सिट्ठ

ते सुकइ सुयण जे पइं थुणंति ।  
 सा जीह जाइ तुह णांउं लइउ । 15  
 तं धणु जं तुह पूयाइ खीणु ।  
 ते जोइ जेहिं तुहुं झाइओ सि ।  
 विवरंमुहुं कुच्छियगुरुहुं जाइ ।  
 धण्णेहिं कहिं मि कह कह व णाउ ।  
 दुट्ठोवसग्गाणिहणेक्कणिट्ठ । 20

घत्ता—पंचाणणकुंजरजलजलणविसविसहररुयपयजुयणिर्यला ॥

पइं संभरिएण जि परमजिण उवसमंति कयकलह खंला ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—जय वईसमणचमरवेरोयणअसुरामरपसंसिया ।

सुरगुरुसुकसबुहअंगारयगहणहयरणमंसिया ॥ १ ॥

चरणइं तेरहगइभाविराइं  
 एयारह सिंगइं उण्णयाइं  
 सीसाइं पंच अह भणमि एक्कु  
 वारह चोइह देकारियाइं  
 रोमहं चउरासीलक्ख जासु

णयणाइं पंच पहदाविराइं ।  
 उज्झियइं तिण्णि किर णिण्णयाइं ।  
 चउहुं मि परियरियउ तं जि थक्कु । 5  
 अंगंइं दह विउसवियारियाइं ।  
 दुग्गोवइकुल संजणिय तासु ।

५ MBP णासु. ६ MBP तइल्लोक्क°. ७ BPKT °कट्टकम्मट्ट. ८ MB °विसहरपय°; T रुय रोगाः.  
 ९ MBPK °णियल. १० MBPK खल.

8. १ MBP वइसवण°. २ MBP °वइरोयण°; K वैरोयण. ३ MB परियरिउ. ४ MPK चउदह.  
 ५ MBP अगाइं.

19 a °ताय रक्षक, ताउ पिता. 20 a सिट्ठ हे श्रेष्ठ. 21 °रुय° रोगाः.

8. 1 °चमरवेरोयण° चमरवैरोचनौ असुरेन्द्रौ. 3 a तेरहगइं पञ्चव्रतानि, पञ्च समितयस्तिस्त्रो  
 गुंत्तयः; b णयणाइं पंच मतिश्रुतावधिमन पर्यायकेवलानि. 4 a एयारह सिंगइं सम्यक्त्वाद्येकादशगुणस्थानानि  
 श्रृङ्गाणि, b तिण्णि णिण्णयाइं मायामिथ्यानिदानानि शल्यानि, मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्राणि वा लीणि निम्नानि,  
 वृषभपक्षे, स्कन्धकुटीमस्तकानि निम्नानि. 5 a सीसाइं पंच सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराय-  
 यथाख्यातानि पञ्च चारित्राणि, पञ्च महाव्रतानि वा, अह भणमि एक्कु अथवा एकं अहिंसाव्रतम्, सर्वसावद्ययोग-  
 विरतोऽस्मीति सामायिकं वा. 6 a वारह द्वादश अङ्गानि; चोइह चतुर्दश पूर्वाणि वा, देकारियाइं शब्दाः;  
 b अं गाइं दह उत्तमक्षमादिदशप्रकारो धर्मः. 7 b दुग्गोवइ दुग्धा गोपतयः सर्वथैकान्तवादिनः.

जो कामधेणु सेविउ सुधामु  
दुद्धरवयभारधुरगु धरिवि  
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु  
जें लंघिउ भवदुप्पहु दुलंघु  
तहु वसहहु कयपणिर्वाउ भाउ

जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।  
अपवत्तियतिथ्वहेण चरिवि ।  
वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।  
जो धवल्लु धवल्लुवृंदहु महग्घु । 10  
णियणिलइ णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥

संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोर्यावि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—ता णिग्गंतधीरदिव्वद्दुणितोसियंफणिणरामरो ।

जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभवाभव जीव दुभेय होंति  
चउँरासीजोणिहिं परिभमंति  
वियल्लिंदिय सयल्लिंदिय अणेय  
आहारसरीरिंदियमणाहं  
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु  
तं छव्विहु परमेसैं पउत्तु  
जिह णारएसु तिह सुरवरेसु  
परमें तितीस सायरसमाइं  
एइंदिएसु चत्तारि होंति  
ता जाम असण्णिउ पंचकरणु

ते सभव सकम्मं परिणमंति ।  
अण्णणदेहराणं रमंति ।  
एक्किंदिय भासिय पंचभेय । 5  
आणाभासापरमाणुयाहं ।  
तं पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु ।  
अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।  
दसँवरिससहासइं वसइ तेसु ।  
मणुएसु तिण्णि पलिओवमाइं । 10  
वियल्लिंदिएसु पंच जि कहंति ।  
सण्णिउ पज्जत्तील्लक्कधरणु ।

६ MB ° दुप्पउ. ७ M धवल्लुवृंदहु; B धवल्लुवृंदहु; P धवल्लुवृंदहु and gloss समूहस्य. ८ MBPK कयपणिवायभाउ. ९ MB जाएवि.

9. १ B °तासिय°. २ M भव वाभव. ३ MBP परिणवन्ति. ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमंति. ५ BP दहवरिस°.

8 b °दामु बन्धनम्. 9 b अपवत्तियतिथ्वहेण अवसर्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमागंण.

11 a °दुप्पहु दुर्माणः. 14 जोयवि दृष्ट्वा.

9. 11 a चत्तारि आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासानिश्वासलक्षणाः पर्याप्तयः.

एयहिं जे पज्जप्पंति णेय  
पँज्जप्पंतहु लग्गइ खणालु

ते जंति अपज्जत्ता अणेय ।  
जगि सव्वहु भिण्णमुहुत्तु कालु ।

घत्ता—ओरालिउ तिरियहुं माणवहुं सुरणारयहुं विउँव्वियउ ॥ 15  
आहारअंगु कासु वि मुणिहि कम्मु तेउ सयलहं वि थियउ ॥ ९ ॥

## 10

हुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचमेयया ॥  
पुँहवी आउ तेय वाऊ वि य बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसजल सूईकलाव  
तोरणतरुवेइयगिरियलेसु  
णाणाविहसायरि सरिसरेसु  
अवरेसु वि बहुछेत्तंतरेसु  
अइसरसरसातोयासपसु  
खरजलिण ण भिज्जइ वालुयाइ  
दुविह वि मट्टिय किर पंचवण्ण

परिधाविरधयसंठाण भाव ।  
सुरहरवसुसंखामहियलेसु ।  
पण्णारह जिणभँवभूयलेसु । 5  
बंमंतपरिट्टियणहयलेसु ।  
एयाण कमेण जि होइ वासु ।  
सण्ही सिंचियँ खणि बंधु लेइ ।  
जइ होइ होउ संकिण्ण अण्ण ।

घत्ता—कसिँणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥ 10  
एँही महिकायहुं मउय महि पंचवण्ण मइं वज्जरिय ॥ १० ॥

## 11

दुवई—कंचण तँउय तंब मणि रुप्पय खरपुहई पयासिया ।  
वारुणिखीरखारघयमहुसम जलजाई वि भासिया ॥ १ ॥

६ MBP पज्जत्तहु लग्गइ इय खणालु. ७ MBP विउव्विउ. ८ MBP थिउ.

10. १ K पुहई. २ MBP सायर°. ३ MBP जिणवरमहियलेसु. ४ MB सित्तिय; P सँचिय.  
५ MBP कसणारुण. ६ P महिकायहुं जीवहुं मउय मही.

11. १ MBP तउय.

14 b भिण्णमुहुत्तु अन्तर्मुहूर्तः. 15 ओरालिउ औदारिकम्.

10. 4 a तोरण° द्वारादितोरणम्; b वसु संखामहियलेसु अष्टपृथिवीषु. 6 b बंमंत° लोकान्तः.  
8 b सण्ही मृदुः; b संकिण्ण मिश्रा.

दूरहु दरिसावियधूममलिणु  
उककलि मंडलि गुंजाणिणाउ  
गुच्छेसु गुम्मवल्लीतणेसु  
सुपसिद्धु वणासइकाउ एसु  
पज्जत्तेयर सुहुमेयरा वि  
साहारणाहं साहारणाइं  
पत्तेयहुं पत्तेयइं गैयाइं  
वारहसहाससंवच्छराहुं  
आउहि परमाउसु सत्त झुणइ  
तइयइसहासइं गंधवाहु  
परमेण जि अइअवरेण उत्तु  
तुंदाहि कुक्खि किमि खुब्भ संख  
तीइंदियं गोभिपिपीलियाइं

असणी तडि रवि मणि जोई जलणु ।  
दिसँविदिसामेणं भिण्णुं वाउ ।  
पव्वेसु रुक्खसाहाघणेसु । 5  
उण्णज्जइ जईं घोसइ जईसु ।  
दुमसाहारण पत्तेय के वि ।  
आणापाणइं आहारणाइं ।  
छिंदणभिंदणणिहणं गयाइं ।  
सुहुमाहुं दह जि दह दो खराहुं । 10  
अहरत्तइं चिच्चिहि तिण्णि भणइ ।  
दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।  
सव्वहं जीविउ अंतोमुहुत्तु ।  
बीइंदियं मइं भासिय असंख ।  
चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं । 15

घत्ता—परिवाडिए किं पि णाणभवणु एयहं जुत्तिइ सावडइ ।

रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एककेकउं इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ट प्राणया ।

तेसिं होंति एम पभणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिंदिय साण्णि असाण्णि दोण्णि

मणवज्जिय जे ते धुवु असाण्णि ।

१ MB °मणिजाइ. ३ MBP दिसि°. ४ M दिण्णु; P भिण्णवाउ; ५ M सुवासिद्ध°; BP सुपसिद्ध°. ६ M जिइ; P जिउ. ७ MBPT पत्तेयंगयाइं. ८ MBP णिहणइं. ९ M रुंदाहि सुक्खि; रुंदाहि कुक्खि; T रुंदाहि गण्डूपदः. १० MBM बेइंदिय. ११ MBP तेइंदिय.

12. १ M मणि.

11. 4 a °गुं जा णि णा उ घोषशब्दयुक्तः. 6 b जइ जगति. 9 b णि हणं विनाशम्. 10 b दह जि-दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि; 11 a आउ हि अपाम्; b चिच्चि हि अग्नेः. 12 a तइयइसहासइं त्रीणि वर्षसहस्राणि. 13 a अइअवरेण अतिजघन्येन. 14 a तुंदाहि गण्डूपदः. 16 णाणभवणु ज्ञानाश्रयम्; सावडइ संपद्यते.



सिक्खालावाइं ण लैंति पाव  
 असु णव जि समत्तिउ पंच ताहं  
 छहिं पज्जत्तिहिं पज्जत्तएहिं  
 मणवयणकायरसघाणएहिं  
 दहहिं मि जियंति सण्णिय तिरिक्ख  
 जलयर झसाइ पंचप्पयार  
 ण्हयर समुग्ग फुंडवियडपक्ख  
 थलयर चउपय चउविह अमेय  
 उरसप्प महोरर्य अजगराइ  
 भुर्यसप्प वि वक्खाणिय सभेय

अण्णाणगूढेदढमूढभाव ।  
 वज्जरइ जिणिंदु असण्णियाहं । 5  
 संफासणलोयणसोत्तएहिं ।  
 आणाप्राणाउ अप्राणएहिं ।  
 अक्खमि णाणाविह दुण्णिणरिक्ख ।  
 कच्छव मयरोहर सुंसुयार ।  
 अण्णेक्क चम्मघणलोमपक्ख । 10  
 एक्कखुर दुक्खुर करिसुणहपाय ।  
 किं ताहं गइंदु वि कवलु होइ ।  
 सरदुंदुरगोधाणामधेय ।

घत्ता—जलयर जलेसु खग तरुगिरिसु थलयर गामपुरेसु वणे ॥

दीवोयहिमंडलमज्झि तहिं पढमु दीवु भासंति जिणे ॥ १२ ॥ 15

## 13

दुवई—जोयणलक्खु लक्ख बहुपविउल पुणु गयगणियमेरया ।

अत्थि असंखदीववरसायरवलयायारधारया ॥ १ ॥

जंबूदीवो धार्दइसंडो  
 मइरो खीरो घयमहुणाँमो  
 कुंडलसण्णो संखो रुजगो

पुक्खरवरदीवो मृंगचंडो ।  
 णंदीसो अरुणोरुणधामो ।  
 भुजगवरो अवरो वि हु कुसगो । 5

२ MB मूढ घणगूढभाव, K मूढ घणगूढभाव but corrects it to गूढ घणमूढभाव. ३ MBP °पाणाउ.  
 ४ MBP अपाणएहिं. ५ M अहयर. ६ M पड°, BP फड, ७ MBP दुक्खुर. ८ M महोयर.  
 ९ MBP किर. १० MBP सरिसप्प ११ MBP पढमदीउ. १२ M जिणे: K जिणे but corrects  
 it to जणे.

13. १ MBP तह. २ P धाइयसंडो. ३ MBP भिगचंडो. ४ MBP णामें. ५ MBP धामें.

12. 4 b अण्णाणे त्या दि—न विद्यते ज्ञानं यस्मात्तदज्ञानं तेन गूढ प्रच्छादनं तस्माद् दृढा मुग्धभावो  
 येषाम्. 5 a समत्तिउ पर्याप्तय. 6 a पज्जत्तएहिं परिपूर्णैः. 9 b उहर जलचरविशेषः.

13. 1 गयगणियमेरया गतगणितमर्यादाः. 4 b अरुणधामो रक्तच्छविः. 5 a रुजगो रुक्कः.

कौचो एवं दीवसमुद्गा	दूणपिहूँ दावियणियमुद्गाँ ।
एएसुं तिरियाणं ठाणं	जलयरथलयरणहयरयाणं ।
वियलिंदियपंचिंदिययाणं	एण्हि वोच्छं कायपमाणं ।
साहियजोयणसहसुच्छेहं	पउमं दीसइ वड्डियदेहं ।
अवि य दुकरणो को वि वरिद्धो	वारहजोयणदीहो दिद्धो ।
होइ तिकोसो तिकरणवंतो	चउकराणिल्लो जोयणमेत्तो ।

10

घत्ता—लवणणवि कालणवि विउले होंति सयंभूरमणि झस ॥

सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्टारह लवणसमुद्गमच्छया ।

णंव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालोए दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहण्णवि जे व्हंति	ते जोयण पंचसयाइं होंति ।
गयणंगणचरहं थलंभचरहं	संमुच्छिमगन्भसरीरधरहं ।
कइवयचावइं काहं मि गणंति	तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु	पज्जत्तिल्लहु जोयणसहासु ।
जलगन्भजम्मि मवियाइं ताइं	पंचं जि जोयणइं सयाहयाइं ।
एयहं तीहिं मि संमुच्छिमाहं	परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि	परमेणोगाहण णरविहत्थि ।
थलगन्भयदेहि तिगाउयाइं	परमेण माणभावहु गयाइं ।
सुहुमहु बायरहुं मि धुवुं पवण्णु	अंगुलअसंखभायउ जहण्णु ।

5

10

६ MBP दूणं पि हु. ७ MB add after this: लवणोवहि कालोवहि सामे, सेस समुद् (B सो समुद् वि) वि दीवहु णामे.

14. १ M णवर सरी°; BP णव जि सरी°. २ BP वसंति. ३ P काहिं. ४ MBP पंच वि. ५ M विहत्थि; BP वियत्थि. ६ MPT विअत्थि. ७ MB धुउ; P धुव°; K धुवु.

6 दूण पि हू द्विगुणपृथवः; दा वि य णि य मु द्गा दर्शितनिजाकाराः. 10 a दुकरणो को वि शंखः. 11 a तिकरणवंतो खज्जरकः; b चउकराणिल्लो भ्रमरः.

14. 1 सरीमुहेसु गङ्गादीना समुद्रप्रवेशस्थानेषु. 2 दिसच्छया दिशां प्रच्छादकाः. 5 a काहमि केषांचित्. 7 b सयाहयाइं शतगुणितानि. 9 a विअत्थि विगतास्थि. 10 a तिगाउयाइं तिस्रो गव्यूतयः.

घत्ता—जगि सुहुमणिगोयसमुब्भवहं अवि यसमत्तहुं ण वि रहिउ ॥  
णिक्किट्टु कुसुमयंतं पहुणा उंत्तिमु जलयराहुं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तिरिक्खोगाहणो णाम  
दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥  
॥ संधि ॥ १० ॥

८ M णिक्किट्टुकुसुमपयत्तं. ९ M उत्तम°, P उत्तमु. १० MBP तिरिक्खोगाहणा.

12 य स म त्त हुं य + असमत्तहुं अपर्याप्तानाम्. 13 णि कि ट्टु सर्वजघन्यम्.

## XI

पुणु इंदियभेउ वम्महपसरणिवारण ॥

भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारण ॥ ध्रुवकं ॥

### I

जाणइ सण्णिउ जो पज्जत्तउ  
णिल्लोर्यणतिउ पुट्टपविट्टउ  
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ  
सैत्तेतालसहस्सइं दिट्ठिइं  
चर्क्खदियहु विसउ वक्खाणिउ  
गंधगहणु अँवत्तसमाणउं  
दिट्ठिइं पडिम णिएज्ज मसूरी  
सँहरियतसँदेहेसु पयासउ

पुट्टउ सुणइ सहु गंयसोत्तिउ ।  
रूवुं णियच्छइ अप्परिमट्टउ ।  
वारहजोयणेहिं सुइ पावइ । 5  
अवरु वि दोण्णिं सयइं तेसट्टइं ।  
जेहउ केवलणाणें जाणिउ ।  
सवणु वि जवणालीसंठाणउं ।  
अक्खिय जीहं खुरुप्पायारी ।  
फासु अणेयरूवविण्णायउ । 10

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः  
सौम्यत्वं कुसुमायुधाच्च सुभगं त्यागं बलेः संभ्रमात् ।  
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डकवेर्वल्लभः ॥

M reads विधौ for विधोः; MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभगं, and खण्डः कवेर्वल्लभः for खण्डकवेर्वल्लभः.

GK do not give it.

1. १ MP गयसुत्तउ; B गयसोत्तउ. २ MB णिल्लोयणु. ३ B तित्तपुट्टु. ४ MBP रूउ. ५ MBP सत्तेचालीससहसइं. ६ MBP विण्णि. ७ MBP अइमुत्त°. ८ MBP दिट्ठिहि. ९ M जीय. १० BT सुहरिय°. ११ MB तसदेवेसु.

1. ३ a सण्णिउ समनस्कः; b पुट्टउ स्पृष्टः; गयसोत्तिउ श्रोत्रगतः. 4 a णिल्लोयणतिउ नेत्रं विना त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणानि; पुट्टपविट्टउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकाद्याकारघ्राणोन्द्रियप्रदेशैः स्पृष्टं गन्धादिकं जानाति; b अप्परिमट्टउ अस्पृष्टम्. 5 a णवहि जि भावइ नवयोजनात् स्पर्शं गन्धं रसं जानाति. 6 a दिट्ठिइं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि. 8 a अँवत्तसमाणउं अतिमुक्तकपुष्पाकारम्; b जवणालीसंठाणउं यवकणस्तम्बनालिकासदृशम्. 10 a °हरिय° वनस्पतिकायः.

समचउरंसु ठाणु सुरसत्थहु  
 मणुयतिरिक्खहु छिं प्पि पवुत्तइं  
 खुंजउ वावणंगु णग्गोहउ  
 पइंदिय णारइय सुसंपुड-  
 वियलिंदिय वि वियडजोणीहव  
 पासुंयजोणि देवणारइयहं  
 सीयलुण्ह उण्हेव हुयासहं  
 मंथरगमणहं ससहरवयणहं

हुंडु वि णारयगणहु अहत्थहु ।  
 भोयभूमिवियलहु पढमंतइं ।  
 उब्भासिउ तिरिक्खणररोहउ ।  
 जोणिहिं होंति सकम्मसमुब्भड ।  
 संपुड वियड होंति गब्भुब्भव । 15  
 मीसा गब्भणिवासं लइयहं ।  
 ताहं विहि मि तिविहा पुणु सेसहं ।  
 संखावत्तजोणि थीरयणहं ।

घत्ता—तहिं जीव अणेय णउ लहंति संपुण्ण तणु ॥

णियकम्मवसेण होंति मरेप्पिणु जंति पुणु ॥ १ ॥

20

## 2

होंति अरुह कुम्मुण्णयजोणिहिं  
 अवरहि जोणिहि रुहिरावत्तहि  
 इंदियजुयल जियंति सहरिसइं  
 तीइंदियहु मि राइविमीसइं  
 चउरिंदियहु आउ छम्मासिउ  
 मच्छहु पुव्वकोडि उवइट्ठी  
 वासहं बायालीससहासइं  
 पक्खिहिं ताइं दुसत्तरि भणियइं

केसव राम चक्कि सुहखोणिहिं ।  
 पायडजणवयवंसावत्तहि ।  
 मइं विण्णायउ बारहवरिसइं ।  
 ऐक्कुणवण्णास जि किर दिवसइं ।  
 णिसुणहि पंचिंदियहु वि भासिउ । 5  
 कम्मभूमिभूयरहं मि दिट्ठी ।  
 उरय जियंति जायजीयांसइं ।  
 पलिओवमंइं तिण्णि परिगणियइं ।

२ MB °चउरंस°. १३ MBP छ प्पि य उत्तइ. १४ K reads this line before line 12. १५  
 [BP णारयसुरसंपुड. १६ MBP फासुय°.

2. १ P °जणवइ. २ MBP एक्कुण°. ३ P °जीवासइं. ४ M °ओवम्मइ.

1 b अ हत्थ उ अधोलोकवर्तिनः. 12 b भो य भू मि वि य लहुं प ढ म त इं अत्र यथाक्रमसंबन्धो भोगभूमिजानां  
 धर्मं समचतुरस्रसंस्थानं विकलेन्द्रियाणामन्त्यं हुंडसंस्थानम्; 14 a-b सुसंपुड जो णि हिं संवृतयोनी. 16 a  
 सुय अचित्ता; b मी सा सचित्ताचित्ता. 17 a सी य लुण्ह केषांचिच्छीता केषांचिदुष्णा, उण्हेव हुयासहं  
 जस्कायिकानामुष्णैव योनिः, b ताहं वि हिं मि देवनारकाणाम्, ति वि हा शीता उष्णा मिश्रा च, सेसह  
 नारकतेजस्कायेभ्योऽन्येषाम्.

2. 3 a इंदिय जु य ल द्वीन्द्रिया°. 4 a रा इ वि मी सइं रात्रिविमिश्रितानि. 6 b भू य र हं भूचराणाम्.

b जा य जी या स इं जाता जीविताशा येषु तानि.

खेत्तावेक्खइ कहिं मि तिरिक्खहं एहउ उत्तमाउ पंचक्खहं ।  
मायाविय कुपत्तदाणेण वि एए होंति अट्टझाणेण वि । 10

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख एवहिं माणव वज्जरमि ॥

पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलो <sup>१</sup> थमज्झत्थु सुहासिउ	मणुउत्तरगिरिवलयविहूसिउ ।
जोयणाहं णरखेत्तु रवण्णउ	पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।
जंबूदीउ सव्वदीवेसरु	ए <sup>२</sup> क्कु लक्खु जोयणपरिवित्थरु ।
छावीसाइं पंच अहिययरइं	जोयणसयइं विहियणरणयरइं ।
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें	ए <sup>३</sup> रावउ भणु तेणायारें । 5
उत्तरदाहिणाहं वेयड्डहं	पण्णास जि पिहूलत्तु गुणड्डहं ।
पंचवीस उच्छेहु समासिउ	एक्कु सहसु हिमवंतहु भासिउ ।
सहुं वावण्णहुं वित्थरु साहिउ	सउ तुंगत्तें सिहारि वि साहिउ ।
पंचुत्तरसएण सहुं लक्खिय	दोणिण सहस हिमवइयहु अक्खिय ।
अर्वरहिरण्णवंतु तम्माणउ	साहिउ दोहिं मि ए <sup>४</sup> क्कु पमाणउ । 10
होइ महाहिमवहु रुंदत्तणु	चउसहासअहियउ उद्धत्तणु ।
दोणिण दहोत्तराइं धुंखु सिट्ठउ	हम्मियगिरिदि वि तेत्तिउ दिट्ठउ ।

घत्ता—खेत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥

मा भंति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3. १ MBP तिरियलोउ. २ MBP एकलक्खु जोयणहं पवित्थरु. ३ MBP छावीसाइं. ४ MBP अइरावउ. ५ MB तेणुपयारें; P तेण पयारें. ६ MB पयासिउ; T पसाहिउ. ७ MB हइमवयहु. ८ MBP अवरु. ९ MBP एक्कु°. १० MBP धुउ. ११ MBP रुम्मिहि दुविहु वि. १२ P खेत्तहु चउगुणु खेत्तु गिरि वि चउगुणु गिरिवरहो; T seems to have the same reading: खेत्तेत्यादि- क्षेत्राद्गुरुःगुणं (?) क्षेत्रं गिरेर्गिरिश्चतुर्गुणः.

12 ण व इ छ षण्णवतिः, तथाहि— लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि.

3. 4 a अ हिय य र इं अधिकतराणि. 5 b ते णा या रें तेन आकारेण. 6 a वेय ड्ड हं विजयार्थानाम्. 8 a सा हि उ साधिकः; b सा हि उ कथितः. 10 a तम्माणउ तत्प्रमाणम्; b दो हिं मि द्वयोरपि हैमवत-हिरण्यवतोः.

सम

4

म

रुक्मयडु सहरिसडु  
 तं जि माणु रुक्मयडु सहरिसडु  
 ताडं जि जाणहि बाणतालडं  
 सायरसयडं भणुणं तुंगत्तणु  
 बिहिं मि विदेहहं रुंदिम ईरइ  
 उडुसयाडं चउरासीमीसडं  
 अणुणु वि भणु एयारहसहसडं  
 एउ माणु णउ ल्हसइ गिरुत्तउ

एकवीस जोयणडं पयासडं ।  
 तं जि माणु रुक्मयडु सहरिसडु ।  
 ताडं जि जाणहि बाणतालडं ।  
 सायरसयडं भणुणं तुंगत्तणु ।  
 बिहिं मि विदेहहं रुंदिम ईरइ ।  
 उडुसयाडं चउरासीमीसडं ।  
 अणुणु वि भणु एयारहसहसडं ।  
 एउ माणु णउ ल्हसइ गिरुत्तउ ।

5

घत्ता—छह खेत्तडं एम भोयभुत्तिसंतोसियडं ॥

इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहूसियडं ॥ ४ ॥

10

5

पोमुं णाम हिमवंतंसरोवरु  
 एकु सहसु दीहत्तणु सुच्चइ  
 एयहु अक्खिउ आगमि जेत्तिउ  
 अवरु महाहिमवंतु वरिल्लउ  
 तिविहेण वि गुणेण उव्वलक्खिउ  
 तिग्गिच्छंसरु वि णिसहासीणउं

पंचसयाडं तासु परिवित्थरु ।  
 दहजोयणडं गहीरिम वुच्चइ ।  
 सिहरिमहापुंडरियडु तेत्तिउ ।  
 ओइल्लहु बिउणारउ भल्लउ ।  
 णामु महापोमु जि मडं अक्खिउ ।  
 होइ महापोमक्खडु बिउणउं ।

5

4. १ MBP होंति किं पि. २ MB रुक्मयडु. ३ MBP बाइत्तालडं. ४ MBP णिसहडु. ५ MBP उडुसयाडं. ६ BP तेतीस°.

5. १ MBP पौमणामु. २ MBP हिमवंति. ३ MBP उवरिल्लडु. ४ MBP ओलक्खिउ. ५ MB तिग्गिच्छि वि सरु; P तिग्गिच्छि वि सरु. ६ MBP महापउमक्खडु.

4. 1 a दि हं ति सहा स डं अष्टसहस्राणि. 2 a अ हिय डं तद्योजनभागेनैकेनाधिकानि. 3 b बा ए ता-  
 इ द्विचत्वारिंशत्. 4 a सा हिया डं तद्योजनभागद्वयेनाधिकानि, b सा य र स य डं चत्वारि शतानि. 6 b उ डु-  
 या डं षट्शतानि; °मी स डं युक्तानि. 8 a °सुर कु रु° देवकुरव.; b ल्ह स इ चलति न्यूनं भवति.

5. 4 b ओ इ ल्ल डु उपरितनस्य. 5 a ति वि हे ण विस्तारदीर्घत्वावगाहेन.

णिद्धणीलणयरायणिविद्धु  
सोहइ रम्मरुम्मिकयठाणें

तेवहु जि केसरिसरु दिद्धु ।  
पुंडरीउ तहु अद्धपमाणें ।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिर्कित्तिलच्छिणामालियउ ॥

देवीउ वसंति सरवरि सुंकयकीलियउ ॥ ५ ॥

10

6

पोममहापोमहं तिंणिंछहं  
जलपूरियगिरिकंदरदरियउ  
गंगा सिंधु रोहि भंगाली  
हैरि हरिकंत सीय सीथोयय  
कैणयकूल रुपयकूलाली  
एयउ भणियउ चोहैह सरियउ  
अड्डाइज्जहं पंच जि मंदर

केसरिदोपुंडरियहं सच्छहं ।  
सुणसु महाणईउ णीसरियउ ।  
रोहियास मंथरगइ लीली ।  
णारी णरकंता वि महोयय ।  
रत्ता रत्तोया वि झसाली ।  
वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ ।  
बहुवेयडुखयरकुलसुंदर ।

5

घत्ता—वक्खारगिरिंद कुंडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥

खेत्तंतहिं अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियसिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीचहु बाहिरि थक्कइं  
पढम सुसंकिण्णइं पुणु रुंदइं  
कयतिहेयगुणणें संजुत्तइं

ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं ।  
ताइं होंति मल्लयपडिछंदइ ।  
कम्मभोयभावेण विहत्तइं ।

७ P महापुंडरीउ तहं अद्ध°, ८ MK °दिहिकित्तिवुद्धिलच्छि° . ९ M सुहकयकीलउ; BP सुहकयकीलियउ.

6. १ MBP तिंणिंछहं. २ B omits this line. ३ B omits this line. ४ P कसयकूल.  
५ MP चउदह.

7. १ M सल्लइपडि°. २ B कयतिहेण गुणणें; P कयतिभेयगुणणें.

7 a °णयराय° नगराजः पर्वतः.

6. 3 a भंगाली कल्लोलयुक्ता. 9 खेत्तंतहिं क्षेत्राभ्यन्तरेषु.

7. 1 b ठाणइं अन्तर्द्वीपाः; सहावामुक्कइं अपरित्यक्तस्वरूपाणि. 2 b मल्लयपडिछंदइं शरावा-  
काराणि. 3 a °तिहेय° उत्तममध्यमजघम्याः, अधोमध्येर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा; b कम्मभोयभावेण कर्म-  
भूमिभावः स्वचेष्टया फलाहारादिग्रहणं तेन.



लवणसमुद्दि अट्टचालीसइं  
बहुजोयणसयमाणविसेसइं  
थीपुरिसइं दो दो रइरत्तइं  
विगयाहरणइं णिच्चेलक्कइं  
रम्मइं सोमइं णिच्चपहिट्टइं

कालोयइ तेत्तियइं जि देसइं ।  
संति कुभोयभूमिआवासइं । 5  
भइसहावइं मणहरगत्तइं ।  
कण्हइं धवलइं हरियइं सक्कइं ।  
जिण्णोणाहेहिं जिणागमि सिट्ठेइं ।

घत्ता—एक्को रुयधारि पुंछंधारि तहिं सिंगधर ॥

पुच्चादिसु होंति उत्तरदिसि णिन्भास णर ॥ ७ ॥

10

## 8

सक्कुलिकण्ण कण्णपावरण वि  
हरिसुह करिसुह झससामलमुह  
सहूलाणण मेसविसाणण  
सयल वि उज्जय पंकयलोयण  
अट्टारहजाईहिं रवण्णा  
एक्कु जि पैलिओवमु जीवेप्पिणु  
हरिहिमलोहियपीयलवण्णा  
हारदोरैकंकणकुंडलधर  
मइरंगहिं वीणापडहंगहिं  
भायणभोयणंगभवणंगहिं  
एयैहिं कप्परुक्खहिं महि छज्जइ  
अहममज्झिंमुत्तिमसुहसंगइं

लंबकण्ण ससकण्ण कुमणुय वि ।  
आदंसणमुह जलहर कइमुह ।  
सत्तारहत रुहलरसमाणण ।  
एक्कोरुय गिरिमट्टियभोयण ।  
छण्णवइहिं खेत्तेहिं विहिण्णा । 5  
होंति भवणवणवासि मरेप्पिणु ।  
तीससुभोयभूमिविथिण्णा ।  
दिव्ववत्थ सिरवलइयसेहर ।  
विविहविहूसणंगजुइअंगहिं ।  
अंबरदीवकुसुममालंगहिं । 10  
भोउ णिरंतरु मणुयहिं भुज्जइ ।  
ललियसहावइं णिरु ललियंगइं ।

MBP किण्हइं. ४ MBP जिणणहेण. ५ MBB दिट्ठइं. ६ MBP पुच्छधारि.

8. १ P जलहरमुह कइ°. २ MPK पलियओवमु. ३ MBP उप्पण्णा. ४ P °डोर°. ५ MBP भोयणभायणंग°. ६ MBP एहिं. ७ MBP रज्जइ. ८ B भाउ. ९ P भुंजइ. १० BBP °मुत्तम°.

b भइसहावइं स्वभावमार्दवादियुक्तानि. 7 b सक्कइं रत्तवर्णानि.

8. 3 b सत्तारहत रुहलरसमाणण सप्तदशप्रकारास्तरुफलरसाहाराः. 4 b एक्कोरुय एकपादाः.  
a मइरंगहिं मद्याङ्गैः.

एकं दु तिणिण पल्ल जीवेप्पिणु

होति कप्पवासेसु चैप्पिणु ।

घत्ता—तीसैविह पउत्त भोयभूमि धुअ मणुय जिह ॥

सइं कालवसेण अद्भुव दहविह होति तिह ॥ ८ ॥

15

9

दहपंचविह कम्मभूमाणुस  
मेच्छ चीण हुण पारस बब्बर  
इड्ढिअणिड्ढिवंत अज्जणवर  
वासुएव वलएव महाबल  
होति अणिड्ढिवंत णाणाविह  
जिणु अहमेण जियइ बाहत्तरि  
तहु अहिययरउ सीरि पउत्तउ  
पुव्वहं चउरासीलक्खेयहं  
पुव्वकोडिसामणु वि थिरकरु  
पक्खु मासु अयणइं संवच्छर  
णर णिसैट्टदवियंगकउग्गम  
गम्भेसु वि गलंति तणु लेप्पिणु  
उत्तमेण धणुणुलयहं णिसीहा  
सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि  
तम्हाओ वि होति लहुययरा

अज्ज मेच्छ इच्छामाणियरस ।

भासारहिय णिरूह णिरंवर ।

इड्ढिवंत जिणवर चक्केसर ।

चारण विज्जाहर उज्जलकुल ।

लिविदेसीभासावत्तण बुह ।

5

अहिउ सहसु वरिसइं जीवइ हरि ।

सत्तसयाइं चक्कि णिक्खुत्तउ ।

परमाउसु जिणहरिवल्लरायहं ।

जीवइ कम्मभूमिजायउ णरु ।

के वि जियंति कईवय वासर ।

10

ते सज्जो मरंति संमुच्छिम ।

अवर वि कईवय दियह जिणप्पिणु ।

पंच सँवायइं सयइं पईहा ।

णिक्किट्टेण पउत्त दुहत्थ वि ।

अइरहस्स वामण खुज्जयरा ।

15

घत्ता—मणुएसु ण होति सत्तममहिर्णारय विसम ॥

जिह ए तिह ते उ वाउकायकयभावतम ॥ ९ ॥

११ MBP मरोप्पिणु. १२ P तीस वि इह उत्त. १३ MBP अद्भुय.

9. १ P वच्छर, but it records a *p* वब्बर. २ M अहउ. ३ M वरिसइं. ४ MBP °वल-  
एवहं. ५ B णिसइं; P विसइं. ६ M धणुणयहं. ७ MB सवाइं सयाइं; P सयाइं सवाइं. ८ MB णाराय.

११ 2.b-णि रूह परस्परविवादादिता निर्विचाराः. 7 *b* णिक्खुत्तउ निश्चितम्. 8 *a* एयहं एतेषाम्.  
11 *a* णिसइं द वियंगकउग्गम निसइं प्रस्वेदादिद्रव्य तस्मादुत्पन्नाः. 13 *a* णिसीहा नृसिंहाः; *b* पईहा  
प्रदीर्घाः. 15 *b* अइरहस्स अतिलघवः.

## 10

01 होंति के वि दूसहणिट्ठावस  
 चरयपरिवायय बंभामर  
 जंति<sup>२</sup> तिरिक्ख वि तं जि जि वयहर  
 सावयवयहलेण सोलहमउ  
 रिसिवपहिं विणु पुणु तहु उप्परि  
 सत्तुमिच्चुतणमणिसमचित्तं  
 जिणलिंगेण होंति वयभरधर  
 आ सव्वत्थसिद्धि णिग्गंथहं  
 6 णारउ मरिवि ण णारउ जायइ  
 अमरु ण णरयहु णारउ सग्गहु  
 1 होइ तिरिक्खु वि चउगइगामिउ  
 पमियाउहुं तिरियहुं तिरियत्तणु

जोइसवणभवणंतहिं तावस ।  
 आजीव वि सहसारालय सुर ।  
 णर सम्मत्ताराहणतप्पर ।  
 सग्गु लहइ माणुसु दुहविरमउ ।  
 को वि ण भुंजइ अहमिदहं सिरि ।  
 संजमेण सुद्धे चारित्तं । 5  
 अभविय उवरिमगेवज्जामर ।  
 होइ सूइ सम्मत्तपसत्थहं ।  
 सुरु वि ण सुरु मुणिणाहु विवेयइ ।  
 वच्चइ सविहिविहंसियमग्गहु ।  
 जिह तिह माणउ दुक्खायाँमिउ 10  
 अविरुद्धउ मणुयहुं मणुयत्तणु ।

01 घत्ता—तिहिं गइहिं ण होंति मणुय तिरिक्ख सोक्खच्चुयहिं ॥

पलिओवमजीवि सग्गु लहंति सइंभुवहिं ॥ १० ॥

## 11

01 संखाउस जे जीवाहारिय  
 सरिसव जंति पढम बीयावणि  
 पुहइ चउत्थी जंति महोरय

अण्णोण्णेण वियारिय मारिय ।  
 पक्खि तइय वालुप्पह दुहखणि ।  
 पंचमियहि केसरि मयमारय ।

10. १ MBPT चारय. २ MP जंत तिरिक्ख त जि जि. ३ MBP वयधर. ४ MBP सव्वट्ट°. T दुक्खायासिउ. ६ MT सयभुवहिं.

11. १ P विमणस सरठ पढम°. २ K वालुयपह. ३ P महोरय. ४ MP भिगमारय, B भियमारय.

10. 2 a चरयपरिवायय आहिंडिकपरिव्राजकाः, b आजीव काजिकाहाराः; 8 b सूइ सूति-  
 कल्पति; 10 b सविहिविहंसियमग्गहु स्वाविधिना हिंसादिविधानेन विध्वंसितः स्वर्गप्रापको धर्मलक्षणो मार्गो  
 यस्य, देवस्तु नरकाप्रापकधर्मारम्भकचेष्टितविधानेन नरकमार्गो विध्वंसितः. 11 b °आयासिउ पीडितः. 12. a  
 पमियाउहुं प्रमितायुषाम्. 14 सइंभुवहिं स्वोपार्जितपुण्यैः.

महिलउ छैट्टहि वि हुरक्कमियहि  
 आयउ मघविहि लहइ णरत्तणु  
 णिग्गउ अंजणाहि किर णिब्बुइ  
 सेलहि वंसहि घम्महि आइउ  
 णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु  
 सव्वत्थ वि माणुंसु उप्पज्जइ  
 राम उड्ढगइ सोक्खहु सामिय

होंति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।  
 को वि अरिट्टहि देसवयत्तणु । 5  
 को वि कर्हि मि पावइ पंचमगइ ।  
 होइ को वि तित्थयरु मर्हाइउ ।  
 णउ लहंति णिम्मलु जसकित्तणु ।  
 एम पउत्तइ सुत्तु पउंजइ ।  
 केसव सव्व अहोगइगामिय । 10

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥

णरयहु णिग्गिवि होंति ण हलहर चक्कहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ  
 वायरपुहइ तोय पत्तेयहं  
 णउ लहंति सुरणियर सतामस  
 अक्खमि णरयवासु भीसावणु  
 पढमासीयहिं सिद्धुं सहासहिं  
 चउवीसहिं वीसहिं बिहिं अट्टहिं  
 एम सहससंखाहिउ घणु भणु  
 आयामु वि असंखु संखेवें  
 रियणसक्करप्पह वालुयपह

तिरियत्तु वि जिणबुद्धें बुद्धउ ।  
 देव चवेवि होंति किर एयहं ।  
 पुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।  
 णाणाडुक्खलक्खदरिसावणु ।  
 पुणु बत्तीसहिं अट्टावीसहिं । 5  
 अट्टहिं णाणसहाउवइट्टहिं ।  
 खरपंकयलक्खु जि मंदत्तणु ।  
 पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवें ।  
 पंकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्टिहि. ६ MP हुरक्कमियहि. ७ K देसवइत्तणु; P सव्वइवइत्तणु. ८ P महावउ. ९ K माणउ सु.  
 12. १ B पत्तेय वि. २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहुं; B होति समागय देवत्तहु कि वि; P देवत्तणु ण होइ किर एयहं. ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु. ४ B सिद्धु समासहिं. ५ MB केवलणाण°; M records a p अट्टहिं for केवल°. ६ B omits this foot; P reads it after 8 b, MBP add after this: सोलह चोरासी सहस जि गुणु, एक्केकउ जि लक्खु रंदत्तणु. ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुप्पह.

11. 4 a हुरक्क मियहि दुःखव्याप्त्यायाम्. 5 a मघविहि षष्ठ्याः; b अरिट्टहि पञ्चम्याः.  
 6 a अंजणाहि चतुर्थ्याः. 7 a सेलहि तृतीयायाः; वंसहि द्वितीयायाः; घम्महि प्रथमस्याः.  
 12. 1 a तिहिं कायहिं पृथिव्यव्वनस्पतिभिः. 2 a पत्तेयहं प्रत्येकवनस्पतिकायानाम्. 3 b पुण्ण-सिलोयत्तणु पुण्यश्लोकत्वं शलाकापुरुषत्वं च. 6 a बिहिं अट्टहिं षोडशभिः. 7 a घणु पिण्डः; b खरपंकय-लक्खु खरभागे षोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरशीतिसहस्राणि; मंदत्तणु पिण्डत्वम्.

अवर वि अंतिमिल्ल तमतमपह  
एयउ घणतमजालणिरुद्धउ

णिच्चपउंजियबहुणारयवह ।  
सत्त णरयघरण्णीउ पसिद्धउ ।

10

घत्ता—पुहईसु विलाहं होंति सहावभयंकरहं ॥

घणतिमिरहराहं अगणियजोयणवित्थरंहं ॥ १२ ॥

## 13

तीस पुणु वि पणवीस जि लक्खइं  
दह पुणु तिण्णि एक्कु पंचूणउं  
णरइयहं तहिं भत्थायरइं  
महिमयाइं परिमउलियवत्तइं  
लोहकीलकंटालिकरालइं  
एसु सुकिण्हणीललेसावस  
लेंति देहु सहसत्ति मुहुत्ते  
हवइ विहंगणाणु तहिं मेच्छहं  
कालिं गालपुंजसंणिहयर  
विरइयभीमभिउडि रोसुब्भड  
जिह जिह ते मुणंति अप्पाणउं  
दाढाभीसणु मुहुं णिन्वायइ

पुणु पण्णारह दावियदुक्खइं ।  
लक्खु विलाहं पंच अहिठाणउं ।  
दंसियंहरिकरिरूववियारइं ।

हेट्टामुहओलंबियगत्तइं ।

दुग्गंधइं दुग्गमतिमिरालइं ।

5

उप्पज्जंति तिरिय अह माणुस ।

वेउव्विउ णिउत्तु हुंडत्ते ।

अवहिसहावे जिणमयदच्छहं ।

पयाडियदंतपंति दट्टाहर ।

कविलकेस परमारणकक्खड ।

10

तिह तिह तं तं संभवठाणउं ।

अहवा पाउ किं ण किर घायइ ।

घत्ता—हेट्टामुह झत्ति ते पडंति असिपत्तवणे ॥

सइं अण्णु हणंति अण्णहिं पडिहम्मंति रणे ॥ १३ ॥

९ B °भयकरइं. १० MB °वित्थरइं.

13. १ P विलासइ. २ MPT अहठाणउं, B अहिठाणइ. ३ M णरइयह, BP णेरइयहिं. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ P °कंटाल°. ७ P सुमरइ ठाणउं. ८ P कं ण ९ MB अण्णः

13 विलाहं विलानाम्.

13. 2 b अहिठाणउं सप्तमनरकः 3 a भत्थायारइ भन्नाकाराणि. 4 a महिमयाइं पार्थिवानि. 5 a °कंटालि° कण्टकपंक्तिः. 8 a विहंगणाणु विभङ्गज्ञानम्., b जिणमयदच्छह जिणमतोच्छेदकानाम्, 9 a कालिं गाल° कृष्णाङ्गार 10 b °कक्खड निष्ठुरहृदया.

14

णउ मज्झत्थु मित्तु उवयारिउ  
 खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ  
 सूइणिह तणु दुच्चरु भूयल्लु  
 जं<sup>१</sup> करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ  
 खंडियकरचरणणणगत्तइं  
 फलइं वज्जमुट्ठिं व्व कठोरइं  
 मँहिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण  
 कुहिणिउ जलणजालपज्जालियउ  
 णहाइ जहिं जि तहिं दूमियपिंडइं  
 बिहिं तिहिं पंचहिं पीडिवि धरियहु

जो जो दीसइ सो सो वइरिउ ।  
 जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ ।  
 उणहु सीउ दुच्चरु चंडाणिल्लु ।  
 वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ ।  
 रुक्खहं खग्गसमाणइं पत्तइं । 5  
 वँरि पडंति णिइलियसरीरइं ।  
 खंति विउव्वणाइ पंचाणण ।  
 जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ ।  
 पूयरुहिरकिमिभरियइं काँडइं ।  
 णहायहु पूयदहहु णीसरियहु । 10

घत्ता—उक्कत्तिवि तासु दिज्जइ कँत्ति णियासणउं ॥

आयसवल्याइं सिहिताँवियइं विहूसणउं ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणुः  
 भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं  
 आहरियइं पुग्गलइं अकामहु  
 णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं  
 जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ  
 जं अग्घायइ तं कुँणिमंगउ  
 उद्धँसासु अइखासु जलोयरु

बइसह जहिं जि तहिं जि सूलासणु ।  
 णीरसाइं फरुसाइं विरुद्धइं !  
 असुहत्तेण जंति परिणामहु ।  
 फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं ।  
 जं चितइ तं तं मणसल्लउ । 5  
 णारँयखेत्ति णउ काइं मि चंगउ ।  
 अच्छिक्कुच्छिसिरवियण महाजरु ।

14. १ P दुत्तरु. २ MBP जें. ३ MBP कठोरइं. ४ M वर; P उवरि. ५ MBP महिकुहरंतरि.  
 ६ MBPT दुम्मिय°. ७ MBP कुँडइं. ८ MBP कित्ति; ९ MBP °तावियउं.

15: १ P जहिं तहिं जि; २ MBP कुणियंगउ. ३ MB णरयखेत्ति. ४ MBP उद्धँसासु.

14 3 a सूइणिह सूचीसदृशम्. 8 a कु हि णि उ मार्गाः. 9 a दूमि य पिंडइं पीडितस्य शरीराणि.  
 11 कत्ति चर्म; णिया सणउं परिधानम्. 12 सि हि ता वि य इं आग्निना तापितानि.

15. 7 b °वियण वेदना.

संभवंति दुक्कियहलगेहइ

सव्वउ वाहिउ णारयदेहइ ।

घत्ता—अणुमीलणु कालु सोक्खु ण लब्भइ किं पि जहिं ॥

सारीरुं दुक्खु काइं कहिज्जइ राय तहिं ॥ १५ ॥

10

## 16

हउं णारायणु पडिणारायणु

हउं महिवइ होंतउ सुहभायणु ।

एम भणंतु कयंतु व कुप्पइ

माणसिएं दुक्खें संतप्पइ ।

दाणवणिवहहिं पडिचोइज्जइ

जुज्जमाणु सो एम भणिज्जइ ।

तुहुं अणेण चिरभवि सरदारिउ

वरमहिमहिलाकाराणि मारिउ ।

विंझमहागिरिगेरुयपिंजरु

सीहें एण हयउ तुहुं कुंजरु ।

5

पक्खि एण गिलिउ तुहुं विसहरु

महिसें णेण दलिय तुहुं हयवरु ।

अविरलखरणहरेहिं णिरुद्धउ

वग्घेणेण हरिणु तुहुं खद्धउ ।

हणु हणु एहु एम पच्चारिउ

णं वाएण जलणु संचारिउ ।

जुज्जइ णारउ णारय गौदलि

णिवडमाणु कौतासाणि सव्वलि ।

घत्ता—कंपणकणएहिं लंगलमुसलहिं रिउ दलइ ॥

10

णियदेहु जि ताहं पहरणरूवहिं परिणमइ ॥ १६ ॥

## 17

अण्णें अण्णु सुंसल्लें सल्लिउ

अण्णें अण्णु मुंसुंढिइ पेळ्ळिउ ।

अण्णें अण्णु तिसूलें भिण्णउ

अण्णें अण्णु रहंगें छिण्णउ ।

अण्णें अण्णु हुआसाणि घित्तउ

अण्णें अण्णु पसु व्व विहित्तँउ ।

अण्णें अण्णु खुरुप्पें खंडिउ

अण्णें अण्णु वियारिवि छंडिउ ।

५ BP अणुमीलणकालु. ६ MBP सारीरिउ.

16. १ MBP कुतासाणि. २ MBPK कप्पण°, but GT कपण°. ३ MP परिणवइ.

17. १ MBP सुसेल्लें. २ MBP मुसुंढिइ. ३ MBP read this line as अण्णें अण्णु रहंगें छिण्णउ, अण्णें अण्णु तिसूलें भगगउ. ४ MBP विहत्तउ.

16. ३ a दा ण व णि व ह हिं दैत्यसमूहैः; प डि चो इ ज्ज इ प्रेर्यते. ४ b सं चारि उ उद्दीपितः. ५ a गों द लि संग्रामे मेलापके वा; ६ स व्व लि सर्वलोहमयी घाणी (? ) तस्याम्.

Handwritten notes on the left side of the page, including mathematical symbols and text.

Handwritten notes on the right side of the page, including mathematical symbols and text.

Handwritten text centered on the page, possibly a title or a specific section header.

Small handwritten text or symbol in the center of the page.

Vertical column of handwritten notes on the left side, containing several lines of text.

Vertical column of handwritten notes on the right side, containing several lines of text.

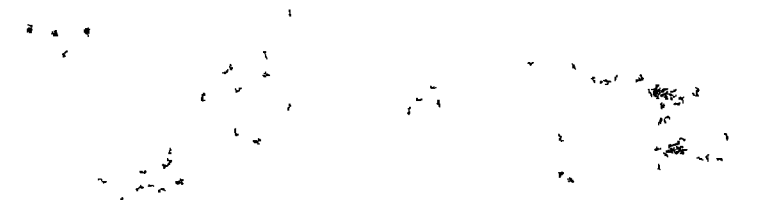
Handwritten text centered on the page, below the main title area.

Small handwritten text or symbol in the center of the page.

Vertical column of handwritten notes on the left side, lower section.

Vertical column of handwritten notes on the right side, lower section.

Large block of handwritten notes at the bottom of the page, spanning across both sides.





छट्टियाहि च्चार्वहं जिणभणियइं  
 देहुच्छेहु दुहोहदुंगमियहि  
 एकु पहिल्लइ दुक्कियदुज्जइ  
 तिज्जइ णरइ सत्त चोत्थइ दह  
 छट्टइ पुणु बावीस ण रहियइं

दोण्णि सयइं पण्णास जि गणियइं ।  
 पंचसयाइं होंति<sup>१</sup> सत्तमियहि । 5  
 जलहिपमाणइं तिण्णि दुइज्जइ ।  
 सायराइं पंचमि सत्तारह ।  
 सत्तमि तीस तिअहियइं कहियइं ।

घत्ता—कंदंत कणंत महिहि घुलंत सुहंतरिय ॥

जीवंति हयास णारय तिलु तिलु कप्परिय ॥ १९ ॥

10

## 20

ते जियंति अहमेण अरम्महि  
 जं घम्महि उंत्तिमु तं वंसहि  
 जं वंसहि उत्तिमु तं सेलहि  
 जं सेलहि उत्तिमु णिद्धिट्टउ  
 जं अंजणाहि परमु पवियप्पिउ  
 जं जि अरिट्टहि किर परमाउसु  
 जं पूरउ मघविहि दुहतवियहि  
 विक्किरियासरीरविण्णासइं  
 होंति<sup>२</sup> अहोहो रुंदइं विवरइं  
 होंति अहोहो रणइं दुवेक्खइं

फुडु दहवरिससहासइं घम्महि ।  
 आउ जहण्णउं दलियसुहंसहि ।  
 आउ जहण्णउं रउरवरोलहि ।  
 अंजणाहि तं किर णिक्किट्टउ ।  
 तं जि अरिट्टहि अहमु विर्यप्पिउ । 5  
 तं मघविहि देसिउ अंचिराउसु ।  
 तं आसण्णु मरणु माघवियहि ।  
 होंति<sup>३</sup> अहोहो दीहाउस्सइं ।  
 होंति अहोहो मंदइं तिमिरइं ।  
 होंति अहोहो तिच्चइं दुक्खइं । 10

घत्ता—जुज्झंतहं ताहं पहरणकोडिहिं णिदलिय ॥

तणुलव लग्गंति सूयलवा इव संमिलिय ॥ २० ॥

२ MBP चावइं. ३ B °दुग्गमियहि. ४ PK होइ.

20. १ MBP उत्तमु and also elsewhere in this kadavaka. २ P °लोलहि. ३ MBP पयंपिउ. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP दुपेक्खइं. ७P पारलवा.

19. 9 सुहंतरिय सुखरहिताः.

20. 2b °सुहंसहि °सुखाशायाम्. 18 °b दीहाउस्सइं -दीर्घाणि आयूंषि. 12 सूयलवा पारदस्य कणाः.

21

अक्खमि सुर दहवसुपंचविह वि  
 एयहि रयणप्पहहि धरिस्सिहि  
 असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं  
 बाहत्तरि लक्खाइं सुवण्णहं  
 दीवसमुद्दथणियतडिणामहं  
 एक्केक्कहु लक्खाइं छहत्तरि  
 लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं  
 कोडिउ सत्त दुँहत्तरि लक्खइं  
 भावणभवणइं एम पउत्तइं  
 भूयरक्खसावासविसेसइं  
 अवराइं मि पविमलसिरिहारइ  
 वेत्तरणयरइं अय्यरमणियइं

सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।  
 विवरंतरि बहुरइरसथत्तिहि ।  
 णायघरहं चउरासीलक्खइं ।  
 भवणहं भूरिभासमाइण्णहं ।  
 आसाणलकुमारवरधामहं । 5  
 अक्खइ एम मयणमयकेसरि ।  
 आवासाहं समीरकुमारहं ।  
 पिंडीकयइं होंति पच्चक्खइं ।  
 चउँदह सोलह सहस णिहँत्तइं ।  
 वीणावेणुपणवणिग्घोसइं । 10  
 वणगयणयलजलहिसरतीरइ ।  
 होंति गणंतहं संखाइयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर ॥

णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिचर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्ठसरिससंठाणइं  
 पंचवण्णरयणावल्लिखइयइं  
 जोयणसइ खेत्तम्मि दहोत्तरि

संखारहियइं होंति विमाणइं ।  
 बाहल्लत्ते पुणरवि रइयइं ।  
 अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि ।

21. १ MBP धरत्तिहि. २ MBP असुरघरइं. ३ MBP °भाइण्णहं. ४ M बहत्तरि. ५ K चोइह. ६ K णिउत्तइं. ७ MB परिमल°. ८ MBP सरितीरइ. ९ MBP विंत्तर°. १० MBP अइ°; K अय° but corrects it to अइ°.

22. १ MBPT बाहालत्ते पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि. २ MBP जोयणसय°.

21. 3 a समक्खइं सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिनां वा प्रत्यक्षाणि. 4 a सुवण्णहं सुपर्णकुमाराणाम्; b भूरि-भासमाइण्णहं प्रचुरप्रभासमाकीर्णानाम्. 5 b आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामत्रिकुमाराणां च. 7 a लेसाहिय षडधिकाः. 10 b °पणव° पट्टहः. 11 a पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके.

22. 3 a जोयणसइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे.

अवरइं लंबियघंटायारे  
 बत्तीस जि लक्खइं सोहम्मइ  
 दुदहं सणकुमारि माहिंदइ  
 अत्थि विमाणहं उवाणियसोक्खइं  
 पण्णास जि लंतवि काँविट्टइ  
 सुक्कमहासुक्कइ चालीस जि  
 आणय पाणय आरण अञ्चुय  
 हेट्ठिमगेवज्जइ एयारह  
 सत्तुत्तरु मज्झिमहि भाणिज्जइ  
 णव जि णउत्तरि पंचाणुत्तरि  
 चउरासीलक्खाइं णिकेयहं  
 एक्कीकयइं ण लेक्खिं विरुद्धइं

थियइं असंखदीववित्थारें ।  
 अट्ठावीसीसाणि सुरम्मइ । 5  
 अट्टलक्ख परिभामियसुरिंदइ ।  
 बंभि सैवंभुत्तरि चउलक्खइं ।  
 सहसइं हौंति जिणाहिवसिट्ठइ ।  
 छह सयारसहसारहिं सहस जि ।  
 चउकप्पहिं सत्तंसय संथुय । 10  
 अवरु वि सउ सुरपवरागारहं ।  
 णवइ एक्कु उवरिमहि गणिज्जइ ।  
 पंच विमाणइं सोक्खणिरंतरि ।  
 सत्ताणउदिसहासइं एयहं ।  
 अण्णु वि तेवीसइं लइ लद्धइं । 15

घत्ता—गेहहं तुंगत्तु विहिं कप्पहिं कवडेण विणु ॥

जोयणहं सयाइं उहुमाणइं वज्जीरइ जिणु ॥ २२ ॥

### 23

पंचसयाइं विहिं मि उवरिल्लहिं  
 उप्परि विहिं चत्तारि सउद्धइं  
 पण्णासयइं तिण्णि विहिं अक्खमि  
 पुणु चउकप्पहं हम्मुच्छेहउ  
 पुणु दुइ दुइं दिवइं पुणरवि सउ  
 पुणु उद्धत्तै उवरि विमाणइं

चउ अहुं जि विहि ताहं पैहिल्लहिं ।  
 घरइं वरइं णाणामणिणिद्धइं ।  
 सयइं तिण्णि पुणु विहिं जि णिरिक्खमि  
 अट्ठाइज्जसयाइं सरेहउ ।  
 पुणु पण्णास समीरिउ उच्छउ । 5  
 पंचवीसजोयणइं पहाणइं ।

३ K अवरें. ४ MBP दोदह सणकुमारि. ५ MBP सुवंभोत्तरि. ६ P कापिट्टइ. ७ MBP सत्तसयइं.  
 ८ MP सत्ताणवदि°. ९ MBP लेक्खविरुद्धइं. १० P अण्णु वि पुणु तेवीसइं लद्धइ. ११ K तेवीस जि लइ.  
 १२ K वज्जरिइ.

23 १ MBP अहु. २ MBP पइल्लहिं. ३ MBP सुरेहउ; K सुरेहउ but corrects it to  
 सरेहउ. ४ MBP पुणु. ५ MBP दिवहु.

6 a दुदह द्वादश.

23. 2 a चत्तारि सउद्धइं चतुःशतोर्ध्वानि. 4 a हम्मुच्छेहउ गृहस्योच्छ्रयः; b सरेहउ सप्तोभा.

सव्वट्टु चूलिय लंघेण्णिणु  
तम्मि तिलोयहु सिहरि णिसण्णी  
ससहरहिमणिहच्छायारी  
जोयणाइं जोइय णीसल्लें

बारहजोयणारं  
पणयालीसल्लं  
सिद्धयहि  
महुमपुण्ड्रं

घत्ता—सविमाणहु मज्झि सँयणि महाखहि  
उववादसहावे भिण्णमुहुत्तें लेंदि

मउडेहिं हारेहिं  
कंचीकलावेहिं  
भूसार्पहासेहिं  
वेउव्वियंगेहिं  
चउरंसठाणेहिं  
अँणमिसहिं णयणेहिं  
विच्छिण्णतौवेण  
कणयं च गयलेव  
णक्खाइं चल्हं  
रत्ताइं पिच्चइं  
मीसियउ मन्हं  
मत्थिक्कमुइं  
सोहणगेइं

~~मउडेहिं हारेहिं~~  
~~कंचीकलावेहिं~~  
~~भूसार्पहासेहिं~~  
~~वेउव्वियंगेहिं~~  
~~चउरंसठाणेहिं~~  
~~अँणमिसहिं णयणेहिं~~  
~~विच्छिण्णतौवेण~~  
~~कणयं च गयलेव~~  
~~णक्खाइं चल्हं~~  
~~रत्ताइं पिच्चइं~~  
~~मीसियउ मन्हं~~  
~~मत्थिक्कमुइं~~  
~~सोहणगेइं~~

६ MBP बाहुल्लें. ७ MPT

24. १-P °डोरेहिं.

६ MBP °प्पहावेहिं. ७ V.F

BP, चउतीसे°.

९ K कहमि.

11 स य णि महा खहि मुहूर्तं यावत्तावत्कालेन

24. १५ a वउरंसठाणेहिं

सुवर्णमिव. 11 a मीसियउ मन्हं, ६ इल्लं

वन्द्यानाम्. 8 a

जीवति; b ऊ-

b सु र विल य हं

उवहरकवाडाइं	सइं हौंति वियडाइं ।	
हरिसेण वग्गंति	सहस त्ति णिग्गंति ।	15
सुरजोणिसंपुडहु	मणिकिरणपायडहु ।	
जय देव देविंद	जय णाह चिरुं णंद ।	
एवं पघोसंति	परियणइं तूसंति ।	
सव्वहिं मि तणुमाणु	उद्दिट्टु जिणणाणु ।	

घत्ता—असुरहं पणवीस दह सेसाहं सव्वेतरहं ॥

देहहु दीहत्तु सत्त जि धणु जोइससुरहं ॥ २४ ॥ 20

## 25

विहिं रयणीउ सत्त विहिं छह भणु	पुणुं विहिं पंच समुण्णउ सुरयणु ।	
पुणु चउहुं मि चत्तारि जि गीयउ	पुणरावि आहुट्टु जि विहिं णीयउ ।	
तिण्णेव य रयणिउ सवियप्पहिं	दहपंचमसोलहमयकप्पहिं ।	
दो पुण अड्डु पढमगेवज्जहि	मज्झत्थियहि दोणिण जंगपुज्जहि ।	
होइ दियड्डु रयणि उवरिल्लहि	अमरवोदिपरिमाणु सुहिल्लहि ।	5
णव पंचाणुत्तरहं मि सारउ	एक्कुं जि रयणि पउत्तु सरीरउ ।	
अणिमामहिमालधिमापत्तिहिं	ईसत्तणवसित्तगईसत्तिहिं ।	
जुत्तकामरूवै कामाउर	कीलालोललील सयरामर ।	
णउ खुज्जय वामण वड हुंडय	णारी पुरिस जि णउ ते पंडय ।	
आईसाणकप्पसंभवणउं	जावच्चुउ ता देविहिं गमणउं ।	10
भावणाइं णाणात्तणुधारा	आईसाण कप्पपडिचारा ।	

८ M णिरु.

25. १ MBP पुणु चहुं; T पुणु विहिं. २ MBP जगि पुज्जहि. ३ MBP परमाणु. ४ MBP एक. ५ MB ०मइसत्तिहिं. ६ MBP सयलामर. ७ MBP वावण. ८ M संढय. ९ MBP कायपडि०.

14 a उवहर० वासगृहम्. 19 b उद्दिट्टु जिणणाणु कथितं जिनज्ञानेन.

25. 1 b पुणु विहिं पंच ब्रह्मब्रह्मोत्तरयोर्लान्तवकापिष्ठयोर्द्वयोर्द्वयोः कल्पयुगलयो. पञ्च रत्नयः. 2 a न्न उ हुं मि शुक्रमहाशुकशतारसहस्रारेषु कल्पेषु, b आ हुट्टु अर्धचतुर्थः. 7 b गइ प्राकाम्यम्. 8 b सयरामर सकलामराः. 9 a वड न्यग्रोधसंस्थानाः; हुंड विकलावयवाः, b पंडय नपुंसकाः. 10 a ०सं भवणउं उत्पातिः.

घत्ता—फासें पाडिचारु सणकुमारमाहिंदरुह ॥

रुवेण करंति उवरिम चउकप्पय विबुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुब्भव सुरवर  
वरि चउकप्पहिं मणपडियारा  
सप्पडियार णिणवि अणिंदहु  
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु  
कहमि आउ तियसहं सुहसंगमु  
णायहुं पल्लइं तिणिण वियाणसु  
अड्डाइज्ज पल्ल सोवण्णहं  
सेसहं होइ दिवडु णिरुत्तउ  
एक्कु पल्लु सहं सहसें वरिसहुं  
एक्कु जि सुक्कु सएण समेयउ  
पंच सत्त पुणु णव एयारह  
एक्कुण एक्कवीस तेवीस वि  
चउंत्तीसेक्कताल अडदौल वि  
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं

हौंति सहपडिचार सुहंकर ।  
एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।  
अतुंलसोक्खु णिहिलहु अहमिंदहु ।  
गयरायहुं तिरायवइवंदहु ।  
असुर जियंति एक्कु सायरसमु । 5  
वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।  
दीवहं दोणिण पुंणपरिपुण्णहं ।  
चंदु जियइ लक्खे संजुत्तउ ।  
जीवइ दिणयरु वड्डियहरिसहुं ।  
तारारिक्खहुं ऊणउ णेयउ । 10  
तेरह पण्णारह सत्तारह ।  
पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।  
पंचावण्ण जि पल्लइं जगरवि ।  
आउ अच्चुयंतहं सुराविलयहं ।

घत्ता—वे सत्त दसेव चोइहठारह वि ॥

15

वीस जि बावीस उडु एक्कु वड्डिमु केह वि ॥ २६ ॥

26. १ MBPK अतुलु. २ MB णिराय°. ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं. ४ MBP चउतीसे°. ५ MBP अडताल. ६ P सच्चुयंतहं. ७ MBP चउदह छइह अट्टारह. ८ MBP उडु एक्कु. ९ K कहमि.

26. 2 a वरि उपरि. 4 b तिरायवइवंदहुं त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम्. 8 a सेसहं विद्युदग्निवातस्तनितोदधिदिक्कुमाराणाम्. 10 a सएण समेयउ शतवर्षाधिकं पल्यमेकं शुक्रो जीवति; b ऊणउं किंचिदूलम्. 13 b जगरवि जगद्धास्करः. 14 a सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्; b सुरविलयहं सुरवनितानाम्.

## 27

ताम जाम तेत्तीसंसमुद्दहं  
 कप्पहं कप्पाईयहं एहउ  
 सक्कीसाणहं अवहि पधावइ  
 पुणु दोसग्ग देव वीयहि तलु  
 भणु चउकप्प तियस तइयावणि  
 आणयपाणय सुर पंचमियहि  
 णव गेवज्ज मुणंति महंतउ  
 सुद्धइ ओहिइ अणुदिस सुंदर  
 उप्परि णियविमाणचूडामणि  
 पंचवीस जोयणइं वणेसहं  
 अर्वरु वि हर्वइ ओहि कयसमरहं  
 जिह असुरहं तिह रिक्खहं तारहं  
 सुक्कहु पुणु मइं अक्खिउ भल्लउ

सव्वट्टम्मि आउ कयभइइं ।  
 अक्खमि णाणविसेसु वि जेहउ ।  
 जाम पढममैहिमंतु विहावइ ।  
 पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मलु ।  
 चउसंभूय चउत्थी मेइणि । 5  
 आरणञ्चुयामर छँट्टमियहि ।  
 ताम जाम सत्तमणरयंतउ ।  
 तिज्जैगणाडि पेक्खंति अणुत्तर ।  
 जा ता देव मुणंति महागुणि ।  
 संखाजुत्तइं जोइसवासहं । 10  
 गणियउ जोयणकोडिउ असुरहं ।  
 चंदहं सूरहं गुरुअंगारहं ।  
 संखाहिउ ओहिविसउल्लउ ।

घत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कं रयणप्पहहि ॥

गाउय अद्धहु होइ हाणि सेसैहि महिहि ॥ २६ ॥

15

## 28

कम्माहारु असेसहं जीवहं  
 लेवाहारु वि दीसइ रुक्खहं

णोकम्माहारु वि भवभावहं ।  
 कवलहारु णरोहतिरिक्खहं ।

27. १ MBP तेतीस°. २ MBPT सव्वट्टहंमि. ३ MBP °महिअंतु. ४ K छमियहि. ५ P ते जि-  
 गणाडी. ६ MBP अवर. ७ P वहइ. ८ MB तिक्खहं. ९ MBP सइं. १० MP सखाई ओहीविसयल्लउ;  
 B संखाईउ ओहिविसयल्लउ. ११ MBP जोयणेक्कु. १२ M णीसेसहि.

28. १ B लोवाहारु.

27. 1 b सव्वट्टम्मि सर्वार्थसिद्धौ; कयभइइं कृतसौख्यानि कृतकल्याणानि वा. 3 a पधावइ  
 प्रवर्तते; b °महिमतु पृथिव्याः अन्तः; विहावइ विभावयति जानाति. 8 a अणुदिस नव अनुदिशदेवाः.  
 b अणुत्तर पञ्च अणुत्तरदेवाः. 10 a वणेसहं व्यन्तराणाम्. 11 a कयसमरहं नारकयुद्धकारिणाम्.  
 13 b ओहिविसउल्लउ अवधिज्ञानविषयः.

28. 1 b णोकम्माहारु षण्णां पर्याप्तानां त्रयाणां शरीराणां योगपुद्गलादानं नोकम्माहारुः; भवभावइं  
 शरीरयुक्तानाम्.

ओज्जाहारु पक्खिसंघायहं  
अहमिंद वि करंति तेत्तीसहिं  
वत्तीसेक्कत्तीस पुणु तीसहिं  
एक्केकउ जि एम पडिहम्मइ  
आउणिवंध महोवहिसंखाहिं  
पल्लजीवि पुणु भिण्णमुहुत्तं  
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि  
सरसइं सुरहियाइं अइमिडुइं  
आहरंति दवियाइं सइत्तं

मणभोयणु चउदेवणिकायहं ।  
वोलीणहिं वरवरिससहासहिं ।  
एक्कुणतीसहिं अट्टावीसहिं । 5  
सोलहमे वावीसहिं जिम्मइ ।  
णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।  
णीससंति अह ताहं पुहत्तं ।  
असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।  
सुहुमइं सुद्धइं णिद्धइं इद्धइं । 10  
परिणमंति सहस त्ति तणुत्तं ।

घत्ता—संसारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥  
इंदियभेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

कापं छव्विह चवलथिरेण वि  
जलणिहिविह वि कसायं जाया  
संजमदंसणेण तिचउव्विह  
भव्वत्तेण विविह सम्मत्तं  
आहारं आहारिय जे जे

तिविह तिविहजोपं वेएण वि ।  
अट्टभेय णाणं विण्णाया ।  
लेसापरिणामेण वि छव्विह ।  
सण्णि असंण्णी दो सण्णित्तं ।  
चउसु वि गइसु परिट्टिय ते ते । 5

१ MBPK ओजाहारु. ३ MBP तेतीसहिं. ४ MBP ०सेक्कतीस. ५ MBP पविहम्मइ. ६ MBPK सोलहमइ. ७ MBP आउ णिवद्धु. ८ MBP पुणु. ९ MBP केइ जि पक्खेण वि. १० MBP सहसेण वि.

29. १ MBP छव्विह थिरेण तसेण वि; T चवलत्तिरेण चपलस्वभावानां स्थिरपृथिव्यादीनाम्. २ MBP ०विह व. ३ MB कसायं. ४ MBP असण्णि दोण्णि.

3 b म ण भो य णु मानसाहारः. 4 b वो ली ण हिं व्यतिक्रान्तैः. 6 a प डि ह म्म इ प्रतिहन्यते. 8 b अ ह ता इं पु ह त्तं अथवा तेषां भिन्नमुद्घूर्तानां पृथक्त्वेन आगमभाषया त्रयाणामुपरि नवानामधः निश्चसन्ति. 9 b असं ति अश्रन्ति भोजनं कुर्वन्ति. 11 a द वि या इं पुद्गलद्रव्याणि; स इ त्तं स्वचित्तैः; b त णु त्तं तनुरूपेण.

29. 1 a का एं छ व्वि ह षड्जीवनिकाथेन; च व ल थि रे ण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च. 2 a ज ल णि हि वि ह चतुर्विधाः; b अ ट्ट भे य णा णं पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेदः. 3 a सं ज मे त्या दि—त्रयः संयमासंयमसंयमासंयमाः; तथा चत्वारः क्षायिकौपशामिकासंयमाः अथवा सामायिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसंपराययथाख्याताः परिहारविशुद्धेरभावात्; दं स णे त्या दि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशामिकक्षायोपशामिकानि; तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि. 4 a भ व्व त्ते ण विविह भव्याभव्यौ द्विविधौ.



केवलिसमुहय विग्गहगइगय  
 ते ण लेंति आहारु वियारिय  
 मग्गणठाणइं चोईहभेयइं  
 मिच्छादिट्ठि पहिल्लउं गीयउं  
 अविरयसम्माइट्ठि चउत्थउं  
 छट्टउ पुणु पमत्तसंजमधरु  
 अट्टमु होइ अउव्वु अउव्वउं  
 दहमउं सुहुमराउ जाणिज्जइ  
 बारहमउ परिखीणकसायउ  
 उज्झियतिविहसरीरभरंतरु

अरुह अजोइ सिद्ध परमप्पय ।  
 सेस जीव जाणहि आहारिय ।  
 णिसुणहि गुणठाणाइं मि एयइं ।  
 सासणु वीयउं मीसु वि तीयउं ।  
 पंचमु विरयाविरउ पसत्थउ । 10  
 सत्तमु अप्पमत्तु गुणसुंदरु ।  
 अणिर्यत्तिल्लउ णवमु अगव्वउं ।  
 एयारहसुवसंतु भणिज्जइ ।  
 तेरहमउ सजोइजिणु जायउ ।  
 उवरिल्लउं अजोइ परु अक्खरु । 15

घत्ता—णारय चत्तारि चत्तारि जि पुणु सुरपवर ॥

तिरियंच वि पंच णीसेसंमि चडंति णर ॥ २९ ॥

## 30

कम्मविहम्ममाण ससरीरा  
 दंसणणाणसहावपहट्टा  
 ताहं चेट्ट जा होइ समासम  
 जेम तेल्लु सिहिसिहपरिणामहु  
 जीवें लइयउ जाइ जियत्तहु

सासयकरणुज्जय विवरेरा ।  
 होंति जीव उक्किट्टणिकिट्टा ।  
 सा तद्दलियगहणभावक्खम ।  
 तेम कम्मपोग्गलु वि णिसामहु ।  
 तिक्कसायरसेहिं पमत्तहु । 5

५ MBPK चउदह° . ६ MBPK मिच्छाइट्ठि . ७ MBP °संजमधरु . ८ MBP आणियट्ठिल्लउं णवउं .  
 ९ MBP परिहीण° . १० MBP णीसेसहं मि .

30. १ MBP कम्म पोग्गलु . २ MB जाय जियत्तहु ; P जियंतहु .

6 a के व ली त्या दि—केवलिनो यदा समुद्घातं कुर्वन्ति दण्डकपाटप्रतरपूरणत्वेन त्रैलोक्यं भरन्ति तदाष्टसम-  
 यादनाहारकाः; अन्यदा आहारका एव. 10 b विरयाविरउ विरताविरतो देशसंयतः. 12 a अउव्वउ  
 अनुपमम्; b अणियत्तिल्लउ अनिवृत्तिकरणम्. 13 a सुहुमराउ सूक्ष्मसांपरायम्; b उवसंतु उपशान्त-  
 कषायम्. 15 a °ति विहसरीर° औदारिकं तैजसं कर्मणं च; b अक्खरु अविनश्वरं सिद्धस्वरूपम्.

30. 1 a ससरीरा संसारिणः; b सासयकरणुज्जय शाश्वतकरणाः शाश्वतपरिणामास्तेषूद्यताः; वि-  
 वरेरा विपरीताः; सिद्धा इत्यर्थः. 3 a चेट्ट चेष्टा मनोवाक्कायव्यापारः; समासम प्रशस्ता अप्रशस्ता च; b तद्द-  
 लियेत्यादि—तया शुभाशुभचेष्टया दलितो विभक्त. अनेकप्रकारः योसौ ग्रहणभावः कर्मादानपरिणामः तत्र क्षमाः  
 समर्थाः. 5 a जाइ जियत्तहु जीवत्वं गच्छति.

जिह सिहिभावहु वच्चइ इंधणु  
 असुहें असुहु सुहें सुहु संघइ  
 अभव जीव जिणणाहें इच्छिय  
 मइसुँओहिमणपज्जव केवल  
 णिहाणिहा पयलापयला  
 चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ  
 तेहिं विणासिउ णवसंखायउ  
 दंसणमोहणीउ सम्मत्तु वि  
 दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ  
 तं कसायजायउ सोलहविहु  
 पढमकसायचउक्कु सुभीसणु

तिह कम्मेण जि कम्महु बंधणु ।  
 सिद्धिभडारउ किं पि ण बंधइ ।  
 एक्कु ण ते वि अणंत णियच्छिय ।  
 णाणावरणविमुक्क सुँणिक्कल ।  
 थीणगिद्धि णिहा पुणु पयला । 10  
 अवही केवलदंसणवरणउ ।  
 वेयणीयदुगु सायासायउं ।  
 मिच्छत्तु वि सम्मामिच्छत्तु वि ।  
 णोकसाउ णामेण कसायउ ।  
 इयर भणेसमि पच्छइ णवविहु । 15  
 सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थयर ॥

उवसमहुं ण जाइ जइ वि पबोहइ तित्थयर ॥ ३० ॥

31

अवरु अपच्चक्खाणु गुरुक्कउ  
 संजलणु वि जलंतु उल्हाविउ  
 भँयरइयरइदुगुंछउ जित्तउ  
 सुर णर णँरय तिरिय चउआउ वि  
 गइणामउ वि जईणामु वि भणु  
 तणुसंघाउ तणुहि संठाणउं

पच्चक्खाणु चउक्कु विमुक्कउ ।  
 थीपुंसंढराउ उँड्ढाविउ ।  
 हासु वि सँहुं सोएण णिहिर्त्तउ ।  
 बायालीसविहेयउं णाउं वि ।  
 तणुणामउं पुणु तणुहि णिबंधणु । 5  
 तंणुअंगोअंगु वि णामाणउं ।

३ MBP सिद्धु भडारउ; K सिद्धभडारउ but corrects it to सिद्ध. ४ MBP °सुइओहि°. ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दंसणहरणउं. ७ K दुक्खयरु but corrects it to दुत्थयरु.

31. १ MBP चउक्क. २ P उण्हाविउ. ३ MBPT उँड्ढाविउ. ४ MBP भइरइअरइ°. ५ MBP सह. ६ P विहित्तउ. ७ P णिरय. ८ MBP जाइणउं. ९ MBP तणुअंगोअंगु वि णिम्माणउ.

7 a संघइ उपार्जयति. 17 दुत्थयरु दुःखतरः.

31. 1 b विमुक्कउ विमुक्तं सिद्धैः. 2b °राउउड्ढाविउ °भाववेदः क्षपितः. 3 b णिहित्तउ विनिक्षिप्तः. 4 b बायालीसेत्यादि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतयः. 5 a गइणामउ नरकतिर्यङ्मनुष्यादि-गतिनाम. 6b णामाणउं निर्माणम्.

तणुसंघंङणु वर्णगंधिल्लउं  
 औणुपुव्वि अगुरुलहु लक्खिउ  
 ऊसासु वि आदावुज्जोयउ  
 थावरु थूलुसुहुमु पज्जत्तउ  
 पत्तेयंगणाउं साहारणु  
 असुहु सुभगु दुब्भगु सुसरिल्लउ  
 णाउं अणादेज्जउ जसकित्ति वि

रसणामउं अवरु वि फासिल्लउं ।  
 उवघाउ वि परघाउ वि अक्खिउ ।  
 अणु विहायगइ वि तसकायउ ।  
 अणु वि मण्णिउं अप्पज्जत्तउ । 10  
 थिरु अथिरु वि सुहणाउं सकारणु ।  
 दुस्सरु आदेज्जउ जगि भल्लउ ।  
 तित्थयरत्तु णिमिणु मलकित्ति वि ।

घत्ता—चउगइज्जमेण गइणामउं अट्टुद्धविहु ॥

इंदियइं गणेवि जाइणामु भणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

15

## 32

हणिवि पंच णामइं पंचविहइं  
 दो छह पुणु दो चउ अट्टुविहइं  
 समलामलइं दोण्णि जगि गोत्तइं  
 दाणभोयउवभोयणिवारउ  
 अंतराउ पंचविहु धुणेप्पिणु

एकु तिभेयउ दो दो दुविहइं ।  
 उच्चारुयइं जाइं एकविहइं ।  
 ताइं मि जेहिं दूरि परिचत्तइं ।  
 वीरियलाहु हेउसंघारउ ।  
 अडयालीसउं सउ विहुणेप्पिणु । 5

10 K संघदणु. 11 P वर्णु गंधिल्लउ. 12 MBP अणुपुव्विय अगरुगलहु. 13 MBP आदाउज्जोयउ.  
 14 MB अप्पज्जत्तउ.

32. 1 M दो पुणु दुविहइं. 2 MBP °लाह°; K लाहु but corrects it to लाह. 3 MBP  
 वेहणेप्पिणु.

1) a आ दा बु आतापः. 12 b आ दे ज्ज उ दीप्पिसहितम्. 13 a अ णा दे ज्ज उ अनादेयम्; b णि मि णु निम्नं  
 नीचम्; म ल कि त्ति अयशःकीर्ति. 14 अट्टुट्टु वि हु चतुर्भेदं चतुर्गतिरित्यर्थः. 15 जा इ णा मु एकद्वित्रिचतुः-  
 श्चेन्द्रियजातिनाम; पंच वि हु पञ्चप्रकारम्—तथाहि, औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणशरीरनाम पञ्चविधम्.

32. 1 a पंच णा म इं पंच वि ह इं औदारिकादिशरीरनिबन्धननामानि पञ्च; तथा औदारिकादिशरीराणां  
 प्रघातनामानि पञ्च; तथा कृष्णनीलश्वेतरक्तर्पातवर्णनामानि पञ्च, तथा कटुतिक्तकषायाम्लमधुररसनामानि पञ्च; इति  
 पञ्च नामानि पञ्चविधानि; b ए कु ति भे य उ औदारिकवैक्रियिकाहारकशरीराङ्गोपाङ्गनाम त्रिभेदम्; दो दो दु वि ह इं  
 पुराभेदुरभिगन्धनाम प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिनाम च. 2 a दो छ ह समचतुरस्रवल्मीकन्यग्रोधकुब्जवामनहुंडस्थान-  
 नाम षड्विधम्, वज्रर्षभनाराचवज्रनाराचनाराचअसंप्राप्तास्पृष्टादिकाइसंघट्टननाम च षड्विधम्; दो च उ नरक-  
 त्यादिनाम नरकगत्याद्यानुपूर्वीनाम च चतुर्भेदम्; अट्टु वि ह इं कर्कशमृदुगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धसूक्ष्मस्पर्शानामान्यष्ट-  
 वेधानि.

पयडिहिं माणवंगु मेल्लेपिणु  
जे गर्यं जीव परमणिच्वाणहु  
चरमसररीमाण किंचूणा  
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा  
उडुंगमणसहावे गंपिणु  
अट्टमपुहईवट्टि णिविट्ठा

सुद्धसहाउ सईंभु लहेपिणु ।  
दुहविरहिहु सासयठाणहु ।  
ववगयरोयसोय अविलीणा ।  
जीवदव्वघण णाणसररीरा ।  
उडुलोउ सयल्लु वि लंघेपिणु । 10  
अभव जीव जिणदेवे दिट्ठा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥

ते पुणु ण मरंति णउ पडंति संसारमुहे ॥ ३२ ॥

## 33

णउ वाल णउ बुडु  
णीसाव णित्ताव  
णाणंग णिस्मेह  
णिकोह णिल्लोह  
णिव्वेय णिज्जोय  
णिद्धम्म णिक्कम्म  
णीराम णिक्काम  
णिव्वेस णिल्लेस  
णीरस महाभाव  
अव्वत्त चिस्मेत्त  
ण छुहाइ घेप्पंति  
ण रईयाइ सिज्जंति

णउ मुक्ख सुवियडु ।  
णिग्गाव णिप्पाव ।  
णिण्णेह णिद्देह ।  
णिम्माण णिम्मोह ।  
णीराय णिब्भोय । 5  
णिच्छम्म णिज्जम्म ।  
णिव्वाह णिद्धाम ।  
णिग्गंध णिप्फास ।  
णीसइ णीरुव ।  
णिच्चित्त णिव्वित्त । 10  
ण तिसाइ छिप्पंति ।  
ण रईइ सिज्जंति ।

४ B सिद्धसहाउ. ५ MBP सयंभु. ६ MB गय परम जीव. ७ MBP दुक्खविमुक्कहु. ८ K उडुं गमणु.  
९ K अट्टमि.

33. १ P णीसास. २ MBP णीताव. ३ MBP रुवाइ.

6 a मा ण वं गु नरशरीरम्; b स इं भु सहजः. 8 b अ वि ली णा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपाः. 11 a °व ट्टि  
°पृष्ठे. 12 सा इ अ णा इ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा.

33. 3a णि स्मे ह निर्मेधसः पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिताः केवलज्ञानिनः. 8a णि व्वे स निद्वेषाः. 12 b सिज्जं-  
ति पीड्यन्ते.

णाहारु भुंजंति	ओसहु ण जुंजंति ।	
ण मलेण लिप्पंति	ण जलेण धुप्पंति ।	
णिहं ण गच्छंति	अण्येणा वि पेच्छंति ।	15
अमणा वि जाणंति	सयरायरं झत्ति ।	
सिद्धाण जं सोक्खु	तं कहइ चम्मक्खु ।	
किं माणवो को वि	सुँर खयरु देवो वि ।	

घत्ता—पंचिंदियमुक्कु परमप्पइ हूयँउ विमले ॥

जं सिद्धहं सोक्खु तं ण वि कासु वि भुवणयले ॥ ३३ ॥ 20

### 34

एहा दुविह जीव मइं अक्खिय	कहमि अजीव वि जेम णिरिक्खिय ।	
धम्मु अधम्मु दो वि रूवुज्झिय	आयासें काले सहुं बुज्झिय ।	
गइठाणोग्गहवत्तणलक्खण	के वि मुणंति सुणाण वियक्खण ।	
संतु अणाइ समउ वट्टंतउ	तीउं कालु अगामि अणंतउ ।	
तासु ठाणु भण्णइ णरलोयउ	धम्ममाधम्महं सव्वतिलोयउ ।	5
बिहिं मि लोयणहमाण वियप्पउ	आयासु वि अणंतु सुसिरप्पउ ।	
तं जि अलोउ जोइपणत्तउ	पोग्गलु होइ पंचगुणवंतउ ।	
सहँ गंधे रूवे फासें	जुत्तउ भिण्णवण्णाविण्णासें ।	
खंधु देसु अद्धँपपसु वि	परमाणुउ अविहाइ असेसु वि ।	

घत्ता—तं सुहुमु वि थूलु थूलसुहुमु पुणु थूल भणु ॥

10

थूलाण वि थूलु चँउपयारु महं मुणइ मणु ॥ ३२ ॥

४ B भुंजंति; P हुंजंति and gloss योजयन्ति. ५ MBP अणयण जि. ६ MBP सुर. ७ MBP हूयइ. ८ MBP णउ.

34, १ MBP रूवुज्झिय. २ P वट्टंतउ. ३ MB तीयउ, P तइयउ. ४ MBP धम्ममाधम्महं सयलु. ५ MBPK माणु वि अप्पउ, T लोयणमाणु. ६ MBP अद्धद्ध. ७ M सुहुमुसुहुमु तह सुहुमु वि पुणु; B चउपयारु सुहु मुणइ मणु; P सुहुमु सुहुमु तह सुहुमु पुणु.

19 परम प्पइ परमपदे मोक्षस्थाने.

34. 4 a संतु सान्तः; अणाइ अनादिः; समउ वट्टंतउ वर्तमान कालः समयः. 5 a तासु उक्त-व्यवहारसमयस्य. 6 a लोयणह माण लोकाकाशपरिमाणम्, b सुसिरप्पउ शुषिरस्वरूपम्. 9 b अविहाइ अविभाज्यः.

35

गंधु वण्णु रसु फासु ससद्दु  
 थूलुसुहुसु जोण्हाछायाइउ  
 थूलुथूलु पुणु धरणीमंडलु  
 सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं  
 वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं  
 पूरणगलणसहावणिउत्तइं  
 भासिज्जंतउ परमजिणिंदे  
 वसहसेणु सुहभावे लइयउ  
 सोमप्पहु सेयंसणेसरु  
 इय रिसहहु परिमुक्कविसाया  
 वैम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु  
 दंसणमोहणीयपंडिरुद्धउ  
 तावस कंदाहारु मुएप्पिणु  
 मोक्खमग्गामिहि परमेसरु

सुहुसु थूलु वज्जरइ समद्दु ।  
 थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।  
 सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मल्लु ।  
 मणभासावग्गणपरिणामइं ।  
 परिणमंति संजोयविओयहिं । 5  
 पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।  
 णिसुणिवि धम्मसु सुधम्माणंदे ।  
 पुरिमतालपुरवइ पावइयउ ।  
 थिउ पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।  
 णिव चउरासी गणहर जाया । 10  
 कंतियाउ जायाउ महग्घहु ।  
 एक्कु मरीइ णेय पडिवुद्धउ ।  
 थिय कच्छाइय रिसिक्खउ लेप्पिणु ।  
 हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥ 15

भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत एह जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे महावत्थुणिद्वेसो णाम

एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥

॥ संधि ॥ ११ ॥

35. १ M सुसद्दु. २ MBP add after this: सुहुसुसुहुसु परिमाणुविसेसइं; लग्गहिं णिवडवि अप्पपएसइं. ३ P पव्वइयउ. ४ MBP सेयंसु णेसरु. ५ MBP वंभी. ६ K °परिरुद्धउ. ७ MBP पह; K पह but corrects it to एह and gloss एतास्मिन् जिने.

35. 1 b समद्दु उ मार्दवयुक्तः उपशमाद्रौ वा. 4 a स णा म इं ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि. 12 b एक्कु मरीइ एक्को भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्तः, 16 एह जिणि एतास्मिन् जिने.

## XII

अरिवरणिद्वारणि खत्तुद्वारणि तिजगलच्छिविजयाणउं ॥  
विहलियसाहारणि मेइणिकारणि भरहें दिण्णे पयाणउ ॥ १ ॥

### I

छुड छुड सरयागामि अप्पमाणु  
णं दीसइ ओम्मत्थिउ अएण  
णं जगहरि णील्लोउ बद्धु  
अइ दसें वि दिसा सइं गयरयाइं  
ससिकुंभगलियजोणहाजलेण  
णिडुहइ कमलु सरए ससंकु  
सो अज्ज वि दीसइ मलविरुद्धु  
तेण जि रोसें रवि तिच्चु तवइ  
पंकखइ सुंक्कइ णलिणणालु  
कुवलयदिहिर्गारउ णाइं राउ  
तरु कुसुमामोएं महमहंति  
अलि रुणुरुणंति पांवाहपिंड

णहु णाइं धोयहरिणीलभाणु ।  
सरयब्भदहियखंडहुं कएण ।  
तारामोत्तियञ्जुबुक्कणिद्धु । 5  
णं चारित्तइं सज्जणकयाइं ।  
पक्खालियाइं णं णिम्मलेण ।  
तहु तेण जि लग्गउ पिंडपंकु ।  
णियडिंभपराहवि को ण कुद्धु ।  
सररुहसुहि किं चिक्खिल्लु खवइ । 10  
अइउग्गत्तणु बंधवहं कालु ।  
कयबंधुजीवसुंच्छायभाउ ।  
रयकविलइं सलिलइं वणि वहंति ।  
महुमत्ता णं गायंति सोंड ।

घत्ता—सारयमयलंछणु रुइरंजियजणु जइं मयमलिणु ण होंतउ ॥ 15  
तो हेंउं कयसंतिहि जिणजसयंतिहि एहु जि उप्पउं देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT खेतुद्वारणि but gloss क्षत्रियधर्मप्रकटने. २ MBP दिण्णु. ३ P ओम्मत्थिउ. ४ P अइदिस°. ५ MBP णिडुहइ. ६ MBP विंवि पंकु. ७ MBP सुक्खइ. ८ T दिहिहारउ धृतेरपहारको धरकश्च. ९ MBP °सच्छाय°. १० P पावोह°; T पायोह°. ११ MP जइय. १२ MBP हं.

1. 1 अरिवरणिद्वारणि प्रचण्डशत्रूनमूलने; खत्तुद्वारणि दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनलक्षणक्षत्रियधर्म-  
प्रकटने; °लच्छिविजयाणउं °लक्ष्मीविजययोः प्रापकम्. 4 a अएण अजेन ब्रह्मणा. 5 a णील्लोउ नील-  
चन्द्रोपकम्. 10 b सररुहसुहि सूर्यः कमलबान्धवः, खवइ सहते विनाशयति वा. 12 a राउ राजा चन्द्रो  
वा. 14 a पावाहपिंड पापसदृशशरीराः, कृष्णवर्णा इत्यर्थः; b सोंड मद्यपाः. 16 उप्पउं उपमा.

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस  
 आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ  
 मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु  
 दालिहु रउहु पवासियाहं  
 णिहणिवि वरेण चामीयरेण  
 मंतिवि अहंगु पंचंगु मंतु  
 परियाणिवि माणिवि बुडु चारु  
 अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु  
 भुयदंडचंडविक्रममएण  
 गंभीरतूरलक्खइं हयाइं  
 कयसमरहं अमरहं थरहरंति  
 असुरिंदहं णाइंदहं पियाइं  
 तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं  
 थिरभावहं देवहं जाय संक

अवठंभिवि संभिवि सयल देस ।  
 परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।  
 परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।  
 काणीणहं दीणहं देसियाहं ।  
 णाणाविलासतोसायरेण । 5  
 को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।  
 ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।  
 भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।  
 छक्खंडमंडलावणिकएण ।  
 दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं । 10  
 गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।  
 पायालइं विउलइं कंपियाइं ।  
 झल्लल्लियइं वैलियइं सरिजलाइं ।  
 र्वेपेल्लिय डोल्लिय रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणद्दहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥

15

परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खाणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिववलं  
 कणयकुंतुंज्जलं

धरियहलसव्वलं  
 चंदणसुपरिमलं ।

2. १ MBP भयगयाइं. २ MB झल्लिल्लियइं. ३ MBP चलियइं. ४ MBP रह°. ५ MP जेल्लिय. ६ M परमंडलु.

3. १ MB °कंतुंज्जलं.

2. 1 b अवठंभिवि हठादाक्रम्य; संभिवि प्रतिग्राहयित्वा. 4 d देसियाहं परदेशजनानाम्. 6 a अहंगु अभङ्गोऽविकलः; पंचंगु मंतु सहायाः साधनोपायो देशकालबलावलौ । विपत्तेश्च प्रतीकारः पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते. 7 b ओहारिवि अवधार्य. 8 a अइवग्गिउ अतिगर्वितः. 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तरणसमर्थम्.

3. 1 b °सव्वलं तिलपीडनायुधं घाणी.



सरसद्युसिणारुणं	खर्यंतरणिदारुणं ।	
तुरुतुरियकाहलं	सुहडकोलाहलं ।	
मुक्कहुंकारयं	फुंसियअसिधारयं ।	5
वद्धतोणीरयं	अहियखोणीरयं ।	
गहियसंणाहयं	णवियणियणाहयं ।	
वलइयसरासणं	परिहियविहूसणं ।	
वूढेजंपाणयं	चोइयविमाणयं ।	
जंतजक्खामरं	चालियचलचामरं ।	10
खुहियणाणाणिवं	जणियगमणुच्छवं ।	
कामिणीसुललियं	किंकिणीमुहलियं ।	
रहियवाहियरहं	छत्तछाइयणहं ।	
बंदिवणियगुणं	दिण्णमणिककंणं ।	
पवणधुयधयवडं	गिरिगखयगयघडं ।	15
गहियमयगारवं	रणियघंटारवं ।	
परिभमियमहुयरं	मुक्कढक्कासरं ।	
मलियफणिसेहरं	काललीलाहरं ।	
णडियसुररणणडं	चडुलहयवरथडं ।	
वहलधूलीरयं	घुलियमणिहारयं ।	20

घत्ता—कयरिउवहुविरहेँ जगजसंभरहेँ चालियएण पध्दाइउ ॥

वररहंमायंगहिं भडहिं तुरंगहिं सेण्णु ण कत्थइ माईउ ॥ ३ ॥

4

मणी कागणी कामिणी दंडरणं

रहंगं णरिंदंगतुंगं पहारं

णिसीसक्कमाणिक्कभाभारभिण्णं ।

अजेयं सुतेयं कराळं क्किवाणं ।

२ MBP खयतरणि°, ३ MP फुरिय°, ४ M रुढ°, ५ MBP °कचणं, ६ MBP °सुरवरणइं, ७ MBP °जयभरहेँ चल्लंतेण; T जगजसभरहेँ; but records a p जगजयेति पाठे जगति जयेनोपलक्षितो भरतस्तेन. ८ P पधाइयउ, ९ MBP वररहवरमायंगहिं, १० P माइयउ.

३ b खयतरणिदारुणं प्रलयकालसूर्यसदृशम्. 6 a °तोणीरयं तूणीरः; b अहियखोणीरयं शत्रुभूम्यासक्तम्.

4. 1 b णिसीत्यादि—चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमाणिक्यानां भासस्तासां भारेण भिन्न कर्तुरिताङ्गम्. 2 a णरिंदंगतुंगं चक्रवर्तिशरीरप्रमाणम्.

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं  
हरीकीरपिंछोर्हकंतिल्लकाओ  
पुरोहो गिरोहो व्व भीमावयाणं  
समे वेसमं वेसमे सामकारी  
गिही<sup>२</sup> को वि देवो मैहिड्डीसमिद्धो  
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो

महावीरखंधारवित्थारवंतं ।  
करी णिज्जियाणिंददेविंदणाओ ।  
णिवासो पयासो पयासंपयाणं । 5  
चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।  
महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।  
परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोर्दहरयणहिं सहं णरणाहहु इच्छइ ॥

हयगयरहवाहणु चल्लिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥

10

5

माणिरहवरे चडिउ  
दढकढिणभुयजुयलु  
किं भणमि पुरिसहरि  
सदूलवरखंधु  
अलिणीलधम्मेल्लु  
दूवंकुरालेण  
उक्खित्तसेसेण  
संचल्लिउ भरहेसु  
धउ धइण पडिखल्लिउ  
भेसिउ अहद्वेण  
करि धुणइ णियकंठु  
भरओ रउद्वेण  
भग्गाइं भायणइं

णं इंदु णहि वडिउ ।  
अइवियडवच्छयलु ।  
बलतुलियकुलसिहरि ।  
बहिरंधजणबंधु ।  
तेलोकपडिमल्लु । 5  
दहिचंदणालेण ।  
मंगलणिघोसेण ।  
णं मयणु णरवेसु ।  
णरु हरिहिं दैरमलिउ ।  
करहस्स सद्वेण । 10  
महि णिवडिओ मैट्ठुं ।  
धित्तो बलद्वेण ।  
चुण्णाइं गोहणइं ।

5

10

4. १ B °पिच्छोह°. २ M गिरी. ३ MBP महद्धी. ४ MP चउदह°.

5. १ MB णहवडिउ. २ MBP °धम्मिल्लु. ३ P दलमलिउ. ४ MBP मैट्ठुं.

3 b दे विं द णा ओ ऐरावणो हस्ती. 5 a भी मा व या णं भीमानामापदाम्; b प या सो प्रकटम्; प या सं प या णं प्रजानां संपदाम्. 6 a वेसमं विषमम्. 7 a गि ही गृही भाण्डागारिकः. 8 a °किम्मी र° विचित्तम्; b णिके ऊ ह का रो सूत्रधारः स्थपतिः.

5. 10 a भे सिउ भयं नीतः; अ ह द्वे ण अभद्वेण.

णवणलिणणेत्ताइ	वेसैरि णिहित्ताइ ।	
परिगलियचेलाइ	हा भणिउ बालाइ ।	15
खैरवडणपडियाइ	महुसीहुघडियाइ ।	
रसवणियं जूरंति	कह कह व वियरंति ।	
अच्चंतपोढेण	तेल्लोक्करुढेण ।	
थिरथोरवाहेण	सेणाहिणाहेणं ।	
पप्फुल्लवयणेण	दढदंडरयणेणं ।	20
गिरिणो दलिज्जंति	मग्गा रइज्जंति ।	
दूरं समग्गेण	चक्काणुमग्गेण ।	
संतोसपुण्णाइं	गच्छंति सेण्णाइं ।	
णयणाहिरामाइं	गामाइं सीमाइं ।	
विसमाइं मंठाइं	विंझोवकंठाइं ।	25
हलहराणिवासाइं	लंघंतु देसाइं ।	
पविसंतु रोहंतुं	अहिणो विरोहंतु ।	
णिक्खवियणियसत्तु	सुरवरसरिं पत्तु ।	

घत्ता—पंडुर गंगाणइ महियालि घोळइ किंणरसरसुहभंतं हो ॥

अवलोइय राणं छुडु छुडु आणं साडी णं हिमवंतहो ॥ ५ ॥ 30

## 6

णं सिहरिघरारोहणणिसोणि	णं रिसहणाहजसरयणखाणि ।
णिम्मल णावइ जिणणाहवाय	मयरंक्रिय णं वम्महवडाय ।
णं विसमविडंप्पभउत्तसंति	धरणीयलि लीणी चंदकंति ।
णं णिद्धैधोयकलहोयकुहिणि	णं कित्तिहि केरी लहुय बहिणि ।

५ MBPK वेसर°. ६ MBPT खरचडुल°. ७ MBP add after this: णवणलिणणयणेण. ८ MP add after this: वज्जेण घडिएण. ९ MBP संठाइं. १० MB रोहंतु. ११ P °भत्तहो.

6. १ MBP वम्महपडाय. २ P विडप्पइ भउ तसंति. ३ G सिद्ध° but gloss सिग्ध.

16 a खर° गर्दभ.. 25 a मंठाइं निम्नोन्नतानि. 27 b अहिणो विरोहंतु नागान् विरोधयन्. 30 साडी परिधानवन्नम्.

6. 3 a °विडप्पभउत्तसंति राहुभयादुत्त्रस्यन्ती. 4 a °धोयकलहोय° अतिनिर्मलं रूप्यम्.

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि  
 विर्यैलियकंदरदरिवडिय सच्छ  
 सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह  
 आयासहु पडिय धरित्तियाइ  
 पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ  
 णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय  
 हंसावलिवलयविइण्णसोह

णं हारावलि वसुहंगणाहि । 5  
 धरणिहरकरिंदहु णाई कच्छ ।  
 णं चक्कवट्टिजयविजयलीह ।  
 सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।  
 णियठाणभंसविताइ णाई ।  
 विसपउर णाई णाइणि सुसेय । 10  
 उत्तरदिसिणारिहि णाई बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुट्टु सुँलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥

सायरभत्तारहु सइं गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छंपुच्छपरियत्तियाइं  
 घेप्पंति तिसाहयगीयएहिं  
 जलरिट्ठहिं पिज्जइ जलु सुसेउ  
 सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ  
 जहिं कीरउलइं कीलारयाइं  
 जहिं कंकहारणीहारछाय  
 जहिं पाणिइ पंडुरु अच्छराइ  
 परिहाणु सहत्थे धरिउ ताइ  
 मायंगहुं दाणे वहइ णेहु  
 जडसंगे विउसु वि जडु जि होइ

सिप्पिउडुच्छलियइं मोत्तियाइं ।  
 जलविंदु भाणिवि वप्पीहएहिं ।  
 तमपुंजहिं णावइं चंदतेउ ।  
 पुणु सो जि णाई संझारुईइ ।  
 दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं । 5  
 कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।  
 उप्परियणु दिट्ठुं ण जंतु जाइ ।  
 जंपिउ हो ण्हाणे एत्थु माइ ।  
 जा तहु धिवंति तवसि वि सुँदेहु ।  
 कमलावासेसु सुयंति भोइ । 10

४ MBP विवरिय°. ५ MBP उत्तरदिस°. ६ MBP सलोणहु.

7. १ MBPK °पुंछ°. २ B °उडच्छलियइं. ३ MBP वप्पीहएहिं. ४ MBP जंतु ण दिट्ठु.  
 ५ MBPK सदेहु.

6 b कच्छ कक्षा. 7 a भूइरेह भस्मरेषा. 10 a णयव म्मी य हु पर्वतवल्मीकात्; b वि सपउर नदीपक्षे  
 जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा. 11 b बाह बाहुः.

7. 1 a परि य त्ति या इं अभिहतानि. 2 a ति सा ह य गी य ए हिं तृषया शुष्ककण्ठैः; b वप्पी ह ए हिं  
 चातकैः. 3 a ज ल रि ट्ठ हिं जलककैः. 9 a मा यं ग हुं हस्तिनां चाण्डालानां च; णे हु चिक्रणत्वं रागश्च. 10 b  
 भोइ सर्पाः.

सिररयण धणासंइ धरइ ते वि  
दिव्वंगणघणथणजुयलखलिय  
उच्छलियवहलसीयलतुसार

धणवंत वहुँप्पिय सविस जेवि ।  
जिणणहवणारंभदिणम्मि गलिय ।  
णं खीरमहोवहिखीरधार ।

घत्ता—एयँहि महिणारिहि भुवणजणेरिहि ससिमणिरइयपहुज्जल ॥

सायरगिरिरायहिं धरिवि सरायहिं णाइं णिवद्धी मेहल ॥ ७ ॥ 15

## 8

सरि पेच्छिवि महिपरमेसरेण  
झसणयणी विब्भमणाहिगहिर  
मज्जंतकुंभिकुंभत्थणाल  
तडविडविगलियमहुघुसिणपिंग  
सियघोलमाणडिंडीरचीर  
वित्थिण्णमणोहरपुलिणरमण  
कवणेह भणसु सियकोमलंगि  
तं णिसुणिवि रहिएं वुत्तु एम  
धरणीसमउडमणिकिरणराइ  
दालिहपंकसोसणादिणेस  
पणईयणपयणियपरमपणय  
सुँधराधरिंदभेयणसमत्थ  
गंभीर पसण्ण सुलक्खणाल  
रहवरसिरि व्व दरिसियरहंग  
हिमवंतपोमसरणिग्गयंगि

पुच्छिउ साराहि भँरहेसरेण ।  
णवकुसुमविमीसियभमराचिहुर ।  
सेवालणीलणेत्तंचलाल ।  
चलजलभंगावलिवलितरंग ।  
पवणुँद्वयतारतुसारहार । 5  
णइ णाइं विलासिणि मंदगमण ।  
रइ जणइ विहंगहं णं विहंगि ।  
कर्मणीयसुकामिणिकामएव ।  
रुइरंजियचरणणरेसराइ ।  
भुयबलकंपावियतिहुयणेस । 10  
णिसुणसु णरिंद णाहेयतणय ।  
णं मंतिहि केरी मइ महत्थ ।  
णं सुकइहि केरी कव्वेलील ।  
किं ण वियाणहि णामेण गंग ।  
णं महिवहुयहि परियाणभंगि । 15

६ MBPT वहुँप्पिय. ७ MBP एत्तहि.

8. १ M परमेसरेण. २ MBP पवणुद्धुय°. ३ MBP कर्मणीयकामिणी°. ४ MB सधरा°. ५ MBP कव्वमाल. ६ MBPK परिहाण° and gloss in PK परिधानं.

11 a सिररयण सर्पाः; b बहुँप्पिय वधूनां प्रियाः, अथवा, वधूनां प्रियाः.

8. 2 a °विब्भमं जलावर्तः. 5 a °डिंडीर° फेनः. 9 b णरेसराइ नरेश्वराणामादिः प्रथमचक्र-  
वर्तांत्यर्थः. 12 a सुधराधरिंद° धराधराः पर्वता राजानश्च, शोभनाश्च ते धराधराः, तेषामिन्द्रः प्रधानः. 14 a  
°रहंग चक्रवाकः. 15 b परियाणभंगि गमनप्रकारः.

घत्ता—गिरिणहधराणियलहिं जलणिहिविर्वरहिं वहइ छा य ससिदिच्छिहि ॥  
भुवणत्तयगामिणि जणमणरामिणि एह सरिस तुह किच्छिहि ॥ ८ ॥

9

वणे जक्खणी जक्खकीलावियारे  
पधावंतमायंगदाणंबुगंधं  
विसंकं जसंकं कयारिंदसंकं  
पकीरंति दूरं समा भूमि एसा  
गवक्खंतणिगंतधूमोहवासा  
विमुच्चंति पल्लाणभारा हयाणं  
भरुम्मुकुदेहा जहिच्छं वल्लहा  
तरूणं तणाणं पधावंति दासा  
पइज्जंति णाणाविहा भक्खभेया  
सरिच्छेण दीहेण पंथेण भग्गा  
बलिज्जंति दिज्जंति गासा करीणं  
पपेच्छंति अण्णे धयं साहिणाणं  
णं संसंति अण्णे णरिंदस्स कामं  
इमो वेसरो वेसरी लेउ चारं  
कउडुद्धगीवा वणंते पयट्टा  
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घं  
ईणं जत्थ केणावि रीणेण बुत्तं  
सहट्टं सट्टं सदेवं समिद्धं

तथो तम्मि गंगाणईचारुतीरे ।  
घुलंतुद्धपालिद्धयं चारुचिंधं ।  
बलं रायसेणाहिवाणाइ थकं ।  
तडिज्जंति दूसाइं चंदोवहासा ।  
रइज्जंति संचारिमा भूरिवासा । 5  
गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।  
गया रासहा रासहीदिण्णसदा ।  
पलिप्पंति चुल्लीणिहिच्चा हुयासा ।  
णरा के वि भुंजेवि णित्तंगसेया ।  
पसुत्ता सुहं गेहिणीकंठलगा । 10  
तणं भोयणं खाणल्लोणं हरीणं ।  
पयंपंति अण्णे पईहं पयाणं ।  
भमामो कहं णिच्च गामाउ गामं ।  
परेणेव बुत्तो परो वारवारं ।  
लयापल्लवं पाणियं लेंति उट्टी । 15  
पिए पेच्छ दूसाइं आगच्छ सिग्घं ।  
सवेसाणिवासं सच्चिधोवउत्तं ।  
इमं एव राएण ठाणं णिविद्धं ।

७ MBPT °विवलहिं.

9. १ MBP झसंकं. २ MB णिगंति. ३ MB बलिहा. ४ MBP पवच्चंति. ५ M खाणपाणं.  
६ K ण पेच्छंति. ७ वयंसाहिणाणं. ८ M णमंसंति. ९ MBP णरिंदं सकामं. १० MB कओउद्धगीवा; P  
कओवुद्ध°. ११ PK उंटा. १२ MBP इमं. १३ BP विवद्धं.

16 वहइ छा य शोभां धरति.

9. 2 b °पा लिद्धयं वंशवेष्टितपताका. 4 b चं दो वहा सा मण्डपिका. 5 a °वा सा गन्धाः. 9 b  
णि त्तं ग से या निर्गताङ्गस्वेदाः. 11 a ब लिज्जंति बलिदानेन तोष्यन्ते. 13 a कामं षट्खण्डपृथ्वीप्रभावना-  
भिलाषम्. 14 a चारं जीवनं तृणं वा. 17 b सवेसा णि वा सं वेऱ्यागृहसहितम्.

घत्ता—णियथवइ विरइयइ मणिगणखइयइ सइं सग्गहु उवइण्णउ ॥

णं सुँरवरसुंदरु देउ पुरंदरु पहु सउहयलि णिसँण्णउ ॥ ९ ॥

20

## 10

सामंत महासामंत जेवि  
सेणाहिवसिद्धुहेसणिलइ  
हुय रयणि पुणु वि उग्गामिउ भाणु  
गयमयमलेण मइलिज्जमाणु  
छत्तंधयारछाइज्जमाणु  
झल्लरिभेरीरवगज्जमाणु  
णग्गोरेणुधवल्लिज्जमाणु  
मरगयपहाइ णील्लिज्जमाणु  
अँसहंतिइ भडयणभरु महंतु  
अणँडुहवज्जरखरमाणिएण  
णाणावाहणरहसंकडेण  
चक्कीसचमूवइपेरियंगु  
आरुहिवि विजयगिरिवरकरिंदि  
खंधेवबद्धतोणीरजुयल्लु  
संचलिउ विजयहुंदुहिणिणाउ

मंडलिय महामंडलिय तेवि ।

थिय रायपसायविइण्णपुलइ ।

सगभत्थिजालजज्जल्लमाणु ।

हरिलालाणीरँ धुप्पमाणु ।

पहरणविप्फुरणहिँ दीसमाणु ।

5

मणहरकामिणियणगिज्जमाणु ।

वँणधूलियाइ कवल्लिज्जमाणु ।

सँणंदु सविक्रमु साहिमाणु ।

णं वसुहावणियइ पित्तु वंतु ।

णरणियरकरहसंदाणिएण ।

10

चल्लियउ तुरिउ गंगतँडेण ।

चक्कहु पच्छइ बलु चाउरंगु ।

केसरिकिसोरु णं गिरिवरिंदि ।

करँणिहियचावगुणरावमुहल्लु ।

सुरवइदिसाइ रायाहिराउ ।

15

घत्ता—उल्लंधिवि भीयरु उवरयणायरु पुणु थलमग्गँ आइउ ॥

महिहरदँरिवासइं गोहणघोसइं पहु गोउलइ पराइउ ॥ १० ॥

१४ MBP सुरवरु सुंदरु देव पुरंदरु. १५MP णिसाण्णउ.

10. १ MBP णव°. २ B omits णील्लिज्जमाणु. ३ B omits this foot. ४ B omits this line. ५ MP पित्तु वंतु. ६ B omits अणडुह. ७ MBP गंगायडेण. ८ MP केसरिकिसोरु. ९ MB करि णिहिय°. १० MBPT °दरवासइं.

10. ३ b सग भत्थि जाल° निजाकिरणसंघातः. 7 a णग्गो र° कर्पूरः. 9 b वसुहावणियइ वसुधा-  
नितया; पित्तु वंतु पित्तं वान्तम्. 10 a °वज्जर° वेगसरोऽश्वतरः. 1३ a विजयगिरि हस्तिनामेदम्.  
15 b सुरवइदिसाइ पूर्वादिशि. 16 उवरयणायरु उपसमुद्रः.

11

जहिं मंथिज्जइ अइथद्धु दहिउं  
जहिं कड्डिउ मंथउ गोवियाइ  
चप्पेवि धरिउ मंदीरएण  
हो हो हलि गोविणि मइं जि रमइ  
मा कड्डहि केयाकड्डणीइ  
अइमहणे सिढिलीहूउं देहु  
तक्कइं एमेव जि जहिं धिवंति  
घयदुद्धइं जहिं पंथिय पियंति  
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु  
मूरविउ तक्कु अविचित्तियाइ  
महिवइमुहपंकयरमणतण्ह  
जहिं कुणरिंदहं रिद्धीउ जेम  
काहलियवंससहं सुणंति  
वच्चइ संकेयहु गोवि का वि  
जहिं देंति तालु कीलापयासु  
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं

थद्धत्तणु कासु वि होइ ण हिउं ।  
दीहे गुणेण णं पिउ पियाइ ।  
परिभमइ णाइं घणथणकएण ।  
मंथाणु ण तुह कामग्गि समइ ।  
इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ । 5  
किं दहिउं ण अण्णु वि मुयइ णेहु ।  
गामीर्यण तक्कहिं किं करंति ।  
गयपहसम सुहु णिइइ सुयंति ।  
वच्छुल्लउ मेळ्ळिवि बद्धु साणु ।  
घिउ छड्डिउं तग्गयणेत्तियाइ । 10  
जहिं संठिय णीसासुण्ह सुण्ह ।  
महिंसिउ खलेहिं दुज्जंति तेम ।  
ण करइ घरकम्मु वि सिरु धुणंति ।  
मज्झप्पएसि बहुडिभया वि ।  
मंडलिय 'गोव गायंति रासु । 15  
ढक्कारिउ धीरु धुरंधरेहिं ।

घत्ता—तं गोडु मुयंतें गहाणि चरंतें हरिणासिंगखयकंदहिं ॥

मयमासाहारइं कुहरागारइं दिट्ठइं सर्वरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11. १ MBP अइथद्धु. २ MBP थद्धत्तणु. ३ B मंदीरएण. ४ MBP गोमिणि. ५ MBP सिढिलीहूय. ६ B गामीणय. ७ MBP पंथिय जहिं. ८ B सुहाणिइइ. ९ MBP मण्णिवि. १० MBP मूरविउ. ११ MBP अवचित्तियाइ. १२ M छंडिउ. १३ MBP महिसीउ खलहिं. १४ MBPK दुब्भंति. १५ M घरकम्मु वि सिरं; BP घरकम्मु सिरं. १६ MBP कीलावयासु. १७ M गीय. १८ MBP ढेक्कारिउ चारु. १९ M समरपुरिंदहिं.

11. 1 a अइथद्धु आतिघनम्. 2 a मंथउ रविका; b णं पिउ पियाइ प्रियः प्रियया इव. 3 a मं दी र ए ण रविकानिरोधकलोहवलयदिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन. 5 a के या क ड्ड णी इ वरत्राकर्षिण्या. 7 b त क्क हिं तत्त्वविचारणे तक्कैः. 9 b सा णु श्वा. 10 a मूर विउ उत्कालितं तापितम्. 11 b णी सा सु ण्ह निश्वासैरुष्णा; सुण्ह वधूः. 16 b धुरं धरेहिं वृषभैः. 18 मयमा सा हा र हिं मृगमांसाहारैः.



## 12

दुवई—वांमणथंद्धथोरवैलवलियकलेवरसंधिबंधणा ।

कठिणतिकंडचंडकोदंडकमागयजणकुलहणा ॥ १ ॥

सुमडहथूलविरलदसणुज्जलमुहसिहिपिच्छंणिवसणा ।

गयमयपउरपंकचैच्चिक्रियगुंजादामभूसणा ॥ २ ॥

झंपडकविलकेसरुहिरारुणदारुणतंवणयणया ।

5

तिक्खरुखुरुप्पपहरपवियारियमारियमोरहरिणया ॥ ३ ॥

इसुहयदंतिदंतकयमंदिरसंचियचारबोरया ।

तल्लतरुवत्तरत्तणीलुप्पलविरइयकण्णपूरया ॥ ४ ॥

दिसिपसरंतविमलससियरणिहणरवइजसभयंगया ।

वंसविसेसजायमुत्ताहलचमरीरुहकरगया ॥ ५ ॥

10

पीयसुसीयकुसुमरयसुरहियमहिहरकंदरंभया ।

सबरीवयणकमलरसलंपडखंधुद्धरियडिंभया ॥ ६ ॥

हरगलगरलमलिणणवजलहरछविसारिच्छकायया ।

आया पडुसमीवि मउलियकर विविहकिरायरायया ॥ ७ ॥

गुरुभयवसणिहित्तणियदेहमहीयललग्गभालया ।

15

ते अवलोइऊण करुणेण णवंतवणंतवालया ॥ ८ ॥

ण्हंततरंतजक्खिथणघुसिणामोयमिलंतमहुयरं ।

चंचलसंगलंतकल्लोलगलत्थियखयरवहुवरं ॥ ९ ॥

कच्छवसुंसुयारमयरोहरपुंछुच्छलियणीरयं ।

पत्तो परियणेण सह महिवइ सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

20

घत्ता—आवासिउ साहणु वणि सुपसाहणु णिसि पणाविवि परमेसरु ॥

णं जिणु जिणसासणि थिउं दब्भासणि उववासेण णरेसरु ॥ १२ ॥

12. १ M has before this: छंद पथटिका. २ MBP थडू. ३ MBP °चलवलिय°. ४ MBP °पिच्छ°. ५ P °चिक्किय°. ६ MBP °यारियतित्तिरमोर°. ७ M तिलतरु; I तिलतरु but gloss ताड-वृक्ष°. ८ MBP ठिउ.

12. २ °जण ण° पिता; °कुल हणा कुलधना°. ४ तलतरुवत्त° तालवृक्षपत्रम्. 11 °कंदरंभया °कन्दरजलाः. 14 °किराय° भिल्लाः. 20 °दुवारयं गङ्गायाः समुद्रानुप्रवेशस्थानम्.

13

अहिवासिउं राणं चक्रयणु  
सुयवणु अहंगु तुरंगरयणु  
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु  
कइवयणरेहिं सह सूरसंसु  
पहरणपरिपुणु महामहंतु  
चलपंचवणधयवडललंतु  
ओलंबियकिंकिणिरणणंतु  
सलिलणिहिसलिलंधोइयपएहिं  
तक्कारिचम्मलट्टीहएहिं  
छक्खंडपुहइवलययाहिवेण

जिह तं तिह अवरु वि दंडरयणु ।  
करिरयणु लोहवलयंकरयणु ।  
आरूढउ संदणि पुरिसरयणु ।  
णं माणसपंकइ रायहंसु ।  
परिभमियचक्कचिक्कारु देंतु । 5  
णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।  
तियसिंदह मणि विम्हंड जणंतु ।  
मुहसंमुहघुलियतरंगएहिं ।  
रहु कड्डिउ मारुयजवहएहिं ।  
अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण । 10

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पडु ण कासु किर रुच्चइ ॥

मरुहयकल्लोलहिं चलभुयडालहिं रयणायरु णं णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उक्खिवइ व मोत्तियतंदुलाइं  
भीएण व रायहु लइय वेल  
णं ढोयइ जलमयगल सरंत  
माणिक्कइं पवरपवालायाइं  
णं वोहइ वडवाणलपईवु  
संखाऊरउ जिह संखु धरइ  
उम्मुक्कविविहजलयरसणेहिं

तोयंइं णं अग्घंजलिजलाइं ।  
दावइ व विउलसलिलंतसेल ।  
जलणरकिंकरकररुहफुरंत ।  
णं दरिसई तीरलयालायाइं ।  
णं वेढिवि रक्खइ जंबुदीवु । 5  
पडुआणइ किंकरु किं ण करइ ।  
णं जंपइ पायालाणणेहिं ।

13. १ P °वलियंक°. २ MP °परिपुणु°. ३ MBP विंभउ. ४ MBP °सलिलसुणिहियपएहिं.

14. १ P ढोयइ. २ MBP रसंत; K सरंत but corrects it to रसंत. ३ BP दरसइ.  
४ MBP °पईउ. ५ MBP जंबुदीउ. ६ MBP संखाऊरिउ.

13. 1 a अ हि वा सि उं पूजितम्. 2 a सु य व णु शु क वर्णम्; अ हं गु अ भ ङ्गम्; b लो ह व ल यं क-  
र य णु लो ह व ल य व द्ध द न्तम्. 3 a दु म णि° आ दित्यः. 4 a त क्का रि सारथिः; च म्म ल ट्टी° कशा.

14. 7 a °सणे हिं शद्वैः; b पा या ला ण णे हिं वडवामुखैः.

किं विहुमरापं तुहुं जि राउ  
मा जेयहि महिवइ तिक्खभल्लि  
होर्पिणु अच्छडं एत्थु ताम  
तुह मुद्दइ अंकिउ हउं समुहु

तेल्लोकपियामहु जासु ताउ ।  
तउ तणिय वाय मज्जायवेल्लि ।  
णउं लंघमि महियलि वसमि जाम । 10  
मा किं पि कराहि मच्छरु रउहु ।

घत्ता—खारत्तु ण मेल्लइ जणु किं वोल्लइ णत्थि सहावहु ओसहु ॥

जसु णामु जि सायरु अवसें सायरु सो संभासइ णिययपहु ॥ १४ ॥

## 15

तरुणीअंगाइं व सलवणाइं  
लंघेप्पिणु रयणायरवणाइं  
ठाप्पिणु पुणु तेत्तियहिं तेहिं  
रिउभवणु पलोइवि णिववरेण  
अंदोलिय तारागहपयंग  
अच्छोडियवंधण विवलियंग  
थरहरिय धराहंर धरण वरुण  
संचालिय सरिसरसायरंभ  
णिवडिय पुरवर पायार गेह  
वरवीरहिं खग्गहु दिण्ण दिट्ठिं  
दप्पिट्ठु दुट्ठु भुयवलविमहु  
किं मंदरसिहरु सठाणल्हंसिउ

अहिसिचियतीरलयावणाइं ।  
पइसेप्पिणु चारहजोयणाइं ।  
तंवेहिं सरोसहिं लोयणेहिं ।  
अप्फालिउ धणुहुं धणुद्धरेण ।  
महि चलिय विवरणिग्गयभुयंग । 5  
णिण्णासिय तासिय रवितुरंग ।  
आसंकिर्यं जम वइसवण पवण ।  
गय मयगल मुडियालाणखंभ ।  
मुय कायर णर भयंभंतदेह ।  
अवर वि चवंति हा णट्टु सिट्ठि । 10  
भडभीयरु भावइ भीमुं सहु ।  
किं जग्गुं कवलिवि कालेण हसिउ ।

घत्ता—पायालि फणिंदहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंपिउं ॥

धणुगुणटंकारे अडगंभीरे कासु ण ह्यउं विप्पिउं ॥ १५ ॥

७ MBP तेल्लोक°. ८ MBP. होएविणु अच्छमि. ९ ण हुं.

15. १ MBP धराधर. २ M आसकय; BP आसंकइ. ३ P भयवंत. ४ MBP मुट्ठि. ५ MBP भीमसहु. ६ B °ण्हसिउ. ७ MBP ण जगु. ८ PK कपियउ. ९ P विप्पियउ.

13 साय रु सागरः; साय रु सादरः

15. 2 a °वणाइं जलानि. 8 b मुडिम° भद्रः. 11a भावइ चमत्करोति. 14 विप्पिउ भयम्.

16

धणुवेयजाणुं परिच्छिण्णमाणु  
णं कालेँ भासुरु कालदंहु  
धम्मज्झिउ पलयहुयासलीलु  
पिच्छंच्चिउ चंचलु णं विहंगु  
अइदूरगामि णं परमणाणु  
अइदीहायारउ णं भुयंगु  
अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउं  
अइलोहघडिउ णं लुद्धंविचु  
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु  
णावालउ णं तच्चिय महंतु

बंधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।  
णरणाहें पेसिउ वज्जकंहु ।  
गुणकोडिविसुक्कउ णं कुसीलु ।  
उज्जेयगइ णं सुयणंतरंगु ।  
अइसुद्धिवंतु णं सुक्कशाणु । 5  
अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।  
णं माणुसु कुसमयभँत्तिहयउ ।  
अइगयणगमणु णं खेयरत्तु ।  
अइकटिणभेइ णं णइपवाहु ।  
हुंकारें चोइउ णं सुमंतु । 10

घत्ता—मागहहु णिहेलणि हरिणीलंगाणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥

रइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूभंगभीसभिउडीहरेण  
सुरसमरसहासभयंकरेण  
देवेण समुद्दपरिग्गहेण  
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह  
णायउलवलयविलुलंतु गीदु  
भणु केण कलिउ मंदरु करेण  
भणु केण खलिउ णहि भाणु जंतु  
भणु कासु करोडिहि रिद्धुं रसिउ

विप्फुरियदसणडसियाहरेण ।  
दुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।  
तं पेक्खिक्खवि गज्जिउं मागहेण ।  
भणु केण लुहिय खयकाललीह ।  
भणु केण णिसुंभिउ धँरणिवीदु । 5  
उट्ठाविउ सुत्तउ सीदु केण ।  
णिव्विण्णउ प्राँणहं को जियंतु ।  
भणु को कयंतैदंतंति वसिउ ।

16. १ MB °जाण. २ MBP उज्जुय°. ३ MBP अइसिद्धिवंतु. ४ MBP °पाण°. ५ MBP होइ. ६ MBP °भंति°. ७ B लुद्धरत्तु.

17. १ MBP विलुलंत. २ M धरणिपीदु. ३ MBP पाणहं. ४ B रिद्धु. ५ P दंतंतवसिउ.

16. 4 b उज्जयगइ सरलगतिः. 7 a गु णि हि शरासनान्मुनेश्च. 10 a णा वालउ नौयुक्तः, पक्षे नमनशीलः. तच्चिय नदीप्रवाहः तात्त्विकश्च; b सुमंतु परममन्त्रः. 12 जउंणाणइ° यमुनानदी.

17. 4b लुहिय प्रोच्छिता. 5 a गीदु गृहीतम्. 8 करोडिहि शिरोस्थानि; रिद्धु काकः,

भणु केण विहंडिउ मज्झु माणु

केणेहु विसज्जिउ कुलिसबाणु ।

घत्ता—जेणेउं वियंभिउं रणु पारंभिउं सो महु अज्जु ण चुक्कइं ॥

10

णिब्भंगु जमाणु भीयउ काणणु विहिं वि एक्कु भुवुं दुक्कइं ॥ १७ ॥

## 18

इय भणिवि तेण काड्डिउ करालु

पहुताडणखंडियभडवमालु

दढमुट्टिणिवीडिउ वहइ वारि

वसुणंदउ ससिमंडलसरिच्छु

पहु पेच्छिवि केण वि लइउ कौंते

मोग्गरु मुसुंदि परसु वि तिसूलु

वावैलु सेलु झसु सत्ति मुसलु

केण वि भुयंगु केण वि विहंगु

केण वि अलियल्लि घुलंतजीहु

केण वि संचोइउ करहु सरहु

धारालउ णावइ मेहजालु ।

असि अरिकरिमोत्तियदंतुरालु ।

दासु व विंझइरि व वंसधारि ।

उरि चप्पिवि उट्टिउ लोहियच्छु ।

आरुट्टु को वि हणु हणु भणंतु । 5

केण वि करि लइयउ भिंडिमालु ।

हलु सव्वलु कंप्पणु जुज्झकुसलु ।

केण वि तुरंगु केण वि मयंगु ।

केण वि खरणहरुक्केरु सीहु ।

कु वि आहवि धाइउ जाम सरहु । 10

घत्ता—ता मागहमंतिहिं कयकुलसंतिहिं पणवेप्पिणु उच्चाइउ ॥

छणससहरवयणहिं तारहिं णयणहिं रायसिलिम्महु जोइउ ॥ १८ ॥

## 19

तंहिं लिहियेइं दिट्ठइं अक्खराइं

जिणतणयहु विविहणिहीसरासु

रायहु भरहहु ण णवंति जाँइं

सुरमणुयखयरदेसंतराइं ।

णियकालवट्टिसंधियसरासु ।

णिच्छउ दोहाइं मरंति तौंइं ।

६ MBP धुउ.

18. १ MBP °कवालु. २ MBP कुंतु. ३ MBPK पट्टिसु तिसूलु. ४ P भिंडमालु. ५ MBP वावल्ल. ६ MBP कप्पणु.

19. १ P तिहिं and gloss वाणे. २ MBP लेहियइ. ३ M °कालवट्टि. ४ M जे वि. ५ M ते वि.

11 णिब्भंगु अनिष्टम्.

18. 4 b लो हिय च्छु रक्तलोचनः. 6 b भिंडि मालु गोलागोफणी (?). 7 b कं प णु सर्वलोहमयः कुन्तः. 9 a अ.लि य ल्लि व्याघ्रः.

19. 2 b कालवट्ट° कालपृष्ठं नाम धनुः. 3 b दो हा इ द्विखण्डानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु  
पुणु अक्खिउ खलयणमइयवट्टि  
भो मागह किं जुज्झग्गहेण  
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव  
तुहुं एक्कु ण अवरइं सुरसयाइं  
लिहियहु किं किरँ कीरइ विसाउ  
ते वयणें सो पँरिमुक्कदणु  
अवलोयवि सरलिविपंतियाउ

दक्खविउ ससामिहि गंपि बाणु ।  
उप्पणुणउ महियलि चक्कवट्टि । 5  
मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।  
तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव ।  
तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।  
दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।  
थिउ मंतपहावें णाइं सणु । 10  
भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउं ।

घत्ता—मागहिण अगावें सविणंयभावें चक्केण व दिवसेसरु ॥

पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हावियसयमहेण  
जय भरह महागयलीलगामि  
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु  
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि भंति  
तुहुं धणउ धंणउ सुहिणिहियकामु  
ईसाणु मँहेसरणवियपाउ  
तुँह असिजलधारइ हरियछाय  
तुँह असिजलधारइ उद्धसासु

विहसेप्पिणु बोल्लिउ मागहेण ।  
तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।  
तुहुं हुयवहु अरिवरदिणुणडाँहु ।  
तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।  
तुहुं पवणु पबलबलदलणथामु । 5  
तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।  
अरिणरवइ तरु के के ण जाय ।  
वड्डारिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किंकर. ७ K पविमुक्क°. ८ MBP सरलियपंतियाउ. ९ MP add after this: भरहेसरायणामं-  
कियाउ, सुरणरखेयरभय(M सय)गारियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ;  
B adds: भरहेसरायणामंकियाउ, जुइणिजियरवियरकंतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, चक्कवइभरहणामं-  
कियाउ. १० M अकुडिल°.

20. १ MBP °विभाविय°. २ MBP °दाहु. ३ MBP धणइं. ४ MBP महीसर°. ५ B omits  
this line. ६ MPK अहिणरवइ. ७ B omits this line. ८ MP उद्धसासु.

5 a °मइयवट्टि संचूरकः. 6 b मुइ मुच्च; गहेण पिशाचेन. 9 a लि हियहु भवितव्यतायाः. 11 a  
सर लि वि पंतियाउ बाणलिखिताक्षरपंक्तयः.

20. 5 a धणउ लक्ष्मीदायकः कुवेरः. 7 a हरियछाय हतमहातमसः, अन्यत्र नीलवर्णाः. 8 a  
°सासु उच्छ्वासः सस्यं च.

तुह असिजलधारइ परिल्हसंति	वहुसलिल वि रयणायर तसंति ।	
तुह असिजलधारइ अइहुयाइं	रिउवहुणयणंसुयविंदुयाइं ।	10
तुह असिजलधारइ कुलि असोउ	हूयउ णिच्चं चिय भुत्तभोउ ।	

घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढंममहीवइ महिणाहहिं मणि भाविउ ॥  
 ताराणक्खत्तहिं पय पणचंतहिं पुष्पदंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे मागहपसाहणं णाम  
 वारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥  
 ॥ संधि ॥ १२ ॥

---

९ MBP पढमु. १० M पुष्पयंतु; BP पुष्पयंत.

---

9 a परि ल्ह सं ति गर्व मुच्चन्ति. 10 a अ इ हु या इं अतीव भूतानि. 13 पुष्प दं तु जिनश्चन्द्रादित्यौ च.

### XIII

साहिवि मागहु गेहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिणेयारहो ॥  
 हांजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ ध्रुवकं ॥

#### I

धरणीसरो चलइ	गरुडद्धओ घुलइ ।	
सिमिरं समुल्लइ	धूली णहे मिलइ ।	
सुरसिरिहरं कमइ	पडिबलइ उवसमइ ।	5
हरिवयणलालाइ	करिदाणवेलाइ ।	
जणजणियसंकेण	तंबोलपंकेण ।	
चरणाइं लिप्पंति	हारेहिं गुप्पंति ।	
अइगरुयभारेण	सामंतचारेण ।	
दसदिसिवहं भमइ	पुहईयलं णमइ ।	10
णाइणिहिं णउ रमइ	विसवाणियं वमइ ।	
कह कं व भरु सहइ	मउ मुयइ गइ महइ ।	
फणिपुंगमो तसइ	लवण्णवो रसइ ।	
णरवइभुए वसइ	रणजयसिरी हसइ ।	
परणिवबलं गसइ	विसमत्थलिं कसइ ।	15
वरवाहिणी चरइ	डुंगं पि पइसरइ ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

तीव्रापदिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
 संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
 यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
 सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ P साहेप्पिणु. २ MB गहिवि समु; P माहिवि समु. ३ P सुरसिहरि संकमइ. ४ MBP कह वि. ५ M दुग्गे पि.

1. 1 गह वि समु ग्रहे आक्रमणे विषमः; °णे यारहो° प्रापकस्य. 5 b पडि बलइं शत्रुसैन्यानि; 6 b °वे लाइ प्रवाहेण. 11 b वाणियं जलम्. 12 b गइ महइ कुत्रापि गन्तुं वाञ्छति. 15 b कसइ चूर्णाकरोति.



जलदुग्गमं तरइ	तरुदुग्गमं हरइ ।
गिरिदुग्गमं समइ	गयणंगणं कमइ ।
भडथडहिं तुरपहिं	संदणदिं दुरपहिं ।
अमरेहिं खयरेहिं	रिउवग्गखयरेहिं ।
छव्विह वि संकमइ	अरिपत्थिवे दमइ ।
रायस्स वसि करइ	अवसो भिसं रमइ ।

20

घत्ता—काणणि वईजयंतिणियडे वलु आवासिउ परगहणायरु ॥

गज्जइ गज्जंतहिं गयाहिं पलयकालि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

## 2

उवजलहिजलहितीराइयउ	गिरिगेरुयरेणुंयराइयउ ।
सालालइ णैट्टसालसहिउ	तालालइ तूरतालमहिउ ।
उंछुंगमड्ढि कयमंडुवरु	रत्तासोयंकि असोयधरु ।
कंचणवंतइ कंचणफुरिउ	पुण्णायपउरि पुण्णायरिउ ।
ससिरीसि सिरीसपसाहियउ	वहुवंसि णिवंसविराइयउ ।
संठियंसुवेसि वेसाभवणु	सभुयंगइ भामियभुयंगगणु ।
सिहिगलरवि मंगलरवगहिरु	सरिवहरिसु कूरवइरिवहिरु ।
सविसायइ अविसायउ सविहु	माइंदथइइ मायंदणिहु ।

5

६ MBP परपत्थिवे. ७ MBP मरइ; K रमइ, but writes adove it मरइ. ८ MPT वइजयंत°; B वइजयंते.

2. १ M मेरुय°, but records a p °गेरुय°. २ P °रेणुविराइयउ. ६ दूसासाल°. ४ MB छुंगमड्ढि. ५ MB °मडुधरु; P मडवरु. ६ P रत्तासोयंकियसोय°. ७ MP संठिउ. ८ MBP सरिवहिरिसु; K °वहरिसु but corrects it to वहरिसु.

19 a °थ ड हिं समूहैः. 21 a छव्वि ह षड्विध सैन्यम्. 22 b अव सो भिसं र म इ यो वशं नागच्छति सोऽवश्यं प्राणैर्विशुज्यते. 23 व इ ज यं ति णि य डि क्षीणसमुद्रानुप्रवेशद्वारसमीपे.

2. 3 a क य म डु व र कृतवलात्कारवरं बलम्. 4 b पुण्णाय रिउ पुण्यमाचरितं येन. 5 a स सि री सि शिरीषपुष्पयुक्ते; सि री स प सा हि य उ शिरीषैर्मुकुटवद्वैः प्रसाधितमलंकृतम्. 7 b स रि व ह रि सु सरितां नदीनां कूटतटसहिते; कूर व इ रि व हि रु कूराणां शत्रूणां वधे आदृतम्. 8 a स वि सा य इ पक्षिभिः शाकवृक्षैश्च सहिते; स वि हु प्रभुसहितम्; b माइंदथइइ आम्रस्थागिते; मायदणिहु लक्ष्मीचन्द्रसदृशम्, अथवा, मासि चन्द्रो माश्चन्द्रः सकलः पूर्णश्चन्द्रस्तेन सदृशम्.

कइलुकइ कइहिं पसंसियउ  
परलच्छीगहणुकंठियउ  
अत्थमिउ सूरु तमभरियदिसि

थिय हरिवरि हरिवरभूसियउ ।  
वणि साहणु सयलु वि संठियउ । 10  
थिउं णिसि उववासैं रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं णियकुलचिंधइं चावइं चक्कइं ॥

झाइउ मंतु महारिहरु दीवकंवाडइं विहडिवि थक्कइं ॥ २ ॥

## 3

तहिं अवसरि दिणयरु उग्गमिउ  
रहु वाहिउ सहसा तेण किह  
कसपहरतुरियपेरियतुरउ  
विरसियरहंगरोसियउरउ  
मणिघंटाजालहिं झणझणइ  
कइवयजोयणइं महासरहो  
पव्वालंकरियउ णं वरिसु  
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु  
गुणु कडिवि लीलइ जे णियउ  
रेहइ सरु दिणयरणिम्मलहो

भरहेसैं जिणवरिंदु णामिउ ।  
संपुण्णमणोहरुं पुण्ण जिह ।  
मरुफंसफारफरहरियधउ ।  
पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।  
भडभारकंतउ णं कणइ । 5  
जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।  
कोडीसरु किं ण जणइ हरिसु ।  
सुकलत्तु व पडुणा लइउ धणु ।  
करु सवणि ससि व्व सहइ थियउ ।  
णवणालु व कुंडलसयदलहो । 10

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवइहि महु संगेण वि वहइ खलत्तणु ॥

गुणथिरकरपरियड्वियउ कण्णालग्गु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

## 4

जीयाविमुक्कु जीवियहरणु  
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ

णं दिणयरु खरपसरियकिरणु ।  
णं पेसिउ दूर्यउ अप्पणउ ।

१ MBP हरिवरेहिं हरि भूसियउ. १० MBP दो वि.

3. १ MBP ° मणोरह. २MBP जोजियउ. ३ MBP °लग्गचाव°.

4. १ MBP जीयाइ मुक्क. २ MBP दूवउ.

13 दीवक वा ड इं जम्बूद्वीपकपाटानि.

3. 3 a क स° चर्मयष्टिका; b मरुफं स° वातस्पर्शः. 6 a महासरहो महान् सरः शब्दो जलं च यस्य स समुद्रः. 7 a पव्वालंकरियउ पर्वभिरमावास्यादिभिः ग्रन्थिभिश्च अलंकृतम्. 9 a णियउ नीतः; सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च.

4. 1 a जीयाविमुक्कु प्रत्यञ्चया विमुक्तः. 2 a मग्गणउ मार्गणो बाणो याचकश्च.

णिवडिउ सहमंडवि वरतणुहि  
 कंचणपुंक्खेणुज्जोइयउ  
 सुरदणुयदप्पलीलाहरइं  
 अरविंदचंदविमलाणहो  
 भरहहु जो जो ण सेव करइ  
 ता तेण जि तं जि समिच्छियउ  
 गउ तहिं जहिं सइं अच्छइ भरहु

कह कह व ण लग्गउ तहु तणुहि ।  
 सो तेण लपवि पलोइयउ ।  
 दिट्ठइं णरवइणामक्खरइं । 5  
 महु आइजिणेसरणंदणहो ।  
 सो सो अहि णरु अमरु वि मरइ ।  
 थोवउ णियपुणु दुगुंछियउ ।  
 मयरहरमज्झि खंचियसरहु ।

घन्ता—अक्खिअवि णाउं सगोत्तु कुल्लु पणाविउ सो महिवइभत्तारहु । 10

सुरहं मि तुच्छधम्मफलिन लग्गइ सिरि करु परपडिहारहु ॥ ४ ॥

## 5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु  
 तुह विग्गहु णिग्गहु विग्गहहो  
 पइं सामिय संधिउं जासु सरु  
 पिउ जासु अणिंदु जिणिंदु सइं  
 लइ लइ पयउ हारावल्लिउ  
 लइ सुरधरणीरुहसंभवइं  
 लइ णेउराइं लइ कंकणइं  
 लइ दिव्वंगंइं वत्थइं वरइं  
 धम्मु व जीवहु अब्भुद्धरणु  
 तं णिसुणिवि भरहें वोळ्ळियउ  
 जज्जाहि लपप्पिणु णिययघरु

पभणइ वरतणुमहिलुलियतणु ।  
 तुह संधाणु जि कारणु महहो ।  
 वैउसंधिउ भक्खइ तहु खयरु ।  
 पुण्णहिं विणु पहु को लहइ पइं ।  
 णं महिघुलियउ तारावल्लिउ । 5  
 कुसुमइं णिच्चं चिय णवणवइं ।  
 लइ दिव्वइं सत्थइं घणघणइं ।  
 लइ खीरतरंगइं चामरइं ।  
 परमेसर तुहुं जि मज्झु सरणु ।  
 एउ वि अवरु वि मोक्कल्लियउ । 10  
 अच्छहि महु होइवि आणयरु ।

३ M तउ. ४ MP °पुंखेणु°. ५ MBP माहिवहुभत्तारहु. ६ MBP सुरहम्मि धम्मतुच्छफलिन.

5. १ MBP तुहु. २ B संधिय. ३ M चउसंधिउ. ४ MBP देवंगइं. ५ MP मोक्कल्लियउ.

9 b °सरहु स्वरथः. 11 सुरहं मि देवानामपि.

5. 2 a विग्गहहो शरीरस्य; q महहो पूजायाः. 3 b वउसंधिउ वपुषः शरीरस्य संधयः संधि-  
 बन्धनानि, खयरु गृध्रः.

घत्ता—पूरइ महु महिवइ जसेण दविणविलीसु वासु किं वणिणउ ॥  
उत्तमु जगि अहिमाँणु धणु एउ वयणु किं पईं णायणिणउ ॥ ५ ॥

## 6

पप्फुल्लियदुमरसदावणिय  
वरतणु सुरु जिणिवि सुहावणिय  
पुणु जयदुंदुहिसइहु मिलिउ  
पच्छिमैदिसि संमुहु धाइयउ  
हयमुहपयलियफेणुज्जलउ  
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ  
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ  
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धादिसु  
सव्वत्थ जि भमियभमिरभमरु  
सव्वत्थ जि परिधाँइयअमरु  
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु

सुयपिँछरिँछकोड्ढावणिय ।  
वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।  
सहुं रापं साहणु संचलिउ ।  
सव्वत्थ जि कहिं मि ण माइयउ ।  
सव्वत्थ जि भँडथडसंकुलउ । 5  
सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।  
सव्वत्थ जि बँदिविंदञ्जुणिउ ।  
सव्वत्थ जि सुराहिगंधँसरसु ।  
सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।  
सव्वत्थ जि संचरंतखयरु । 10  
सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेईउ ॥  
साहणु एम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

## 7

अवलोइय रापं सिंधु किह  
दावियमय णावइ हत्थिहँड  
गिरितवसिहि णं परिघुलियजड

विन्ममधारिणि वरवेस जिह ।  
विबुहासिया वि संगहियजड ।  
रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास, ७ MBP अहिमाण°. ८ MBP पईं किं.

6. १ MP सुयरिँछपिँछ°; B सुयरिँछपिँछ°. २ B °दिससंमुहु. ३ B णडथड°. ४ M वंदविंद°. ५ MBP °गंधरसु. ६ MBP °भमरिभमरु. ७ M परिधाविय°. ८ B विओइउ; P णिवोइउ.

7. १ B हत्थिघड.

12 वा सु व्यासो विस्तरः.

6. 1 a पप्फु ल्लिये त्यादि—प्रफुल्लितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसायाः पृथिव्या दा व णि या वेदिका; b °को ड्ढा-  
व णि य कौतुकोत्पादिका. 8 b °सरसु शृङ्गारादियुक्तम्. 9 a °भमिर° भ्रमणशीलाः,

7. 1 b वरवेस वरा वेइया.

अइकुडिल णाईं सुरमंतिमइ  
 धणुलट्टि व दीसइ मुक्कसर  
 कमलेण कोसँलच्छि व धरइ  
 चलसारसजुयलपयोहरिय  
 रंगंतवयावलिपंडुरिय  
 णं गहियविचित्तवहँत्तरिय  
 गयहयचंदणरसपरिमलिय  
 जा मिलिय गंपि रयणायरहो

मलणौसणि णं पंचमिय गइ ।  
 बहुरायहंसपिय णाईं धर । 5  
 जा महिवइसत्तिहि अणुहरइ ।  
 कणइल्लपक्खिपंतिहिं हरिय ।  
 पवहंतकुसुमरयपिंजरिय ।  
 अहवा णं मंडणकच्चुरिय ।  
 चंदकवकलावसुकोंतलिय । 10  
 रत्ती धुत्ति व रय णायरहो ।

घत्ता—ताहि तीरि मुक्कउ सिमिरु तामत्थइरिसिहँरु संपत्तउ ॥

णं वारुणिदिसिकाभिणिहि णिवडिउ मित्तु णिरारिउ रत्तउ ॥ ७ ॥

## 8

अत्थमिइ दिणेसरि जिह संउणा  
 जिह फुरियउ दीवयदित्तियउ  
 जिह संझाराणं रंजियउ  
 जिह भुवणुल्लउ संतावियउ  
 जिह दिसि दिसि तिमिरइं मिलियाइं  
 जिह रयणिहि कमलइं मउलियइं  
 जिह घरहं कवाडइं दिण्णाइं  
 जिह चंदेँ णियकरपसरु किउ  
 जिह कुवलयकुसुमइं वियसियइं  
 जिह पीयइं पाणइं महुराइं

तिह पंथिय थिय माणियसउणा ।  
 तिह कंताहरणहदित्तियउ ।  
 तिह वेसाराणं रंजियउ ।  
 तिहँ चक्कउल्लु वि संतावियउ ।  
 तिह दिसि दिसि जारइं मिलियाइं । 5  
 तिह विरहिणिवयणइं मउलियइं ।  
 तिह वल्लहखेवँइं दिण्णाइं ।  
 तिह पियकेसहिं करपसरु किउ ।  
 तिह कीलियमिहुणइं वियसियइं ।  
 तिह अँहरइं महुरसमहुराइं । 10

२ P सुरमंतमइ. ३ MP °णासिणि पंचमिय°. ४ MBP कोसु. ५ P °वहुत्तरिय. ६ MBP चंदक°. ७ MBP °सिहरि. ८ MBP वारुणादिसि°.

8. १ P दीवउ. २ B omits this foot. ३ MBP° खेमइं. ४ MB अवरइं महरइं; M records a p महुरइं for महरइं; P अहरइं महुरइं.

7 b कणइल्ल° शुकाः. 8 a °वयावलि° वकपंक्तिः. 10 b चंदकवकलावसुकोंतलिय मयूरपिच्छकुन्तला. 11 a रयणायरहो समुद्रम्; b णायरहो नागरपुरुषं प्रति. 13 मित्तु सूर्यः; णिरारिउ अतिशयेन.

8: 1 b °सउणा निमित्तानि. 7 b °खेवँइं आलिङ्गनानि.

जिह जिह गलंति जामिणिपहर  
जिह णहि सुक्कुंगमु दरिसियउ

तिह तिह विइण्ण मउरइपहर ।  
तिह विडि सुक्कुंगमु दरिसियउ ।

घत्ता—ता चक्कउलहं पंकयहं तंबकिरणपूरियभुवणोयरु ॥

विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

### 9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे  
कोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे ।  
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ  
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।  
जंमभंउंहाभावइं चक्कइं चावइं जियरणइं 5  
अहिअंचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं ।  
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ  
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रहि चडिउ ।  
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तिक्खमइ 10  
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।  
कयमडकडवंदंणु वाहियसंदंणु चैवलधउ  
करिमयरउइहु लवणसमुइहु मज्झि गउ ।  
ता खंचिउँ रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे  
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जक्ख णहे ।  
रापं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ 15  
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि सांधिवि पेसियउ ।  
अवरणवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे  
तडिदंडु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

५ MP सुक्कगमु. ६ MP सुक्कगमु.

9. १ M चिकमइ; B चिकमइ. २ P °मइणु. ३ MBP धवल°. ४ MBP मज्झि समुइहु सो जि गउ. ५ MBP खंचिय°. ६ MBP थक्क. ७ P गुणु.

12 ७ वि डि विटे.

9. 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकरः. 8 °वेयडियइ खाचिते. 9 जोत्तारें सारथिना. 15 सुइ-सोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरणव° पश्चिमसमुद्रः.

सो णिवटिउ महियलि सहसा करयलि ढोइयउ  
 सुरर्वइसंकासैं वाणु पहासैं जोइयउ । 20  
 ता तम्मि विसिद्धइं लिहियइं दिद्धइं अक्खरइं  
 णं मत्ताचित्तइं मत्ताजुत्तइं णायरइं ।  
 हउं द्राणवमइणु कासवणंदणु चक्रवट  
 महु भरहहु केरी जगभयगारी सेव जइ ।  
 तुहुं करहि पियारी परिहवगारी तो' जियहि 25  
 णं तो असिवाणिउ जयसिग्गिमाणिउ धुंहुं पियहि ।  
 इय तेण पवाइउ कल्लु विवेशउ गयउ तहिं  
 अमरिंदसमाणउ पुहइहि गणउ थियउ जहिं ।  
 पविमुक्कपैहासैं दिहु पहासैं भग्गु किह  
 भविणं सपणामें सुहपरिणामें अरुंहुं जिह । 30

वत्ता—कुम्भुमइं कपकम्मफलइं चारुणंइं मि वरवाहणवाहो ॥  
 रयणइं चत्थइं भूसणइं दिण्णइं तेण वसुंधरिणाहो ॥ ९ ॥

## 10

सुरसिंधुसरिहिं देहलिय धरिवि	पइसरणु करिवि ।	
पुब्बावरेसु परिसंठियाइं	वइरट्टियाइं ।	
धेयडुगिरिहि ओइल्लयाइं	सुधेणिल्लयाइं ।	
चंडाइ मेच्छपंडाइं ताइं	दोसाहियाइं ।	
करवालं णिल्लिउ अल्लखंडु	पट्टविवि दंडु ।	5

८ MBPK सुरवर°. ९ MBP ता. १० MBP धुउ. ११ MBP °सहासैं and T स्वोपहासेन स्वमाहात्म्येन  
 वा. १२ MBP अरुहु. १३ P वाहणाइ वर°.

10. १ M देहल; BPT देहलि. २ MBP सुवणिल्लयाइं.

20 पहासैं प्रभासनात्रा नृपेण, 22 मत्ता वित्तइं माघ्राट्टानि भायादीनि; मत्ताजुत्तइं मात्ता गुरुल्लु  
 गलअभाइइत्यादिस्वराथ.

10. 1 सुरसिंधुसरिहिं गहासिंधुनयोः; देहलिय मर्यादाम्; ७ पइसरणु करिवि पुब्बावरेसु पूर्व-  
 दिग्भागे प्रवेशनं कृत्वा. 2 ७ वइरट्टियाइं वैरेणामपेण स्थितानि.

मालव मागह वंगंग गंग	कार्लिंग कौंगै ।	
पारस बब्बर गुज्जर वराड	कण्णाड लाड ।	
आहीर कीर गंधार गउड	णेवाल चोड ।	
चेईस चेर मरु दुँदुरंडि	पंचाल पंडि ।	
कौकण केरल कुरु कामरूव	सिंहल पहूय ।	10
जालंधर जायव पारियाय	णिज्जिणिवि राय ।	
पच्चंतवासि णीसेस लेवि	णियमुद्द देवि ।	
हेलाइ तिखंडावणि हरेवि	असि करि करेवि ।	
विजयद्धु संमुहु चलिउ राउ	सेणासहाउ ।	
दियहिहिं पत्तु तँ सिहरि केम	मँणि मोक्खु जेम ।	15
दिट्टुड महिहरु सुँसरेण सुसरु	कुहरेण कुहरु ।	
सरहेण विहंडिय भीमसरहु	समहेण समहु ।	
कडयंकिएण कडयंकियंगु	तुंगेण तुंगु ।	
गुरुवंसु गरुयवंसुभवेण	थावरु थिरेण ।	
गज्जियगउ पडिगज्जियगएणं	उब्भियधएण ।	20
हिसियतुरंगु सतुरंगएण	सरओरएण ।	
अच्चंतससावउ सावएण	पालियवएण ।	
आसंधिउ पत्थिउ पत्थिवेण	विजयहु कएण ।	

घत्ता—गिरि सोहइ दहिच्छणेण पुब्बावरसमुँहु संपत्तउ ॥

तिहिं तिहिं खंडहिं मेइणिहि मेरादंडु व दइवें घित्तउ ॥ १० ॥ 25

३ MBP कुंग. ४ MBP ददुरंडि. ५ M हेलाइ वि खंडावाणि. ६ MBP तहुं. ७ MBP मुणि; K मणि but corrects it to मुणि. ८ MB ससुरेण ससुरु. ९ B कडियंकियंगु. १० GK add after it उब्भयधउ. ११ MBPT सतुरंगवयणु. १२ MB समुद्द°.

16 a सुसरेण शोभनस्वरेण; सुसरु शोभनं सरः पानीयं सरोवरो वा यत्त; b कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन; कुहरु नृपः. 17 b समहेण पूजनया सहितेन; समहु मधुयुक्तः. 21 b सरओरएण सरजतो गिरिः तत्रानुरत्तौन. 22 a सावएण लक्ष्मीपदेन; b पालियवएण पालितप्रतिज्ञेन. 23 a पत्थिउ पृथ्वीविकारः. 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्डः.



## II

तहिं अंवसरि गुहदारहु दूरें  
 आवासिउ गहाणि सैडंगु बलु  
 महिसउलमदकहविउ सरु  
 आलुंखियाइं पिक्कइं फलइं  
 गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं  
 उट्टावियाइं कोइलकुलइं  
 णिल्लुक्कइं मुंकाइं सयदलइं  
 मयवंदइं रुंदइं णिग्गयइं  
 सुत्तइं रत्ताइं रंइंहराहिं  
 णिवकरिहिं वियारिय विंल्लकरि

सुरतरुवरकरढंक्रियेसूरें ।  
 करिदसणपहरकलुसियउ जलु ।  
 कम्मयरकुद्वाराहिं छिण्ण तरु ।  
 णिल्लूरियाइं सहलदलइं ।  
 मुसुमूरियाइं अंवयवणइं । 5  
 भयतसियइं रसियइं णाहलइं ।  
 दसदिसु गयाइं सडणयकुलइं ।  
 पत्तहिं नेत्तहिं रंइंसा गयाइं ।  
 णरमिहुणइं णववंल्लीहराहिं ।  
 सुहडेहिं णिहय रुंजंति' हरि । 10

घत्ता—वणसिरि उव्वासिय सुइरु एवहिं जणवण णिरु णिवसइ ॥

पेच्छिवि भरहाहिवणिवइ कुंदर्पुष्पयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिस्रिट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहयु  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे तिस्रंडवमुंधरापसाहणं णाम  
 नेरुमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥

॥ संधि ॥ १३ ॥

11. १ MBP अवरगुहादारहु सदरि. २ MBP °दक्रियइ सूरि. ३ MB सडंग°. ४ MBP कदाभितं.  
 ५ MBPK सुकइं. ६ MBP सहसद. ७ MBP रंयरेहि. ८ MBP °वलीहरेहि. ९ MB रुंजंत; P रुंजंति.  
 १० BPK पुष्पदतहिं.

11. 4 a आ लुं खियाइ आस्वादितानि; 4 b सहल° सार्दाणि. 5 a °मंडलेहिं संपातैः. 7 a णि-  
 हुक्कइं त्थोटितानि.

## XIV

धरतंणुमयमहेण जियमागहेण भुयबलणिद्वलियपहासै ॥  
हयपरमहिवइहि सेणावइहि आपसु दिण्णु भरहेसै ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—संसिविरु जाम तेत्थुं पडु णिवसइ सिद्धतिखंडमंडलो ।  
ता पत्तो मयासि मणिसेहरु सवणविलंबिकुंडलो ॥ १ ॥

<p>सो पभंणइ पणवियसिरु सँहरिसु णवर्धेणथणियमडुरमणहरैगिरु भो कयविजयविजयगिरि उत्तर- सँ वि तिखंड चंडरिउखंडण सिहरिगुहादुवारु उग्घाडहि जइ तो<sup>१</sup> मग्गु भडारा होसइ जयगिरिवरसिहरैग्गणिकेयउ ता चमुपमुहडु ववणु णिरिक्खिउ भो मेहेसर करहि महुत्तउ णिविडु विहंडिवि पडउ विसट्टउ स पडुमणोरहकरणुक्कंठिउ</p>	<p>मुहससिकिरणपँसरधवलियदिसु । ६ सुयणु भुयणभरधरु णिरुवमु णिरु । दिसि अवर वि सुर णर रवि तुह धर । भो णाहेयतणय कुलमंडण । कुलिसदंडखरपहरँ ताडहि । पुण्णु तुहारउ गरुयउ दीसइ । 10 जासु अहं पि दासु संजायउ । जसवइपुत्तँ पेसणु अक्खिउ । हणहि गिरिंदकवाडु णिरुत्तउ । जिह हयदुज्जणमणु तिह फुट्टउ । सो पसाउ पभंणंतु समुट्टिउ । 15</p>
--	---

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउग्गिण्णदन्तङ्कुरोहा  
सेसाहीवद्धमूला जलहिजससमुब्भूयाडिण्डीरवत्ता ।  
वम्भण्डे वित्थरन्ती अमयरसमयं चन्दविम्बं फलन्ती  
फुल्लन्ती तारओहं जयइ णवलया तुज्ज भरहेस किन्ती ॥

M however reads °पिण्डीर° for °डिण्डीर°. G.K. do not give it.

1. १ MB संपइ जाम; P एत्तहि जाम. २ P सुहरिसु. ३ B °पसरि°. ४ MBPT °घणङ्गुणिय°. ५ K °मणहरि. ६ MBP साधि. ७ MBP तउ. ८ P °सिहरणिकेयउ. ९ MBP करि महु वुत्तउ.

1. 1 °मयमहेण °मदमथनेन. 4 मयासि अमृताशी देवः. 11 a जयगिरिवर° विजयार्धः. 13 a महुत्तउ मया उक्तम्. 14 a पडउ पततु गच्छतु; विसट्टउ विकसितः.

परिणयसुयतणुंमरगयहरियइ  
वरभडसंगरपहरणपोढउ  
जाएवि पट्टि देवि गिरिदारहु

णाणागमणविलासहुं भरियइ ।  
चडुलतुरंगरयणि आरुढउ ।  
धरिवि तुरउ संमुहुं खंधारहु ।

घत्ता—अवहत्थिवि छलेण णियभुयबलेण हुंकारिवि णिरु रत्तच्छे ॥  
परणरपडिखलणु महिहरदलणु उम्मुक्कु दंड परिहच्छे ॥ १ ॥

20

## 2

दुवई—मुक्कइ पहरणम्मि हरि णिग्गउ खुरदरमलियकाणणो ।

बलपुंगमु वि णविउ णरणियरहिं जगजयपहसियाणणो ॥ १ ॥

ता दंडरयणणिट्टुरपहारविहडियकवाडकिंकारसइसंमइखुइविइवियसप्पमुह-  
मुक्कफारफुक्कारजांलियविसंसिहिजालं ।

जालामालाकलावहेलापलित्तणासंतमत्तकरिचरणपेल्लणुल्ललियमणिसिलावडैण-  
कुद्धरुंजंतसहूलरोलभीमं ।

भीमुंभापम्भारभरियकुहरंतणिग्गयाहिंदसुंदरीमुक्कसिचयपयडियपयोहरुल्लिहियं- 5  
हिययरइरसियतावसुद्धरियं चरियभारहारं ।

हारवमुयंतसवरीपुलिंदसिसुदीसमाणकेसरिकिसोरणहकुलिसकोडिदारिय-  
कुरंगरुहिरंभवाहडुंगं जायं गुहादुवारं ।

घत्ता—डज्जंतहं खगहं महिहरमृगहं घोसेणप्पाणउं णिंदइ ॥

अमुणियवेयणु वि णिच्चेयणु वि णं दंडे ताडिउ कंदइ ॥ २ ॥

१० M परियण°. ११ MB °रयणआरुढउ. १२ P °परिखलणु महिहरदलमलणु.

2. १ MBP °जणिय°. २ M विसग्गिसिहि°. ३ MBP °वडणरुट्टुरुंजंत ( P रुंजंत ) मत्तसहूल°. ४ MBP भीमुण्हा°. ५ B °ल्लिहियरइ°. ६ B °रियभार°. ७ P हाहारव°. ८ G °दुगं. ९ MBP °मिगहं.

16 a परिणयसुयतणु° तरुणशुकशरीरवञ्जीलः. 18 a पट्टि देवि पृष्ठे दत्त्वा. 19 छलेण हननविज्ञानकुश-  
लेन. 20 परिहच्छे वेगेन.

2. ३ °संमइ° कोलाहलः; 4 °विइविय° उपद्रुताः. 5 °हेलापलित्त° युगपत्प्रज्वलितः. 7 भी-  
मुंभा प्रचण्डस्तापः. 8 °पयडियेत्यादि-प्रकटितौ च तौ पयोधरौ ताभ्यामुल्लिखितं विचारितं हृदयं येषां ते;  
°रइरसिय रतिरसिकाः; °चरियभारहारं चारित्रभारस्य हारो हरणं यत्र.

3

दुवई—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो ।

अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवइरिसासणो ॥ १ ॥

छड्डियावलेवो	इच्छियंघिसेवो ।	
रिद्धिबुद्धिवंतो	आगओ तुरंतो ।	
भूयंभक्तिकामो	तगिरिंदणामो ।	5
सेलसिंगवासो	सुद्धसेयवासो ।	
वंदिओ णरिंदो	तेण वीरचंदो ।	
हारमिंदुधामं	दिव्वपुप्फदामं ।	
कंकणं किरीडं	कुंभमंभणीडं ।	
पंडुरं पसत्थं	चारु हारि वत्थं ।	10
कुंजरारिवूढं	हेमरणवीढं ।	
हित्तकंजलीलं	भम्मदंडणालं ।	
सव्वलोयमोळं	कित्तिवेह्लिफुळं ।	
चामरेण जुत्तं	णिम्मलायवत्तं ।	
हासहंसवण्णं	राइणो विइण्णं ।	15
मंगलं पहाणं	तित्थतोयण्हाणं ।	
रुक्खरोहियासे	तम्मि भूपएसे ।	
अच्छिओ छमासं	देवदारुवासं ।	
वल्लरीललंतं	माणियं वणंतं ।	
णिग्गयग्गिजालं	मंदधूममालं ।	20

3. १ MB °संहट्ट°. २ MB छंडिया°. ३ P भूप°. ४ MB वीरचंदो. ५ MB °मंडणीडं. ६ MBP हेमवण्ण°.

3. 1 °केयूर° बाहुरक्षः. 2 °संघट्ट° भेलापकः संमदो वा; °सा सणो सा लक्ष्मीस्तस्याः स्वनः आज्ञावचनं वा. 3 b इच्छियंघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य सः. 5 a भूय° भूपः; b तगिरिंदणामो विजयार्थनामा. 9 b अंभणीडं जलभृतम्. 11 b हेमरणवीढं हैमरत्नपीठम्. 12 a हित्तकंजलीलं हता अनुकृता कजस्य पद्मस्य लीला शोभा येन; b भम्म° सुवर्णम्. 17 a °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि. 19 a वल्लरी° वल्ली,

मुक्कदीहसासं	णं महीहरासं ।
दावियंधयारं	तं गुहादुवारं ।
णट्टताववेयं	सिद्धमग्गभेयं ।
लगासीयवायं	सीयलं च जायं ।

घत्ता—चंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ ता पेसिउ पालियखत्ते ॥

25

आरासयफुरियउ सुरपरियरिउ संचलियउ चक्क पयत्ते ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुणु चक्काणुमगलंगंतमहाभडकरितुरंगयं ।

चलियं साहणं पि रहभमियरहंगाहयभुयंगयं ॥ १ ॥

वसहकरहखेरवरवलइयभरु	हरिसुरदलियमलियवणतणतरु ।
मयगलमयजलपसमियरयमलु	दसदिसिमिलियमणुयकयकलयलु ।
कसझसमुसलकुलिससरकरयलु	जणवयपयभरणवियमहियलु । 5
असिवरसलिलपवहधुयपरिहवु	सतिलयविलयवलयखणखणरवु ।
मसिणघुसिणरससुपुसियउरयलु	पवणपहयधैयचयचियणहयलु ।
चवलचमरवियलणपसरियकरु	परिमललुलियललियमहुलिहसरु ।
मरुवहविगयखयरसुरवरघरु	अमरिसकसणपिसुणजयसिरिहरु ।
सहपरिभमियजिमियसुरमियसहु	पहुसुहजणणकहियमणहरकहु । 10
पहरविहुरु सुमरिवि मयभययरु	णिवबलु गिलइ व गुहमुहगिरिवरु ।

घत्ता—तेण जि रिउमहहो मग्गियपहहो धेरु आयहु फणिवहुलालिउ ॥

भरहहु भयवसेण सगुहामिसेण णियहियंवउं दक्खालिउ ॥ ४ ॥

७ MBP सिद्धमग्ग°.

4. १ B °मगलंगं महा°. २ B °खरखुरवलइय°. ३ MBP °पणमिय°. ४ B °नुवपरि°. ५ M° धयचयवियणहलु; P °धयचुवियणहयलु. ६ P °वियलिण. ७ MBP पहसुह°. ८ MBP °विहुर. ९ MBP घर. १० MBP °हियवउं णं दक्खालिउं.

21 b महीहरासं पर्वतमुखम्. 23 b सिद्धमग्गभेदं शिष्टमार्गभेदम्.

4. 7 a °चिय° प्रच्छादितम्. 9 a मरुवह° पवनमार्गः आकाशम्; °सुरवरघरु देवविमानम्.  
10 a °सहु सखा.



विसुल्लोलवेलावलीवंकियाओ  
महाणायरायस्स णं णाइणीओ  
अभग्गाइं दुग्गाइं णित्थारएणं  
सरीसारतीराइं संदाणिऊणं  
दरीमाणियं पाणियं लंघिऊणं

पहँस्संतरे राइणो थक्कियाओ ।  
झँसुप्पिच्छसिंधुस्सरीजाइणीओ ।  
सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं ।  
पुरो भिच्चसंचारयं जाणिऊणं ।  
परं पाँरमाधारमासंघिऊणं ।

10

घत्ता—गिरिकुहरंतरहो रमियामरहो णिगंतउ सालंकारउ ॥

सहइ महारुहहो वियलिउ मुहहो बलु कव्वु व सुकइहि केरउ ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—ता णिगंति भरहि भेरीरवकंपियमेच्छमंडलं ।

परबलदलणवीरकोलाहलमिच्छियसप्परगौंदलं ॥ १ ॥

जं गुलुगुलंतचोइयमयंगपयभूरिभारभारिज्जमाणभूकंपणमियणाइंदमुक्क-  
पुक्कारावघोरं ।

जं हिलिहिलंतवाहियतुरंगखरखुरँखयावणीचलियधूलिणासंततियसतरणी-  
विचित्तघोलंतचेलचित्तं ।

जं हणुंभणंतपक्कलपदुक्कपाइक्कमुक्कललँक्कहकरिउसुहडविहडणुग्घुट्टरोलफुट्टंत-  
गयणभायं ।

5

जं रहियमुक्कपग्गहविसेसरंगंतरहरसाचलणपँडियगुरुसिहरिसिहँरँचुण्णजाय-  
चंदणकुचंदणोहं ।

२ M पहासतरे; B पहाभंतरे. ३ MB झसुप्पत्तिसिंधूसरी°; P झसोपित्थ सिंधूसरी°; T उपित्थ उल्वण.  
४ BP पारमावार°.

7. १ MBPK °णविय°. २ MP °फुंकार°; B °सुंकार; K °पुंकार°. ३ MP °खुरखरखयावणी°. ४ MBP हणुहणुभणंत°. ५ MBP °ललक्क°. ६ P °रंगंततुरयरह°. ७ MP °चलणवडिय°; B °चलण-  
चडिय°. ८ MBP °सिहरसयचुण्ण°.

6 a वि सु ल्लो ल° जलकल्लोला. 7 b झ सु प्पि च्छ° मत्स्योल्बणा सिंधुः, °जा इ णी ओ °गामिन्यः. 8 b सवि-  
ण्णा णि णा कुशलेन स्थपतिरत्नेन; सं क मे णं जलरोधार्थं कृतेन सेतुबन्धेन. 9 a सं दा णि ऊ णं रुद्धा. 12 म हा-  
रु ह हो अतिमहतः कवेः.

7. 2 °गौंदलं मेलापकः. 2 °पक्कलं समर्थाः, °ललक्कं रौद्रः. 6 °पग्गहं रश्मयः; °कुचंदणं  
रक्कचन्दनादि.

जं हारदोरकेऊरकडयकंचीकलावमउडावलंविमंदारदामसोभंतजक्ख-  
जक्खीविमाणछण्णं ।

जं भीर्यं वराराकरालचक्काणुगामिमंडलियसूरसामंतकोतकरवालचाव-  
संघायसंकडिल्लं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपसमंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरिय-  
विविहच्छत्तचिंधं ।

जं भिच्चदेहपरियलियसेयणीसंदविंदुहयफेणसलिलचिक्खल्लंतल्लखुप्पंत-  
सयडसंकिण्णकुहिणिदेसं ।

10

घत्ता—तं पेच्छिवि पवलु उत्थरिउ बलु बोळ्ळिज्जंइ मेच्छकुलेसहिं ॥

एवहिं को सरणु दुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउहुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिमुहाइं जो लंघइ पहु सामत्थवंतओ ।

सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ णिज्जियदहंदिदयंतओ ॥ १ ॥

बहुकालहु दइवेण णिवेइउ  
वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं  
धीरें मंतें एउ पवुच्चइ  
सव्वु सहिज्जइ जं जिह दुक्कइ  
जहिं भंडणु तहिं अवसें खंडणु  
विसहर परणरसेण्णवियारा  
सुमरहु सामिसाल सव्भावे  
तेहिं मि ए आलाव विवेइय

हा हा पलयकालु संप्रोइउ ।  
मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।  
आवइकालइ धाह ण मुच्चइ । 5  
हयविहिविहियहु को वि ण चुक्कइ ।  
धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु ।  
ते तुम्हहं कुलदेव भडारा ।  
किं भएण किं किर बलगावे ।  
णाय मेहमुहु मणि णिज्झाइय । 10

१ MB भीयरवंदाढाकराल°; P भीयरावदाढाकराल°. १० MBP °चिक्खल्ल°. ११ MBP वोळ्ळिज्जइ.

8. १ MBP °दहादिहंतओ. २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह णउ मुच्चइ. ४ MBP णिवेइय. ५ °मेहमुहु.

8 वरारा° श्रेष्ठा आरा. 10 °णी संद° निष्यन्दः.

8. 4 a आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनाज्ञोः म्लेच्छराजयोः. 9 b बलगावे बलगवणे.



वियडफडाकडप्पदप्पुन्भड  
उल्लंततर्द्धूममलीमस  
अग्घकुसुमरसवासुद्धाइय

गरलाणलपलित्तगिरितडवड ।  
सिरमणिगणमऊहदीवियदिस ।  
चल्लंवलंत ते झत्ति पराइय ।

घत्ता—बोल्लिउ उरगइणा विसहरवइणा किं पाडमि गहणक्खत्तइं ॥

कीलियसुरवरहो माणससरहो णिल्लूरमि किं सयवत्तइं ॥ ८ ॥

15

## 9

दुवई—ता मेच्छाहिवैण भणिया फणियो गर्जंतगयवरं ।

णिहणह वेरिसेण्णमिणमो तरुणीकरचलियचामरं ॥ १ ॥

खंधावारहु उप्परि अहणिसु  
मयउल्लु तसइ रसइ वरिसइ घणु  
महिणीहरिउ हरिउ वड्डइ तणु  
फुल्लकलंबतंबु दीसइ वणु  
ताडि तडयडइ पडइ रुंजइ हरि  
जल्लु परियलइ घुलइ घुम्मइ दरि  
जल्लु थल्लु सयल्लु जल्लु जि संजायउ  
सरु कुसुमसरु णिरारिउ संघइ

ता णायहिं वेउव्विउ पाउसु ।  
पीयल्लु सामल्लु विलसइ सुरघणु ।  
पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणु । ६  
तिम्मइ तम्मइ मणि जूरइ जणु ।  
तरु कडयडइ फुडइ विहडइ गिरि ।  
अइरय सरइ भरइ पूरं सरि ।  
मग्गु अमग्गु ण किं पि विं णायउ ।  
विरहं मंथिय पंथिय विंघइ । 10

घत्ता—पाणिउ णीयगइ विज्जु वि डहइ धणु णिग्गुणु कुडिल्लु सुरिंदहो ।

पाउसु हयमणहो समु दुज्जणहो जो वरिसइ उवरि णरिंदहो ॥ ९ ॥

६ MBP उल्लंततबहुधूम<sup>०</sup>; ७ K चलचलंत.

9. १ MB णिहणिवि. २ MBP तणु. ३ BP <sup>०</sup>कलंबु तंबु. ४ MBP अमग्गु वि किं पि ण णायउ.

12 a <sup>०</sup>तद्धूममलीमस वटवृक्षसमुद्धूतधूमवन्मलिनाः. 13 a <sup>०</sup>वासुद्धाइय <sup>०</sup>गन्धेन सत्वरमागताः. 14 उर-  
गइणा सर्पेण.

9. 2 इणमो इदम्. 3 a अहणिसु अहर्निशम्; b पाउसु मैघ'. 6 b तिम्मइ तम्मइ जलार्द्र-  
भवति खियते च. 8 b अइरय शीघ्रवेगा; सरइ वहति. 11 णीयगइ निन्नेन गच्छतीति.

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेणहयदुमविगयरिंछओ ।

णवघणरावमुइयचंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लग्गउ वासारत्तउ  
असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ  
ताहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ  
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं दलियउ  
को मंडणु विसहइ रिउघरिणिहि  
वंस वंस तुहुं मइं वडारिउ  
महु सरु प्राणहारि णावइ सरु  
धोयइ मयमायंगहं दाणइं  
थक्क सचक्कवाय रह णं सर  
तां पभणइ णरणाहपुरोहिउ  
एयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ  
ता राएं बलवइमुहुं जोइउ

सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।  
भडभुयदंडहु संमुहुं आवइ ।  
लोहें गिलियहु को किर लग्गइ । 5  
वहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ ।  
ढालइ सिरसिंदूरइं करिणिहिं ।  
एवहिं परचिंधें वेयारिउ ।  
इय गजंतु व पभणइ जलहरु ।  
दुम्मेहहं रुच्चंति ण दाणइं । 10  
तोइ तरंति ण के के किर णर ।  
लोउ देव उवसगें रोहिउ ।  
अइंणु वारिवारणु चिंतिज्जइ ।  
तेण वि पेसणु झत्ति विवेइउ ।

घत्ता—णियमणि चिंतियउ तैलि धित्तियउं तं चम्मरयणु जणभरधरु ॥

उणपरि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलीयवत्तु जियससहरु ॥ १० ॥ 15

11

दुवई—बारहजौयणाइं विथारें सिविरु कुलीरमाणिए ।

पविउलच्छत्तचम्मकयसंपुडि थिउ वरिसंतु पाणिए ॥ १ ॥

10. १ K सलिलुच्छल्ल°. २ MB पाणहारि; P पाणिहारि. ३ MBP ताम भणइ. ४ M अयणु.  
५ MBP घत्तियउ. ६ K °आयपत्तु जिह ससहरु.

11. १ MBP वरिसंत.

10. 1 स लिलुत्थल्ल° जलेनोत्पाटितः; रेल्ल° चालितः. २ °चंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ मुक्त-  
चन्द्रकाणां मयूराणां कलापाः उद्ध्वसिताः. 3 a वा सारत्तउ वर्षाकालः. 6 a धुवइ क्षालयति. 8 a वंस वंस  
हे ध्वजदण्ड. 10 b दुम्मेहहं दुष्टमेघानां दुर्मेघसां च. 13 b अइणु चर्मरत्नम्; वारिवारणु छत्ररत्नम्. 16  
जियससहरु निर्जितः चन्द्रः येन तादृशम्.

11. 1 कुलीरमाणिए मत्स्यानां प्रीतिकरे.

गयणयलु धरणयलु गिरिसिहरु रेल्लियउ पडिण पउरेण तोएण पेळ्ळियउ ।  
 अइणायवत्तेहिं रइए समुग्गम्मि णिवसंति णरवइणरा णाइं सग्गम्मि ।  
 ते दोण वरिसंति ते णेय जाणंति इट्टाइं मिट्टाइं सोक्खाइं माणंति । 5  
 रयणोयरे साहणं जाम संचरइ अरविंदगब्भम्मि अलिउलु व रइ करइ ।  
 खलबलहरोवाय हिययम्मि संभरइ कागणिकयाइच्चससियरहिं वावरइ ।  
 सत्ताहरत्ते गए णवर कुद्धेहिं चूडामणिल्लेहिं मारणविरुद्धेहिं ।  
 इंगालहरिणीलकालिंदिकालेहिं मुहकुहरणिम्मुक्कगरलग्गिजालेहिं ।  
 उचुंगभूभंगभंगुरियभालेहिं सिंसुसंसहरायारदाढाकरालेहिं । 10  
 णिट्टवियपरदंडजमदंडदीहेहिं आरत्तलोलंतंचलजमलजीहेहिं ।  
 गरुयाहिमाणेहिं परिगहियमेच्छेहिं कलहिच्छदुप्पेच्छरोसारुणच्छेहिं ।  
 णीसासविसलवमलौलित्तचंदेहिं मरु मरु भणंतेहिं मरुगांसिवंदेहिं ।  
 हरिकरिमहाजोहसामंतपब्भारु बिउणयरु तिउणयरु वेढियउ खंधारु ।  
 रामाहिरामेण संगामधुत्तेण रूसेवि देवाहिदेवस्स पुत्तेण । 16

घत्ता—परणरदुज्जयहो राए जयहो वीरपट्टु सइं बद्धउ ॥

सो विसहरवरहं णवजलहरहं जुगखयकयंतु णं कुद्धउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—ता सोलहसहासजक्खामरविरइयगंधवाहिणं ।

भग्गा सलिलवाह पीलू विव चलयरहरिणणाहिणं ॥ १ ॥

चक्के वइरिमहाभड छिण्णा

दइवें णाइं दिसाबलि दिण्णा ।

तं अवलोयवि गय भयवस फाणि

गय णवघण गय सा सोदामणि ।

मेच्छणारिंदहिं सकरुणु रुण्णउं

दोजीर्यहुं किं किरै पडिवण्णउं । 5

२ MBP °विलुद्धेहिं. ३ B °सासिहरापर°. ४ MBPK °घोलंत°. ५ MBP °मलालित्तदेहेहिं. ६ MBP मरुगासिभंडेहिं. ७ P °देवेसपुत्तेण. ८ MBP सइं वीरपट्टु सिरि बद्धउ. ९ MB °धरहं; P °धारहं. १० °हारहं; G.K omit णवजलधरहं. ११ MBP जुगखइ कयंतु.

12. १ MBP सोलस°. २ MBP दोजीहहिं. ३ MB किंकर.

4 a अइणायवत्तेहिं चर्मातपत्राभ्याम्; समुग्गम्मि संपुटे. 5 a दोण द्रोणमेघाः. 7 b खलबलइरोवाय दुष्टानां बलापहारिण उपायान्. 13 b मरुगासि° सर्पाः. 14 b बिउणयरु द्विगुणतरम्.

विसंभरियहं किं किर सुयणत्तणु  
छिद्दण्णेसिहिं को रंजिज्जइ  
चरणविवज्जिउ को जसु पावइ  
रणजइ जउ गज्जिउ घणणाएं  
सिरचूलाचुंबियभूभायहिं  
दिण्णहिरणवत्थसंघायहिं  
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ  
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं  
देवय दिव्वदेह णउ सा सरि  
राउ णिहालिवि कलसविहत्थइ

वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।  
अणिलासिहिं किं परु पोसिज्जइ ।  
णिच्चभुयंगहं णिच्चु जि आवइ ।  
घणणाउ जि सो<sup>६</sup> कोक्किउ राएं ।  
दूरंतरहु णमंसियपायहिं । 10  
दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।  
अणुतीरें सिंधुहि पुणु चल्लिउ ।  
आइय सिंधु भडारी तावहिं ।  
सिंधुकूडवासिणि परमेसरि ।  
लहु भदासणि णिहिउ पसत्थइ । 15

घत्ता—सिंधूदेवयए जलयरधयए अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥

दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतथियमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमाणिणए महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम  
चोद्दहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥

॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं. ५ P छिदाणेसिहिं. ६ MBP कोक्किउ सो. ७ P सिंधुवदेवइ. ८ B °पियमहुयर.

12. 7 b अ णि ला सि हिं वायुभक्षैः सपैः. 8 a चरण° चारित्रं पादाश्च. 12 a गंजोल्लिउ रोमा-  
ञ्चितः उल्लसितः प्रभुः. 17 ण व पु प्फ यं त° नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्यास्; नवपुष्पाणां वा अन्तो मध्यम्.

XV

भेल्लिवि सिंधुसरि पणवेप्पिणु रिसहजिणिंदहो ॥

पुणु संचलिउ पहु भयरसु जणंतु अमरिंदहो ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

सेणासेणाहिवपरियरिय	हिमवंतु धरोप्पिणु संचलिय ।	
सोहइ गच्छंती पुव्वमुह	कुरुवंसणाहपत्थिवपमुह ।	
दीसइ सेलत्थलि काणणउं	महिसीदुद्धु व साहाघणउं ।	5
णाणांमहिरुहफलरसहरइं	कत्थइ किलिगिलियइं वाणरइं ।	
कत्थइ रइरत्तइं सारसइं	कत्थइ तवतत्तइं तावसइं ।	
कत्थइ झरझरियइं णिज्झरइं	कत्थइ जलभरियइं कंदरइं ।	
कत्थइ वीणियवेल्लीहलइं	दिट्ठइं भजंतइं णाहलइं ।	
कत्थइ हरिणइं उल्ललियाइं	पुणु गोरीगेयहु वलियाइं ।	10
कत्थइ हरिणहरुक्कत्तियइं	करिकुं <sup>३</sup> मुच्छलियइं मोत्तियइं ।	
कत्थइ सुम्मइ जक्खिणिद्धुणिउं	खयरीकरवीणारणरणिउं ।	
कत्थइ भसलउलहिं रुणुरुणिउं	कत्थइ सुपण किं किं भणिउं ।	

घत्ता—कत्थइ किंणरहिं गाइज्जइ सवणपियारउ ॥

रिसहणाहचरिउ फणिणरसुरलोयहु सारउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं  
 कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।  
 सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेमान्तरां निर्वृतिं  
 श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्वत भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

MB read प्रेम्णोऽन्तरां for प्रेमान्तरां. G does not give it.

UK give it at the commencement of Samdhi XCV.

1. १ MB °महिरुहरुहरस°; P °महिरुहफलरस°, but records a p °महिरुहरुहरस°. 4 MBP किलिकिलियइं. ३ MBP °कुभत्थलियइं.

1. 5 b सा हा घ ण उं क्षीराग्रं तरिका तथा घन महिषीदुग्धम्, शाखाभिश्च घनं काननम्. 9 b णाह-  
 ल इं शबराः. 11 a हरिण हर° सिंहस्य नखैः

## 2

णिक्खित्तसुरासुररइणियले  
णवचंपयकुसुमावासियउ  
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं  
करिसालाणडसालाहरइं  
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ  
ठवियइं मणिमंडवियासयइं  
दुव्वारवइरिमयपहरणइं  
दक्खालियसैसहररयणियहि  
कुससयणि पसुत्तउ सइं भरहु  
करि धरिउ सरासणु राणएण  
आरुहिवि रहंगि ण संकियउ  
जो लोहवंतु परमग्गणउ  
किं अच्छइ णवर उँद्धु गयउ

हिमवंतकूडतलधरणियले ।  
साहणु सडंगु आवासियउ ।  
रणवडहंसहासइं ताडियइं ।  
उब्भियइं पउरसालाहरइं ।  
णं घडदासीउ सुमुंडियउ । 5  
अवराइं मि दिव्वइं आसयइं ।  
अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।  
पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।  
उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।  
बहु विहरिउ मंडलराणएण । 10  
वइसाहठाणु सइं संकियउ ।  
सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ ।  
हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ संपंगणए उँप्पुंखु बाणु अवलोइउ ॥

चिंतिउ तेण मणे को एहउ काले चोइउ ॥ २ ॥

15

## 3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे  
दीहरजालामालाजलिउ  
केसरिकेसरु उल्लूरियउ

तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।  
पलयाणलु केण पडिक्खलिउ ।  
कालाणिलु केण वियारियउ ।

2. १ P reads after this: मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, अवराइं मि दिव्वइं आसयइं, णियपहाणिज्जय-  
देवासयहिं. २ MB read after this: मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, णियपहाणिज्जियदेवासयइं. ३ BP ससिहर-  
रयणियहि. ४ P रहंगि. ५ MBP उद्धगयउ. ६ M पपंगणए; B पसंगणए. ७ MB उप्पंखु.

3. १ MBPK पाडिखलिउ. २ MBP कालाणलु.

2. 5 a समुंडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिताः. 6 b आसयइं आश्रया गृहाणि. 8 a  
दक्खालिये त्यादि-दर्शितः शशधरश्चन्द्र एव रत्नं चूडामणिरत्नं यया रजन्या; b रयणियहि रजन्याम्. 9 b  
भरहु नक्षत्रप्रच्छादकः. 10 a राणएण राः द्रव्यं तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा. 11 b वइसाहठाणु  
वामपदजानुं भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वाकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते; संकियउं सम्यक् कृतम्. 13 b गयउ गदो रोगः.

3. 3 b कालाणिलु प्रलयवातः.

किउ केण गरुडपक्खाहरणु  
दलवट्टिउ माणु पुरंदरहो  
णियहत्थे णिम्मंथिउ जलहि  
दिट्ठीविसवयणु गिरिक्खियउ  
जगि केण भाणु णित्तेइयउ  
को पारु पराइउ णहयलहो  
किं ण मरइ करवालेण हउ  
सरु मज्झु वि केण विसज्जियउ

भणु केण णिसुंभिउ जमकरणु ।  
किं सिहर पलोट्टिउ मंदरहो । 5  
पडिक्कूलिउ केण हवंतुं विहि ।  
के<sup>५</sup> हालाहलु विसु भक्खियउ ।  
महु केण रोसु उप्पाइयउ ।  
को सुपहुत्तउ णियभुयवलहो ।  
ण वियाणहुं किं सो वज्जमउ । 10  
खयडिंडमु कासु पवज्जियउ ।

घत्ता—जेण विमुक्कु सरु अइदीहु समाणु फणिंदहो ॥

सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

4

इय तेण गज्जियउं  
पिंछेहिं पत्तियउ  
चित्तेण चित्तिर्यउ  
हिययम्मि चित्तियउ  
गंधेहिं चच्चियउ  
पुण्णेहिं संचियउ  
हयवेरिसंताणु  
ता तम्मि लिहियाइं  
णिज्जियदियंताइं  
वाईसिअंगाइं  
विंदुयहिं चप्पियइं

पुणु कज्जु सज्जियउं ।  
दित्तीइ दित्तियउ ।  
मंतेण मंतियउ ।  
राएण घत्तियउ ।  
फुल्लेहिं अंचियउं । 5  
केण वि ण वंचियउ ।  
अवलोइओ बाणु ।  
सुरणियरमहियाइं ।  
परिच्छेयवंताइं ।  
छंदाणुलभाइं । 10  
मत्तावियप्पियइं ।

३ M णिमत्थियउ; BP णिम्मत्थियउ. ४ P हणत्तु. ५ MBP किं. ६ MBP खयडिंडिमु. ७ M विमुक्कु सरु.

4. १ MK चित्तियउ. २ M अच्चियउ. ३ MP परिच्छेयवत्ताइं.

5 a दलवट्टिउ खण्डित्तः. 9 b सुपहुत्तउ अतीव पर्याप्तः. 11 खयडिंडिमु यमपटहः.

4. 1 b सज्जियउं प्रगुणीकृतम्. 6 a सच्चियउ उपार्जित्तः. 10 a वाईसि<sup>०</sup> सरस्वती. 11 b मत्तावियप्पियइं मात्रारचितानि.

वेल्लीहिं वलियाइं	अक्खरइं ललियाइं ।	
गाढं विसिद्धाइं	सरसाइं मिद्धाइं ।	
इद्धाइं दिद्धाइं	हियए पर्यद्धाइं ।	
अरिसीहसरहस्स	आणाइ भरहस्स ।	15
जो जियइ सो जियइ	इयरस्स खयणियइ ।	
अइरेण अवयरइ	वइवसु वि धुवुं मरइ ।	
पुणु पुणु वि जोएवि	इय तेण वाएवि ।	
सह समियसमरेहिं	अँवरहिं मि अमरेहिं ।	

घत्ता—दिट्टुउ चक्कवइ चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥ 20  
 रयणहिं मोत्तियहिं पणँवंतें णियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

## 5

णरणाहें रयणहिं पुज्जियउ	हिमवंतु कुमारु विसज्जियउ ।	
सो किंकरत्तु मणि धरिवि गउ	राणउ पुणु तिहुयणलद्धजउ ।	
हरिसइसुभीमगुहाहरहो	सइं आइउ वसहमहीहरहो ।	
दीसइ गिरिमेहलघुलियघणु	णं धरणिहि केरउ एक्कुं थणु ।	
णिज्झरजलदुद्धपवाहधरु	णिरु गाहलडिंभहुं सोक्खयरु ।	5
रइगारउ णावइ कुसुमसरु	मयवंतु णाइ कुपुरिसपसरु ।	
रसवंतु णाइं णच्चणु पवरु	बहुणावालंकिउ बहुविवरु ।	
बहुविहुमोहु णं मयरहरु	बहुफलपयासि णं पुण्णभरु ।	
बहुकंकणु णं महिमहिलियरु	बहुओसहिल्लु णं भिसयवरु ।	
हरिसेविउ णं जिणु परमपरु ।		10

४ MBP पइद्धाइं. ५ MBP धुउ. ६ MBP अवरहिं अमरेहिं. ७ MBP पणवंतहिं.

5. १ MBP हिमवंत°. २ B किं करंतु. ३ MBP आयउ. ४ M एक्क. ५ MBP णच्चण°. ६ MBP महिलयरु.

12 a वे ल्ली हिं आवलीभिः. 16 b ख य णि य इ क्षयकालः. 17 a अइरेण अचिरेण, शीघ्रम्. 18 b वा ए वि वाचयित्वा.

5. 7 b बहुविवरु बहुच्छिद्रः बहुपक्षी च. 8 a विहुमोहु प्रवालौघः; मयरहरु समुद्रः. 9 a म हि म हि लिय रु पृथ्वीमहिलायाः करः; b भिसय° वैयः. 10 a हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहैश्च सेवितः.



करिदसणमुसलणिभिण्णतणु  
सुरदाणवरमणीप्राणपिउ

णं को वि महाभडु रइयरणु ।  
णं णिवजससासणखंभु थिउ ।

घत्ता—तहु महिहरहु तहु पच्छाइउ चउहुं मि पासहिं ॥

णरलिहियक्खरहिं गयपत्थिवणामसहासहिं ॥ ५ ॥

## 6

जहिं दीसइ तहिं अक्खरसहिउ  
चितइ भरहाहिउ बहुगुणउ  
अण्णण्णहिं रायहिं भुत्तियइ  
वोलाविय के के णउ णिवइ  
घण्णउ परमेसरु एक्कु पर  
बहुणरवइकरयललालियइ  
सत्तंगरज्जभारेण हय  
धारागलंतलीलावयहिं  
जा विज्जिय चलचमरहिं जियइ  
असिवाणियककसत्तु महइ  
चवलत्तणु कुलधयवडवरहो  
सिक्खियउ जाइ तहि गोमिणिहि  
णिवडंति महंत वि झत्ति किह

मोक्खु व गिरिंदु मुणिगणमाहिउ ।  
कहिं णामु लिहिज्जइ महु तणउ ।  
इह एयइ वसुमइधुत्तियइ ।  
मोहंधहु मुज्झइ तो वि मइ ।  
जो हुउ पव्वइयउ मुएवि घर । 5  
हउं विणडिउ सिरिपुण्णालियइ ।  
मयमइरइ मत्ती मुच्छ गय ।  
अहिसिंचिय मंगलघडसयहिं ।  
जा छत्तं छाइय णउ णियइ ।  
अंकुससंगे वंकिम वहइ । 10  
गुणु भेल्लिवि गमणु पासि सैरहो ।  
आसत्तंपुरिस णरयावणिहि ।  
वारिहि करिणीरय पीलु जिह ।

घत्ता—ताएं भुत्त चिरु पुणु पुत्तं सहुं सुहुं अच्छइ ॥

वसुमइ झैदुलिय जगि केण वि समउ ण गच्छइ ॥ ६ ॥

15

७ MBP °पाणापिउ.

6. १ MBP इय. २ MB °रज्जहारेण. ३ MBP आसिपाणिय°. ४ MBP °वडधरहो. ५ MBP परहो. ६ MP आसत्तु पुरिखु; B आसत्तपुरिखु. ७ MBP/T झिंदुलिय.

6. 4 a बोला विय आतिकामिता. त्यक्ताः. 6 b पुण्णालियइ पुंश्वल्या. 8 a °लीलावयइ °लीला-पयोमिः. 9 a विज्जिय वीजिता. 10 a महइ वाञ्छति. 11 b गुणे त्यादि—गुणं मुक्त्वा गच्छति शर-पाश्वर्त्त. 12 b णरयावणिहि नरकभूमे. 13 b वारिहि गजबन्धनगर्तायाम्. 15 झैदुलिय पुंश्वली वेद्यावृत्तिः.

7

णक्खहु वि ण लब्भइ थत्ति जहिं  
मइं जेहा पत्थिव को गणइ  
परमेस महायणु जेण गउ  
परु फेडवि जिह घेप्पइ पुहइ  
ता बालमराललीलगइणा  
रापं रायहु ओहारियउ  
करकागणिरेहादावियउ  
रिसहहु रइरमणखयंकरहो  
णामेण भरहु भरहाहिवइ  
हिमवंतजलहिपेरंत सइं  
ता तियसहिं साहुक्कारियउ  
पइं जेहउ को वि ण चक्कवइ  
कहु अग्गइ धावइ कमलकरि  
दालिदुहारि किर कासु वसु  
असि कासु वइरिविद्धंसयरु  
पइं मेळिवि णाणहु कवणु घरु

किं णाउं लिहिज्जइ एत्थु तहिं ।  
जे जे गय ते पुरोहु भणइ ।  
सो पंथु जयम्मि ण केण कंड ।  
तिह णामु वि फेडिज्जइ णिवइ ।  
वीलामलमल्लिणेण वि पइणा । 5  
अण्णहु कासु वि उत्तारियउ ।  
णियणामुं गिरिंदि चडावियउ ।  
हउं पुत्तु पढमंतिथंकरहो ।  
बोल्लउ परु महियलि अत्थि जइ ।  
छक्खंड वि णिज्जिय वसुह मइं । 10  
भरहेसरु जयजयकारियउ ।  
को एम ससंकि णाउं थवइ ।  
कमलालय कमलाणणिय सिरि ।  
तिजगत्तगाभि किर कासु जसु ।  
पइं मेळिवि को किर कप्पयरु । 15  
परमंप्पु कासु देउ पियरु ।

घत्ता—रुवें विक्रमेण गोत्ते बलेणं णयजुयत्ते ॥

तुज्झु समाणु तुहुं किं अण्णे माणुसमेत्ते ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसयं

दरिसावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ. २ MB °मलिणाणण वि पइणा; P ° मलिणाणणपइणा. ३ MBP णियणामु. ४ MB पढमु. ५ P बहुअग्गइ. ६ M दारिदुहारि. ७ MBP तिजगत्त°. ८ MBP वइरिवीरंतयरु. ९ MBP परमंप्पु. १० MB कुलेण. ११ MBP णयजुत्ते.

7. 5-6 वीलेत्यादि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 a ओहारियउं चित्ते अवधारितम्. 10 a °पेरंत पर्यन्ता.

8. 1 b °चंपय सा रस यं चम्पकवृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां शतानि; चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र.

काणणपरिहिंडियकुंजरयं	गयणंगणविगयणिकुंजरयं ।	
फलभारोणयसुरतरुविडवं	रइयरंणिलयहिं खेयरविडवं ।	
ओसहिओसारियविसहरयं	वणसुरहिसमीहियविसहरयं ।	
मोत्तूण तममलं धरणिहरं	सधयं सेण्णं परं धरणिहरं ।	5
चलियं सह पड्डुणा पउरहयं	सारहिकरकसचोइयरहयं ।	
अहिमाणवंतु णीसंकमइ	पुव्वदिसभापं संकमइ ।	
हिमवंततलेण जि चिकमइ	दियहेहिं जंतु वसुहं कमइ ।	
गोगइहरिकरिमहिसयल	अवठंभिवि रुंभिवि महि सयल ।	
णियवइहि णिहालिवि चंदवल्लु	मंदाइणिपुलिणइ थियउ बल्लु ।	10
जगसंसियअसिधारासियहिं	अणुयहिं णिवखंधारासियहिं ।	

घत्ता—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिंगगउं ॥

णं भरहहु तणउं जसविलसिउं सग्गि विलगउं ॥ ८ ॥

## 9

ससिरयणमए	परिभमियमए ।	
उववणगहिरे	घणाविहुरहरे ।	
खगणियरहरे	सुरसारिसिहरे ।	
णिवसइ गुणिणी	अमरंवरमणी ।	
चलहारमणी	जणमणदमणी ।	5
छणससिवयणा	कुवल्लयणयणा ।	

8. १ MBPT °णिलएहिं. २ MP add after this: सिंगगवत्तु धुयविसहरयं, जं सहइ चक्कि-जसविसहरयं; सइं सेवियविसहरसेहरयं, महिवहुसिरि णं मणिसेहरयं; B adds after this: सइं सेवियविसहर-सेहरयं, सिंगगवत्तु धुयविसहरयं, जं सहइ चक्किजसविसहरयं, महिवहुसिरि णं मणिसेहरयं. ३ MBP मोत्तूणं तलमलधरणिहरं. ४ MP परयरणिहरं. ५ MBP मणुयहिं.

9. १ MK अमरवरमणी but T अमरवरमणी.

2b °णि कुं ज र यं वृक्षसमूहपुष्परजः. 3 a °वि ड वं शाखा, b र इ य रे त्या दि-रतिकरस्थानैः कृत्वा खेचरविटपालकम्. 4 b व णे त्या दि-वनसुरभिभिर्वनगोभिः समोहित वृषभाणां रतं सुरतं यत्र. 5 b पर ध र णि ह रं शत्रुभूमिदारकम्. 7 a णी सं क म इ निशङ्कमतिः; b सं क म इ स्थानात्स्थानान्तरं चरति. 8 b क म इ लङ्घयति. 11 a असि-धारासि य हिं असिधारावज्जिर्मलैः; b अ णु य हिं अनुगैः; °खंधारासि य हिं स्कन्धावारास्थितैः.

वरगयगमणा	कयजिणणहवणा ।	
पविउलरमणा	पीवरसिहिणा ।	
पंकयचलणा	सिरकयसुमणा ।	
पसरियपुलया	वणसुरकुलया ।	10
विरइयतिलया	मणसियणिलया ।	
णरणवियपया	चलमयरधया ।	
मुणिमइविमला	हिमकरधवला ।	

घत्ता—गंगा णाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥

रुवें जोव्वणेण देवाहं मि विरुह्यगारी ॥ ९ ॥ 15

## 10

णरवइचरियं	गुणविप्फुरियं ।	
हियं धरियं	चलिया तुरियं ।	
तिवलितरंगा	देवी गंगा ।	
णिवसामीवं	पीणियभावं ।	
पत्ता धीरा	सालंकारा ।	5
भुवणपसत्था	मंगलहत्था ।	
दुत्थियमित्तो	परहियजुत्तो ।	
जगगुरुपुत्तो	पंकयणेत्तो ।	
उत्तमसत्तो	गुरुर्यणभत्तो ।	
जायविवेओ	भावियभेओ ।	10
ढोइयदाणो	कयसंमाणो ।	
खलकुलचंडो	दावियदंडो ।	

२ K omits पीवरसिहिणा. ३ K omits पंकयचलणा. ४ MBP विंभय°.

10. १ MBP हियवइ. २ K गुणयणभत्तो.

9. १ b °सु म णा पुष्पाणि. 10 a °पु ल या पुलको रोमाञ्चः; b व ण सुर कु ल या व्यन्तरदेवकुले जाता. 11 म ण सि थ° मदनः.

10. 4 a °सा मी वं °समीपम्; b पी णि य भा वं हृष्टचित्तम्.

भासियसामो	ससिरविधामो ।
रामाकामो	पायडणामो ।
हयसिरिविरहो	दिडो भरहो ।
भन्तिभराए	कुसुमकराए ।
थोन्तगिराए	णवियसिराए ।
दिण्णासीए	पुणरवि तीए ।

15

घत्ता—वरुणदिसासियहो णं पुण्णिमाइ ससिकंदहो ॥

अमयभरिउ कलसु पल्हत्थिउ सीसि णरिंदहो ॥ १० ॥

20

## II

कडउल्लउ कडर्याणंदु करे  
मणहारु हारु णीहारणिहु  
हिमवंतसिंहरिसिहरेसस्सिए  
जिह बंभसुत्तु तिह. बंभसुए  
रसणा महुरसणा घंठियहिं  
सोहंती दिण्णी णरवइहि  
पंतीउ विइण्णउ सुरयणहं  
छत्तइं सयवत्तइं सिरिलयहे

कर मउलिवि मउलु वि णिहिउ सिरे ।  
उरबंधु बंधु माणिक्कसिहु ।  
दिण्णउ देविइ सुरवरसरिए ।  
ण सहइ परम्मि आयारत्तुए ।  
माली अलिमालाहंठियहिं ।  
उल्लंघियत्तउसायरवइहि ।  
रंजिउ हियउल्लउ सुरयणहं ।  
वत्थइं णेवत्थइं भणमि तहे ।

5

घत्ता—इय गेण्हिवि णिवेण मणहरमराललीलागइ ॥

पुज्जिवि पट्टविय णियभवणहु गय गंगाणइ ॥ ११ ॥

10

11. १ MBP कडयाणंद. २ B मउलिवि. ३ MB मणहार. ४ MB °सिहरसिहरे°. ५ B मालइ.  
६ B पत्तीउ.

13 b ससिरविधामो सौम्यस्तेजस्वी च. 19 वरुणदिसासियहो पश्चिमदिगवस्थितस्य; पुण्णिमाइ पूर्णिमया कर्त्या. 20 पल्हत्थिउ सीसि मस्तकोपरि विसर्जितः.

11. 1 b मउलु मुकुट. 2 b उरबंधु बंधु उरोबन्धस्य ब्रह्मसूत्रस्य बन्ध. 4 a वंभसुए वृषभनाथ-पुत्रे, अन्यत्र ब्राह्मणे. 5 a महुरसणा मधुरशब्दाः, b °हंठियहिं शब्दैः. 6 b उल्लंघिये त्यादि—उल्लघिता पादाक्रान्ता या चतुःसागरा चतुःसमुद्रा पृथ्वी तस्याः पतिः तस्मै. 7 a पंतीउ मालाः; सुरयणहं शोभनरत्ना-नाम्, b सुरयण ह देवसंघातानाम्. 8 b तहे गङ्गायाः.

## 12

पहु विजयलच्छिआलंगियउ  
 सुरसरि साहेप्पिणु णीसरइ  
 सरितीरेण जि पुणु संचरइ  
 जहिं धूलि हौंति गिरिं तरुवर वि  
 सरि छज्जइ उग्गयपंकयहिं  
 सरि छज्जइ हंसहिं जलयरहिं  
 सरि छज्जइ संचरंतझसहिं  
 सरि छज्जइ चक्कहिं संगयहिं  
 सरि छज्जइ सरतरंगंभरहिं  
 सरि छज्जइ कीलियजलकरिहिं  
 सरि छज्जइ बहुजलमाणुसहिं  
 सरि छज्जइ सयडहिं सोहियहिं

भणु केण ण दंसणु मग्गियउ ।  
 बलु दिण्णदाणु कयणीसरइ ।  
 हा हरिणैवंदु तहिं किं चरइ ।  
 उल्लियरओहें रहिउ रवि ।  
 बलु छज्जइ चित्तैछत्तसयहिं । 5  
 बलु छज्जइ धवलहिं चामरहिं ।  
 बलु छज्जइ करवालहिं झसहिं ।  
 बलु छज्जइ रहचक्कहिं गयहिं ।  
 बलु छज्जइ जलतुरंगवरहिं ।  
 बलु छज्जइ चल्लियमयकरिहिं । 10  
 बलु छज्जइ किंकरमाणुसहिं ।  
 बलु छज्जइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह मंहिवइवाहिणि सोहइ ॥

महिहरंभेयणिहिं एयहिं किं किर को णउ बीहइ ॥ १२ ॥

## 13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं  
 वेयडुगिरिंदहु पच्छिमहे  
 मृगमग्गलग्गअलियल्लियहि

पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।  
 जिह आसि तिमीसहि दुग्गमहे ।  
 कंडयगुहाहि पुत्त्विल्लियहि ।

12. १ MBP °आलंगियउ. २ MBP दिण्णदाण. ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं. ४ MBP गय.  
 ५ MBP चिधच्छत्त°. ६ M चक्कहिं हंसगयहिं. ७ P °तरंगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहैः. ८ M adds  
 after this: बलु छज्जइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake. ९ MB  
 किं किर. १० MBP णिववर°. ११ M महिहरंभेयणिहिं. १२ MBP एयहं किर.

13. १ M णिग्गमणु. २ MBP मिग°.

12. २ b क य णी सर इ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतियेन. 4 b उल्लिये त्यादि—उच्छलितो यो  
 रजःसंघातस्तेन रहिओ आच्छादितो रविः. 9 a सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गाः. 12 a सयडहिं स्वतटैः; b स-  
 यडहिं शकटैः. 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी; °वाहिणिसेना. 14 महिहर° पर्वता राजानश्च.

13. 2 b तिमीसहि तिमीससंज्ञायां सिन्धुगुहायाम्. 3 a अलियल्लि° व्याघ्रः,

तैहि णियडउ सेणु णिसणु किह  
 णिहिणाहें भणिउ बलाहिवइ  
 हणु दंढें पुँणु वि कवाडु तिह  
 पच्चंतु पसाहिवि एहि लहु  
 छम्मास वसेवउ एत्थु मइं  
 असिजलधाराधुयजसवडेण

ण विलग्गइ गिरिक्कुहरुमह जिह ।  
 तुहु जोग्गउ पेसणु दिणु लइ । 5  
 विहडेप्पिणु वच्चइ झत्ति जिह ।  
 जज्जाहि तुँरयसेण्णेण सहु ।  
 जाएसमि पडिआएण पइं ।  
 ता चमुपमुहेण महाभडेण ।

घत्ता—पुव्वकमेण पुणु हरिरियण चडेवि पयंढें ॥

10

आरूसिवि हयउ गिरिगुहकवाडु पविदंढें ॥ १३ ॥

## 14

जिणदंसणि जिह दुक्कियपडलु  
 जिह सुद्धसहावें मयणसरु  
 सुकइंदसमागमि कुकइ जिह  
 तहिं सहु भीमु जो णीहरिउ  
 तेत्थु जि सिहरत्थलि रइयपुरु  
 पडिहारें रायहु दरिसियउ  
 बलवइणा साहिय मेच्छमहि  
 आवेवि णमंसिय पडुहि पय

जिह दिवसयरुग्गामि तिमिरमलु ।  
 जिह पिसुणें दूसिउ णेहभरु ।  
 विहडिउ कवाडु फुडु झत्ति तिह ।  
 तहु भइयइ को<sup>१</sup> वि ण थरहरिउ ।  
 सिरिणट्टमालि णामेण सरु । 5  
 कमकमलालोयणहरिसियउ ।  
 वसि हूई तहु जयलच्छिसहि ।  
 तहिं णिवंसंतहुं छम्मास गय ।

घत्ता—ण वर गुहाकुहरु णरवइग्गइजोग्गउ जायउ ॥

सव्वहं सीयलउ णं दीसइ कज्जु परायउ ॥ १४ ॥

10

३ MBPK तिह. ४ MB °कुहरंभ, P कुहरंभु, K कुहरमह. ५ MBP पुव्वकवाडु. ६ P जाजाहि.  
 ७ MBP तुरिय सेण्णेण. ८ MBP हरिरियणि.

14. १ MBP णीसरिउ. २ MBP को व ण. ३ MBP °लोयणि. ४ MBP णिवसंतहिं. ५ P °जोग्गा.

4 b गि रि कु हरु म्ह गिरिकुहरस्योष्मा.

14. 6 b क मे त्या दि— पदकमलयोरा लोकनेन हर्षितः. 7 b ज य ल च्छि स हि जयलक्ष्म्याः सखी.

15

ता मंतिहिं गुज्झं ण रक्खियउ  
 तुह माउयाहि मंथरगइहि  
 णामें णमि विणामि कुमारवर  
 णहयरवइ हूया अवियलहे  
 हल्लियसाहाफुल्लियवणइं  
 उदामहं गामहं तेत्तियउ  
 भुंजंति रमंति गमंति दिणु  
 तं णिसुणिवि भूसियसमरधुर  
 गय तेहिं भणिय खयरहिवइ  
 महियलि उप्पणउ चक्कवइ  
 तहु पुत्तु भरहु लहु अणुसरहो

परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।  
 ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।  
 गंभीर धीर रणभारधर ।  
 णिवसंति एत्थु गिरिमेहलहे ।  
 पण्णास सट्ठि खगपट्टणइं । 5  
 कोडिउ धरणेण विहत्तियउ ।  
 पणवंति तुहारउ जणणु जिणु ।  
 पहुणा पेसिय गणबद्ध सुर ।  
 छक्खंडमंडलावणिविजइ ।  
 जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ । 10  
 अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

घत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥

गुरुहं सडिंभं मि दोसिल्लहं दंडु पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो<sup>१</sup> बंधुणेहभउ भावियउ  
 हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ  
 तणुतेयपूरपिंगलियणहु  
 अम्हहं आराहणिज्जु हवइ  
 भणु जलणहु उप्परि को जलइ  
 भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ  
 इय घोसिवि ताइं विसज्जियइं

खयरिंदिहिं कज्जु विहावियउ ।  
 पणएण णएण पयंपियउ ।  
 जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।  
 भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।  
 भणु पवणहु उप्परि को चलइ । 5  
 भणु भरहहु उप्परि को नृवइ ।  
 आयइं अमरउलइं पुज्जियइं ।

15. १ MBP गुज्झु. २ P सडिंभरहं.

16. १ MBP ता. २ MBP णिवइ.

15. 2 a b माउ या इ भा य र तव मातुर्यशोमत्या भ्रातरौ. 5 a हल्लिय सा हा<sup>०</sup> बलितशाखाः. 8 b गण बद्ध सुर अङ्गरक्षका देवाः. 11 b मडप्फरु मिथ्यागर्वः.

16. 3 a तणु ते ये त्यादि-तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलितं नभो येन.



तूरइं गुरुरवइं वियंभियइं  
 चोइय हरिकरिवरसंदैणइं  
 खणि बे वि सहोयर णीहैरिय

कुलचिंधसयाइं समुब्भियइं ।  
 आह्वयइं णियणियपरियणइं ।  
 दिब्भिन्तिचित्तजाणहिं भरिय । 10

घत्ता—खेयरकिंकरहिं परिवारिय देव समाणहिं ॥

जहिं णिवसइ णिवइ तहिं आइय रियणविमाणहिं ॥ १६ ॥

## 17

मउलियकरेहिं पणवियसिरेहिं  
 अम्हारउ णिव कुलसामि तुइं  
 पइं दिट्ठइ आवइ ओसरइ  
 तुह तायहु हयवम्मीसरहो  
 चामीयरमणिणिम्मियघरइं  
 अहिराणं आसि विइण्णाइं  
 तो भुंजहुं णं तो तुंहुं जि लइ  
 तं णिसुणिवि राणं भासियउ  
 मैहु आणावयणु ण णिरसियउ  
 जिह मउडुग्गयच्चूडामणिणा  
 तिह एवहिं मइ वि समण्णियइं

पहु बोळ्ळिउ णमिविणमीसरेहिं ।  
 पइं दिट्ठइ णयणहं होइ सुहुं ।  
 पइं दिट्ठइं घरि सिरि पइसरइ ।  
 आपसें परमजिणेसरहो ।  
 अइरम्मइं खेयरपुरवरइं । 5  
 जइ एवहिं पइं पडिवण्णाइं ।  
 अम्हहं पुणु दैइयंबरिय गइ ।  
 अप्पाणउं जें ण विणासियउ ।  
 तं तुम्हहिं चंगउ ववसियउ ।  
 चिरयालि महायरेण फणिणा । 10  
 पालहि खेयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—जिणवरणंदणहो बलवंतहु रिद्धिसणाहहो ॥

णमिविणमीसरेहिं पडिवण्ण सेव णरणाहहो ॥ १७ ॥

## 18

रायहु कंपावियतिहुयणहो

पणवेण्णिणु गय सणिहेलणहो ।

३ P °दंसणइं. ४ MBP णीसरिय. ५ M दिहिभित्तिचित्त°; B दिहिचित्तिचित्त°; P दिब्भित्तिहि. ६ MBP अमरविमाणहिं.

17. १ M आवय. २ MBP तुहुं मि लइ. ३ MB दैइयंबरिय. ४ B णु. ५ B पहु°.

18. १ P कंपाविउ.

10 b दिब्भित्तिचित्तजाणहिं दिश एव भित्तयः ता एव नानाथानानि तैः.

17. 6 a अ हिराणं सर्पराजेन धरणेन्द्रेण, 7 a दैइयंबरिय दिगंबराणां गतिः.

ते बंधव सिरिधव पट्टविवि  
संचल्लइ डोल्लइ धरणियलु  
मरुचलियलुलियचलविंधबलु  
णउ जंपइ कंपइ फणिणिवहु  
पउ गुप्पइ धिप्पइ आहरणु  
अइमल्हइ मेल्लइ सहु करि  
तहु दाणें फेणें समिय रय

रणधीरइं वइरइं णिट्टविवि ।  
उद्धरियसूलकरवालहलु ।  
गुहदारि उदाँरि ण माइ बलु ।  
पहु वच्चइ णच्चइ तियसवहु ।  
परिघोलइ लोलइ पंगुरणु ।  
रहु थक्कइ वंकइ कंडुँ हरि ।  
चिक्खल्लइ खोल्लइ खुत्त पय ।

5

घत्ता—बंदिण पढिणहिं जयणंदर्वडुणिग्घोसहिं ॥

गज्जइ गिरिविवरु वज्जंतहिं पडहसहासहिं ॥ १८ ॥

10

## 19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि  
काँगिणियइ घणियइ मट्टियइ  
उज्जोयउ जायउ उज्जलउ  
संकमेण कमेण जि संचरइ  
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ  
सुरणियरहिं खयरहिं परियरिउ  
गंधव्वहिं भव्वहिं सेवियउ  
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ

णरलिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।  
अंधारवियारविहट्टियइ ।  
खंधारु वीरु धारियपुलउ ।  
सरभरियउ सरियउ उत्तरइ ।  
केलासगिरीसहु लहु गयउ ।  
णिज्जरझरंतवारिहिं भरिउ ।  
सिहिजालहिं चवलहिं तावियउ ।  
कइबुक्कारेहिं णिणाँइयउ ।

5

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥

णं महिकामिणिहिं भुयदंहु पदंसियसग्गउ ॥ १९ ॥

10

१ MBP रणवीरइं. ३ P °विंधउलु. ४ MBT उयारि; P उयरि. ५ B वचइ णंचइ. ६ M खंधु; BP कंधु. ७ MBP चिक्खल्लइ. ८ MBP वद्ध. ९ P गिज्जइ.

19. १ MBP कागणियइ मणिमइ. २ MB सकमेण. ३ MBP जलभरियउ. ४ MB णिणाइयउ.

18. 2 a सि रि धव लक्ष्म्या भर्तारौ. 7 a अ इ मल्ह इ मन्दगमनं करोति.

19. 1 a पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णो मार्गो द्वाष्टिविषयो न भवति. 2 a घ णि य इ कठिनया. 4 a संक-  
मेण सेत्तबन्धेन; ७ सरभरियउ जलपूर्णाः. 5 a कुहरहु पर्वतस्थ; कुहरहु गुहायाः.

## 20

जो अच्छरचित्तालिहियासिलु  
जो दरिसियसीहसिलिंबसुहु  
जहिं दिट्टेइं द्रुमसाहागयइं  
अलि झंकारेहिं ण रडि मुयइ  
जहिं सलहिज्जंति अमच्छरहिं  
जहिं मणिभित्तिहि पेच्छिवि सयणु  
जहिं दोमवीढु मणिवि तरुणु  
जहिं चंदणमहिरुहु परिहरिवि  
मुहसासवासु विसहरु पियइ

विसहरसिररयणारुणियविलु ।  
सहूलपसाहियरुंदगुहु ।  
किंणरवीसरियहारसयइं ।  
जहिं णाहलडिंभउ सुहुं सुअइ ।  
सवरीरुंवाइं वि अच्छरहिं । 5  
महिसिहिं कीरइ पडिवक्खमणु ।  
मरगयवट्टहु धावइ हरिणु ।  
णहयरवहु सुत्ती संभरिवि ।  
अवरहु वि भुयंगहु एह मइ ।

घत्ता—पेच्छिवि जममहिसु जहिं जक्खिणिसीहु ण रूसइ ॥ 10  
जिणमाहप्पण पडिवक्खपक्खि खम दीसइ ॥ २० ॥

## 21

जहिं इंदणीलरुइरंजियउ  
किं मोत्तिउ किं वं तुसारकणु  
जहिं ओसहिदीवउ पज्जलइ  
जहिं जायउ गुणगणमंडियउ  
जिणणाहे घोसियं जीवदय  
सुरहत्थिणि सेवइ जासु तडु

सिहि मंजारेणं ण विभंजियउ ।  
जहिं संकइ संजउ सीलहणु ।  
रयणिहिं पुलिंदु सुहुं संचलइ ।  
मुणिसंगे सुयउलु पंडियउ ।  
जहिं पसु वि चिलाय वि धम्मरय । 6  
जहिं हिंडइ चक्केसरिगरुहु ।

20. १ MBP °मुहु, २ MBP दीसहिं दुम°. ३ M °झंकारेण णं रडि; B °झंकारण णं रडि; P °झंकारेण ण रडि, ४ MB अमरच्छरहिं. ५ MBP °रुवाइ वरच्छरहिं. ६ MBP दोवपीढ. ७ MBP °महिरुह.

21. १ B मजारेण, २ MBPT विहंडियउ and gloss in T विवेचितः, ३ P च, ४ MBP पोसिय.

20. 2 a °सीहसिलिंब° सिंहशावकः. 4 a ण रडि मुयइ न रटनं मुञ्चति, गानमेव करोतीव अलि-  
झंकारैः. 6 a सयणु स्वशरीरम्, b पडिवक्खमणु सपत्नीबुद्धिः. 7 a दोमवीढु दूर्वासंघातः; b ° वट्टहु एक-  
खण्डपाषाणम्. 8 b संभरिवि ज्ञात्वा. 9 b भुयंगहु विटस्य. 11 पडिवक्खपक्खि खम दीसइ प्रतिपक्षपक्षे  
शत्रौ अपि क्षमा दृश्यते.

21. 1 b ण विभंजियउ न ज्ञातः. 2 b संकइ शङ्कते; संजउ संयतो मुनिः. 4 b सुयउलु शुक्र-  
कुलम्.

पोमावइहंसु कडक्खियउ  
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ  
वारहकोट्टेहिं अहिट्टियउ

जहिं वरुणहु मयरु गिरिक्खियउ ।  
सिहि मेसें सहं कीलाणिरउ ।  
जहिं समवसरणु सइं संठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले धरणीसें सिविहं विमुक्कंउं ॥

10

णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कंउं ॥ २१ ॥

## 22

मणिमउडपट्टभूसणंहरिहिं  
कंठोलंबियमुत्तावलिहिं  
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं  
कइवयणिवेहिं सैहुं सुद्धमइ  
आवंतहु रायहु सो सिहरि  
सीहाँसणचमरीचामरइं  
मयणिब्भर वर गजंत गय  
णं दरिसणु अग्गइ ठवइ

सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।  
उच्चाइयणवकुसुमंजलिहिं ।  
उवसमवंतहिं पसमियकलिहिं ।  
पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।  
णिज्जरजलधाराभरियदरि । 5  
छायादुमछत्तइं सुंदरइं ।  
वणयर किंकर गंडय गवय ।  
णं कोइल कलरवेण लवइ ।

घत्ता—तरुवत्तें गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु णं दिण्णउं ॥

महिहरु महिहरु अवसें पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

10

## 23

आरुहिवि धरांहरवरसिहरु  
परमप्पय पयपइ पइसरइ

अइरुंदचंदकररासिहरु ।  
जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिरु ६ MBP पमुक्कउ. ७ B थक्कइ.

22. १ MBP °हरहिं. २ B °णउकुसुमं°. ३ MBP सह. ४ MBP सिंहासण°. ५ MB तरुवत्तें.

23. १ MBP धराधर°. २ MB परमप्पय पइपइ पयसरइ; T पयपइ प्रजापतिः; P परमप्पय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरतः स्मरति.

9 a अहिट्टियउ सहितम्.

22. 8 a दरिसणु प्रामृतम्. 9 तरुवत्तें तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन. 10 महिहरु पर्वतः; महिहरु नृपस्य.

23. 1 b °कररासिहरु किरणतमूहाभिभावकम्. 2 a परमप्पय परमात्मानम्; पयपइ प्रजापति-भरतः.

दिट्टुउ परमेसरु णिहयसरु  
 भरहे बहुछंदपसंगिरए  
 अरहंत अणंत भव्वभवइ  
 तिट्टासरितीरु पराइयउ  
 पइं रोसैजलणु उवसामियउ  
 पइं पेच्छिवि देउ अहिंसवरु  
 णं वि भक्खइ तं कया वि णउल्लु

तिसिएण व हरिणे कमलसरु ।  
 थुउ सुट्टु सैलक्खणाइ गिरए ।  
 तुह सेवइ सोक्खु समुभवइ । 5  
 तुहुं कामे पर ण पराइयउ ।  
 तुहुं रिसि भुवणत्तयसामियउ ।  
 ण हणइ दंडेण अहिं सवरु ।  
 महिसंतयारि वग्घहं ण उल्लु ।

घत्ता—पइं संबोहियइं केलासवासैवउ लोप्पिणु ॥

10

थक्कइं खेयरइं केलासवास मेल्लेप्पिणु ॥ २३ ॥

## 24

तुह वयणु विणीसिउ काणणए  
 ण पवत्तइ कत्थ वि जीववह  
 सीहु वि सरहु वि एक्कहिं वसइ  
 कल्लु गेउ ण गायइ सावयहो  
 पइं मंसगिद्धि मज्जारियहं

णिसुणेप्पिणु इह गिरिकाणणए ।  
 जय संदरिसियपरलोयपह ।  
 सिहिच्चुयपिच्छैइं सवरी वसइ ।  
 सौमिय पइं लाइय सा वयहो ।  
 सौंडत्तणु महुमज्जारयहं । 5

३ BP णिहियसरु, ४ MBP सुलक्खणाइ, ५ K रोसु जलणु, ६ K णउ, ७ MBP °वासवरु.

24. १ MBP तुहु, २ K ° लोयवह, ७ MBPK °पिच्छइं, ४ MBP कल्लुगेउ, ५ B सा विय; P सा विय, T साविय स्वामिन्, अथवा साविय श्राविका; K सा मि य and gloss सा शबरी, ६ P मंजारयहं.

3 a णिहयसरु निर्जितकामः. 4 a °छंदपसंगिरए छन्दोऽभिप्रायः माताप्रस्ताश्च तेन पसंगिरए संबन्धवत्या वाण्या, 5 a भव्वभवइ भव्या एव भानि नक्षत्राणि तेषां पतिश्चन्द्रः. 6 a तिट्टा° तृष्णा, 8 a अ हिं स व रु अहिंसा वरा यस्य; b अ हिं स व रु अहिं सर्प शबरो दण्डेन न हन्ति; उपलक्षणमेतत्; न कोऽपि किमपि केनापि हन्तीत्यर्थः. 9 a तं सर्पम्; ण उ ल लु नकुलः, b महिसतयारि महिषाणामन्तकारि न व्याघ्राणां कुलं समूहो भवति. 10 केलासवास हे देव कैलासपर्वतवासिन्; व्रउ ले प्पिणु व्रतं गृहीत्वा, 11 केलासवास मेल्लेप्पिणु केलं मद्यभाजनं अत्त आसवो मद्यं तस्य आशां त्यक्त्वा; अथवा के मस्तके लसन्तीति केलासा केशाः वासो वन्न तानि मुक्त्वा.

24. 1 a विणीसिउ विनिर्गतम्; काणणए हे ब्रह्मन्, b गिरिकाणणए पर्वतादव्याम्. 3 b सिहिच्चुयपिच्छैइं सवरीवसइ शबरी पुलिन्दस्त्री परिधानं करोति, मयूरपिच्छैर्निजशरीरमाच्छादयतीत्यर्थः. 4 a सावयहो श्वापदस्य वधार्थम्, b सा शबरी; वयहो लाइय व्रतं प्राहिता.

परंयारु वि वारिड जारयहं  
जं अणुहरियड अलियंजणहो  
मुहणिग्गंतड पइं खंचियड

तुहुं णाहु सुहु विज्जारयहं ।  
तं गाहु पाड अलियं जणहो ।  
तुह संभवि देवहिं खं चियड ।

घत्ता—इय भरहेण थुड परमेसरु जिर्यपंचिदिड ॥

अमरासुरमणुयखगपुप्फंदंतफणिवंदिड ॥ २४ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम  
पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥

॥ संधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदारु णिवारिड. ८ B जिड पंचिं. ९ MBP °पुप्फदंतं.

G h विज्जारयहं रत्नतययियारत्तानाम्. 7 t अणुहरियड अलियंजणहो अमरस्य कवलस्य च अनुत्तं,  
सदशमित्यर्थः; ४ ललियं मिथ्या, 5 h खं चियड आकाशं व्याप्तम्.

## XVI

पणवेपिणु जिणवरकमकमलु ओयरेवि कइलासहो ॥  
साकेयहु संसुहुं संचलिउ धरणिणाहु णियवासहो ॥ भ्रुवकं ॥

1

आरणाळं—रविणिहकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।  
चलिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठवद्धहारा ॥ १ ॥

<p>होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु किं ण किं ण किर संचूर्णित्त वणु किं ण किं ण देसंतरु लंघित्त किं ण किं ण पहरणु अवलोइउ किं ण किं ण वरवाहणु वाहित्त कणयदंडमंडियपडिहारें पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ धिप्पइ कुसुमकरंबु ससंडयणु घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु दप्पणु कलसु धरिज्जइ अण्णहिं सलहिज्जंतु महंतु सुरिंदहिं करिवरकंधरत्थु मण्हारिहिं</p>	<p>किं ण किं ण किर कैदमियउं जलु । 5 किं ण किं ण धूली जायउ तणु । किं ण किं ण दुग्गु वि आसंघित्त । किं ण किं ण पडिसेणु णिवाइउ । किं ण किं ण परमंडलु साहित्त । आवंतें पहुखंधावारें । 10 मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ । कप्पूरें रंगावलि किज्जइ । बज्जइ सुरतरुपल्लवतोरणु । दोवदहियसिद्धत्थयचंदणु । उग्घोसित्त मंगलु सुरकण्णहिं । 15 सहुं जक्खिदखगिंदणरिंदहिं । विज्जिज्जंतउ चामरधोरिहिं ।</p>
--	--

GMBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

प्रतिगृहमटति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसंगता वसति ।

भरतस्य षष्ठभा सा कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

MBP read स्वैरसंगमा for स्वैरसंगता, and षष्ठभासौ for षष्ठभा सा. K does not give it.

1. १ MBP खयरणरसुरा. २ M अवसें; B णिवसें; P णिवसिं and gloss निमेषेण, T णिविसें.

३ B कइवियउं. ४ M संचूर्णित्त. ५ MBP आवंतें. ६ M देवंगु वत्थु. ७ P ससयडणु but gloss सषट्चरणः.

८ MBP चाइज्जइ. ९ MB दुव्व°; P दोव्व°. १० MP दप्पण. ११ M मणिहारिहिं. १२ MBP °धारहिं.

1. 2 णियवासहो निजगृहं प्रति. 5 a णिविसें अक्षिनिमीलनमात्तेण. 6 b तणु तृणम्. 13 a

धिप्पइ क्षिपति; कुसुमकरंबु नानावर्णकुसुमानां समूहः; ससडयणु षट्चरणैर्भ्रमरैः सहितः.

घत्ता—महि सयल वि खगं णिज्जिणिवि कयदिव्विजयविल्लासहिं ॥  
उज्झहि भैरहाहिउ पइसरइ सट्टिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

## 2

आरणालं—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमयहरे जयसिरीवरंगं ॥  
भंगुरभासुरारयं णिसियधारयं राइणो रहंगं ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिसक्कइ  
णं कोवाणलजालामंडलु  
भरहपयावै कायैरिजायउ  
इंदचंदपडिकूलणसीलउ  
एहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु  
मणिमऊहमालावेलाँउलु  
सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु  
वलयायारहु णिरु सच्छायहु

कुक्कइहि कब्बु व णउ चिम्मक्कइ ।  
णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।  
भाणुविंबु णं छज्जइ आयउ । 5  
धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।  
णयरं दीवुं धरिउ णं लोयहु ।  
रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।  
णं णहसरि विहंसिउ रत्तुप्पलु ।  
अवसें देइ धराणि करं आयहु । 10

घत्ता—तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥  
हिर्यउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं. १४ MBP भरहेसरु.

2. १ MBP ° मयहरे. २ MB भासुराययं. ३ MBP कायरु जायउ. ४ MBP धरिउ दीउ.  
५ K °वेलाजलु. ६ MBP वियसिउ. ७ MBPKT करु. ८ M हियडुल्लउ.

19 पइसरइ प्रतिसरति.

2. 3 b चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति. 5 a कायरिजायउ कातरीभूतम्; b आयउ आगतम्. 6 a °पडिकूलणसीलउ अभिभवं कर्तुं समर्थम्. 7 b दीवु दीपो दिव्यं वा. 8 b रायेत्यादि—रक्तोत्पलं राजमानैर्दिवाकरस्य पुण्यैः प्रगस्तैः करैरुज्ज्वलं विकसितं भवति, चक्रं तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिनः पुण्यान्येव करास्तैरुज्ज्वलं भवति. 10 a वलयायारहु वृत्ताकारस्य चूडाकरस्य च, b धराणि भूमिः स्त्री च; करदण्डो हस्तश्च; आयहु अस्य चक्रस्य. 11-12 जणियेत्यादि—यथा धूर्तस्य हृदयं वेद्यायां न प्रविशति तथा चक्रं नगर्यां न प्रविशति.



## 3

आरणालं—फणिणरसुरपसंसियं जसविहूसियं गुणगणोहदित्तं ।

णं दुविणीयमाणसे पिसुणमाणुसे सुयणसच्छवित्तं<sup>३</sup> ॥ १ ॥

अक्कमियंक्कउ बाहिरि थक्कउ  
णउ पइसइ पुरि चक्कु णिहँत्तउ  
परपुरिसाणुराइ सइच्चित्तु व  
मायाणेहणिबंधणि मित्तु व  
चुणयविलीणइ दिण्णउ भत्तु व  
सुद्धसिद्धमंडलि जमकरणु व  
णिब्बलणीसणिहेल्लणि सरणु व  
उवसमिल्लि सामरिसायरणु व  
णिसिसमयागामि रविउग्गमणु व  
पुण्णहीणि जिणगुणसंभरणु व

णावइ दइवें खीलिवि मुक्कउ ।  
सुईघरि णं अण्णायविट्त्तउ ।  
परदासत्तणम्मि सवसित्तु व । 5  
पत्तदाणि पाविट्ठु चित्तु व ।  
रइरसतुरियइ णवउ कलत्तु व ।  
पत्थणिसेविरि रुयवित्थरणु व ।  
दुरियमल्लिमणि पंडियमरणु व ।  
णिव्वियारि तणुभूसायरणु व । 10  
वुड्ढत्तणि तरुणीयणरमणु व ।  
णिद्धणि णिग्गुणि विहलुद्धरणु व ।

घत्ता—थिउ चक्कु ण पुरवरि पइसरइ णावइ केण वि धरियउ ॥

ससिर्विबु व णहि तारायणहिं सुरवरेहिं परियरियउ ॥ ३ ॥

## 4

आरणालं—ता भणियं णिराइणा रूढराइणा चंडवाउवेयं ।

किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥ १ ॥

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ

जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।

अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर

देवदेव दुज्जय भरहेसर ।

3. १ M °माणुसे. २ B पिसुणु माणुसे. ३ M °चित्तं. ४ B °मियंक्कओ. ५ MP णिरुत्तरु. ६ M सुइघणि. ७ M णिच्चल°; BP णिच्चल°. ८ B reads this foot after 11a. ९ K भूसाकरणु. १० MBP तारासयहिं सुरणरेहिं.

3. 2 दु वि णी य अगृहीतगुणशिक्षम्; सु य ण स त्थ वित्तं महामुनिसार्थस्य वृत्तं चरितम्, अथवा सज्जन-सार्थः सत्पात्रसमूहस्तत्र वित्तं दानार्थम्. 3 a अक्क मियंक्कउ आक्रमितार्कम्, अभिभूतादित्यम्. 4 b सु इ घ रि पवित्रगृहे. 5 b स व सि तु स्वशित्वं स्वातन्त्र्यम्. 7 a चु ण य वि ली ण इ अरोचकपीडिते. 8 b रु य वि त्थ र णु 'रोगविस्तारः'. 9 a °णी स° दरिद्रः.

4. 1 णि रा इ णा चराजेन; रूढ रा इ णा रूढ प्रासिद्ध यथा भवत्येवं राजते.

भुयजुयबलपडिबलविद्वणहं  
 तेओहामियचंददिणेसहं  
 कित्तिसत्तिजणमेत्तिसहायहं  
 सेव करंति ण णहभाईवइं  
 देंति ण करभरु केसरिकंधर  
 अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि

पयभरंधिरमहियलकंपवणहं । 5  
 जणणदिण्णमहिलच्छिविलासहं ।  
 को पडिमल्ल एत्थु तुह भायहं ।  
 णउ णवंति तुह पयराईवइं ।  
 पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।  
 पइसइ पट्टणि चक्खु ण तेण जि । 10

घत्ता—रइवरु परमेसरु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ॥

कासवतणुरुहु णवणलिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधरु ॥ ४ ॥

## 5

आरणालं—विलसियकुसुममग्गणो गरुयगुणगणो तरुणिहिययथेणो ।

असरिसविसमसाहसो वसि हयालसो णिहयवेरिसेणो ॥ १ ॥

अण्णु वि जसवइतणयहं जेट्टुउ  
 सायरु जिह तिह मयरधयालउ  
 पंचसयाइं सवायइं तुंगउ  
 बालुं वंभसुंदरिहि सहोयरु  
 हरियदेहु णं मरगयगिरिवरु  
 विमलकुलालवालसुरतरुवरु  
 गुरुचरणारविंदरइरसवसु  
 दुत्थियदीणाणाहहं दिहियरु  
 लीलादलियमहायलमयगलु

पुत्त सुणंदहि तुज्जु कणिट्टुउ ।  
 चावहं चारुवयणु चरियालउ ।  
 भण्णइ संपहिं सो जि अणंगउ । 5  
 पिउपयपरुहरयरउ महुयरु ।  
 अरिकरिदसणमुसलपसरियकरु ।  
 चरमदेहु सासयसुहसिरिहरु ।  
 मंदरकंदरंतगाइयजसु ।  
 णरहरिसरणागयपविपंजरु । 10  
 कठिणबाहु बाहुबलि महाबलु ।

4. १ MBP पयधिरभर°.

5. १ MBP °वयण. २ MBP संपइ. ३ M बाल. ४ B पिउपयरुह°. ५ MBP हरियवणु.  
 ६ K चरिम°. ७ BPK °महियलु.

8 a णह भाई वइं नखप्रभादीप्तानि; b पय राई वइं पदपद्धानि. 9 a करभरु दण्डस्य भारः प्राचुर्यम्; b मुहि-  
 यइ मुधा-वृथैव. 11 °रणपरियेरु संग्रामसामग्रीकः.

5. 2 असरिसविसमसाहसो असदृशान्यद्वितीयानि विषमाणि मनसोऽप्यगोचराणि साहसानि अद्भुत-  
 कर्माणि यस्य; वसि जितेन्द्रियः. 4 b चरियालउ परनारीसहोदरः, चरितस्य वा काव्यविशेषस्याश्रयः. 5 b  
 संपहिं संप्रति. 11 a °महायल° महापर्वतः.

घत्ता—सो अच्छइ उवसमु धरिवि मणे जइ राणि कर्ह वि वियंभइ ॥  
तो सहं चक्कें सहं साहणेण पइं मि णरिंद णिसुंभइ ॥ ५ ॥

## 6

आरणालं—जो जिप्पइ ण हारिणा कुलिसधारिणा पयडसुहडरोलें ।  
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकाले ॥ १ ॥

हित्तिभिण्णमहिवइसामंतें	दसादिसिवहोपेसियसामंतें ।	
रूवरिद्धिरंजियरामोहें	अइपरिवद्धियसुधरामोहें ।	
णियभुयसत्तिपरज्जियभरहें	तं णिसुणेवि पयंपेउ भरहें ।	5
जमहु जमत्तणु को दरिसावइ	मइं मुएवि किर कवणु रसावइ ।	
एम को वि किं जगि संतावइ	को किर सिहिसिहाहि सं तावइ ।	
कहु महु तणउं पहुत्तु ण भावइ	कें <sup>3</sup> पडिखलिउ जंतु णैहि भावइ ।	
केर महारी को णावज्जइ	एह पुहइ को <sup>7</sup> किर णावज्जइ ।	
आसमुइमेइणिकरवालहु	को णासंकइ महु करवालहु ।	10
को किर भिच्च महारा मारइ	को विणिवारइ मज्जु वि मारइ ।	
किं किरै वणिणएण कंदप्पें	अणवंतहु णिवडइ कं दप्पें ।	

घत्ता—इय जंपिवि राएं णिक्करुणु अविणयविहियमणोज्जहं ॥  
सयलहं मि सयलसंपयधरहं लेहु दिण्णु दाइज्जहं ॥ ६ ॥

८ MBP कह व.

6. १ MB °सेहाहि. २ MBP किं. ३ P णहु. ४ MBP किर को. ५ M करि. ६ MBP °संपयहरहं.

6. 1 हारिणा उत्तमेण. 3 a हि त्तेत्यादि—हित्तौ गृहीतौ भिन्नौ उद्दालितौ महीपतीनां सामंतौ लक्ष्मीश्च मन्त्रश्च येन तादृशेन भरतेन. 4 b ° सु ध रा मो हें शोभनायाः पृथिव्या मोहेन. 5 a भरहें भरतक्षेत्रेण. 6 b रसावइ पृथ्वीपतिः. 7 b सि हि सि हा हि सं ता व इ अग्निज्वालाभिः स्वमात्मानं तापयति; 8 b भावइ आदित्यः. 9 a णा व ज्ज इ न गृह्णाति; b णा व ज्ज इ न अर्जयति. 10 a °मे इ णि क र वा ल हो मेदिनीकरग्राहकस्य. 12 b णिवडइ कं दप्पें कं मस्तकं दप्पेण सह निपतति. 13 अ वि ण य वि हि य म णो ज्ज हं अविनयविधिना विनयाकरणेण अमनोज्ञानां द्वेष्याणाम्.

## 7

आरणाळं—ता विगया बँहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।

दुमदलल्लियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु  
सुरणरविसहरभयइं जणेरी  
पणवहु किं बँहुवेण पलावें  
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ  
तो पणवहु जइ सुँसुइ कलेवरु  
तो पणवहु जइ जरइ ण शिज्जइ  
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ  
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टइ  
कंठि कयंतवासु ण चुँहुट्टइ

सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।  
करहु केर णरणाहहु केरी ।  
पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें । 5  
तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।  
तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु ।  
तो पणवहु जइ पुट्टि ण भज्जइ ।  
तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ ।  
तो पणवहु जइ कालुँ ण खुट्टइ ।  
तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ । 10

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुँक्खु णिवारइ ॥

तो पणवहु तासु णरेसँहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

## 8

आरणाळं—पुणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं एरिसं पउत्तं ।

आणापसरधारणे धँरणिकारणे पणविउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखंडु महिखंडु महेप्पिणु  
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु

किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।  
वणहलभोयणु वेर तं सुंदरु ।

7. १ MBP वओहरा; T वउहरा दूताः. २ BPK °लुलिय°. ३ MBP बहुएण. ४ MBP तह and throughout elsewhere in this Kadavaka. ५ MBP सुथिरु but T सुसुइ. ६ MBP फिट्टइ. ७ MBP आउ. ८ MBP कयंतपासु. ९ MBP चहुट्टइ. १० MPB °दुक्खइं वारइ. ११ MP ता; B तहो. १२ MBPK णरेसरहो.

8. १ B omits धरणिकारणे; P महिहि कारणे. २ MBP वरि.

7. 1 बहुयरा बहुतरा वचोधरा दूताः. 7 a सुसुइ सुष्टु शुचि. 9 b विहट्टइ विनश्यति. 11 a चुहुट्टइ लगति; b कालु आयुः.

8. 1 गहिरयं गभीरम्. 3 a पिंडिखंडु खलखण्डम्.; महेप्पिणु अभिलष्य.

वैर दौलिहु सरीरहु दंडणु  
परपयरयधूसर किंकरसैरि  
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु  
को जोयइ मुहुं भूंभंगालउ  
पहु आसणु लहइ धिडुत्तणु  
मोणै<sup>१०</sup> जहु भहु खंतिइ कायरु  
अमुणियहिययचारुगरुयत्तै  
महुरपयंपिरु चाहुयगारउ

णैउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु । 5  
असुंहाविणि णं पाउससिरिर्हरि ।  
को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।  
किं हरिसिउ किं रोसै कालउ ।  
पविरलदंसणु णिण्णेहत्तणु ।  
अज्जवु पसु पंडियउ पलाविरु । 10  
कलहसीलु भण्णइ सुहडत्तै ।  
केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—अइतिक्खहं धम्मगुणुज्झियहं वर्म्मवियारणवसणहं ॥

को वाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं ॥ ८ ॥

## 9

आरणालं—अहवा तेहिं किं हयं जं समागयं दुल्लहं णरत्तं ।

तं जो विसयविसरसे धिवइ परवसे तस्स किं बुहत्तं ॥ १ ॥

कंचणकंडे जंबुउ विंधइ  
खील्यकारणि देउलु मोडइ  
कप्पूरायरुक्खु णिसुंभइ  
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु  
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं

मोत्तियदामे मंकेहु बंधइ ।  
सुत्तणिमित्तु दित्तु मणि फोडइ ।  
कोइवछेत्तहु वइ पारंभइ । 5  
विसु गेणहइ सप्पहु ढोयैवि करु ।  
तक्के विकइ सो माणिकइं ।

३ MBP वरि. ४ M दारिहु ५ MBP णहि. ६ MBP °सिरि and a long note in M: यथा वर्षा-  
कालनदी परः अन्यहीनस्थाना झिल्लरादिपयैः (१) मलिनै रजोभिः धूसरिता मलिना प्रवहति हिरि अतिलज्जाकारिणी,  
तथा किंकरश्रीः शोभा परपदरजोभिः धूसरिता. ७ MBP असुहावणि. ८ MBP °हिरि; K °हिरि but  
corrects it to °हरि. ९ P भूसंगा°. १० MBP मउणे. ११ MBP अज्जउ. १२ KBP मम्म°.

9. 1 ते हिं वाणैः पिशुनैश्च. 3 a जंबुउ शृगालः. 5 a कप्पूरायरुक्खु कर्पूरवृक्षं अगुवइत्तं  
६ MBP अप्पइ परु.

6 a-b परे त्या दि—यथा वर्षाश्रीघारिणी नदी सरजस्का सकर्दमा असुखावहा भवति, एवं किं कर स रि किंकरा एव  
नदी परस्य स्वामिनः पदरजसा धूसरा मलिना भवति. 13 °व स ण हं °शीलानाम्. 14 पि सु ण हं वाणानां खलानां च.

9. 1 ते हिं वाणैः पिशुनैश्च. 3 a जंबुउ शृगालः. 5 a कप्पूरायरुक्खु कर्पूरवृक्षं अगुवइत्तं  
च; b वइ इतिः.

जो मणुयत्तणु भोणं णासइ  
चित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ  
मरइ रसणफंसणरसदडुड  
खज्जइ पलयकालसदूळें  
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु

तेण समाणु हीणु को सीसइ ।  
पुत्तु कलत्तु चित्तु संचितइ ।  
मे मे मे करंतु जिह मेंढउ । 10  
डज्जइ दुक्खहुयासणजालें ।  
होइ जीउ मंक्कइ माहुंडलु ।

घत्ता--केलासहु जाइवि तवयरणु ताए भासिउ किज्जइ ॥

जेणेह सुदूसहतावयरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

10

आरणाळं—इय भंणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।

दरिवियरियवराहयं सवरराहयं काणणं पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केलांसि जिणेसरु  
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय  
जय जाणियपरमक्खरकारण  
जय सुहवास दुरासावारण  
पुणु वि पंच परमेट्टि णवेप्पिणु  
पंचमहारिसिवयइं लंएप्पिणु  
पंचिदियपमाउ वज्जेप्पिणु  
पंचायारसारु पावेप्पिणु

संथुउ रिसहणाहु परमेसरु ।  
जय तियसिंदमउलिलालियपय ।  
जय जिण मोहमहातरुवारण । 5  
जय ससहरसियवारिणिवारण ।  
पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।  
पंचासवदारइं पिहेप्पिणु ।  
पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।  
पंचपंचविहु धम्मु घरेप्पिणु । 10

७ M मेंढउ; BP मेढउ, ८ MBP मंक्कडु.

10. १ MBP भणिओ. २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ताः. ३ MP सवरराहयं, but T सवरराहयं शबराणां भासो भा यत्र. ४ MP केलास°. ५ B लहेप्पिणु. ६ B °दारइं संभेप्पिणु.

9 a णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति. 12 b माहुंडलु सर्पविशेषः. 14 संसारिणि तिस संसारतृष्णा विषयाकांक्षा.

10. 1 समरमा उपशमलक्ष्मीकाः, पसण्णा प्रसन्नाः. 2 °वियरिय° विचरिताः; सवरराहयं शबराणां राहा शोभा यत्र. 5 a परमक्खर° मोक्षः. 6 a सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप. 6 b ससहरेत्यादि—शशधरश्चन्द्रः तत्तुल्यं सितं शुक्लं वारिणिवारणं छत्रं यस्य. 8 b पंचासवदाराइं मिथ्यात्वाविरति-प्रमादकषाययोगाः. 10 b पंचपंचविहु दशविधः.

घत्ता—दढगुणि मणमगणु संणिहिउ मोक्खहु संमुहुं पेसिउँ ॥  
संतहिं अरहंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिएं भूसिउँ ॥ १० ॥

## II

आरणालं—ता पत्तो चरो पुरं णिवइणो धरं भणइ सुणसु राया ।  
इसिणो तुह सहोयरा सीलसायरा अज्जु देव जाया ॥ १ ॥

एकु जि पर बाहुबलि सुँदुम्मइ	णउ तउ करइ ण तुम्हं पणवइ ।	
तं णिसुणेवि पुरोहँ उत्तं	भडसामंतमंतिसंजुत्तं ।	
कोसु देसुँ परियँणु पयभत्तउ	मणहरु अंतेउरु अणुरत्तउ ।	5
कुलु छलु बलु सामत्थु सुइत्तणु	णिहिलजणाणुराउ जसकित्तणु ।	
विणउ वियारहारि बुहसंगमु	पोरिसु बुँद्धि रिद्धि दइवुज्जमु ।	
कुंजर णावइ महिहर जंगमु	अत्थि तासु रह करह तुरंगमु ।	
अत्थसत्थु जावज्ज वि ण सरइ	जाम सहायसहासइं ण करइ ।	
जाम ण लग्गइ खलसंसंगे	खत्तधम्मणिम्महणुम्मगे ।	10

घत्ता—जावज्ज वि चाउ ण करि धरइ तोणाजुयलु ण बंधइ ॥  
णिर्मज्जिए भालसेयलवहि जाम ण गुणि सरु संधइ ॥ ११ ॥

## 12

आरणालं—ण हु मारइ महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्थो ।  
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खखग्गहत्यो ॥ १ ॥

ताम तासु दूर्यउ पेसिज्जइ	जइ पइं पणवइ तो पालिज्जइ ।	
णं तो पुणु बाहुबलि धरिज्जइ	बंधिवि कारागारि णिहिज्जइ ।	
एम मंतु जं तेण पउंजिउ	ता राएं तहु दूउ विसज्जिउ ।	5

७ MBP पेसियउ, ८ MBP भूसियउ.

11. १ MBP हरं. २ MBP स दुम्मइ. ३ MBP बुत्तं. ४ MBP दोसु. ५ MB परयणु.  
६ MBP बुह°. ७ M रिद्धि बुद्धिदइउज्जमु. ८ MBP णिम्मज्जिय°.

12. १ MBP दूउ.

11. 6 b ज स कि त्त णु यशोवर्णनम्. 7 a बु ह सं ग मु बु ध सं ग मः. 11 चा उ चापम्.

12. 1 म हा ह वे महासंग्रामे; म हा ह वे महाधवान्, महाभटान्.

णियवइरत्तु सत्तुविद्धंसणु  
 देसजाइकुलसुधु पसिद्धउ  
 विविहविसयभासाभासिल्लउ  
 तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ  
 गँउ दूयउ परिचोइयपत्तउ  
 जहिं वणतरुसाहहिं महु वियलइ  
 अइदीहरपवाससममहियहिं  
 रसविसेसधारामहमहियइं  
 पुप्फहिं गुंप्फइ माल विहिंडिरं

सुहइ सुलक्खणु सोमु सुदंसणु ।  
 पंडिउ पडु पहुलच्छिसमिद्धउ ।  
 दिट्टुत्तरु महिमाइ महल्लउ ।  
 महुरवाणि आँदेउ अजेयउ ।  
 पोयणपुरु बहुदिवँसहिं पत्तउ । 10  
 चलकंकेलीपँल्लु विल्लुइ ।  
 पइसंतहिं वि सँमंतहिं पहियहिं ।  
 जहिं खज्जंति फलाइं सुरहियइं ।  
 चउदिसु रणुरुणंति इंदिंदिर ।

घत्ता—सरु मेल्लिवि करेण णियड्ढियउ रत्तु पवडुँल्लु रसियउ । 15

बिंबीफलुँ अहरु व वणसिरिहे जहिं कणइल्लेँ डसियउ ॥ १२ ॥

### 13

आरणालं—वरंकेदारदारए सालिसारए कसणधवलपिच्छां ।

अणुझणझणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुणंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चंदेँ दाविउ  
 जहिं विहारु पासाउ पियारउ  
 उववासु वि चडएण रइज्जइ  
 जहिं केण वि कीरइ ण सुरागमु

माणुसि कत्थइ णेय विहाविउ ।  
 णउ णारियँणकंठु रइगारउ ।  
 णउ रोपं दुक्कालिं किज्जइ । 5  
 होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु ।

२ M पत्तु विद्धंसणु. ३ MBP आदेय. ४ MBP गयउ दू. ५ MBP °दियहहिं. ६ MBP पल्लउ. ७ MBP समत्तहिं. ८ MP add after this: णं कामिणिवयणइं अइसरसइं, पुणु पिज्जहिं जलाइं सरिसरसहिं. ९ MBP गुंफइ. १० MBP विहंडिर. ११ MBP पवट्टु. १२ MBP बिंबीहलु.

13. १ MBP वरं, T केयार°. २ MBP °पिंछा. ३ MBP चरंति. ४ MBP णारियणदेहु.

6 a णियवइरत्तु निजस्वाम्यनुरक्तः. 9cb आदेउ आदरवान्. 10 a परिचोइयपत्तउ वाहितवाहनः.  
 12 b समंतहिं समन्तात्. 13 b सुरहियइं देवहितानि सुगन्धानि वा. 14 a विहिंडिर पर्यटनशीलाः;  
 b इंदिंदिर भ्रमराः. 15 सरु मेल्लिवि शब्दं कृत्वा. 16 कणइल्लेँ शुकेन.

13. 1 केदारदारए वप्रमार्गे. 2 अणु स्तोकम्. 3 a-b णिद्धणत्तु स्निग्धं ज्योत्स्नायुक्तं नक्तं रात्रिः,  
 न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम्. 4 a-b विहारु पासाउ विहारशब्दवाच्यः प्रासादः, अथवा वीनां पक्षिणां धारकः  
 प्रासादः, न तु नारीजनो विगतहारः. 5 a उववासु गृहमध्ये वासः आहारत्यागश्च; चडएण चटकेन पक्षिणा.  
 6 a सुरागमु मद्यागमः मद्यपानम्; b सुरागमु देवागमनम्.



दिट्टु सिहाछेउ वि रिसिदिक्खहि  
असिलाहवँरुउं जहिं लेप्पइ  
घहइ सया णवत्तु वँणु जोवँणु  
जेत्थु कुसादूसणु णीसंगइ  
थँद्धत्तणु णिवडणु थणउल्लइ

णउ माणिकमऊहपरिक्खहि ।  
णउ विसिट्टुमारणसंकप्पइ ।  
णउ णिरुवइउ णिवसंतउ जणु ।  
णासवारि णउ रायवयं गइ । 10  
घरणु णिवीडणु जहिं अहरुल्लइ ।

घत्ता—पुक्खरिणिहिं कीलागिरिवरहिं जलखाइयपायारहिं ॥

जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंडिउ चउहुं मि दारहिं ॥ १३ ॥

## 14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुँरुयओ रायदूयओ पट्टणे पइट्टे ।

रायालयदुवारण हिययहारण णायरेहिं दिट्टे ॥ १ ॥

कणयदंडैयरु भल्लउ भाविउ  
बुद्धिवंतु अच्चब्भुयभूयउ  
तं णिसुणिवि गउ लट्ठिविहत्थउ  
अच्छइ दारि णरिंदवओहरु  
ता कंदण्णे भणिउं म वारहि  
ता कट्ठियहरेण जसणिम्मल्लु  
बाहुवलीसु देउ कयमंडल्लु  
संथुउ मउलियपंजलिपोमै

तहिं पडिहारु तेण वोल्लाविउ ।  
भणु अच्छइ दुवारि पइदूयउ ।  
कहइ कुमारहु पणमियमत्थउ । 5  
अत्थि णत्थि भणु सामिय अवसरु ।  
भायरकिंकरु लहु पइसारहि ।  
पइसारिउ पसण्णमुहमंडल्लु ।  
दूणं दिट्टुउ णं आहंडल्लु ।  
को वसि ण कियउ तुह परिणामे । 10

घत्ता—तुह धणुगुणटंकारण केणं ण माणु णिहित्तउ ॥

पइं वम्मह पंचहिं मग्गणहिं सयल्लु वि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

५ MBP °हवरुवउं; K °हवरुवउं but corrects it to °रुउं. ६ MBPT धणु. ७ MBP जोव्वणु.  
८ MT कुसादूसण. ९ P णीसगइ. १० MBP थडुत्तणु.

14. MBPT सरुयओ. २ MB रायालए. ३ MBP °दंडकरु. ४ MBP पणमिय°. ५ MBP वारि. ६ M °टंकारवेण. ७ MBP केणहिमाणु ण चत्तउ; T णिहित्तउ त्यक्तः.

8 a असिलाहवरुउं आशिलाभवं रूपम्. 9 a वहईत्यादि—वहति धरति णवत्तु अभिनवत्वं वनं यौवन  
च, न तु जनो नवत्वं चिरंतनव्यवस्थात्यागं धरति. 10 कुसादूसणु कुः पृथ्वी; सा लक्ष्मीस्तयोर्दूषणम्; णीसंगइ  
मुनौ; b णउ रायवयं गइ राज्यपदं प्राप्ते न, णासवारि अश्ववारेऽपि न.

14. 1 °सुरुयओ सदृशः. 4 a अच्चब्भुयभूयउ आश्चर्यभूतः. 8 a कट्ठियहरेण द्वारपालेन.  
9 a कयमंडल्लु रचितसमः.

## 15

आरणाळं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुक्तकामभोया ।

तुह जर्यवडहसद्देणं जगविमद्देणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर  
पइं पेच्छिवि घोळइ उप्परियणु  
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिदिल्ले  
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ  
रंभा णवरंभा इव डोल्लइ  
देव तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ  
मेणइ मीणि व थोवइ पाणिइ  
पम थुणंतहु दिण्णउं आसणु  
हिमइरिजलहिमाज्झि महिरायहु  
कुसलु खेउं कुरुवंसणरेसहु  
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु  
दूवे वुत्तउ कुसलु णरिंदहु  
एकु जिं अकुसलु सुहिउकंठिउ

अलिमालाजीयासंधियसर ।  
वियलइ णारिहि णीवीबंधणु ।  
हवइ रयंबु सवइ सोणीयलु । 5  
दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।  
रइवाएं आहल्ल वि हल्लइ ।  
विरहे उव्वंसि उव्वेइज्जइ ।  
पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।  
णिवसणु भूसणु किउ संभासणु । 10  
कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।  
कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु ।  
कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।  
कुसलु णाह णिहिलहु णिवविंदहु ।  
जं तुहुं देव दूरि परिसंठिउ । 15

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतरु ॥

रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहरु ॥ १५ ॥

## 16

आरणाळं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्तं ।

सह गुरुएण भाइणा तिजगताइणा रुसिउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

15. १ MB जयवडसद्देण. २ B सिदिल्ले. ३ P देवि. ४ MBP उव्वस. ५ MBP मीणइ.  
६ MBP दूरि देव

16. १ M °णिम्महा. २ MBP गरुएण.

15. 5 b रयंबु शुक्रम्. 6 b वूढसेउल्लउ उत्पन्नस्वेदार्रम्. 9 b पि य प्रभो; रवियरंमाणिइ सूर्य-  
करसंतपेन. 16 पिसुणकयंतरु पिशुनकृतचित्तभेदः.

16. 2° ताइणा रक्षकेन.

को ससहरु को किर करमेलउ  
 को तुहुं भरहु कवणु किर बुच्चइ  
 कप्परुक्खु किं कुसुमहिं अंचमि  
 सूरहु अग्गइ दीवउ बोहमि  
 तायहु पच्छइ भरहु जि राणउ  
 माणं मरट्ट विसट्टु मुण्णिणु  
 तरुणिकंठकंठइयपव्वट्टहिं  
 आयड्डियपईहकोदंडहिं  
 तेहिं ण पुणरवि राणि जुज्झिज्जइ

को समुद्दु को जलकल्लोलउ ।  
 एहउ बुहहं वियप्पु ण रुच्चइ ।  
 रयणायरु करसलिले सिंचमि । 5  
 हूं णिहीणु किं पइ संबोहमि ।  
 तुहुं जुयराउ जगेक्कपहाणउ ।  
 जीवहु एकमेक्क अणुणेप्पिणु ।  
 अरिवरदंतिदंतपरिहट्टहिं ।  
 आलिगियउ जेहिं भुयदंडहिं । 10  
 गुरुयणि अविणएण लज्जिज्जइ ।

घत्ता—कुलसामि महाबलु सुयणु गुणि णउ णवंति जे राणउ ॥

घरि ताहं होइ दालिहडउ अह जमपुरिहि पयाणउं ॥ १६ ॥

## 17

आरणालं—जो वरचरमकुलयरो पढमणिववरो पंकयच्छियाए ।

जिणवंसो पयासिओ जेण भूसिओ रायलच्छियाए ॥ १ ॥

जासु चक्कु रिउचक्कु णिसुंभइ  
 जासु पुरोहु पुराइउ पेच्छइ  
 कागणि दिणमणि ससि वि दुगुंछइ  
 छायइ छत्तु होंतु विवरेरउ  
 चम्मू चमू धरंतु अइभासइ  
 मागहु वरतणु जेण पहासु वि  
 जेण तिमीसकवाइ विहाट्टिउ

जासु दंडु परदंडु णिरुंभइ ।  
 तुरउ तुरिउ हियपं सहुं गच्छइ ।  
 थवइ थवइ तिहुयणु जइ इच्छइ । 6  
 असि असु कडुइ सत्तुहुं केरउ ।  
 सेणावइ सेणावइ णासइ ।  
 णिज्जिउ सुरु वेयड्डुणिवासु वि ।  
 सिंधुदेविअहिमाणु पलोट्टिउ ।

३ MB हं मि हीणु. ४ MP जगेक्कु पहाणउ. ५ MBPK माणु मरट्टु विसट्टु. ६ P परिवट्टहिं and gloss परिघट्टैः. ७ MBP °पयंड°. ८ MBP गुरुयण°.

17. १ MBP अइहासइ.

8 a मरट्टु दर्पः; विसट्टु चित्तभेदः. 8 b अणुणेप्पिणु अनुकूलं कृत्वा. 13 पयाणउं प्रयाणं गमनम्.

17. 3 b णिरुंभइ प्रतिबध्नाति. 4 a पुराइउ पश्चाद्भावि वस्तु. 5 b थवइ रचयति. 6 a छायइ आच्छादयति; b असु प्राणाः. 7 a अइभासइ अतिशयेन शोभते; b सेणावइ सेनाया आपदः.

दिण्ण केर हिमवंतकुमारहु  
 तहिं अप्पणउं णाउं सणिहियउ  
 तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ  
 विसहरउलइं सविसहरवरिसइं  
 णं पालेययसेलकिरीडहु

पुणु आइउ वसहइरिसुतीरहु । 10  
 छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।  
 णिवणांमंकिउ भमइ ससंकउ ।  
 जित्तइं मेच्छंउलइं सामरिसइं ।  
 पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—ढुक्की मंदाइणि कलसकर लोणं दीसइ केही ॥

15

थिय ण्हाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहियंहिययसल्ला ।

णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयडूहु कुलिसैं ताडिउ  
 णट्टमालि साहिउ मालायरु  
 असमु वइरु किं तेण समाणउं  
 पिंछकमंडंलुमंडियहतथहु  
 चक्कवट्टि गुणमणिरयणायरु  
 मा पज्जलउ तासु कोवाणलु  
 हा मा दुरयरएहिं विहिज्जंउ  
 मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ

पुर्वकवाडु जेण उरुत्तरेण ।  
 पयजुइ पाडिउ णं सरुत्तरेण ।  
 जं माणुसु रिउत्तरेण ।  
 रोसु जणइ तंहु वेगलत्तरेण ।  
 आउ जहं उरुत्तरेण ।  
 मा वेइहं लुत्तरेण ।  
 वेइहं लुत्तरेण ।  
 वेइहं लुत्तरेण ।

5

10

काउ कंदलावलिहि म विरसउ  
देहि कप्पु णिहप्पु हवेप्पिणु  
तं णिसुणेप्पिणु बाहुबलीसैं

पलयकालु सोणिउं मा कर्किसउ ।  
पेक्खु भरहु भावैं पणवेप्पिणु ।  
पडिजंपिउं भूभंगविहीसैं ।

घत्ता—कंदप्पु अदप्पु ण होमि हउं दूययकरउ णिवारिउ ॥

16

संकप्पैं सो महु केरणण पहु डज्झिहइ णिरारिउ ॥ १८ ॥

## 19

आरणालं—जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।

तं मैह लिहियसासणं कुलविहसणं हरइ को पहुत्तं ॥ १ ॥

केसरिकेसरु वरसइथणयलु  
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ  
हउं सो पणवमि को सो भण्णइ  
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंविउ  
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ  
चक्कु दंडु तं तासु जि सारउ  
करिसुयररहवरडिंभयरहं  
भरहु हरइं किं मज्झु भुर्याभरु

सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।

किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।

महिखंडेण कवण परमुण्णइ ।

5

किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।

सिरिसइरिणियइ किं रोमंचिउ ।

महु पुणु णं कुंभारहु केरउ ।

णर णिहणमि रणि जे वि महारह ।

तइं चुक्कइ जइ सुंयरइ जिणवरु । 10

घत्ता—तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदे दिण्णउं ॥

अब्भिडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिपवण्णउं ॥ १९ ॥

८ MBP वरिसउ. ९ MBP णियदप्पु हरेप्पिणु.

19. १ MBP दिण्णउं. २ B omits तं मह लिहियसासणं. ३ M वरहइ, but records a p वरसइ°. ४ MBP पणवउं. ५ MBP °सइरिणियइ सो रोमंचिउ. ६ BP add after this: हरिगइहकिंकर-छेलयणिह. ७ MBPT भरइ. ८ M भुयातरु, T भुयाहरु बाहुसामर्थ्यम्. ९ MBP ता. १० M सुमरइ. ११ MBP पडिवण्णउं.

12 a कं द लाव लि हिं मनुष्यकपालपंतौ; विरसउ रट्टु; b क रि सउ कृषट्टु. 14 b भू भं ग वि ही सैं भूभंग-भयानकेन.

19. 3 a वरसइथणयलु वरायाः स्रत्याः स्तनतलम्. 4 a छिवइ स्पृशति. 7 b °सइरिणियइ स्वैरिण्या पुंश्चल्या. 9 b महारह महारथाः. 10 a भुयाभरु भुजसामर्थ्यम्.

## 20

आरणालं—ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।

बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ

खज्जोपं रवि णित्तेइज्जइ

गोप्पएण किं णहु माँणिज्जइ

वायसेण किं गरुडु णिरुज्जइ

करिणा किं मयारि मारिज्जइ

किं हंसै ससंकु धवलिज्जइ

डिंडुहेण किं सप्पु डसिज्जइ

किं णीसासै लोउ णिहिप्पइ

किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।

किं घुट्टेण जलहि सोसिंज्जइ ।

अण्णाणै किं जिणु जाणिज्जइ । 5

णवकमलेण कुलिसु किं विज्जइ ।

किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।

किं मणुएण कालु कवलिज्जइ ।

किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।

किं पइं भरहणराहिउ जिप्पइ । 10

घत्ता—हो होउ पहुँप्पइ जंपिण्ण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥

करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ रँंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

## 21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा एत्थ कहिं मि जाया ।

जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

बुडुउ जंबुउ सिर्व सदिज्जइ

जो बलवंतु चोरु सो राणउ

हिप्पइ मृगँहु मृगेण जि आमिसु

रक्खाकंखइ जूँहु रएण्णिणु

एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।

णिब्वल्लु पुणु किज्जइ णिप्रँणउ ।

हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु । 5

एक्कहु केरी आण लएण्णिणु ।

20. १ MBPK किं खज्जोपं. २ P सोखिज्जइ. ३ P मणिज्जइ. ४ MBP डिंडुहेण. ५ MBP भरहु. ६ MBP पहुँचइ. ७ K रंगणु मग्गइ.

21. १ MBP सिउ. २ M णिब्वल. ३ MBP णिप्पाणउ. ४ MBP मिगहु मिगेण. ५ P बुहु.

20. 5 a मा णि ज्जइ उपमीयते. 10 a णि हिप्पइ निक्षिप्यते. 11 वग्गइ विग्रहाय चेष्यते. 12 परइ प्रभाते.

21. 1 सहेउणा सयुक्तिकेन. 3 b एण णाइं अनेन न्यायेन. 5 b वसु धनम्.

ते णिवसंति तिलोईगविट्टउ  
माणभंगि वरं मरणु ण जीविउ  
आवउ भाउं घाउ तहु दंसमि  
सिहिसिंहाहं देविंदु वि ण सहइ  
एकु जि परउव्वारु णरिंदहु

सीहहु केरउ वंदुं ण दिट्टउ ।  
एहउ दूय सुट्टु मइं भांविउं ।  
संझाराउ व खणि विद्धंसमि ।  
महु मणसियहु विसिंहं को विसहइ । 10  
जइ पइसरइ सरणु जिणंयंदहु ।

घत्ता—संघट्टमि लुट्टमि गयघडहु दलमि सुहड रणमग्गइ ॥

पहु आवउ दावउ वाहुवल्लु महु वाहुवलिहि अग्गइ ॥ २१ ॥

## 22

आरणाळं—ता दूउं विणिग्गओ णियपुरं गओ तम्मि णिवणिवासं ।

सो विण्णवइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं ॥ १ ॥

विसमु देव वाहुवलि णरेसरु  
कज्जु ण बंधइ बंधइ परियरु  
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयवल्लु  
माणु ण छंडइ छंडइ भयरसु  
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि  
तुज्झु ण णवइ णवइ मुणितंडउ  
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु  
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणइं

णेहु ण संधइ संधइ गुणि सरु ।  
संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु ।  
आण ण पालइ पालइ णियल्लु । 5  
दयैवु ण चिंतइ चिंतइ पोरिसु ।  
पुहइ ण देइ देइ वाणावलि ।  
अंगु ण कड्डइ कड्डइ खंडउ ।  
पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।  
ढोएसइ धुवुं णरउररयणइं । 10

घत्ता— संताणु कुलक्कमु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ वुज्झइ ॥

मजायविवज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥ २२ ॥

६ B तिलोउ°. ७ MBP विंदु. ८ MBP वरि. ९ M भामिउ. १० MBPK राउ; G भाउ but writes adove it राउ in second hand. ११ M सिहिसिंहिं देविंदु ण वि ण सहइ. १२ MT विसह. १३ MBPK जिणइंदहु.

22. १ MBP दूवउ. ३ MB पणवउ; P पणविओ. ३ MBP दइउ. ४ BPP मग्गइ मग्गइ. ५ MBP धुउ.

10 b वि सिह वाणाः. 11 a परउव्वा रु परोद्धरणं रक्षणम्.

22. 1 सायरं सादरम्, सारसायरं सा लक्ष्मीः रसा पृथिवी, तयोः आकरम्. 8 a मुणितंडउ मुनिसमूहः. 10 b णरउररयणइं नरवक्षःस्थलविदारकानि. 12 दाइउ दायादः सपत्नीजातभ्राता.

## 23

आरणाळं—ता परिल्हसिउ दिणमणी णं सिरोमणी गयणकामिणीए ।

अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीए ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ  
 णं चउपहरहिं वणु अहिकंतिहि  
 णां पवालकुंभुं दिसणारिइ  
 पउलिवि तलिवि दँलिवि दलवट्टिवि  
 दंडरहियजणलोहियलिच्ची  
 उग्घाडिवि ससहरमुह णिद्धहिं  
 णं सिंदूरकरंडु झसच्छिइ  
 मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु  
 गोमिणीइ हरिरइरसभँरिउं  
 अत्थमियउ जाइवि अवरसइ

दिवसहु दिणु दीर्घुं सिहितत्तउ ।  
 जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।  
 धरिवि मुक्कुं दिक्करिगणियारिइ । 5  
 जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।  
 कालेंडाँ विव दिसिर्वहि घिच्ची ।  
 संमुहियहि तियसासामुद्धहि ।  
 दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।  
 णिउ वाएण वरुणमुहकमलहु । 10  
 पोमरार्यवत्तु व वीसरिउं ।  
 रत्तु मिच्चु णं गिलियउ वेसइ ।

घत्ता—पुणु दीसइ संझारायण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥

सहुं गिरिदँरिसरिणंदणवणहिं लक्खारासि णं घित्तउ ॥ २३ ॥

## 24

आरणाळं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।

णं णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ  
 संझारायघुसिणु जं संकिउ

सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।  
 तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।

23. १ MBP दीउ. २ MBP कुंभ. ३ MBP मुक्क. ४ MBP मलिवि. ५ B कालिं दाविय. ६ MB दिसवहि; P दिवसहिः. ७ MBP °भरियउ. ८ MBP °पत्तु. ९ MBP वीसरियउ. १० MBP गिरिसररि°.

23. 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वतं प्रति समर्पितः; रुइविराइओ दीप्तिविराजितः; णांइ तथा यामिन्या. 3 a मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु. 5 b दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या. 7 b कालेंडा विव दिसिर्वहि घिच्ची कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम्. 11 a हरिरइरस° कृष्णक्रीडारसः; b पोमरार्यवत्तु पद्मरागभाजनम्. 12 a अवरसइ अपरदिशा.

24. 3 b समियउ पीडितः. 4 b °मयणाहें मृगेन्द्रेण.



संझारायविडवि जो<sup>१</sup> फुल्लिउ  
चंदमइदें तमकरि भग्गउ  
मयणिहेण दीसइ सुहयारउ  
विसइ गवक्खहिं थणयलि घोळइ  
रंधायाहें थियउ अंधारइ  
रइपासेयविंदु तेणुज्जलु  
दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ  
मोरें पंहुरु सण्णु वियप्पिवि

सो तमतंवेरमवइपेह्लिउ । 5  
किं जाणहुं सो तासु जि लग्गउ ।  
तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।  
वहुहारु व सैसितेउ णिहालइ ।  
दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।  
दिट्ठु भुयंगहि णं मुत्ताहलु । 10  
घरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।  
मुद्धें कह व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिणिगंडयलइं ॥

जायइं ससियरपक्खालियइं धवलाइं जि णिरु धवलइं ॥ २४ ॥

## 25

आरणाळं—मम्मणमणियजंपिरं मयणकंपिरं पणयविणयवंतं ।

रइरसरहंसरंजियं पिययमा पियं रमइ णिसि रमंतं ॥ १ ॥

केण वि घणथणि णिहियउ करयलु  
काइ वि को वि सुहउ आलिंगिउ  
णीहरंति पडिवहुरोसुव्भवि  
पणयकलहि रमणीचरणंगउ  
सोहइ विडु अइरा रिउ संकिउ  
हारें वद्ध का वि सयणालइ  
विवाहररसघयसंसित्तउ  
उल्हाविउ रइसलिलपवाहें

कणयकलसि णावइ रत्तुप्पलु ।  
मंडुमडुमुहचुंवणु मग्गिउ ।  
केण वि का वि धरिय करपल्लवि । 5  
को वि सकुंकुमेण पापं हउ ।  
णं मयरद्धयमुहइ अंकिउ ।  
ताडिय णाहें चंपयमालइ ।  
काहं वि मयणहुयासु पलित्तउ ।  
काइ वि किलिंकिंविउ उच्छाहें । 10

24. १ MBP जं. २ P वेरिहि. ३ M सियतेउ. ४ B omits this foot. ५ M रंधायार.  
६ M पियविरहिणं.

25. १ B °रहसजंपियं. २ MBPK सुहडुः ३ MBP मंडमंड. ४ MBP कासु.

5 b °तंवेरम° हस्ती. 7 a मयणिहेण मृगमिपेण. 9 a रंधायार छिद्राकारः; b पयणइ प्रजनयति.  
11 a दीहायारउ सर्पाकारः; b °उक्केरउ समूहः. 13 °पक्खदलइं पक्षयुगलानि.

25. 6 a °चरणंगउ पादयोः पतितः. 7 a अइरा अचिरात्.

का वि रयावसाणसमरीणी  
को वि का वि सवहर्हि रंजइ गुणि  
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ  
जणणि महेली मणि अवहारमि

चंदणकदमवाविहि लीणी ।  
अकसमाण मज्झु परपणइणि ।  
तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।  
गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि ।

घत्ता—इय कवडकूडमउजंपियहिं दाणेण वं वसिहूयउ ॥

15

णारीयणु रमिउ विडाहिवहिं वेढिवि णिरुवमरूवउ ॥ २५ ॥

## 26

आरणालं—दीहा वि रयमिहुणहं चक्रवियणहं पहियवंदयाणं ।

मडहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रयविडिंदियाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूरु पुव्वासइ  
किंसुयकुसुमपुंजु णं सोहिउ  
चारु सूरु वंसहु णं कंदउ  
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय  
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ  
तंबुं करोहउ रूहिरु णिसाडें  
कुंकुमलोलु व मण्णिउं घरिणिइ  
मिलियउ सोहइ विहुममहियलि  
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि  
मिलियउ सोहइ जण अहरुल्लइ  
राउ मुयंतु जि गुणसंजुत्तउ

रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।  
णं जगभवणि पईवुं पबोहिउ ।  
लोहिउ ससि रोसेण दिणिंदउ । 5  
कमलिणि वेळ्ळि भणिवि संताविय ।  
णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।  
चित्तिउ एंतु सछिइकवाडें ।  
रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।  
मिलियउ सोहइ कंकेलीदालि । 10  
मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।  
महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ ।  
अरहंतु व रवि उण्णइं पत्तउ ।

५ P °रयावसाणि, ६ MBP वि.

26. १ MBP रइ°, २ MBP पईवउ बोहिउ, ३ MBP सूर°, ४ MBP दिणिंदउ, ५ MB तंब, ६ M रुहिर, ७ MBP कंकेलिहि दलि.

11 a °समरीणी °श्रमेण क्लान्ता. 12 b अकसमाण मातृवुल्या. 14 b गुरुपय छिवमि गुरुपादौ स्पृशामि; ण पइं अवहेरमि त्वां न वञ्चयामि. 16 वेढिवि आलिङ्गय.

26. 1 दीहा वि दीर्घापि; चक्रवियणहं-चक्रवाकानां एव विगणानां पक्षिगणानाम्. 2 मडहा लघ्वी; रयविडिंदियाणं रतानां विटेन्द्राणाम्. 8 a णिसाडें निशाचरेण.

घत्ता— हयतिमिरें भरहपयासएण रविणा किं ण वि दाविडं ॥

सिरिरामासेवियसच्छसरपुष्पयंतु विर्यसाविड ॥ २६ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे बाहुबलिद्वयसंपेसणं णाम

सोलहमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ १६ ॥

॥ संधि ॥ १६ ॥

८ MBP दावियड. ९ MB वियसावियड.

15 सिरी त्या दि—झीसेवितानां स्वच्छसरोवरपद्मानां मध्ये विकासितम्.

## XVII

दूवागमि रविउग्गमि चलकरवालललावियजीहहो ॥  
जाइवि णंदाणंदणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ ध्रुवकं ॥

### 1

ता समरचित्तु विसरिसु विरुद्धु  
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु  
तिवलीतरंगभंगुरियभालु  
अरुणच्छिछोहरंजियदियंतु  
दूययवयणहिं वड्डियकसाउ  
सुयरेप्पिणु तायहु तणउं चारु  
तो धरिवि णिरुंभंवि करमि तेम  
महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव  
इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु  
तां मउडवद्ध मंडलिय चलय  
महिवडियकणयकंचीकलाव  
एकेक पहाण गिरिंदधीर

विप्फुरियदसणडसियाहरुद्धु ।  
उंद्धुयमीसियहयभउंहकोणु ।  
णं सीहु कुडिलदाढाकरालु । 5  
णं पलयजलणु धगधगधगंतु ।  
जंपइ सरोसु रायाहिराउ ।  
जइ कहँ व ण मारमि रणि कुमारु ।  
अच्छइ करि जिह णियलत्थु जेम ।  
सो ण करइ किं महु तणिय सेव । 10  
जा उट्टिउ भरहु महाणरिंदु ।  
केऊरसकंठाहरणघुलिय ।  
अइभीसण थिय णं कालभाव ।  
सहुं रायं लहु संणद्ध वीरं ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।  
अत्यन्तवृद्धगतमपि भुवनं बभ्रमति तच्चित्तम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवरं for कम्पिततनु; MP read विभ्रमति for बभ्रमति. GK do not give it.

1. १ MBP दूयागमि रविउग्गमणे. २ MBP विप्फुरियडसणु डसिया°. ३ M recods a p for this foot: धणुगुणे रोवि दिढवज्जबाणु. ४ MBP दूयहि वयणें. ५ MBP सुमरोप्पिणु. ६ P कह वि. ७ MB णिरुंभिवि; B णिरुंजिवि. ८ P करिवरु णियलत्थु. ९ MBP तो. १० MBP चलिय. ११ MBP णरिंद. १२ B धीर.

1. 3 a विसरिसु अद्वितीयम्; b अहरुद्धु अधरोपरितनभागः. 6 a °छो ह° विक्षेपः. 8 a चारु आचारः. 12 a चलय उत्थिताः. 13 b कालभाव यमस्वरूपाः.

घत्ता—संणज्झंतहु तहु भडयणहु का वि णारि पभणइ जइ जाणहि ॥ 15  
किं पि महारउ उवरिउ तो पिययम सुररमणि म माणहि ॥ १ ॥

## 2

वहु का वि भणइ हत्थागण	किं कीरइ मणिकंकणसण ।	
अरिकरिदंतुम्भउ एक्कु जइ वि	वलउल्लउ सोहइ हत्थि तइ वि ।	
तं धवलउ तुह पोरिसजसेण	आणेज्जसु पिय महु रइवसेण ।	
वहु का वि भणइ एहु वि सुतारु	किं तुज्झ पसाएं णत्थि हारु ।	
तुह करणित्तिसुक्कत्तिएहिं	परकुंभिकुंभचुयमोत्तिएहिं ।	5
हउं कित्तिलया इव कुसुमियंगि	छज्जमि दाविज्जसु एह भंगि ।	
वहु का वि भणइ महिमाहरेण	मइं विज्जहि किं वीरें करेण ।	
रिउचामरु पिय उवयारकारि	आणेज्जसु रयसमसेयहारि ।	
वहु का वि भणइ अहिमाणगाहि	लग्गिज्जसु पिय पडिवक्खणाहि ।	
ऊणेण हएण वि णत्थि लाहु	उहुगणहु ण रूसइ तेण राहु ।	10
जिम मिहरहु जिम हिमयरहु भिडइ	बलिणा हएण जसु चंदि चडइ ।	
वहु का वि भणइ णीसंकयाइं	तावियपिसुणइं पावियजयाइं ।	

घत्ता—कइणा कव्वे मणोहरए जेण भडेण महाभडगोंदलि ॥

दिण्णइं पयइं सुउज्जयइं तासु कित्ति भर्मइं महिमंडलि ॥ २ ॥

१३ MBP संणज्झंतहु भडयणहु. १४ K उवरिउ but gloss उपकृतम्.

2. १ MBP अरिकुभि°. २ P पहिरेसमि सामिय एत्थ भंगि, but records a p छिज्जमि दावि-  
ज्जसु. ३ MBP दाविज्जसि. B वीरें करेण. ५ MBP रिउचामर. ६ MBP किं जणेण हएण. ७ MBP  
मिहिरहु. ८ MBP इय णाहएण, but M records a p in the margin: बलिणा हएण. ९ M  
कव्वेण. १० MBP हिंडइ.

16 उ व य रि य उपकृतम्.

2. 5 a क र णि त्ति सु क्क त्ति ए हिं करानिखिंशोत्कर्तितैः. 6 b छज्जमि शोभे. 7 a महिमाहरेण  
माहात्म्यस्फेटकेन; b विज्जहि वीजय. 8 a उ व यार कारि माहात्म्यजनकम्. 9 b प डि व क्ख णा हि प्रतिपक्ष-  
नाथे प्रधाने. 10 a ऊ णे ण पदातिपुरुषेण.

## 3

ता रायवयणेण रणतूरलक्खाइं किंकरकैराहयइं तासियविवक्खाइं ।  
 सुरदंतिखयजलयजलणिहिणिणयाइं थंगिथगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।  
 पडुपडहमइलमहारावरोलाइं किंकरकैरुब्भमियसल्लंसलियतालाइं ।  
 मुहपवैणतुरुतुरियकाहलवमालाइं गज्जंतभेरीहिं हल्लमुहलबोलाइं ।  
 तडिवडणतडयडियगुंरुकरडटिविलाइं विरसंतझल्लरिसरोसरियसेलाइं । 5  
 णीसासभारेण पूरियइं विमलाइं हूहूहुयंताइं वरसंखर्जमलाइं ।  
 अवरइं वि पहयाइं परियलियसंखाइं जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।  
 रुंजंतरुंजाइं भंभंतंभंभाइं हल्लावियाहिंदमहिसीयरब्भाइं ।  
 चलियाइं सेण्णाइं संणाहसोहाइं वरकुंजरारूढरणरूढजोहाइं ।  
 णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइं चलधूलिकविलीं विप्फुरियखग्गाइं । 10  
 परिमिलियमंडलियबलसारवंताइं धीवंतपाइक्ककरधरियकोतीं ।  
 रहचक्कचिक्कारभेसियभुयंगाइं णिवल्लत्तछाहीहिं छाइयपयंगाइं ।  
 जक्खिखदखयरिंदभूमिंदभीमाइं खयकाल्लकीलाहि कीलींविरामाइं ।

घत्ता—इय भर्रहाहिउ णीसरिउ जाम समउ मंतिहिं सामंतहिं ॥

ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुबलि णवंतहिं ॥ ३ ॥

15

## 4

परियणजलेण णहु महि पिहंतु उत्तुंगतुरंगतरंगवंतु ।  
 करिमयरपसारियचंडसौंडु सियपुंडरीयडिंडीरपिंडु ।  
 लायण्णपउरगंभीरघोसु दुग्गउं चोइहरयणाहिवासु ।

3. १ B °करहयइं. २ MBP ठगिदुगिगिठगिदुगिगि. ३ MBP °करब्भमिय°. ४ B °सलललिय°. ५ MBP °पवणहयकुहर ( P कुहय ) तुरुतुरियकाहलइं. ६ P °हलमुसल°. ७ MBP °खरकरड°. ८ MBP °जुयलाइं. ९ MBP अवराइं पहयाइं. १० MBP भंभंतंभंभाहिं. ११ MBP °सायरंभाइं. १२ BP °कवलाइं. १३ MBP विप्फरिय° K विप्फरिय° but corrects it to विप्फुरिय°. १४ P धावंति. १५ MBP °कुंताइं. १६ MBK °कालकालाहि. १७ B कीराहिरामाइं. १८ भरहणराहिउ.

4. १ MB महि णहु. २ MB दुग्गमु. ३ MBP चउदह°.

3. 5 b स रो स रि य से लाइं °शब्देनोत्सारितपर्वतानि. 8 a °रुंजाइं वादित्रविशेषाः; b सा य रब्भाइं सागराः अन्नाणि मेघाश्च. 10 a °विमुक्का स विमुक्ताः अश्वाः. 15 वेयालिय° वैतालिकाः.

संदणबोहित्थसमूहचवलु  
जसमोत्तियमंडियतिजगतीरु  
धयवडजलयरपरिधुलणरंगु  
तुज्जुवरि देव असिद्धसरउहु  
सुविचित्तर्पत्तपत्तियसरेण  
हउं एक्कु वइरि किं पउर भणहि  
किं डज्जइ हुयवहु तरुवरोहिं  
किं कुसुमबाण जिणमणु हरंति  
छाइज्जइ किं भयणेहिं भाणु

पंचगमंतपायालविउलु ।  
आणंदियणियकुल्लं कुइहीरु । 5  
दूरयरणिहित्तमलोहसंगु ।  
उत्थंल्लिउ णरवइ बलसमुहु ।  
ता बुच्चइ बाहुवलीसरेण ।  
किं कालहु अग्गइ जीव गंणहि ।  
किं खज्जइ खगवइ विसहरेहिं । 10  
गोमाउ मइंदहु किं करंति ।  
पउर वि रिउ महु ण मलंति माणु ।

घत्ता—एक्कु वि पउ ण समोसरमि णायायारहिं पंथु णिरुंभंमि ॥

आवंतहु णिवसार्थरहो सरवरपंतिहिं वरंणु णिबंथंमि ॥ ४ ॥

## 5

गज्जंतु एम पलयकत्तेउ  
जोयंतहु णियभुयथामसंचुं  
हियवइ संणाहु ण माइ केम  
केण वि बद्धी जयकामएण  
केण वि इच्छिय संगामदिक्ख  
केण वि गुणु वल्लंइउ कहिं वि चावि  
केण वि णिबद्धु तोणीरजुयलु  
केण वि कड्डिउ करवालु चंडु

संणज्जइ सिरिबाहुबलिदेउ ।  
कासु वि वड्डिउ रोमंचु उंचुं ।  
बहुलोहवंतु काउरिसु जेम ।  
असिधेणुय रसणादामएण ।  
सरमोक्खहु केरी परमसिक्ख । 5  
चैप्पिवि णं खलयणि कुडिलभावि ।  
णं गरुडें दाविउ पक्खजमलु ।  
णं मेहें दैरिसिउ विज्जुदंडु ।

४ P पायालि. ५ MB °कुलकुइहीर, P °कुलु कुइहीर; K °कुलकुइहीर but corrects it to °कुइहीर  
T चइहीर चंद्रारंगुस्थानम्. ६ MBP °धुलियरंगु. ७ K उत्थल्लउ. ८ MBP °वत्तपत्तिय°. ९ MBP  
जणहि. १० BP णिरुंभिवि. ११ MBP °सायरबलहो. १२ MB वरुणु. १३ B णिबधिमे; K णिरुंभमि.

5. १ G संतु; K थावसंचु. २ MP उच्चु. ३ MBP असिधेणुव. ४ MBP लाविउ. ५ MBP  
चप्पेविणु खलयणकुडिलभावि. ६ Mपक्खजुयलु; BP पंखजुयलु. ७ P दाविउ.

4. 4 a °बोहित्थ° नौः. 5 कुइहीर चन्द्रः. 6 b °मलोहसंगु अन्यायमलसंगः. 11 b गोमाउ  
शृगालः. 12 a भयणेहिं नक्षत्रसमूहैः. 13 णायायारहिं सर्पाकारैः. 14 वरणं तटं सैन्यसमुद्रस्य.

5. 1 a पलयकत्तेउ प्रलयाकत्तेजाः. 2 a थामसंचु सामर्थ्यसंचयः. 4 b असिधेणुय ह्युरिका.

भड् को वि भणइ परु हर्णमि अञ्जु  
पड् तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु  
अवरुंडहि लड् दे देहि हत्थु  
आयड्डिउ पडुहि पसाउ जेहिं

णिकंटउ सामिहि देमिं रञ्जु ।  
भणु सुंदरि किं कीरइ वियारु । 10  
को जाणइ पुणु संजोउ केत्थु ।  
राणि जुज्झामि अञ्जु भुपहिं तेहिं ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहड् मुइ मुइ कंति ण पवहिं मंज्झामि ॥

णिग्गवि रायड् तणउ रिणु अञ्जु सीसदाणेण विसुज्झामि ॥ ५ ॥

## 6

भड् को वि भणइ कयवणमुहेहिं  
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहिं  
जइ अंतइं गिद्धं लइवि जंति  
भड् को वि भणइ हलि हत्थु देमि  
कंडवि णरकण अवर वि करेणु  
भड् को वि भणइ हुइ खंडखांडि  
सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु  
अह धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु  
जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिण्णु  
वच्छयलु महारउ तं जि लेहि  
हलि सामलंगि उर्फुल्लवयणु

जइ भिज्जइ उरु करिमुहरुहेहिं ।  
जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहिं ।  
तो मरणमणोरह मेहु सरंति ।  
गयदंतमुसल्लु कडुवि लेमि ।  
उड्ढावमि अयसतुसोहरेणु । 5  
महु करु पेक्खेज्जसु पेक्खित्तौंडि ।  
अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।  
तुह मंगलंसुकजलविलित्तु ।  
परिमुक्कदीहणारायभिण्णु ।  
सघुसिणु करयलु अहिणाणु देहि ।  
जइ णिवडिउं पेच्छहि तंबणयणु । 10

घत्ता—तो<sup>१०</sup> मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥

सहुं पत्थिवपरिवालिणण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

८ K हणिवि. ९ MBP करमि. १० MBP मुज्झामि and gloss in MP मोहं करोमि; K मज्झामि but मुज्झामि in second hand.

6. १ MBP गिद्ध. २ B मय. ३ K <sup>०</sup>मुसल. ४ M पेक्खिज्जहि. ५ MBP पेक्खित्तुंडि. ६ MBP परमुक्क<sup>०</sup>; M records a p सरु मुक्क<sup>०</sup>. ७ M अहिणाहु. ८ MBP ओफुल्ल<sup>०</sup>. ९ M जं णियडउ; BP जं णियडिउं. १० MBP सो. ११ MBP परिपालिणण.

13 मज्झामि मनोहरं करोमि.

6. 5 a कंड वि चूर्णाकृत्य; b अ य स<sup>०</sup> अपयशः.



7

छुडु गज्जिय गुरु संगामभेरि  
 छुडु णिग्गउ भुयबलि साहिमाणि  
 छुडु काले णीणिय दीह जीह  
 थिय लोयवाल जीवियणिरीह  
 छुडु भडभारे ढल्लहलिय धरणि  
 छुडु चंदेबलाइं पलोइयाइं  
 छुडु मच्छरचरियइं वड्डियाइं  
 छुडु चक्कइं हत्थुग्गामियाइं  
 छुडु कौतइं धरियइं संमुहाइं  
 छुडु मुट्ठिणिवेसियं लउडिदंडं  
 छुडु गय कायर थरहरियप्राणं  
 छुडु मेठं चरणचोइयमयंगं

णं भुक्खिय तिहुयणु गिलिवि मारि ।  
 छुडु एत्तहि पत्तउ चक्कपाणि ।  
 पसरिय माणुसमंसासणीह ।  
 डोल्लिय गिरि रंजिय गंहेणि सीह ।  
 छुडु पहरणफुरणं हसिउ तरणि । 5  
 छुडु उंहेयबलाइं पधावियाइं ।  
 छुडु कोसहु खग्गइं कड्डियाइं ।  
 छुडु सेल्लइं भिच्चहिं भामियाइं ।  
 धूमंधइं जायइं दिम्मुहाइं ।  
 छुडु पुंखुंज्जल गुणि णिहियं कंडं । 10  
 छुडु ढोइंय संदण णं विमाण ।  
 छुडु आसवारवाहियतुरंग ।

घत्ता—छुडु छुडु कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति परोप्परु ॥  
 अंतरि ताम पइडु तहिं मंति चवंति समुब्भिवि णियंकरु ॥ ७ ॥

8

बिहिं बलहं मज्झि जो मुर्यइ वाण  
 तं णिसुणिवि सेण्णइं सारियाइं  
 तं णिसुणिवि रहसाऊरियाइं  
 तं णिसुणिवि धारापहसियाइं  
 तं णिसुणिवि णिद्धंगंघं घणाइं

तहु होसइ रिसहहु तणिय आण ।  
 चडियइं चावइं उत्तारियाइं ।  
 वज्जंतइं तूरइं वारियाइं ।  
 करेवालइं कोसि णिवेसियाइं ।  
 णिम्मुकुइं कवयणिवंधणाइं । 5

7. १ MB °मंसाण सीह. २ MBP गहणसीह. ३ MBP ढल्लहलिय. ४ MBP चंड°, ५ MBP उभय°. ६ MBP °चडियइं. ७ MB धूमंधइं. ८ M °णिवेसिउ. ९ M °दंडु. १० MBP पंखुज्जलु. ११ M णिहिउ. १२ M कंडु. १३ MBP °पाण. १४ P ढोयइ. १५ MBP मेठ°. १६ M वरकरु; BP वरकरु.

8. १ MBP मुवइ. २ MBP खग्गइं पडियारि. ३ MBP णद्धंगइं; T णिद्धंगइं दीप्राणि णद्धंगइं वा बद्धानि.

7. 1 a छुडु शीघ्रम्. 3 b °मंसा सणीह मांसाशनेच्छा. 4 b गहणि वने.

8. 5 a णिद्धंगइं भास्वराणि.

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध  
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय  
रह खंचिय कड्डिय पग्गहोह

पडिगयवरगंधालुद्ध कुद्ध ।  
हरि फुरुरुरंत धावंत धरिय ।  
वारिय विंधंत अणिय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणचरणसवहसंणिहियइं ॥

सेण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्डि णां आलिहियइं ॥ ८ ॥ 10

## 9

पणमियसिरोहिं मउलियकरेहिं  
उग्गामियरोसपसमंतएहिं  
तुम्हइं विण्णि वि जण चरमदेह  
तुम्हइं विण्णि वि अखलियपयाव  
तुम्हइं विण्णि वि जगधरणथाम  
तुम्हइं विण्णि वि सुरहं मि पयंड  
तुम्हइं विण्णि वि णिवणायकुसल  
तुम्हइं विण्णि वि जण जणहु चक्खु  
खरपहरणधारादारिण  
किर काइं वराणं दंडिण  
दोहं मि केरा मज्झत्थ होवि

बाहुबलि भरहु महुरक्खरोहिं ।  
विण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।  
तुम्हइं विण्णि वि जयलच्छिगेह ।  
तुम्हइं विण्णि वि गंभीरराव ।  
तुम्हइं विण्णि वि रामाहिराम । 5  
महिमंहिलहि केरा बाहुदंड ।  
णियतायपायपंकरुहभसल ।  
इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।  
किं किंकरणियरें मारिण ।  
सीमंतिणिसत्थें रंडिण । 10  
आउहु मेल्लिवि खमभाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोयंतु धराहिवइ एत्तिउ किज्जैउ सुत्तु सुजुत्तउ ॥

तुम्हहं दोहं मि होउ णु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावरहिय; P मच्छरभारभरिय. ५ MB फुरफुरंत. ६ MB अणंत. ७ M चरणसवहसाल्लिहियइं; B °चरणवसहसंणिहियइं; T सवहसंणिहियइं. ८ P कोड्डि.

9. १ MBP उग्गामिउ रोसु. २ MBP read: तुम्हइं विण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइं विण्णि वि जण चरमदेह. ३ MB महियल केरा. ४ MBP आउह. ५ MBP किज्जइ सुट्टु. ६ MBP धम्म णाएण.

8 a पग्ग होह रश्मिसमूहः. 9 °सवहसं णि हियइं शपथधृतानि. 10 कुड्डि कुड्डये भित्तौ.

9. 2 b महंतएहिं मन्त्रिभिः. 7 a णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ. 10 b सीमंतिणिसत्थें स्त्रीसमूहेन. 12 सुत्तु सुभाषितम्. 13 धम्मणाएण धर्मन्यायेन.

## 10

पहिलउ अवरोप्परु दिट्ठि धरह  
 बीयउ हंसावलिमाणिएण  
 तइयउ पुणु णहि जोयंतु देव  
 जुज्झह बिण्णि वि णिवमल्ल ताम  
 अवरोप्परु जिणिवि परक्कमेण  
 तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं  
 किं दूहवियहि णवजोव्वणेण  
 किं सलिल्लै चंडौलंकिएण  
 किं राणं गुरुपडिकूलएण

मा पत्तलपत्तणचलणु करह ।  
 अवरोप्परु सिंचहु पाणिएण ।  
 करु करि धिवंतं सुरदंति जेव ।  
 एक्केण तुलिज्जइ एक्कु जाम ।  
 गेण्हहु कुलहरसिरि विक्रमेण । 5  
 ता चित्तिउ दोहिं मि सुंदरेहिं ।  
 किं फालिएण वि कडुएं वणेण ।  
 किं दासें पेसणसंकिएण ।  
 सुविणीयसुयणसिरसूलएण ।

घत्ता—जे ण करंति सुहासियइं मंतिहिं भासियाइं णयवयणइं ॥ 10  
 ताहं णरिंदहं रिद्धि कौओ कहिं सीहाँसणछत्तइं रयणइं ॥ १० ॥

## 11

इय चित्तिवि इच्छिउ मंतिमंतु  
 अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं  
 सकसायभाव आसण्णु दुक्कु  
 उद्धाणणु पडु भुयबलिहि तौंइ  
 हेट्ठिल्ल दिट्ठि उघरिल्लियाइ  
 णं हौंति कुगइ पंचमैगईइ

बुद्धाणुगामि णीसेसु संतु ।  
 आयंबकसणसियलोयणेहिं ।  
 दोहिं मि अवलोइउ एक्केमेक्कु ।  
 पेच्छइं रविबिंबु व किरणचंडु ।  
 णिज्जिय दिट्ठि अविहल्लियाइ । 5  
 विसयासा ईव मुणिवरमईइ ।

10. १ MP पत्तलयत्तणु चवलु; B पत्तलयत्तणु चलणु; T पत्तलयत्तणु. २ B करि करु. ३ MBP धिवंतु. ४ MBP अणुहुंजहु मेइणि. ५ T चंडालट्टिएण. ६ MBP कहिं कहिं. ७ MB सिंघासण°; P सिंहासण°.

11. १ MBP आसण्णु दुक्क. २ MBP एक्कमेक्क. ३ MBP उंडु. ४ MBP पेक्खिवि. ५ P पंचम-  
 गयाइ. ६ MBP विव. ७ P °मयाइ.

10. 1 b पत्तलपत्तणचलणु पत्तलपक्षमचालनम्. 8 a चंडालंकिएण चाण्डालस्वीकृतेन. 9 a  
 गुरुपडिकूलएण मन्त्रिपुरोहितप्रतिकूलेन. 10 सुहासियइं सुभाषितानि; णयवयणइं नीतिवचनानि.

11. 1 b बुद्धाणुगामि वृद्धाश्रितम्, णीसेसु संतु सर्वमुत्तमम्. 5 b अविहल्लियाइ अविचलितया  
 स्थिरया.

णं तावसि भग्गी विडरईइ  
णं कमलपंति ससियरर्तईइ

णं सेलभित्ति गंगाणईइ ।  
कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ ।

घत्ता—ठिउ हेड्डामुहुं चक्रवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्टिपहावहिं ॥

यल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संथुउ देवहिं ॥ ११ ॥

10

## 12

मओमत्तमायंगलीलावहारा  
फणिदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा  
सरंतेहिं आलोइयं सच्छणीरं  
महापोमसुत्ताहिमाणिक्कदित्तं  
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं  
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं  
तरंतामरं रोयैरारद्धकीलं  
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं  
ट्टुणंतालिकोलाहलं सारिसिल्लं  
सुयाणेयपक्खिंखदंजक्खिंदसइं

रमावासवच्छत्थलोलंतहारा ।  
पुणो दो वि राया सरंते पइट्ठा ।  
विसालं गहीरं तुसारोहतारं ।  
मरुद्धुर्यैतिंगिच्छिधूलीविलित्तं ।  
मरालीपहालगलीलामरालं ।  
भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं ।  
जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं ।  
समुत्तुंगफेणावलीछण्णतूहं ।  
इणुम्मुक्कपायावलीफुल्लफुल्लं ।  
पमंजंतहत्थिदसौंडाविमइं ।

5

10

घत्ता—तहिं विणिण वि जण ओयरिय पहुणा घित्त जलंजलि भायहु ॥

विर्यलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥ १२ ॥

८ P °रुईइ. ९ M णं कुमुउलि वररवियररुईइ; B णं कुमुउणिव णवरवि°; P णं कुमुउलिव णवरवि°.

12. १ MBP वच्छत्थलोलंवि°. २ M °तिंगिच्छ°; B तिगिच्छि°; P तिगिच्छ°. ३ MB गेयपारद्ध°  
P खेयरारद्ध°; T रोयरं चक्रवालं. ४ MBP °सिंहं. ५ M सारिसिल्लं. ६ MP °पेक्खंत°. ७ MBP णि-  
मज्जंत°. ८ MBP सुंडा°. ९ MBP वियरइ.

7 a विड रईइ विटरत्या. 8 a °तईइ°संतत्या; b कुमुओ लि कुमुदपंक्तिः. 9 पडिभड° बाहुवलिः.

12. 1 b रमा वा स° लक्ष्मीनिवासम्. 2 b सरंते सरोवरमध्ये. 3 b °तारं शुभ्रम्. 7 a रोयर° रुचि-  
रम्. 8 a ससीछा हि सारंग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य; °डेवंत° धावन; b °तूहं तटम्. 9 b इणु-  
म्मुक्क पा या वली° आदित्येन मुक्तानां किरणानां समूहैः.

## 13

वच्छत्थलु पाविवि पुंणु वि वलिय  
 कडियलि धावती सुंदरासु  
 णं मरगयमहिहरि चंदकंति  
 डेवंती दीसइ सलिलधार  
 णं सुरसरि चैवलतरंगफार  
 आरुसिवि पुणु भरहहु विमुक्क  
 पच्छाइउ चउदिसु ताइ राउ  
 कणयइरि व सरयन्भावलीइ  
 सलिले णवसोत्तइं पूरियाइं  
 उग्घोसिउ विजउ महासरेहिं

हेट्टामुह खलमेत्ति व घुंलिय ।  
 दीसइ तारौलि व मंदरासु ।  
 णं णीलंमहीरुहि हंसपंति ।  
 णं कंठभट्टु कंठिय सुतार ।  
 गयणुल्लंत झससुंसुमार । 5  
 णंदातणपं गुरुजलझलक्क ।  
 धवलइ जिणकित्तिइ णं तिलोउ ।  
 णं उययसिहरि ससहररुईइ ।  
 बहुपरियणसयणइं जूरियाइं ।  
 बाहुबलिणराहिवकिंकरेहिं । 10

घत्ता—सीसु धुणंतु मुंयंतु छलु सरवरवारिपवाहें सित्तउ ॥

पडिओसौरियउ पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदे जित्तउ ॥ १३ ॥

## 14

जलभरियसुणासावंसएण  
 वैजियमंडलियकुरंगएण  
 रोसारुणच्छिरंजियदिसेण  
 सीहेण व उद्दयकेसरेण  
 पीलिज्जइ तेरउ उच्छुचाउ  
 फुल्लसर वि कयधम्मेल्लसोह  
 अवियाणियखत्तियधम्मसार  
 किं किंर वयणेण पलोइएण

वड्डियपडिभडबलसंसएण ।  
 परिहच्छे सरतीरंगएण ।  
 सप्पेण व अइआसीविसेण ।  
 णिन्मच्छिउ भाइ णरेसरेण ।  
 रसु पिज्जइ खज्जइ गुलु सुसाउ । 5  
 पइं जेहा कहिं लब्भंति जोह ।  
 महिलाण गोहहो मोट्टियार ।  
 जीवंतहं सलिले ढोइएण ।

13. १ MB पुणु वलिया. २ MBP घुलिया. ३ MBP तारावलि मदरासु. ४ MP महिरुहि, B महीहरि. ५ MBP धवल°. ६ MBPK मुणंतु. ७ MBP °ओसरियउ.

14. १ MBPK तज्जिय°. २ MBP °धम्मिल्ल°. ३ MB किंकरवयणेण.

13. 2 b तारा लि ताराश्रेणी. 3 b °म ही रु हि वृक्षे.

14. 1 b व ड्ढियेत्या दि—वर्धितः प्रतिभटाद्बाहुबलिनः सकाशाद्बले संशयो जयविषये यस्य. 2 b परि-  
 हच्छे वेगेन.

ए एहि देहि भुयँजुज्हु तेम  
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि  
जाणंतु वि देवि<sup>४</sup> णिरत्थु भणहि  
महिलाण गोहुँ हउं सयणमग्गि

अज्जु जि एयंतरु होइ जेम ।  
धणुवाण महारा काइं हसहि । 10  
पियविरहुव्वेइउ किं ण कँणहि ।  
गोहाण गोहु कड्डियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मणियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥

णियधणकर्णमयकयविवस पत्थिव सयल होंति विचरेरा ॥१४ ॥

## 15

तओ भुयभंडाणि भायर लग्ग  
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल  
सुंक्चणकुंडलमंडियगंड  
चिराउस चंदचडावियणाम  
समत्थ सिरीण रईण णिकेय  
असंक खगंक झसंक विपंक  
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति  
पंडंत जि गाहणिवंधणु देंति  
विरुद्ध वि गाह बलेण मुयंति  
अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं  
करंति वि धीर अविद्वियंग  
पयाणभरस्स धरिन्ति ण तिण्ण  
फलोणयपायवपिट्ठु व छुण्ण  
ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिंद  
तओ हयमाणिणिमाणमएण

णरिंदसिरोमणि धट्टपयग्ग ।  
पहाण महाबल विण्णि वि मल्ल ।  
पसारियबाह सरोस पयंड ।  
सुविक्रमवंत णराहिवकाम ।  
महारह भौरह भक्खरतेय । 5  
जसंसुपसाहियपुण्णससंक ।  
धरेप्पिणु देह धडेवि पंडंति ।  
कडीयल्ल कंटु णिरुंभिवि ठंति ।  
मुएप्पिणु उड्ढिवि झंत्ति वलंति ।  
पर्चप्पणकड्डुणवेढणयाइं । 10  
णिरंकुस णाइं मयंध मयंग ।  
विमुक्क रवेण दिसाकरि वुण्ण ।  
णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।  
दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।  
णरामरसंगरलद्धजएण । 15

४ P भुयजुयल्लु. ५ BK देव. ६ MBP कुणइ. ७ M मोहु, but records a p गोहु. ८ P कणयमय°.

15. १ K °धुट्ट° and gloss घृष्ट. २ P सकंचण°. ३ MBP वारहभक्खर°. ४ MBP घडेण.  
५ MBP पंडंति जि गाढ°. ६ MBP णिरुद्ध वि वाहु; K णिरुद्ध वि गाह. ७ MBP जंति. ८ MBP पचंपण°. ९ PK वुण्ण.

10 a जइ णि जिनपुत्रः; भसहि असंबद्धं प्रलपसि.

15. 2 a कु कार णि पृथ्वीनिमित्तम्. 4b णराहिवकाम देवौ. 5 b भक्खर° आदित्यः. 6 b ज सं-  
सु° यशःकिरणाः. 12 b वुण्ण संकुपिताः. 13 b वणेयर मृगाः.

सुरिंदकरीकरथोरभुएण

अणिंदजिणिंदसुणंदसुएण ।

पहुस्स करेण करा परतावि

परेण थिरेण धरेणं कमावि ।

घत्ता—कुंअरे राउ समुद्धरिउ णायणियंविणिसेवियकंदरु ॥

कयइच्छाकोउहलेण किं णं पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

## 16

उद्धरिउ सुपुत्ते णं सुवंसु

कमलायरेण णं रायहंसु ।

णं सुहपरिणामे जीव भव्वु

णं सुयणसमूहे सुकइकव्वु ।

णं मुणिवरणाहे वयविसेसु

णं णरवरिंदणाएण देसु ।

णं गमणवियारे वालभाणु

णं वाए चंपयकुसुमरेणु ।

णं कामुयसत्थे कामचारु

णं सो जि तेण संसारसारु । 5

खयरामरमाणविमद्दणेण

पढमेण पढमजिणणंदणेण ।

अइलुद्धे बहुमैणियधणेण

कुद्धे अवगणियसज्जणेण ।

परिपालियसयलवसुंधरेण

ता चित्तिउ चक्कु सुकंधरेण ।

जमदाढावलयहु अणुहरंतु

उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।

रविर्विणेण व जियविसंमवेउ

ते परियंचिउ वाहुबलिदेउ । 10

थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ

को एहउ किर णियकुलपईउ ।

को सुरयधुत्तिचित्ताणुवट्टि

को एम जिणइ जगि चक्कवट्टि ।

घत्ता—विंभिउ भरहणराहिवइ वाहुवलीसु जगेण पसंसिउ ॥

गयणभाउ सुरमुक्कियहिं पुष्पदंतपंतिहिं णं पहसिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे भरहवाहुबलिजुज्जवण्णं णाम

सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१० P धरेवि. ११ MBP कुमरे. १२ M णाई, but T किं गिरिमंदरो पुरंदरेण नोद्धृतः.

16. १ MBP जीउ. २ MBP गयण°. ३ BP बहुमाणिय°. ४ K °विसमवेरु. ५ K वाहुबलि मेरु. ६ MBP पुष्पयंत°.

16. 4 a ग म ण वि या रे गमनपरिणत्या आकाशेन वा; b वा एं वातेन. 5 b सो जि भरतः; तेण वाहुबलिना. 14 पुष्प दंत पंति हिं पुष्पाणीव दन्तपंक्तयः ताभिः.

## XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥  
करडिंभु व बंभहु तणउं सुउ उच्चाइवि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

### I

णं कमलसरु हिमाहयकायउ  
जं ओहुँल्लियमुहु पहु दिट्टुउ  
चक्रवट्टि णियगोत्तहु सामिउ  
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ  
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती  
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ  
जिह अलि गंधें गउ संघारहु  
भडसामंतमंतिकयभायउ  
तंडुलपसयहु कारणि राणा  
डज्जउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ  
सुहाणिहि भोयभूमि संपयंयर

दवदंडुउ रुक्खु व विच्छायउ ।  
तं बलि भणइ हउं जि णिकिट्टुउ ।  
जेण मैहंत भाइ ओहामिउ । 5  
जं जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।  
रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।  
बंधंवाहुं मि विसु संचारिज्जइ ।  
तिह रज्जेण जीउ तंवारहु ।  
चित्तिजंतउ सव्बु परायउ । 10  
णरइ पडंति काइं अवियाणा ।  
जइ सुहु तो किं ताएं मुक्कउ ।  
कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

घत्ता—दुँल्लंघहु दुक्कियलंछणहो दूँसहदुक्खदुरंतहो ॥

भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो ॥ १ ॥ 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

शशधरविम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्रभीरतामुदधेः ।  
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

GK do not give it.

1. १ P उच्चाविवि. २ P हिमहय° but gloss हिमाहत. ३ P दवदट्टु व. ४ B ओहुल्लिय महं.

५ MBP महंतु. ६ P हा जं जायउ. ७ P बंधवाहुं विसु. ८ B दुक्खगुरुक्कउ. ९ P संपयधर. १० B दुल्लंघिय-  
दुक्किय°. ११ MB दूँसहो.

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव; थ वियउ भूमौ मुक्तः. 4 b वलि वाहुबलिः. 5 b ओहामिउ  
आभिभूतः तिरस्कृतः. 6 b °दुण्णय° अविनयः. 9 b तंवारहु नरकम्.



## 2

कालभुयंगहू को वि ण चुक्कइ  
मइं पइ जेहा बहु वेहाविय  
एयहि अइअहिलासु ण गम्मइ  
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ  
जं माणुसु धम्मेण ण भिज्जइ  
देव मज्झु खमभाउ करेज्जसु  
अप्पउ लच्छिविलासें रंजहि  
णहणिवडियणीलुप्पलविट्ठिहि  
तं णिसुणिवि भरहेसें बुच्चइ

सुयणत्तणु जि एक्कु पर थक्कइ ।  
पुहइइ पुहइपाल वोलाविय ।  
जणणि जणणु भायरु किह हम्मइ ।  
किह हियवउ कलुसें मइलिज्जइ ।  
सो णिक्किट्टु तेण किं किज्जइ । 5  
जं पडिकूलिउ तं म रुसेज्जसु ।  
लइ महि तुहुं जि णराहिव भुंजहि ।  
हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।  
परिहवदूसिउ रज्जु ण रुच्चइ ।

घत्ता—अंतेउरसयणहं परियणहं णीसेसहं मि णियंतहं ॥

10

हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खंविउं खम भूसणु गुणवंतहं ॥ २ ॥

## 3

जइ पइं णियभुएहिं अंदोलिउ  
तो किं चक्कु रयणु मइं रक्खइ  
पइं जित्ती खमा वि खमभावें  
पइं जिह तेयवंतु ण दिवायरु  
पइं दुज्जसकलंकु पक्खालिउ  
पुरिसरयणु तुहुं जगि एक्कल्लउ  
को समत्थु उवसमु पडिवज्जइ  
पइं मुएवि तिहुयाणि को चंगउ

भूमंडलि तडत्ति अप्फालिउ ।  
पुणुं जीयंतु को वि किं पेक्खइ ।  
पइं तांसिउ कंसिउ सपयावें ।  
णउ गंभीरु होइ रयणायरु ।  
णाहिणरिंदवंसु उज्जालिउ । 5  
जेण कयउ महु बलु वेयल्लउ ।  
जगि जसढक्क कासु किर वज्जइ ।  
अणुणु कवणु पच्चक्खु अणंगउ ।

2. १ MBP णिक्किउ काइं तेण किर किज्जइ; K णिक्किट्टु तेण काइं किर किज्जइ; but corrects it to सो णिक्किट्टु तेण किं किज्जइ. २ MBP खमिउ.

3. १ MBP महिमंडलि. २ MBP चक्करयणु. ३ MB पुणु वि जयंतु, PK पुणु वि जिंयंतु. ४ MB तोसिउ. ५ M पोउसिउ, B कोसिउ.

2. 2 a वेहा विय वञ्चिताः; b वो ला विय निष्कासिताः यापिताः. 5 a ण भिज्जइ न अनुरज्यते.

3. 3 a ख मा वि पृथिव्यपि; b क उ सिउ इन्द्रः. 6 b वेय ल्ल उ वैकल्यम्.

अण्णु कवणु जिणपयकयपेसणु

अण्णु कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥

10

पर एकहु णंदाएविसुय तुह ण णिहालमि वीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिब्भच्छिउ  
जं सरवाणिणण णिरु सित्तउ  
तं एवहिं खंम करि महुं बंधव  
आउ जाहु उज्जाउरि पइसहि  
पट्टु णिवंधमि भालि तुहारइ  
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि  
एवहिं इंदियछंदु विवज्जमि  
एवहिं कम्मणिवंधणं भंजमि

जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।

जं जुज्जंतं पेल्लिवि धित्तउ ।

जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।

अज्जु जि तुहुं सिंहासणि बइसहि ।

अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ ।

5

एवहिं परमदिवख पडिवज्जमि ।

एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।

एवहिं जोएं प्राणं विसज्जमि ।

घत्ता—बंधव वणवासहु पट्टुविवि धरणिमोहरसभंतं ॥

मइं एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइं जियंतं ॥ ४ ॥

10

5

सज्जणकरुणं सज्जणु कंपइ  
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ  
मज्जु वि तुज्जु वि कवणु पराहउ  
जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु  
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ  
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि

तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।

तइयहुं पइं वि किं ण परितोलिउ ।

मज्जु वि तुज्जु वि कवणु महाहउं ।

भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।

वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ ।

5

तां जं दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4. १ MBP जं दुव्वयणेहिं. २ M महुं खम करि. ३ MBPK °णिवंधणु. ४ MBP पाण.

5. १ MBP किं ण पइं मि. २ P adds after this: तुहुं जि जेट्टु महु सामि महारउ. ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्रः, उपमां प्रापितो वा.

4. 7 a °छंदु °वशत्वम्.

5. 1 b भरहाणुउ भरतानुजो वाहुबलिः. 4 b भावईत्यादि—भोगस्तेपां विपमिव प्रतिभासते.

तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ  
सुउ संताणि थवेवि महाबलि

मंतिहिं भूमिणाहु संबोहिउ ।  
गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता—वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणु ॥

साकेयहु राउ विसणमणु मंतिहिं मंडुइ आणु ॥ ५ ॥

10

## 6

एत्तहिं गिरिवरि बाहुबलीसैं  
णिट्टाणिट्टउ णट्टाणट्टउ  
अइदट्टोडुरुट्टपाविट्टहिं  
जो णउ दीसइ कुंठियेवायहिं  
वयणुगयगहीरजयकारैं  
रोसु तुज्जु रोसेण व णिग्गउ  
पइं मेळ्ळिवि दोसुं वि दोसायरि  
तुह ज्ञाणग्गिभएण व णट्टउ  
पइं तासिउ वड्डारियसंगउ  
कंदप्पहु वि दप्पु पइं साड्डिउ  
तुहुं णिग्गंथु अणीहियगंथउ  
विज्जा णावइं पइं जम्मंबुहि  
एम देउ गरु भत्तिइ वंदिवि  
णावइ भवतरुमूलुप्पाडणु

अइदूराउ पणावियसीसैं ।  
दिट्टउ भट्टुदुट्टकम्मट्टउ ।  
हेट्टाकोट्टगयहिं दप्पिट्टहिं ।  
मंसासिहिं मज्जवहिं सवायहिं ।  
सो जिणु संथुउ तेण कुमारैं । 5  
राउ ण याणहुं संझहि लग्गउ ।  
थियउ कलंकमिसेण व ससहरि ।  
मोहु मोहणोसैंहिहिं पइट्टउ ।  
लोहु वि सर्व्वलोहभावं गउ ।  
कालहु उप्परि कालु भमाडिउ । 10  
तवणियं थउ दावियपंथउ ।  
उल्लंघिउ तुहुं रावि हरि हरु विहि ।  
मिच्छादुक्किउ गंरहवि णिंदिवि ।  
करिवि र्ससिरवरि चिहुरुप्पाडणु ।

४ MBP मंडइं.

6. १ MBP पणामिय°. २ G कुट्टिय°. ३ P दोसु दोसायरि. ४ MP मोहणोसहहिं. ५ MB सव्वु लोह°. ६ MBT °मत्थउ, T records a p. तेम णिमत्थउ इति पाठे ज्ञानावरणविनाशकः. ७ MB गरहेवि; P गिरिहिं वि. ८ MBP ससिरि वरचिहुरु°.

9 अ हि मा णि उ अभिमानवान्. 10 म डु इ वलात्कारेण.

6. 2 a णि ट्टा णि ट्टउ परमानुष्ठाने स्थितः; ण ट्टा ण ट्टउ नष्टानर्थः. 3 b हेट्टा कोट्ट° अधोमुखम्. 4 a कुंठियेवायहिं प्रमाणबाधितवचनै; b मज्जवहिं मयपै.; सवायहिं क्षपाकैश्चाण्डालैः. 9 b लोहेत्यादि-लोभोऽपि सर्व्वलोहानि सुवर्णादीनि तन्मयत्वं गतः 11 b तवणियं थउ तपासि नियमे च स्थितः. 14 b ससिर-वरि स्वमस्तके.

घत्ता—सर पंच वि घल्लिय वम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्कइं ॥

15

पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहाउ सयणासणु  
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं  
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि  
सीह सरह तणु लग्गण वारइ  
जल्लमलेहिं मि लित्तउ अच्छइ  
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ  
लोकएहिं ण मुज्जइ दोहिं मि  
अइंसण अलाहु रिसिसारउ  
वयसमिदिंदियरुंभणु लोउ वि  
ण्हाणविवज्जणु महिसंसोवणु

मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।  
छुहजणदुव्वयणाइं संयण्हइं ।  
वहवंधणु गयजण वणवसइ वि ।  
मुणि जच्चिण्हि चित्तु ण पेइ ।  
वउसक्कारु किं पि ण समिच्छइ । 5  
विविहातंक रोय अवगण्णइ ।  
सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।  
पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।  
अच्चेलकावासयजोउ वि ।  
दंताधोवणु कयठिदिभोयणु । 10

घत्ता—वाणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जैवइ ॥

परमित्ति करइ णिइ वि जिणइ मणु वेरग्गं भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुच्चरु  
तहिं थिउ एक्कु वरिसु लंबियकरु  
जासु अंगि पयघट्टियसिंगहं  
जासु वच्छि फणिमणि पविराइउ

महि विहरंतु पइट्टु वणंतरु ।  
वेल्लीवलयहिं वेठिउं णं तरु ।  
कंहुविणोउ सरइ सारंगहं ।  
बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7. १ MBP सतण्हइं; T सयण्हइं. २ B जच्चिहे. ३ MBP अइंसणु. ४ M अच्चेलक आवासयजोइ वि; B अच्चेलक पवासयजोउ वि. ५ MP दंताधोयणु; B दंताभोयणु.

8. १ BP सुदुच्चरु. २ MBP णं वेठिउ.

7. 1 a उवा ण हाउ उपानहौ. 2 b सयण्हइं सतृष्णानि. 4 जच्चिण्हि याच्ञायाम्. 5 b वउ-सक्कारु शरीरसंस्कारः. 8 b पण्ण° प्रज्ञा. 9 a लोउ केशलोचः; b °आ वा सय° आवश्यकानि. 10 a °संसो-वणु संस्वपनं शयनम्.

8. 4 b हाराइउ हार इवाचरितम्.

जासु गच्छु कयमयजलणहवणउं  
चरणंगुट्टयणक्खि णिहिज्जइ  
देहि चडंति जासु सुरघरिणिहिं  
तणुकंतीइ जासु हयछाया  
जासु रत्तकंदीसिइ वट्टइ

जायउ करिहिं करडकंडुयणउं । 5  
सरहलु वणयरणरहिं णिसिज्जइ ।  
उल्लूरिय लय णहयरतरुणिहिं ।  
हंस वि हरियवण्ण संजाया ।  
पण्हिय सूयरु घोणंइ घट्टइ ।

घत्ता—आसण्णइं जासु मुणीसरहो तवपहावउवसंतइं ॥

10

करि केसरि णउलइं फणिउलइं सह हिंडंति रमंतइं ॥ ८ ॥

## 9

एकहिं दियहि पउत्तु सपत्तिइ  
थुणइ णराहिउ पयपडियल्लउ  
पइं कामे अकामु पारद्धउ  
पइं बाले अबालगइ जोइय  
पइं णियभुयवलेण हउं जोक्खिउ  
पइं महु दिण्णी पुहइ संहत्थे  
परउवर्यारि धीर दमवंता  
पइं जेहा जगगुरुणा जेहा  
अत्थि रसणफंसणरसलालस  
रोसवंत हियपर विस्संभर

तासु भरहु गउ वंदर्णहत्तिइ ।  
पइं मुएवि जगि को वि ण भल्लउ ।  
पइं राए अराउ कउ णिद्धउ ।  
पइं अपरेण वि परि मइ ढोइय ।  
पइं जि पुणु वि कारुण्णे रक्खिउ । 5  
लुहुं परमेसँरु जगि परमत्थे ।  
महि मुएवि णियमेणुवसंता ।  
एक्कु दोणिण जइ तिहुयणि तेहा ।  
अम्हारिस घरि घरि जि कुमाणुस ।  
पाववहुल परवस अप्पंभर । 10

घत्ता—हा मइं बहुकम्मपरव्वसेण विसयबलाइं ण महियइं ॥

एकहो णियजीवहु कारणिण जीवसयाइं वि वहियइं ॥ ९ ॥

३ MBPK कदासइ. ४ MB घोणे; P घोणिहि. ५ B घुट्टइ.

9. १ BP °भत्तिइ. २ B सरे मइ. ३ M समत्थे, but records a p सहत्थे. ४ MB परमेसर.  
५ MBP °उवर्यार°.

6 b सरहलु शरफलम्, णिसिज्जइ तीक्ष्णीक्रियते. 9 a रत्तकंदीसिहि रत्तकन्दाशया; b पण्हिय पा णिः;  
घोणइ मुखाग्नेण.

9. 1 a सपत्तिइ स्वपदातिना. 2 a °पडियल्लउ पत्ति. 3 a अकामु वैराग्यम्; b अराउ वीत-  
रागता; णिद्धउ स्नेहलः पुष्टो वा. 4 a अबालगइ विद्वद्गतिर्भोक्षगतिः; b परि अर्हत्सिद्धस्वरूपे परमात्मनि. 11  
महियइं मथितानि.

## 10

इंदचंदवंदारयवंदे  
एकहु जीवहु गुण मणि भाविय  
तिणिण वि सल्लइं हियउद्धरियइं  
तिणिण वि डंभै मुक्क संखेवें  
चउगइकम्मणिबंधणरमियँउ  
पंचमहव्वयाइं अविहंडइ  
पंचिदियइं कयाइं णिरत्थइं  
छावाँसयउज्जमु सँविसेसिउ  
छह लेसहं परिणामु वइट्टइं  
सत्त भयाइं हयाइं गहीरें  
अट्ट वि मय णिट्टविय अदुट्टें  
णवविहु बंभचेरु परिपालिउ

तहिं अवसरि बाहुबलिमुणिंदें ।  
राय रोस दोणिण वि उड्ढाविय ।  
तिणिण वि रयणइं लहु संभवियइं ।  
गारव तिणिण विवज्जिय देवें ।  
सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ । 5  
पंचासवदारइं णिच्छड्डइ ।  
पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।  
छजीवहं दयभाउ पयासिउ ।  
छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्टइं ।  
सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें । 10  
अट्ट सिद्धगुण भरिय वरिट्टें ।  
णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

घत्ता—दसँविहु जिणधम्मु विर्यीणियउ एयारह हयजडिमउ ॥

अँवियारहं धीरहं सावयहं बारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

## 11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं  
चोदह गंथमला वि समुज्झिय  
पण्णारह पमाय मेळंतें  
सोलहविह कसाय पसमंतें

तेरहमेय चरित्तइं गणियइं ।  
चोदह भूयगाम सइं बुज्झिय ।  
पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।  
सोलहविहवयणेसु रमंतें ।

10. १ BP राय दोस. २ MBP संभरियइं; K संभवियइं but corrects it to संभरियइं. ३ MBP वेय. ४ P रसियउ. ५ BP णिच्छंडइ. ६ B छावासउ. ७ PK सुविसेसिउ. ८ B उवट्टइ. ९ MBP परिणामु. १० MB दहविहु. ११ MP वियारियउ. १२ M अवि बारह, but records a *p* अवियारहं.

11. १ B चउदह. २ MBP °वयणे सुमरंतें.

10. 1 *a* °वंदे वन्देन. 7 *b* गंथ इं परिग्रहरूपाणि. 9 *a* व इट्ट इं उपदिष्टानि सर्वज्ञेन.

11. 4 *a* सो ल ह वि ह क सा य कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

अवि य असंजमोह सत्तारह	जाणिवि संपराय अट्टारह ।	5
एउणवीस वि णाहज्झयणइं	वीसविहइं असमाहीठाणइं ।	
एक्कवीस सवल वि णिरु णीसहं	सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह ।	
तेवीस वि सुत्तयडइं सुत्तंइं	चउवीस वि जिणतित्थइं होंतइं ।	
पंचवीस भावणउ धरंतें	छन्वीस वि पुहवीउ णियंतें ।	
सत्तवीस जइगुण सुंमरंतें <sup>३</sup> ।		10
अट्टवीस णियचित्ति समप्पिवि	पवैरायारकप्प पवियप्पिवि ।	
एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं	तीस मोहठाणइं बलवंतइं ।	
एक्कतीस मलवाय धुणंतें	जिणुवएस वत्तीस मुणंतें ।	

घत्ता—थिरु सुक्कझाणु आळरियउ घाइचउक्कु पणट्टुउ ॥

उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयांलोउ वि दिट्टुउ ॥ ११ ॥ 15

## 12

तां सुर चल्लिय समउ सुरिंदें	तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें ।	
णरवइ धाइय समउ णरिंदें	उरय समागय सहुं धरणिंदें ।	
तेहिं कसायविसायवियारउ	संथुउ सिरिबाहुबलि भडारउ ।	
रायचक्कु पइं तणु परिगणियउं	कम्मचक्कु झाणाणलि हुणियउं ।	
देवचक्कु तुह अग्गइ धावइ	चक्कु वि चक्किहि रंमणु ण भावइ ।	5
पइं दिट्टइं रिसिं <sup>३</sup> राउ ण वड्डइ	पइं मुएवि को णरयहु कड्डइ ।	
जीवरासि णिब्भरु विहडंती	विहुरंभोहिविवरि णिवडंती ।	
भोयासत्तएण पुहईसरु	दिक्ख लेवि णिज्जँउ वम्मीसरु ।	

३ P दुसज्झ दुवीस. ४ MBP संतइं. ५ P सुअरंतें. ६ MBP add after this: पुणु वि तेण मुणिणा भयवंतें. ७ P एम ण यारकप्प. ८ MBP जिणउवएस. ९ P लोयालोय.

12. १ MBP read the first two lines as: ता सुर चल्लिय समउ सुरिंदें, उरय समागय सहुं धरणिंदें; णरवइ धाइय समउ णरिंदें, तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें. २ MB वयणु; P रयणु; T रमणु रमणीयम्. ३ MBP सिरिराउ. ४ MBP णिरु भवि हिडंती. ५ MBK विवडंती. ६ P सुहईसरु. ७ BPK णिज्जिउ.

6 a एउ ण वी स वि णा ह ज्झ य ण इं उक्कोड-णागे-कुम्म-अड्ढय-रोहिणि<sup>५</sup>-सेस-हंभ-संधीदे । मादंगिमलि-चंदिमा-तावईव-तिकी-तडीया-किजे<sup>१०</sup> । सुंकेय-अवईकके-णदिफँल-उदर्गनाह-(मंडक)-पुंडरिगो<sup>११</sup>णि इत्ये-कोनविगतिनाहज्झयणाइं.

12. 5 b र म णु र म णी य म्.

को किर भण्णइ तुज्झ समाणउ  
; एम थुणंतै बुद्धिसमिद्धे

तुहुं जि मुंडकेवलिहिं पहाणउ ।  
इंदे वेउव्वियउ खणद्धे ।

10

घत्ता— पंडमासणु चवल्लु चमरजुयल्लु एक्कु जि छत्तु मणोहरुं ॥  
दीसइ पण्फुल्लिउ पंडुरउ णं तवसरि इंदीवरु ॥ १२ ॥

13

पयणियजणणमरणविडुमरइ  
देंतु देसजइजइवरचरियइं  
पायपोमपाडियसंकंदणु  
गउ केलासहु पावपरंमुहु  
आसीणउ पसणु पसमियकलि  
भायरणाणंलंभसंतुट्टु  
उज्झाणयरिहि भरहु पइट्टु  
वज्जंतहिं जयवज्जाणिहायहिं  
दरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं  
मंडलियहिं मंडियेणियवक्खहिं

संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं ।  
संबोहंतु भव्वपुंडरियइं ।  
भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु ।  
समवसरणि गियतायहु संमुहु ।  
देउ समाहि बोहि महु भुयबलि । 5  
एत्तहि णरणारीयणदिट्टु ।  
उरपमाणि हरिवीढि वइट्टु ।  
गाइयणारयतुंबुरुगेयहिं ।  
उव्वसिरंभाणट्टुविणोयहिं ।  
अहिसिंचिउ मंगलघडलक्खहिं । 10

घत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं बहुवज्जणइं अणिंदहो ॥

जं णिहिलहं भारहणरवइहिं तं वल्लु भरहणरिंदहो ॥ १३ ॥

14

घणु तत्ततवणीयपहायरु  
वज्जरिसहणारायणिबंधुउ

सासणु जासु चक्कलच्छीहरु ।  
समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धुउ ।

c K भण्णउं and gloss भणामि, ९ MBP हरियासणु धवल्लु.

13. १ MBPT सकंदणु. २ MBP णाणलंभि. ३ MBP ०णारीयणि. ४ MBP खांडियसविक्खहिं.

५ M बहुवज्जणइं; BP बहुविजणइं. ६ M ०णरवरहिं.

14. १ MBP चक्कु. २ MBP ०णिबद्धउ.

13. 1 a विडुमं भयम्; b संसमंतु उपशमयन्. 3 a संकंदणु इन्द्रः. 8 a णिहायहिं समूहैः.  
9 a ०विहोयहिं विभोगैः. 11 लक्खणइं शंखकुलिशादीनि.

14. 1 b चक्कलच्छीहरु चक्रशोभाधरम्.



पुष्पपहावै अतुलु वि लद्धउ  
दोणिण तीस सहसाइं सुदेसहं  
णवइ णव जि दोणामुहसहसइं  
खेडहं सोलह ताइ पउत्तइं  
कलवकणिसभरभारियसीमहुं  
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासहं  
अट्टवीस वणदुग्गइं रिद्धइं  
सहसट्टारह मेच्छणरेसहं

छवैखंडु वि महिमंडलु सिद्धउ ।  
दोसत्तरि पुरवरहं पयासहं ।  
पट्टणाहं अडदाल सहरिसइं । 5  
चोइह संवाहणहं णिरुत्तइं ।  
छणवइ जि कोडिउ वरगामहुं ।  
पंच तहं मि धरियपरिहासहं ।  
छप्पणंतरेदीवइं सिद्धइं ।  
वत्तीस जि मंडलियर्महीसहं । 10

घत्ता—देवीहिं दुतीस वत्तीस पुणु मेच्छणराहिवादिणंणहं ॥

वत्तीससहस अवरुद्धियहं णिरु णिरुवमलायणहं ॥ १४ ॥

## 15

घरि भावाणुविभावपयासइं  
चउरासीलक्खेइं मायंगहं  
तईकोडिउ किंकरहं अहंगहं  
चुल्लिहिं कोडि रसायणरसियहं  
करिसणि णंगरकोडि पयट्टइ  
कालणामु णिहि देइ विचित्तइं  
णिवहु महाकालु वि संजोयइ  
संलिचीहिपमुहइं बहुधण्णइं  
णेसप्पु वि सयणासणभवणइं

णडहं णंडंति दुतीससहासइं ।  
तेत्तीयै जि रहाहं सँरहंगहं ।  
अट्टारह भणियाउ तुरंगहं ।  
सँट्टइं तिण्ण सयइं भाणसियहं । 5  
फलभारेण धरित्ति विसट्टइ ।  
वीणावेणुपडहवाइत्तइं ।  
पंडे देइ णाणाविहवण्णइं ।  
असिमसिकिसिउवयरणइं ढोयइ ।  
वत्थइं पोसु पिंगु आहरणंइं ।

३ MBP छक्खंड. ४ MP पट्टणाइं. ५ MBP संवाहणइं. ६ MBP पचंतहं. ७ M मेच्छ°. ८ P °सहासहं.  
९ M मेच्छ°. १० MBP °कण्णहं. ११ MP अवरुद्धियहं.

15. १ M णंडंतिउ, B णंडंतिहुं. २ MBP लक्खहं. ३ MBP तेत्तियइं. ४ MBP सारंगहं. ५  
M तईयकोडिउ. ६ B सट्टइं. ७ MBP लंगल°. ८ M धरत्ति°. ९ MBP omit this foot. १० MBP  
omit this foot. ११ MBP add after this: सव्वइं धण्णइं सव्वरसोहइं, पंडु वि णिहि वि देइ अविरोहइं.

8 a कुकुच्छिणिवासह रत्तोत्पत्तिस्थानानाम्.

15. 4 b भाणसियहं रसवतीकारपुरुषाणाम्. 5 b विसट्टइ स्फुटति. 9 a णेसप्पु नैसपों तिधिः.

अत्थइं सत्थइं मीणवु दैतउ  
सव्वरयणणिहि सव्वइं रयणइं

संखु ण थाइ सुवण्णु वहंतउ । 10  
देइ सिरीवहु उरयलि णयणइं ।

घत्ता—असि चक्कु दंड छत्तु वि धवलु पहरणसालहि जायइं ॥

कागणि मणि चम्मु वि सिरिभवेणे सइं णरणाहहु आयइं ॥ १५ ॥

16

रुण्णयमहिहरि सोहियवयणहं  
पच्छइ पुणु संपत्तइं णरवइ  
चत्तारि वि हूयइं साकेयइ  
णव णिहि ते वि तर्हि जि संभूया  
णिच्चमेव तणुरक्खालुद्धहं  
विविहंघरइं कणयधरणियलइं  
विविहइं छत्तइं मुत्तादामइं  
विविहइं वत्थइं कयवउसोक्खइं  
को सो वंभु कासु सुकइत्तणु  
णारी रयणत्तणविक्खायइ  
रूवे सोहग्गे लायण्णे  
अब्भुयभूयइ जणमणमद्दइ

संभउ हरिकरिणारीरयणहं ।  
धरवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ ।  
धरसिरधयवारियरवितेयइ ।  
संपाइयइच्छियहलरूया ।  
सोलहसहस सुरहं गणवद्धहं । 5  
विविहासणइं विविहसयणयलइं ।  
विविहइं आहरणाइं सकामइं ।  
विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं ।  
को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु ।  
खेयररायवंससंजायइ । 10  
णेहे रइयसुरयणेउण्णे ।  
सुहुं भुंजंतउ समउ सुहइइ ।

घत्ता—सिरिभवेणीवरघणथणजुयंलसिहरुण्णेहियउरयलु ॥

थिउ उज्झहि भरहणराहिवइ पुण्णंदंततेउज्जलु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुण्णयंतविरइए

महाभच्चभरहाणुमणिणए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम

अद्वारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ, १३ M °भुवणे.

16. १ MB घर घर. २ MBP विविहइं घरइं. ३ P मोत्तिय°. ४ MP संकामइ. ५ MB कय-  
उवसोक्खइं. ६ M सइ. ७ MBP रयणत्तणि. ८ M समुद्दइ. ९ MB °रवणी°. १० M °जुयलु. ११ MB  
पुण्णयंत°; P पुण्णयंतु.

13 सि रि भ वे णे भाण्डागारे.

16. 2 b घरवइ भाण्डागारिकः; धवइ स्थपतिः. 7 b सका म इं समीप्सितानि चित्तानुरागजनकानि  
वा. 8 a कयवउसोक्खइं कृतवपुःसौख्यानि.

## XIX

चित्तइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥

जइ णियमियाचित्तहं एउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ धुवकं ॥

1

एकहिं दिणि पर्यणावियणिवइ  
किं छज्जइ विणु चंदें गयणु  
किं छज्जइ णाणु णिरुवसमउं  
किं छज्जइ तण्यविरहिउ कुलु  
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं  
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं  
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु  
किं छज्जइ परवसजीव जणु

वसुहाहिवु णियमणि चित्तवइ ।  
किं छज्जइ छिण्णणासु वयणु ।  
किं छज्जइ रज्जु अविक्कमउं । 5  
किं छज्जइ पिक्कउं कडुयफलु ।  
किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।  
किं छज्जइ अविणियरूसणउं ।  
किं छज्जइ सलिलविरहिउ घणु ।  
किं छज्जइ तिट्टालुयदविणु । 10

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु एहउं बुहयणु पेच्छइ ॥

मणुयहु मलबंधणु तं संचिउं धणु मुंयहो पउ वि णउ गच्छइ ॥ १ ॥

2

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं  
जवणालतंबसित्थइं खरइं  
एसीरसु दोणिण कुलत्थकर्णं

तृयविंदु ण माणिउ घणथणउं ।  
ताइं वि सीसक्कभारधरइं ।  
अच्छउ कंजिउ धाडिवि सैयण ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

इयामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।

भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

1. १ MBP °णामिय°. २ MBP वसुहाहिवु. ३ M किं ण तासु. ४ MBP णिविक्कमउं. ५ MBP तणएं रहिउ. ६ MBP कडुयउं पिक्कफलु. ७ MBP विणियरूसणउं. ८ MBP सलिलें रहिउ. ९ MBPK °जीवि. १० B सन्धियधणु. ११ P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ.

2. १ MBP तियविंदु. २ MB जवणालवंत. ३ M एसीरसु. ४ MBP °कणु. ५ MBP सयणु.

1. 7 b अडयण° पुंश्वली. 12 पउ वि पदमात्तमपि.

2. 1 b तृयविंदु स्त्रीवृन्दम्. 2 b सीसक्क° कूकसं तुषम्. 3 a एसीरसु अलसीतैलम्.



तं धणु जं भुत्तउं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णउं विहलयाणि ।

घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय गुंणिहिं चित्तु हयदुरियउ ॥

गुंणि ते हउं मण्णमि पुणु पुणु वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियउ ॥ ३ ॥ 10

## 4

इय चिंतिवि राएं दविणगइ

ते आइय संचियधम्मधण

तर्गुणपरिव्वसुपयासिरयं

तरुपल्लवपिहियं पंगणयं

चप्पंति ण ते विरया गिहिणो

कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय

णादिण्णउं कहिं वि समिच्छियउं

घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ

दिसिविदिसागमणमाणकरणु

विरमणु अणत्थदंडासियउं

हक्काराविय णाणा णिवइ ।

जे जोयकिरणगणसुद्धमण ।

सज्जीयवीयणित्तं कुरयं ।

णं वणसिरिदिण्णांलिं गणयं ।

परिपालियसावयवयविहिणो । 5

परंताविरि अलियवायविरयं ।

णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियउं ।

रयणीभोयणविरईसहिउ ।

भोगोवभोर्यसंखाधरणु ।

भावियउं जेहिं जिणभासियउं । 10

घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिग्गहु कामकोहपरिहरणं ॥

किउ जेहिं पसंत्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासणमरणं ॥ ४ ॥

## 5

ते भरहें विष्प परिट्ठविय

उववीयहु केरउ चिंधधरु

कर मउलिवि सइं सिरिण णविय ।

दंसणहरि घल्लिउ एकु सरु ।

९ MBP गुणहिं १० M हउ गुण ते मण्णमि; B गुण हउं ते मण्णमि. P गुणि हउं ते मण्णमि.

4. १ MB ते गुण°. २ MBP परताविर°; K °ताविरि but corrects it to ताविर. ३ MP add after this: परधणु परवत्थु दुगुच्छियउ. ४ MBP add after this. दिण्णउं णियजोगु (P °जोगु) पडिच्छियउं, कुलवंतु विवाहिउ वंछियउ. ५ B °गमणकरण. ६ MBP °भोग°. ७ MBP समत्थहिं.

8 b विहल° दुःखितः. 9 गुणणय गुणेण नता.

4. 2 b °जोय° चन्द्रः. 3 b °णित्तं कुरय निर्गताङ्कुरम्. 6 a त सं त हुं वस्तानाम्; तसहु त्रसजीवानाम्.

5. 2 a उ व वी य हु कार्पाससूतस्य, यज्ञोपवीतस्येत्यर्थः.

वयवंति णिरूविय दोण्णि सर  
पोसहवंतइ चत्तारि सर  
अणिसाभोयणि उड्डुमाण सर  
आरंभविवज्जिइ अट्ट सर  
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर  
उद्धिड्डुचायकारिहि विहिय  
तँवु बंभ जेण घोसंति जए

सामाइयड्ढि पुणु तिण्णि सर ।  
सच्चित्तविरत्तइ पंच सर ।  
दढवंभचेरंधरि सत्त सर । 5  
अपरिग्गहि कय णवसुत्त सर ।  
एयारह सर हयमयणसर ।  
ए दियवर राए सुहुं णिहियै ।  
बंभणकुलु संठिउ तेण वए ।

घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीईवसु रिसहँ खत्तु पवँत्तिउ ॥

10

जिणपुज्जायारउ धम्मपियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥ ५ ॥

## 6

वणि वाणिज्जारउ जाणियउं  
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ  
सो सोत्तिउ जो ण दुडु भणइ  
सो सोत्तिउ जो हियैण सुइ  
सो सोत्तिउ जो ण मासु गसइ  
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ  
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ  
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ  
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ

किसियरु हलधारउ भाणियउ ।  
सो सोत्तिउ जो सुंतच्चु कहइ ।  
सो सोत्तिउ जो णउ पसु हणइ ।  
सो सोत्तिउ जो परंमत्थरुइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ । 5  
सो सोत्तिउ जो सुतवँ तवइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ ।  
सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ ।  
पण्णासतिकिरियहिं भूसियउ ।

5. १ MB उड्डुमाण. २ P °चेरु धरि. ३ MBP संणिहिय. ४ MBP तउ बंभु. ५ MBP पवत्ति-  
यउ. ६ MBPK धम्मवियारउ.

6. १ M सुतच्च. २ P पसु णउ. ३ MBP हियवयणु सुणइ. ४ M परमत्थ सुणइ; P परमत्थ  
सुणइ. ५ B मासु ण.

9 a तवुवंभ तपो द्वादशविधं व्रतानुष्ठानं वा ब्रह्म परमात्मस्वरूपम्; घोसंति प्रतिपादयन्ति; b व ए व्रते पदे वा.

6. 9 b पण्णा स ति कि रि य हिं तिपच्चाशता क्रियाभिः, ताश्च सम्यक्त्वमेकम्; अणुव्रतानि पञ्च; गुण-  
व्रतानि त्रीणि; शिक्षाव्रतानि चत्वारि; अनस्तमित-संयम-जिनपूजा-ध्यानानि चत्वारि; चत्वारि दानानि; षड्विधं  
ब्राह्मं तपः; षड्विधं प्रायश्चित्तम्; चतुर्विधो विनयः; नवविधं वैयावृत्यम्; पञ्चविधः स्वाध्यायः; द्विविधो व्युत्सर्गः;  
इति त्रिपच्चाशत् क्रियाः.

घत्ता—जो तिलकप्पासइं दँव्वविसेसइं हुणिवि देव गह पीणइ ॥

10

पसु जीव ण मारइ मारय वारइ परु अप्पु वि समु जाणइ ॥ ६ ॥

7

सो सोत्तिउ जाणसु एक्कु जिह

लक्खाइं दिएसहं तेण तिह ।

वण्णासमकोडिचडावियइं

गुणगणणाभेएं भावियइं ।

दिण्णाइं ताहं सुद्धासयइं

भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं ।

दिण्णाइं ताहं परतीरयइं

सियसुहुमइं सिचयइं णीरियइं ।

दिण्णाइं ताहं मणिराइयइं

कडिसुत्तकडयमउडाइयइं ।

5

दिण्णाइं ताहं मणमोहणइं

घडपूरणदुद्धइं गोहणइं ।

दिण्णाइं ताहं देसंतरइं

हयगयरहछत्तइं पंडुरइं ।

दिण्णाइं ताहं जियससहरइं

धणकणभरियइं विविहइं घरइं ।

दिण्णाइं ताहं करभरधरइं

सासणलिहियग्गहारपुरइं ।

आरामगामसीमइं सरइं

दिण्णाइं ताहं णयरायरइं ।

10

घत्ता—महि कसणरवणी धँवलि वि दिण्णी विप्पहं जिणतणुजाएं ॥

तिह जिह णउ खिज्जइ अँज्जि वि दिज्जइ णिहिलें णिवइणिहाएं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं दिणि सुँत्तें सयणहरे

णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।

दिट्ठी<sup>१</sup> दुक्किय सिविणावलिय

आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।

सुपहायकालि गँउं सज्जियउ

केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।

संथुउ परमेसरु परमपरु

जिण तुहुं चिंतामणि अमरतरु ।

तुहुं सँरसु रसायणु अमयमउ

तुहुं मयरकेउ रँणि लद्धजउ ।

5

MBP दन्भविसेसइ.

7. १ B णीरियइं. २ MBPK धवल वि. ३ MBP अज्ज.

8. १ MBP सुत्तइ. २ MBP दिट्ठिय. ३ MP गमु. ४ MBP सुरसु. ५ MB रण<sup>०</sup>.

1 मारय मारकान्.

7. 1 b दि एसहं द्विजेशानाम्. 2 a °कोडि° परमप्रकर्षम्. 5 a मणिराइयइं रत्नजडितानि.  
0 b °आयर° आकराः. 11 कसणरवणी कर्षणेन रमणीया, कृष्णा रमणीया च. 12 °णिहाएं° समूहेन.

तुहं कामधेणु अक्खीणणिहि  
 तुहं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि  
 तुह णामें णासइ मत्तकरि  
 तुह णामें हुयवहु णउ डहइ  
 तुह णामें संतोसियखलउ  
 तुह णामें सारियरि तरइ णरु  
 तुह णामें केवलकिरणरवि

तुहं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।  
 तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।  
 कैंउं देंतु वि थक्कइ णरहु हरि ।  
 परबलु गयपहरणु भउ वहइ ।  
 तुट्टेवि जंति पयसंखलउ । 10  
 ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।  
 णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुं वणभवणुक्किट्टइ ॥  
 पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्टइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुंच्छइ भरहवइ  
 होहिंति अहिंसपवित्तियर  
 किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि  
 फलु काइं भडारा वज्जरहि  
 परमेसर णाहिणरिंदसुउ  
 पुण्णेण केण हउं चक्कवइ  
 कंपावियसिहरिणियंबथलि  
 उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु  
 पुण्णेण केण सोमप्पहहो  
 पुण्णेण केण पालियविणय

मइं दियवर णिम्मिय परमजइ ।  
 कालेण किं णं भणु तित्थयर ।  
 णिसि दिट्टहिं मइं सिविणावलिहिं ।  
 संदेहु महारउ अवहरहि ।  
 पुण्णेण केण तुंहुं अरुहु हुउ । 5  
 जायउ भारहभूयलविजइ ।  
 पुण्णेण केण बाहुबलि बलि ।  
 पुण्णेण केण सेयंसंपहु ।  
 हूयउ संभवु सोमप्पहहो ।  
 संभूया सयल वि तुह तणयं । 10

६ M कमु देंतु; B कउ देंतउ; P कमु देंतउ. ७ BP °संकलउ. ८ P सायरु. ९ MB तिहुयणु भुयणुक्किट्टइ.  
 9. १ P पुंछइ. २ MB °पवात्तियर°. ३ MBP णु. ४ P अरहंतु हुउ. ५ MB °भूवल°; P °भू-  
 अल°. ६ MBP केण हुउ बाहुबलि. ७ MBP सेयंसु. ८ MBP संभउ. ९ MBPK add after this  
 मइं पइं जेहा होहिंति कइ ( P पइं मइं ), कइ हलहर हरि पडिसत्तु ( B पत्तिसत्तु ) कइ; MBP add  
 further: तवभट्टकामिणिहिं बद्धमइ ( P तवभट्ट य कामिणिवद्धरइ ), कइ होसहिं रुइ रउइमइ; कासु वि किर  
 होसइ कवण गइ, भो मयणकरिंदमयाहिवइ; एउ ( P इहु ) सयलु वि अक्खहि परम जइ.

8. 10 a सं तो सि य ख ल इं संतोषिताः खलाः याभिः; b °सं ख ल उ शृंखलाः. 18 ति भुव ण भव-  
 णु कि ट्ट इ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9. 4 b अ व ह र हि अपनय.



घत्ता—तां णवजलहरझुणि कहइ महामुणि सुर्णसु पुत्त जं पुच्छिउ ॥

पइं किउ दियसासणु णयंविद्धंसणु काले होसइ कुंच्छिउ ॥ ९ ॥

## 10

हा पुत्त काइं किउ पावमल्लु  
रमिहिंति जंणिण कीलइ सईरु  
लेहिंति सुयत्थिणि परघरिणि  
णउ दूसिहिंति पिज्जंतु महु  
कहिहिंति धम्मो जो जं करइ  
सूणागारहं वेसाउलहं  
भाणिहिंति कुलकमु पुण्णं जहिं  
भणिहिंति गाइ देवय जलणु  
वणसई देवय जल देवयइं  
मासहं मज्जइ परयारइं वि  
एयइं षयइं देविहि कियइं

मारोप्पिणु मय खाहिंति पल्लु ।  
पिविहिंति सोमवाणउं मडुरु ।  
अण्णहु देहिंति वि णियतरुणि ।  
ण वि दूसिहिंति नृवि प्राणिवहु ।  
सो तेण जि कम्मं उत्तरइ । 5  
अवरु वि पावंधं राउलहं ।  
किं वण्णमि दुक्किउ पुत्त तहिं ।  
भाणिहिंति पुहइ देवय पवणु ।  
भाणिहिंति णत्तंभोयणवयइं ।  
लिहिहिंति पुराणइं अवरइं वि । 10  
लइ पोसिहिंति जड दुक्कियइं ।

घत्ता—सइं सकुलहु वंछिवि अवरु दुगुंछिवि जगि धीवरिखरिपुत्तहं ॥

देहिंति पहुत्तणु परमरिसित्तणु कयकवडागमधुत्तहं ॥ १० ॥

## 11

एहा वंभण होहिंति सुय  
पुणु भणइ भडारउ णउ रहमि  
पंचाणण जे तेवीस पइं  
वज्जियकुसमयकुसंगमलिण

किं कियउ वप्प पइं पीणभुय ।  
सिविणोलिफल्लु वि णिसुणहि कहमि ।  
दिट्ठा ते जिणवर मुणिय मइं ।  
सुपसाहियधम्मतित्थपुलिण ।

- १० PK तो. ११ P णिसुणि. १२ MB पुच्छियउ; P पुंछिउ. १३ P णिय°. १४ MB कुच्छियउ.  
10. १ MB जणु; P जंणु. २ MBP सुइर. ३ MBP णिव. ४ MBP पाणिवहु. ५ PK पुणु.  
६ MBP वणसय. ७ M णित्त°. ८ MBP एयइं वेयइं.  
11. १ MBP सिबिणयफल्लु तुहुं णिसुणहि.

10. 2 a ज णि यज्ञे, 3 a सु थ त्थि णि सुतार्थिनी. 4 b नृ वि नृपे. 10 a परयारइं, परदाराः.  
12 धी व रि ख रि पु त्त हं धीवरीपुत्रो व्यासः गर्दभीजनितो दुर्वासाः.

जो दिट्टु सजंबुउ णंदु मउ  
 सो अंतमिळु जिणु जोइयउ  
 जे दिट्टा हरि करि भारहय  
 ते अंतिमरिसि भवपंकहरु  
 जं दिट्टुउ जिण्णपण्णपडलु  
 जे दिट्टा दुरयारूढ कइ  
 जं दिट्टु उल्लयहं हुयउ रणु  
 जं दिट्टुउ भूयहं णच्चणउं

केसरिकिसोरं चउवीसमउ । 5  
 कामुयकुलिगिपच्छाइयउ ।  
 भजंतपट्टि कह कहं व गय ।  
 धरिहिति णं ते चारित्तभरु ।  
 तं णीरसु होही धरणियलु ।  
 ते णिव होहिति कुकुल कुमइ । 10  
 तं होसइ बहुणयलीणु जणु ।  
 करिही तं कुसुरसमच्चणउं ।

घत्ता—जं मज्झि असुंदरु पइं सुक्खंउं सरु दिट्टुउ जलु तीरंतंहिं ॥

तं धम्मु महारउ उवसमगारउ थाही महिपच्चंतहिं ॥ ११ ॥

## 12

जं दिट्टुइं रयणइं रयवहइं  
 पंचमजुगि रिद्धिविज्जियइं  
 जं दिट्टा पुंजिय पइं कविल  
 जे गुरु आसत्ता तरुणियणे  
 सिविणंतरि णिवकुलकुमुयससि  
 जे तरुण वसह कलंकंठञ्जुणि  
 जिह जिह जराइ तणु परिणविही  
 दुस्समकालइ तिट्टाइ सहुं

तं मुणिललाइं मलसंगहइं ।  
 होहिति सइंदियविज्जियइं ।  
 तं जे विड सुहलंपड कुडिल ।  
 पुज्जारुह ते होहिति जेणे ।  
 पइं अवलोइय भो रायरिसि । 5  
 ते तरुणमणुय होहिति मुणि ।  
 तिह तिह धणास गुंरुवी हविही ।  
 मरिहिति थेर धुंवु वयणुं महुं ।

घत्ता—जं ससिपरिवेसउ दिट्टु दुरासउ तं कलिकालि ससीसहं ॥

णउ णिव मणपज्जउ अवहिदुइज्जउ होही णाणु रिसीसहं ॥ १२ ॥ 10

१ MBP णंदुमउ, ३ MBP अंतिमिळु, ४ P °पुट्टि, ५ P कह वि, ६ MBP अंतिमि, ७ MBP ण जिणचारित्त°, ८ MBP जुण्ण, ९ P ता, १० MBP सुक्खंउं, ११ P तीरंतरहिं.

12. १ K पंचमि जुगि, २ MBP °णिज्जियइं, ३ MBP पइं पुज्जिय, ४ MBP सुहड लंपड, ५ MB जिणे, ६ P कलयंठ°, ७ MBP गरुवी, ८ MBP धुउ, ९ MB वयण,

11. 5 a सजंबुउ जेम्बूकसहितः, 10 a कंइ कपयः, 12 b कु सु र° कुत्सितदेवाः.

12. 1 a रयवहइं रजआच्छादितानि मलिनानि, 9 दुरासउ दुष्टफलदायी; स सी स हं शिव्यसहितानाम्.

## 13

जं दिट्टउ धवलहं तणउ गणु  
 संघाडण भमिहिति जइ  
 जं पइं सिविणुल्लइ तक्कियउं  
 जं मेहहिं जगु अंधारियउ  
 जो दिट्टउ सुक्खउ ढंखतरु  
 पुत्तइं उल्लंघियपिउवयइं  
 किउ काइं वि णउ सहिहिति परे  
 होहिति मित्त कँडियवइर  
 होहिति विडँवि णिप्फल विरस

तं चरिही णउ एक्कु जि सर्वणु ।  
 जाणेप्पिणु दुस्समकालगइ ।  
 जं दिणयरमंडलु ढंकियउं ।  
 तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।  
 सो णरणारिहिं दुचरित्तँभरु ।  
 होहिति कलत्तइं पररयइं ।  
 काणीण दीण खल घरि जि घरे ।  
 पिप्पलबबूलपायँव खयर ।  
 होहिति मुणि वि बद्धामरिस ।

घत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ वयणु समप्पइ भरहि भुवँणपंकयरवि ॥

तिह तिह तमु पहरइ दसदिसु पसरइ कुंदपुष्पदंतच्छवि ॥ १३ ॥ 10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे भरहसिविणयसंसयाउच्छणं  
 णाम एक्कुणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १९ ॥

॥ संधि ॥ १९ ॥

13. १ MBP समणु. २ MBT ढंक°. ३ P दुचरित्तु. ४ MBPT वट्टिय°. ५ MB°पायर.  
 ६ MBP विडव. ७ MB भुवणु. ८ P दसदिसि. ९ MBP भरहसंसयाउच्छणं.

13. 1 b च रि ही चरिष्यति. 5 a ढं ख तरु पत्रपुष्पफलरहितो वृक्षः. 8 a क ढ्टियवइर गृहीतवैराः.  
 11 कु द पुष्प दं त च्छ वि कुन्दपुष्पवत् शुभ्रा दन्ताना छविदीप्तिः.

## XX

रिसहँ भरहहु भासियहं चिरु एवहिं हउं गुज्जु ण रक्खमि ॥  
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणहं अक्खमि ॥ ध्रुवकं ॥

### I

तहिं तइया देवें वुत्तु एम  
तेल्लोक्के देसु पुरु रज्जु तित्थु  
अट्ट वि पारंभियपुण्णठाणि  
लोलंति पलोइज्जंति जेत्यु  
सो केण वि किउं ण कया वि धरिउ  
चल्लु णिच्चल्लु सो ससहावघडिउ  
बालिस कहंति जडयणहं हेउ  
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं  
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु  
किं गयणि होइ पंकयपवित्ति

णिसुणहि णंदण हो मणुयदेव ।  
तँवु दाणु गईहल्लु सुँहपसत्थु ।  
साहेवा होंति महापुराणि । 5  
दव्वइं तँ लोउ भणंति एत्थु ।  
जीवाजीवहं णिक्खुब्भु भरिउ ।  
आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।  
देवें सिट्ठारें किर्यउ लोउ ।  
महिमारुयवेसाणरवणाइं । 10  
णीरुवहु होइ णिरुं वि वत्थु ।  
दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

फणिनि विमुह्यतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-  
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुजितम् ।  
मदमुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव पिवतीव निमीलयतीव खड्गणे ॥

P reads खण्डणे for खड्गणे. GK do not give it.

1. १ P भासियए. २ MBP तेलोक्क. ३ MBP तवदाणगईहल्लु. ४ MP सहु. ५ MBP तं लोउ.  
६ P तेत्थु. ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ. ८ MB णिक्खुत्तु; P णिखुत्तु; T णिक्खुब्भं निरंतरम्. ९ K  
कयउ. १० MBP ण रुवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वल्लं पि न भवति.

1. 1 चिरु पूर्वम्. 3 a तहिं समवसरणे. 5 a-b त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या  
भवन्ति. 6 b तँ तेन कारणेन. 7 b णिक्खुब्भु निरन्तरम्. 8 a चल्लु णिच्चल्लु चलो जीवः पुद्गलापेक्षया;  
निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया. 9 a बालिस अज्ञाः; हेउ कर्ता; b सिट्ठारें विघात्रा. 10 b वणाइं जलानि.  
11 b णिरुवि अपि निश्चयेन.

घम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु	कहिं लब्भइ इच्छापसरु तासु ।
णिकिरियहु कहिं किरियाविसेसु	णिकलुसहु होइ ण हरिसु रोसु ।
विणु तिट्ठाततें णउ फलंति	किह करणहरणबुद्धीउ होंति । 15
विणु छत्तें किं सांवंडइ छाहि	सिवि लंगी किं कत्तारवाहि ।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयरु करउ कुंभु तं महु मणि भावइ ॥

सिंहुं अप्पणुं जगु अप्पउं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ ॥ १ ॥

## 2

विणु घडयारेण सरूव लेइ	मिपिंडउ जइ सइं कलसु होइ ।
तो एक्कु कम्मु कत्तारु भणमि	णं तो पुणु भेयविभिणु गणमि ।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमित्तु	तो तासु कवणु तंगुणविचित्तु ।
जइ णिच्चु ण तो परिणामरिद्धि	णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि ।
विरप्पिणु भंजइ भुवणकोसु	जइ एही दीसइ कील तासु । 5
जयं सयल वि पसु णिकिरिय करइ	संघारसमइ ससरीरि धरइ ।
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु	पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु ।
जइ लिप्पइ णउ दुरिएण सिधु	तो किं अर्यसिरलुंचणि असुधु ।
जइ पभणह ण सिंहुं सिवंसु चंड	तो णाउं होइ किं हेमखंड ।
पुरदाह वइरिवह रुहिरपाणु	णच्चेवउ किं संतहु विहाणु । 10

११ MBP तिट्ठाततें; T तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्रम्. १२ MBKT सावडइ; P छावडइ. १३ P लगउ. १४ MBP सिउ. १५ P अप्पाणु.

2. १ K विण. २ MB घडयारण. ३ MBP सरूउ. ४ MBP मिइपिंडउ. ६ MT तंगुण विचित्तु. ६ MBP भणइ. ७ M जइ जयल, K जइ सयल. ८ P अयसिरि लुंचणि. ९ MBP सिउ.

14 a णि क्कि रियहु निर्व्यापारस्य; कि रिया वि सेसु कार्योत्पत्तिविशेषः; णि कलु सहु कर्मरहितस्य. 15 a तिट्ठेत्यादि-तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्रं कारणमौषधं वा तेन विना कथं करणहरणादिबुद्ध्यो भवन्ति, तथा नैवेताः फलन्ति. 16 a सां व ड इ संपद्यते; b कत्तारवा हि कर्तृत्वव्याधिः 17 भावइ घटते. 18 सावइ शापं ददाति.

2. 3 b तंगुण वि चित्तु कर्तृत्वगुणविचित्रम्. 5 b कील क्रीडा. 6 a पसु कर्मबद्धा जीवाः सर्वे पशवः कथ्यन्ते; b ससरीरि धरइ स्वस्वरूपतां नयति. 7 a पासु कर्मबन्धनं गले पाशो वा. 8 b अयसिरं ब्राह्मणस्य शिरः; असुद्धु ब्रह्महत्यायुक्तः. 9 a सिवंसु शिवकला; b णाउं सीसकं नागम्; हेमखंडु सुवर्णखण्डम्.

परियाणितुं होंतउ जइ हरेण  
जइ वच्छलेण जि कियउ लोउ

तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।  
तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिण्णाहेण ण दिट्ठीइं मिच्छाविसविंदुयणीसंदइ ॥

किं वण्णियइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥ २ ॥

## 3

अण्णाणु ण याणइ सइं जि मग्गु  
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ  
को जाणइ केही हरहु चेट्ट  
कम्माणुय सा जइ भणसि एम  
माहेसर किं गोवइ थवंति  
अणिबद्धउं महु णरजम्मयारि  
जिह सिवु तिह बंभुं ण विण्हु अत्थि  
विणु णरसंताणें मणुउ केम  
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि  
वेत्तासणझल्लरिमुँरयरुवि  
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ  
एक्केण एक्कु वेढियंउ ताम

णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।  
तो किं कयायइ तवभावणाइ ।  
होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ट ।  
ता पलइ सुयण संहरइ केम ।  
जड मत्त पिसल्लय किं चवंति । 5  
पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।  
विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।  
अणिहणु अणाइ जग्गु सिद्धु एम ।  
अहमज्झउड्डुमुँवणग्गुकुयलि ।  
चोईहकेयाउच्छेहभावि । 10  
गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।  
छेईल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणणवमेहलइ मंदरमउडें मंडिउं भावइ ॥

जंवूदीउ पसिद्धुं जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३ ॥

१० MBP जिण्णाहेण वि. ११ P दिट्ठियइं.

3. १ MBP कयाइ. २ MBP होही. ३ MBPT कम्माणुवसा. ४ MPK अणिबद्धइं. ५ MBP बंभणु विण्हु. ७ MBP भुयणंतकुयलि. ७ M मरवरुवि; BP मुरवरुवि. ८ BP चउदह°. ९ MB वि ठियउ. १० MBP छेयल्लु. ११ MBP लवणंबुहि°. १२ MP मंदिर°. १३ P वेढिउ. १४ MBP पसत्थु.

12 b वि हो उ विशिष्टो भोगः. 13 मिच्छे त्या दि—मिथ्यात्वजलविन्दूनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु.

3. 1 b णिव हे भरत, अथवा, हे श्रेणिक. 2 b कयायइ कृतया. 3 b णिट्ठवियइट्ट निष्ठापितं च्वस्तं इष्टं प्राणिनां वाञ्छितं यथा. 4 a कम्माणुय कर्मानुसारिणी. 5 a माहेसर शैवाः; गोवइ शंकरः. 9 a सत्तेक्के त्या दि—यथासंख्यं सप्तैकपञ्चैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णै; b कुयलि भूतले. 10 b केयां रज्जवः; उच्छेहभावि दीर्घत्वम्.

## 4

दहखेत्तभाय जहिं रिद्धिवंत  
दढकुलिसकवांडचियपहाइं  
सप्पुरिसचिचु जिह तिह विसालु  
फलिहमयकुसुममंजरिसुसेउ  
जंबूतरु जंबूदेवठाणु  
णं जगलच्छिहि भूसणवियार  
णक्खत्तहं संख ण मुणि भणंति  
तहिं दीवि भेरुपच्छिमदिसाहि  
घत्ता—दक्खिणतीरि रम्मि विउले णीलइरिहि उत्तरदिशि मंडिवि ॥

छव्वरिसधारि वरसाणुमंत ।  
चउदारइं चोइह णइमुहाइं ।  
परिवड्डियमरगयरयणडालु ।  
पवरिंदणीलमयैहलणिकेउ ।  
जसु देवैहिं दिट्ठउ धुवुं णिवाणु । 5  
जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।  
अम्हारिस जड कइ किं मुणंति ।  
सीओयहि जलकीलियझसाहि ।

गंधेलुं णामे विसयविहु थिउ महिवहु णावइ अवहंडिवि ॥ ४ ॥

10

## 5

जो पारियायचंपयकलंबमुच्चुकुंदकुंदमंदारसारसेरिंधगंधगुमुगुमियमहुयराली-  
मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुरैरकारंडकोइलारावरम्मो ॥ १ ॥

जो मत्तदंतिगंडयलगलियमैयतुप्पविदुचित्तलियवारिवियरंतणहंततियसिंद-  
कामिणीसिहिणघुसिणपिंगलियफेणसोहियसरंतो ॥ २ ॥

जो विविहघण्णफलणैवियछेत्तकणसुराहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुद्ध-  
हलिणीविमुक्कछोक्करणकलरवोदिण्णकण्णथियचरणहरिणसंछण्णसीममग्गो ॥ ३ ॥

जो कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुद्धमंथरोमंथमाणगोमैहिसोहदुव्भंतदुद्धघयदहिय-  
वाविर्मज्जंतपंथियसमूहो ॥ ४ ॥

4. १ T साणुवत. २ PT °कवाडइं चियपहाइ. ३ MBP °मेहलणिकेउ, ४ MBP देवै. ५ MBP धुउ. ६ MBP जगलच्छिहि णं. ७ MBP उत्तरतीरि. ८ MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिसि इति संबन्धः; दक्षिणतीरे णीलइरि इति संबन्धः. ९ MBPK गधिलु.

5. १ MBP° कयंब°. २ MBP °महुयरोली°. ३ MB °कुरल°; P °कुरल°. ४ B °मयरुप्पविदु°; P °मयतोयविदु but gloss स्निग्ध. ५ MBP °भरिय°. ६ M °संछरोमंथ°; BP °सच्छरोमंथ°. ७ K °माहिसोह°. ८ MBP °मज्जंतजंतपंथिय°.

4. द ह खे त्त भा य भरतहैमवतहरिरम्यकहैरण्यवतैरावतक्षेत्राणि पूर्वविदेहो अपरविदेहः कुरवः उत्तर-  
कुरवश्च; ४ छ व्व रि स धा रि षट्कुलपर्वताः, 4 ४ °ह ल° °फल°. 5 ४ णि वा णु निर्माणं संस्थानं वा. 10 वि-  
स य वि हु देश एव विटः.

5. २ °सिद्धिण° स्तनौ. ३ थिय चरण° स्थितं त्यक्तं चरणं भक्षणं गमनं यैः.

जो रंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण-  
सुणहाणिहितणीसासतावविहडंतगोट्टिसोहंतगोट्टो<sup>१</sup> ॥ ५ ॥

5

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमंयरंदपुंजपिंजरिय-  
तुंगणगोहरोहपारोहडालडोल्लायमाणजकखीविलुंपियासणपामरोहो ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छधावंतवाणरोमुक्कधीरबुक्कारतसिय-  
णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालगोहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंभणुड्डाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकब्बडमडंबसंवाह  
णाइरमणीयभूपएसो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकयसमयविरहिओ वीयरायणयतोयधोय-  
लयंतरंगसुद्धो सहावसोम्मो ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरुअ-  
चारित्तभत्तिविद्वियविसमपावावलेवो<sup>१०</sup> ॥ १० ॥

10

घत्ता—<sup>११</sup>हिं वेयडूमहासिहरि मज्झि परिट्टिउ दीसइ केहउ ॥

रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंते विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेढिहि रमियखयरि  
पप्फुल्लियसयदलपरिमलेण  
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण  
आबद्धे रयणविचित्तण  
णाणादुवारमणितोरणेहिं  
दीसइ णंदणवणणीलकेस  
चूलामणिचुंभियणहयलाइं

अलयाउरि णामे अत्थि णयरि ।  
परिवेढिय जा परिहाजलेण ।  
जा सोहइ णाइ णियासणेण ।  
पायारकणयकडिसुत्तण ।  
णं छज्जइ कंठविदूसणेहिं ।  
पुरि णं अवयरिय अउन्व वेस ।  
जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

6

६ M °गोहो. १० MP °मयरंदपुंजरिय°. ११ MBP °डौलायमाण°. १२ M °कयमय°. १३ M सहाव-  
सोमो. १४ All Mss add:— इमी विसंमसीसयछंदजाई कहिया. १५ MBPK तहिं.

6. १ MB उत्तरे सेढिहि. २ MBP पप्फुल्लिय. ३ K अवयरियउन्व वेस.

5 °सा मा° रात्तिः. 9 ही र° शंकरः; °णा र सी ह°: नरसिंहः; आ र णा ल सं भ व° ब्रह्मा. 10 °प रि णं य °प्रवृत्तः.

6. 3 6 णिया स णे ण परिधानवत्तेण. 6 6 वे स वेद्या.



णं धूर्वं सुधूर्मे णीससंति  
 णं अलिङ्गंकरे सरं गुणंति  
 धयवड णं णियकरयल धुणंति  
 अम्हहुं सारिच्छा दिव्वगेह  
 पवसियपियाहिं पेळ्ळियकरेहिं

णं मुत्तावलिदंतेहिं हसंति ।  
 णं गुरुगवक्खकण्णहिं सुणंति ।  
 णं सिहिरवेहिं के के भणंति । 10  
 जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।  
 संतावयार तल्लंतविरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमल्लु विरहिणीइ मणिभित्तिहि दिट्ठुं ॥

संज्ञइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पउं मण्णिउ णिक्किट्ठुं ॥ ६ ॥

## 7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं  
 घरु हरिणीले णीलियउ जाम  
 णयणइं ण लहंति णयाणणाइ  
 णिंदेण्णिणु रंगावलिपयारु  
 जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि  
 उगयकिंजकरयंकयाइं  
 जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ  
 जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण  
 जहिं उववणाउ घैरि सिरि चडंति  
 हयमुहफेणहिं कुंजरमएहिं  
 संजणियपंक जहिं रायमग्ग  
 जहिं णिञ्चुच्छव मंगलपसत्थ  
 जिणधम्माणंदिय भुत्तभोय

वड्डुपायालत्तयविलसियाइं ।  
 ताविच्छहु केरी सोह ताम ।  
 जहिं एम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।  
 जहिं कुलवहु बंधइ कंठि हारु ।  
 जहिं पंगणि पंगणि तोयवावि । 5  
 जहिं वाविहि वाविहि पंकयाइं ।  
 जहिं हंसि हंसि कल्लेरव विहाइ ।  
 कामेण समप्पिय कामबाण ।  
 पुणु विविह पक्खि उववणि पडंति ।  
 तंबोलहिं माणवमुहचुएहिं । 10  
 वच्चंतजाणजंपाणदुग्ग ।  
 असिमसिकिसिविज्जावज्जियत्थ ।  
 णिरुवइव जहिं णिवसंति लोय ।

४ MBP धूर्वं सुधूर्मे, ५ MBP दंतिहिं, ६ MBP सरु, ७ MP अम्हइं; B अम्हहं; K अम्महुं but gloss  
 अस्मत्सदृशाः, ८ P °तंवेहिं, ९ MBPT संज्ञहिं सुत्तविउद्धियहिं.

7. १ MBPK सोहइ, २ MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरवु, ३ MBP  
 घरसिरि, ४ MP °मुहमुएहिं; ५ MB °वेजा°.

12 ० संतावयार संतापकरा मेघाः, 14 सुत्तविउद्धियइ सुत्तविबुद्धया जागरितया.

7. 1 ० णिरसियाइं तिरस्कुंतानि, 2 ० ताविच्छहु कज्जलय, 3 ० णयाणणाइं नम्रमुखायां  
 ० धणाइ वच्चा खिया, 8 ० हयणिमाण हतचमानः.

घत्ता—अइबलु णामे तेत्थु पडु सो जइ वि हु ण होई दोसायरु ॥

तइ वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मुं वि चंडपर्याव पहायरु ॥ ७ ॥

15

## 8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु

इहलोयत्थु वि परलोयभत्तु

जयगहियगुणु वि अक्खयगुणोहु

बलवंतु वि अबलासयहं गम्मु

णीसु वि लक्खणलक्खयसरीरु

दूरत्थु वि णियँडत्थु वै हयारि

सुयभिण्णमणु वि दढच्चित्तवित्ति

अइसच्छु वि रँहियसमंतचारु

संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय

सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ

सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।

गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।

णिब्बाहु वि करिकरदीहबाहु ।

अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।

ससहावे धीरु वि पावभीरु ।

5

रइवंतु वि परवहुबंभयारि ।

बहुपालिरो वि दिसघित्तकित्ति ।

गुरुओ वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।

लच्छीवासु वि खरदंड णेय ।

ठाणत्थु वि तच्चरणेहिं भमइ ।

10

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥

जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

६ MB होय. ७ MBP सोमु. ८ MBP चंडपयाउ.

8. १ MBPK जग°. २ P °गुणि. ३ K लक्खयलक्खणसरीरु. ४ P णिवडत्थु. ५ M वि. ६ P इय°. ७ MB गरुवो; P गरुओ. ८ M खरदंडु; BP खरदंडु. ९ MBP चर°; T चल°. १० M वाणत्थु; MP थाणत्थु. ११ MBP तच्चरणेहिं भमइ.

15 चंडपयाव चण्डप्रतापः; पहायरु प्रभाकरः.

8. 1 a कुलणहेत्यादि- यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकारं इति विरुद्धम्; अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता; b सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च. 2 a परलोयभत्तु मोक्षश्रद्धालुः; गोवालु पशुपालः; अन्यत्र गौः पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च. 3 b णिब्बाहु निर्बाधः प्रलम्बबाहुश्च. 4 b अविडप्पु विदर्पो राहुः सः अभवन्नपि विलंघितसूर्यतेजाः, अन्यत्र विटात्मान भवति. 6 a णियडत्थु निकटस्थः, आसन्नघनश्च. 7 b बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्पातीति बहुपा पुंश्वली तां आलिं सखीं राति आदत्ते यः सः कथं दिक्षु प्रवृत्तकीर्तिः; अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च. 9 a संगरु खाङ्गे खशरीरे रुग् व्याधिर्यस्य स खाङ्गरुक. 10 a सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुप्तः स कथं चलनयनैः पश्यति; अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्टं सूत्रं नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; b वयइ व्रजति गच्छति. 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्.

9

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल  
 णं वितामणि संदिण्णकाम  
 णं रूवरयणसंघायखाणि  
 णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि  
 णं घरवणदेवय दुरियसंति  
 णं घरगिरिवासिणि जक्खपत्ति  
 महएवि तासु घरकमललच्छि  
 तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण  
 घत्ता—जाएं जेण थणंधएण दुज्जणवंदु सयलु संताविउ ॥

णं मयणहु केरी परमलील ।  
 णं तिजगतरुणिसोहग्गसीम ।  
 णं हिययहारि लायण्णजोणि ।  
 णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।  
 णं घरछणससहरबिंबकंति । 5  
 णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।  
 णामेण मणोहर पंकयच्छि ।  
 अलयाउरिधर्रणाहेण तेण ।

णलिणु व णवदिवसाहिवेण णिययगोत्तु हरिसं विहसाविउ ॥ ९ ॥ 10

10

कुंभुण्णयकमु  
 केसरिकडयलु  
 आयंविरणहु  
 णवजलहरञ्जुणि  
 सुरकरिकरकर  
 विसवइकंधर  
 गुणरंजियजणु  
 उण्णयभालउ  
 अलिणिहकोत्तलु  
 मणुयकलेवर  
 किमिकुलसंकुलु

दुज्जयविकमु ।  
 वियडोरत्थलु ।  
 कणयसमप्पहु ।  
 कुलचूडामणि ।  
 तरुणीमणहर । 6  
 रज्जुधुरंधर ।  
 अहिणवजोव्वणु ।  
 पेच्छिवि बालउ ।  
 चितइ अइवलु ।  
 अट्टियपंजर । 10  
 रहिरचिलिच्चिलु ।

9. १ MBP °खोणि, २ P मणोहरि, ३ MBP कुवल्यच्छि, ४ MBP °वरणाहेण, ५ MBP दुज्जण-  
 वग्गु, ६ MBP वियसाविउ.

10. १ MBP °कडियलु; K कडयलु but corrects it to कडियलु, २ P रज्ज, ३ MBP  
 °कुंतलु, ४ K omits अट्टियपंजर.

9. 4 a रइसुहे ल्लि रतिसुखयुक्ता, 6 a जक्खपत्ति कुवेरभार्या, 9 थणंधएण पुत्रेण.

10. 11 b °चि लि च्चि लुं बीभत्सम्.



किं छत्तहिं छत्तायारभूमि  
चामरु मरु देइ ण मरणहारि  
पलियंक्रियसीसु ण सीसु होइ

पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि । 10  
ण समंति केउ झसकेउधारि ।  
जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ ।

घत्ता—एम पयंपिवि राणएण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं ॥

बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिसिचिवि सिपैहिं सिरिकलसहिं ॥ ११ ॥

## 12

जं जयजयसहै बद्धु पट्टु  
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि  
जो छिंदइ सिंचइ चंदणेण  
जो थुणइ जो वि दुब्बयणु देइ  
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु  
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं  
कामिणिथणसिहरालिंगणेहिं  
तंतीपुक्खरवज्जाइएहिं  
उच्छलियपहयघडियारवालु  
पैढमिल्लु महामइ णिहयभंति  
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्धु

तं पुरु मेल्लिवि णरवइ पयट्टु ।  
थिउ णिज्जाणि वणि जिणदिक्ख लेवि ।  
विघइ सरेण मण्णइ मणेण ।  
दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।  
एत्तहि वि तासु सुउ करइ रज्जु ।  
आहरणें मणिकंचणघणेहिं ।  
उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं ।  
स रि ग म प ध णी सरगाइएहिं ।  
भोयासत्तहु तहु जाइ कालु ।  
बयिउ संभिण्णमउ त्ति मंति । 10  
सइंबुद्धु चउत्थउ जगपसिद्धु ।

घत्ता— तेण णैराहिवु विण्णविउ हुयवहु तरुत्तणेहिं किं धायँउ ॥

सायँरु बहुसरिवीणिणहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ ॥१२॥

५ MBP सीसे.

12. १ MBPK आहरणहिं. २ M पढमिल्ल. ३ MBP णराहिउ. ४ MBP किं तरुणेहिं. ५ P धाविउ.  
६ M सायर. ७ MBP ° वाणियहिं.

10 a छत्तायारभूमि मुक्तिशिला. 11 b झसकेउधारि कामः 12 a सी सु शिष्यः.- 14 सिएहिं  
रूप्यमयैः.

12. 3 b मण्णइ अनुमतिं करोति. 10 a णिहयभंति निःसंदेहः. 12 धायउ तृप्तः.

## 13

जिहं पामा कररुहफंसणेण  
 तिह णिच्चं कामु सेविज्जमाणु  
 वड्डइ लोहेण मंहंतु लोहु  
 वड्डइ णयहीणु णिएवि माणु  
 वड्डइ रइ अणुअंधेण मोहु  
 महिणाहु होवि पुणु होइ साणु  
 उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि  
 सा केण वि कत्थइ आणियाइ  
 सा णारि सहावदुगंध चड्डुल  
 घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहंइ सा झत्ति पलित्ती ॥  
 अत्थि ण देहि गंविट्टु मइं तहि उवसमविहि परवस उंत्ती ॥ १३ ॥

संभासणपियमुहदंसणेण ।  
 वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।  
 वड्डइ हंकारे तिव्वं कोहु ।  
 परवंचणेणं मायाविहाणु ।  
 इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु । 5  
 संसारि कवणु रायाहिमाणु ।  
 संकर्णे तप्पइ ताइ देहि ।  
 पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।  
 अण्णासत्ती धणगम्म कुडिल ।  
 10

## 14

फासरसवसंगय महि भंमेवि ।  
 गायंति के वि णच्चंति के वि  
 सीवंति के वि तुण्णंति के वि  
 करिसणु करंति पहरणु धरंति  
 आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति  
 कम्मेहिं धणाइं समज्जिऊण  
 दिवसावसाणि समसंत होंति  
 अह उड्डमग्ग वड्डियणिणाय

वायंति के वि वण्णंति के वि ।  
 धणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।  
 चड्डयम्महिं परहियवउ हरंति ।  
 अम्हइं गुणवंता सइं कहंति । 5  
 आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण ।  
 णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।  
 धावंति सइच्छइ बे वि वांय ।

13. १ P जहिं. २ P णिच्चु. ३ MBP अणंतु. ४ MBP तिव्वु. ५ MBPK णियहीणु. ६ MP  
 ० वंचणेण मणि मायठाणु; B ० वंचणेण मणि माइ ठाणु. ७ MBP. अणुबंधेण. ८ BP डहइ. ९ M गविट्टु.  
 १० MBP बुत्ती.

14. १ MB भमेमि. २ G पुज्जिऊण. ३ B पाय.

13. 5 a अणुअंधेण संतत्या प्रवर्धनेन. 8 a आणियाइ आनोतया स्त्रिया. 11 ग विट्टु गवेषिता; उव-  
 स म वि हि पर व स उ त्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव  
 उपशमविधिर्दृष्टा.

14. 7 a समसंत श्रमश्रान्ताः; b णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखाः. 8 b बे वि वा य अधोवात ऊर्ध्वातश्च.

णिइइ रीणत्तणु खयहु जाइ  
आहारु भुत्तु परिणवइ अंगि  
उट्टंति गोसि पुणु णीससंत

खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि थाइ ।  
पज्जलइ पित्तु हयसेंभसंगि । 10  
किह रक्खहं धणु पणइणि भणंत ।

घत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेंति केर कासु वि बलवंतहो ॥

जीहामेहुणरसरसिय जंति जीव णरयहु सुदुरंतहो ॥ १४ ॥

## 15

धणणियरविहीणें किं कुलेण  
वरसलिलविहीणें किं सरेण  
सुवियडुविहीणें किं पुरेण  
चारित्तविमुक्कें किं सुएण  
किं चाएं मणसंतंविरेण  
किं करिणा अवगणियंकुसेण  
किं पुरिसें पसरियदुज्जसेण  
किं मुणिणा पंचिदियवसेण  
किं मत्तें कयंबहुवइरण  
किं गुरुणा मोहंधारण  
किं दुज्जणमहुरालाविण

णियणाहविहीणें किं बलेण ।  
सुकलत्तविहीणें किं घरेण ।  
परवहुणहवणिणं किं उरेण ।  
पिउपयपडिकूलें किं सुएण ।  
किं माणें पियमुहदाविरेण । 5  
किं हरिणा अवगणियंकुसेण ।  
किं णच्चिण्ण वियलियरसेण ।  
किं धुत्तें पेम्मपरव्वसेण ।  
किं परियणेण परवइरण ।  
किं सीसें अविणयगारण । 10  
किं धम्मविहीणइं जीविणं ।

घत्ता—पुंणु सइंबुद्ध पसण्णमइ खगवइ रायहु अग्गइ भासइ ॥

धम्महु एत्तिउ सारु णिव जं परु अप्पसमाणउ दीसइ ॥ १५ ॥

४ MBP संभवइ, ५ MBP °सिंभ°.

15. १ MBP °संतावण, MB °दाविण, ३ B अविगणियं°, ४ MP मत्तें; B सत्तें. ५ P बहु-  
कयवइरण, ६ MP मोहें धारण, ७ MBP °लावण, ८ MBP धम्मविरहिणं, ९ MP जीवण, १० MBP परमाहियत्तें मंतिवरु खयरवइ रायहु.

6 b खलु छिण्णउ तिलखलश्चर्वितश्चर्वितः सन् रसो दुग्धं भवति, तथा निद्रया श्रमो गच्छति, 10 b हयसें भ-  
संगि श्लेष्मसगे हते सति पित्तमुत्पद्यते, 11 a गोसि प्रभाते, 12 केर आज्ञाम् .

15. 4 a सुएण श्रुतेन; b सुएण सुतेन. 6 b हरिणा अश्वेन; °कुसेण °वाशुकेन ( तर्जनेकेन ). 9 a  
मत्तें मत्त्येन मनुष्येण; b परवइ° परपतिः.

## 16

सञ्चेण दयादाणेण धम्म  
 तेणेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख  
 धम्मेण होंति कप्पामरिंद  
 अहमिंद रुंदचंदाहजोण्ह  
 मणिमउडसिहरसोहिल्लसीस  
 पडिवासुएव कुसुमसर रुद्ध  
 कइगमयवम्मिवाइत्तणाइं  
 सोहंग रूवु कुलु सीलु कंति  
 जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु  
 घत्ता—धवलीइयउं सिरकमलु भोउ देव केत्तिउ भुंजिजइ ॥

अलिण्ण जीवहिंसइ अहम्मु ।  
 कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख ।  
 अरिहंत चक्कि चारण मुणिंद ।  
 धम्मेण होंति जगि राम कण्ह ।  
 मंडलियमहामंडलवईस । 5  
 धम्मेण होंति णाणाणरिंद ।  
 धम्मेण हवंति बुहत्तणाइं ।  
 पोरिसँ जसु भुयवल्लु विमल खंति ।  
 तं धम्महु केरउ फलु असेसु ।

10

धम्मु जिणागमभासियउ मणवयकायतिसुद्धिइ किज्जइ ॥ १६ ॥

## 17

पहु साहिज्जइ सम्गापवग्गु  
 अणिहणइं अणाइअहेउयाइं  
 भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति  
 गुलजलपिट्ठहिं मयसत्ति जेम  
 ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि  
 जम्माउ ण वच्चइ अण्णु जम्म  
 जो परहरु पुच्छिवि परहु पासि  
 विणु तेहिं केम सो सग्गं जाइ  
 जासुवरि मुवई मलु जीवलोउ  
 जलबुब्बुय जइ कम्मेण होंति

16. 9 K अरिहंत. 2 P सोहंगु सीलु व

17. 9 MBP °जलघाइहिं, 2 M जीव.

P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु

16. 4 a °जोण्ह °कान्तिः, 7 a कइरु

17. 2 b °उ या इं उदकानि. 7 a इइरु



घत्ता—कहिं किर सुक्कियदुक्कियइं विणु भूयँएहिं जीउ कहिं दिट्टउ ॥  
जो वाहिउ पासंडियहिं सो हउं मण्णमि चोरँहिं मुट्टउ ॥ १७ ॥

## 18

तं णिसुणिवि चविउं चउत्थएण  
परिपालियसमहिंसावएण  
जणि मइरहि दीसइ दिण्णु राउ  
देहँ भावेण वि भिण्णु लोउ  
खरवडवारइरँसि वेसरासु  
दव्वेहिं तेहिं तेहउ जि होइ  
सिहि उल्लँविज्जइ पाणिएण  
चवलयरु पवणु थिरजड धरित्ति  
एमेर्यँ करिवि अण्णणिय उत्ति  
विणु जीवँ कँहिं भूयइं मिलंति  
जइ परिणवंति भासहि कुहेउ

मंतिहि पट्टुपणवियमत्थएण ।  
सुयवंतँ परिणयसावएण ।  
चउदव्वपसूयहि एक्कु साउ ।  
किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।  
संभँवु णिदिट्टु कत्थइ णरासु । 5  
वइचित्तु काइं संजोयवाइ ।  
पाणिउ सोसिज्जइ झत्ति तेण ।  
असरूवहं कहिं मेलावजुत्ति ।  
किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।  
कायाकारेण ण परिणवंति । 10  
तो काढयपिढरि सरीरु होउ ।

घत्ता—पंचिदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मेत्तुं अयाणउ ॥  
जीउ जाइ किह भणसि तुहं सग्गि होइ किह सुरवरराणउ ॥ १८ ॥

## 19

दीसइ पयत्थु जणि सहुं गुणेण  
कड्डिज्जइ आयसु कड्डुएण

पाहाणेण वि णिञ्चेयणेण ।  
जिह तिह सो कम्मणिवंधणेण ।

७ MBP भूएहिं. ८ MBP चोरँ.

18. १ MB दिण्ण राउ, M विभिण्णलोउ; BP °विहिण्णलोउ, ३ MBP °रसु. ४ MBP उप्पत्ति करइ अण्णहु विणासु. ५ M उल्लाविज्जइ. ६ MB एमेवि; P एमेव. ७ MBP भूयइं कहिं. ८ MBP परिणमंति. ९ MBP परिणयंति १० M चिमित्तु; B चिमित्तु.

19. १ B कड्डिएण P कड्डुएण.

18. 1 a च उत्थ एण स्वयंबुद्धेन, b मं ति हि मन्त्रिणा. 2 a °स म हिं सी व ए ण सम्यक्त्व—अहिंसाप्रतेन, अथवा, शमश्च अहिंसा चेति; b परि ण य सा व ए ण परिपक्वभावकेण. 3 b सा उं स्वादः. 5 a °वडवा° अर्धी. 6 b संजो य वा इ हे संयोगवादिन्. 9 पउरं द रि य वि त्ति चार्वाकमतम्. 11 b का ढ य° काथः. 12 चिमिे तु चैतन्यमात्रः.

19. 1 a पयत्थु पदार्थः. 2 a कड्डुए ण चुम्बकपाषाणेन.

जंपिउ पइं बहुपुजाहरेण  
 णउ रूसइ सो कयणिग्गहेण  
 णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु  
 भो भूयवाइ भूएहिं भुच्चु  
 वइतंडिय पंडिय कव्वु कवहि  
 तहिं अवसरि संभिण्णे पउत्तु  
 हसियच्छियरमियकयासणाइ  
 जो दीसइ सो खर्णवट्टि खंधु  
 घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तरु दिण्णु तेण खर्णवाइहिं ॥

किं किउ सुक्किउ भवि पत्थरेण ।  
 णउ तूसइ भोयपरिग्गहेण ।  
 जहिं जीउ तहिं जि तुहुं ताइं पेक्खु । ५  
 तुहुं तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु ।  
 अणिवद्धु असंद्धउं काइं चवहि ।  
 उप्पज्जइ खाणि खणभंगच्चित्तु ।  
 परियाणइ सुइरु वि वासणाइ ।  
 णउ अप्पउ णउ णिव पासबंधु । 10

वत्थु णिरण्णउ णत्थि जगि तणजलरसु जि दुद्ध धुवुं गाईहिं ॥ १९ ॥

20

जं णत्थि वप्प तं कुम्मरोसु  
 तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ  
 को जाणइ जिणवरु सुइवि सच्चु  
 जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ  
 जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं  
 किं सा खंधहं वाहिरिय दिट्ठ  
 ता सयमइ चवइ मईविसालु  
 जिह पयहु केरी सव्व माय  
 गुरुं सीसु धम्मु ववहारु एहु

१ MBP भवि सुक्किउ. २ MBP तह तुज्झु. ४  
 P खाणि बाद्धि. ७ MBP तेण दिण्णु. ८ MBP

20. १ MBP भणसि. २ MBP माइहिं

7 a कवहि काव्यं करोषि; b असद्धउं अश्रद्ध  
 9 b वासणाइ चित्तसंस्कारेण. 10 a खंधु ह  
 12 णिरण्णउ निरन्वयम्.

20. 2 b अत्थि ल्लउ अस्तित्वयुक्तम्. 3  
 जानाति. 6 b अणु ह वु अननुभूतम्. 7 b

घत्ता—जंबुउ मासखंड मुइवि धायउ सलिलुंगयपाढीणहो ॥

10

आमिसु गिंदे णहि णियउ मीणु णिमज्जिवि गउ णियैठाणहो ॥ २० ॥

## 21

जिह सोणरि तिह णरु उहयभट्टु

अलियाइं जि णिसुणिवि मुयइ धीरे

आयासु पडेसइ भणिवि तसइ

इसिपायपणामविणीयण

जइ णत्थि किं पि कारण ण कज्जु

जइ होइ असंतउ अत्थकारि

णिण्णोसहि तेणाहियकरिंद

णउ सहु ण तुहुं णउ हउं ण वत्थु

सुणि राय जिणागंमहासियाइं

परलोयहु लग्गिवि को ण णट्टु ।

णियतणु दंडइ किं णरयभीरु ।

टिट्ठिइ उत्ताणियचरणु वसइ ॥

ता गुरुणा भणिउं तुरीयण ।

तो किं वीहहि जइ पडइ वज्जु ।

तो आणहि सिविणंतैरि मयारि ।

किं चवहि असच्चउ विउसयंद ।

भणु होइ इट्टपडिवत्ति केत्थु ।

सुम्मंति ण जडयणभासियाइं ।

5

घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पहु अरविंदु णाम विक्खायउ ॥

10

पढमपुत्तु हरिचंडु तहो पुणु कुरुविंदु इंदुंसमु जायउ ॥ २१ ॥

## 22

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि

गयगंधहत्थि भडकालदूय

ते तिण्णि वि सुहुं अच्छंति जाअ

रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।

पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।

लग्गउ डाहज्जर पिउहि ताम ।

४ MBP जंबू . ५ MBP सलिलगयहु. ६ MB णियथाणहो.

21. १ MBP उभय°, २ K धीरु but corrects it to चीरु and gloss वन्नं. ३ K टिट्ठिइ.  
४ MB सिविणंतर°. ५ MMB णिण्णासिय. ६ MBP विउसइंद. ७ MBPK °गमदूसियाइं. ८ K अरविंदु.  
९ MBP पढमु पुत्तु. १० M इंदुसम, B इंदसमु.

10 °पाढी ण हो मत्स्यस्य.

21. 1 a सो ण रि शृगालः. 4 b गुरुणा मन्त्रिणा. 7 a अ हिय करिंद अहितकरीन्द्रा अधिकदस्तिनो  
ना; b विउ सयंद विद्वच्चन्द्र.

णिर्द्दहइ हारु मलयरुहपंकु  
जलजलिउ जालजलणु व जलइ  
उवसमइ ण केम वि अंगडाहु  
ताहिं अवसरि पंकयवैत्तणेत्तु  
सो भणिउ तेण ह्यरवियराइं  
जहिं सुरहिउ कंप्पिउ देवदारु  
जहिं वाइ वाउ णीवइ सररु  
आइसहि सविज्जादेवयाउ  
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ  
घत्ता—सुपण सँविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥

मंतु देउ ओसहु सयणु पुण्णिण परंमुहि होइ परंमुहुं ॥ २२ ॥

23

पाविट्टहु कह व ण जाइ प्राणु  
लोएहिं भणिज्जइ देव जीय  
कंदइ करेहिं ताडंतु तौंदु  
जुँज्जंतहं कप्पिउ कायदंदु  
णिर्वडिउ आसासिउ सो रविंदु  
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु  
जइ रत्तद्रहि जलकील करमि

धगधगइ पलयसूरु व ससंकु ।  
आवइकालइ आवइ ण णिइ । 5  
थिउ कायरमुहुं वरखयरणाहु ।  
पिउणा कोक्काविउ पढमँपुत्तु ।  
जहिं घणइं वणइं वेल्लीहैराइं ।  
सीयल्लु संचारियँ हिमतुसारु ।  
तं णेवावहि सीओयतीरु । 10  
मइं णँतु तुरिउ मारुयरयाउ ।  
आवाहिउ खगदेवीणिहाउ ।

आढत्तउ तेण रउहु झाणु ।  
संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।  
टुँहिदेसँएण संणिहु णरिंदु ।  
पल्लीदेहंतहु रुहिरविंदु ।  
सीयल्लु वणरुहलवुँ णं छणिंदु । 5  
आएसु दिण्णु ताएं सुयासु ।  
तो पुत्त णिरुत्तउ णउं मरमि ।

22. MBPK णिडुहइ. २ MBP जलजलइ जलिउ जलणु. ३ MB °पत्त°. ४ MBP पढमु पुत्तु. ५ P वल्लीहराइं. ६ MBP संचारिउ. ७ MBP सुविज्जउ.

23. १ MBP पाणु. २ MBP तुंडु; T तौंदु उदरम्; K तौंदु, but records तौंदु in second hand. ३ M reads this foot as 4 a. ४ P °देसिएहि. ५ M reads this foot as 3 b. ६ MBP हिययत्थिउ आसासिउ णरिंदु. ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्रहि. ९ MBP णेय.

22. 4 a मलयरुह° चन्दनम्. 5 a जलइ जलार्द्रं वल्लम्. 11 b मारुयरयाउ वायुवेगाः. 1-2 b आवाहिउ आकारितः; °णिहाउ समूहः.

23. 1 b आढत्तउ प्रारब्धम्. 2 b संपयसुहि लक्ष्मीसुखार्थम्. 3 a तौंदु उदरम्; b कायदंदु शरीर-द्वयम्. 4 b पल्लीदेहंतहु विश्वंभरदेहमध्यात्. 5 b वणरुह° रुधिरम्; छणिंदु पूर्णिमाचन्द्रः. 6 a हरियंदा-णुयासु कुरुविन्दस्य; b सुयासु सुतस्य.

किंकरकरसिरघडयाणिण  
खाणि खोल्ल खणेप्पिणु भरहि तेम

ससमेसमहिसमृगंसोणिण ।  
सुविहाणइ हउं तहिं णहामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिवि कर ॥ 10  
कारिमकीलालहु भरियं विरइय वावि विहाणइ हुत्तर ॥ २३ ॥

## 24

तूसेप्पिणु तेत्थु पइडु राउ  
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु  
मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु  
अइबुद्धिवंतु परचित्तजाणु  
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु  
पक्खलिवि पडिउ गिरिरायतुंगु  
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयमणि  
अवरु वि णिसुणहि तुह वंसकेउ  
चिरु होंतउ णरवइ दंडधारि  
तहु तणउ तणउ वज्जियदुवालि  
तो देव दीहकालेण पत्थु

णहंतेण तेण बुज्जियउ साउ ।  
मायारउ णिहणमि पहु पुत्तु ।  
आयद्धिय भांसणु खग्गधेणु ।  
दिट्टउ कुरुविंदु पलायमाणु ।  
णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु । 5  
णियकरद्धुरियाणिव्वट्टियंगु ।  
हाहारउ उट्टिउ वंधुवग्गि ।  
रूवेण णाईं सइं मयरकेउ ।  
दंडउ णांमैं दंडियणियारि ।  
मणिमालि सउलगयणंसुमालि । 10  
धणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपन्भारइ ॥  
अट्टज्झाणें पिउ मरिवि अजैयरु हुयउ णिययभंडारइ ॥ २४ ॥

१० MBP °मिग°. ११ GK भरिय वावि.

24. १ MBP तुहुं णिसुणहि. २ P णामेण जि दंडियारि. ३ MBP °दुयालि. ४ MBP ता.  
५ MBP अजगर.

9 a ख णि गर्ता. 11 क रि म्म की लाल हु कृत्रिमरुधिरेण; वि हा ण इ प्रभाते.

24. 1 b सा उ स्वादः. 9 b णि व्व ट्टि यं गु विदारिताङ्गः. 10 a °दुवालि अन्यायः; b सउलगयणसु-  
मा लि स्वकुलगगनसूर्यः.

माणसु दाढहिं दंतहिं दलई  
 ससिमणिजलकयसिहरग्गणहवणि  
 संभरियपुव्वजम्मंतरेण  
 मँन्भीसिउ भोयाँहोयणेण  
 महु एहु को वि चिरजँम्मबंधु  
 पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुणिदु  
 ह्यउ असमाहिइ मरिवि सप्पु  
 तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण  
 पडिआवेप्पिणु घरु खवियकम्म  
 बुज्झिवि फणिणा संणासु कयउ  
 देवेण तेण जाणियभवेण  
 आविवि मणिआलिहि दिण्णु हारु  
 इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्ज कंठि

जं घरि पइसइ तं तं गिलई ।  
 पुणु रँयणमालि पइसंतु भवणि ।  
 ओलक्खिउ णियसिसु विसहरेण ।  
 ता चित्तिउ खगवइजायएण ।  
 णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु । 5  
 भासियउ तेण दंडयणरिंदु ।  
 किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु ।  
 पिउणेहकँरणकंपिर्यमणेण ।  
 जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्म ।  
 मुउ जायउ सुरु उरयत्तु गयउ । 10  
 कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण ।  
 जाणइ पुरु देसु कहावयारु ।  
 ताराणियरु वँ णं मेरुकंठि ।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोएप्पिणु ॥

हयतमु पुप्फंदंतसरिसु आलिंणियउ मंति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

15

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे वितंडापंडियपंडाविहंडणं णाम  
 वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

25. १ MBP दलेइ. २ MBP गिलेइ. ३ MBP रयणिमालि. ४ MBP मं भोसिउ. ५ MB भोया-  
 भोयणेण; PT भोयाभोयएण. ६ B चिरधम्मबंधु. ७ MBP °करण°. ८ M °कप्पिय°. ९ T कयावयारु  
 कृतावतारः १० MBP व मेरुकंठि. ११ MBP पुप्फयंत°.

25. 4 a मन्भी सिउ मा भैषीस्त्वम्; भो या हो यणे ण फणामण्डपाधःकृतेन फटादोपेन. 10 b गयउ  
 नष्टम्. 12 b कहावयारु कथावतारः.

## XXI

बुद्धंतहु णरइ पडंतहो बहुमणियभवतरुहलहो ॥  
सइंबुद्धे णाणविसुद्धे दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

### I

पुणु तेण पजंपिउं सुइमहु  
तुह तायपियामहु कुलधवल्लु  
उप्पाइवि केवल्लु णाण गुणि  
तुह तायताउ सयवल्लु णिवरु  
माहिंदसाग्गि हूयउ अमरु  
गउ मेरुहि तइया भावियउ  
अइवल्लु तुह पिउ भयवंतु वसि  
णयविणयालहं णवजोव्वणहं  
तुह एम पियामहपियंपहुइ  
रुइइझाणआरूढदुइ

भवसयसंचियमलभारहरु ।  
णामेण पसिद्धउ सहसवल्लु ।  
गउ मोक्खणिवासहु परममुणि । 5  
परिपालिवि सावयवयर्पयरु ।  
सत्तंबुहिआउपमाणधरु ।  
तुहुं मइं सहुं ते बोल्लावियउ ।  
गउ वणवासहु होएवि रिसि ।  
सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं । 10  
सुम्मंति देव साहियसुगइ ।  
संपत्ता णरयतिरिक्खगइ ।

यत्ता—हयकम्मं जिणवरधम्मं उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥  
कयगावें पत्थिव पावें हेट्टामुहुं राउ वि पडइ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

यस्य जनप्रासिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि  
प्रतिहतपक्षपातदानश्ररिसि सदा विराजते ।  
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
राजति जयतु जगति भरतेश्वरमयममलमङ्गल ॥

MP read विराजयते for विराजते; °मलाणिल° for मनाविल°; स जयति जयतु for राजति जयतु;  
M reads °श्वरसुखमयममल°; P reads °श्वरजयमयममल° for °श्वरमयममल°. GK do not give it.

1. १ MBP पयांपिउ. २ MBP केवल्लणाणु गुणि. ३ MBP °पवरु. ४ P °जोव्वणाहं. ५ P °णद-  
णाहं. ६ MBP °पिउ°.

1. 6 a णिवरु नृवरः. 11 a °पिय° पिता.

## 2

तं सुंणिवि पवुद्धउ भव्वयणु  
 संकाकंखाहिं विवज्जियउ  
 अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो  
 कंचणधूलीरयपिंगलहो  
 मणियरकब्बुरियणहंतरहो  
 आसीणसुरासुरसुंदरहो  
 सिरिभंहासालसुणंदणइं  
 वज्जियफणिकामिणिणेउरइं  
 किंणरपारद्धथोत्तसयइं  
 अकयाइं विलंबियतोरणइं  
 मंडिय सीहासणवेइयउ

अइवलसुउ हुउ उवसंतमणु ।  
 गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।  
 खलखलखलंतणिज्झरजलहो ।  
 करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।  
 सिहरुच्चाइयसयमहघरहो । 6  
 गउ वंदणहत्तिइ मंदरहो ।  
 सउमणससरसपंडुयवणइं ।  
 चालियचंडुज्जलचामरइं ।  
 विद्धंसियमाणवभवभयइं ।  
 पर्यसिवि जिणबिंबणिहेलणइं । 10  
 परियंचिवि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥

तं मणियहिं महुयरञ्जुणियहिं भणइ व त्तर दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

## 3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु  
 मलु जासु सरीरि ण ज्ञाणि मलु  
 जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु  
 वंकत्तणु भउंहइ आयरिउ  
 रसु परमागमि णउ कामरसु  
 सिरि केसजडत्तणु जासु गय

संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।  
 णउ परतावणि बलु सुतवि बलु ।  
 णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।  
 णउ जासु मइइ किं पि वि धरिउ ।  
 वसु जं ण समिच्छइ धम्मवसु । 6  
 णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2. १ MB णिसुणिवि. २ MB अइवलु सुउ. ३ BP वंदणभत्तिइ. ४ P °भइ°. ५ MBP °भवे-  
 सयइं. ६ MBP पइसिवि. ७ MBP सिंहासण°. ८ MBPKT तर.

3. १ P मइं and gloss मत्तौ. २ MBP जो.

2. 8 a व ज्जिय° शब्दायमानः. 10 b पयसिवि प्रवेशं कृत्वा. 11 a °वे इयउ चतुष्पिकाः; ७  
 वेइयउ प्रतिमाः. 12 °विहुणा °चन्द्रेण; सेसासयदलहो निर्माल्यस्थपद्मस्य कृते. 13 मणियहिं मनोद्वैः;  
 तर दुक्कियजलहो दुष्कृतजलात् तर, पापं मुक्त्वा सुखी भव.

3. 3 b णहु णखम्.



दुम्मह मय अट्टु वि जासु मय  
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ  
हउं अँजि वि एम ण करामि तउ

कय पंचिदियहुं णं जेण दय ।  
सइंबुद्धं अप्पउ णिंदियउ ।  
केत्तिउ किर पोसामि असुइवउ ।

घत्ता— सिरिगेहइ पुव्वविदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥

10

तणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि दिसइ ॥ ३ ॥

## 4

तं अरुहजुंयंधरतित्थसेरे  
तहिं एक्कु साहु आइच्चगइ  
ते पुच्छिय बुद्धं वे वि जण  
महु सामि महाबलु संभरह  
जाणियतसथावरजीवगइ  
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे  
आसणभवु सो णिवखयरु  
भोयासिउ जं तं णंउ रहमि  
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए  
णामे सिरिसेणु सिरिणिलउ  
तहु पढमु पुत्तु जर्यवम्मु हुउ  
सो रुच्चइ जणणिजणणमणहो

ण्हायउ ण वडइ संसारजरे ।  
अण्णेक्कु अरिंजउ सुद्धमइ ।  
तुम्हइं तिणाणपाणीयघँण ।  
किं भव्नु अभव्नु व वज्जरह ।  
तं णिसुणिवि जंपइ जेट्टं जइ ।  
अग्गइ जुयाइपारंभवहे ।  
दहँमइ भवि होसइ तित्थयरु ।  
दुम्मोयत्तणु तहु तुह कहमि ।  
सीहउरि णरिंदु विमुक्कभए ।  
सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ ।  
वीयउ सिरिवम्मु णरेहिं थुउ ।  
सो भावइ सयलहु परियणहो ।

5

10

घत्ता—सुहडत्तणु बुद्धिबुहत्तणु धिवँहि असेसु वि जलहिजले ॥

किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वर्णँइ पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ ४ ॥

३ BP ण जी जीवदय, ४ MBP अज.

4. १ MBP °जुयंधरि. २ MBP संसारदरे. ३ MBP जणा, ४ MBP °घणा. ५ M जेट्टु जइ.

६ MBP दसमइ. ७ B जंतउ णउ; P जंतणउ. ८ MBP पढमु पुत्तु. ९ MBP अजवमु. १० MBP णरिंदथुउ. ११ P धिवहुं. १२ M मण्णइ.

7 a मय भदाः; मर्म मृताः. 11 दि हि धृतिः.

4. 1 a °सरे जले, 6 b जुयाइपारंभवहे कर्मभूमिप्रथमप्रवेशमार्गं.

## 5

मेल्लेंतें संतें रज्जरइ  
 णरणाहें अइअजुत्तु कियउ  
 जयवम्में ता परिचिंतियउ  
 णिदइवहु सव्वु वि चप्फलउ  
 णिदइवु णवंतु वि को गणइ  
 णिदइवहु सुक्कइ भरिउ सरु  
 णिदइवहु बंधु वि होइ परु  
 ण हणइ भेसहु वि रयापसरु  
 णिदइवहु विहडइ घरिणि घरु  
 उज्जमुं करेवि अप्पउ दमइ

वउ लेंतें जंतें परमगइ ।  
 लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ ।  
 को फेडइ दइवणियंतियउ ।  
 णिदइवकज्जि जंगु सीयलउ ।  
 णिदइवहु भासिउ को सुणइ । 5  
 ण फलइ णिदइवें णिहिउ तरु ।  
 णिदइवहु देव ण दैते वरु ।  
 वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।  
 ण करइ सणेहुं मायापियरु ।  
 णिदइवहु किं सिरि संकमइ । 10

घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जिं करइ तं णिप्फलउ ॥

हयकाणं किं ववसाणं सव्वहु दइवु जि अग्गलउ ॥ ५ ॥

## 6

इणं चिंतमाणो  
 अरायं वहंतो  
 पिउस्सायहंतो  
 रईसूहवेणं  
 जसेणं सियं जं

अहं णिदमाणो ।  
 अणंगं वहंतो ।  
 रमासायहंतो ।  
 सयासूहवेणं ।  
 सुहेणं जियं जं । 5

5. १ P णरणाहें अजुत्तु २ MBP अजवम्में. ३ P णिदइवहु. ४ MBP णिदइउ. ५ MBP सुक्कइ. ६ BP सिणेहु. ७ MBP उज्जउ.

6. १ B णिदमाणो. २ B °स्सायहंतो. ३ MBPT सियजं. ४ MBPT जियजं and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यद्यौवनम्.

5. 4 a च फलउ चपलम्.

6. 1 a इणं एतत्पापम्. 2 a अरायं वैराग्यम्. 3 a पिउ स्सा य हंतो पितरं कथयन्; b रमा सा य-  
हंतो लक्ष्मीस्वादहन्ता. 4 a रईसूहवेणं कामदेवोद्भवेन; b सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन,  
5 a जसेणं सियं जं यशसा निर्मलं यद्यौवनम्; b जियं जितम्.

दयंगं समंतो	समेणं समंतो ।	
णियं जोव्वणंतं	गओ सो वणंतं ।	
किडीखद्धकंदं	णैयासीणकंदं ।	
सरेणं सवंतं	महावंसवंतं ।	
सवेल्लीपियालं	पुलिंदीपियालं ।	10
विणित्तंकुरोहं	विचित्तंकुरोहं ।	
अलीपीयवासं	फणिंदाहिवासं ।	
महूहिं पलित्तं	दवग्गीपलित्तं ।	
पवडुंतपीलुं	पगजंतपीलुं ।	
हुयातावसीयं	सया तावसीयं ।	15
पवित्तं पसण्णं	हयाणेयसण्णं ।	
विलुत्तंतयासं	पहुंलंतयासं ।	
सुसंतावयासं	णिहित्तावयासं ।	

धत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ दुरियमहु ॥

जयवम्मं समियकुक्कम्मं मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥

20

7

जसु तित्थगमणु अहवावठाणु  
जसु इंदियरणु अह परमकरुणु  
जसु जोयणिह अह जागरणु

जसु धम्मभणणु अहवा सुमोणु ।  
जसु अरुहचित्त अह सुयसरणु ।  
जसु खलिकिउ दुहु अह तववरणु ।

५ MBP गिरीलग्गकंदं; T णयासीणकंदं गिरीलग्गमैघ. ६ M °वियालं. ७ T पहुलंतयासं. ८ MBP अजवम्मं.

7. १ MBPT अहवा सठाणु. २ P धम्मसवणु. ३ MBP समोणु. ४ MBT परमकरणु. ५ P खलिकिउ.

6 a दय गं दयालवम्; b सम तो उपशमयन्. 8 a कि डी° सूकरः; b णया सीण कंदं गिरिलग्नमेघम्.  
10 b पुलिं दीपिया लं पुलिन्दीप्रियम्. 11 a विणि त्त° विनिर्गतः. 12 a अलीपीय वासं भ्रमरैः  
पीतगन्धम्; b °अ हि वा सं °अधिष्ठानम्. 14 a °पी लुं °वृक्षविशेषम् b °पी लुं °गजम्. 15 a हुया ताव सीयं  
संजातोष्णशीतम्; b ताव सीयं तापसेभ्यो हितम्. 16 b हयाणेयसण्ण हता अनेकैराहारादिसंज्ञा यत्र.  
17 a विलुत्त त या सं विलुप्ता अन्तकस्याशा येन, अजरामरपदप्रापकत्वात्.

7. a अवठाणु कायोत्सर्गः.

जसु सयणु धराणे अह कट्टु तिणु  
उववासु जासु अह जिणकाहिउ  
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो  
सिरिसेणसुएण समिच्छियउ  
छुडु केसभारु आलुंचियउ  
तामायउ पणवहुं परमजइ

जो तणुमलधरु मणमलेण विणु ।  
परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ 5  
ि वाउ करेवि सयंपहहो ।  
अणगारत्तणउं पडिच्छियउ ।  
छुडु करणावियारु वि खंचियउ ।  
महिहरु णामे खयराहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥ 10  
वेभइएं णवपावइएं महुं णिर्वायवि जोइयउ ॥ ७ ॥

## 8

बद्धउ णियाणु एरिसिय जहिं  
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु  
ता तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे  
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगल्लिउ  
गुरुणा भवपासणासकरइं  
असुथामु विसेणं झडत्ति हउ  
अलयाउरि रायहु तणइ घरे  
सो एहु महाबलु भोयरसु

कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।  
तो होउ रज्जु विद्वियखलु ।  
कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।  
धरणियलि कलेवरु रुलुघुलिउ ।  
कहियाइं पंचपरमक्खरइं । 5  
गउ जीउं ईसिउवसमियरउ ।  
उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।  
णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

घत्ता—मिच्छत्ते मणकुडिलत्ते अवरु णियाणणिबंधणेण ॥

जगु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउल्लु बंधणेण ॥ ८ ॥ 10

६ MB कट्टुतिणु. ७ MBP मलहरु वि मलेण. ८ P °सेणु सुएण. ९ MBP तावायउ. १० MP मुहु.  
११ MBK णिवाइवि.

8. १ MBP परियलिउं. २ P झडत्ति विसेण. ३ P जीविउ इसिउवसमियउ.

11 णव पा व इ एं नवप्रव्रजितेन जयवर्ममुनिना.

8. 6 b ई सि उ व स मि य र उ ईषदुपशमितरजाः.

## 9

णंत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं  
 भुयदंडिहिं चप्पिवि पेळ्ळियउ  
 पइं कड्ढिवि सुंच्चिवारिहिं ण्हविउ  
 णिसि सिविणैइ अज्जु णियच्छियउ  
 सुत्तुट्ठिउ काइं मि णउ चवइ  
 दिट्ठुउ णिमित्तु तं णउ कहइ  
 अचिरेण जाहि पँहुमंदिरहो  
 जा ण कहइ सो पत्थिवु सुयणु  
 अणु वि लइ दुक्की खयणियइ  
 पडिचज्जइ धम्मु म भंति करु  
 संबोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं  
 तं णिसुणिवि जइवरबोळ्ळियउ  
 साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु

संभिण्णमहामइसयमइहिं ।  
 अप्पाणउं कइमि घळ्ळियउ ।  
 उच्चाइवि सीहासणि थविउ ।  
 तुह णाहें दुरिउ दुगुंछियउ ।  
 अच्छइ चिंताऊरिउ णिवइ । 5  
 आगमणु तुहारउ मणि महइ ।  
 भमरु व भमंतु इंदीवरहो ।  
 ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।  
 एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।  
 दिवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु । 10  
 पावेसइ भवु अणंतु सुहुं ।  
 णियहियवउ दुक्खें सळ्ळियउ ।  
 आलोइवि गर्मणिच्छइ गयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि वे वि णमंसिवि लहु संचळिउ मंतिवरु ॥

पहु पविमलु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ वोमसरु ॥ ९ ॥ 15

## 10

तावेत्तहि णहयालि णिव्वडिउ  
 चितइ सो बहुविहु भिण्णमइ  
 किं घणु णं णं पडिखलियमरु  
 इय जाम कमेण विवेइयउ

खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।  
 किं गिरिवरु णं णं खयलगइ ।  
 किं पाक्खि ण एहु पलंबकरु ।  
 ता बुद्धु समीवु पराइयउ ।

9. १ MBP मिच्छत्तविवाइहिं. २ MBP सुइवारिहिं. ३ P सिविणउ अज्ज. ४ MBP बुहमादिरह.  
 ५ MB खयणिवइ. ६ MBP गयणिच्छइ गमणु.

10. १ MBP ता एत्तहि. २ MB बहुविह. ३ MB खयरगइ. ४ MBP णिवेण णिवेइयउ.  
 ५ MBP समीउ.

9. 1 a ण त्थि त्त वि वा इ हिं नास्तिकविवादैः 9 a ख य णि य इ क्षयस्यावश्यंभावः. 13 b ग म णि च्छइ गमनेच्छया.

10. 1 a णि व्व डि उ प्रकटीभूतः. 2 b भिण्ण म इ नानामति ; b ख य ल ग इ खतलगातिः. 3 b प डि ख लि य म र् प्रतिहतवातः

उट्टिवि आलिङ्गित णिववरेण  
पुणु भण्डं अउवु पसाउ किउ  
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ  
मंते पउत्तु भो णउ रहमि  
चंपियउ जेहिं ते जड कुगुरु  
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु  
हरिवाढारोहणु सुगइसुहुं

तेण वि णिर्बु पणविउ णियसिरेण । 5  
किंकरु हउं परमुण्णइहि णिउ ।  
पइं जीवियवु महु रक्खियउ ।  
पइं दिट्टउ दंसणु हउं कहमि ।  
जो पंकु तं जि दुग्गइविहुरु ।  
धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु । 10  
पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥

सहुं सासें एक्के मासें आउ तुहारउ परिगलइ ॥ १० ॥

II

ता भणइ महाबलु रयविरमु  
तुहुं बप्प मज्झु दाहिणउ करु  
आसण्णमरणु किं तउ करमि  
इय जंपिवि मउलियकरयलहो  
परियणसयणाइं खमाइयइं  
तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं  
मलभरियइं चरियइं छंडियइं  
णीसेसें परिग्गहु परिहरिवि  
पच्छा घुलंतसाहारवणि

कल्लामित्तु बंधउ परमु ।  
आलग्गणखंभु सुसंतियरु ।  
हउं एवहिं संणासिण मरमि ।  
पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइबलहो ।  
मुंणिभावणसुत्तइं भावियइं । 5  
इंदियइं खगिंदे दंडियइं ।  
मायामिच्छत्तइं खंडियइं ।  
अरहंतु भडारउ संभरिवि ।  
थिउ सहससिहरि जिणवरभवाणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धपवित्तइं जिणपडिंबिबइं पुज्जियइं ॥ 10

हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ. ७ P परमुण्णइ णिहिउ. ८ B चंपियउ. ९ B परियलइ.

11. १ MBP आसण्ण मरणु. २ MBP चरमि. ३ MBP संणासणु करमि. ४ M णियभावण<sup>०</sup>.  
५ MBP णीसेसु. ६ MBP पुण्णपवित्तइं.

6 b परमुण्णइहि णिउ परमोच्चतिं नतिः. 8 b दंसणु स्वप्नः.

11. 9 b सहससिहरि सहस्रशिखरे.

## 12

कमकमलपडियभुवणत्तयहो  
 तियसिदविद्वंदियपयहो  
 उक्खित्त चरुय पीणीर्यं भूय  
 हत्थिहडा इव घंटासुहल  
 जलणिहिवेला इव सरयणिय  
 तरुराइ व विविहकुसुमथइय  
 घम्मं इव दित्तदीवसहिय  
 अट्टाहइं महिवि जिणाहिवइ  
 पाउग्गमरणविहि तेण कय

उब्भासियसियछत्तत्तयहो ।  
 पारद्ध पुज्ज परमप्पयहो ।  
 माया इव उच्चाइय धूर्यं ।  
 वरणरवइसेवा इव सहल ।  
 वेसा इव दरिसियदप्पणिय । 5  
 णहलच्छि व पउरकेउछइय ।  
 सुरसिहरि व चंदणमहमहिय ।  
 बावीस दिवस संग्गासगइ ।  
 सुहझाणारंभे प्राणं गय ।

घत्ता—ईसाणइ सँगविमाणइ सिरिपहि सिरिकमलिणिभमरु ॥ 10  
 णिच्छम्मं णिउ णियधम्मं खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥ १२ ॥

## 13

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ  
 सो मरिवि महाबलु तियसकुले  
 हुउ देउ दिव्वु ललियंगधरु  
 वेउन्वियणयणसुहावणिय  
 बिहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय

उववायसयणि संपुडणिलइ ।  
 णं विज्जुपुंजु जलहरपडले ।  
 ललियंगु णाम णं कुसुमसरु ।  
 तवणीयतेय ओहावणिय ।  
 जिह तणु तिह जोव्वणंसिरि जणिय । 5

12. १ MBP पीणियभुयहो. २ MBP उच्चाइयधुवहो; T धूय पुत्री धूपश्च. ३ MB °दप्पणय.  
 ४ K omits this line. ५ MBP पाण. ६ MBP सगिग विमाणइ.

13. १ MBPK °सयण°. २ P विज्जपुंजु. ३ MBP ललियंगणामु. ४ MBP तवणीयकंति°. ५ P जोव्वणु.

12. 3 b मायाइव जननीव; धूयपुत्री धूपश्च. 6 a °राइ पंक्तिः. 7 a घम्मा इव प्रथमनरकभूमि-  
 स्तत्संबन्धि तिर्यक्क्षेत्रम्. 8 a अट्टाहइं अष्ट दिनानि.

13. 1 a °धंतविलइ ध्वान्तविनाशे. 4 b तवणीयतेयओहावणिय सुवर्णदीप्तिरस्कारिका.  
 5 a सुरवणिय सुरवनिता.

लइ पुण्णविसेसैं सार्वडिउ  
 हत्थें सहुं कंकणु मणिजडिउ  
 मउडें सहुं कुसुममाल चडियं  
 वच्छें सहुं बंभसुत्तु विमलु  
 तहु जम्मविलासपयासणउं  
 णयणहिं सहुं अणमिसपेच्छणउं

पाएं सहुं णेउरु तहु घडिउ ।  
 सीसैं सहुं मउडु वि पाँयडिउ ।  
 कंठें सहुं सियहारावलिय ।  
 सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।  
 सहजायउ णिवसणभूसणउं । 10  
 लायणु भणमि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइं अट्टियचम्मइं ण छिरेंउं णउ मुहि मीसियउ

घणधंदिमहि कंचणपडिमहि संणिहु देहुं पयासियउ ॥ १३ ॥

## 14

हुहु देउ णिसण्णउ गम्भहरे  
 ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर  
 वरिसिय कण्पयरु कुसुमवरिसु  
 एए के को हं कवणु घरु  
 सुत्तुट्टिउ जिह जा संभरइ  
 बुज्झिउ सद्वुद्धहु संवरिउ  
 उट्टिउ सीहाँसणि संणिहिउ  
 जिणु कामकसायविवज्जियउ  
 उरंपेल्लियपीणपयोहरहं  
 णक्खत्तकंतिसंकासणह  
 चिरभवपरिपालियसुद्धवय  
 सो एयहिं सहुं सुहुं तहिं वसइ

णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे ।  
 घाइय जयजय पभंणंत सुर ।  
 अमरंगणगणु णच्चिउ सरसु ।  
 अवलोयइ णियउरु पाँउ करु ।  
 ताँ अवहि तासु मणि वित्थरइ । 5  
 संणासु वि जं णरभवि चरिउ ।  
 देव्हिं अहिसेउ तासु विहिउ ।  
 तेण वि परमेसरु पुज्जियउ ।  
 चालीससयइं पवरच्छरहं ।  
 महएविसयंपहकणयपह । 10  
 कणयलय सुहासिणि विज्जुलय ।  
 एक्कं पक्खेण समूससइ ।

घत्ता—सुहसाउ परं परमाउ जलहिमाणवित्थेरियण ॥

सो जीवइ एक्कंसु जेमइ वरिससहासें भरियण ॥ १४ ॥

६ M संपडउ; BP संपडिउ. ७ B पायपउ. ८ MBP add after this: कण्णें सहुं कुंडलु विप्फुरिउ.

९ MBP चलिय. १० MBP आणिमिस°. ११ MBP सिरउ. १२ T घणणिविडं. १३ MB देउ.

14. १ P पभंणति. २ MP सरिसु. ३ MRP पाय. ४ MBP तो. ५ P सिंहासणि. ६ MB देविहिं.

७ M घरि; BP उरि. ८ P °हरिहं. ९ M विज्जुलिय. १० MBP सहुं तहिं. ११ MB थिरु; P थियउ

१२ MBP °वित्थरियण. १३ M एक्कुसु.

14. 10 a सं का स ण ह सदृश न खाः. 14 ए क सु एक वार म्.



## 15

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ  
 तहु पल्लपुहुत्ताउसि वणिय  
 कालेण चिरंतण अवहरिय  
 तहि अहरुलइ कामेण रसु  
 तहि णाहिदेसि गहिरत्तणउं  
 तहि थणजुयलइ कढिणत्तणउं  
 मंदरकंदरि कीलियखयरे  
 तहि तणुपवियारैं गय दिवस

सुहकारि ण केण णियच्छियउ ।  
 मालूरपीणपीवरथणिय ।  
 अणेक्क सयंपह अवयरिय ।  
 तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।  
 तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं । 5  
 तेण जि संणिहियउं अप्पणउं ।  
 कुंडलरुजगद्दिगुहाविवरे ।  
 तहु ललियंगहु रइरमणवस ।

घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसिहिं पुराणहिं वज्जरिण्णं ॥

गयकालइ अइअसरालइ पुष्पयंतगइसंभरिण्णं ॥ १५ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महकइपुष्पयंतविरइय  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिण्णं महाकव्वे महाबलसंणंसमरणं ललियंगुप्पत्ती णाम  
 एक्कवासमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥

॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B समिच्छियउ. २ MBP °पहुत्ताउस धणिय. ३ T<sub>p</sub> रिसहु. ४ MB पुराणइ, P पुराणिहिं.  
 ५ MBP वज्जरिय, T वज्जरइ. ६ MBP °संभरिय; T संभरइ. ७ MBPK संणासर्णं.

15. 1 a समुच्छियउ समुच्छित्तः उच्चः. 2 a पल्लपुहुत्ताउसि पल्यं पृथुत्वं आयुर्यस्याः; वणिय  
 वनिता. 9-10 भरहाहिवेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति । हे भरताधिप श्रेणिक, निशृणु त्वम् । पूर्वगते  
 कालेऽतीवासरा ले अतिशयेन बहुतरे भरतो नष्टः । रिसहु ऋषभनाथस्तस्य पुराणानि वज्जरइ कथयति । तस्य च  
 कालस्यानौपायभूतां (?) पुष्पदन्तगतिं चन्द्रादित्यगतिं स्मरति संप्रधारयति । अथवा पुष्पदन्तजिनस्य गतिं मुक्तिं  
 तत्प्रापकमार्गं वा संभरइ धरति पुष्पाति वा । रिसिहि मि ति पाठे ' गए कालए अइअसरालए तह तणुपवियारैं  
 गयदिवसहो ललियंगहो ' इति भरताधिप निशृणु । कथंभूते काले पुराणए वज्जरिण्णं ऋषिभिर्गणधरदेवादिभिः पुराणे  
 कथिते तत्कालनयनार्थं पुष्पदन्तगतिः संस्मृता ' इति.



## 2

ता ललियंगे तं आयणिवि  
 तित्थइं जाइवि सुहत्तित्थंकरु  
 कुवलएहिं कुवलयउद्धरणु  
 सेंदूरैहिं दूरुज्झियवम्महु  
 वासंतहिं वसिल्लु जियविग्गहु  
 तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणित्त  
 बंधूएहिं बंधविद्धंसणु  
 घणसालेहिं सालसुंसालिलघणु  
 धूर्वहडेहिं णिहीहडदावउ  
 मालईहिं मालइयामहिरुहु  
 अच्चुयकप्पजिणालउ जाइवि  
 जीबित्त मुक्कउ खाणि ललियंगे

वारवार णियहियवइ मणिवि ।  
 चंपएहिं परं परमसुहंकरु ।  
 कुंदहिं कुंददसणु सुहकारणु ।  
 मंदारहिं दारासाणिम्महु ।  
 जूहियाहिं रिसिजूहपरिग्गहु । 5  
 सुरहिं ण मेरुहु मेरुहु णहाणित्त ।  
 बउलहिं अवउलकेवलदंसणु ।  
 चंदणेहिं पसमियणिच्चंदणु ।  
 दीवएहिं तेल्लोक्कहु दीवउ ।  
 जिणु पुज्जियउं तेण पूंयारुहु । 10  
 चेइतरुतलि जइवइ झाइवि ।  
 अंगु विलीणउं पुण्णविहंगे ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणणि चिंतियसुहदाइणि ॥

मेरुहि पुव्वविदेहि थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥ २ ॥

## 3

कूरारिंदविददलवट्टणु  
 साहुद्धरणु जेत्यु णंदणवाणि  
 जेत्यु लोउ विणएणोणल्लउ

उप्पलखेहु णाम तहिं पट्टणु ।  
 णउ णंदंति कहिं मि दीसइ जणि ।  
 उद्धाणणु एक्कु जि करहुल्लउ ।

2. १ MBP °तित्थकर . २ M पर, B पर. ३ BP °सुहंकर. ४ MBP सिंदूरहिं. ५ P °णिम्महु.  
 ६ PT वासतिहि. ७ P मेरुहिमेरुहिं ८ MPK बंधणविद्धंसणु. ९ MB आवियल°; P आविउल°; T अवउल°.  
 १० P °सुललिय°. ११ धूर्वहडेहिं. १२ P पुज्जित्त. १३ MBP पुजारुहु. १४ MBPK °विहंगे; T °विहंगे.  
 3. १ M उप्पलु खेहु. २ MB णामे, णामु ३ T साहुलाभओणल्लउ.

2. 4 b दा रा सा° कलत्राभिलाष . 5 a वासंतहिं आतिमुक्तकै. 7 b अवउलकेवलदंसणु  
 अशरीरआहि सिद्धस्वरूपप्रापकं केवल केवलज्ञान यस्य. 8 a घण साल हिं कर्पूरै; b °णिच्चंदणु नित्याक-  
 न्दनम्. 10 a मालइया° लक्ष्मीलतिका. 12 b पुण्ण वि हंगे पुण्यक्षयेण.

3. 2 a साहुद्धरणु शाखानामुद्धरणम्. 3 a विण ए णोण ल्लउ विनयेन प्रणत.; b करहुल्लउ उट्टु.

करि कंकणु बंधणु पँइ जेउरु  
खलु तेळ्ळिर्यहरि णिरु णिण्णेहउ  
वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरे  
सरसंधाणु जेत्यु वायरणइ  
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु  
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि  
अंजणु णयणि जेत्यु ण तवोहणि  
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु  
जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ

अण्णु ण जेत्यु अत्थि दुक्खाउरु ।  
अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ । 6  
दीसइ तणुहि ण णरवणियरे ।  
णउ पर्यक्कभीमि रायरणइ ।  
वंसु जि छिइसहिउ णउ पुरयणु ।  
अंसिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।  
णायभंगु गारुडि ण धणज्जणि । 10  
दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।  
णउ मांणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥

जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

## 4

वज्जवाहु णामे तहिं णरवइ  
जासु कित्ति गय दसेहिं दियंतहिं  
जासु खँगु वेरंतु वियंभिउ  
जासु कोसु चाएण पँवित्तिउ  
जेण गोचु धम्मेषुज्जोइउ  
पेम्मसासवासालवसुंधरि  
सग्गहु गन्धवासि अवयरियउ  
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ

रिद्धिइ जेण परिज्जिउ सुरवइ ।  
आरुढी वरदिक्करिदंतहिं ।  
जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।  
जेण तिजगु सुँकुडंबु वि चित्तिउ ।  
जेण चित्तु जिणपयजुइ ढोइउ । 5  
ताँसु देवि णामेण वसुंधरि ।  
णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।  
णंदणु णं णरवेसु अणंगउ ।

४ M पउ; B पए. ५ P अत्थि जेत्यु. ६ MBP तेळ्ळियगिहि. ७ B णरवइणियरे. ८ MB परचक्कभीमिरायरणइ; P परयक्के भीम°. ९ MB असि अपेउ. १० MBP माणउ कया वि. ११ MBP मंदिरपंगणवाविहि.

4. १ MBP परज्जिउ. २ MBP दिसहिं. ३ MB खगि धीरत्तु. ४ MB पवत्तिउ, ५ MBP सकुडंबु व. ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि.

7 a सरसंधाणु स्वरसंधिः, पक्षे, शरसंधानम्; वाय रणइ व्याकरणे. 8 a हयवरु अश्ववरः, हतो वरो यस्य नारीगणस्य; b छिइ° छिद्रं दोषश्च. 9 a कुणडि कुत्सितनटे; विवणीवहि अष्टमार्गे. 10 a अंजणु अञ्जनं पापं च; b णायभंगु सर्पभङ्गो न्यायभङ्गश्च. 11 a संकरुपहु प्रभुरेव सुखकारी शंकरो न तु वर्णसंकरः; b दोहउ गोदोहकः, द्विधवः स्वामिद्वययुक्तः. 12 b मायंगउ मायां गतः. 13 कलहं सकण्टकम्.

4. 6 a पेम्मे त्यादि—स्नेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमिः.

कुडिलहिं केसहिं उज्जुयगत्तउ  
 किसमज्जेण थोरभुयजुयलें  
 सत्ते णाहि सरें गंभीरें  
 कोमलपयहिं अकोमलहत्यहिं

रहसहिं जंघहिं दीहरणेत्तउ ।  
 वियडे कडियलेण वच्छयलें । 10  
 छज्जइ सीसें छत्तायारें ।  
 अवरोहिं मि लंक्खणहिं पसत्थहिं ।

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एकहि विहिणा अकयविहायउ ॥

वज्जंकियकरचरणयलु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ ॥ ४ ॥

## 5

सो कुमारु तहिं वड्डइ जइयहुं  
 रुयइ सयंपह पियविरहालस  
 हा हे सगगल्लोय विच्छायउ  
 हा कप्पहुम किं किर फुल्लहि  
 हा तुंवरुं गाइयउं पहुच्चइ  
 हा लैलियंगदेवु कहिं पेच्छमि  
 को वारइ भवियव्वु ह्वंतउ  
 एम्ब चवंति विमुक्कुच्छाहिय  
 तावसघरिणि व मंदरवणी  
 गय सउमणससुरासाजिणहरि  
 पुव्वविदेहि तहिं जि सकमलसर

णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं ।  
 हा ण सुहासि मज्जु सर माणस ।  
 विणु णाहेण णिरुव्वसु जायउ ।  
 पइमरणे वि कट्ट णो हुल्लहि ।  
 रमणे विणु महु किं पि ण रुच्चइ । 5  
 हा हे सांवि<sup>३</sup> केव कहिं अच्छमि ।  
 इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।  
 दढधम्मे सुरेण संबोहिय ।  
 मंदरसेलहु मंदरवणी ।  
 मुइय सरारिविंबु धारिवि सिरि<sup>४</sup> । 10  
 णयंरि पुंडरिणिणि पंहुंरघर ।

घत्ता—जहिं घरसिहरि णडंतएण घरसिहरोवरि णिर्यंडि विलंविउ ॥

णवजलकणचक्खंतएण तूसिवि मेहु मऊरें चुंबिउ ॥ ५ ॥

७ MB उज्जुयगत्तहिं; P उज्जयगत्तहिं. ८ MBP दीहरणेत्तहिं, ९ MBP सुत्ते. १० MBP लक्खणेहिं.

5. १ P तुंवरु. २ MBP ललियंगु देउ. ३ MBT मामि and gloss in T सखि. ४ MBP भवंतउ. ५ P उरि. ६ MB ° सरि. ७ M णयर. ८ MB °घरि. ९ P णिवडि.

11 a सत्ते सत्त्वेन. 13 अ क य वि हा य उ अकृतविभागः.

5. 1 b णवरी साण क प्पि केवलईशानकल्पे. 6 b सां वि खामिन्. 9 a मंदरवणी मेदसट्टशवणी;  
 b मंदरवणी स्तोकरमणीया 10 a °सुरासा° पूर्वदिशा, b सरारिविंबु स्मरारिर्जिनस्तस्य विम्बम्.  
 12 विलं विउ स्थितः.

## 6

णिवेसेण रम्मा  
मुणिदेहिं सोम्मा  
धणेणं समिद्धा  
सुएणं पबुद्धा  
घणारामवंती  
सुपायारदुग्गा  
अणेर्यादुवारा  
जणेणं महत्था  
भएणं विमुक्का  
इमीए पुरीए  
महेणं महंतो  
पहू चक्कवट्टी  
कयंतो व्व दंडी

णहालगाहम्मा ।  
जिणुंदिट्ठधम्मा ।  
जसेणं पसिद्धा ।  
वएणं विसुद्धा ।  
विसाला वसंती<sup>५</sup> ।  
कयाणेयमग्गा ।  
अणेयप्पयारा ।  
कएणं कयत्था ।  
सया जा णिरिक्का ।  
अंमेओ सिरिए ।  
गुणी वज्जदंतो  
सुमग्गाणुवट्टी ।  
सई तस्स चंडी ।

5

10

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥

झत्ति झसंके कुद्धएण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

15

## 7

अरिहरिणोहवियारणंवाहहु  
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि  
सिरिमइ णामे तणुरुह हूई  
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि

तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।  
चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।  
णाइ कुमारहं कामविसूइ ।  
वम्महमुद्दावेसु व मण्णमि ।

6. १ P जिणोदिट्ठ°. २ B omits this foot. ३ MP विबुद्धा. ४ MBP add after this: गुणाणं पवित्ती. ५ MBP add after this: महातेयवंती. ६ MBP सपायार°. ७ MBP अणेयहुवारा.  
८ B एणं. ९ P इमेया सिरिए.

7. १ B °वावहु.

6. 1 a णिवेसेण रचनया. 9 b णिरिक्का चोररहिता. 11 a महेणंप्र तापेन. 13 b चंडी भार्या.

7. 2 a सिरिप्पहसुरहर° श्रीप्रभविमानम्. 4 b °मुद्दावेसु °मुद्रावतारः

तंबइं पोमरायरुइचोक्खइं  
 पेच्छिवि तरुणिजाणुसंधाणइं  
 ऊरुवाहियालिअंतरि चुउ  
 कासु ण गिण्णासिउ कर्यकित्तणु  
 मयरद्धयहुयवहधूमावलि  
 णाहिकूउ रइवइरससासणु  
 थणंथडुत्ते विडथडुत्तणु  
 वम्महभूमि जासु देही करु

रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं । 5  
 मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।  
 कासु ण चलइ वप्प मण्झेदुउ ।  
 सोणीगैरुयत्तणि ण गुरंत्तणु ।  
 रोमावलि तरुणहं हिययावलि ।  
 तिवलिभंगु वयभंगपयासणु । 10  
 अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।  
 तासु जि कामकुंडु थिउं सुहयरु ।

घत्ता—पोष्फैलिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥

मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियरु परिट्टिउ ॥ ७ ॥

## 8

बहुवण्णहिं णयणहि कयरायउ  
 कासु ण हित्तंउ किर धुत्तत्तणु  
 अंगोवंगपएसघुलंतहं  
 जाहि रूउ सुरंगुरु ण वियक्कइ  
 सा जामच्छइ मउलियणेत्ती  
 णिसि ससहरकरहिमलव लेंती  
 मणहरवणु जसहरु जिणु आयउ  
 वीणावंसमउंद्दणिणइहिं  
 ता उट्टिउ कलयलु गरुआरउ

रत्तउ एकवणु जगु जायउ ।  
 भउंहावंकत्ते वंकत्तणु ।  
 केसंपासु पासु व परचित्तहं ।  
 जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ ।  
 सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती । 5  
 सालसु अंगविलासु वहंती ।  
 कहिं मि णै मायउ देवणिकायउ ।  
 णाणाथोत्तवित्तथुंइसइहिं ।  
 वियलिउ कण्णहिं णिदाभारउ ।

२ MK कियकित्तणु. ३ MBPK सोणीगरुयत्ते ण. ४ MK गुरयत्तणु. ५ M reads this line as. अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थगथडुत्ते विडथडुत्तणु. ६ P पिउ. ७ MB कौकिलकठ°, P कौकिलिकंठ°.

8. १ MP बहुवण्णहिं रयणहिं, B विहवण्णहिं रयणहिं. २ M हित्तइं. ३ MBK केसपास. ४ MBP सुरगुरु वि ण अक्खइ. ५ B समाइउ. ६ P °णिणायहिं. ७ B ° थुइभइहिं.

6 b मय ण सं धा ण इं कामसंकल्पाः. 7 b °झेदुउ कन्दुक°. 8 a कय कि त णु कृतव्यावर्णनम्. 10 a रइ-वइरस° कामरसः. 11 a विसे ण वि स त्त णु विषेणेव विषत्वं नश्यति.

8. 8 a ° मउं द ° मृदङ्गः.

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तर्हि जम्मावरणइं खणि ओसरियइं ॥ 10  
सर्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

## 9

हा ललियंग देव पभणंती  
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवाएं  
उट्टिय णीससंति अइरीणी  
वम्महु अट्टे वि अंगइं तावइ  
मलयाणिलु पलयाणलु भावइ  
जहिं संजायउ वित्तु जि सयदलु  
णहाणु सोयणहाणु व णउ रुच्चइ  
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ  
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ  
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ  
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु  
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु

पंडिय स महियलि तणु विहुणंती ।  
आसासिय चलचामरवाएं ।  
दइयविओगवेयविहाणी ।  
धित्त जलह जलइ जणियावइ ।  
भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ । 5  
तर्हि किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।  
वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।  
णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।  
तंवोलु वि बोलु व कयतावउ ।  
पूरहुयलविउ महुरु णं महुरउ । 10  
सवलहणउं सबलहणु व दिहिहरु ।  
ता सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥

पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुन्वभवंतरु.

9. १ MBP पडिय महीयलि. २ MBP °णिहाएं. ३ MBP उट्टी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्टे अंगइं. ६ BP पलयाणिलु. ७ MBP पसहुय°. ८ MBP विरहु. ९ M सहीइ.

9. 2 a णि वा एं °नि पा तेन. 3 b दइये त्यादि— दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेशः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणवन्धनम्. 6 a सयदलु शतखण्डम्; b सयदलु कमलम्. 7 b वसणु वल्लम्; वसण° व्यसनं दुःखम्. 8 a असुहारु प्राणहारकः. 10 a अरइयरउ अरातिकरम्. 11 b संवलहणउ समालम्भनं चन्दनादि; सबलहणु खबलघातकं मृतकस्नानं वा. 13 सपियाइ स्वप्रियया; पईहरवाहें प्रदीर्घवाष्पेण.



## 10

सुर्यरिउ मुद्धइ पुव्विल्लउ वरु  
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि  
गउ धरणीसु णिहेल्लेणु जावहिं  
आइय दोहिं मि कहिउ णवेप्पिणु  
जसहरासु उप्पणणउ केवल्लु  
ता रापं सीहासणु मेल्लिवि  
भणिउ जयहि अरहंतभडारा  
जयहि तिसल्लवेल्लिणिळ्ळूरण

किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।  
पंडियधाइहि पुत्ति समप्पिवि ।  
पहरणउववणवाल्लेय तावहिं ।  
देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।  
आउहसालहि चक्कु णिरग्गल्लु । 5  
सिरमउडेण महीयल्लु पेल्लिवि ।  
जय संसारमहण्णवतारा ।  
सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥

ताँवुग्गामियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥ १० ॥

10

## 11

दंतघायगिरिभित्तिवियारणि  
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु  
समवसरणु गउ सेण्णे सहियउ  
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ  
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणेसरु  
चलचामरु णिच्चांमरसेविउ  
दुंदुंहरिउ दुहिरव्वणिव्वारणु  
छत्तसमासिउ छत्ततियालउ

कण्णतालअलिवारणि वारणि ।  
आरुहेवि ससिसियसुइणिवसणु ।  
अण्णु वि जो एहउ सो सहियउ ।  
कुसुमंविउ हयकोसुमसायउ ।  
अमउ मयारिवीढि संठिउ परु । 5  
भामंडलरुइमंडलदीवउ ।  
लोयसारु संसारुत्तारणु ।  
अतियालउ संबुद्धतियालउ ।

10. १ MBP सुर्यरिउ. २ MBP णिहेल्लेणु. ३ MBP °वालहिं. ४ MBP आविवि. ५ MBP सुणिम्मल्लु. ६ MBP ता उग्गामियउ.

11. १ P णिच्चांमरु. २ P दुदाहि°. ३ MBP दुहरव°; T दुहिरव°.

11. 1 b °ता ल° व्यजनः. 2 a कु लि स द स णु वज्रदन्तः. 3 b सहियउ आत्महितः. 4 b कोसुमसायउ कामः. 5 b मयारिवीढि सिंहासने. 6 b °मंडलदीवउ लोकप्रकाशकः. 7 a दुहिरव° दुःखितशब्दः. 8 a छत्ततियालउ छत्रत्रिकयुक्तः; b अतियालउ स्त्रीरहितः अतिक्रान्तकालो वा, °तियालउ °तिकालः

कमलासणु केसउ जगि सो हरु  
देउ अणिदिउ वंदिउ भावें  
अवहिणाणु राणं उण्पाइउ

तित्थणाहु णामेण जसोहर  
वडुंतेण विसुद्धं भावें ।  
रूवि दव्वुं णीतेलु वि होर

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जर ।

तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जर । १३ ।

12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु  
आलिंगिवि अंके वइसारिय  
चवइ णिवइ चिरु पइं जाणंतउ  
वीयइ कप्पि विमाणि णिवसिणि  
महुरालांविणि पाणपियारी  
मा झिज्जहि सो तुज्जु मिलेसइ  
वाँलहि मइ वीलइ पच्छाइय  
दुत्थिउ जडय्येणु कूरसरावहु  
उल्हाँवियविओयसंतावहु  
विबुहहु वुहु गोवालु वि गोवहु  
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहापइं

घत्ता—आउंचियतणु थरहण्डि न्ति

हयगयरहणरपयन्निय जंउं इ

## 13

तरलतमालतालतालीघणि  
 फलिहसिलायलम्मि आसीणी  
 सुइरु महारुहाउ संचालिवि  
 एक्कहिं दिणि करणिहियकवोली  
 णवकयलीकंदलसोमाली  
 पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंड्हि  
 पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ दंडहि  
 मायहि गुज्जु काइं किर रक्खहि

गइ णरिदि णवकंकेल्लीवणि ।  
 परभवपियसंभरणे झीणी ।  
 कोमलकरकमलें तणु लालिवि ।  
 पंडुगंडविलुलियचिहुराली ।  
 कंचुईइ औउच्छिय बाली । 5  
 पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।  
 पण्णवीडि दंतगहिं खंडहि ।  
 मज्जु वि किं गियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय णीससंति गियजम्मु पयासइ ॥

धराणि व वेल्लिहि मज्जु तुहुं जणणि माइ तुह काइं ण सीसइ ॥ १३ ॥ 10

## 14

धादइसांडि मेरुपुव्विल्लइ  
 भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ  
 गोरसडु जो तवसि वसिलु व  
 पविउलखलु वि ण जो खलसंकुलु  
 जो करि व्व णरवइढोइयकरु  
 कच्छुज्जलु णं गिहिवयधारउ  
 णागयत्तु णामे तहिं वणिवरु

पुव्वविदेहि देसि गंधिल्लइ ।  
 पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।  
 करिसणजाणउ जो सुंकरिल्लु व ।  
 जो हलहरु वि भुवाणि ण भणिउ बलु ।  
 बहुकंकणु णं वरकामिणिकरु । 5  
 गियवइरक्खिउ णं सेवारउ ।  
 सुरइवहुल्लियाहि वल्लहु वरु ।

13. १ MP तहिं कंकैल्लीवणि, B तहिं किंकैल्लीवणि. २ MBP °कयलीसुकद°. ३ MBP आउच्छी.  
 ४ MBP छडुहि.

14. १ MB धायइ°; P धाइय°. २ T भूयगामु. ३ MB सकरिल्लु.

13. 1 a तरल° दीर्घाः. 5 b कंचुईइ पण्डितया धान्या. 8 a मायहि धान्याः.

14. 2 a भूयगाउं भूतग्राम. शरीरम्. 3 a गोरसडु गोरसाढ्यः, पक्षे, गौः वाणी तत्र रसिक-  
 स्तपस्त्री स्यात्; b करिसण° कर्षकः, पक्षे, हस्तिशब्दः; सुकरिल्लु हस्तिपालकः. 4 a °खलु धान्यमलनस्थानम्.  
 5 b बहुकंकणु बहुजलधान्यः, पक्षे, बहुसुवर्णवलयः. 6 b गियवइ° निजपतिः, पक्षे, निजवृत्तिः; सेवारउ  
 सेवकः. 7 b सुरइवहुल्लियाहि सुरतिरेव वधूस्तस्याः.

णंदुं णंदिमित्तु वि सुउ जायउ  
पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ

णंदिसेणु तहि गन्भि समायउ ।  
धैरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।

घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी ॥

10

णामें णिण्णामिणि विसम दालिदिणि जणविप्पियगारी ॥ १४ ॥

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ  
णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु  
णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ  
अट्टभाउ हंडइं दो पियरइं  
कडियलवेढियवक्कलवासइं  
अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं  
पंडुरपविरलदीहरदंतइं  
वारणचरियहु तरुसंछणहु  
तहिं अंबरतिलयम्मि महीहरि  
सरलैहरियपत्तहु तंबिरयहु  
अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ

णिकलसउ णीरंजणु दीसइ ।

णिक्कणु तोलीरु व सारियरणु ।

तं<sup>२</sup> जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।

कयखलचणयमुट्ठिआहारइं ।

हडहडफुट्टफरुससिरकेसइं ।

5

कलहंतइं भासियदुव्वयणइं ।

जावच्छहुं परकम्मु करंतइं ।

तावेक्कहिं दिणि हउं गरुं रण्णहु ।

विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।

मइं उच्चोलि भरियं माहुरयहु ।

10

सीसि णिहिउ णं दुक्खहं भारउ ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं पंतु पलोइउ ॥

रयणालंकारहिं विप्फुरिउ जिणु वंदहुं णं सुरयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्टभारु

महियलि धिवेवि

णं दुक्खभारु ।

णरु मइं णवेवि ।

४ M णंदि णंदिमित्तु वि सुउ जायउ; B णंदिमित्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदिमित्तु वि संजायउ.  
५ MBPK वरसेणु. ६ P जणविप्पिय<sup>०</sup> but adds <sup>०</sup>मण<sup>०</sup> in the margin between जण and विप्पिय.

15. १ MBPK तोणीरु. २ M जं जिह. ३ MK गरु. ४ MBP तहिं पुणु अंबरतिलयमहीहरि.  
५ MB सरलु. ६ M भरय. ७ MBPK दुक्किय<sup>०</sup>. ८ MBP फुरिउ. ९ M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चल्लिउ.

15. 1 b णिकलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलानां चरितमनुष्ठानं प्रवृत्तिर्वा.

पुंछियउ हेउ	कहिं चलिउ लोउ ।	
ता तेण बुचु	सुतिगुत्तिगुचु ।	
सिद्धत्थकामु	जो <sup>१</sup> जित्तकामु ।	5
जो मुक्कसत्थु	मैणधरियसत्थु ।	
जो बुहणिहाणु	गुणमणि णिहाणु ।	
धुयमोहवासु	तरुमूलवासु ।	
जो पाँउसेसु	चम्मट्टिसेसु ।	
गयसरिरयालि	जो सिसिरयालि ।	10
बहि सयणसाइं	जो सुअवसाइं ।	
तिव्वुणहजेट्टि	वइसाहजेट्टि ।	
रवियर विसहइ	जोएण सहइ ।	
जो मुणिससंकु	हयपरमसंकु ।	
तहु गंपि वासु	पिहियासवासु ।	15
पणँवंति पाय	पुच्छंति राय ।	
परलोयमग्गु	सग्गापवग्गु ।	
धिरसंभवाइं	जाणइ भवाइं ।	
रिसि णाणधारि	जिणधम्मचारि ।	
इह गिरिवरम्मि	सो कंदरम्मि ।	20
णिवसइ कुलीणि	दोगच्चखीणि ।	

घत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिप दंडिखंडु पसरेप्पिणु थवियउ ॥

पइसिवि साहु मर्हासहहि जइपयजुयलउ भत्तिइ णवियउ ॥ १६ ॥

16. १ P पुछियउ. २ G omits this foot; K however adds it the margin.  
३ M मणि धरिय°. ४ B °मूलु. ५ P पावसेसु. ६ MB add after this: वरिसंति मेहि, दुहु सहिय  
देहि. ७ M पणवंत. ८ MBP महासहहो.

16. 5 a सिद्धत्थकामु सिद्धार्थे मोक्षे कामोऽभिलाषो यस्य. 7 b °णिहाणु नृभानु. 10 a गय-  
सरिरयालि गतो नदीनां वेगो यस्मिन् काले. 11 b सुअवसाइ षडावश्यकादिषु सुष्ठु उच्यतः. 12 a °जेट्टि  
°महति. 13 b सहइ शोभते. 14 b हयपरमसंकु हतपरमशङ्क. 22 दंडिखंडु शतजर्जरं जीर्णं सिक्कितं  
वस्त्रम्.

## 17

तवपहावविंभावियवांसवु  
 कवणें दइवें हउं दालिदिणि  
 कहहि देव तुहुं सच्चउ जाणहि  
 ता पभणइ समणगणपहाणउ  
 णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतरु  
 गाँमि पलासपुक्वि तहिं गहवइ  
 गेहिणि ताहि धूय तुहुं हूई  
 वीयरायसिद्धंतु पढंतहु  
 एक्कहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु  
 अण्णाणइ पइं उप्परि घत्तिउ  
 किमिकुलपूयरुहिरदुग्गंधउ  
 सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ  
 घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥

जो मंडइ जो खंडइ वि बिहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

## 18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ  
 भसणसरीरु धित्तु अण्णेत्तहि  
 पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ  
 ईसिं समेण मरेवि असुहाउलि  
 धम्मं मुच्चहि दुक्कियदुक्खहु  
 फणिचरणइं जागि को अहिणाणइ

पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।  
 हूई दोग्गयगोत्तणियंबिणि ।  
 दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।  
 दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।  
 आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु । 5  
 देविल्लु सुमइ तासु रंजियमइ ।  
 हूलिय जुवाणहं णं रइदूई ।  
 जीवाजीवभेय भावंतहु ।  
 हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।  
 रिसिणा तणुभूसणु व विचिंतिउ । 10  
 पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।  
 तैवं जि पुणु वि पदिट्ठु तइज्जइ ।

तुह अणुकंपभाउ संजायउ ।  
 पइं णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।  
 तेण जि खमभाउ जि संभाविउ ।  
 तुहुं हूईसि एत्थु दुग्गैयकुलि ।  
 धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु । 5  
 परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17. १ MBP °वासउ. २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो. ३ MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ.  
 ४ MP पइं जं. ५ MBP गाम. ६ MB ललिय°. ७ MBP तेम जि पुणु पइं दिट्ठु. ८ MBP तूसंति.

18. १ MP परिहरियकसायउ; B परिहरिसंकायउ. २ B °भाव. ३ MBP इसि उवसणें मरिवि.  
 ४ M असुहाहलि. ५ MB दुग्गम°.

17. 7 b हलिय कर्षकली.

18. 1 a परि हरि य स का य उ परित्यक्तस्वशरीरः.

लोइयधम्मु होई जलण्हाणें  
 धम्मु होइ पुणु पुणु अच्चवणें  
 धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि  
 धम्मु होइ तिलपायसभोयणि  
 धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु  
 धम्मु होइ पलवेहु करंतहु

वीरपुरिसभंडणवक्खाणें ।  
 पाहाणुप्परि पत्थरठवणें ।  
 धम्मु होइ सुंरहीतणुफंसणि ।  
 धम्मु होउ आसत्थालिगणि । 10  
 धम्मु होइ महु मज्जु रंसंतहु ।  
 छेलउ कुक्कुडु किडि मारंतहु ।

घत्ता—एहु कुलिगु कुधम्मु सुए एण णवर दुग्गइ जाइज्जइ ॥

जिण्णाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसालक्खणु किज्जइ ॥ १८ ॥

## 19

मेहलकण्हाइणदब्भयणइं  
 किं लिंगेण लिंगिसंदोहहु  
 अंतरंगु जसु सुधु ण दीसइ  
 दंडउ अप्पउ मुणिविहियारउ  
 उवसमैपुव्वाणुव्वयधारहिं  
 करपल्लउ परदविणि म ढोवहि  
 मुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु  
 अवरु पव्वपोसहु परिपालहि  
 अहिसिंचिवि अंचिवि णियसत्तिइ  
 तुसगासु वि उवसंतहु देज्जसु

धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं ।  
 जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु ।  
 कायकिलेसैं तहु किं होसइ ।  
 तासु तहँद्विउ भवसंसारउ ।  
 अलिउ म जंपहि जीउं म मारहि । 5  
 परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि ।  
 रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु ।  
 जिणपडिबिंबइं णिच्च णिहालहि ।  
 ताइं णवेज्जसु गरुयइ भत्तिइ ।  
 णियमएण णियमणु णियमेज्जसु । 10

घत्ता—पण्णासट्टुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि बालि जइ उवसहि ॥

सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुँहुं तं चिरदुरिउ पणासहि ॥ १९ ॥

६ M होय. ७ MBP फुडु अच्चमणें. ८ MBP तणु सुरही फंसणि. ९ P पियतहं.

19. १ B किं लिंगिण सलिंगिसंदोहहु. २ MBP सीसइ. BPT मुणिवहियारउ. ४ P तहिद्विउ.  
 ५ P उवसमु. ६ MBP जीव. ७ MBP तं तुहुं.

8 a अच्चवणें आचमनेन. 9 a घइ घृते, b सुरही तणु° गोशरीरम्

19. 1 a मेहलकण्हाइण° मेखला कृष्णाजिनं कृष्णहरिणचर्मच, दब्भयणइं दर्भतृणानि. 11 पण्णा-  
 सट्टुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिमाणोपवासै. 12 सुयहरि श्रुतधरे,

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ  
 चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ  
 दुच्चितियउ दुबोल्लिउ दुक्किउ  
 ता सा खविय तविय गयगावें  
 महु पाँवोहे कहिं पावणियत्तणु  
 मायामोहु मुइवि मणुँ रोहिवि  
 गय रिसिवइ वंदिवि णियँवासहु  
 काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं  
 खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु दिण्णउं  
 पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें

ते णिंदंतहं दुम्मइ विलसइ ।  
 वंदणिज्जु भणु किह णिदिज्जइ ।  
 आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।  
 अंतोअंतो पच्छत्तावें ।  
 जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु । 5  
 एमप्पाणउं णिदिवि गरहिवि ।  
 हउं लगी सहि सुयउववासहु ।  
 मइं दाँलिदिणीइ तहिं तइयहुं ।  
 छड्डिउ सब्वजीवपेसुण्णउं ।  
 बोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें । 10

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥

एकू जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्तिं ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु  
 पुणु आहारु सरीरु सुएप्पिणु  
 मुइय गंपि ईसाणविमाणइ  
 ललियंगहु महएवि सयंपह  
 मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु

गुरुउर्वएसलेसु पाँलेप्पिणु ।  
 परमक्खरइं पंच सुमरेप्पिणु ।  
 सिरिपहणामि रमियगिन्वाणइ ।  
 हूई जुइणिज्जियचंदप्पह ।  
 इह हूई सग्गाउ चएप्पिणु । 5

20. १ MBP किह भणु. २ BP पच्छत्तावें. ३ BP पावहि. ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५ MBP सणिवासहु. ६ P दालिदिणि एत्तहिं. ७ MBP भोयणु.

21. १ P उवएसु. २ MB पावेप्पिणु. ३ B omits this foot.

20. 6 a मणु रोहि वि मनौ निरुध्य. 10 a दोणय हुल्लें दमणपुण्णेण; b दुल्लहतेल्लें परसर्मापे याचितेन तैलेन.



पिउं सुयरंतिहि चंदु वि तावइ  
 अट्टु वि अंगइं हयइं अणंगे  
 एम चवेप्पिणु पडु आणाविउ  
 णियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ  
 अण्णण्णइं कीलासंताणइं  
 अण्णइं तहिं रईरहसंचरियइं  
 एत्थु वसंती एत्थु रमंती  
 एम भंणेप्पिणु गुज्जु ण रक्खिउ

चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ ।  
 तुहुं किं ण मुणहि इंगियेळिंगे ।  
 णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ ।  
 फुरइ व चेलंचलि संणिहियउ ।  
 लिहियइं सरिसरगिरिवरटाणइं । 10  
 धुत्तहं भईयइं गूढइं धरियइं ।  
 सो एहउ हउं एही हौती ।  
 सुंदरीइ णियहियवउ अक्खिउ ।

घत्ता—आणहि पंडिइ प्रीणपृउ फेडहि वम्महवाहि महारी ॥

भरह पुष्पदंतुज्जालिय अण्ण ण तियमई मइगरुयारी ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे णिण्णामियाधम्मलंभो णाम  
 बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥

॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP पिय सुमरतिहि. ५ B इंदियलिंगे. MB सरसरि°. MBP °गहणइं. ८ MBP रइरससंचरियइं.  
 ९ P भइए and gloss भयेन. १० MBP कहेप्पिणु. ११ MBP पाणपिउ. १२ MBP फुष्पयउ°. १३ MBP णियमइ.

## XXIII

तं णिसुणिवि पडु करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥  
अइकुडिल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।  
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुद्धयधयमालाचवलं	हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।	5
गायणगणगाइयजिणधवलं	सिद्धंतपढणकलयलमुहलं ।	
गयणगणलगमहासिहरं	अइरुंदचंदकररासिहरं ।	
जंक्खिजक्खपडिमाणिलयं	चिहुमतल्लंभयतलसिलयं ।	
मरगयमयखंभंसमुद्धरियं	मणिमत्तवारणालंकरियं ।	
आयासफलिहमयभित्तयलं	हरिणीलणिवद्धधरित्तियलं ।	10
उर्व्वाइयधूवंगारवरं	गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।	
घल्लियपफुल्लियफुल्लचयं	ओलंचियमोत्तियदामसयं ।	
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं	णविऊण जिणं जियजम्मजरं ।	
पडु विउसिइ पसरिवि दावियउ	णायरणरेहिं परिभावियउ ।	

MBP give, at the commencement of this Sam'ghi, the following stanza—

अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुम्भकर्णिकं  
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।  
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमल  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

1. १ P सतेय. २ MBPK पवणुद्धय. ३ M गायणगइ. ४ M आरुंद. ५ M जक्खिजक्ख. ६ MBP तल्लंभय. ७ M खध. ८ P मयमत्त. ९ MBP भित्तियलं. १० MBP उव्वाइयधूवंगार.

1. 5 b सुहा सुधाचूर्णम्. 8 b विहुमेत्यादि—विद्रुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला यत्र. 14 a विउसिइ विदुब्धा धात्र्या.

घत्ता—इय दसदिसु वत्त समुच्छलिय जो पडवइयरु जाणइ ॥ 15  
 धरणीसरतणयहि सिरिमइहि सो थणजुयलं माणइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—विविहाहरणकिरणविप्फरणोहामियफणिसुरेसरा ।  
 ता मायंगतुंगतुरैयासण चल्लिय णरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तै णिज्जियसियसरयं णिवसियविरयं वारियणरयं ।  
 पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुभवियवरयं ।  
 दिट्ठो लिहिओ<sup>३</sup> तेहिं पडो झंसइंधणडो मणि णच्चियओ । 5  
 तं पेच्छेवि अहिलसियसिवो भणु को ण णिवो रोमंचियओ ।  
 केण वि भणिया—पुत्तलिया लयकोमलिया वण्णुज्जलिया ।  
 एसा बाला सामलिया णामे ललिया अलिकोत्तलिया ।  
 चिरभवि हौती मज्झ पिया पच्चक्खसिया विहिकत्थणिया ।  
 केण वि भणियं—मईं मुणिया सुरवरगणिया मृंगलोयणिया । 10  
 हौती कंते महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।  
 केण वि भणियं—दिण्णसिरि ईहु मेरुगिरि इह सा तरुणि ।  
 इह मइं देवे हौतइण गायंतइण मोहिय हरिणि<sup>१५</sup> ।  
 कु वि भणइ—आसाइ विणु गुरु पक्खु खणु किह दिणु गंवमि ।  
 कु वि<sup>१५</sup> भणइ—हा किं करमि णिच्छउ मरमि जइ णउ रममि । 15

११ P °तणयहु; K तणहे. १२ MBP जुयलउ.

2. १ M °हरणकिरणविप्फरणोहामिय°; B °हरणविप्फुरिणोहामिय°; P हरणकिरणविप्फुरिणोहामिय°. २ P तुरयासणा. ३ B लिहिओ तहे तेहिं; P लिहिओ सो तेहिं. ४ MBP झसच्चिध°. ५ MBP चित्तविओ. ६ P पेच्छेविणु, ७ MBP भणियं. ८ MBP पत्तलिया, ९ MPB लइ°, १० M मईं मुणि-मुणिया; P मणि मुणिया. ११ MBP मिय°. १२ MBP कंता. १३ MBP महुल्लियगिरि. १४ MBP add after this: मज्झु वि धरिणि. १५ MBP को वि एम्ब भणइ.

15 पडवइयरु चित्रपटव्यतिकरः.

2. ३ सियसरयं शुक्कशरत्पक्षे शुक्कमेव. 4 सुभवियवरयं सुष्ठु भव्यानां वरदम्. 7 लयकोमलिया लतावत्कौमला. 9 °सिया लक्ष्मी. विहिकत्थणिया विधिना कुत्रापि नीता, विधिकदर्थित्यर्थः.

को वि सँदीहउ णीससइ तावें सुसइ उरयलु हणइ ।  
 अप्पउ घल्लइ धरणियले आणेहि हले तं<sup>१७</sup> मुहुं भणइ ।  
 को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीवं थिउ ।  
 उच्चाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ ।  
 धाँई जिणेप्पिणु उँत्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु ।  
 हउं वरइँचु भँवंतरिउ इह अवयरिउ तहि धँरिवि करु ।  
 घत्ता—विहसेवि पबोल्लिउ पंडियइ जो गुज्झइं महुं अक्खइ ॥  
 सो सुँअवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थे चक्खइ ॥ २ ॥

20

## 3

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउं भासए ।

सो सरसरविहिणु सा ण लहइ पँइसइ णरँयवासए ॥ १ ॥

ता तेत्थंतरि	चिरहमहाभरि ।	
कुँमरिहि घणथणि	जायइ जोब्बणिँ	
छक्खंडावणि	जिणिवि महाफणि ।	5
देव वि खयर वि	णित्तेयइ रवि ।	
चोयँवि गयवइ	आयउ महिवइ ।	
पुरिहि पइट्टउ	सघरि णिविट्टउ ।	
महुरालावें	सपणयभावें ।	
सुय बोल्लाविय	णिरु संताविय ।	10
पियपरिणामें	णिह्यकामें ।	
पुत्ति म झिज्जहि	लइ पडिवज्जहि ।	
ण्हाणु विलेवणु	कंकणु परिहणु ।	

१६ MB सुदीहउ. १७ MBP तम्महुं. १८ MBP णिज्जीउ; १९ MBP घाइउ. २० MBP दुत्तरहिं.  
 २१ P वरयत्तु. २२ M भवंतरु. २३ MBP धरमि. २४ M सुह<sup>०</sup>.

3. १ P आलियउ भासइ. २ MBP णिवडइ. ३ P णरइ<sup>०</sup>. ४ MBP एत्थंतरि. ५ MBP read this line as: पसरियरायइ, कुवरिहि ( P कुवरहि ) जायइ. ६ MBP add after this: उत्तुंगत्थणि, घणि घणि जोब्बणि. ७ P चोइयगयवइ. ८ M कंकणु पहिरणु; B कंकणु परिहरणु; P कंचणु पहिरणु.

17 तं तां तरुणीम्; मुहुं धारंवारम्. 23 <sup>०</sup>सु अ<sup>०</sup> सुता.

3. 2 सरसरविहिणु स्मरबाणविभिन्नः,

गुरुयणु रंजहि	भोयणु भुंजहि ।	-
वज्जउ वायहि	णच्चहि गायहि ।	15
अक्खरु भावहि	पक्खि पढावहि ।	
तुज्झु मुहुल्लउ	तिहुंयणमल्लउ ।	
हंउं णालोयमि	तो णउ जीवमि ।	
तायहु जंपिउ	तं मुद्धइ किउ ।	
पुणु आवेप्पिणु	पणउ करेप्पिणु ।	20
णियडि णिसण्णी	विरहविसण्णी ।	
आलिंगेप्पिणु	सिरि चुंवेप्पिणु ।	
णयणाणंदे	भणिय णरिंदे ।	
चाह चिराणउं	कहमि कहाणउं ।	
मयरद्धयसिरि	णिसुणि किसोयरि ।	25

घत्ता—चिरु पत्थु पुंडरिगिणिपुरिहि इमहु भवहु पंचमंभवि ॥  
हउं अद्धवक्खवट्ठिहि तणउ हौतउ कुलि णिच्चुच्छवि ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—णामे चंदाकित्ति जर्याकित्ति सुमित्तवरेण भूसिओ ।

मुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥ १ ॥

णिरुवमसुहसयहरिसियमणेहिं	चिरु भुत्तु रज्जु दोहिं मि जणेहिं ।	
अवसाणि बिहिं वि सिरि परिहरेबि	पीईवडुणि वणि पइसरेवि ।	
पयसेवियचंदसेणगुरुहि	किउ तँवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।	5
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ	सह चेय बिहिं वि कय कालगइ ।	
बिण्णि वि जाया माहिंदसुर	सत्तंबुहिआउपमाणधर ।	
चिरु जीवेप्पिणु तँहिं तियसथुय	पुण्णक्खइ सुंदरि तँहिं वि मुय ।	

१P अक्खर. १० MBP जइ ओहुल्लउ. १२ MB हउं आलोयमि, P हउं अवलोयमि. १२ G omits विरह-विसण्णी. १३ MB पंचमइ भवि.

4. १ MBP जसकित्ति. २ M °धरेण. ३ MBP तउ. ४ MBK हियतियसणुय.

19 a जं पिउ यत्प्रियं, जल्पितं वा.

पुक्खरवरि पुव्वमेरुसिहरे तद्दु पुव्वविदेहि रसंतकरे ।  
 धणधणरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ । 10  
 जहिं दहिउ दुध्दु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु ।

घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हँलिणिहि कह भासइ ॥  
 आरत्तचंचु चंचेलमुहु जंपमाणु मँणु तोसइ ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—मत्तमहंतर्धवलगलगज्जियवहिरियविउलगोउले ।

विसरिसाविसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥ १ ॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलदलच्छाइयविमलजले ।  
 जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयच्छरणे ।  
 छच्चरणालंकियदियपवरे दियपवरकलरवुटंतसरे । 5  
 सरसीमारामपयससुहे सुहयरछुहपंडुरि रायगिहे ।  
 गिहसिहरालिं गियघणणियरे ।  
 णियँरायणायणिच्चित्तँपय पयपाडियपरणरवीरसए ।  
 सयवत्तर्पसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरिं सिरिहे ।  
 सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ । 10  
 रइ विव कामहु कंत सइ सइ णं देविंदहु हंसगइ ।

घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सँच्चसउच्चें ॥

अँम्हइं विणिग वि सग्गहु ल्हसिय हयखयकालदइच्चें ॥ ५ ॥

५ P हालिणिहि. ६ M जणु.

5. १ M °धवलगज्जियरववहिरिय°. २ MB °तरुणी. ३ MB तरुणतरु°. ४ MB छच्चरणि.  
 ५ MBP °पंडुर°. ६ B दियराय°. ७ MBP णिच्चंत°. ८ MBP पयासिय°. ९ P मंदरिसिरिहे. १० MBP  
 कामहु तद्दु कंत. ११ MB सिरिमइ सच्चें. १२ P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु ल्हसिय अँम्हइं हयणियमिच्चें.

4. 10 a जा या इ स उ जातातिशयः. 12 सु उ शुकः; ह लि णि हि कर्षकस्त्रियः 13 चंचेल मुहु  
 वक्रमुखः.

5. a जलजंत° जलयन्त्राणि; b °छच्चरणे भ्रमराः षडाचरणकाः पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः.  
 5 b दिय° द्विजाः पक्षिणः.

## 6

दुवई—जाया ताहं गब्भि हलहर हरि बिण्णि वि सुकयकारिणो ।

चडिय जुवाणभावि सिरिवम्मविभीसँणणामधारिणो ॥ १ ॥

दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि

अहिसिचिवि अम्हहं देवि महि ।

गउ जणणु सुधम्मसूरिसरणु

किउ घोरो वीरु जिणतवचरणु ।

छिण्णउं उप्पात्तिजरामरणु

पत्तउ कवलु णिक्कलकरणु ।

5

छुहु परिभाविउ कंचणु वि तणुँ

राएण विमुक्कहु घरुँ जि वणु ।

णिज्झाइयअज्झासाइयहो

थंडिलु वि थणत्थलु राइयहो ।

गिरिकंदरुँमंदिरु किं करइ

दुक्कियपरिणामु ण तं धरइ ।

इय भणुँवि मणोहर थिय भवणे

जिणवरु झायंतिइ णिययमणे ।

चिण्णउं जणणिइ दुच्चरु चरिउ

पक्खालिउ जम्मंतरदुरिउ ।

10

संणासणि झाइवि पंचगुरु

सा हूई दिवि ललियंगसुरु ।

घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसातिसिउ मुयउ बिहीसँणराणउ ॥

उप्पण्णउ णरयमहाविवरि कालेँ को ण विलीणउ ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—लच्छिसरासईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ ।

दुत्थियकप्परुक्खु व सुहाहिउ खयकरिदसणपेल्लिओ ॥ १ ॥

संबु पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ

सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ ।

हा चक्कपाणि हा पाणपिय

हा बंधव किं अवहेरि किय ।

सुसहोयर दामोयर चवहि

हा एक्कवार मइं संथवहि ।

5

सुर णरवइ णिहिवइ पुहइवइ

किं मरइ भडारउ चक्कवइ ।

मइं मिच्छाभावेँ भावियउ

मडउल्लउ खंधि चडावियउ ।

6. १ MBP °बिहीसण°. २ MBP सुधम्मु. ३ MB पत्तउ णिक्कलु णिम्मलु करणु, P पत्तउ णिम्मलु णिक्कलकरणु; T णिक्कलु करणु. ४ M तिणु. ५ M घर. ६ P °कदर. ७ MB भरिवि; P भणिवि. ८ P °तिसातिसउ. ९ B बिहीसणु.

7. १ MBT सउ. २ P एकवार.

6. 4 a जणणु पिता श्रीधर. 5 b णिक्कलकरणु सिद्धावस्थाप्रापकम्. 7 a णिज्झा इये त्यादि-निर्घ्याता अभिनवा वधूस्तस्याः खाद आलिङ्गनम्. 11 b दिवि स्वर्गे.

7. 3 सडु मृतकम्.

तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं  
मइमूढु ण काइं मि संभरमि  
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु  
पहि थिउ चोयंतुं वसह सभय  
मइं भणिउं म णियबलु णिट्ठवहि  
किं णेहु होइ दासीसुयहे  
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ

जंपवि पच्चुत्तरु देहि महु ।  
पुरगामसीमरणहिं चरमि ।  
ललियंगु ललियभासिरु अमरु । 10  
सो जंतें णिप्पीलइ सियय ।  
किं पाणिइ लोणुं उट्ठवहि ।  
किं तेल्लु विणिग्गइ वालुयहे ।  
जइ एउं बप्प पइं जाणियउं ।

घत्ता—तो एउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसूरहि हलहर ॥

15

जे मुयं ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥

8

दुवई—हाहाकार पुत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।

धीराधार वीरं विउलं भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायंर भायर पुक्करहि  
तुह मंदिरि णिवसिवि कियंउ तउ  
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो  
सच्चउ णिच्चेयणु जाणियउं  
लहु वासुएउ सक्कारियउ  
वयसंजमभारधुरंधरहो  
पंचिदियगयउल्लु पीडियंउ  
पुंणु सव्वभहु उच्चाइयउ

हउं माय तुहारी संभरहि ।  
संपत्ती तेण सुहासिभबु ।  
मइं मुहुं जोईउ चक्केसरहो । 5  
सल्लु रंइउ हुयासणु आणियउ ।  
तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।  
दिवखंकिउ पासि जुयंधरहो ।  
तंउ कियउ सीहणिक्कीडियउ ।  
मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ । 10

१ MBP जंपमि. ४ मइमूढ, ५ P चोवंतु, ६ P लोणुं. ७ B मय.

8. MBP पुत्त मं मेल्लहि, २ MBP धीर, ३ P विउणं, ४ भायंर भायर, ५ MK कियउ, ६ P जोयउ, ७ P सल्लु रयउ, ८ MBP संकारियउ, ९ P पीलियउ, १० B omits this foot, ११ B omits this line, १२ K मिच्छत्तु जडत्तु.

10 a जणणिचरु पूर्वभवस्था जेननी. 11 b सियय सिकता वालुका. 15 कीस किमर्थम्.

8. २ धीराधार धैर्याधाराः. 4 b सुहासिभबु देवभवः 6 b सल्लु नावशयनं चिंता. 7 b सरज्जि स्वराज्ये.



अणसणविहाणि जं साहियउ  
हउं अरुहु भरेण भरेवि मुउ

तं चउविहु मइं आराहियउ ।  
अञ्जइ आहंडलु णवर हुउ ।

घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मइं अञ्जयकंप्पहो णियउ ॥  
ललियंगदेउ सो णिययगुरु मूरुयइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—चुउ ललियंगदेउ जंवूतरुलंछेणि दीवि सुहवई ॥  
सुरागिरि सुरादिसाइ सुविदेहइ जणमहि मंगलावई ॥ १ ॥

खगसंसाहियविजावलिहे  
गंधव्वणयरि तहिं विमलजसु  
पायडपयाउ णरवइ वसइ  
तहि देविहि उयरि पहावइहि  
णामेण महीधरु धीरइणुणि  
सुउ रज्जि थवेप्पिणु सेवियउ  
मुत्तावलितवतावे तविउ  
संतें दंतें रुद्धासवेण  
णं सससिणिसाहि पहावइहि  
तउ दिण्णउं कयजगसंतियइ  
सीसिणियइ पुण्णु समाज्जियउ  
रयणावलि णामें जणियदिहि  
घत्ता—स वि मय तहिं णिरु णिरसणु करिवि आउक्खइ किं जिज्जइ ॥ 15

रुप्पयगिरिंदउत्तरथलिहे ।  
वासैउ णामें वासवसारिसु ।  
जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ । 5  
उप्पण्णउ कलमरालगइहि ।  
ताएण अरिंजउ दिव्वसुणि ।  
णिगंधभाउ संभावियउ ।  
दढकम्मालाणु परिकखविउ ।  
अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण । 10  
पणवंतिहिं ताहि पहावइहि ।  
सुद्धइ पोमावइकंतियइ ।  
सविसयकसायवल्लु णिज्जियउ ।  
कयदेहसोसउववासविहि ।

सोलहमइ सग्गि पडिंदु हुंय भणु किह धम्मु ण किज्जइ ॥ ९ ॥

१३ B omits this foot. १४ P °कप्पहि. १५ P गुरुयइ.

9. १ MBP ललियंगु देउ. B °ललियंगु देउ. MBP सुविदेहइ MBP °पुव्वत्थलिहे. ५ P वासव.  
६ P दिव्वसुणि. ७ MBP परिकखयउं. ८ MBP जगकयसंतियइ. ९ MBP जायदिहि. १० MBP किज्जइ.  
११ MBP हुउ.

11 b चउ विहु चतुर्विधमाराधनास्वरूपम्. 12 भरेण भरेवि अत्यर्थं स्मृत्वा.

9. 1 सुहवई सुखवती. 2 जणमहि जनपदः 5 b कलि° कलहः पाप वा. 9 b कम्मालाणु कर्म-  
बन्धनम्. 11 a सससिणि साहि चन्द्रयुक्तायां रात्रौ. 15 जिज्जइ जीव्यते.

## 10

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छिमदिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।

पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियल्लत्तयहो	जइणिदेसियरणत्तयहो ।	
परिगणियमुणियकालत्तयहो	हयजाइजरामरणत्तयहो ।	
थिरचरियधरियगुत्तित्तयहो	सुईसंबोहियभुवणत्तयहो ।	5
विद्धंसियणियसल्लत्तयहो	परियाणियजीवगइत्तयहो ।	
वियलियरसाइगव्वत्तयहो	गईकम्माइयदेहत्तयहो ।	
वज्जियहेट्ठिमझाणत्तयहो	कयकिरियाल्लेयपयत्तयहो ।	
केवलचेयणगुणइत्तयहो	सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।	
णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो	हउं करिवि कुहरककरवरहो ।	10
फणिमणिभाभासियअहिहरहो	गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।	
तहि णंदणि सुपसिद्धम्मि वणे	इंदासासंठियजिणभवणे ।	
विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सई	महिहरु बोलाविउ मुद्धि मई ।	

घत्ता—किं ण मुणहि तुहुं खयरहिवइ हउं णंदणु तुह होंतउ ॥

सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु ख्यंतउ ॥ १० ॥

15

## 11

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।

सिरिहररायधरिणिमणहरिभुवु किं णंउ सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजहि विसयविसु	विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।
भवि भवि संघारइ विसयविसु	ता तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।

10. १ MBP पच्छिमदिसि मंदरि पुव्व°. २ MBP सयलत्तयहो. ३ MBP थियचरिय°. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP गयकम्मा°.

11. १ MBP °भउ. २ MBP ण सरिसि. ३ MBP भुंजसि.

10. 1 णलिणं कदी वि पुष्करद्वीपे. 5 b सुइ° आगमः. 6 b °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमू-  
त्रिका च. 7 b देहत्तय° कार्मिकमौदारिकं तैजसं च. 8 b °पयत्तय° प्रयत्नः. 9 a ° इत्तयहो युक्तस्य.  
15 सीरि° बलभद्रः.

अहिणंदिवि सुर्रवरराउ खयरु  
 भडभक्खणि णावइ डाइणिय  
 ढोइवि णंदणुं मुणिगुरुविहिउ  
 सहुं अइवहुयहिं विज्जाहरहिं  
 तवुं चिण्णु तेण कणयावलिय  
 कालेण गंलंते महिहरहो  
 सो प्रीणिप्राणपरिरक्खयरु

संप्रौइउ सहसा णियणयरु । 5  
 महिकंपहु पुत्तहु मेइणिय ।  
 वयमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ ।  
 तरुकोडरगिरिविवरंतरहिं ।  
 चिरसंचियदुरियावलि गलिय ।  
 पुणु अंतयाल्लु संपण्णु तहो । 10  
 प्रीणइ जायउ तियसिंदवरु ।

घत्ता—जीवियउ वीससायरसमइ पुणु काले संचालिउ ॥

धादइसंडइ पुव्विल्लसुए जो सुरगिरितरुमांलिउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया ।

उज्झाणयरि तीइ जयवम्मु णरेसरु सुण्णहा पिया ॥ १ ॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ  
 दिक्खहि कारणे ओलग्गियउ  
 ते दिण्णइ पंच मेहव्वयइ  
 मयणिज्जियसीहे णां मया  
 आयंबिल्लु तवुं दुच्चरु चरिवि  
 होऊण सिवी गउ सिववयहो  
 सूलिहि णरसिरमालाधरहो

अजियंजउ णामे लद्धजउ ।  
 जणणे अहिणंदणु मग्गियउ ।  
 मुक्काइं तेण सत्त वि भयइं । 5  
 इहपरलोयास वि खयहु गया ।  
 कमट्टयंगंठिहि णीहेरिवि ।  
 सिवुं सुहहु णामु णिरु णीरयहो ।  
 णउ अण्णहु तं कवालकरहो ।

४ MBPK सुरवइ गउ. ५ MBP संपाइउ, ६ MBP णंदण. ७ MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ. ८ MBP तरुकोडरि, ९ MBP तउ. १० MBP वहेते. ११ MBP संपण्णु. १२ M पाणिपाणु, B पाणिपाण°. १३ MBP पाणइ. १४ MBP संचालियउ, १५ MBP °मालियउ.

12. १ B omits this line. २ MBP °महावयइं, ३ MBP तव दुच्चर धरिवि. ४ B कम्मट्टइं. ५ MBP णीसरिवि ६ MBP सिवहरहो. ७ MBP सिवसुहहु णाम.

11. 7 b स हिउ स्वहित. 13 °सुए पुत्रि.

12. 8 a सिववय हो शिवपदम्. 9 a सू लि हि शंकरस्य.

छुहकामकोहविद्धंसणहे  
 जं वउ परिपालिउ सुंप्पहइ  
 सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ  
 रंण्णावलिकयरण्णासियइ  
 घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥  
 अञ्चुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुल्लहुं ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—चोईहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं ।

कयमजियंजण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥

धम्मघोसउड्डिंडिमपहयउ  
 थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु  
 मेरु व समणु णिच्चलु थविउ  
 सुविसुद्धचिच्चु रिसि विव गणिउ  
 मायासुयवइयरु साहियउ  
 मुणिधम्मसवणसामियमइहिं  
 गुरुमंदरथविरु समासियउ  
 आलिंगिउ चारणरिद्धियए  
 वणिं पुत्तिइ पावयखामियए  
 अहिहरिणभिल्लभिल्लीणिलए  
 पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु  
 दिवि जीविउ हउं माणियरमइं  
 घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कल्लिमलवज्जिय ॥

बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥

८ MBP गणियहि. ९ MBP तं वणिज्जइ कह. १० MP रयणावलि°.

13. १ P चउदह°. २ MBP धम्मघोसउ डिंडिमु हयउ. ३ MBP समणु. ४ MBP °धम्म समण°. ५ MBP संबोहियणाणसमिद्धियए. ६ MP कलमल°.

10 b गणिणिहिपासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम्. 13 a रण्णावलि° रत्नावली नाम तपः; °रण्णासियइ रत्नत्रययुक्तया.

13. २ वरिसहरणयावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि. 10 b सव्वोहिय° सर्वाधिज्ञानम्. 14 a माणियरमइं अनुभूतरुक्ष्मीकाणि.

## 14

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिर्विवजंपणे ।

अवरु वि कह वि तुज्जु पिय विरहमहाणलसुसियचंदणे ॥ १ ॥

जम्भंतरि वित्तुं संभरमि  
हउं पुंछिउ वियलियदुम्मइणा  
लीलाउद्धरियवसुंधरहो  
दीर्वम्मि जंबुरुक्खंकियए  
सीयासरिदक्खिणयलि पवरु  
णामेण सुसीमा वर णयरि  
अमयमइ मंति सइरत्तमण  
तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु  
सह ते विण्णि वि कवडेण विणु  
ते बे वि विउस विच्छिण्णमय  
पक्कहिं दिणि रापं सहं सुहय  
सो पहुणा पुंछिउ जीवगइ  
संतेण जेण जगु परिर्णमइ

अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरमि ।  
वंभेदे लंतवसुरवइणा ।  
मइं अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो । 5  
मेरुहि विदेहि पुन्वासियए ।  
वच्छावइदेसु वच्छपउरु ।  
तहिं पहु अजियंजउ पुरिसहरि ।  
तहु सच्चहाम णामेण धण ।  
तहु सहयरु वियसिउ सियणयणु । 10  
णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।  
छलजाइहेउकुविवायरय ।  
मइसायररिसिसौमीवु गय ।  
आहासइ सँव्वउ तासु जइ ।  
तं कारणु कालु महाणिवइ । 15

घत्ता—जहिं अच्छइ तं धुवुं गयणयलु गइहि धम्मु सहकारिउ ॥  
फुइ होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं उँवईरिउ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—पोग्गलदव्वु होइ णिच्चेयणु जं जं णिव सुंचेयणं ।

तहिं तहिं कहमि तुज्जु परमत्थे जीउ जि णाणकारणं ॥ १ ॥

14. १ BP विरहाणल°, २ MBP चिण्णउं. P पुंछिउ. ४ MP पच्छपवरु; B सुवच्छपवरु.  
५ MBP °सामीउ. ६ P पुछिउ. ७ MBPK सच्चउ. ८ MBP परिणवइ. ९ MBP धुउ. १० MB  
एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ.

15. १ MBP सचेयणं.

14. 12 b °जा ई °मिथ्योत्तरम् . 17 उव ई रि उ प्रातिपादितम् .

विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>२</sup> तसइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>६</sup> रमइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ  
 विणु जीवें किं<sup>१०</sup> पोग्गलु सुणइ  
 ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं  
 जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह  
 जो एंतु ण दीसइ जंतु ण वि  
 जइ चित्तियमेत्तें तहु कुगइ  
 दालिहिउ भुक्खइ किं मरइ  
 को जाणइ भासिउ केण किह  
 सिद्धंतहु किं जणु गुरु णवइ  
 किं बीहिउ वट्टा णउ ह्वइ

विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ । 5  
 किं विद्धंतु वेयणाइ कणइ ।  
 अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं ।  
 तो विणु णयणहिं ण णियइ कह ।  
 तहु कवणु भाउ किर कवण छवि ।  
 तो चित्तइ पूरइ किं ण रइ । 10  
 भोयणु चित्तविउ किं ण करइ ।  
 आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह ।  
 तवतावे किं अप्पउ खवइ ।  
 तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तरहु लेहणिवज्जियहो चित्तलिहणु ण संतउ ॥

15

इह दग्घिदियभाविदियहं जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

## 16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण णेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ ।

ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तय पइ ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु  
 ससहाउ भाउ परिभाउ ण वि  
 जइ चित्तें चित्तिउं णउ हवइ

चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।  
 जं णहु तं णहु जि ण चंदुं रवि ।  
 ता झाइय देवय किहं चवइ । 5

२ MBP किह. ३ B किम. ४ P किह. ५ MBP पोग्गलु. ६ MB बद्धउ. ७ B °पत्थिवसियहिं.  
 ८ MBPK णयणेण. ९ B चित्तिए. १० MBT सिद्धत्थहु; and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्;  
 P सिद्धंतउ and gloss आगमनिमित्तम्. ११ MBP वहइ. १२ M चित्तलिहणु.

16. १ M पयत्थओ; P पइत्थओ. २ M पुत्त. ३ BPT परिभावि. ४ MBP चित्तिउ, ५ MBP किं.

15. १ b भाउ परिणतिः; छ वि आकारो वर्णो वा. 12 b णवे त्या दि—यथा नवकम्बलः पुरुष इति वाच्यं नव वा कम्बला अस्येति संशयहेतुत्वादप्रमाणं तथा आगमेऽपि. 13 a सिद्धंतहु आगमनिमित्तम्. 14 a वहा मार्गः. 15 ण संतउ अविद्यमानम्.

16. 1 पयट्ठओ पदार्थः. 4 a ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भावः.

पविरइयसुहासुहर्यदलइं  
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं  
जइ सहु जि ण घडइ पइं भणिउ  
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ  
धम्मु जि कयमोक्खउ गयसरहो  
कइभाउ कव्वु किह पंरुं घडइ  
घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि पइउं पइं संभैवियउ ॥

जइ जीउ ण गेण्हइ पोग्गलइं ।  
किहँ तुट्टइ मिउं पेच्छंतियहिं ।  
तो गहणु केण जाणिउं गणिउं ।  
इय वालु वि गोवालु वि मुणइ ।  
पंडिउं पुणु लावइ गयसरहो । 10  
जिह रुक्खहु उप्परि सिहँ चडइ ।

तो किरियाजोपं किह जणेण लोहिं सुवण्णं दावियउ ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुपवि चप्पलं ।

कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ लहसि संमिच्छियं फलं ॥ १ ॥

तं णिसुणैवि हूई सम्मइय  
गुरुभत्ति करिवि पणविय गुरुहे  
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे  
कल्लाणमित्त ते वे वि जण  
तासु जि तेलोक्कदिवायरहो  
आयंविळु वड्डमाणु कियउ  
दोहिं मि दुक्कम्मु णिरोहियउ  
सिट्टुत्तमट्टदिट्ठीइ मुय

वाईसर णिव्वेपं लइय ।  
रविउयइ जडत्तणु अंबुरुहे ।  
आयणियमणियमुणिवयणे । 5  
संसारवियारविरत्तमण ।  
पावइय पासि मइसायरहो ।  
तउ भीमु सुंदंसणसंणियउ ।  
खय वेण्णि वि णियंमवि णियहियउ ।  
सुक्काभर इंद पडिंद हुय । 10

६ P °रइदलइं. ७ MBP किं. ८ MBP विउ. ९ MBPT जं पंडिउ पलवइ गयसयहो.  
१० MB किं पर, P किं पडु. ११ MBPKT सिहि; T सिहि मयूरः कवेरभिपायः, अन्यस्य पुनरभिरिति.  
१२ M पइं संभासियउ; B पइ जइ भावियउ, १३ M सुवण्णं दाविउ; B सुवण्ण दावियउ.

17. १ MB समीहियं; P समाहिय. २ MBP णिसुणिवि. ३ BP सुदंसणु संणियउ. ४ MBP णियमिवि.

6 a रयदलइं कर्मभेदाः. 8 a सहु आगमः. 9 a घड घोसु घटशब्दः. वसहि वृषभे. 10 a-b धम्मु जीत्यादि—गयसरहो नष्टकामस्य मुनेः धम्मु जि चारित्रमेव कृतमोक्षम्; पंडिउ वैतण्डिकः लावइ योजयति धनुरेव गतबाणस्य कृतमोक्षम्. 11 b सिह पक्षी.

17. 1 जाइ° मिथ्योत्तरम्. 8 b सुदंसणसणियउ मेरुसंज्ञितम्, मेरुपंक्तिविधिरित्यर्थः. 10 a सिट्टुत्तमट्टदिट्ठीइ मुय शिष्टा आगमे प्रतिपादिता चतुर्विधा आराधकस्य या उक्तमार्थदृष्टिः चतुर्विधाहारत्यागस्तया मृतौ.

ओसारियकायकंतिसिहइं  
धादइसंडइ थिय सिसुससिहि  
पच्छिमविदेहि णरदिणसुह  
घत्ता—तहिं अत्थि पुंडरिंकिणि णयरि राउ धणंजउ णिवसइ ॥

जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसंस्सइ ॥ १७ ॥

15

## 18

दुवई—ससिसिय भमरणील णंलपाउसणासपवेसकुसवहा ।

इंद पडिंद बे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥ १ ॥

जयसेणहि णंदणु सीरधरु  
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु  
णारायणु जायउ जसंसइहि  
णामेण महाबलअइबलहं  
सिरि भुंजंतइं गउ मरिवि हरि  
अवलोयवि णियबंधवपलउ  
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं  
तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि  
वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ  
पुव्वुत्तदीवभायंतरए  
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि  
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय

पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।  
तवरयणे किणियणिकामतुसु ।  
भूहरवियारि वेउ व णइहि ।  
तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।  
अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।  
मणु मुक्कु ण वीरे मोक्कलउ ।  
पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।  
प्राणयतियसेसरत्तु करिवि ।  
अंतयराएण ण को णडिउ ।  
पुव्वुत्तसुरदिदियंतरए ।  
णामेण वच्छयावइ धरणि ।  
महंसेणहु देवि वसुंधरिय ।

5

10

घत्ता—तहि देविहि मयणंमयालसहि गम्भवासु सेवेप्पिणु ॥

15

चउदहमर्यकप्पसुराहिवइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

५ MBP पुंडरिंकिणि. ६ MBP धणज्जउ. ७ Mp जसंसइ.

18. १ MBP णं पाउसणासपवेसि. २ MBP जसंसइहि. ३ MBP पाणइं. ४ P मरुसेणहु.  
५ MBP °महालसिहि. ६ P चउदहमइ.

11 a ओ सा रि ये त्या दि—उत्सारिता स्फेटिता अवसाने कायकान्तिः शिखाज्योतिर्यैः; b °ज ल णि हि णि ह इं सागरोपमाणि.

18. 1 स सि सिय चन्द्रवत्पाण्डुरः; कु स व हा मेघाः. 3 a सी र ध रु ह ल ध रः; b द णु या रि ° वा सु दे वः.  
4 b °णि का म तु सु वृषवत्तुच्छा मानुष्यकभोगाः. 5 b वे उ व वे गः प्रवाह इव. 11 a वी स द्धि स मा ण हिं विंशतीसागरोपमैः.



## 19

दुवई—हुउं जयसेणचाक्कि को वारइ हौंती पुण्णसत्तिया ।

तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो  
चोइहरयणइं णिहि परिहरेवि  
घणपावको व्व विहावणउ  
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं  
गउ प्राणं विसँज्जिवि घुलियधए  
तीसंबुहिसंणिहाइं जिइवि  
पुक्खरदीवहु पुव्विल्लु गिरि  
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह  
तहिं रयणसंचि अजियंजयहो  
जोइयसुहसिविणयसंतइहे

पायंतियम्मि सीमंधरहो ।  
दुद्धरु चारित्तभारुद्धरेवि ।  
भावेप्पिणु सोलह भावणउ । 5  
अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।  
उवरिगमेवज्जहि मज्झमए ।  
अहमिंदु देउ तेत्थहु चइवि ।  
णामेण मेरुसरि वूढसिरि ।  
णरजोणि मंगलावइ वसुह । 10  
रायहु पालियसावयवयो ।  
हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥

उप्पण्णु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भडारउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई-- पुणु णरखयररायरायत्तणु मेल्लिवि गउ वणंतरं ।

हंभिवि अंतरंगु पविलंबियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥ १ ॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ  
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं  
आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ

पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।  
केवल्लु किउ तच्चणिरूवणउं ।  
तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ । 5

19. १ P हुव जयसेणु. २ P चउदह<sup>०</sup>. ३ MBP पाण. ४ P विवज्जिवि. ५ MB मज्झवए; P मज्झमए. ६ MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि. ७ MBP मेरुदरि.

20. १ MBP read this line as: तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ.

19. ३ b पा यं ति य म्मि पादसमीपे, 8 a अंबु हि स णि हा इं सागरोपमाणि.

20. ३ b सुत्तउत्तु आगमोक्तम्. 5 a आ इल्लउ प्रधानम्.

गड मोक्खहु अक्खरुं अक्खरहो  
अग्गिदहिं णियमउडाणल्लिण  
इय कहपवंचिं मँइं संकहिए  
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए  
हियउल्लउ णिदिंयइंदियउ  
संभरसु पुत्ति रमियामरहो  
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो  
संभरसु पुत्ति पविउलकमले  
किय जाएप्पिणु रुद्धासंवहो

तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।  
भणुं किं ण होइ सुक्कियफलिण ।  
सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।  
ललियंगहु तुह ललियंगपिए ।  
तइयहुं जिणधम्माणंदियउ ।  
अंजणणामयहु धराधरहो ।  
दीवहु गयाइं णंदीसरहो ।  
कीलियइं सँइंभूरमणजले ।  
णिब्बाणपुज्ज पिहियासवहो ।

10

घत्ता—संभरसि पुत्ति मँइं भासियइं एयइं व हुअहिणाणइं ॥

15

तुम्हइं दंपँइहिं रईयंरइं सुरवरकीलाठणइं ॥ २० ॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ विहिं वि जइयहुं ।

हउं कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इंदवयाउ तइयहुं ॥ १ ॥

हमच्चुया चुओ सुंए

कुले सुरिंदसंथुए ।

वसुंधरावहूयरे

महंतपुण्णगोयरे ।

णिवद्धपेम्मराइणा

जसोहरेण राइणा ।

5

सुओ हुओ हियंतओ

इहेव वज्जदंतओ ।

कुवाइएहिं मोहिओ

सुमंतिणा पवोहिओ ।

कयंगयारिणहाणओ

मरेवि दिण्णदाणओ ।

सुधम्मभावणामल्लो

खगाहिवो महाबलो ।

दुइज्जसग्गठाणए

सिरिण्णहे विमाणए ।

10

१B अक्खर अक्खरहो. ३ MBP भणु होइ किं ण. ४ M मँइं सँइं कहिए; B सँइं मँइं कहिए. ५ P सयंभू°.

६ B दंपँइरईयंरइं.

21: १ MP सए.

6 a अक्खर रु लब्धानन्तचतुष्टयरूपतयाविनश्वरम्.

21. 1 णिउ तद्ध मा णु पुव्वा उ सु नियुतं लक्षं तस्यार्धं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्थत्र;

3 a हं अहम्; सुं ए हे पुत्ति. 4 a °वहूयरे वधूदरे. 8 a °अंगयारि° मदनान्तको जिनः.

लयारपुव्वणामओ	सरूवजित्तकामओ ।	
हुओ सुरो दुवीसमो	महं गुरू स पच्छिमो ।	
पियव्वया अणामिया	गयाउणा खयं णिया ।	
तुमं पि तप्पिइल्लिया	पहूय अंतिमिल्लिया ।	
दिवायरस्स णं पहा	सल्लक्खणा सयंपहा ।	15
कयंतचंडिमाहओ	तुहं पिओ तहिं मओ ।	
वरुप्पलाइ खेडए	पुरे विचित्तणीडए ।	
पलंबथोरबाहुणो	णिवस्स वज्जबाहुणो ।	
सुवण्णवण्णकायओ	कुलंगणाइ जायओ ।	
रवि व्व सो दुलंघओ	मयच्छि वज्जजंघओ ।	20
पिओसुया सुहंकरा	महं सुहीण ते परा ।	
समीवु भूमिमंडले	वसंति ते सुकौंतले ।	
सुरालयाउ आइया	रमावईइ जाइया ।	
तुमं सर्यां पहायरी	महं सुया किसोयरी ।	
वरं वरं विहाविही	वियक्खणा विहाविही ।	25
पियागमं पयासिही	दिणेहिं तीहिं भासिही ।	
सिरीमईइ भासियं	तए महं पयासियं ।	
भैरामि हं परं भवं	चिरं पि ताय णं णवं ।	

घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहहु रिसहजिणिंदे ॥ 30

णवकुंदेपुष्पदंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदे ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम

तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥

॥ संधि ॥ २३ ॥

२ MBK खयाणिया, ३ BP तुमं ति, ४ MBP पहु अयं ति मिल्लिया, ५ MBP सुलक्खणां, ६ MP कयंति, ७ MBP समीव° ८ MBP सुकौमले, ९ BP सयंपहायरी, १० M इहाविही, ११ MBP सरामि, १२ P गयं, १३ MBP °पुष्पयंतहिं.

11 a लयारपुव्वणामओ ललिताङ्गः, 16 a °चंडिमा° रौद्रत्वम्, 20 b मयच्छि हे मृगाक्षि, 21 a पिओसुया पितापुत्रौ, 23 b रमावईइ लक्ष्मीवत्याम्, 25 a विहाविही द्रक्ष्यति; b वियक्खणा पण्डिता धात्री; विहाविही वि+इह+ आविही आगमिष्यति, 26 b भासिही शोभिष्यते विवाहेन.

## XXIV

सहुं णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥  
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवकं ॥

I

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं  
आयहु वज्जबाहुपाहुणयहु  
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि  
आया माणणिज्ज ते माणमि  
जाँमि भणिवि गउ णरवइ जावँहिं  
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी  
णं गंगाणईहि जउणाणइ  
णियडि णिसणी सा तरलच्छिहि  
करिणिइ करणि जेम करु मग्गिय  
मत्थइ चुंबिवि पुरउ णिवेसिय  
मुहराएण जि सिट्ठुं णियच्छिउ

अज्ज पुत्ति जायउ सुबिहाणउं ।  
अज्ज करमि करणिज्जु सँविणयहु ।  
अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि । 5  
लहु अद्धवँहि गंपि घरु आणमि ।  
पंडियभवणु पराइय तावँहिं ।  
दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।  
णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।  
पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि । 10  
वेळ्ळिइ णववेळ्ळि व आलिंगिय ।  
हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।  
कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिँउ ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं तहिं मइं ढोइय ॥

णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुइंताइय ॥ १ ॥

15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं  
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसंकरे ।  
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते—  
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

1. १B लोयणु सुहु. २ P रावलउ. ३ MBP अज्जु—and throughout this Kadavaka, ४ P सुविणयहु. ५ B अद्धवहु. ६ M एम. ७ MB जावेहिं; P जाविहिं. ८ MB तावेहिं; P ताविहिं. ९ MBP मयणुक्कोय°. १० MB सुट्ठु; P सिट्ठु. ११ P पुंछिउ.

1. 6 b अद्धवहि अर्धपथे. 8 a मयणुक्कोव° मदनप्रसरः.

## 2

पच्छइ सयलहं आयउ जो वरु  
 सो णं वम्महेण पेसिउ सरु  
 सो णं रइरसंसलिलहु सायरु  
 सो णं रूवविलासु पसारिउ  
 सो णं विज्जाविहि विथारिउ  
 सो णं सूहउ महु मणि भावइ  
 पुत्ति महासिहरहु दुहणासहु  
 फेणहिमइहासंसंकासहु  
 हियवउ रँइवियसिउं मउलेप्पिणु  
 वंदिउ जिणु सुहवँज्जियवज्जिउ  
 वंदिउ जिणु जगँवंदियवंदिउ  
 जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ  
 अकिरिउ णिक्कलु गयणसरिच्छउ

सो णं सोहग्गहु केरउ घरु ।  
 सो णं जुवइयणहं जीवियहरु ।  
 सो णं तुह मुहकमलादिवायरु ।  
 सो णं कंतिकोसु वड्डारिउ ।  
 सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ । 5  
 जो तुह अट्ट वि अंगइं तावइ ।  
 देवि पयाहिण जिणवरवासहु ।  
 णां पुरंदरेण केलासँहु ।  
 तेण वे वि णियकर मउलेप्पिणु ।  
 वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ । 10  
 वंदिउ जिणु वुहँणिश्रियणिदिउ ।  
 विणु सयलेण सत्थु किंह णज्जइ ।  
 जंपउ जडयणु वुद्धिइ तुच्छउ ।

घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह परु गुरु केहउ ॥

वलइयभुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहरु जेहउ ॥ २ ॥

15

## 3

जिणु वंदेप्पिणु वदिय मुणिवर  
 अंगणहररुइरंजियदसंदिस  
 जसु ण कलंकु गोत्ति णउ हियवइ

मुणिवर ते सुयहर णं गणहर ।  
 दसदिसिवहपसरियणिम्मलजंस ।  
 वयवालिणि मइ जसु थिय जिणणइ ।

2. १ MBP °णिलयहु. २ MP °हिमइ°. ३ P कइलासहु. ४ MBP रइ°. ५ MP मेलेप्पिणु.  
 ६ BPT सुहवज्जिण°. ७ M जयवंदियवदिउ, BP मयवज्जियवंदिउ. ८ MBP परगुरु.

3. १ MBP °दसदिसु. २ MBP °जसु. ३ MP वयपालिणि.

2. 9 a रइ विय सिउ क्रीडोल्लसितम्. 10 a सुहवज्जिय° शुभकर्मरहितै. 12 a-b जम्मे त्यादि-  
 जन्मवासो गर्भावतारो देवस्य न युज्यते, अयोनिसभवत्वादस्य. अत्रोत्तरमाहाचार्यः—विणु इत्यादि-कलाभिरव-  
 यवैर्भूतिभिर्वा सह वर्तते इति सकलं शरीरं तेन विनान्यमुक्तात्मवत् शिवस्य शास्त्रं कथं ण ल इ युज्यते. 15 वलइय-  
 भुय हो वलितभुजस्य.

णयसिरुं पट्टसाल सं पइट्टु  
दिट्टु पड्डु सहं सुलिहियचित्तं  
संतं इट्टुविओयकंतं  
कंतं<sup>४</sup> जयलच्छिहि विकंतं  
कंतं चंदेण व संपुण्णे  
रुण्णे पर सरीरु णिव्वट्टुइ  
वट्टुइ जाणित्तं कहिं दीसइ सा  
जा सा सा भणंतु सो मुच्छिउ  
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ  
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि

सपइट्टु मइं संमुहुं दिट्टु ।  
चित्तं चित्तिउ तेण ससंतं । 5  
कं तं धुणियउं भवसंकंतं ।  
कंतं सुमरियपेम्मुकंतं ।  
पुण्णे पियसंजोउ ण रुण्णे ।  
णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टुइ ।  
सा मणणलिणोयरवासिणि जा । 10  
सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।  
धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।  
अक्खमियं जं तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भर्वसंचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु परंढंकिउ ॥

णरवइसुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउं ॥ ३ ॥ 15

## 4

एहु ईसाणकण्णु विविहामरु  
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु  
एहु ललियंगु देउ हउं हौतउ  
थणयलघुलियहारमणहारी  
अच्चुयणाहु एहु तियसेसरु

लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहरु ।  
पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।  
एत्थु वसंतउ एत्थु रमतउ ।  
एह सयंपह देवि महारी ।  
कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु । 5

४ B °सिरपट्टु. ५ M omits this foot. ६ BPK पेम्मकंतं सुयरियकंतं. ७ MBPT णीवट्टुइ.  
८ MBP णीवट्टिउ देहु. ९ B अक्खमियउं. १० MBP भवि. ११ MBP °ढंकिउउ. १२ MBP  
वांकेयउ.

4. १ P इह and throughout this Kadavak. २ MB सुप्पहसंपयसुर°.

3. 4 a पट्टसाल सं पइट्टु उ स पट्टशालां प्रविष्टः; b सपइट्टु सप्रतिष्ठः. 5 b ससंतं निश्वसर्ता.  
6 a संतं उत्तमपुरुषेण; °विओयकंतं वियोगपीडितेन; b कं तं धु णिय उ तेन मस्तकं कम्पितम्. 7 b °पेम्मुकंतं  
स्रेहयुक्तेन. 8 a कंतं चंदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव; b पुण्णे पुण्येन. 9 a णिव्वट्टुइ विनश्यति. 10 a वट्टुइ  
जाणित्तं ज्ञानं वर्तते. 11 a जा सा सेत्यादि-या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मीः 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छितः;  
b सोमुच्छिउ सौम्यः उच्छिउतः. 12 a धाइइ धान्या; b धाइइ धांविते. 12 a इन्द्रियैर्ज्ञातम्.

कहइ जुयंघरदेवकहाणउं  
 एयइं अम्हइं वे वि वइइइं  
 इय मेरुहि गयाइं जगखंभहु  
 एहु अंजणमहिहरु महु रुच्चइ  
 इह सहुं सुरणाहें मुहललियइं  
 अंवरतिलउ एहु गिरिसारउ  
 एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं

लंतववंभेसर मइं लीणउं ।  
 कइह णिसुणिवि णियंमणि संतुइइं ।  
 इह लग्गइं जिणण्हाणारंभहु ।  
 एहु दीउ णंदीसरु वुच्चइ ।  
 वंदणहत्तिइ विण्णिण वि चलियइं । 10  
 इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ ।  
 थियइं वे वि जिणधम्मु सुणंतइं ।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णच्चइ ॥

तियसिद्धिवणे जिणवरभवणे महि पयपोमहिं अंचइ ॥ ४ ॥

## 5

अण्णेत्तहि वि एत्थु णो लिहियउ  
 रइणेउरसहें रोमंचिउ  
 अम्हहं तणुपरिमलपरिभमियउं  
 एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु  
 सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ  
 एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ  
 इह कवोलपत्तावलिमोडणु  
 एत्थु ण लिहियउ विरहँउरु मुहुं  
 एत्थु ण लिहियउ भूसणु पेसिउ  
 एक्कु जि लिहियउ अणुणयगारउ

जो मइं कीलारंभु पविहियउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ मोरुं पणाच्चिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं ।  
 सुंय गुरुयणआगमणुब्भासिरु ।  
 जं वहुणयणहं सोहइ महियउ । 5  
 एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु ।  
 एत्थु ण लिहियउ प्रिउं विवरंमुहु ।  
 एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ ।  
 ईहु महु दिण्णउ पायपहारउ । 10

३ MB कहि. ४ MB णियमण°. ५ MB सरंतइं.

5. १ MBP णालिहियउ. २ B मेरु. ३ MBP सुउ. ४ MB गुरुयणु. ५ MBP read this line as. एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ. ६ MBP विरहाउर. ७ MBP पिउ. ८ MB भूसण. ९ M एत्थु ण; B एउ महु.

4. 13 पा ड हि उ नाट्याचार्यः. 14 ति य स दि° मेरुः.

5. 4 b सु य शु कः, 10 a अ णु ण य° अनु कूलता.

प्रयवडिप सारंभु मुयाविउ  
अण्णहि णेही रूवविहूई  
अण्णहि पसइणिहाणइं णेत्तइं

एत्थु ताइ हउं आसि खमाविउ ।  
देवि सयंपह माणवि हूई ।  
अण्णु लिहइ किं महु चारित्तइं ।

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय महु आणहि ॥

सा तेत्थु पुरे थिय जम्मि धरे तहिं जायवि संमाणहि ॥ ५ ॥ 15

## 6

ता दूईइ उंचु अम्हारी  
वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी  
धीय ताहि सिरिमइ उप्पणी  
एहु ताइ लिहियउ कहवइयरु  
एम भणेप्पिणु हउं एत्थाइय  
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि  
पियविओयसिहिजालात्तित्तउ  
तरुणीवगुरवडिउ पलोइउ

णयरि पुंडरिंकिणि पुरिसारी ।  
लच्छीमइ महएवि भडारी ।  
पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विणी ।  
पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।  
पडसंबंधिणि वत्त णिवेइय । 5  
उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।  
घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।  
णं वणवाहें मृंगु संभाविउ ।

घत्ता—रइरिद्धएण मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥

विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्राणहिं ॥ ६ ॥ 10

## 7

दुप्परिणामें कामें तप्पइ  
रसइ हसइ णीससइ विरुज्जइ  
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ  
धेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ  
एक्कहिं णिलइ ण णिविसुं वि अच्छइ

सीयलमलयजपकें लिप्पइ ।  
उट्टउ बइसइ मोहें मुज्जइ ।  
अहरु डसइ अणिवद्धु पबोल्लइ ।  
परु पच्छण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ ।  
दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ । 6

१० MBP ०णिहाइं ण, ११ MB अण्ण, १२ MBP जेत्थ, १३ MBP हरे.

6. १ MPB वुत्तु, २ MBP ताहि, ६ M ०वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ.  
४ MBP मियु, ५ M रइरिद्धएण; P रइरिद्धिएण, ६ MBP पाणहिं.

7. १ MBP अणिवद्धउ बोल्लइ, २ MB पच्छण्ण०, ३ P णिमिसु.

11 α सारंभु कोपः 15 संमाणहि मदीयकुशलवार्तया संतोषय.

6. 10 विवरीउ कामजनितोन्मादादसंबद्धप्रलापी.



णहाइ णं धुवइं ण जिणवरु पुज्जइ  
रमइ ण कंदुउ तुरउ ण वाहइ  
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ  
एकु वि रायविणोउ ण माणइ  
मंतिहिं वज्जवाहु विण्णवियउ

भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ ।  
करि वि रहु वि णयंणेहिं ण चाहइ ।  
परं णिम्मीलियच्छु पृयं ज्ञायइ ।  
कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ ।  
तणउ देव मयणं परिहवियउ । 10

घत्ता—हइ सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥

दुक्की णियइ दुक्करु जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु  
गउ तहिं जहिं अच्छइ सो बालउ  
आवहि जाम ण होइ वियालउ  
सुणह महारी पइं कहिं दिट्ठी  
गउ कुमारु परिभमहुं सलीलइ  
पुव्वजम्मु तहिं एण णियच्छिउ  
कामु वि कामरूवि जं पाडइ  
पट्टइ लिहियउ हियवइ लिहियउ  
अवसें होसइ णिव विहिविहियउ  
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें  
वज्जवाहु सहस त्ति पधाइउ  
रच्छसोह पुरि कारावेप्पिणु

उट्टिउ णरवइ दर विहसेप्पिणु ।  
पभणइ पहु सुय थियुं किं कालउ ।  
अज्जु जि किज्जइ तुह पृयमेलउ ।  
अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी ।  
दिट्टउ पहु आलिहिउ जिणालइ । 5  
चिरिं कंतावयारु परिहच्छिउ ।  
ताहि रूउ कं कं ण भमाडइ ।  
को<sup>६</sup> तं पुसइ णिडाँलइ लिहियउ ।  
एम जाम मइबंधे कहियउ ।  
सहुं सेण्णेण धवंलधयत्तत्तें । 10  
णयरि पुंडरिंकिणि संप्रंइउ ।  
लीलइ मत्तकरिंदि चडेप्पिणु ।

घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविभुएण जयकारिउ ॥

सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णवयारिउ ॥ ८ ॥

४ M तुरिउ. ५ MBP णयणहिं वि ण. ६ P परि. ७ MBP पिय. ८ P परिहाविउ.

8. १ MB सो अच्छइ. २ MBP किं थियु. ३ MBP पियमेलउ. ४ MBP चिरु कंता<sup>०</sup>.  
५ MBP पट्टालिहियउ. ६ B omits this line. ७ MBP णिलाडइ. ८ B <sup>०</sup>वहियउ. ९ MBP मइवंतें.  
१० BP धवलत्तत्तें. ११ MBP संपाइउ. १२ M णवियारिउ.

7. 7 a तुरउ तुरगः. 10 b परिहवियउ विहलीकृत. कदर्थितौ वा. 12 णियइ भवितव्यता.

8. 1 a णहछोडउ नखोच्छोटिका. 6 b परिहच्छिउ ज्ञातः. 7 a कामरूवि कामावस्थायाम्.  
9 b मइबंधे मतिबन्धनेन बुद्धिप्रपञ्चेन. 13 पविभुएण वज्रवाहुणा. 14 णवयारिउ नमस्कृतः.

9

सालउ सस विणिण वि जोएप्पिणु  
 राएं अवलोइयउ सँस्सीयउ  
 पुरेणारीयणु कहिं मि ण माइउ  
 णिवइहि केरउ सहि धरणीवइ  
 जसहरणामहु धीय जिणिंदहु  
 एयहु उप्पलखेडणरेसहु  
 जो सग्गाउ देउ अवयरियउ  
 इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु  
 सो वि ण पावइ चिच्छु जि पावइ  
 पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु  
 का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय  
 ताइ णियंतिय रूवु कुमारहु

णयणहुं केरउ फलु पावेप्पिणु ।  
 अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।  
 अवहप्परु चूरंतु पधोइउ ।  
 वज्जवाहु पँहु सो बहिणीवइ ।  
 एह वसुंधरि बहिणि णरिंदहु । 5  
 दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।  
 जो सिरिमइवरु जम्मंतरियउ ।  
 एयहु संमुहुं मइं पँसरिय कह ।  
 तं पाँवंतु वि तणु संतावइ ।  
 णं णं सो अणंगु मुणिमणमहु । 10  
 लंघवि कोट्टु पलोयमि वरंसृय ।  
 पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रइपेल्लियउं उव्वेल्लियउं णिच्छुट्टंतु णिरुंभइ ॥

कविणिम्मलए चुर्यं मेहलए दहु परिहँणु णिव्वंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारै  
 उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं  
 का वि भणइ भासिय दुव्वयणइं  
 एयहु घरि दासिच्छु समिच्छमि  
 का वि भणइ णिवसुय सक्कयत्थी

अंतरियउ सूहउ पायारै ।  
 किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।  
 अज्ज परइ मेह्लमि पँइसयणइं ।  
 जीवमि छुड्डं मुहकमलु णियच्छमि ।  
 ण वियाणहुं चिरै काइं वउत्थी । 5

9. १ MBPT ससीयउ. २ MBP पुरि. ३ K पराइउ. ४ MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु. ५ MBPK बहिण. ६ MBP पसरिउ. ७ MBP पावंतु जि. ८ MBP वरसिय. ९ MP घुउ मेहलए दढ°; B चुए मेहलए दढ°. १० MBP परिहाणु णिव्वंधइ.

10. १ B मेह्लिवि. २ MBP पिउसयणइं. ३ MBP फुडु. ४ P सक्कियत्थी. ५ B चिर.

9. 2 a स स्सी य उ भागिनेयः 11 b कोट्टु भित्तिः वरसृय वरश्रीः.

10. 1 a-b ण गे त्या दि-नगश्च प्राङ्गणवृक्षः, अग्रद्वारं प्रतोली, ताभ्य न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्यां निसृत्य तं द्रष्टुम्. 5 b वउत्थी व्रतस्था.

एहउ जाहि रमणु संपणुणउं  
 तहिं अवसरि पहुभवणि पइट्टइं  
 उवणिउ ण्हाणु विलेवणु णिवसणु

मं छुडु को वि महातउ चिणुणउं ।  
 पाहुणाइं पीढेसु णिविडुइं ।  
 ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविहु रसु सुराहेउ सुर्वसु पंचिदियहुं पियारउ ॥

जेवणुं जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं धुत्तिहि केरउ ॥ १० ॥ 10

## 11

भणइ णरिंदु ण किं पि विर्यप्पमि  
 तुहुं घरु आयउ तुह किं किज्जउ  
 चवइ कुलिसयरु धणुकयसंकउ  
 धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु  
 धणु णयणइं जाणमि मइमइलइं  
 धणु किं संणिवाउ जरु होसइ  
 धणु काणीणहु दीणहुं दुल्लहु  
 सयलु अत्थि महु तुज्ज पसाएं  
 सकुलायउ सोहइउं दावहि  
 तं णरणाहें वयणु समत्थिउ  
 परभवाउ सुरमिहुणु जि आयउ  
 अरुइ विरहाणलसंतत्तउ

धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।  
 भणु भणु वज्जवाहु किं दिज्जउ ।  
 धणु गुणेण सहं णिच्चु जि वंकउ ।  
 धणु मारणउं बंधुढोइयविसु ।  
 तेण जि धाणि इट्ठु वि ण णिहालइ । 5  
 तेण जि धाणि अणिवंधउं भासइ ।  
 उत्तिमपुरिसहुं माणु सुदुल्लहु ।  
 एक्कु जि मग्गमि सुहिअणुराएं ।  
 सिरिमइ वज्जजंघकरि लावहि ।  
 खिच्चहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ । 10  
 महु तुह मंदिरि माणुसु जायउ ।  
 संजोइज्जइ दइवविहिंत्तंउ ।

घत्ता—चक्केसरहो तहु पवियरहो कण्णइ लिहियउ आणिउ ॥

गुणभूसियए ता विउसियए पडपवंचु वक्खाणिउ ॥ ११ ॥

६ MB सवसु. ७ MBP जेमणु.

11. १ B विर्यप्पमि. २ MBP कुलिसकरु. ३ MBP धणु णरणयणइं जाणमि मइलइं. ४ MBP धणु इट्ठुं ण. ५ MBP अणिवद्धउं. ६ MBP माणु सुवल्लहु. ७ M मत्थि. ८ MBP लायहि. ९ MBP एउ जि. १० MBP विहत्तउ. ११ MBP बालइ लिहिउ वियाणिउ.

9 सुवसु जारकः

11- 3 a कुलिसयरु वज्रवाहुः 9 a सोहइउ मित्रत्वम्. 10 b खिच्चहु उप्परि खीचडी उपरि (२) कूसराया उपरि, ओमत्थिउ प्रक्षिप्तम्. 13 पवियरहो वज्रवाहो.

## 12

पियराहिरामाइ	संपुण्णकामाइ ।	
मुक्काइ वायाइ	तुट्टाइ मायाइ ।	
परिखवियकम्माइ	कइयाइ रम्माइ ।	
जिणणाहपूयाइ	दिण्णाइ धूवाइ ।	
सुइसायकुंभेहिं	घण्णघडियखंभेहिं ।	5
रुप्पभयकुड्ढेहिं	आलिहियभदेहिं ।	
विप्फुरियरयणेहिं	वरहीरगहणेहिं ।	
आसणविराइयहिं	माणिकवेइयहिं ।	
पडिणेत्तपच्छइउ	कंतीइ च्चैइउ ।	
रुल्लंतमोत्तियहिं	णं दंतपंतियहिं ।	10
विहसंतु पडिहाइ	दिट्ठीसुहं देइ ।	
णाणापयारेहिं	णाणादुवारेहिं ।	
कउ मंडओ ताम	संमाइ जणु जाम ।	
मिलिएहिं सुहियणहिं	भरिएहिं तोरणहिं ।	
घणरवगहीरेहिं	पहएहिं तूरेहिं ।	15
णच्चंततरुणीहिं	मंडलियघरणीहिं ।	
खयरीहिं जक्खिणिहिं	णायरणियंबिणिहिं ।	
हिमहारसरिसेहिं	सजलेहिं कलसेहिं ।	
पइपुत्तवंतीहिं	महिणाहपत्तीहिं ।	
सोहग्गसुंदरइं	णहविथाइं वहुवरइं ।	20
पुणु पुणु पसाहियइं	णवरइरसाहियइं ।	
थुइवयणकलयलहिं	धवलेहिं मंगलहिं ।	
पुणु पुणु जि गाइयइं	आसण्णढोइयइं ।	

घत्ता—पसरियकरहे मयणिब्भरहे मणु मयणं सुंविचारिउ ॥

मुहवडु पियहे णं गयघडहे वरसुहडं ओसारिउ ॥ १२ ॥ 25

12. १ P संदिण्णधूवाइ. २ MBP घरु घडिउ खंभेहि. ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °भंडेहिं. ५ MBP चिचइउ. ६ MBP झुल्लंत°. ७ P सुहयणहिं. ८ BP घरिणीहिं. ९ M °सरसेहिं. १० MB सवियारिउ.

12. . 8 ० वे इय हिं चतुष्किकाभिः.

## 13

सोहणे वासरे चारुलगुगामे  
पाणिणा पाणि तीए तिणा धारिओ  
रायराएण भिंगारएणाणियं  
अण्णजम्मागया तुज्झ सीमंतिणी  
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया  
जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं  
उज्जलं हंसतूलकसेज्जायलं  
होरिवीरोहओ इच्छियं मंडलं  
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं  
रायंपुत्तिं करेणुं व लीलागओ  
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ  
अक्खया पूयदूवंकुरुम्मीसिया  
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी  
होतु पुत्ता महंता पहाभंसुरा  
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं

उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गामे ।  
अंगडाहो परं दूसहो हारिओ ।  
भार्यणेयस्स धित्तं करे पाणियं ।  
तुज्झु मे दिणिया पेसलालाविणी ।  
पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया । 5  
देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।  
दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।  
कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।  
वत्थुसारं अणेयं पि<sup>१</sup> दिण्णं घणं ।  
तं करे गेण्हउणं वरो णिग्गओ । 10  
वज्जबाहू समाणंदिओ राणओ ।  
बंधुलोएण धित्ता सिरे सेसिया ।  
ताम्ब भुंजेहं तुम्हे वि णिच्चं सिरी ।  
जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासंरा ।  
सो वरो सा वहु दो वि ताइं तहिं । 15

घत्ता—लग्गिवि वरहो तहु वासरहो<sup>१</sup> पेरिवाडिइ सुहवासहिं ॥

अहिसिंचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुतीससहासहिं ॥ १३ ॥

## 14

बालमुणालसरलकोमलयरु  
वरु सकामु काइं वि जंपावइ  
वरु तणुपर्यइजोग्गु आलिंणइ

दियहहिं जंतहिं कीलइ वहुवरु ।  
वहु लज्जंति तं जि संभावइ ।  
वहु मुक्की तं पुणु मणि मग्गइ ।

13. १ P भगार°. २ MBP भाइणेयस्य. MBP °तूलक°, K °तूलक but corrects it to °तूलक° and gloss अर्कपिचु अर्कतूल.. ४ M हार°. ५ MB पदिण्णं. ६ MBP रायपुत्ते. ७ P करेणु व्व. ८ MBP दूवकुरामीसिया. ९ M भुंजेवि. १० MBP भासुरं. ११ MBP वासरं. १२ MP पडिवाडिइ.

14. १ P बालु. २ MBP °पइयजोगु.

13. 2 a ति णा तेन राज्ञा. 7 a तूल क° अर्कपिचुरर्कतूल . 8 a हा रि वी रो ह ओ मनोहरवीरसमूहः.  
12 a पूय° पवित्ताः 16 सु ह वा स हिं सुखवासै .

14. 2 a जंपा व इ अनुमन्यते. 3 a त णु प य इ जो ग्गु शरीरस्वरूपयोग्यम्.

वरु केसगाहेण ओणामइ  
 वरु मउअउ जि करइ अहरग्गहु  
 वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थे  
 चीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ  
 वरु फेडवि घल्लइ पल्लंकरइ  
 वरु सोणीयल्लुत्तउ जोयइ  
 अलियणहेहिं णाहु संघट्टइ  
 चवइ रमणुं रइहरि सिज्जंतइं

वहु हेट्टासुहुं मुहुं ल्हिक्कावइ ।  
 हुं हुं<sup>६</sup> मेल्लि दर भासइ णववहु । 5  
 वहु वीलावस ठंकरइ वत्थे ।  
 वरु करुं ऊरुजुर्यालि णिउंजइ ।  
 पाणि देइ वहु वयणससंकरइ ।  
 वहु तहु दिट्ठिं<sup>११</sup> करहिं पच्छायइ ।  
 वहु उग्गयपुलण विसट्टइ । 10  
 आसि बे वि भणु किं लज्जंतइं ।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उड्ढायासहो ॥

तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतर्कइवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकरइपुप्फयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकरव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम  
 चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण. ४ BP णिक्कावइ. ५ P मउ जि. ६ M महु मेल्लहि दर; BP लहु मेल्लहि दर. ७ B कर.  
 ८ P °जुयलु. ९ MBP णियवयण°. १० M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलहुत्तइ. ११ MBP करहिं दिट्ठि.  
 १२ MP °कयवासहो; T records a p पुप्फयंतरुइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्.

## XXV

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगर्वीसासैं ॥  
 पृउभाउग्गामणे रमणीरमणे रमइ विसेसविलासैं ॥ ध्रुवकं ॥

I

<p>पङ्कुल्लपोमपहसियमुहाहं          मउमणियमम्मणुल्लाविराहं          अवहंडणपसरियभुयवलाहं          रइजलरोल्लियसयणोयराहं          कयपणयकोर्वसंभाविराहं          पविजंघसिरीमइवहुवराहं          रूवें सोहग्गे अहुईय          सिरिमइर्वरलहुईसस मयच्छि          णामेणाणुंधरि सोक्खहेउ          लच्छीमइदेवीगम्भजाउ</p>	<p>कल्लाणण्हाणपुज्जारुहाहं ।          उरुरररुहजुयलालियकराहं ।          मुहकंठमूलि चुंबणरयाहं । 5          धियकेसहं महुपीयाहराहं ।          लीलाकडक्खविक्खेविराहं ।          कीलंतहं गयबहुवासरहं ।          हिमकिरणकंति कुलिसयरधीय ।          णं विकमलकर सयमेव लच्छि । 10          णियणंदणु णं सो कामएउ ।          परिणांमिउ राणं अमियतेउ ।</p>
---	--

घत्ता—तणय वसुंधराहि घरभरधरहि छज्जइ तहु करि लग्गी ॥

कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

उन्नतातिमनुमात्रपात्रता भाति भद्र भरतस्य भूतले ।

काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

1. १ MBP ° वीसासहिं २ MBP पिय°. ३ MBP °विलासहिं. ४ MBP उरि उररुह°;  
 K उरुरररुह°. ५ MBP °भुयलयाह°. ६ MB °मूलु. ७ B °रहाहं. ८ MBP °कोवसंभाविराहं. ९ MBPT  
 अहुतीय. १० B कुलिसेयवीय. ११ MBPK °वइ°. १२ MB सियच्छि. १३ MP विगयकमल; B विकम-  
 लकल. १४ MBP लच्छीमइदेविहि गम्भि जाउ. १५ MBP परिणाविउ.

1. 6 a स य णो य रा ह स्वजनोत्कराणां स्वजनसमूहानाम्; b महुपी या ह रा हं मधुनोपलक्षितः पीतोऽ  
 धरो ययोः. 8 a पविजंघ° वज्रजंघः. 9 a अहुईय अद्वितीया; b कु लि स य र धी य वज्रबाहुपुत्री. 12 b  
 अ मि य ते उ अमिततेजा. नाम श्रीमत्या भ्राता. 14 आवग्गी आवल्लिता.

## 2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि  
 णरणाहें करिकरदीहबाहु  
 सहं सुण्हइ सहं णियतणुरुहेण  
 आउच्छिवि इट्टु विसिट्टु बंधु  
 उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ  
 हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु  
 पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिगंतु  
 गयमयजलधौरहिं भरइ तल्लु  
 गुरुयणविओयतावे च्याइं  
 सह कामिणीहिं पंकयमुहीइ  
 आसण्णपंधि सुंदरपपसि  
 पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु  
 घत्ता—इयंरु वि जंतु पहे भल्लइ दियहे उप्पलखेडु पइट्टु ॥

पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्टु ॥ २ ॥

## 3

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु  
 लक्खणवंजणहिं पसाहियाइं  
 वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ  
 एक्कहिं दिणि राणउ वज्जवाहु  
 सँउहइ सेहीरासणणिसण्णु  
 णहयलि अवलोइउ सरयमेहु

दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।  
 णियणयरहु पेसिउ वज्जवाहु ।  
 सहं सकलत्ते ससहरमुहेण ।  
 संचलिउ सुयणु चंदक्कचिंधु ।  
 अम्मणु अंचहुं णिसरिउ राउ । 5  
 छत्तहिं छाइउ दिसविदिसमग्गु ।  
 चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।  
 हयलालइ हुउ चिक्खुंल्लु खोल्लु ।  
 पुत्तियहिं पुंसेप्पिणु अंसुयाइं । 10  
 पंडिय संपेसिवि समउ तीइ ।  
 सरसामारामसिरीणिवांसि ।  
 णियभवणहु पल्लइउ णरिंदु ।

सहुं वहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।  
 जमलइं पण्णासेक्काहियाइं ।  
 सुललियक्कवाइं व कइमईइ ।  
 जावच्छइ सुइलीलंबुवाहु ।  
 तां कालीयरवरकिरणवण्णु । 5  
 णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

2. १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ. २ MBP दिसिविदिसि°. ३ M °भारहि. ४ MBP चिक्खिच्छु.  
 ५ K °णिवेसि. ६ MBP पल्लइउ. ७ MBP उप्पलखेडि.

3. १ MB °रंजियकुमारु. २ MBP °वंजणहिं. ३ K सुइसीलंबु°. ४ MBP सउहयलइ.  
 ५ MBT सीहासण°; P सीहासणि. ६ MBP ता ते कालीयरकिरण°. ७ MBP दिव्वगेहु.

2. 5 b अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गवोलापनं कर्तुं निःसृतः. 7 b महीदियंतु पृथिव्या  
 दिगन्तः. 8 a तल्लु सुंदरसरः.

3. 1 b कुमारु पृथिव्यां कामः. 5 a सेहीरासण° २



उत्तुंगसिंहरसुरहरसमाणु  
 चितइ पहु गउ वारिहरु जेम  
 जीविउ धणु पुत्त कलत्तु वासु  
 इय भणिवि तेण परणरदुलंघु  
 सह सुयसुएहिं सुयवहुसुएहिं  
 जिणदिक्ख लेवि कउ कम्ममोक्खु  
 रच्छाहिंडियसुरसुंदरीहि  
 घत्ता—जो सो चक्कवइ सुहवद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणु ॥

पुणरवि सो दिट्ठु विलीयमाणु ।  
 जाएसमि पलयहु हउं मि तेम ।  
 होसंइ थिर घणसंकासु कासु ।  
 कुलसिरिहि समप्पिउ वज्रजंघु । 10  
 अवरेहिं मि रायहिं थिरभुएहिं ।  
 तेणासाइउ तं परमसोक्खु ।  
 एत्तहि वि पुंडरीकिणिपुरीहि ।

ता णिसि मिलियदल्लु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥ ३ ॥ 15

## 4

जोइउ णरणाहें लेवि णल्लिणु  
 उग्घाडइ तं सो रमणराइ  
 तं वारवार चप्पिवि करेण  
 पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण  
 इच्छिउ रापं खरदंडणासु  
 ववगयमलदलवलयंतरालि  
 सररुहकरंडि णिम्मुकुजीउ  
 भासइ हे मामि सिलीमुहेण  
 दाणुलि कवोलि घुणंतएण

को किर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।  
 लच्छीमुहदंसंणि कामु णाइं ।  
 विहाडियउ कमलु सूरेण तेण ।  
 एक्केणु पत्तु अवणंतएण ।  
 खरदंडणासु तहु गुणविसेसु । 5  
 अवलोइउ अलि केसररयालि ।  
 णं इंदणीलंमणि णियवि राउ ।  
 करिकणणझडप्पणु सहिउ एण ।  
 संपत्तंउ दुक्खु रडंतएण ।

घत्ता—दिसहिं समुल्लइ लोलइ वलइ रुद्धउ कहिं पसरइ करु ॥ 10

णिसि तमापिहियमुहे एत्थंवरुहे गंधलोलु मंड महुयरु ॥ ४ ॥

८ MBP °सिहरु. ९ MBP सो पुणरवि. १० MBP होइइ. ११ MBP पुंडरिकिणि°. १२ MP जो.  
 4. १ M णडिणु. २ MBP °दंसणकामु. ३ MBP णिम्मुकु जीउ. ४ MBP इंदणीलु मणि.  
 ५ MBPK घुलंतएण. ६ M संपत्तु दुक्खु करदंडएण; MP संपत्तु दुक्खु करडंतएण. ७ BP समुलसइ.  
 ८ MBP मुउ.

11 a सुय सु ए हिं पुत्राणां पुत्रैः; सुय बहु सु ए हिं श्रुतबहुश्रुतैः अधीतागमैः.

4. 2 a उग्घाडइ विकासयति; रमणराइ कीडानुरागी. 4 b अवणंतएण त्रौदयता. 5 a खर-  
 दंडणासु कमलम्; b खरदंडणासु तीव्रदण्डनासः तस्य गुणविशेषः 8 a मामि हे सखि.

## 5

आरोहणबंधणताडणाइं  
 गणियारिफासवसमागएण  
 रसलालसु मासकणावलुद्धु  
 सरिविउलविमलजलि कीलमाणु  
 संगीयगोरिगयचित्तसोचु  
 णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं  
 प्रांएं संप्राविउ प्राणणिहणु  
 पवसियमहिलंसुयहंतसिहेण  
 वेच्छिल्लकुसुमसमवणणएण  
 रूवरयपयंगहं कयखएण  
 एमेव कयंताणणि पडंति  
 एक्केकिंदियवसमुवगयाहं  
 असरियपंचक्खरसामिसाहं  
 कंपावियदसदिसिवहरसाहं

अंकुसखयाइं कईवेयणाइं ।  
 भणु किं ण विडुरु विसहिउं गएण ।  
 परिधावमाणु संमुहउं मुद्धु ।  
 धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।  
 णउ पेक्खइ संमुहुं सरु सरंतु । 5  
 चउदिसहिं वि वग्गुरवेदु भमिउं ।  
 वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।  
 तिडितिडियतिडिकारवणिहेण ।  
 दीवुच्छवि देहलिदिणणएण ।  
 णं भासिउ भविइ दीवएण । 10  
 मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।  
 एवहु दुक्खु तंहिं जंतुयाहं ।  
 चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।  
 अक्खेवि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इयं संभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ नृवसंसिउ ॥

15

तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5. १ MBP °ताडणबंधणाइं. २ MBP कय°. ३ B सुद्धु. ४ MBP °दिसहिं वग्गुरवेदु.  
 ५ MBP पावें संपाइउ पाण°. ६ MBPK हय°. ७ MBP कंकेल्लिकुसुम°; T विच्छिल्ल कोरण्टकः. ८ M  
 रूवरयपयंगहं; BP रूवरयपयंगहं. ९ MBP जहिं. १० M असरिसपंच°; T असरिय°. ११ MBK दस-  
 दिस°; T दसदिसि°. १२ MBP अक्खमि. १३ MBP णिव°.

5. 1 b °खयाइं° क्षतानि. 2 a गणियारि° हस्तिनी. 3 a मासकण° मांसखण्डम्. 7 a प्रांएं  
 प्रायः; णिहणु विनाशः. 8 b °रवणिहेण° शब्दव्याजेन. 9 a वेच्छिल्लकुसुमसमवणणएण कोरण्टक-  
 पुष्पवत्पीतवर्णेन. 10 b भावइ प्रतिभासते. 13 a असरियपंचक्खरसामिसाहं न स्मृता पञ्चाक्षरस्वामिनां  
 पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीयैस्तेषाम्; b चक्खियपंचक्खरसामिसाहं आस्वादितं पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणां रसो  
 रतिसुखं तदेवामिषं यैः. 14 a कंपावियदसदिसिवहरसाहं कम्पिता भयं नाता दशादिकपथा मार्गाः रसा च  
 भूमियैस्तेषाम्.

## 6

राएण भणिउं भो भो कुमार  
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण  
तुहुं देहि कुलक्कमभरहु खंधु  
मइं पहेणेवउ परमायरेण  
कामिणि मेइंणि वि जगेक्कराय  
तुह पयपंकयरयचंचरीउ  
जिह लच्छीहरु तिह पुंडरीउ  
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ  
हउं तुहुं मि वे वि साहहुं परत्तु  
घत्ता—ताँ सिस्सु ससिसरिसु जयकयहरिसु महिणाहें सोमालउ ॥

धरि धरणिभारु धउरेयधीर ।  
हउं सोसैमि कंपियसयमहेण ।  
ता चवइ तणउ सो मयरचिंधु ।  
तमणियरु व बालदिवायरेण ।  
पइं भुत्ती भुंजमि केम ताय । 5  
कूरारिलुलाययपुंडरीउ ।  
आसणु अल्लिवहि सपुंडरीउ ।  
इह करउ रज्जु नूवपुंडरीउ ।  
तं णिसुणिवि राएं तं जि उत्तु ।  
10

रज्जि परिट्टविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ ॥ ६ ॥

## 7

परिसेसियमत्तमहागएण  
परिसेसियकंचणसंदणेण  
परिसेसियबहुदेसंतरेण  
परिसेसियसयलवसुंधरेण  
जसहरसीसहु गणहरु पासि  
विज्जंति ण इच्छिय पुहइ जेण  
उच्चारियजिणवरथुइमुहाहं  
पव्वइया मुणिमयजाणियाहं

परिसेसियचलहिंसियहएण ।  
परिसेसियभडवरणंदणेण ।  
परिसेसियपउरंतरेण ।  
जायवि देवे चक्केसरेण ।  
पव्वज्ज लइय गिरिकुहरवासि । 5  
सह अमियतेयणामेण तेण ।  
सहसु जि वयमासिउ तणुरुहाहं ।  
सह सट्टिसहस रायाणियाहं ।

6. १ MBPK धोरेय°, २ K सोसविं. ३ M मेइणि जगि एक्क°, BP मेइणि व जगेक्क°. ४ MBPT अल्लिवहि. ५ MBP णिव°. ६ MBP तो.

7. १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M गंदरेण, P °दंसणेण, but records a p °णंदणेण. ४ M तेण. ५ MBP पव्वइयइं.

6. 1 b धउरेय° धुरि साधुः. 4 a पहेणेवउं परित्याज्यम्. 6 b लुलायय° महिषः; °पुंडरीउ व्याघ्रः. 7 b अल्लिवहि देहि; सपुंडरीउ सच्छत्रम्. 10 सोमालउ कोमलः, 11 पय पालय प्रजाः पालय.

7. 7 b वयमासिउ व्रतं गृहीतवान्.

दिवसंक्रियाइं लुंचेवि केस  
इय राणं किउ णिक्खवणु जाम

णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।  
संपत्त विलासिणि तर्हि जि ताम । 10

घत्ता—पंडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥  
किउ मणु अप्पवसु कंदप्पवसु हौंतउ खंतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

8

णिरुद्धयं गिराइणा	समाणसं विराइणा ।	
विमुक्कओ सवासओ	सभूसणो सवासओ ।	
समासिओ तवासओ	लुओ कयंतवासओ ।	
णिवारिओ कसायओ	समीहिओ कसायओ ।	
मईहरो पिसायओ	जिओ पँहुल्लसायओ ।	5
चलेहिं जा ण साहिया	थिरेहिं जाण साहिया ।	
दढं दिही हणंति सा	परज्जिया छुहा तिसा ।	
सरंतु सो वसी अयं	सहेइ माहसीययं ।	
विइण्णवाणरीडरं	भरंतरुक्खकोडरं ।	
णियाहिदेहकंचुयं	घणागमे वि कं चुयं ।	10
महीहरे भयालए	हुयम्मि णिण्हयालए ।	
रविस्स संमुहो ठिओ	तवेइ मोक्खपंथिओ ।	
अहिण्णभूतणग्गयं	सबाहिरंतणग्गयं ।	
महाखले वि सामिणं	णमंसिऊण सामिणं ।	

१ P कंदप्पु वसु.

8. १ T विमुक्कणग्गवासओ and adds: सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थः. २ MBP समाहिओ, ३ P कसायओ. ४ MT पिहुल्ल°. ५ MB दिहिं; P दिहं. ६ GK ययं but gloss अजम्. ७ MBPK गिभ-यालए. ८ M संमुहे. ९ MBP थिओ. १० MBP अभिण्ण°.

8. 1 a गिराइणा नृराजेन चक्रवर्तिना; b विराइणा वीतरागेण. 2 a सवासओ खगृहम्; b सवासओ सवत्तम्. 3 a तवासओ तपआश्रवम्; b कयंतवासओ कृतान्तपाशः. 4 b कसायओ कः परमात्मा तस्य स्वादोऽनुभवः. 5 b पहुल्लसायओ पुष्पवाणः कामः. 6 a चलेहिं चञ्चलचित्तैः; b थिरेहिं जलसाहिया स्थिरचित्तैः परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तैः जानीहि साधिता निर्जिता. 8 a अयं अजं जिनम्; b माहसीययं मापमासे शीतम्. 10 a णियाहिदेहकंचुयं प्रवाहितसर्पकम्; b कंचुयं पतितं जलम्. 13 a अहिण्णभूतणग्गयं अखण्डितभूमितृणाग्रम्. 14 a महाखले वि सामिणं महाखलानामप्युपशामकम्.

तओ वसुंधरीसुया	अणुंधरी ससासुया ।	15
धरेवि पुंडरीययं	सिरि <sup>१२</sup> व्व पुंडरीययं ।	
पईविओयकालिया	अचंदिम व्व कालिया ।	
समंदिरं समाइया	अमेयतेयमाइया ।	

घत्ता—सुंयरिवि णिययवइ सा हंसगइ धिवइ सरीरु महित्थेले ॥

णयणंजणमइलु कुंकुमकविलु अंसुपवाहु थणत्थेले ॥ ८ ॥ 20

9

पुणु सोउ मुएप्पिणु हसियचंदु	जोइउ णत्तियवयणारविंदु ।	
घरंमंतिमंतणिम्मलमईइ	संचित्तिउ मणि लच्छीमईइ ।	
णिज्जइ दवग्गि वणि मारुएण	णिज्जीव णाव वेणि तारुएण ।	
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि	चित्तेवी पढम सहायरिद्धि ।	
जो धरिउ भारु णाहें विसालु	तं वइ केम अँव्वत्तु बालु ।	5
जं धवल्लु धुरंधरु धीरु धरइ	तहि भरिण व वच्चु ण पउ वि सरइ ।	
गंधव्वण्यररायहु सुवाय	मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय ।	
चिंतागइ मणगइ खयरराय	देवीइ भणिय ते बे वि भाय ।	
इहु लिहिउं लेहु मइं कउं मणम्मि	सामुग्गइ णिहिउं सलंछणम्मि ।	
जाइवि वररमणीदुल्लहासु	णिक्खिर्वहु सिरीमइवल्लहासु ।	10
णिसुणिवि अम्महि कम णवेवि	पाहुहु लेविउं आहरणु लेवि ।	
गय ते णहेण कंटइयदेह	पयजुयणेहीरारुणियमेह ।	

घत्ता—खणि मणपवणगइ खयररहिइ उर्पलखेहु पराइय ॥

वज्रजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥ ९ ॥

११ K ससासुया but corrects it to सुसासुया. १२ P सरि व्व. १३ MBP सुमरिवि; K सुंयरिवि. १४ MP महीयले, B महयले.

9. १ MBP °मंतिमत°, K °मंते मंत°. २ K जलि. ३ MBPT अबुहत्तु. ४ B ° णयरे रायहु. ५ MBP लेहु लिहिउ. ६ M कय. ७ BP लिहिउ. ८ MBP णिक्खेवहु सिरीमइ°. ९ MBP तं णिसुणिवि अवहियवयणु वे वि. १० MBP चेलिउ. ११ MBP उप्पलु खेहु.

15 b ससासुया श्वभ्रूसहिता. 17 b कालिया रात्रिः. 18 b अमेयतेयमाइया 'अमृततेजोमातृका.

9. 1 b °णत्तिय° पौत्र. 3 b वणि जले, तारुएण कर्णधारेण. 5 b अँव्वत्तु अप्रगल्भः. 9 b सामुग्गइ करण्डके; सलंछणम्मि मुद्रायुक्ते. 12 b °णेहीर° कुङ्कुमम्.

10

तद्दु तेहिं समण्डिउ मणिकरंडु  
 उव्वेढिवि वाइउ झँत्ति लेहु  
 जिह दिज्जंतै वि परिहरिवि भूमि  
 जिह पुंडरीयसिरि बद्धुं पट्टु  
 जिह लइयं दिक्ख नृवकामिणीहिं  
 जिह तणुरुहेहिं जिह पंडियाइ  
 गउ पहु जिह अवरु वि अमियतेउ  
 जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ  
 चंगउ किउ देवें मयणजूरु  
 चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण

उग्घाडिउ तेणुर्वरिल्लखंडु ।  
 जिह जाउं जोइ महिणाहणाहु ।  
 हुउ अमियतेउ तस्साणुगामि ।  
 भेल्लेप्पिणुं णियजोवणमरट्टु ।  
 जिह मंडलियहिं मुक्कावणीहिं । 5  
 हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।  
 तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।  
 ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।  
 जं लइयउ तंत्तु भवतिमिरसूरु ।  
 जं व्रँउ संगहियउ णववण । 10

घत्ता—धणुणउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥

णिहिघडदरिसियइ घडँदासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ  
 सब्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ  
 संचारु ण लब्भइ हयवरोहिं  
 छत्तइं णं कुसुमंइं वियसियाइं  
 चमरइं चलंति कामिणिकरेसु  
 दीसंति सुवंसारूढकेउ

दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।  
 जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।  
 जलु थलु संदाणिउं किंकरेहिं ।  
 सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।  
 णं हंसइं रत्तिदीवरेसु । 5  
 णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10. १ MBP °णुवरिहु. १ MBPT उव्वेल्लिवि; K उव्वेढवि. ३ K तेण लेहु. ५ MBP जोइ जाउ. ५ MBP दिज्जती. ६ M मियउ तेउ. ७ B बद्ध पट्टु. ८ MBP आमेलेप्पिणु जोवणु मरट्टु. ९ MBP णवकामिणीहिं. १० MP तउ; B तव. ११ MBP वउ; K वउ but corrects it to व्रउ. १२ MBP घरदासियइ महिए.

11. १ MBP कुमुयइं.

10. 2 a उव्वे ढि वि प्रसार्य; b महिणाहणाहु चकी. 6 b °वि च्छ ड्डि या समूहः. 10 b णव-वण यौवनस्थेन. 12 वि हा वि उ विखण्डीकृतो वाञ्छितः.

11. 4 b °पहसियाइं प्रभाशुभ्राणि.

लीलाइ मिलिय मंडलिय जंति  
आणंदु पुरोहिउ दिव्वदिट्टि  
बलवइ वि अकंपणु कंपियारि  
णिवसंतगामपुरपट्टणेहिं

मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।  
धणवइसमाणु धणमिच्छु सेट्टि ।  
संचैलियउ चलकरवालधारि ।  
वणु संप्रँइय कइवयदिणेहिं । 10

घत्ता—चवलरहँल्लिचल्लु फुल्लियकमल्लु तहिं सरवरु अवलोइउ ॥

णं रायहु महिए आयहु सहिए अग्घवत्तु उच्चाइउ ॥ ११ ॥

## 12

करिकरडगलियमयविंदुमलिणु  
मयलंछणंयरकरदलियणलिणु  
मयगँयदलवट्टियसिरिणिकेउ  
तहु तीरि विमुक्कउ सिमिहँ जाम  
चितंतु भोज्जंभायणपरिक्ख  
दमवँरु णामँ पुहईसरासु  
आवंत णियँवि मउलियकरेण  
ठाभणिय बे वि उवसमवसेण

मयमिहुणणिसेवियविउलपुलिणु ।  
मयमँत्तभमरगइरइयखलिणु ।  
मयवइमुहजीहाविलिहियाउ ।  
सहुं सायरसेणँ सूरि ताम ।  
रिसि परिभँमंतु कंतारभिक्ख । 5  
संपत्तउ दूसावासु तासु ।  
सिरिमइपविजंघवहूवरेण ।  
थिय चारँणमुणिविणयंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमरयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥

चंदयरुज्जलेण षासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥ १२ ॥

२ MB धणयत्तु. ३ K सचल्लिउ. ४ MBP सपाइउ. ५ M रहिल्लु चल्लु; B°रहिल्लिचल्लु; P रहिल्लचल्लु.

12. १ MBP °लंछणकर°. २ MBP मयरत्त°. ३ K मयगल°. ४ MBP सिविरु. ५ MBP भोयभायण°. ६ BP परिभवंतु. ७ B दमवर. ८ BP आवंतु. ९ MBP णिएवि. १० MP चारणगय.

11 °रह ल्लि° लहर्यः कल्लोला. 12 सहि ए सख्या.

12 2 a म य लं छ ण य रे त्या दि—मृगलाञ्छनं चन्द्रं करोतीति मृगलाञ्छनकर आदित्य ; तत्कारैर्दलितं नालिनं यत्र. 3 a °द ल व ट्टि य° चूर्णम्, सि रि णि के उ पद्मम्. 6 b दू सा वा सु पट्टगृहमयं शिविरम्. 9 सुरे—त्या दि—सुराणां देवाणां शिरःकुसुमरजसि रताः मुक्तवेगा निश्चला ये मधुकरास्तेषा पक्तिभिः.

## 13

वंदेपिणु भावे चरणकमलु  
 तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु  
 हत्यु वि उडुंतुं ण होइ दीणु  
 णिकूरु वि कूरहुं दिट्ठि देइ  
 तिम्मणु गेणहंतु वि बंभयारि  
 णित्थंद्धे लइयउ थडुं दहिउ  
 मणसच्छहु ढोइउ सच्छ वारि  
 उच्चाइयथिरदीहरभुएण  
 उवविट्ठु णिहित्तइं आसणाइं  
 पुणु दीहु वेलु जिणधम्मु सुणिवि  
 घत्ता—रूवइं मुणिवरहं संजमधरहं आसि कहिं मि मइं दिट्ठइं ॥

उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु ।  
 सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु ।  
 लंतु वि पाणइं णं वि धम्महीणु ।  
 णिण्णेहु वि दिण्णुं सणेहुं लेइ ।  
 रसु जाणंतउ रसंणिव्वियारि । 5  
 जगर्भहिणं पीयउ सीउं महिउ ।  
 इय भुंत्तु भोज्जु बहुदोसहारि ।  
 आसीस दिण्ण तहु मुणिजुएण ।  
 विहियइं पयपणमणपेसणाइं ।  
 जंपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि ।

णवर ण संभरामि हा किं करामि विहिं<sup>१३</sup> लोयणहं सुइइइं ॥ १३ ॥

## 14

तां भासिउं विहसिवि मइवरेण  
 जमलहं पण्णासहं पच्छिमिल्लु  
 पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु  
 गुणकारणु किं थेरत्तु होइ  
 महु महुरं जि दीसइ सयलुं कालु  
 आयरियउ किं परिणयवएण  
 महु दमवर दमियाणंगलील  
 अण्णु वि एयहि तुह माउयाहि

तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।  
 सुयजुयलु ण याणहि किं गहिल्लु ।  
 ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।  
 जरंणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।  
 तवुं तणुरुहेहिं मइं मोहजालु । 5  
 कम्मं जि बलवंतउ किं वएण ।  
 गयर्भवइं समासहि सामिसाल ।  
 जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।

13. १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उडुंतु. ३ P णउ. ४ M दिण्ण. ५ K सिणेहु.  
 ६ MBP णिरु णिव्वियारि. ७ MBP णित्थंद्धे. ८ MBP थडु. ९ MBP जगि महिणं. १० MBP सयि.  
 ११ MBP सच्छु. १२ MBP भुत्तभोज्जु. १३ MBP विहिलोयणहं.

14. १ MBP तो. २ B जइ णिवु; P जरु णिवु. ३ P महुर. ४ M सयल. ५ MBP तउ.  
 ६ MBP महु. ७ MBP किह परिणयवसेण; T परिणतवयसा. ८ MP भवहिं.

13. 5 तिम्मणु व्यञ्जनविशेषः स्त्रीचित्तं च. 7 b महिउ तक्कम्.

14. 1 b जल हिसेण सागरसेनः. 5 b मइ मयि. 6 a परिणयवएण परिणतवयसा.



आणंदपुरोहियमइवराहं -

चिरजम्मु कहसु महुं गरुड णेहु

रिसिणा पउत्तु परिचत्तणाणु

जाओ सि वप्प तुहुं खयरणाहु

घत्ता—चिरु रूपयगिरिहि अलयाउरिहि सइंबुद्धे संबोहिउ ॥

मुउ खयरहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥ १४ ॥

धणमित्ताकंपणकिंकराहं ।

किं कारणु ता वज्जरइ साहु । 10

जर्यवम्मु णाम बंधिवि<sup>११</sup> णियाणु ।

णामेण महाबलु बलसणाहु ।

## 15

जाओ सि देवु अहिलंसिउ काउं

तहिं मरिवि भवंतरि ऐत्थु आउ

पुणु कहइ साहु भवभावमुक्कु

गहवइसुय धणसिरिसुयहरासु

हूई दांलिहिणि वणियधीय

सा मर्यं सावयवउं किं पि लेवि

णामेण सयंपह चविवि तेत्थु

सिरिमइ सइ सुंदरि मज्जु माय

जंबूदीवामरगिरिविदेहि

वच्छावइइदेसि रूसा समिद्ध

गउ णरयहु दससायरसमाउ

णियणयरणियाडि णियवसुणिवासि

घत्ता—ता तहिं महिहरण लवलीहरण पीईवद्धेणु भासिउ ॥

उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥ १५ ॥

ईसाणकप्पि ललियंगु णाउं ।

तुहुं वज्जजंघु मैहं तणउ ताउ ।

सुणि सिरिमइजम्मंतरचउंहु ।

उवसग्गु करेप्पिणु मुणिवरासु ।

पिहियासवेण उवसमहु णीय । 5

हूई देवत्तणि तुज्जु देवि ।

हूई णरणाहहु धूय एत्थु ।

आयण्णहि भिच्चपवंचु ताय ।

पुरिमिल्लिइ गयणविलंबिमेहि ।

हौंतउ णरवइ णामेण गिद्ध । 10

अणुहुंजिवि पंकप्पहि वराउ ।

हुउ वग्घु दिसागयकुसुमवासि ।

९ M परचित्तणाणु. १० MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवर्मा त्वं. ११ K बंधवि.

15. १ MBPK अहिलसिय २ P कामु. ३ P णामु. ४ MBP एत्थ जाउ. ५ MBP महु. ६ MBP °मुक्क. ७ MBP °चउक्क. ८ MB सुहयरासु. ९ MB करेविणु. १० P दालिहिय. ११ P मुय. १२ BP रसासमिद्ध, GK note this as *p* in the margin : रसासमिद्ध इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः; T रसासमिद्ध अतिक्रोपी रसासमृद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः. १६ M पीईपट्टणु; BP पीईवट्टणु.

11 a परि चत्त णा णु परित्यक्तज्ञानः.

15. 1 a काउं कामः.; 10 a रुसा कोपेन, समिद्धु ज्वलितः. 11 b वराउ वराकः. 12 a °वसुणिवासि धृतघनस्थाने. 41 समरायरहो संग्रामादरस्य.

## 16

तीर्हि णिवसइ पहयरिणयरिणाहु  
 चारणमुणि णहयलि ओयरंतु  
 गिरिवरविवरंतरसंठिएण  
 दिट्ठउ पुल्लि पिहियासवक्खु  
 संभरियजम्मु हउं मंदभाउ  
 गउ सव्वभहु पुणु अलियलि जाउ  
 मणु जाणिवि मुणि वि समीउ आउ  
 थिउ संणासणि मृगु णिक्कसाउ  
 तो<sup>१</sup> थाहि भणिवि महुरें सरेण  
 पक्खालिउ जमिकमजुगु जलेण  
 गुणवंतहु संतहु कयउ माणु  
 तं पुच्छिउ इच्छिउ णियहिणहिं  
 सो ताहं तेण दरिसियउ पुंलि  
 ईसाणि दिवायरु णाम तियसु  
 गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु  
 घत्ता—मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥

कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

## 17

मंड मंति कुरुहि गइ आउमाणि  
 उप्पणणउ सुरु ईसाणसग्गि

जा तावोलंवि यलंबवाहु ।  
 वणि चरियामग्गे पइसरंतु ।  
 मयमासाहारुकंठिएण ।  
 परमेसरु णिम्मलणाणचक्खु ।  
 एत्थु जि चिरु होंतउ पुहइराउ । 5  
 पसुमासें पोसमि काइं काउ ।  
 संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।  
 गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।  
 पडिगाहिउ वृत्ति चक्केसरेण ।  
 अंचिउ पोमेण सकेसरेण । 10  
 ते तहु दिण्णउं आहारदाणु ।  
 सेणावइमंतिपुरोहिणहिं ।  
 जइणा पत्तउ सुरवईसुहिल्लि ।  
 अण्णु वि सुहं पावइ किं ण सवसु ।  
 तिर्हि<sup>१२</sup> तिण्णिण समीहिवि दाणधम्मु ।

कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।  
 विप्फुरियविविहमाणिक्कमग्गि ।

16. १ K तिर्हि. २ G तारोलंबिय°. ३ P णिम्मलु. ४ MBP संभरिउ जम्मु. ५ MBP सुव्वभहु;  
<sup>१</sup> सव्वभहु नरके. ६ MBP मिगु. ७ M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाह भणेवि; K भो थाहि भणिवि. ८ M  
 पुणु कमजुउ जलेण; BP कमजुयलु णरेसरेण, <sup>१</sup> कमजुगु सरेण. ९ MBP इच्छिय. १० MBPT इलि  
 ११ BPK सुरवर°. १२ BP तर्हि.

17. १ MBP मुउ.

16. 1 a पहय रिणय रिणाहु प्रभंकरिनाथः प्रीतिवर्धनः. 4 a पुल्लि व्याघ्रेण; पि हिया सवक्खु  
 पिहिताश्रवाख्यः. 6 a सव्वभहु श्वभ्रं नरकम्. 7 b धम्मणाउ धर्मोपदेशः. 10 a सरेण जलेन. 13 b  
 सुहिल्लि सुखपरंपरा. 15 b तिण्णिण सेनापत्यादयः.

रुसियइ वरभवणि पहंजणंकु  
 सेणाणि पहायरु पहघरंति  
 चत्तारि वि णिञ्चु जि विहियसेव  
 पइं चुइ पुणु ह्या जेत्यु जेम  
 सहूलदेउ सिरिमइहि उयरि  
 मइवरु मइवरु तुह मंति राय  
 हे ताय पहायरु मरिवि देउ  
 सेणावइ तेरउ तिच्चतेउ  
 कणयाहु तियसु चुउ कइहिं भणिउ  
 जो एहु वप्प सो दिण्णसुद्धि

जायउ पुरोहचरु गलियसंकु ।  
 हुउ दिव्वदित्ति दीवियदियंति ।  
 देव्वंत्ति तुज्झु परिवारदेव । 5  
 आहासामि णिसुणहि तेत्थु तेम ।  
 सायरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।  
 को पावइ एयहु तणिय छाय ।  
 अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।  
 परवलहु समुग्गउ धूमकेउ । 10  
 सुयकित्तिअणंतमइहिं जणिउ ।  
 आणंदु पुरोहिउ विमलबुद्धि ।

घत्ता—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ रुसियविमाणहु आयउ ॥

दत्तयवणिवडणा विरइयरइणा धणयत्ताहि सुउ जायउ ॥ १७ ॥

## 18

धणमिन्नु सेट्टिकुलणालिणमिन्नु  
 एयइं छह वद्धसिणेहयाइं  
 णरवइ चउ किंकर समरभीम  
 णिसुणेवि भवावलि विम्हियाइं  
 पुणु भणइ राउ भयवंत विमल  
 चत्तारि वि णरहं ण ओसरंति  
 णउ भक्खु लेंति णउ जलु पियंति  
 किं कारणु कहहि मुणिदचंद

किंकरु अहवा तुह परममिन्नु ।  
 तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।  
 सिरिमइ राणी सोहग्गसीम ।  
 छ वि जिणरविगुण त्तिवि थियाइं । 5  
 सहूल कोल गोपुंछ णउल ।  
 अच्छंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।  
 णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।  
 ता भणइ सूरि सुंणि भो णरिंद ।

२ MBP रुसियवरु ३ P चत्तारि जि णिञ्चु वि ४ B देवत्तु. ५ MB सायरसेणु व हुउ, P सायरसेणहो हुउ, K सायरसेणे हुउ. ६ MBP कहहिं

18. १ MBP विभियाइ. २ MBP जिणवरु. ३ PT गोपुंछ. ४ MBP भो सुणि.

17. 4 a पहघरति प्रभाविमाने 9 b अ ज्ज व हि आर्जवाराण्याम्. 10 b धूमकेउ वहिः.

18. 5 b गोपुंछ मर्कट . 7 b ण विया ण ण नमितानना.

इह देसि हँत्थिणायउरि रम्मि  
तहु धण धणवइ सुउ उग्गसेणु  
पहु कोट्टागारि अइक्कमेवि  
उर्वणेतु पणयसीमंतिणीहिं  
मुउ कोहँ जायउ एत्थु वग्घु

वणि सायरदत्तु विचित्तहम्मि ।  
सो कामुउ कामिणिपायरेणु । 10  
भर्त्तइं भरणइं बैलि मड्डु लेवि ।  
वंधाविउ राएं णिययणीहिं ।  
ओहँच्छइ मइं मण्णिवि सलग्घु ।

घत्ता—होंतउ सूयरउ चिरु माणरउ विजयणयरि बुँद्धिए किसु ॥

महँणंदे जणिउ जणँवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिंसु ॥ २८ ॥ 15

19

हरिवाहणु णामं वूढमाणु  
णरणाहँ णंदणु भणिउ एंव  
तं णिसुणिवि धाँइउ चवलु डिंभु  
मुउ एत्थु एहु हूयउ वराहु  
उद्धुयधयमालापंचवणिण  
वणिवरिण कुबेरँ जणिउ पुत्तु  
बहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण  
वंचिवि चामीयरु णियउ सव्वु  
सुउँ मायारउ हुउ एत्थु एहु  
णायारि णिसुणि णिव पुव्वथालि  
होंतउ कंदुवि लोँल्लुयउ णाम  
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण

दप्पंधु समंदिरि कीलमाणु ।  
माणेण परंमुहुं होंति देव ।  
सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु ।  
पुणु कहइ साहु अँच्चंतसाहु ।  
कइ आसि जम्मि णयरम्मि धणिण । 5  
पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु ।  
भासिउ मायइ ता सा अणेण ।  
ता तहिं वि ताइ तहुँ गहिउ दव्वु ।  
वणि मँकँडु माणुसमेत्तदेहु ।  
सुपइट्टियपट्टणि तोरणालि । 10  
दियहेहिं णवर रामाहिराम ।  
कारवहुं एण कारावएण ।

घत्ता—जुण्णउं रायहरु तम्हँउ तरु लेवि वहइ पुरु परियणु ॥

इट्ट विसट्टे जहिं सहस त्ति तहिं कंदुइ पेच्छइ कंचणु ॥ १९ ॥

५ MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि, ६ BP वत्थाभरणइं, ७ MBP बलिमंड, ८ MBP उवयंतु, T उवणेतु.

९ MB तुह अच्छइ, P हुउ अच्छइ, १० MBP बुद्धीइ, ११ MBP सह णंदे, १२ MBP जणवय°.

19. १ MBP धाविउ चवल, २ B अवइत्तसाहु ३ MBP तं गहिउ, ४ MBPK मुउ.

५ MBP मकडु माणुसु, ६ MBP लोँल्लुउ, ७ M तुम्हाउ भरु, ८ B विसिट्ट, ९ MB कंदुउ; P कदुव

12 b णिययणी हिं वरत्राभि, 13 b ओहच्छइ ऊर्च स्थितः.

19. 5 b कइ वानरः 9 a मायारउ मायावी, 10 a णायारि णकुल, 11 a कंदुवि काद-  
विकः; b रामाहिराम हे रामाधिराम वज्रजंघ, 12 b एण अनेन कांदविकेन, 13 तरु शीघ्रम्,  
14 विसट्ट स्फुटिताः.

## 20

तोलेप्पिणु चलकरयलतुलाइ  
 इट्टु चामीयरपूरियाउ  
 कइवयउ ण केण वि भावियाउ  
 कम्मयरहु दिण्णउं सरसु भोज्जु  
 इय गॅरहिउं कम्मु करेवि गूडु  
 घरि तणउ थवेप्पिणु वियसियासु  
 एत्तहि पुत्तं पियराण भिण्ण  
 तं<sup>१</sup> खंडइ जाम सुवण्णयारु  
 तं<sup>२</sup> गंपि पकंपियजीयण  
 भासिउ वेसइ वित्तंतु सव्वु  
 धरणीसरकुलचिंधेण जडिय  
 परिरक्खियमाहिर्वमाणवेहिं  
 सुउ बंधिवि कारागारि धिन्नु

परियाणेप्पिणु वणिवरकलाइ ।  
 बहिं मिप्पिडेहिं समारियाउ ।  
 लहुं गियभवणहु णेवावियाउ ।  
 लुन्नु वि दाणेणं करेइ कज्जु ।  
 अण्णहिं दिणि मोहवसेण मूडु । 5  
 गउ गामंतरु तणुरुहहि पासु ।  
 सोवण्ण इट्टु दारियहि दिण्ण ।  
 तां पेच्छइ पडुपिउणाम सारु ।  
 जाणाविउ रायहु भीयण ।  
 तं जायउ रायहु तणउं दव्वु । 10  
 लोलुयगेहे णिवमुद्द पडिय ।  
 परभीयरोहिं णं दाणवेहिं ।  
 तहिं अवसरि कंदुइ तहि जि पत्तु ।

घत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ ॥

परधणलोलुयउ सो लोलुयउ राउलेण विन्भाडिउ ॥१० ॥

15

## 21

पुणु बहुदविणासाऊरिण  
 तुम्हइं विण्णि वि महुं सत्तु जाय  
 मुउ लोहकसायमलेण मइलु

कहिं गर्यं भणेवि उल्लूरिण ।  
 पाहाणें चूरिवि णियय पाय ।  
 इह हूयउ पेक्खु णरिंद णउल्लु ।

20. १ MP बहि मिउपिडेहिं, B बाहिमिपिडेहिं. २ M कम्मरयह, ३ MBP दाणेण जि करइ.  
 ४ MBP गारिउ. ५ MBP ता, ६ MBP तो. ७ MBP त. ८ MBP लोलुयहिं गेहि. ९ T माहिय  
 मा लक्ष्मीर्हता, माहिव माहिवा इति पाठे.

21. १ MBP गउ. २ MBP कुल्लूरिण.

20. 2 b बहिं बहिः. 6 a वियसि यासु विकसितास्य, 7 a पियराण पित्राज्ञा. 12 माहिव<sup>०</sup>  
 लक्ष्मीपती राजा.

21. 1 b उल्लूरिण कंदुकिना.

णिसुणेपिणु महुमहुरक्खराइं  
 उवसंत वहंति ण भउ ण रोसु  
 पइं दिणु दाणु माण्डिउं इमेहिं  
 बहुभोयभावसुइदाइणीहिं  
 अट्टमइ जम्मि तुहुं जिणवरिंदु  
 सिरिमइ होसइ सेयंसराउ  
 सुरणरसुहाइं संपाविहिंति  
 संसारविहुरणिव्वेइएण  
 कर्मकमलजमलवलइयसिरेण  
 वंदिय मंतिहिं सावयगणेण  
 संपत्ता दुरिणं वणयरत्तु  
 घत्ता—मृगंहत्थे पुंसिवि तहिं णिसि वसेवि सूरुग्गमि पहु णिग्गउ ॥  
 करिघंटासरहिं पसरियकरहिं भयभेसावियदिग्गउ ॥ २१ ॥

सुयरेपिणु गय जम्मंतराइं ।  
 सुहइणं अज्ज खवंति दोसु । 5  
 कईकंठवग्घविसहरदमेहिं ।  
 परमाउ बद्धु कुरुमेइणीहिं ।  
 होसहि पयजुयणांमियसुरिंदु ।  
 पहिलउ जि दार्णतिथयरदेउ ।  
 ए तुह सुहि होइवि सिज्झिहिंति । 10  
 जिणणाहधम्मअणुराइएण ।  
 तं णिसुणिवि पणविय बहुवरेण ।  
 गय रिसि णहयर णहपंगणेण ।  
 संभासिवि चत्तारि वि णिरुत्तु ।  
 15

## 22

छणयंदु व तणुं कंतिइ पसणु  
 साणुंधरि पइवयणिलयकुहिणि  
 पणमिय सासुय जामाण्डएण  
 आलिंण्ड राणं भार्यणिज्जु  
 मिलियउ लच्छीमइसिरिमईउ  
 णिर्यबंधुहि संचितियसिवेण  
 सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि

दियहेहिं पुंडरिंकिणि पवणु ।  
 आलोइय तेण णवंति बहिणि ।  
 अविरयसणेहंपसरियभुएण ।  
 अविउल्लु बालु पहसियमुहज्जु ।  
 णं गंगाणइजउणाणईउ । 5  
 तहिं तेण वज्जजंघं णिवेण ।  
 मंति वि किउ विउहणयाणुगामि ।

३ MBP °झाणेण जि जं खवहि. ४ B कईकट्टवग्घ°; P कईकोलवग्घ°. ५ M बहुभेय°. ६ MBP °दावणीहि. ७ MBP °णावियणारिंदु. ८ M दाणु तित्थु°. ९ PK करकमल°. १० M सगहत्थे फंसिवि तहिं णिसि णिवसेवि, B सगहत्थे फंसिवि तहि वणि णिवसेवि, P सगहत्थे फंसिवि तहि णिव संसिवि.  
 22. १ M णवकतिइ. २ MBP अवलोइय. ३ MBP पणविय. ४ MBP जामाण्डएण.  
 ५ MBP °सिणेह°. ६ MBP भाइणेज्जु. ७ MBP अविउल्लु वि; T अविलु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.  
 ८ MBP ता णियबंधुहि चित्तिय°. ९ MB विबुह°, P विबुहु.

6 b °कठ° सूकरः.

22. 4 b मुहज्जु मुखाब्जम्. 7 b विउहणयाणुगामि विद्वन्नयानुगामिनः.

णिरुवहउ णिवसावियउ देसु  
 वित्तीइ वलाइं णियंतियाइं  
 पडिवक्खु असेसु वि खयहु णीउ  
 अप्पणुं पुणु घरवत्ताइ लइउ  
 सँहुं भिच्चउक्केँ ससिमुहेण  
 को एम ससयणहं देइ रिद्धि

सुहि संमाणिय संचियउ कोसु ।  
 जोग्गइं दुग्गइं परिचिंतियाइं ।  
 थिरु रज्जि थवेप्पिणु पुंडरीउ । 10  
 सहं कंतइ उप्पल्लेखेहु अइउ ।  
 थिउ रज्जु करंतु सुँही सुहेण ।  
 एवहु कासु सामत्थसिद्धि ।

घत्ता—थिर परकज्जरय णियवंसधय सुपुरिस को णासंघइ ॥

घणतमभरहरणे दित्तीर्ये रणे पुष्पदंत को लंघइ ॥ २२ ॥

15

इय महापुराणे तिसड्ढिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे वज्रबाहुवज्रदंततवचरणकरणं  
 णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २५ ॥

॥ संधि ॥ २५ ॥

१० MP यतियाइ. ११ MBP समप्पिवि. १२ BP अप्पणु. १३ MBP उप्पल्लु खेहु. १४ B omit  
 this foot. १५ MBP महासुहेण. १६ P दित्तीहरणे.

11 b अइउ आगतः. 13 a ससयणहं स्वस्वजनस्य. 14 णासंघइ नाश्रयति.

## XXVI

कामभोयसुहरसवसहो तहु वसुमइहि काइं वणिणज्जइ ॥  
जं जं चितइ किं पि मणे तं तं सयल्लु वि खणि संपज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

### I

जक्खपंको दढं वल्लहालिंणं  
उंचओ मंचओ चारुसेज्जायलं  
उण्हयं भोयणं तुप्पधाराहरं  
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं  
चंदणं चंदपाया पिया णेहली  
दाहिणो मंथरो मारुओ सीयलो  
वल्लरीमंडवो पोमैजुत्तो सरो  
थद्धथद्धं दहिं सीययं पाणियं  
फुल्लियासाकयंबोहधूलीरओ  
णीरधारामुयंतवुवाहज्जुणी  
णिग्गलं मंदिरं णिक्कियं भूयलं  
इट्ठगोट्ठीविसिट्ठेहिं विण्णाययं  
विज्जुमालाफुरंतं णहं दिप्पहं  
दीहरो कालओ जाव वोच्छिण्णओ

मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।  
आवरोहारि सोमहं थणाणं थलं ।  
रत्तओ कंबलो छण्णरंधं घरं । 5  
सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तयं ।  
मल्लियादामयं तारहारावली ।  
रुक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।  
वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।  
उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं । 10  
मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।  
संगया सूहवा पासि सीमंतिणी ।  
धावमाणं रयालं पणालीजलं ।  
दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।  
तस्स मेहागमे तं पि सोक्खावहं । 15  
गेहए ध्रुवओ ताम से दिण्णओ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

धनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्भ्रमताम् ।  
गणनैव नास्ति लोकै भरतगुणानामरीणा च ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. MBP उंचओ. २ M °सेजावलं; P सेज्जालयं. ३ MBP सोहं. ४ GK मारओ but gloss धायुः. ५ MBP पोमपुण्णो. ६ MB थद्धथद्धं; P बद्धथद्धं. ७ MBP सीयलं. ८ M रयाणं. ९ MBP वीलीणओ; T वोच्छिण्णओ.

1. 4 b आव रौ हारि स्थूलोन्नतं मनोज्ञं च, सो म्हं उष्मसहितम्. 9 b सीयरो शीकरो जललवाः. 11 b °माऊरवंदस्स केयारवो मयूरवृन्दस्य केकारवः. 13 b रयालं सवेगम्.



सोत्तसंचारि धूमेण ताणं हओ  
कारणं मञ्चुणो किं जणो कंखए

दंपईणं खंणेणेव जीओ गओ ।  
होइ सँत्थं सिरीसं पि आउक्खए ।

घत्ता—जंबूदीवसुरालयहो उत्तरकुरुहि रमणमणहारिहे ॥

मरिवि बह्वरु अवयरिउ उयरि अणिदहु अज्जवणारिहे ॥ १ ॥

20

## 2

णवमासहिं गम्भहु णीसरियहं  
उत्ताणियमुहाहं णिवसंतहं  
सत्त सत्त दिण गय रंगंतहं  
सत्त खलिय पर्यवयणइं देतहं  
पुणु सत्तहिं थिराइं संजायइं  
अवरहिं सत्तहिं अलिणिहचिहुरइं  
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं  
ताइं तिगाउयतुंगसरीरइं  
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवसहिं

ताहं विहिं वि संचियसुहचरियहं ।  
करकमलंगुलियाउ पियंतहं ।  
पुणु वि पुणु वि उट्टंतपडंतहं ।  
अवरोप्परु दरकेलि करंतहं ।  
गर्यकुसलाइं परिप्फुडवायइं । 5  
णिहिलकलाकलावणिउणयरइं ।  
णवजोव्वणसिंगारारूढइं ।  
वरवदरीहलमेत्ताहारइं ।  
इय भांसिउं रिसीहिं हयहरिसहिं ।

घत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्टुं णाइं रसायणु ॥

10

मणिमयकप्पमहीरुहहिं चिउं रवि सत्तावीसं जोयणु ॥ २ ॥

## 3

जहिं जणियसोक्ख

दहमेय रुक्ख ।

जणमणु हरंति

चितियउ दैति ।

10 MBP खणेणेय 99 B सत्थ पियाओखए, P सत्थ सिरीसं पयाओ खए, 92 MBP °हारहो.  
13 MBP °णारिहो.

2. 1 B सचियसुहसुहचरियहं. 2 MBP पिय, T पय पदानि. 3 MBP गइ°. 4 MPB वर-  
दरीहल°, T कुवली बदरी. 5 B सुदिवसहिं 6 MBP भासियउ रिसिहिं. 7 MP थिउ, B विउ;  
[ चिउ प्रच्छादितम्.

8 b सिरीस श्रीमुखं पुष्पं वा. 10 °सुरालयहो मेरो:

2. 4 a पयवयणइं पदानि वचनानि च, b दरकेलि स्तोकक्रीडा. 8 b °कुवली° बदरी. 11 चिउ  
च्छादितम्.

महसहिउं पेज्जु  
तूरंगतूरु  
केऊरु दोरु  
गेहंगुं गेहु  
ढोयंति तुंग  
भायणविहँत्ति  
जे भोयणक्ख  
भोयणसयाइं  
उवणेंति ताइं  
पुण्णाय णाय  
णवमालियाउ  
मालंगकुरुह  
हयतिमिरभावुं

मज्जंगु मज्जु ।  
भूर्यंगु हारु ।  
वँच्छंगु चीरु ।  
णं सरयमेहु ।  
तरुभायणंग ।  
दित्तंगदित्ति ।  
ते विविहभक्ख ।  
रससंगयाइं ।  
जणु महइ जाइं ।  
वर पारियाय ।  
अलियालियाउ ।  
ढोयंति गिररुह ।  
दीवंगुं दीवु ।

5

10

15

घत्ता—णिच्चु जि उच्छँवु णिच्चँ दिहि णिच्चु जि तगुतारुणु णवल्लउ ॥

भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दूसियसज्जणवासु  
ण छिक ण जिंभणु णालँसु दिट्ठु  
ण रत्ति ण वासरु धँतुं ण धम्मु  
अयालि ण मँच्चु ण चित ण दीणु  
पुरीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु

ण खासु णं सोसु ण रोसु ण दोसु ।  
ण णिदु ण णेत्तणिमीलणु सुट्ठु ।  
ण इट्ठविशोउ ण कुच्छिय कम्मु ।  
कयाइ कहिं पि सररु ण झीणु ।  
ण लाल ण सँभुं ण पिँत्तु वि डाहु । 5

3. १ MBPKT मयसहिउ. २ MBP भूसंगु. ३ MBP केऊरु°. ४ M वच्छंग, ५ MBP गेहंग. ६ MBP °विहित्ति. ७ MP भोयणेक्ख. ८ P गिररुह. ९ MBP °भाउ. १० MBP दीवंगदीउ. ११ MBP उच्छउ. १२ MBP णिच्चु.

4. १ MB दुज्जण. २ MBP ण रोसु ण सोसु. ३ MBP णालसं. ४ M णित्त°. ५ MBP वणु; T धणु. ६ MB मिच्चु. ७ MBP पुरीसुवसग्गु. ८ MBP सिंभ. ९ MBP पित्त ण डाहु.

3. 3 a महसहिउं हर्षसहितम्; पेज्जु पातव्यम्. 8 a °वि हात्ति विभक्तिः भेदः. 9 a भो य ण क्ख भोजनाख्याः. 14 b गिररुह निर्दोषाः.

4. 3 a धँतु ध्वान्तमन्धकारः पापं च.

ण रोउ णं सोउ ण सेउ विसाउ  
 सु<sup>३</sup>रुव सलक्खण माणव दिव्व  
 मुहाउ विणीसिउ सासु सुयंधु  
 तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु  
 ण चोरु ण मारि ण घोरुवसग्गु

घत्ता—विहिं मि ताहं तंहिं संठियहं एकमेकरइरमणालुद्धहं ॥

भुंजंतहं णाणासुहइं जाइ कालु दि<sup>६</sup>ण्णेहणिबंधहं ॥ ४ ॥

किलेसु ण दासु ण को वि<sup>१</sup>वि राउं ।  
 अगव्व सुभव्व समाण जि सव्व ।  
 कलेवरि वज्जसमट्टियबंधु ।  
 करीसंर केसरि ते वि हु बंधु ।  
 अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु । 10

## 5

तंहिं जि पईहरथोरकर  
 पत्तभोयभूर्मीभवेण  
 समहिलेण अच्छंतपण  
 कासु वि भासियसम्मयहो  
 देवहु दीवियदिप्पहहो  
 पुव्वभवंतरु संभरिउ  
 थिउ णियमणि जा विंभइउ  
 ता णहाउ चारणजुयलु  
 पंतु तेण हक्कारियउ  
 सीसं सीसेण जि णेविउ  
 के तुम्हइं किं आगमणु  
 महु वट्टइ णेहुल्लियउ

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि हौंतउ आसि महाबलु राणउ ॥

तइयहुं हउं सइंबुन्दु तुह मंति मंतसम्भाववियाणउ ॥ ५ ॥

सहूल्लाइय जाय णर ।  
 वज्जजंघरायज्जवेण ।  
 सुरंतरुसिरि पेच्छंतपण ।  
 कज्जेणैय समागयहो ।  
 णिणवि विमाणु रविप्पहहो । 5  
 तं ललियंगदेवंचरिउ ।  
 भवणिव्वेयभावलइउ ।  
 ओयरिउ णहणिहु विमलु ।  
 रुइरासणि वइसारियउ ।  
 सविणयवायइ विण्णविउ । 10  
 किंउं किं तुम्हहं उवरि मणु ।  
 ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ ।

१० MBP ण सेउ ण सोउ, ११ MBP कोइ, १२ MBP add after this: मुहजि ( B महजि; P मुहजे ) ण मीसिय मासिय ( B चम्पु ण ) रोम, सुरेसहु बुंदि विसेसियकाम ( B °कम्म ). १३ MBP सरुव, १४ M करीसरि, १५ MBPK भुंजंतहं, १६ MB दढणेहणिबद्धहं.

5. १ MBP सहूल्लाइ वि., २ MBP सुरहरसिरि, ३ MBP कज्जे केण, ४ P °देउ, ५ P वि.  
 ६ MBP किं अम्हहं तुम्हहं.

9 a सुयंधु सुगन्धः, 11 b विसेसइ अतिशेते.

5. 10 a सीसेणजि शिष्यणेव, 12 a णेहु ल्लियउ सैहारिम्.

6

णिहाइ भुत्तो सि  
 जइया कुवाइहिं  
 हो बप्प दुग्गेज्झ  
 संसारहाराइं  
 सिद्धा रिस्सी जेहिं  
 होऊण ललियंगु  
 भीमारिणिण्णासि  
 मुणिदाणबुद्धीइ  
 तुहुं एत्थु जाओ सि  
 संबंधिओ होसि  
 खगवइविओएण  
 किउ घोरु तवयरणु  
 सोहम्मि सोहालु  
 सइंपहविमाणम्मि  
 इह जंबुदीवम्मि  
 पुक्खलहि मेइणिहि  
 पियंसेणरायस्स  
 कयणाहणेहम्मि  
 जाओ मि हं भइ  
 पीईंकरो णाम  
 अलिवलयणिहकेस  
 मज्झाणुओ होइ

विवरंतधित्तो सि ।  
 सिविणंतरे तीहिं ।  
 तइया मए तुज्झ ।  
 जिणवयणसाराइं ।  
 दिण्णाइं तं तेहिं ।  
 मोत्तूण दिव्वंगु ।  
 भूमीसु हूओ सि ।  
 बहुपुण्णसिद्धीइ ।  
 णाणेण णाओ सि<sup>३</sup> ।  
 किं णेय जाणासि ।  
 मइं मुक्कभोएण ।  
 इंदियछिंहाहरणु ।  
 हुउ देउ मणिचूलु ।  
 दुक्खावसाणम्मि ।  
 पुव्वे विदेहम्मि ।  
 पुरिपुंडरिंकिणिहि ।  
 पसरंतरायस्स ।  
 सुंदरिहि देहम्मि ।  
 आलाविणीसइ ।  
 सुणि रांमिणीकाम ।  
 पीईंसरो एस्स ।  
 दिव्वो महाजोइ ।

5

10

15

20

6. १ MBP विवरंति. २ MBP हा बप्प. ३ MP add after this: णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं  
 गओ तो सि ४ B °छुहा°; T °छिहा°. ५ MBP आलावणी°. ६ MBP पीईंकरो. ७ MBP  
 कामिणी°; T रामिणी°. ८ P ईस.

6. 12 b °छिहा° स्पृहा वाञ्छा. 19 b आलाविणीस इ वीणासदृशशब्दः. 20 रामिणी° स्त्री.

घत्ता—णिच्चं चिय णेहाउलहो णिग्गय विण्णि वि णियघरवासहो ॥  
जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥ ६ ॥

7

अवहिणाणि चारण संजाया  
लइ सम्मत्तु अलाहि पलावें  
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ  
गुणवंतहु दोसु वि ढंकिज्जइ  
असुइकलेवरु जणु ण वियप्पइ  
वेज्जावच्चु समउ वच्छल्लें  
मिच्छु तुच्छु जो वंशु कहिज्जइ  
वडुइ वड्डियदुक्कियलेवइ  
समयवेयलोइयमूढत्तणु  
अच्छइ बुहयणगर्थणिबद्धउ

विण्णि वि पइं संबोहहुं आया ।  
भावहि जिणदंसणु सम्भावें ।  
इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।  
मग्गभट्ट पुणु मग्गि ठविज्जइ ।  
साहुहुं देहं दुगुंछ ण विप्पइ ।  
किज्जइ हियं संघं हियल्लें ।  
अण्णदिट्ठिवहुं सो ण थुंणिज्जइ ।  
मल्लु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।  
अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।  
विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ । 10

घत्ता—वेएं किज्जइ जीवदय अण्णउ परु सयल्लु वि जाणिज्जइ ॥

हम्मइ जेण जियंतु पसु तं करवाल्लु ण वेउ भणिज्जइ ॥ ७ ॥

8

सया णारिरत्तो  
सया वित्तलुद्धो  
समोहो समाओ  
ण सो होइ देवो  
पलं जस्स खज्जं

सया मज्जमत्तो ।  
सया सत्तकुद्धो ।  
सदोसो सराओ ।  
णं खं सुण्णभावो ।  
महुं जस्स पेज्जं ।

5

7. १ M अलंहि. २ MBP वि दोसु ३ P असुह°. ४ M देहु दुगुच्छण, P देहु दुगुंछु ण. ५ B संघहियल्लें. ३ MBPT °पहु. ७ MP मुणिज्जइ. ८ MBP °गंथहिं बद्धउ, T गथणिबद्धउ. ९ MBP जीवदया.

8. १ P मज्जि मत्तो. २ P सत्तकुद्धो. ३ MBP सयं सुण्ण°; T ख ण न गगनं देवः.

२ ४ संतारिविणासहो परमवीतरागस्य कर्मविनाशकस्य च.

7. 2 a अलाहि प्रतिषेधेऽव्ययम्. 6 b °हियल्लें हितत्वेन 7 b अण्णदिट्ठिवहु मिथ्यादर्शनादि-  
मार्गः. 10 a बुहयणगंथणिबद्धउ पण्डितैः शास्त्रे रचित ; b विउ इति—विद ज्ञाने इति धातुः प्रसिद्धः.

8. 4 b णखं न गगनं देवः.

वहू जस्स गेहे	रई जस्स देहे ।	
गुरू सो वि हा हे	जगे मंदमेहे ।	
सपावं सपावा	णवंता विगावा ।	
ण गच्छंति सगं	ण वा तेऽपवग्गं ।	
पउत्ता महंता	ण कायस्स चिंता ।	10
विसस्सावि हारे	खमा होइ भारे ।	
पमोत्तूण वेयं	खगं वइणतेयं ।	
जिणिंदं अणिंदं	सुरिंदोहवंदं ।	
विहुं वीयरोसं	अहिंसाणिघोसं ।	
विहाऊण एकं	णयाणीयसकं ।	15
परो को हयारी	जगे मोहहारी ।	
तिणा जो पउत्तो	असच्चेण चत्तो ।	
अहिंसापयासो	वियाणागमो सो ।	

घत्ता—पँतीय धम्मु दयार्परमु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ ॥

लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥ 20

9

भो ललियगत्त	भो धवलणेत्त ।	
सइहसु मित्त	तच्चाइं सत्त ।	
छइव्वभेय	छज्जीवकाय ।	
पंचत्थिकाय	चउं सुरणिकाय ।	
णाणाइं पंच	गइभेय पंच ।	5
रिसिवयइं पंच	गिहिवयइं पंच ।	

४ MBP तस्स. ५ MBK विसस्सावहारे; P विसस्साह्वारे. ६ MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः

७ MB एत्तीय, P पत्तिय and gloss प्रतीत्या. ८ MB °पवरु; P °परु.

9. १ K adds this line in the margin but scores it out. २ MBP सुरचउ,णिकाय.

३ M नयभेय.

७ a हा हे हा कष्टम्. 8 b विगावा विगतगर्वाः. 9 b अपवग्गं मोक्षम्. 11 b खमा समर्थाः. 12 b वइपतेयं गरुडम्. 15 b ण याणीयं नमनार्थमानीतः. 16 a ह यारी विनाशितकर्मारतिः. 18 b वियाणागमो सो विजानीहि सः आगमः. 19 पत्तीय प्रतीत्यः, अथवा प्रतीतिं कुरु.

छल्लेसभाव	मुणि तिण्णि गाव ।	
तेरह चरित्त	मुँत्ति विं तिहुत्त ।	
णवविह पयत्थ	दह धम्मपंथ ।	
सत्त भय सिट्ठ	मय अट्ट दुट्ट ।	10
अप्पाणुवाउ	कम्माणुवाउ ।	
चरणाणिओउ	करणाणिओउ ।	
जं कहिउ तेण	मुणिपुंगवेण ।	
णिस्सुँणिवि कमेण	तं गहिउँ तेण ।	
अज्जेण जेम	अज्जाइ तेम ।	15

घत्ता—जिह सहूल्लवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिवण्णउं ॥

वाणरचरफणिरिउं चरहं सम्मदंसणु मुणिणा दिण्णउं ॥ ९ ॥

## 10

भत्तिण्णविय भवियणरवग्गे	गय रिसि उँल्लेवि णहमग्गे ।	
कुलिसबाहुतणयहु ते किंकर	मइवराइ चत्तारि सुहंकर ।	
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि	अहन्निमाणि हेट्टिमगेवज्जहि ।	
लोयसारु अहंमिदसुरत्तणु	पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु ।	
वज्जजंघु सइ सिरिमइ अज्जइ	बे वि मयाँइं समंचियपुज्जइं ।	5
हुउँ ईसाणकप्पि वरु सुरवरु	सिरिपहमंदिरि णामेँ सिरिहरु ।	
तहिं जि कप्पि कुंदेदुसमप्पहि	सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि ।	
जिणचरणारविंदरयचित्तै	णारिलिंणु छिंदेवि सैमत्तै ।	
हूई अमरु सयंपहु णामेँ	सो रूवेण ण णिज्जिउ कामेँ ।	

४ MP रयणई तिहुत्त. ५ K °पुगमेण. ६ B सिसुणवि; P णिसुणवि. ७ MBP महिउ. ८ MP सहूल अज्जणरेण; B सहूलवज्जणरेण. ९ MP °रिउचरहं.

10. २ P उल्लेवि. २ MBP अहंमिदु. ३ MBP वज्जजंघु सिरिमइ तह अज्जइ. ४ P मुयाँइं. ५ P हुव. ६ MBPK सम्मत्तै.

9. 7 b मु णि जानीहि. 11 a अप्पाणुवाउ जीवास्तित्वम्; b कम्माणुवाउ कर्मानुवादः. 12 a चरणाणि ओउ चरणानुयोगः. 17. फ णि रि उं° नकुलः.

वर्घचरु वि णरु मुउं ललियंगउ

णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ । 11

देउ वराहचरु वि संजायउ

णामें कुंडलिल्लु सुच्छायउ ।

णंदविमाणि सरयकंदाहइ

खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।

घत्ता—कुरुभूमिहि माणंबु मरिविं कंतिइ णां मियंकु दुइज्जउ ॥

णियसुहकम्मं पेरियउ पहयरि मणंरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

होतउ आसि जम्मि जो वाणरु

सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।

णंदावत्तविमाणइ हूयउ

णाम मणोहरु देउ सूरुयउ ।

जो सइंबुद्धु बुहोहें भाविउ

जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।

पीयंकुरु तिलोयपीईंकरु

सो संजायउ केवलिजिणवरु ।

णणें परियाणिवि सुरसहयरु

गउ वंदणहत्तिइ तहु सिरिहरु । 5

अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु

थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।

णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर

पइं महु दिण्णु हत्थु परमेसर ।

पइं सइंबुद्धु बुद्धुं जगु बुद्धउ

पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।

पइं जोइयउं तच्चु णीसेसु वि

तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।

तुहुं महु लग्गणखंभु अंभंगउ

हउं तुह चरणजुयल्लु सरणं गउ । 10

घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुंदुट्ठमण पावथम्म णिद्धम्म वराया ॥

कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भडारउ विण्णिण कुधामहु

गय संभिण्णसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुंडलिल्लु. ९ MBP माणउ.. १० MBP मणहरु; K मणहर but corrects it to मणरहु.

11. K सो. २ MBP °विमाणे पहूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीईंकरु; P पीईंकरु. ६ MP पीईंकरु; B पीयंकरु. ७ MB °भत्तिहि; P °भत्तिइ. ८ B करेविणु. ९ MP सुद्धु. १० MBP जाणियउं. ११ MBP अभग्गउं. १२ MB सुदिट्ठिमण; P सुदुट्ठमण.

10. 12 a कं दा हइ मेघाभे.

11. 6 a °स हं तरा लि समान्तरे. 9 b स हणेसु सधनेषु; णी से सु निःस्वेषु दरिद्रेषु.



असहविहुर संतइ संजोर्यहु  
 सुण्णवायविवरणदूसियमइ  
 तं णिसुणिवि सिरिहरु गउ तेत्तहि  
 पइसेप्पिणु तं सतिमिरु कुविवरु  
 अहो अहो सयमइ सुण्हि महाबलु  
 भुत्ती सुइरु जेण अलयाउरि  
 सुरदुंदुहिगंभीरणिणाणं  
 गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ  
 जीवदयादमेण परिचत्तउ  
 दुण्णएहिं मा विणडहि अप्पउ

णिच्चतमंधहु णिच्चणिगोयहु ।  
 णिवडिउ णरइ दुइज्जइ सयमइ ।  
 णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।  
 भणइ विमाणारूढउ सुरवरु । 5  
 हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।  
 सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।  
 तुम्हइं तिण्णि वि जिणिवि विवाणं ।  
 सोक्खपरंपैराउ हउं पत्तउ ।  
 तुहुं पुणु पावै एत्थु णिहित्तउ । 10  
 वीयरउ जिणु भणु परमप्पउ ।

घत्ता—धम्म अहिंसउ सदहहि मोक्खमग्गु णिगंथु वियाणहि ॥  
 जीहोवत्थछिहारहिउ मुणि णिमुक्कमोहु संमाणहि ॥ १२ ॥

## 13

पहाजित्तरणी  
 पहू तेण मुणिओ  
 दढं झैत्ति गहिओ  
 जिणिंदस्स समओ  
 तमुब्भूयदुरियं  
 पैवोत्तूण महुरं  
 सुरो सोम्मवैयणो  
 तओ विहुरदलिओ  
 रिऊ विहियसमरा

विहंगेण करुणी ।  
 जैयार्णिद भणिओ ।  
 सया दोसराहिओ ।  
 अमोहेण वि मओ ।  
 महादुक्खभरियं । 5  
 गओ सग्गसिहरं ।  
 सियायंबणयणो ।  
 सकालेण चलिओ ।  
 महाणैरयविवरा ।

12. १ P सो जोयहु. २ MBP मुणहि. ३ P सुयरु. ४ MBP °परंपराइ. ५ MBP °दया-  
 दार्णे. ६ MBP भणु जिणु. ७ MB जिमुक्कमोहु, P णिमुक्ककोहु.

13. १ B करणी. २ MBP जिणिंदेण भणिओ. ३ MBP भत्ति°. ४ M समुब्भूय°. ५ MBP  
 पमोत्तूण. ६ MBP सोम°. ७ MB °णयर°.

12. 13 जी हो व त्थ छि हा र हि उ जिहोपस्थक्षुधारहितः.

13. 5 a उ भू य दु रि यं उदयप्राप्तपापम्.

मणीणल्लिणणिलए  
सिरारूढहरिणो  
सुरासाइ सहले  
जलार्जरिया णई

वरे दीववलए ।  
महामेरुगिरिणो ।  
विदेहम्मि विउले ।  
मही मंगलावई ।

10

घत्ता—पट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थु जि णरिंदु मंहीधर णामे ॥

सुइवंसुंभवु गुणसहिउ चावदंडु णं दाविउ कामे ॥ १३ ॥

15

174

तहु गेहिणि<sup>१</sup> सोहग्गे सुंदरि  
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु  
सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुहु  
सो जयसेणु भाणुसंणिहयरु  
ता सिरिहरसुरे तहिं जि पडुक्कउ  
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ  
तं पेच्छिवि वरइत्ते भाविउ  
एम कहिं मि पाहाणिहिं ताडिउ  
एम कहिं मि रयपुंजे झंपिउ  
एम सरिवि सुमरिउ णारयंभउ  
तउ करेवि वंभिंदु पहूयउ

किं वणिणज्जइ णामे सुंदरि ।  
जिणमयंसहहाणु पावेप्पिणु ।  
हुउ छणयंदविवसंणिहमुहु ।  
जाम विवाहि धरइ कण्णाकरु ।  
वाउ धूलिउवल्लोहुवि मुक्कउ । 5  
उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।  
एहंउ चिरु मइं कंह व णिसेविउ ।  
एम्ब कहिं वि खरपवणे मोडिउ ।  
एम्ब कहिं मि हउं दुक्खे कंपिउ ।  
जमहररिसिहि पासि लइयउ व्रंउं । 10  
धम्मु जि जीवहु अग्गइ हूयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदे ॥

सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ वंमसुरिंदे ॥ १४ ॥

८ MBP °जरिय, K °जरिय but corrects it to °जरिया in second hand. ९ MBPK तेत्थु णरिंदु. १० MBP महीधर. ११ MBP °वंसुंभव.

14. १ P गेहिणि. २ MBP जिणमइ°. ३ K पालेप्पिणु. ४ MBP °संणिय°. ५ MBP सिरिहरु. ६ K omits this foot. ७ MB कहिं मि. ८ BK पाहाणिहिं. ९ MBP णारय°. १० MBP तउ; K वउ. ११ MBP सगगहु; K सगगहु, but corrects it to अगगइ.

10 a मणीणल्लिणणिलए मणिमयपद्मस्थाने; b वरे दीववलए पुष्करार्धद्वीपे.

## 15

चुउ मुइवि णियकाउ	सिरिहरु वि सग्गाउ ।	
ससिसूरदीवम्मि	इह जंबुदीवम्मि ।	
हरिणियगिरीसस्स	मंदरगिरीसस्स ।	
उत्तुंगदेहम्मि	सुरदिसिविदेहम्मि ।	
वित्थिण्णसीमाहि	णयरिहि सुसीमाहि ।	6
सुहदिट्ठि णरणाहु	रणि जस्स ण रणाहु ।	
जो रोसु संवरइ	जो सिरिवैहुं धरइ ।	
जो कामु परिहरइ	परणारिरइ हरइ ।	
जो माणु णिग्गहइ	मउयत्तु संगहइ ।	
जें जणिउ जॅणि हरिसु	जें णं किउ अइहरिसु ।	10
जें लोहु णिम्माहिउ	पुरिसत्थु जें माहिउ ।	
मउ जेण णिट्ठविउ	मणु जेण थिरु ठविउ ।	

घत्ता—रूवें सोहग्गें गुणेण णावइ उव्वसि णं इंदणी ॥

किं थुव्वइ अम्हारिसिहिं सुंदरि णंद णाम तहु रणी ॥ १५ ॥

## 16

सुरवरु सग्गु भुयप्पिणु आयउ	ताहि गन्धि सो णंदणु जायउ ।	
तेण सुविहिणामेण जुवाणें	णं पच्चक्खें वम्महवाणें ।	
मुणिहिं वि मयणुस्मायजणेरी	अभयघोसच्चक्खइहि केरी ।	
सुय लीलाणिज्जियतंबेरम	परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।	
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु	सुरमंदिरचुउ बहुपुण्णोवहु ।	6

15. १ M हरिणिव०. २ M उत्तुंगदेहम्मि. ३ MBP सिरिवहू वरइ. ४ MBP जणहरिसु. ५ P जिं ण कउ. ६ MBP इदाइणि. ७ K सुदर. ८ B राइणि.

16. १ MBP सिरिहरु. २ MB ०पुण्णाउहु.

15. 3 a हरिणियगिरीसस्सं इंद्रेण नीतो गिरा वाचामीशस्तोर्थकरो यत्र. 6 b रणाहु रणाघं सग्रामदोषः.

16. 4 a ०तंबेरम हस्ती. 5 b बहु पुण्णा वहु बहुपुण्यधारकः.

पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ  
जो सहूलजीउ चित्तंगउ  
सो वि बिहीसणेण सियणेत्तहि  
जो चिरु कोलजीउ कुंडैलसुरु  
णंदिसेणराएं अणुरूवउ  
सयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ  
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि

केसउ णामें जणवइ भणियउ ।  
सग्गहु णिवडिउ कालवसं गउ ।  
हुउ सुउ वरयैत्तउ पृयैदत्तहि ।  
सो संप्राईउ पुणु जम्मंतरु ।  
तणउ अणंतमईहि पहूयउ । 10  
जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ ।  
रइसेणें हूयउ चंदमइहि ।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउल्लु मणोहरु सुरु सग्गायउ ॥

जो सो णिविण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

## 17

संतमयणु जाणिज्जइ णामें  
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर  
विमलवाह जिणवंदणहत्तिइ  
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु  
कामकसायविसायविहंजणु  
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं  
तेण समउ दिक्खिय ह्यराया  
सुविहिणिहालियकेसवदेहें  
पंचाणुव्वय तिणिण गुणव्वय

ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।  
अभयघोसराएं सहं किंकर ।  
गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ ।  
चक्कु णिहाणइं वसुह मुएप्पिणु ।  
हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु । 5  
अट्टारहसहसाइं णरिंदहं ।  
वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया ।  
घरवइ संठिउ णंदणैणेंहें ।  
चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय ।

घत्ता—जेण सच्चित्तु णिरोहियउ इंदिये विसयरसेसु ण थक्कइ ॥ 10

तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडैहुं सक्कइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ. ४ MBP पियदत्तहि. ५ MBP कुंडलिसुरु. ६ MBP संप्राइउ. ७ MBP णउल.

17. १ MBP ०वंदणभत्तिइ. २ MB चक्क. ३ MBP णियसुवणेहें. ४ P इंदिउ. ५ MBP दंडिवि.

10 a अणुरूवउ आत्मसदृशः.

17. 1 a संतमयणु प्रशान्तमदनः 3 b विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चनं पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागाः, विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र.

दंसण वउ सामाईउ पोसहु  
 वासरि णारिसंगपरिवज्जणु  
 दुविहु वि संगभारु अवगण्णिउ  
 णिदिट्टुउ ण तेण पडिचण्णउं  
 अंतइ संथारयसर्वणत्तणु  
 तायविओएं मेइणि मेळ्ळिवि  
 जिणतउ तिब्बु चॅरेप्पिणु केसउ  
 दो वि दुवीसंबुहिसरिसाउस  
 वरदत्तय वरसेण जियंगय  
 ए चत्तारि वि चारुविमाणहं

सच्चित्तयविरमणु जणंदूसहु ।  
 वंभवेरु आरंभसमुज्जणु ।  
 पाउँ ण काइं वि मणि अणुमण्णिउं ।  
 भुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं ।  
 करिवि पत्तु अच्चुइ इंदत्तणु ।  
 सीलायारभारु उच्चल्लिवि ।  
 तहिं जि तासु जार्यउ पडिवासउ ।  
 इंदउहधर णं णवपाउस ।  
 संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।  
 तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं । 10

घत्ता—किं ससि भरहुज्जोययरु णं<sup>१०</sup> णहकडित्ति णिहित्तिर्यं कागणि ॥

अच्चुयवइ गुणगणु गुणइ पुष्पयंतु सुरगुरु बुहंसिरमणि ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसड्ढिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभवभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपहसुविह-

केसवइंदपडिदभवावण्णणं णाम

छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18. १ MBP दसणु २ P सामायहु. ३ M जिण°. ४ P पाउ वि काइ ण ५ MBP °सरणत्तणु.  
 ६ MBP अच्चुयइद°. ७ P करेप्पिणु. ८ MB पडिजायउ, P पडिभायउ. ९ MBP °उहवरणे णं (P णउ)  
 पाउस, १० M णहकडित्ति णं. ११ MBP घित्तय. १२ MB बुहसिरिमणि. १३ MBP °सुविहि°.

18. 8 b इदाउह° इन्द्रधनु. 9 a जियंगय जित. अङ्गज कामो यान्याम्. 10 समाणहं सामा-  
 निकानां देवानाम्.

## XXVII

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥

णिययंगइं खयलिंगइं अच्युयकप्पसुरिंदहो ॥ ध्रुवकं ॥

I

अइसोमसहाव महारउद्द  
किंह वंचविं कालरहट्टचारु  
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ  
सिरिणिहिउं णिरहु तहु चरणजमलु  
चुउ काले अच्युयसग्गणाहु  
इह जंबुदीवि सुरगिरिहि पुब्बु  
रमणीयउववणावलिणिवेसु  
बहुवण्णमणिसिलावद्धभूमि  
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु  
मुहससिजोणहाधवलियदियंत  
सो तियसराउ हयदुरियवाहि

संचल्लिय चल ससिरवि वलद्द ।  
घडिमालद्द लंघिउं<sup>२</sup> आउणीरु ।  
छम्मास समच्चिवि वीयराउ । 5  
भवियहु भवणोसे वि वित्तु विमलु ।  
कहु काले किर कवल्लिउ ण देहु ।  
किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।  
तहिं वर पुक्खलवद्द णाम देसु ।  
पुरु पुंडरिंकिणी तेत्थु सामि । 10  
णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।  
सिरिकंता णामे तासु कंत ।  
तहि हुउ णामे वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभूयउ वरयत्तु वि तहि वालउ ॥

विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गामिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।

भीमपराक्रमसारं भारतामिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBP किं वण्णमि. २ MBP घित्तउं. ३ M रिसि°. ४ MBP चलणजुयलु. ५ MBP भवणास विवित्तु विमलु. ६ P जंबुदीउ. ७ MBP °उववणावणि°. ८ MBP तहिं पुक्खलवद्द णामेण देसु. ९ MBP पुरि.

1. 3 b वलद्द वलीवदौ. 11 a हरि° इन्द्रः. 15 विजयंकउ विजयनामा; हरिणंकउ चन्द्रः. सुहालउ सुखालयः, सुधालयोऽमृतालयश्च.

## 2

वरसेणु वि हूयउ वइजयंतु  
 सुरलोयहु चलिबि पसंतमयणु  
 ए सहूलौइय चउ सहाय  
 हेट्टिमगेवज्जविमाणवासु  
 आयउ मइवरु जायउ सुबाहु  
 अहम्मिंदु अकंपणु हुयउ पीदु  
 जे वज्जजंघभवि भिच्च तासु  
 होंता चिरु एवहिं विहिवसेण  
 ते देविहि गग्भि महासईहि  
 सुसणेहा जेदुसँहोयरासु  
 पालेप्पिणु भवकयकम्मछंदु  
 वणिउत्तँ सुरयासत्तमइहि

चित्तंगउ णामँ पुणु जयंतु ।  
 अवराइउ हूउ पहुल्लवयणु ।  
 जाया जुवरायहु इट्टु भाय ।  
 मेल्लेप्पिणु जम्महु माणवासु ।  
 आणंदु वि णाम महंतबाहु । 5  
 धणमिच्चु वि तेत्थु जि गरुयपीदु ।  
 रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।  
 हूया चत्तारि वि सहुं जसेण ।  
 ताहि जि सुरसिंधुरवइगईहि ।  
 को होइ वेसु णियभायरासु । 10  
 तेत्थु जि पुरि केसवुं सो पडिंदु ।  
 सिसु जणिउ कुबेरँ णंतमइहि ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं बंधुवग्गु आणंदिउ ॥

संमाणँ धणदाणँ धणदेउ जि सो सहिउ ॥ २ ॥

## 3

एक्कहिं दिणि झत्ति समागएहिं  
 किं हित्तबुद्धि तुह हिय हएहिं  
 तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु  
 इय संबोहिउ लोयंतिएहिं  
 सिंगारभारवेहवमरट्टु  
 अंबयवणि खणि णिक्खवणु कियउ  
 उप्पण्णउं तायहु धम्मचक्कु

भासिउ किं तुहुं मोहिउं गएहिं ।  
 जँहिं रंजिओ सि णारीरएहिं ।  
 तहिं अण्णाहि कौ किर बोहिलाहु ।  
 सो वज्जसेणु कयसंतिएहिं ।  
 पविणाहिहि बंधिवि रायपट्टु । 5  
 तित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।  
 पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।

2. १ MBP चविबि. २ MBP सहूलौइ वि. ३ G वम्महु. ४ MBP अहम्मिंद. ५ M धणुमेत्तु;  
 BP धणुमेत्तु. ६ MBP ससणेहा. ७ G सुहोयरासु. ८ M तवकय°, BP भवु कयकम्मछँदु°. ९ MBP केसउ.

3. १ M सोहिउ. २ M जिह. ३ K कहिं किर.

2. 4 b ज म्म हु मा ण वा सु मानवस्य जन्मन°. 11 a °छंदु इच्छा.

3. 7 a ध म्म च क्कु केवलज्ञानम्.

ताएण परज्जिउ मोहचक्कु  
तायहु संठिये णिहि समवसरणि  
तायहु इंदा वि करंति सेव  
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि

पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।  
पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।  
पुत्तहु वि भिच्च गणबद्ध देव । 10  
सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।

घत्ता—सिरि<sup>५</sup>मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥  
पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु<sup>६</sup> समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदंलु णहपहकेसरालु  
मुणिभमरपीयमयरंदविंदु  
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण  
संवेउ विवेउ पराइएहिं  
तउ लइउ सुवाहुं पत्थिवेण  
णीसेसजीवविरइयकिवेण  
धणदेवे णिवइघराहिवेण<sup>९</sup> ।  
सज्जीवे पहरयणुल्लएण  
दस रायहं सुयहं वि दससयाइं  
एक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि

सुरवरहंसावालिरववमालु ।  
आसंधिउ पिउचरणारविंदु ।  
विजएण वइजयंतेण तेण ।  
धीरेहिं जयंतवराइएहिं ।  
संतेण महाबाहुं णिवेण । 5  
पीढेण महापीढाहिवेण ।

घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥  
भीसावणि<sup>४</sup> ठिउ पिउवाणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दंसणविसुद्धि गुरुविणयसारु  
णेरंतरु थिरु णाणोववाउ  
किउ बज्जभंतरगंथचाउ

सीलव्वएसु अइअणइयारु ।  
सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउ<sup>४</sup> ।  
मुणिसंघहु वेज्जावज्जोउ ।

४ MBP णिहि संठिय. ५ B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि. ६ M रज्ज.

4. १ MBP °दल. २ P सुबाहुहु. ३ MB add after this line: धणय व्व विविहदव्वाहिवेण.

४ M भीसावणि पिउउववाणि; BP भीसावणि वाणि पिउवाणि.

5. १P अइसणइयारु. २MBP णाणोवओउ. ३ MBP संवेयचाउ. ४MB वेज्जावज्ज°; Pविज्जावज्ज°.

9 b सरणि गृहे.

4. 10 b णा हि न + अहि, अहीन् सर्पान् न गणयति. 11 णि रा सइ आश्रयशून्यप्रदेशे अभ्रावकाशे.



जिणभत्तिपउरसुयसाहुभत्ति  
छावौसएसु णायरइ हाणि  
भव्वेसु करइ कलिमलिणसमणु  
णीरापं सहुं रयहारणाइं  
पयइं अपवंगारोहणाइं  
भावेण तेण संभावियाइं

तें विरइयपवयणि परमभत्ति ।  
अरहंतमग्गु पायडइ णाणि ।  
वच्छल्लु पबोहणु धम्मठवणु ।  
अरूहंतहु सोलहकारणाइं ।  
तेलोककचकसंखोहणाइं ।  
घोरइं दुरियइं उड्ढावियाइं ।

5

घत्ता—संपुण्णउं वउ चिण्णउं कालकमेण जि लद्धउं ॥

10

जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोचु ते वद्धउं ॥ ५ ॥

6

को एम देउ दइवेण पुण्णु  
उग्गतउ तत्तु घोरतउ तत्तु  
आमोसहीहिं खेलोसहीहिं  
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं  
तहु कोट्टुबुद्धि वरवीयबुद्धि  
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि  
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि  
सो सुहुमसंपरायत्तकरणु  
णीसेसमोहसंदोहसमणु  
आहारसरीरहं चाउ करिवि  
सव्वत्थसिद्धि सुंरहरि सुराहु

को संचइ किर एवहु पुण्णु ।  
दित्ततउ तत्तु संखीणगत्तु ।  
जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं ।  
सो सहइ साहु रंजियमंहीहिं ।  
संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।  
उप्पण्णी तणुविकिरियरिद्धि ।  
सुरसंद्धि अहीणमहाणसंद्धि ।  
चडियउ गुणठाणु अउव्वकरणु ।  
सिरिपहमहिहरमेहलहि समणु ।  
पाउवगमणमरणेण मरिवि ।  
अहमिंदु हुयउ रिसि वज्जणाहु ।

5

10

घत्ता—पंडिवडियहिं विहिघडियहिं दिव्वु सरीरु लपप्पिणु ॥

सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोपप्पिणु ॥ ६ ॥

५ P छावस्सएसु. ६ MBP आराहिवि सोलह. ७ G अपवग्गइं रोह<sup>०</sup> ८ MBP तेलोय<sup>०</sup>.

6. १ MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेलोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विप्पोसहीहिं). २ MBP सुरसिद्धि; T सुरसद्धि. ३ MBP <sup>०</sup>महाणसिद्धि. ४ MBP सुहुमु. ५ MBP गुणठाणु. ६ M सिरिपहमहिहरमेहलहिं; B सिरिपहमहिहलहिं; P सिरिपहमहिहरमेहलिय. ७ MBP पाउग्गमरणमरणेण. ८ M सुरंहरे सराहे; BP सुरहरि सरेहु, K सुरहरि सराहु; T सराहु. ९ BP परिवडियहिं.

5. 6 a क लि म लि ण स म णु कालि. पापं दोषो वा तेन मलिणं मलिनता तस्य शमनं उपशमः.

6. 7 b सुरसद्धि शोभनरसद्धिं. 8 a सुहुमसंपरायत्तकरणु सूक्ष्मसंपरायत्वस्य करणं यस्माद्पूर्वकरणात्. 9 b स म णु रसिकः. 11 a सुराहु सुशोभः.

## 7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु  
घणमणिमऊहपिंजरियमग्गि  
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि  
पिडुजंबूदीवपरिप्पमाणि  
पविण्णाहभाउ कयधम्मसेव  
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण  
तणुमाणे जाणिय रयणिमेत्त  
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव  
मउडग्गघुलियमंदारदाम  
खेत्ताउ ण खेत्तंतरहु जांति  
वरिसहुं तितीसंसहसहिं असंति  
तेत्तीससमुद्दोवमु जियंति

पणविउ जिणु जिणवरकहिउ धम्मु ।  
तेसट्टिपडलसिरिचूलयग्गि ।  
बारहजोयणाहिं आपावमाणि ।  
हिमसंखससिप्पहि तहिं विमाणि ।  
अट्ट वि जाया अहमिंदेव । 5  
सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण ।  
अहिणवसयदलदलसररणेत्त ।  
अपिसुणसहाव परिहरियगाव ।  
परियाररहिय संपण्णकाम ।  
उत्तरवेउव्विय तणु ण लेंति । 10  
तेत्तियहिं जि पक्खहिं णीससंति ।  
जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं णंउ झसधयमंदहो ॥

पुहईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो ॥ ७ ॥

## 8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस  
जर्यवम्मु होऊण सणियाणदोसेण  
होउं महाबलिण संणासु मइं कियउ  
तहिं मरिवि ईसाणि ललियंगु सुरु जाउ

पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।  
जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।  
सइबुद्धंबुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ ।  
तेत्थाउ अवयरिवि पविजंगु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय. २ MBP °सिरिचूलिय°. ३ MP अपावमाणि, B आयावमाणु. ४ K पवि-  
णाहि°. ५ MBP add after this: दहमउ घणदेउ उप्पणु तेत्थु, अहिलच्छि णिरंतरु सोक्खु जेत्थु.  
६ MBP °सरिसणेत्त. ७ MBP परिणालिय°. ८ MBP पवियार°. ९ MBP संगुण°. १० BP तेतीस°. ११ P तेत्तियहहिं पक्खहिं. १२ MB तण्णज्जसद्धयचिंधहो, P तं णउ सुहु जयमद्दहो, T झसद्धयमंद.  
१३ MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो.

8. १ MBP अजवम्मु. २ MBP सुणियाण°. MP जाओ सि. ४ P सइबुद्धु.

7. 9 b परियाररहिय प्रतीचाररहितः. 13 झसधयमंदहो झषध्वजेन कामेन मन्दस्य विषय-  
व्यावृत्त्यनुद्यतस्य.

कुरुधरणिणरु पुणु वि बीयम्मि कप्पम्मि  
 पुणु सुविहिविहिविहियजिणसासणाणंदु  
 पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु  
 सँव्वत्थि अहमिंदु होउं अहत्तिहरु  
 गहवइसुया धणसिरी णिहयणयजुत्ति  
 जाया पुणो सूहवा बद्धणेहस्स  
 सिरिमइमहीसस्स मय पुणु वि कुरुणारि  
 केसवु पुणो मरिवि संभूउ पडिसक्कु  
 धणदेउ वउ धरिवि पुणु हुयउ अहमिंदु  
 तम्हा समोयरिवि कुरुवंसरहंसु

सिरिहरु सुँहासीय हं कयवियप्पम्मि । ६  
 असु मुइवि हउं हुउ सोलहमसग्गिदु ।  
 पडिखलियजमकरणु तवचरणु संपण्णु ।  
 पुणु भइ हूओ अहं एत्थ तित्थयरु ।  
 णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।  
 सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेर्वस्स । 10  
 पुणु रवि सयंपहु पुँणरवि दणुयारि ।  
 संसारि संसरइ जगि जीउ इह एक्कु ।  
 सयलत्थि सरयच्चि संकमिउ णं चंदु ।  
 इहु एत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।

घत्ता—मलु छिंदह जिणु वंदह तिरयणाइं मणि भावह ॥

15

अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावह ॥ ८ ॥

## 9

जो णरवइ णामें आसि गिन्दु  
 णरयम्मि चउत्थइ सहिवि विद्धुरु  
 पुणु देउ दिवायरु मइवरक्खु  
 पुणु रवि सुवाहु चिरजम्मभाउ  
 अणुहुंजिवि जायउ एत्थु भरहु  
 पीईवद्धण चमुवइ सुँगण्णु  
 हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोदु  
 सव्वत्थइंदु मँहु सुउ अरेणु

आहारणारिरससायगिन्दु ।  
 पुणु हुयउ पुल्लि चलकुडिलणहरु ।  
 णरु गेवँज्जामरु सो दिव्वचक्खु ।  
 णिहिलत्थदेउ अहमिंदु जाउं ।  
 महु सुउ लइ होसहि तुहुं विँणिरहु । 5  
 कुरुमणुयँपहायरु सुरु पसँण्णु ।  
 गइवेयदेउ पुणु हुयउ पीदु ।  
 पुणु एहु पह्यउ वसहसेणु ।

५ MB सुहासियउ हं कय°; P सुहासीय हुउ बीय° । ६ MBK संपण्णु, ७ MBPT अहलच्छि, ८ MB °देहस्स, ९ MB सुय, P सुय and gloss मृता, १० MBP पहावतु दंडारि, ११ MBP संकमिय.

9. १ MBP गेजामरु, २ MBP °भाइ, ३ MBP जाइ, ४ M जि, ५ MBP सुगत्तु, ६ M °अपायरु, ७ MBP पसुत्तु ८ P गइवेइ°, ९ MBP राउ, १० MBP महु तणउ सूणु, T अरणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

8. a अहत्तिहरु पापार्तिहरः. 9 b विहण निर्धना. 13 b सयलत्थि सर्वार्थसिद्धौ.

9. 2 b पुल्लि व्याघ्रः. 8 a अरेणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

जो<sup>११</sup> होतउ सुइरु महीसमंति  
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु  
हुउ पढमहिं पँहु चविवि साहु

कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।  
आणंदु गाम होएवि सवसु । 10  
पुणु सँ महाबाहु धरितिणँाहु ।

घत्ता—गउ इडुहो सव्वडुहो णडुहमिंदसरीरउ ॥

हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

## 10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु  
धणमित्तु पुणु वि हँउ सुहपहाणि  
उणु हविवि महापीडु वि सँभेउ  
सो मरिवि महारउ णंतविजउ  
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु  
कुरुमाणसु सो<sup>१२</sup> चित्तंगयक्खु  
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ  
सव्वडुइंदु ववगयसरीरु  
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु  
सुरु कुंडलिल्लु वरसेणु संतु  
अहअमरणाहु संजणियविणउ  
वणि णागदत्तु वाणरु पँलासि

कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।  
ओइल्लु अहंविहु परँमठाणि ।  
सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।  
उप्पणु पुत्तु जीविसु सदउ ।  
होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु । 5  
वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।  
तवर्चरणं खीणु करेवि काउ ।  
जसवइसुउ पँहु सोणंतवीरु ।  
पुणु सूयरु पुणु कुरु अज्जसारु ।  
समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु । 10  
तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ ।  
अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।

घत्ता—सुंमणोरहु सुरु हयडुहु पुणु चित्तंगउ पत्थिंहुँ ॥

संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामँ णिंहुँ ॥ १० ॥

११ B सो हुँडु. १२ M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्रः, १३ MBP सुमहा°. १४ P धरति°.

10. १ MBP हुउ. २ MBP ओविह्लु. ३ MBP पढम°. ४ PK सहेउ. ५ K सुरु चित्त°. ६ P तवयरणे. ७ P एहु अणंतवीरु. ८ MBP सुर. ९ P फलासि. १० MBP समणोरहु. ११ MBP पत्थिउ. १२ MBP णिउ.

10. 2 b अहविहु अहमिन्द्रः 7 a समसुरु समारिकदेवः. 10 b समविबुहु सामानिकदेवः.  
11 a अहअमरणाहु अहमिन्द्रः. 14 सुरवइसमु सामानिकदेवः

## 11

पुणरवि अहमीसरु मोक्खणियडि  
 जो सो दुइंसणदुरियभीरु  
 लोलुउ कंदुई लोहेण मुयउ  
 पुणु अज्ज मणोहरु अमयभोइ  
 पुणु हरिसमाणु गिब्वाणु चारु  
 पुणु अंतिमिल्लु सुरवासवासु  
 आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि  
 जा वज्जजंघभवि मज्जु बहिणि  
 हूई णंदहि णं धम्मलील  
 जा सिरिर्मइभवि पंडीय धाय  
 बंभी वि तुज्ज जाणहि महीस  
 परिभमियसयलभुवणत्थलीउ  
 रंगं गँउ णडु बहुरूवघारि  
 सा णत्थि थत्ति जँहि जिउ ण जाउ

हूयउ विमाणि माणिकपयडि ।  
 इहु अम्हारउ सुउ णाम वीरु ।  
 जो चिरु गिरिकाणणि णउल्लु हुयउ ।  
 पुणु संतमयणु णरँणाहु जोइ ।  
 अपरज्जिउ णामँ णिवकुमारु । 5  
 सुपसिद्धु अहंवइ तिमिरणासु ।  
 सो एहु वीरु महु तणइ गेहि ।  
 साणुंघरि णं परलोकुकुहिणि ।  
 बाहुबलिहि लहुई सस सुसील ।  
 सा भमिवि एत्थु रमणीय जाय । 10  
 जणु मोहँ तम्मइ एहु कीस ।  
 केत्तिउ किर कहामि भवावलीउ ।  
 अणवरयदुविहकस्माणुयारि ।  
 पुणु पुंछिउ भरहँ वीयरउ ।

घत्ता—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥

15

मइं जेहा पइं तेहँ कइ होहिति जिणेसर ॥ ११ ॥

## 12

तं णिसुणिवि देवँ वुत्तु एम्ब  
 होहिति भुवणि तेवीस एत्थु  
 आगामियाइं जेहा इमाहं  
 कहियाइं जिणहं जँम्मंतराइं  
 मुहयंदोहामियससिमरीइ

मइं जेहा जिणवर गयविलेव ।  
 करिहिति पयडु सिरिधम्मतित्थु ।  
 बावीसहं तइं तेहाइं ताहं ।  
 संगँहियविमुक्ककलेवराइं ।  
 महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ । 5

11. १ MBP सोक्ख°. २ MBP दुइंसणु. ३ MBP कंदुउ. ४ MBP णरणाह. ५ MP गिब्वाण.  
 ६ MBP सिरिमइ चिरु. ७ MBP रंगगउ णडु व बहु°. ८ K जिउ जहिं. ९ P पुछिउ १० MBPK जेहा.

12. १ P विगयलेव. २ M करहिति. ३ MBP जेहाइं जाहं. ४ G धम्मतराइं ५ MBP संगहिवि.

11. 2 a दुइंसण° मिथ्यादर्शनम्, °दुरिय° पापम्. 5 a हरिसमाणु सामानिकः, 6 b अहंवइ  
 अहमिन्द्रः, 11 b तम्मइ खियते. 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेवः.

12. 3 b तेहाइं तादृशानि. 5 a °ससिमरीइ चन्द्रकिरणाः.

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु  
दिय कविलँसीस गुरुभरहतर्णुउ  
जाही मिच्छत्तहु मूडु होवि

सिरिवँडुमाणु णामेण एहु ।  
तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइयमणउ ।  
मरिही महु केरउ मउ मुएवि ।

घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥

णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥

10

## 13

सिरिबाला कीलाविउलसेल  
पइं जेहा णिव णायाणुवट्टि  
णव वल णारायण णव णं भंति  
अवर वि तेवीस जि कामदेव  
मंडलिय मउडवद्ध वि अणेय  
तुह खत्तधम्मु महु परमधम्मु  
सव्वँहिं जुयंति दिणि णासिंहिति  
उम्मूलियतिट्ठाकयलिकंदु

बलवंतसधरधरधरणलील ।  
एयारह महियलि चक्कवट्टि ।  
पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिंहिति ।  
एयारह रुह रउहभावँ ।  
होहिंति वँहुत्त वि णामधेय । 5  
अवरु वि जं किं पि विसिट्ठकम्मु ।  
सिहिमय विसमय घण वरिसिंहिति ।  
ता णरणाहँ संथुउ जिणिंदु ।

घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइं दिट्ठइ मलु खिज्जइ ॥

सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥

10

## 14

णमो वीयरया महादेवदेवा  
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी  
ण चावं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं  
तुमं देव णूणं रिऊणं णँ गम्मो  
ण डिंभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो

कयाणेयणिन्वाणणिन्वाणसेवा ।  
तुमं देव सच्चं अणंगावहारी ।  
ण दंडो ण हत्थे किर्वाणं करालं ।  
अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।  
ण मित्तो ण सच्चू ण कामो ण कोहो । 5

६ MBP रिसिवडुमाणु. ७ P कविलकेर. ८ P तणउ. ९ G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्तः.

13. १ P भणंति. २ MBP कामएव. ३ MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयवंभचेरदढधरणसील ( P धरणलील ). ४ MBP पुत्त बहुणाम°. ५ P सव्वइं. ६ P केलिकंदु.

14. १ P °णिच्चाण. २ K करालं कवालं. ३ MB अगम्मो.

7 b मुइय मणउ प्रहृष्टचित्तः. 9 °प वियारउ प्रवीणः.

13. 7 b सिहिमय अग्निवर्षा.

14. 5 a ण ए न ते तव.

ण माया ण चित्ते पँहुत्ताहिमाणं  
 णँ छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं  
 उँयासीणभावं सकम्मक्खएणं  
 णरा ते ध्रुवं लोहयारस्स भत्था  
 जई सो णिरासो तुमं छिण्णपासो  
 तुमं जम्मकंतारडाहे किर्साणुं  
 जडा किं णिमँज्जंति मिच्छँत्ततोए  
 णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो  
 पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं

समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं ।  
 ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं ।  
 तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं ।  
 ससंता वसंती हहा किं णिरत्था ।  
 तुमं लोयबंधू पहू दिव्वभासो । 10  
 तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं ।  
 तुमाहिं परो को गुँरो जीवलोए ।  
 अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो ।  
 महातूरघोसं महामंगलालं ।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥

16

अवलोइउ पोमाइउ पुष्पदंत दरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्यभरहाणुमणिणए महाकव्वे वज्जँणाहितिहुवणसंखोहणं  
 जिणँपुँण्णावज्जणं णाम  
 सत्तावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पहू णाहिमाणं; BP वहू णाहिमाणं. ५ MBP सछत्तेण. ६ M सिंहासणेण. ७ P उदासीण°. ८ MBP किसाणू. ९ MBP भाणू. १० B ण मज्जंति. ११ MBP मिच्छत्तराए. १२ MBP गुरु. १३ MB सूरसेणा°. १४ MBP वज्रणाह°. १५ MPP पुजावज्जणं.

6 a प हु त्ता हि मा ण प्रभुत्वाभिमानः. 8 b णि रे णं निष्पापम्. 11 a कि सा णु अग्निः; b भूय भा वं ध या र म्मि प्राणिमनोज्ञानतिमिरस्थ.

## XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं संभिद्धं ॥  
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धं ॥ ध्रुवकं ॥

I

जाउडजडिलरसेणायंघइं  
हिमकणकणयकणोलिवियारहिं  
मुणि अणिदुट्टासयहौरिहिं  
पुज्जियाइं छप्पयउलधामहिं  
संथुयाइं बहुथोत्तालाविहिं  
कंचणणिम्मियमुणिपडिमालउ  
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ  
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ  
दिण्णइं दिण्णसोक्खसंताणइं  
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं  
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइं  
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु

अहिसित्ताइं जिणेसरविंघइं ।  
घडपल्हत्थियपयंघयधारहिं ।  
चंदणंतोतडिल्लवरंवारिहिं । 5  
कुचलयवउलमहुप्पलदामहिं ।  
भावियाइं सुविसुद्धहिं भावहिं ।  
णाणामणिमऊहाणियंरालउ ।  
लंवियाउ चउवीस जि घंटउ ।  
पंतजंतणिवणयणसुहालउ । 10  
अभयाहारोसहसुयदाणइं ।  
अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।  
दीणाणाहहं चीरहिरण्णइं ।  
रीणं संचोइउ पालइ जणु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मुखनलिनोदरसद्धानि गुणहृतहृदया सदेव यद्वसति ।  
चोजमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहृत°. GK do not give it.

1. १ MBPT सुणिवद्धं. २ MBP हिमकणु कणय°. ३ BP °कणालि°. ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं. ६ M चंदणतोयतडिल्ल°. ७ MBP °वरधारहिं. ८ MB भाविहिं. ९ M °माणि°. १० MB °णियरालिउ. ११ MB राइं.

1. 3 a जा उ ड ज डिल ° जाउडदेशोत्पन्नं कुङ्कमम्. 4 a हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामौलयः व्यूहस्तैस्तुल्यो विकारः परिणामो यासाम्. 5 a अ णि ट्टे त्या दि-न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरोद्रोपहता अनिष्टदुष्टाश्च ते आशयाश्च मुनीनामनिष्ठाशया निर्मलाभिप्रायास्ताननुहरन्ति अनुकुर्वन्ति तैः; मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा; 6 °तोत-डिल्ल° मिश्रिताः. 9 a °विसट्टउ प्रसरः. 12 a °गोदुह° गोदोहकाः.



घत्ता—धम्मट्टि राए धम्मिट्टु धुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥

15

रायाणुवट्टि जागि संचरइ जिह णरवइ तिह जणवउ ॥ १ ॥

## 2

सीहु व सावयाहं अग्गेसरु  
 भावलिंगि होएवि णरेसरु  
 गोसयाहं गोदुद्धु जि पिज्जइ  
 खारीसयभत्तहं पसउल्लउ  
 णरु णराहं पैडिबद्धु महल्लहं  
 पासायहु वि मज्झि सयणीयलु  
 जइ वि एम जाणइ संगायउ  
 तो वि जीउ खज्जइ रीयत्ते  
 चक्कु कालचक्कु किं रक्खइ  
 दंडु कुगइदंडुणु दरिसावइ  
 असि असिउब्भडलेसहि कारणु  
 कांगणि खणि सोहइ दुहलीहहं  
 होउ होउ रीयत्ते हो गंथे  
 अणुदिणु इय झायंतहु कयंरु व

जिणवरधम्मु करइ भरहेसरु ।  
 चित्तइ चत्तदेहु लंबियकरु ।  
 णारीसहसहं एक रमिज्जइ ।  
 रहलक्खहं महु एकु रहुल्लउ ।  
 हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं । 5  
 लइ परभुंजणिज्जु धरणीयलु ।  
 चित्तिजंतउ सयलु परायउ ।  
 खणविणासि संतावि पहुत्ते ।  
 छत्ते छणणउ जीउ ण पेक्खइ ।  
 माणि सोदामणि णहत्तुउ णावइ । 10  
 चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।  
 अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।  
 हउ मुणिवरु परिवेडिउ वत्थे ।  
 उट्ठिवि जंति<sup>99</sup> रायपरमाणुय ।

घत्ता—सिडिलाइं होंति रीएसरहो णिग्गयमणमलपूरइं ॥

णिवडंति झत्ति खोणीयलइं करकंकणकेऊरइं ॥ २ ॥

2. १ M जिणवरु धम्म. २ M भावलिंगि होएव. ३ MBP चत्तदेह. ४ MBP णरवराहं. ५ G पडिबद्धुगहल्लहं. ६ MBP राइत्ते. ७ MB कागणि खणेण होइ दुहलीहहं, P कागणि खणि होसइ दुहलीहइ; T खाणि आकरः. ८ MBP रायत्तहु गंथे. ९ MBP वर वेडिउ. १० MB कयंरुय and gloss रोग, T कयंरु व धूलिरिव. ११ G जंतु, K जंतु but corrects to जंति and gloss गच्छन्ति. १२ MBP रजे-सरहो. १३ G णिग्गमण°; K णिग्गमल°, but corrects it to णिग्गयमण°.

2. 1 a सावयाहं श्रावकाणां श्वापदानां च. 7 a संगायउ संगस्य जातकं संघातम्. 11 a अ सि उ ञ्म ड° कृष्णोद्भटः. 14 a कयंरुव धूलिरिव. 15 णिग्गय मण म ल पू र इं निर्गता मनोमलपूराः येषु.

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ  
जासु खग्गु रणि को वि णं कडुइ  
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि  
णयसासणि हियँउल्लं घत्तइ  
अहियारिय णिउपसु णिउंजइ  
के वि सणेहालयणहंसियहिं  
दविणोवाइ पुरिसँ संभावइ  
सयलकलाकुसल वि संमाणइ  
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ  
मज्झण्णइ मज्जणउं पईसिवि  
वालाचालियचार्मरमालइ  
पुणु भुच्चुत्तरि पँहु णिवगोट्टिइ  
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहेरे जाणिय घट्टियाघापं ॥

जासु भंतु अरिणरहिं ण गिज्जइ ।  
जासु पर्योणु विसंति पत्तंजइ ।  
मंगलणेधत्थइं पद्धिधज्जिहिं ।  
सयलउ पर्यधिपित्तु संपित्तइ ।  
णिघ संभासणवाणहिं षंजइ । 5  
संमाणिहिं लोयअहित्तशियहिं ।  
अर परमंउल्लंतु पट्टाघइ ।  
पवरपमंतीपिट्ठहिं पीणइ ।  
घरि अत्तंअधिहारं अत्तइ ।  
णियम्वरीरु भूसणहिं धिइसिवि । 10  
अत्तइ कौइ वि पत्थियत्थलीलइ ।  
गमइ कालु गक्यइ संतुट्ठिइ ।

पहु अच्छइ वारविलाम्निणिहिं, सह क्रीलाइ विणोपं ॥ ३ ॥

हत्थिसत्थि हरिसत्थि ण मुच्चइ  
जोइससउणसमूहणिमित्तइं  
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ

आउवेउ धणुवेउ विउज्झइ ।  
णरणारीलक्खणइं विचित्तइं ।  
भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ ।

घत्ता—जसु जासु दियंतहिं परिमंमइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥

10

तहु भरहहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥ ४ ॥

## 5

सो रायाहिराउ सामंतहं  
एक्कहिं दिणि धीरहं णिरवायहं  
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु  
णिसुणह भुयबलतुलियकरिंदहं  
जेण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि  
एहु लोउ जें धम्मि पवत्तिउ  
कुल्लु णरणाहहं एत्थु विसेसें  
दंसणणाणचरित्तभासें  
कुल्लु लक्खिज्जइ सुद्धायारें  
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ  
भरहेरावएहिं कुल्लु खिज्जइ

मंडलियहं महिमाइ महंतहं ।  
अक्खइ खत्तवित्तु बहुरायहं ।  
अवरु समंजसत्तु मलखालणु ।  
पंचभेउ चारित्तं णरिंदहं ।  
अज्जिउ तित्थयरत्तु भवंतरि ।  
परिताइउ खयाउ सो सत्तिउ ।  
कुल्लु लक्खिज्जइ बुहसहवासें ।  
कुल्लु रक्खिज्जइ दुण्णयणासें ।  
दढउट्टेण अणुव्वयभारें ।  
बीयंकुरकमेण कुल्लु आयउ ।  
कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ ।

5

10

घत्ता—पणवियसिरु मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥

ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥ ५ ॥

८ B मुज्झइ. ९ M दियत्तहिं. १० MB भरि भमइ.

5. १ B णिवायहं. T णिरवायहं. २ MB खत्तवित्ति. ३ B °तुरिय°. ४ MBK चारित्तु. ५ M पर-  
ताइउ; T परिताइउ. ६ MB कुल णर°. ७ MB °चरित्ताभासें. ८ M दढउट्टेण; T दढउट्टेण. ९ M बीयंकुर.

9 b भरहु संगीतम् .

5, 2 a णिरवायहं अपायरहितानाम्. 6 b परि ता इउ खयाउ परिरक्षितो विनाशात्. 9 b दढ-  
उट्टेण दढधृतेन. 12 हरि इन्द्रः.

6

अवरु वि मइ रापं रक्खेवी  
णासइ णिवमइ मिच्छारंगं  
णासइ मइ चामीयरलोहें  
णासइ मइ हरिसं चर्वलत्तं  
णासइ मइ मएण माणेण वि  
णासइ मइ वेसायणगमणं  
णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती  
मइ ण जासु कलिकलुसं छिती  
णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि

अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।  
कुगुरुकुदेवकुलिंगिपसंगं ।  
णासइ मइ णिरु कामं कोहें ।  
णासइ मइ जिणपडिकूलत्तं ।  
णासइ मइ मइरापाणेण वि । 5  
णासइ मइ कुरंगवहरमणं ।  
णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।  
जिणवरचरणंभोरुहधित्ती ।  
तहु होसइ इहपरभवि गोमिणि ।

घत्ता—मइसुद्धिइ वडुइ धम्ममइ धम्मु वि मइं सो घोसिउ ॥

जो खीणकसायहिं केवलिहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्मु खमाइ होइ गरुयारउ  
अज्जउ धम्मु पावुं मायारउ  
धम्मु सउच्च धम्मु तवतप्पणु  
धम्मु बंभचेरें परिचाएं  
पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ  
इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि  
हुयँवहपविसणु हुयललियंगउ  
सत्थग्गहणु महाजलवोलणु  
एयइं कुच्छियमरणइं दुइमि

धम्महु मइवगुणु पहिलारउ ।  
धम्मु सच्चवयणोहु वियारउ ।  
धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।  
जेण ण कियउ वियाणवि राएं ।  
रज्जे पुणु वि णरइ पाडेवउ । 5  
तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।  
विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।  
गिरिणिवडणु अंतावलिघोलणु ।  
णरु भामेवि धिवंति भवकइमि ।

6. १ MB °कुदेउ°. २ M चवलित्तं. ३ MB read this line and the following as:  
णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहधित्ती; मइ ण जासु कलिकलुसं छिती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती.  
४ G मइसुद्धिइ. ५ MB धम्मु सइं. ६ MB सो मइं.

7. १ B गुरुआरउ. २ MB मइउ गुणु. ३ MB पाउ. ४ MB. °वयणोह. ५ MBK सउच्चु.  
६ MB धम्मु जि बंभचेरपरिचाएं. ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ.

7. 2 a पाउ पापम्. 3 b °प वियप्पणु त्यागो विचारणं वा. 4 a परि चा एं आकिंचन्येन; b विया-  
णवि ज्ञात्वापि. 7 a हुयललियंगउ दग्धशरीरम्. 8 a सत्थग्गहणु आत्मघातः.

घत्ता—मुणिघरणकमलि उवसमु करिवि जो ण मुयउ संणासैं ॥ 10  
चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिभमइ किलेसैं ॥ ७ ॥

## 8

अवरु वि राणउ करउ णिरिक्खणु  
दुम्मइ हूई जाणिवि धाडइ  
जिह गोवउ पौलइ गोमंडलु  
णिक्कारणमारणु जो राणउ  
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं  
बुड्ढणारिडिंभयसंतावणु  
जणणीसाससिहिहिं सो डज्झइ  
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ  
पहु अणुरत्तपयइं जो तासइ  
रत्तउ सत्तउ भिच्चु भरिज्जइ  
बुज्झियकज्जावायउवाएं  
गुरुचरणारिंविद सेवेवउ  
रोसैं णउ विसिद्धु पहरेवउ

पर्यहि धम्मणाएं परिरक्खणु ।  
तिव्वे दंडे गाइ ण ताडइ ।  
तिह पालउ गोवइ गोमंडलु ।  
सो रक्खसु जमदूयसमाणउ ।  
णिद्दोसहं दिय वणिहिं वरायहं । 5  
जो धणहरणु करइ भीसावणु ।  
अणु वि दुक्कियकम्मं बज्झइ ।  
ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।  
कइहिं वि दियहहिं सो सइं णासइ ।  
तविवरीयउ अवहेरिज्जइ । 10  
णरणाहेण णिहालियणाएं ।  
अवरु समंजसत्तु भांवेवउ ।  
दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णिवचरित्तु जो पालइ ॥

कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ ॥ ८ ॥ 15

## 9

तहिं अच्छइ भरहेसरु जइयहं  
कुरुजंगलजणवयगयउरवइ  
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु

गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं ।  
जिणकमकमलजुयलसेवारइ ।  
लच्छीवइमायहि तोसियमणु ।

८ MB °चरणमूलि.

8. १ G पहहिं. २ M पावइ. २ MB °णीसाससयहं. ४ MB दुक्खु हुया°. ५ M अणुरत्तु पयइ.  
६ MB °रविदु. ७ B भावंतउ. ८ G णियचरित्तु.

9. १ MB °जंगलु.

11 °मुहहिं द्वारैः.

8. 3 a गोवउ गोपः; गोमंडलु गवां संघात; b गोवइ राजा; गोमंडलु भूवल्यम्. 8 b विसइ प्रविशति.

सुंदर चोदहभौइहिं जेदुउ  
 कुरुत्रंसाहिवेण पणवेप्पिणु  
 ताएं रायपट्टि महु बद्धइ  
 तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ  
 जाणियएयाणेयवियप्पइ  
 घोरवीरतवचरणच्चम्भुइ  
 ससहोयरु दिम्मुहइ णियंतउ  
 मारुयचालियचलसाहाघणु  
 धम्माणंदे मणु आणंदिउ  
 दिदुउ फणिवरु समउ भुयंगिइ  
 गयसंवच्छरि पुणरवि आपं

जउ णामे अत्थाणि पँइदुउ ।  
 पभणितं तेण राउ विहसेप्पिणु । 5  
 रिसिरयणत्तइ सइ उवलद्धइ ।  
 दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ ।  
 रिसहसामिपयपंकयच्छण्णइ ।  
 पित्तिइ सेयंसाहिवि णिव्वुइ ।  
 हउं णियपुरवरंति विहरंतउ । 10  
 एकहिं वासरि गउ णंदणवणु ।  
 दिदुउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।  
 धम्मु सुणंतु सरलललियंगिण ।  
 सा दिदुइ मुक्किय णियंणाएं ।

घत्ता—दीवँडु काओयरु णाइणि वि बिण्णि वि धम्मु सुणंतइ ॥

15

मइ लीलाकमले ताडियइ तँहिं वि जाइरइरत्तइ ॥ ९ ॥

## 10

कसणारुणबिंदुयर्तणुराइहि  
 इय गरहिवि परिवारेणाहय  
 कासंपुष्फकंतिसंकासउ  
 णिसि णियकंतहि मइ आहासिउ  
 कुमहिलखलचरियाइं पयासमि  
 विविहाहरणकिरणरंजियघरु  
 पुच्छिउ सो मइ किं अवलोयहि  
 तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि

कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।  
 सहुं जारेण तेण सा णिग्गय ।  
 हउं पडिआगउ णियआवासउ ।  
 सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।  
 जाम किं पि किर पिय संभासमि । 5  
 ताव तँहिं जि अवयरिउ वरामरु ।  
 दिदुइ वियारभरिय किं ढोयहि ।  
 लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदह' ३ M °भावहिं. ४ B बइदुउ. ५ MB पित्तइ. ६ MB °चलियचलसाहा°. ७ MB फणिवइ. ८ M सरलललियगइ; B सरललियंगिइ. ९ MB मुक्की णियणाएं. १० G °णियणायएं. ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि बि. १२ M तँहिं जइपयरइरत्तइं.

10. १ MB °तणुरायहि. २ MBK कासससंककंति°.

9. 7 a तम्मि ताते; णिक्कलि शरीरनिस्पृहे. 9 b णिव्वुइ सुखीभूते. 15 दीवडु सर्पजातिविशेषः; णाइणि नागी.

दोसंगहणु ण कासु वि किज्जइ  
पइं वि जाइरइ महु कुलउत्ती

पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।  
पाणिपोमैपोमै जं छित्ती ।

10

घत्ता—तं पौडिय सयलें परियणेण उवलहिं दंडसहासै ॥  
कंपंतदेह जारेण सहं सा मुक्की णीसासै ॥ १० ॥

## 11

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ  
सप्पिणि हूई समपरिणामें  
विण्णि वि मिलियइं हियवइ धरियउं  
आयउ एत्थ जाम किर मारमि  
ता मइं जाणितं तुहं पुण्णाहिउ  
एम भणेप्पिणु तेण फणीसै  
दिण्णइं महु दिव्वइं परिहाणइं  
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि  
णिसुणि देव सासयसंपययरु

हउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।  
सुरसरि देवय काली णामें ।  
तं तुह दुव्ववसिउ संभरियउं ।  
आरुसिवि वच्छयलु वियारमि ।  
चरमदेह सीलेण पसाहिउ ।  
समजलसिंचियरोसहुयासै ।  
दिण्णइं भूसणाइं असमाणइं ।  
अहिवइविवरि णिहेलणु जेत्तहि ।  
जगि जीवहु धम्मु जि लग्गणतरु ।

5

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें वोळ्ळियउ भरहपसाहियमैहियल ॥ 10  
देव वि तहु पायाहें पडहिं फुडु जासु धम्ममइ णिच्चल ॥ ११ ॥

## 12

इय जएण कह साहिय जावहिं  
गीवोलंबियमोत्तियहारें  
तेण पउत्तु णिसुणि णिवररिसि

अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।  
सो दाविउ रायहु पडिहारें ।  
कासीविसइ णयरि वाणारसि ।

३ MB जाइरय, ४ MB °पोमपंकइ, ५ MBK ताडिय.

11. १ M पुव्ववसिउ. २ MB चरमदेहु. ३ MB समजलु सिंचिय°. ४ M भूदाणइं. ५ MB °महियल.

12. १ B जइण. २ K गीवोलंबिय°, ३ MB रायहु दाविउ. ४ MB °वरससि.

10. 10 a जा इ र इ जन्मनः प्रमृति अनुरक्ता.

11. 7 b अ स मा ण इं अद्वितीयानि.

राउ अकंपणु राणी सुप्पह  
 फुल्लकुसेसयसंणिहसुमुहहं  
 सस मृगलोयण ताहं सुलोयण  
 जेडुहि रूउ काइं किर सीसइ  
 पायहं काइं कमलु समु भणियउं  
 रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिडुइं

सालंकारी णं वरकइकह ।  
 सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं । 5  
 लहुइं लच्छीवइ सुहभायण ।  
 उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ  
 तं खँणभंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।  
 कण्णाणहपहाहि णं णट्टुइं ।

घत्ता—कुंरुविंदु तणु वि जंघाजुयहो णासवंतु करु दंतिहि ॥ 10  
 ऊरुजुयलहि जो समुं भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

## 13

वण्णामि काइं णियंवगुरुत्तणु  
 भमउ भमउ सो भूएं भुत्तउ  
 कहिं थणजुयलु चित्तगइरंभणु  
 दड्ढा ताहं दासिसिरमंडणु  
 किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ  
 जैवँ कुमरिहियवउं संदाणइ  
 किं सारंगणँयणि सा उत्ती  
 णक्खहं लग्गि वि जा केसग्गइं  
 लीलंदोलणकीलँजुत्तइं

जहिं पत्तउ तिहुयणु जिं लहुत्तणु ।  
 णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।  
 भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।  
 चंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।  
 तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ । 5  
 मृगुं ण तँ अवलोयहु जाणइ ।  
 केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती ।  
 ताम ताहि णिरुवमइं वरंगइं ।  
 लुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥ 10  
 वियसंति अच्चेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहहं. ६ मिगलोयण. ७ MB तक्खणि भंगरु. ८ B कुरुविंदत्तणु. ९ MB जंघाजुयलहो.  
 १० K सम.

13. १ MB वि. २ जिम कुमरिहि हियवउ. ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB °णयण. ५ MB उत्त-  
 पडुत्ती. ६ MB °कीलणजुत्तइं.

12. 5 a °कुसेसय° रक्तोत्पलम्. 10 कुरुविंदु शंखघर्षणम्; तणु काष्ठं लघुश्च.

13. 2 a भुत्तउ युक्तो गृहीतः. 4 a दड्ढा अग्निना संतप्ताः.



## 14

छुडु मायंदेरुक्खु कंटइयउ  
 छुडु चंपयतरु अंकूरंचिउ  
 छुडु कंकेलि किं पि कोरइयउ  
 छुडु मंदारसाहि पल्लवियउ  
 छुडु जायउ णैमेरु कलियालउ  
 छुडु काणणि पर्फुल्लु पलासउ  
 छुडु फुल्लिउ मल्लियफुल्लोहउ  
 छुडु छडय्येणविडउलि मउ वड्डिउ  
 कुंदु कुसुमदंतहिं णं हसियउ  
 दवणयकर्यकुडुयलपउत्तइं

महुलच्छिइ आलिगिवि लइयउ ।  
 णं कामुउ हरिसै रोमंचिउ ।  
 णं वम्महचित्तारै रइयउ ।  
 चलदलु णं महुणा णच्चवियउ ।  
 मत्तचओरकीररावालउ । 5  
 पहियहुं लग्गउ विरहहुयासउ ।  
 रमणीयणि पसरिउ रइलोहउ ।  
 वेल्लिकुसुमरसु चुंवि वि कड्डिउ ।  
 कोइलु कामपडहु णं रसियउ ।  
 चंदणकहमपिंडविलित्तइं । 10

घत्ता—छुडु केलीहरइं विणिम्मियइं पुष्फंछुरणइं घित्तइं ॥

छुडु लग्गइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु रयंरत्तइं ॥ १४ ॥

## 15

थिप्पिरमहुच्छडयहिं महिघुलियइं  
 णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं  
 धवलकुसुममंजरिधयमालहिं  
 रायहंसकामिणिकयरंमणहिं  
 कुररकीरकैरंजणिणायहिं  
 सियजलकणतंदुलसोहालहिं  
 अणलससयदलदलसरलच्छिइ

सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।  
 चंदकवयणडणच्चणभावहिं ।  
 गुसुगुमंतमहुलियगेयालहिं ।  
 थिउ वसंतपहु उव्वणभवणहिं ।  
 वणिज्जंतु व थोत्तणिंहाणहिं । 5  
 भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।  
 घित्त सेस णं तहु वणलच्छिइ ।

14. १ MB मायंदु रुक्खु. २ B राइयउ; K रयउ. ३ M णं मेरु; B णामरु. ४ MBK पर्फुल्ल. ५ B विडयणविडलि. ६ MB कुंद. ७ MB कोइल. ८ MB °कयकदुयणपउत्तइं. ९ MBK °पिगाविलित्तइं. १० MB पुष्फत्थरणइं. ११ MB रइरत्तइं.

15. १ MB °रमणिहिं. २ MB बहुवणभवणहिं. ३ MB °कारंड°. ४ M °णिकायहिं; B °णिणा-यहिं; K °णिहायहिं;

14. 3 a को रइयउ कोरकितः. 8 b °कुसुमरसु मकरन्दः. 12 सरहसइं सरमसानि उत्सुकानि.

15. 1 b सुमणसुरहिरय° पुष्पसुगन्धमकरन्दः. 7 a अणलस° विकसितम्.

फग्गुणपइसारइ णंदीसरि  
पोसहपरिसमखामसरीरइ  
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें

छुह सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।  
थणजुंयलंतविलंविद्यहारइ ।  
पहु दिट्टउ जिणसेसाकमलें ।

10

घत्ता—तेलोकपियामहु णववि जिणु णवमयरंदकरंबिउ ॥

तं णलिणु णरिंदें णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंबिउ ॥ १५ ॥

## 16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय  
गय सुंदरि णियगेहु पराइय  
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ  
तणयहि उडुदिणि गलियइं रत्तइं  
णं दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइं  
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ  
सायरमंति चवइ सररुहमुहु  
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें  
सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु  
णं पच्चक्खीहूयउ सइं सुरु  
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहरं  
होति<sup>१</sup> ण अण्णहु तं लायण्णउं  
अविरोहणउं सयंवरमंडणु

करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।  
तायहु चित्ते चिंत संभूइय ।  
रायंणं मंतिहि मंतु समीरिउ ।  
महुं डुहंति भो अट्ट वि गंतइं ।  
अवलोयहु लहु णववरइत्तइं । 5  
कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।  
अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।  
सामंतेण लोयसामण्णें ।  
अच्छइ राणउ णामु पँहुंजणु ।  
रहवरु बलि वज्जाउंहु घणसरु । 10  
तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।  
सुमइ कहइ मइं पहु पडिवण्णउं ।  
होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइवुहेणम्मत्थिउ ॥

परियाणिवि होती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥

16

५ MB °जुयलंति विलं°. ६ MBK णविवि.

16. १ MB राणं मंतिहु. २ MB उडुदिण°. ३ MB डहंति. ४ MB अंगइं. ५ M णं दुपुत्तु रइयइं;  
B णं पुत्तरइयइं. ६ MB किं मंतेण. ७ MB पँहुंजणु. ८ MB सुरु. ९ K वज्जाउह; T घणसरु मेघेश्वरः.  
१० MB महियरु; T महिहरु राजानः. ११ MB विज्जाहरु. १२ MB होइ ण.

16. 4 a उडुदिणि ऋतुदिवसे. 8 b °सामण्णं अनुत्कृष्टेन. 10 a सरु स्मरः कंदर्पः; b घणसरु मेघस्वनः.

विमाणगोमिणीधवो  
सुरो विचित्तअंगओ  
तिणा सुमंडवो कओ<sup>१</sup>  
ललंततोरणालओ  
संमंतभंतभिगओ  
सुणीलवद्धभूयलो  
कहिं पि हेमपिंजरो  
कहिं पि रूप्यामलो  
कहिं पि वत्थुंछणओ  
णवंतणत्थलीसमो  
मणीहि रायराइओ  
कहिं पि देसिं<sup>२</sup> रत्तओ  
थिओ णवो व्व मित्तओ  
णिहित्तमोत्तियच्चणो  
असेसमंगलासओ  
विसालमत्तवारणो

कुमारिपुव्वबंधवो ।  
तओ तहिं समागओ ।  
विचित्तभित्तिसोहो<sup>३</sup> ।  
घुलंतपुष्फमालओ ।  
णहगलगासिगओ । 5  
तमेण णाइ सामलो ।  
सरो व्व कंजकेसरो ।  
विलित्तचंदमंडलो ।  
सुएंसपिंछवणओ ।  
महंतपुण्णसंगमो । 10  
रईइ णाइ छाइओ ।  
वहूइ णाइ रत्तओ ।  
सिरीविंलासदित्तओ ।  
ससंखकुंभंदप्पणो ।  
पगीयगेयंघोसओ । 15  
दिवायरंसुवारणो ।

घत्ता—मंडवु किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ ।

जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सर्गं महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17. १ MB add after this: समुच्चमंचसंगओ ( B °संचसंगओ ). २ MB °सोहिओ. ३ MB add after this: वरंगणाहिरांहीओ. ४ B° भमतमत्त°. ५ MB विचित्तवण्णमंडलो; K विजित्तचंद°. ६ MB वत्थुंछणओ and gloss वत्थेणावच्छन्नः. ७ GK सुएसुपिंछवणओ but gloss शुक्लेशपिच्छवर्णः; T सुएस शुक्लप्रधानः. ८ M णवव्वणत्थली°; B णवत्तणत्थली. ९ MB देस°. १० G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin. ११ MB °कुंद°. १२ MB °गीय°. १३ MBK सग्गु.

17. 1 a वि मा ण गो मि णी ध वो विमानस्य गोमिनी लक्ष्मीस्तस्या धवः स्वामी, वैमानिकदेव इत्यर्थः.  
9 b सु ए स पिं छ व ण ण ओ शुक्लेशपिच्छवर्णः. 10 a ण वं त ण° नवीनतृणम्. 14 b °कुं भं मङ्गलकलशः.  
15 a °आ स ओ आश्रयः.

जहिं कुमारि अहिलसइ सँइ वरु  
पइं विणु तेण वि काइं णवल्लें  
अविणउ एत्थु मै होउ मलासिउ  
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहल्लु  
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु  
चल्लिउ पडिभडगयघडमदणु  
चल्लिउ बलि रहँवरु वज्जाउडु  
भूगोयरविज्जाहरराणा  
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं  
सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती  
चोइय हय महिंदरहिं तहिं  
जोयइ सुंदरि कंचुइ दावइ

सो पारद्धउ णाहसयंवरु ।  
लहु चल्लहि किंकरवच्छल्लें ।  
हउं हक्कारउ तुँह संपेसिउ ।  
दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बल्लु ।  
तं णिसुणिवि चल्लिउ भरहेसरु । 5  
अक्ककित्ति णामें तहु णंदणु ।  
चल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु ।  
गंपि सयंवरघरि आसाणा ।  
संदणि तरुणि चडाविय तावहिं ।  
भार्यसहासैं रक्खिज्जंती । 10  
रायकुमार परिट्ठिय ते जहिं ।  
एक्कु वि णरवइ मणहु ण भावइ ।

घत्ता—तहि अक्ककित्ति पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥

वज्जाउडु वज्जु व श्रावडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ  
को णीससइ ससँइ दिहि छंडेइ  
कंठाहरणु को वि संजोयइ  
को वि णियइ णियणहइं अर्भंगइं  
चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु  
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु  
कासु वि आयउ विरहमहाजरु  
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघल्लु

तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।  
अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।  
अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।  
एयइं एयहि थणहि ण लग्गइं । 5  
किह विरयमि एयहि कंठग्गहु ।  
कासु वि लग्गउ काममैहग्गहु ।  
कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।  
केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जल्लु ।

18. १ MB सयंवरु. २ M ण होइ. ३ MB तुम्हहं पेसिउ. ४ MB रहवर. ५ MB भाइं.  
६ MB जेतहिं.

19. १ MB सुसइ. २ MB छडुइ. ३ MB अंगउं को वि पुणु वि पुणु मंडइ. ४ MB अहंगइं.  
५ MB °महाग्गहु.

18. ३ a मलासिउ दोषाश्रितः पापाश्रितो वा. 11 a म हिं द र हि एं महेन्द्रसारथिना.

19. 8 a वि ह लं घ लु विहलान्नः.

घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥

अहिलसइ हसइ भासइ महरु भज्जइ कामवियारहिं ॥ १९ ॥

## 20

तरुणिवयणु ज्ञोयवि जोत्तारें  
पुणु रहवरु संचोइउ तेत्तहि  
पुच्छइ पेच्छंती गयंवरगइ  
एहु केरलवइ एहु सिंघलवइ  
एहु बव्वरवइ एहु गुज्जरवइ  
एहु कंभोयकौंगंगंहं  
एहु कस्सीरणाहु टक्केसरु  
सोमण्णहसुउ एहु सेणावइ  
रुद्धणहंतरधरवित्थारहिं  
णिव दिव्विजइ अणेय परज्जिय  
गज्जिउ णवघणघोसणिणाएं  
इय आयण्णिावि पियसहिवयणइं

मणु परियाणिवि सुरगिरिधीरें ।  
आसीणउ जउं णरवइ जेत्तहि ।  
पभणइ कंचुइ णिसुणि महासइ ।  
एहु मालववइ एहु कौंकणवइ ।  
एहु जालंधरिसु एहु वज्जरवइ । 5  
राउ एहु सव्वहुं मि कलिंगाहुं ।  
एहु अवरु अवलोयहि तुहुं वरु ।  
कुरुकुलणहि उग्गउ ससि णावइ ।  
विसहरवरिसमाणजलवारहिं ।  
मेच्छ अतुच्छवंस रणि णिज्जिय । 10  
मेहेसरु जिं हक्कारिउ राएं ।  
मुद्धइ पेसियाइं णियणयणइं ।

घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणए जउ णियवइ जयगारउ ॥

जिह रोमि रोमि तहि विष्फुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥ २० ॥

## 21

जिह जिह कण्णइ पइ आलोइउ  
णरवरिंद णीसेस पमाइवि  
सउज्जसकंपावियगइगत्तइ

तिह तिह रहियं संदणु ढोइउ ।  
भवसिणेहसंबंधें जाइवि ।  
वीलावसपरिभउलियणेत्तहि ।

६ B सिरि चिहुर.

20. १ MB संजोइउ. २ B जयणरवइ. ३ GK गइवर° but gloss गजवरगतिः, K corrects गइ° to गय°. ४ MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोसलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंकणवव्वरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ, एहु कंभोयकौंगगंगंहं, राउ एहु सव्वहं मि कलिं-गहं. ५ MB ढक्केसरु. ६ MB पहु. ७ MB °जलधारहिं. ८ MB अणेण. ९ MB जिह कारिउ.

21. १ MB रहियं. २ MB भवसणेह°. ३ MB °मउणिय°.

20. 1 a जो त्तारें सारथिना.

21. 2 a प मा इ वि परित्यज्य.

जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि  
 कुंसुमसरेण णं कुसुमसरावलि  
 गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु  
 ता दुइंसणु दुद्धरु दुज्जणु ।  
 रविकित्तिहि सुहिवंदाकरिसणु  
 मच्छरवंते तेण पउत्तउं  
 जहिं अरहंतदेउ तहिं सयमहु ।  
 जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु ।  
 ण करहेण खरेण वा णरवंदहु  
 हरिकरिथीआइयइं णियंदहु

घित्त सयंवरमाल उरत्थलि ।  
 गहिय कुमारि तेण कैयपंजलि । 5  
 दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु ।  
 दुट्टु दुरासउ दूसियसज्जणु ।  
 अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु ।  
 जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।  
 जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु । 10  
 घंटालंबणु सहइ करिंदहु ।  
 सयलइं रयणइं हौंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण एहु णिहालिउ वालए ॥

अवमाणिवि तुम्हइं पिउंतणय घणरवु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥

15

## 22

रोसविमीसहं  
 इच्छियवसणहं  
 समरि भिडेप्पिणु  
 धिप्पइ सुंदरि  
 विउसदुगुंछिउ  
 कलहुदेसिउ  
 तं णिसुणेप्पिणुं  
 दरविहसेप्पिणुं  
 णिदुक्कियमइ  
 भुक्खइ झीणी

जयकासीसहं ।  
 दोहं मि पिसुणहं ।  
 सिरइं खुडेप्पिणु ।  
 णं वम्महपुरि ।  
 पड्डुणा इच्छिउ ।  
 तं तहु भासिउ  
 णिवहु णवेप्पिणु ।  
 कज्जु मुएप्पिणु ।  
 चवइ महामइ ।  
 कोवविलीणी ।

5

10

४ MB सकुसुम णं कुसुमसरसरावलि. ५ MB किय°. ६ MB अरहतु देउ. ७ MB add after this: जहिं सुवणु तहिं विसयपरिग्गहु. ८ M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइ णिअंदहु. ९ MB पड्डुतणय.

22. १ MB कलहुदेसउ. २ MB add after this: कर मउलेप्पिणु. ३ MB add after this: बहु संसेप्पिणु.

6 a स र हु सरथः. 8 a सु हि वं दा क रि स णु मित्रवृन्दकृशताकारकम्. 13 a णि यं द हु नृचन्द्रस्य.

माणुत्ताणी	भयविहाणी ।	
जायवचित्ती	दुक्खं तत्ती ।	
णिद्वै भुत्ती	गमणासत्ती ।	
सइं जि विरत्ती	अर्णह रत्ती ।	
पयडीवेस वि	जगपंकयरवि ।	15
सा करिकरभुय	भरहेसर सुय ।	
णालिंगिजइ	णेय रमिजइ ।	
एह पउत्ती	परकुलउत्ती ।	
उदालंतहं	जसु मइलंतहं ।	
णाउ मुयंतहं	उप्पहि जंतहं ।	20
भो जुवणिववइ	इहपरभवगइ ।	
अवसें णासइ	तुह किं सीसइ ।	

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥

जर्णजीवियकारेणु धुवु मुणहि सुंदर तुहं तुह ताउ वि ॥ २२ ॥

## 23

धणवंतेण अहव दीणेण वि	अकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।	
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ	हियवउ गरुणं पावे लिप्पइ ।	
एहु पियामहेण तुह ताएं	मग्गु पयासिउ मणुसंघापं ।	
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ	सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।	
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ	णं घएण सित्तउ धूमद्धउ ।	5
अक्ककित्ति पडिलवइ विरुद्धउ	जइयहु वीरेवइ तहु वद्धउ ।	
जइयहुं फाणिवइ भइण चवक्किउ	जणणे जलहरसरु जउ कोक्किउ ।	
तइयहुं महुं रोसाणलु हूयउ	णियमिउ एंतु खलहं जमदूयउ ।	

४ MB जा अवचित्ती. ५ MB read this line as: गमणासत्ती, णिदइ ( B णंदइ ) भुत्ती. ६ MB अण्णहु  
७ G omits this line. ८ B जणु. ९ MB कारण धुउ.

23. १ MB सुकुलेणेण वि अकुलीणेण वि. २ MBK वीरपट्टु.

22. 12 a जा य व चि त्ती या अपचित्ता उन्मत्ता.

23. 4 a भूयइं प्राणिनः. 5 b धूमद्धउ अग्निः. 7 b जउ जयः इति नाम्ना.

वारिउ छण्णपउत्तिहिं बप्पे  
सो दूसहु पज्जलियउ वड्डइ

अज्जु सयंवरमालातुप्पे ।  
रिउलोहियसित्तउ ओहट्टइ । 10

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ काइं महु हउं किं मग्गु ण बुंज्झवि ॥

जउ अप्पु वि भडलीहहि गणइ तेण समउ राणि जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरभेरि कउं कलयलु  
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण  
मेट्टेपयंगुट्टहिं संचोइय  
हैरिखरखुरखयखोणीमंडल  
रहरंखोलमाणधयडंबर  
चक्कचारचूरियविसहरसिर  
सुणामि सुविणमि महापहु णहयर  
जुवराएण रणंगणि मुक्का  
विजयघोसि करिवरि आरूढउ  
चक्कवूहमज्झत्थु विहावइ  
एत्तहि कण्ण पइट्ट जिणालउ  
रक्खिज्जंती किंकरवग्गे  
झायइ हो विवाहवित्थारें  
एत्तहि दूएं कज्जु समीरिउ

खणि उद्धाइउ चउरंगु वि बलु ।  
सूरारूढ सूर वरवारण ।  
गज्जमाण मेहा इव धाइय ।  
वाहिय वरकामिणिमणचंचल ।  
दित्तविचित्तछत्तछण्णंबर । 5  
असिझसमुसललउडिलंगलकर ।  
अट्टे चंद णामें विज्जाहर ।  
गरुडवूहु णहि विरइवि थक्का ।  
बालु महाहवसईणिग्घुट्टउ ।  
रवि परिवेसें वेढिउ णावइ । 10  
णिच्चमणोहरु णाम विसालउ ।  
थिय णिच्चलमण काओसग्गे ।  
णाणाजीवरासिसंघारें ।  
तं चक्कवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामापं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥ 15

रिउ जिणिवि जाम पडिवलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वड्डइ. ४ MBK बुज्झमि. ५ MBK भडलीलहि. ६ MBK जुज्झमि.

24. १ MB किउ. २ K मेंठ°. ३ MB हयखुरेहिं खय. ४ MB चक्कचार°. ५ MB अद्धचंद.  
६ MB °सयणिवूढउ. ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गे. ८ MB झाइय.



## 25

तेण समउ वरवीरु रणुम्भइ  
 खगपाणि भीसणु परसिरिहरु  
 पंच वि ससिरविणायकुलुम्भव  
 पंच वि णं आसीविसविसहर  
 पंच वि लोयवाल णं दारुण  
 अरितरुमयकंतारविणासण  
 मेहण्णहु खगवइ तहिं छट्टुउ  
 जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ  
 विरइयमयरवूहअम्भंतरि  
 दीसइ सोमण्णहसुउ केहउ  
 चोइहभायरेहिं परियरियउ

चलिउ सुकेउ सूरमिचु वि भइ ।  
 देवकित्ति जयवम्मु ससिरिहरु ।  
 पंच वि कयसंगाममहुच्छव ।  
 पंच वि मउडबद्ध रणसहचर ।  
 पंच वि पंच णां पंचाणण । 5  
 पंच वि णं सइं पंच हुयासण ।  
 करणहउयरि णां मणु दिट्टुउ ।  
 तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ ।  
 थिउ वेयडुमहाकरिकंधरि ।  
 वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ । 10  
 रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ ।

घत्ता—उक्खयकरवालभयंकरइं आहवि कोवावण्णइं ॥

आलग्गइं कण्णाकारणिण अक्ककित्तिजयसेण्णइं ॥ २५ ॥

## 26

परिहियकंचणकंचुइकवयइं  
 भडमुहमुक्कहकलल्लकइं  
 झसकौतासणिघोरायारइं  
 मुक्कपिसक्कच्छइयगयणयलइं  
 अंकुसवसविसंतमायंगइं

सामरिसइं संवरियावयवइं ।  
 भामियचक्कइं भेसियसक्कइं ।  
 झ्णंझणंतधणुगुणटंकारइं ।  
 रुहिरवारिरेल्लियधरणियलइं ।  
 संदणसंकडपडियतुरंगइं । 5

25. १ MB वरधीरु. २ MB मित्तसूरु. ३ B जयधम्म. ४ MB रणसयकर; K रणसहयर. ५ M अइतरु° but gloss अरिः. ६ MB णावइ. ७ MB कोवाउण्णइं. ८ MB °सेणइं.

26. १ MB पहरिय°. २ MB °कंचुय°. ३ MB झसकंतायणि°. ४ MB रुणुरुणंत°.

25. 6 a अरितरुमयकंतार° अरयः एव तरवस्तन्मयं यत्कान्तारमरण्यम्. 8 a ववसिउ शत्रु-पराजयकरणे उद्यतः; b ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ रिपुरर्ककीर्तिः सुलोचनोद्दालनादिलक्षणं कर्मसंघातं न धरति न स्वीकरोति.

26. 2 a °लल्लकइं रौद्राः. 4 a °पिसक्क° वाणाः.

असिणिहसणसिहिसिहपिंगलियइं  
मिलियकरालकालवेयालइं  
रुंडखंडभावियभेरुंडइं

लुयकरसिरउराइं महिघुलियइं ।  
हणहणरावसमुग्गयरोलइं ।  
खंडियधवलछत्तधयदंडइं ।

घत्ता—जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुलइं ॥

वेणिण वि सेण्णइं णं रणसिरिए बद्धइं केसुअफुल्लइं ॥ २६ ॥

10

## 27

रत्तमत्तरयणियरवेभले  
पहयहत्थिमत्थिक्कपंकए  
उद्धबद्धच्चिधोहलूरणे  
उयरऊरुउरयलवियारणे  
भीरुवयणणीसरियहारणे  
ता जएण संपेसिया सरा  
आहया हया विद्धया धया  
ते ण किंकरा जे ण मारिया  
तं ण छत्तयं जं ण छिण्णयं  
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ  
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जियं  
फुट्टकंचुयं फुट्टमइलं  
घायघुम्मिरं चत्तगोदलं  
समरकोच्छरो हंसियअच्छरो  
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो  
भुयबलीविलग्गो महाभुवो  
दिव्वलक्खणं कियसरीरहं

घारणीयलुलियंतचोभले ।  
रसवसाणईजणियसंकए ।  
तियससुंदरीतोसपूरणे ।  
वइरिघरिणिमणिहारहारणे ।  
मरणदारुणे तहिं महारणे ।  
पुंखलग्गहुंकारखरसरा ।  
णिग्गया गया णिम्मया मया ।  
ते ण राइणो जे ण दारिया ।  
तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं ।  
सो ण खेयरो जो ण खं गओ ।  
मग्गणेहिं किव्वणं व तज्जियं ।  
तुट्टपक्खरं मुक्ककुंतलं ।  
चक्किसूणुणो णिग्गयं बलं ।  
बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।  
सोमवंसतिलयस्स संमुहो ।  
पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।  
सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

5

10

15

५ MB हणहणकार°. ६ M वणासिरिए; B णवसिरिए.

27. १ MB °विभले. २ MB रसवसं णइं. ३ G छित्तयं; K छत्तयं, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं. ४ MB विज्जियं. ५ MBK किव्विणं. ६ MB फट्ट°. ७ M चित्तगोदलं. ८ MBK हरिसियच्छरो.

27. 1 a °वे भले विहले; b °चो भले समूहे बीभत्से वा. 2 b रसवसा ण ई° रसस्य वसायाश्च नदी. 7. b मया मृताः. 14 a °को च्छ रो दक्षः. 16 b सा णु ओ सानुजः लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहितः इत्यर्थः.

घत्ता—पुरुदेवतणयतणयहिं मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥  
हेमंगउ भायरदहसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥ २७ ॥

## 28

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ  
लुद्धभवणि णं विहलियसत्थइं  
चरमदेह ण मरंति महाहवि  
मेहेसरसरजालु जलंतउ  
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ  
एत्थंतरि असहायसहायहु  
भणइं कुमारु धवलु तुहुं ण कसरु  
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ  
कंतामोहमहणवळ्ळुड  
किं कड्डिउ असिवरु पडुतणयहु  
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि  
ता सो जयणरणाहें हसियउ

एकें एकु णं तहिं मारिज्जइ ।  
सत्थइं आविवि जंति णिरत्थइं ।  
किरं थाहिति महामुणि याहवि ।  
कुमरहु उप्परि सिहि व पडंतउ ।  
सहलु सपुंखउ पिट्टु व दलियउ । 5  
मुहुं अवलोइवि खेयररायहु ।  
वट्टइं माम तुहारउ अवसरु ।  
ता तेण वि रिउ रणि पञ्चारिउ ।  
रे जीमूयणाय तुहुं मूढउ ।  
दोहय णिवडिओ सि गुरुविणयहु । 10  
पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।  
इय चवंतु किं णहहु ण ल्हसियउ ।

घत्ता—तुहुं कारउ परयारहु पमुहु अक्कक्कित्ति सइं कत्तउ ॥

हउं णायणिउंजउ धरणियले णियपहुपायहं भत्तउ ॥ २८ ॥

## 29

एम चवेवि चाउ अप्फालिउ  
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं  
भैसियसुरणरफणिसंघायउ  
णिद्धणविहुरविणाससमत्थै

णं काणणि हरिणा ओरालिउ ।  
जगु गिलेवि णं कालें हसियउं । -  
जीयारउ रउहु संजायउ ।  
धणु कड्डियउ तेण सइं हत्थै ।

१ G पुरुदेवतणयहिं.

28. १ MB तहिं ण. २ M चरमदेहे. ३ B धिर. ४ MB कुमरहु. ५ M भाइ. ७ MB ०महं-  
णवे छूडउ. ७ M कायउ.

28. 3 b पा ह वि प्रभुत्वे. 5 d व सु स म स सि वि ज्ज हिं अष्टचन्द्रैर्विद्याधरैर्विद्याभिः कृत्वा. 9 b जी मू य-  
णाय हे मेघस्वर. 10 b दोहय हे द्रोहिन्. 13 उहु कारउ त्वं हेतुः कर्ता, परयारहुपमुहु परदार-  
गमनस्य प्रमुखः प्रधानः; सइं कत्तउ स्वतन्त्रः कर्ता. 14 णायणिउंजउ न्यायनियोजकः.

29. 1 b हरिणा सिहेन.

लोहवंत किर के णउ मग्गण  
गुणवज्जिय किर के णउ णिदुुर  
चित्तविचित्त के ण किर चलयर  
सुद्धिवंत णियदित्तिइ दित्ता  
वइरिहि देहावयवि पइट्ठा  
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु

धम्मुज्जिय किर के णउ भीसण । 5  
पिच्छंचिय किर के णउ णहयर ।  
वम्मण्णेसिय के णउ ताविर ।  
उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।  
एक्क ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।  
ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु । 10

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥

णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि बलु खाणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुंजर जरभावेण व भग्गा  
संदण संदाणिय वावल्लहिं  
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्णहं छत्तइं  
चउदिसु पच्छाइयसरजालें  
एम दिसाबलि संदिज्जंतउ  
सुणमिं मुक्कु वाणु संघारउ  
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ  
एत्थु तेत्थु मग्गियअवठंभणु  
बलु णीलीरसि बोलिउ णावइ  
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु

तुरय तुरंतंतयपहि लगा ।  
भणु कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।  
चिंधइं चामराइं वाइत्तइं ।  
विज्जाहर हरेवि णियकालें ।  
पेच्छिवि णिययसेणु भज्जंतउ । 5  
ढंकिउ तेण वइरिपरिवारउ ।  
वाहणु पहरणु को वि ण चालइ ।  
सालसणयणु पमेल्लियजिंभणु ।  
जाम अहइ णिइ संप्रावइ ।  
तावंतरि संठिउ मेहप्पहु । 10

घत्ता—तं धंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियंसुहिमुहुं ॥

जगि सज्जणसंगे जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29. १ M मम्मं णिसिय; B धम्मं णिसिय. २ MB ण संताविर.

30. १ MB जरतावेण जि भग्गा. २ MB तुरंत तहे पहि. ३ MB किर कहिं. ४ MB छिण्णहिं.  
५ MBK अंधारउ. ६ M परहणु. ७ MB जेभणु. ८ MB संपावइ. ९ B णियसहिमुहुं.

7 b वम्मण्णेसिय मर्मान्वेषिणः. 9 b जयसर जयस्य वाणाः जितस्मराश्च.

30. 1 a जर<sup>०</sup> ज्वरः; b तुरंतंतयपहि तुरंत त्वरमाणाः + अंतयपहि अन्तकमार्गे. 2 a वा वल्लहिं सेल्लैः; b रहिल्लहिं सारथिभिः, 9 b अहइ अभद्रा. 10. b मेहप्पहु मेघेश्वरमित्रः.

## 31

णं जलहरु जलहरु गइ द्वैसिवि  
 सुणमिं मुक्कु भीमु पंचाणणु  
 सुणमिं मुक्कु जलंतु हुयासणु  
 सुणमिं मुक्कु सैंकंदरु मंदरु  
 सुणमिं मुक्कु विसंकु महाफणि  
 सुणमिं मुक्कु महंतु महीरुहु  
 सुणमिं मुक्कु मत्तसौंडालउ  
 जं जं सुणमि म्हाउहु पेसइ

धाइउ तासुँ सुणमि आरुसिवि ।  
 मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।  
 मेहप्पहेण मेहँ जलवरिसणु ।  
 मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदरु ।  
 मेहप्पहेण गरुहु खगसिरमणि । 5  
 मेहप्पहेण तणूणवु दूसहु ।  
 मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।  
 तं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।

घत्ता— णउ सकिउ विसहहुं रिउहि सर कसरु व मुहुं वंकेप्पिणुं ॥

ओसारिउ सुणमि खयराहिवइ संगरभारु मुपप्पिणु ॥ ३१ ॥

10

## 32

भग्गइ सुणमीसरि सौंडीरहिं  
 मेहप्पहु पहेरेहिं पराज्जिउ  
 दाणवारिपीणियमहुयरउलु  
 काणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु  
 आयसवलयबद्धदंतुज्जलु  
 पभणिउ अक्ककित्ति लहु आवहि  
 चंगउ कियउ रायपुत्तत्तणु  
 परणरणारिहि भडयणमारिहि  
 तं पइं णरवइआण णिसुंभिय  
 तं णिसुणेप्पिणु उत्तरु धुत्तें

अट्टचंदविज्जाहरवीरहिं ।  
 सो णासंतु णँ सुरहं वि लज्जिउ ।  
 णहयललगतुंगकुंभत्थलु ।  
 करसिक्कारसित्तधरणीयलु ।  
 ता जएण संचोइवि मयगलु । 6  
 अज्ज वि सुंदर काइं चिराव्वहि ।  
 णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकित्तणु ।  
 रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।  
 णिहय जारवित्ति पारंभिय ।  
 पडिजंपिउ भरहाहिवपुत्तें । 10

31. १ MB जलहर°. २ MB भूसिवि; ३ K सुणमि तासु. ४ MBK मेहु. ५ M सुकंदरु.  
 ६ MB महातरु. ७ M तणूयउ; B तणूणउ. ८ MB महत्थु संपेसइ. ९ MB वंकेविणु.

32. १ MB सुणमि समरि. २ MB अट्टचंद°. ३ M वि. ४ G करि°. ५ MB सित्तु. ६ MB  
 थिरावहि. ७ MB उत्तर.

31. 2 b सरहु अष्टापदः. 6 b त ण वु तनूनपात् अग्निः.

32. 4 a क णि र° शब्दवत्यः.

घत्ता—महु संणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥

हउं लगउं तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

## 33

जेण बलेण जित्तु घणमंडलु  
तं बलु पेक्खह दावहि अम्हहं  
वेहाविउ आवत्तचिलायहिं  
तहिं अवसरि सेंदूरकणारुण  
अट्ट अट्टेचंदेहिं आवाहिय  
एक्कु दंति जुवराएं ढोइउ  
हयअरिकरिवरेण ते दंतहिं  
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं

तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।  
अज्जु परिकख करेवी तुम्हहं ।  
तुहं वि बप्प जुज्झहि सहं रायहिं ।  
जयवारणहु विलग्गा वारण ।  
कक्खरिक्खगेजावलिओहिय । 5  
णं इंदे अइरावउ चोइउ ।  
णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।  
दोखंडीहवंतदढसौंडहिं ।

घत्ता—गय पाडिय स्रडिय णं सिहरि धरणिवीदु आकंपिउ ॥

देवांसुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

10

## 34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं  
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ  
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु  
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं  
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ  
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं  
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु  
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ  
तुमुलरंणे णिरु रोसाउण्णइं

एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं ।  
एत्तहि जगु संझारुइसोहिउ ।  
एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु ।  
एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।  
एत्तहि धावइ ससियरमेलउ । 5  
एत्तहि विरहे रडियइं चक्कइं ।  
एउ ण बुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।  
रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।  
तेत्थु जि वसियइं वेण्णि वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ.

33. १ MB सिंदूर°. २ MB अद्धचंदेहिं. ३ MB अवराइउ. ४ MB देवासुर.

34. १ MB संझारुणु सोहिउ. २ MB रोसाइण्णइं.

33. 5 6 °गेजावलि° वरत्राभिः. 7 6 अंत हिं अन्त्रैः.

34. 3 6 त मीतमु रात्र्या अन्धकारः.

घत्ता—रत्तिहिं रणरंगि भवंतियए णरवइकज्जि समत्तउ ॥

10

घरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पमुत्तउ ॥ ३४ ॥

## 35

का वि भणइ ईसावसरुट्ठी  
तक्कयरत्तहु हउं किंहु रुच्चमि  
का वि भणइ जं मैइं पडिवण्णउं  
जं मइं चिरु दंतग्गहिं खंडिउं  
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहि  
पट्टालंक्रियसीसहु लक्खणु  
जो मइं चाप्पिउ आसि थणंतहिं  
पणर्यसणिद्धइं पणइणिंजाणइं  
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहि  
णाहें अंतीणिवंधणु दिण्णउं  
को वि दुवासखुत्तरिउच्चक्कउ  
केण वि संचिय णिवरिणहारी  
लइय भिडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं

खग्गधार पियहियइ पइट्ठी ।  
हयविहि प्रीणहिं काइं ण मुच्चमि ।  
पिय तं हियउ सिवहि किं दिण्णउं ।  
अहरैविंनु तं पक्खिणिखंडिउ ।  
ओसरु कावालिय किं जायहि । 5  
मं लुहु तुहुं णिग्घिण दुवियक्खणु ।  
सो रुद्धउ उरु करिवरदंतहिं ।  
का वि सणाहहु खंडइ वीणइं ।  
आणिय पासि परेहिं णिहाणुहि ।  
असिधेणुयइ सासुं लइ चिण्णउं । 10  
उप्परि रहहु महारहु थक्कउ ।  
रयणकोडि मायंगहु केरी ।  
भणु किं ण कियउ एत्थु समत्थहिं ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेह्लिवि ससरु सरासणु ॥

गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरसंणासणु ॥ ३५ ॥

15

35. १ MB किं रुच्चमि. २ MB पाणहिं. ३ M मुहु; B महु. ४ K चट्टिउं. ५ MB अहरविंनु पक्खिणिहिं विहाडिउ. ६ MBK जोयहि. ७ K णिरिघ. ८ MB रुद्धउ अरिवरकरिदंतहिं. ९ MB °समिद्धइ. १० MB °ठाणइं. ११ T णिभाणुहे. १२ MB अज्ज णिवधणु. १३ MB सीसु लइ छिण्णउं. १४ MB वीर-संणासणु.

10 समत्तउ समाप्तो मृतः. 11 पिउ प्रियः.

35. 2. a तक्कयरत्तहु खग्गधाराकृतरक्तस्य. 9. a तणुथाणुहि शरीरस्तम्भस्य; b णिहाणुहि पुरुषादित्यस्य. 10 b सासु निःश्वासः.

## 36

पुणु जामिणीगमणि	दिणमणिसमुग्गमणि ।	
भेरीणिणहाइं	कयजयविमहाइं ।	
जममुहरउहाइं	हरियंदणहाइं ।	
गज्जियमयंगाइं	हिसियतुरंगाइं ।	
वाहियरहोहाइं	संगद्धजोहाइं ।	5
चलवलियचिंधाइं	धूलीरयंधाइं ।	
कि <sup>३</sup> लिलिलियणिसियरइं	जिगिजिगियअसिवरइं ।	
कंपियधैरग्गाइं	सेण्णाइं लग्गाइं ।	
ता संदणत्थस्स	आहवसमत्थस्स ।	
णरसिर लुणंतस्स	करि हरि हणंतस्स ।	10
विहवियदणुयस्स	लच्छिमइतणुयस्स ।	
परिचत्तसंकेहिं	वसुसमससंकेहिं ।	
उब्भूयगावेण	विज्जापहावेण ।	
परपाणपहरणइं	छिण्णाइं पहरणइं ।	
कौताइं कंपणइं	मुसलाइं घणघणइं ।	15
चावाइं चक्काइं	चूरेवि मुक्काइं ।	
ता गलियसत्थेण	चित्ते महत्थेण ।	
जयणामराएण	इच्छियसहाएण ।	
जियसरयमेहम्मि	जो आसि गेहम्मि ।	
सिद्धो सउण्णेण	धरणेण वीरेण ।	20
अहिराउ संभरिउ	सो ज्जत्ति अवयरिउ ।	
फणिवासु रणि तिव्वु	अद्धेदुसरु दिव्वु ।	
ढोएवि खणि तासु	गउ णाइणीवासु ।	

36; १ M हरियंब°. २ MB °मइंगाइं. ३ MB किलिकिलिय°. ४ MB °धयग्गाइं. ५ MBK परियत्त°. ६ B omits this foot. ७ MB कप्पणइं. ८ MB चितियमहत्थेण. ९ MB धीरेण घण्णेण; G धम्मेण वीरेण.

36 ३ b हरियं दं ण हाइं हरिचन्दनार्द्राणि. 11 b लच्छिमइतणुयस्स जयस्यर्त्येः. 12 वसुसमससंकेहिं अष्टभिर्विद्याधरैः. 20 a सउण्णेण खपुण्येन. 22 फणिवासु. नागपाशः.



ता विजयवंतेण  
जाला मुयंतेण  
हुयवहसमाणेण  
कूबरधुरासहिअ  
दरमलियधयंसंडि  
परिभमियगिद्धउलि  
अट्ट वि विहू तेण  
कूरारितासेण  
धरिओ रुसारुणउ

ससिभासपुत्तेण ।  
जालियदियंतेण ।  
अंहिदिण्णबाणेण ।  
णिदहिवि रंणि रहिय ।  
णच्चवियारिउं<sup>३</sup> हांडि ।  
पइसरिवि भडतुमुलि ।  
बद्धा तुरंतेण ।  
दढणीयवासेण ।  
चक्कवइपिउं<sup>१५</sup> तणउ ।

25

30

घत्ता—जिणु तायताउ पिउ रंयिवइ तो वि णिवंधणु पत्तउ ॥

उंइ माइ कुर्मारु णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥ ३६ ॥

## 37

पम्ब चवंतिहिं सुरवरगणियहिं  
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरं  
जयविलासु जयरायहु केरउ  
रहणिहियउ कुमारु विच्छायउ  
जलहरसरु पइट्टु ससुरयघरि  
तक्खणि सयल वि परभवत्तिइ  
जम्मावासपासविवरंमुहु  
मिलियणरिंदाहिं मउलियपाणिहिं  
बहुमिच्छत्तबीयउप्पणणउ  
चउगइखंधु सुहासासाहउ

वण्णिउं जयसाहसु धणथणियहिं ।  
गाइउं णं रुणुरुणिपं भमरं ।  
दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।  
करकलियंकुसचोइयणीयउ ।  
विजयाणंदु पंवाट्टिउ पुरवरि ।  
गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।  
वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।  
मुहकुहरुगयसुललियवाणिहिं ।  
मोहविसालमूलु विट्थिण्णउ ।  
पुत्तकलत्तलुलियपारोहउ ।

5

10

१० B अहदिण्ण°. ११ MB रहरहिय, १२ धरंसंडि, १३ M रिउखंडि, १४ MB °णायपासेण, १५ MB °पिय, १६ M चक्कवइ, १८ B एवमाइ, १८ K कुमार.

37. १ MB °णाइउ, २ MB पवट्टिउ, ३ K °मूल.

24 b ससि भा स° सोमप्रभः, 27 a कूबर° रथमुखम्; b रहिय सारथिम्, 30. a अट्ट वि विहू अष्टापि चन्द्रा विद्याधरस्वामिनः, 34 उइ माइ पश्य मातः.

37. 3 b चारु चेष्टा, 4 b °णायउ गजः.

गहियमुक्कवहुविहतणुपत्तउ  
सोक्खदुक्खफलसिरिसंपण्णउ

पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ ।  
इंदियपक्खिउलहिं पडिवण्णउ ।

घत्ता—इय भवतरु ज्ञाणहुयासणेण पइं दडुउ परमेसर ॥

जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जँय जय जियवम्मीसर ॥ ३७ ॥

## 38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं  
एयहुं मरइ मज्झि जइ एक्कु वि  
तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु  
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय  
तुह सइ सामत्थे असमंजस  
हइ संति होउ किं ज्ञायहि  
जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ  
सिरिणाहहु सिरि व्व आवग्गी  
जाइवि पासि कुमारहु णेहे  
जउ साकं पुणु पायहिं पडियउ  
अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसरु  
अम्हइं णलिणायर तुहुं दिणयरु  
अणुपालियहं काइं रूसिज्जइ

महु कारणि उच्चाइयघायहं ।  
पच्छइ इच्छइ जइ मइं सक्कु वि ।  
लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।  
लंवियकर ताएं वोल्लाविय ।  
रणि उव्वरिय महीस महाजस । 5  
सुंदरि करपल्लव उच्चायहि ।  
णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।  
जयरायहु करपंकइ लग्गी ।  
महिणिहित्तदंडासणदेहे ।  
भासइ सामिभँत्तिभरणमियउ । 10  
अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।  
अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहरु ।  
अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।

घत्ता—इय वयँणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥

लच्छीमइवहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्यभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम  
अट्टावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३८ ॥

॥ संधि ॥ ३८ ॥

५ MB जय णिजियवम्मेसर,

38. १ MB जइ मइं इच्छइ. २ MB संधि. ३ MB साकंपणु; K साकंपणु? ४ MB भावइ. ५, M भत्तिभरणडियउ; B ०त्तिभरणडियउ. ५ MB वयणें,

12 b पडिवण्णउ आश्रितः.

38. 5 a अ स मंज स कोपाविष्टाः, 8 a सिरिणा हहु विष्णोः.

## XXIX

जे रुद्धा संगरि बद्धा ते णिव मेल्लिवि पुज्जिय ॥  
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुरहं विसज्जिय ॥ भुवकं ॥

1

किह हउं संपत्तउ बंधणारु	जा सोयइ अप्पउ णिवकुमारु ।	
ता पभणितं तेणाकंपणेण	जिणचरणलीणणिच्चलमणेण ।	
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु	तुहुं वद्धउ णं सुयणोहबंधु ।	5
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु	तुहुं वद्धउ णं सरहलु महंतु ।	
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ	तुहुं वद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।	
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिविलासु	तुहुं वद्धउ णं सुकहाविसेसु ।	
हेलइ जपण जयराइएण	तुहुं वद्धउ णं रसेवाइएण ।	
इयरह किं अमहहं सहलु होसि	अण्णाएं दूंसिउ खयहु जासि ।	10
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति	णियपुरहु विसज्जिउ अक्ककित्ति ।	

घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ ढोईउ ॥

ते भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोईउ ॥ १ ॥

..B give, at the commencement of this Samdhi, the following stanzas:-

णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।  
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवसिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥  
तन्त्रीवाद्यैरनिन्दैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः  
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।  
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यद्य त्रिद्याप्रियो यः  
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1. B बुद्धा. २ MB पुरहु. ३ MB सुहिणेहबंधु. ४ M सरयणु; BT सरयलु. ५ MBK रुं वाइएण. ६ MB बद्धउ. ७ M विसज्जिय. ८ MB ढोइयउ. ९ MB जोइयउ.

1. 3 a ब ध णारु बन्धनम्. 5 b सुयणो ह° सुहृदाम्. 6 b सरहलु काण्डफलम्. 7 a सासेण धान्येन, 9 b रसवाइएण धातुवादिना. 10 a इयरह अन्यथा.

## 2

लज्जंतु वि तापं सो पउत्तु  
 वसणेसु रमइ खलवयणु सुणइ  
 जो एहउ सो वरं कहिं वि जाउ  
 महु चरपुरिसहिं दुइंतदुरिउ  
 होएण सुँदुण्णयगारएण  
 गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु  
 गुरुकोवें को वि ण खयहु जाइ  
 गुरुवयणइं कहुयइं जाइं जाइं  
 लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाहं  
 लइ दिज्जमि हउं दिइंतु एत्थु

वरं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।  
 अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।  
 मा करउ पयहि परिणहु ताउ ।  
 एयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।  
 ता चिंतिउ तेण कुमारएण । 5  
 गुरुकोवें जँगि सिज्जइ तिवग्गु ।  
 गुरुकोवें संपय घरहु एइ ।  
 परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।  
 जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।  
 लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु । 10

घत्ता—जयवंतें सुप्पहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥

आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहंतउ ॥ २ ॥

## 3

भो देव कसणसियतंबिराइं  
 किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण  
 लइ भत्तितो वि णियकिंकराइं  
 जयविजयाकंपणपत्थिवाहं  
 पहिलउ जि दोसु दीहरभुयासु  
 बीयउ जं कोक्किउ वरणिहाउ  
 तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल  
 परघरिणि हरंतहु रोसणडिय

लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।  
 किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।  
 तुह पायपोमलालियसिराइं ।  
 विण्णविउ णिसुणि णिव अवणिवाहं ।  
 जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु । 5  
 दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।  
 रइलालस लग्गी तासु बाल ।  
 चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2. १ MB वर. २ MB °वयण. ३ M किर. ४ G परिणयहु. ५ B जाएण. ६ K सदुण्णय°. ७ धुवु सिज्जइ.

3. १ MB °णिहाउ.

2. 6 b तिवग्गु धर्मार्थकामाः. 8 b सुपत्थइं सुपत्थ्यानि. 9 a सुइसुसिरंति श्रोत्रविवरमध्ये.

3. 2 a णवहिवइ हे नवानिधिपते. 3 a भत्तितो वि भत्तितोऽपि. 4 b अवणिवाहं अवनिपानं राज्ञाम्. 6 b °णिओउ नियोगः.

पंचमउ दोसु बद्धउ कुमारु  
इय दोहा दोसपरंपराइं  
तं देव पइट्टा तुज्जु सरणु  
किं मारणु किं भणु किं<sup>३</sup> किलेसु  
हो हउं पडिवज्जमि कासिराउ  
जउं पुणुं महु दाहिणु बाहुदंडु  
उंवरइ वप्प संगामकालि

णिउ णियणयरहु रणेरंगवीरु ।  
जं ण वि मुच्चहुं अज्ज वि घराइं । 10  
किं दंडु एत्थु सव्वस्सहरणु ।  
तं णिसुणिवि जंपइ मेइणीसु ।  
पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।  
जं सो तं चक्कु ण वज्जुं दंडु ।  
उल्ललियगिद्धखद्धंतमालि । 16

घत्ता—बलगव्वे रोसें तिव्वे जो जणवउ संघट्टइ ॥

सुउ दंडवि सो सइं खंडवि जो उप्पहिण पयट्टइ ॥ ३ ॥

## 4

इय कहिवि तेण पट्टविउ मंति  
णरवइ मण्णइ पइं पिउसमाणु  
महु अवर विण्णि भुयदंड भणइ  
रूसइ सदोसि गुणवंति महेइ  
चंगउ किउं पुत्तहु दप्पसाहु  
तं मज्जु णिरारिउ डहइ अंगु  
ता जयकंपण हरिसियसुधाम  
घरणिहियमंतिअप्पाहिण  
अणवरयणात्रियजिणवरपण  
अण्णहिं दिणि आणांदियजण

गउ सो घोसइ णियपहुहि संति ।  
जय विजय बे विरिउतिमिरमाणु ।  
तुम्हारउ माणुंसु सुट्टु गणइ ।  
को भरहहु केरी लील वहइ । 5  
जं कण्ण देवि विरइयउ चाहु ।  
णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।  
कुरुवंसणाह वंसाहिराम ।  
दुज्जयचिलायसप्पाहिण ।  
अणुहुंजियणरवइसंपण ।  
आउच्छिउ णियससुरउ जण । 10

घत्ता— तुह गोट्टिहि जिणवरदिट्टिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥

अविणम्मं तो वि सकम्मं जीउ णियाड्ढिवि णिज्जइ ॥ ४ ॥

२ K रणरंगवीरु. ३ MB तणुकिलेसु. ४ B जमु. ५ MB महु पुणु. ६ MBK वज्जदंडु. ७ M उवरइ.

4. १ G माणु सुट्टु. २ MB रमइ. ३ MB गमइ. ४ MB पुत्तहु किउ. ५ M वरदिट्टहे.

10 a दोहा द्रोहिणः. 15 b गिद्ध खद्धंतमालि गृध्रैर्भक्षिताः अन्त्रश्रेणयः यस्मिन्. 16 संघट्टइ पीडयति.

4. 5 a दप्पसाहु मानभङ्गः; b देवि दत्ता. 12 अविणम्मं निष्ठुरेण,

3

को विसहइ सुहिविच्छेयताड  
उम्मुकु सुयावर ससुररणे  
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमरणे  
कय जलहिवलय चलवलियणीर  
उट्टिय गहीर भेरीणिणाय  
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु  
णियणियदूसावासहिं सउण्ण  
पढकुडिहि महामहु सुरसमाणु

परियाणवि कज्जवियप्पभाउ ।  
तं जंतं हरिखुरखयरएण ।  
चलवलिउ खलिउ धयवहु धएण ।  
धिय विसहर भरंभयदलिय धीरं ।  
आकांपिय ककुहणिवास णाय । 5  
दियहहिं गंगाणइतीरं पत्तु ।  
हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।  
थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइं गंगाहि छणससिरविपडिंविंबइं ॥

णं वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥ ५ ॥

10

6

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु  
साकेयहु जाइवि भुवणसारि  
पडिहारं पइसारिउ दवट्टि  
विसहरणरखेयरविहियसेव  
ता दिण्ण दिट्ठि णाहं विसाल  
पसरंतपणयरससायरेण  
णं कलियइ णेहमहीरुहासु  
उवविट्ठु तुट्ठुं संमाणु कियउ

कइवयभडेहिं सह महिमहत्यु ।  
थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।  
विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।  
जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव ।  
ससिवियसिय णं कंदोट्टमाल । 5  
मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।  
अंगुलियइ दाविउ पीडु तासु ।  
पोरिसु परमुण्णइं संहहि रिण्ण

5. १ B कज्जु. २ MB add after this: पडिबोहिउ बुहमणं वरेण. ३ अमे अमे अमे  
this: पडिपेडिउ संदणु संदणेण. ४ M भयभर°; B पयभर°. ५ MB धीर. ६ अमे अमे अमे

५ MB तीर.

6. १ MB सुट्ठु. २ MB सयहि.

5. ३ b गिल्ल आर्दा. 6 b क कु ह णि वा स णाय दिग्गजः. ६ अमे अमे अमे  
6. 1 b महिमहत्यु महां महार्यो महान् महान्तो का ककुहणिवास णाय दिग्गजः. २ अमे अमे अमे शीघ्रम्. 5 b  
६ हो ६° नीलोत्तरलम्. 7 a णेहमहीरुहासु सहल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥ ५ ॥ 8 b सह हि रागा-

यान्

णउ जलणहु पासिउ अवरु उणहु  
गयणंगणउ णउ अवरु गरुउ  
जिणु मेल्लिवि को तेलोक्कसामि

परमाणुयाउ णउ अवरु सणहु ।  
कामाउराउ णउ अवरु सरुउ । 10  
पइं मेल्लिवि को सुहडग्गामि ।

घत्ता—जो दुँक्खिउ सो परिरँक्खिउ जं दुल्लहु तं लद्धउं ॥  
पइं होंतें राणि पहरंतें जय महुं काइं ण सिद्धउं ॥ ६ ॥

## 7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु  
चडियउ वेयड्ढमहाकरिंदि  
चमु चालिय पुणु दिण्णउं पयाणु  
जोयवि गंगहि सारसहं जुयलु  
जोयवि गंगहि सुललियतरंग  
जोइवि गंगहि आवँत्तभवणु  
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु  
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ  
जोइवि गंगहि मोत्तियहु पंति  
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल

रापं गउ णियसिमिरहु तुरंतु ।  
णं दिणयरु उययमहीहरिंदि ।  
पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।  
जोयइ कंतहि थणकलसजुयलु ।  
जोयइ कंतहि तिवलीतरंग । 5  
जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।  
जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।  
जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।  
जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।  
जोयइ कंतहि धम्मेल्ल णील । 10

घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥  
मंदाइणि जर्णसुहदाइणि दीसइ रापं तेही ॥ ७ ॥

३ M दुत्तियउ. ४ MB पडिरक्खिउ. ५ M दुलहउ; B दुलहु.

7. १ MB °सिविरहु. २ MB चलिय पुणु वि दिण्णउं. ३ MB जोइउ. ४ MB जोइवि. ५ MB आवत्तु भवणु. ७ B णं सुहदाइणि.

10 b सरुउ सरोगः

7. 11 वम्महवाहिणि कामनदी. 12 मंदाइणि गङ्गा.

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु  
सहुं बहुवरेण पर्यलंतदाणु  
दैहि पियदुहकयअवलोयणाइ  
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि  
अवलोइवि रुइओहामियक्क  
एत्थंतरि थरहरियासणाइ  
वणदेविइ चारियवइरिणीइ  
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ  
णि.वेसँदें णिउ सुरसरिहि तूहु  
रणि वणि जलि जलणि समाइएण

तहि अवसरि मयहें धरिउ पीलु ।  
बहुजलत्रिलंति वोलिज्जमाणु ।  
धप्पाणउं धिच्छु सुलोयणाइ । 5  
हाहारववड्डियगरुयरोलि ।  
हेमंगयपमुह कुमार दुक्क ।  
देवंगवत्थसुइणिवसणाइ ।  
करि कड्डिउ सुरसरितीरिणीइ ।  
उद्धरिउ अहिंसइ णं तिलोउ ।  
हरिसँ णच्चिउ किंकरसमूहु । 10  
रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण ।

घत्ता—वेउव्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सुयसेविए ॥

हरिऊढइ थविवि सुपीढइ णहविय सुलोयण देविए ॥ ८ ॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं  
दिण्णी वियसिय मंदारमाल  
पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ  
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि  
विंझउरिकडइ विंझइरि अत्थि  
महएवि पियंगुसिरी सुरूय  
परियाणवि ताएं तुह पहाउ

दिण्णइं अण्णण्णइं भूसणाइं ।  
सहं णरवरेण विंभइय बाल ।  
किं तारियं सरि सो कवणु तरिउ ।  
ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि ।  
पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि । 5  
हउं विंझसिरी णामेण धूय ।  
सिक्खहुं णीसेसु कलाकलाउ ।

8. १ MB हारं. २ M पर्यंत° ३ MB read this line as 5. ४ MB read this line as 3. ५ MB °णियसणाइ. ६ MB तीरिणीइ. ७ GK णिवसदें but gloss निमेवार्धः. ८ MB सुयसेविए.

9. १ B अण्णइं. २ MB सहं. ३ MB तारिउ. ४ MB विंझइरि°.

8. 3 a दहि हदे. 9 a तूहु रोधस्तटम्. 10 b पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा. 11 सुयसेविए श्रीसेविते.

9. 3 b तरिउ तारकः.



हउं तुज्जु समप्पिय हे वयंसि  
णंदणवणि विउलि वसंततिलइ  
असिआउसाइं वंजणविसिट्ठ

संभैरसि ण कीलहुं जं गयासि ।  
हउं दट्ठी सप्पे वेल्लिणिलइ ।  
पइं परम मंत महु पंच सिट्ठ । 10

घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि एही लद्ध विहूई ॥

सुरणीडइ गंगाकूडइ गंगादेवय हूई ॥ ९ ॥

## 10

कीलंती कुच्छियविसहरेण  
जा पहय सरलदलकोमलेण  
जा णासंती अवरहिं णरेहिं  
सा हूई णिसुणहि हलि पियालि  
ओलक्खिवि जउ वइराणिबंधु  
मयरीइ हवेप्पिणु कूरिमाइ  
मइं जाणिउं आसणकंपणेण  
सा किं हम्मइ खलकालियाइ  
इय चिंतिवि हउं अवयरिय जाम  
मइं उत्तारिउ सिंधुरु बलेण

सह सरसें णाहें णिभरेण ।  
तुह कंते कररत्तुप्पलेण ।  
मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।  
जलदेवय णामें एत्थु कालि ।  
पवणंदोलणघोलंतचिंधु । 6  
कुंजरु कड्डिउ कुद्धाइ ताइ ।  
जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।  
मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।  
वइरिणि गय णासिवि कहिं वि ताम ।  
तुह इयउ सुहु सुक्कियफलेण । 10

घत्ता—मलु तुट्टइ बुद्धि पयट्टइ दिस वसुधारहिं दुब्भइ ॥

रिउ णासइ णिहि घरि पइसइ धम्मं काइं ण लब्भइ ॥ १० ॥

## 11

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु  
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिंदु

गय गंगादेवय णियणिवासु ।  
गउ गयउरु पत्तउ जयणरिंदु ।

५ MB संभरिसि.

10. १ MB णिसुणहि हूई. २ MB कोवेण.

10 a वंजण विसिट्ठ व्यञ्जनानि अक्षराणि विशिष्टानि येषु; b परममंत पञ्च परमेष्ठिनः.

10. ३ b मुसुमूरिय मारिता. 4 a पियालि प्रियसखि. ६ b कालियाइ पापेन कालुष्येण.

बहुकालपरिद्विउ सुहिण जाव  
 बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ  
 अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम  
 हा देवि पहावइ कर्हि भणंतु  
 हा णाह णाह विलवंतियाहिं  
 सिंचिउ चंदणमीसियजलेण  
 पारावयमिहुणालोयणेण  
 हा रइवरं हा रइवर रसंति  
 पारावइ हउं रविसेण आसि  
 तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति

सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव ।  
 एक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ ।  
 णहि खयरमिहुणु तें दिट्ठु ताम । 5  
 मुच्छिउ पहु जम्मंतरं सरंतु ।  
 कुलउत्तियपणियाइयतियाहिं ।  
 आसासिउ चलचमराणिलेण ।  
 मुच्छिय पिय पणयासायणेण ।  
 उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति । 10  
 चिरभवकुलउत्ती तुज्जु दासि ।  
 लग्गी पियगीयहि इय भणंति ।

घत्ता--कर्हि णिववरु कर्हि सो रइवरु कवडें वल्लहु किज्जइ ॥

जयपत्तिहि भणिउं सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

सोमप्पहपुत्तें णायरेण  
 जाणंतेण वि सुहभायणेण  
 पुच्छंतहु कंतहु सुइरु विच्छु  
 इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि  
 वेयड्ढमहीहरणियडदेसि  
 सोहापुरवरि वयंपालु राउ  
 तहु वंदियपयपंकरुहरेणु  
 अडइसिरिघरिणिआलिंगियंगु  
 हिंडंतु कर्हि मि लक्खणपसत्थु

जणमणसंसयहरणायरेण ।  
 पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण ।  
 वज्जरइ सुलोयण णियचरिच्छु ।  
 पुक्खलवइविसइ विलांसगेहि ।  
 तर्हि धण्णयमालवणंतवासि । 5  
 देवसिरिदेविसंजणियराउ ।  
 सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु ।  
 रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु ।  
 णवरेक्कु बालु संपत्तु तेत्थु ।

11. १ MB omit this line. २ MBK जम्मंतरु. ३ MT पणियंगण°; B पणयंगण°. ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण. ६ MB पियगीवहि.

12. १ MK °भायरेण. २ MB विसालगेहि. ३ MB णयपालु. ४ MB अडयसिरि.

11. 7b पणियाइयतियाहिं अवरुद्धादिपण्यस्त्रीभिः. 9 b पणयासायणेण स्नेहानुभवेन. 12 b पियगीयहि प्रियस्य ग्रीवायाम्. 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन.

12. 1. a णायरेण चतुरेण. 2 b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा. 8 a अडइ-सिरि° अटवीश्रीः.

सामंतै पुच्छिउ भणु कुमार  
किं किर वियरहि महि सेसवेण

तुहुं कासु पुत्त सुसरीरमार । 10  
तं वयणु सुणेप्पिणु भणितं तेण ।

घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिस्सु हक्कारिउ ॥  
पर मायप णिद्धुरवायप मंदिराउ णीसारिउ ॥ १२ ॥

## 13

महु वप्प सिस्सुत्तणि मुइय माय  
भूयत्थे ताएण वि ण दिट्ठु  
ता तेण सत्तिसेणे अगाउ  
पंचहिं वि कहिउ णिहलियकम्मु  
राए वज्जिउ महु मज्जु मंसु  
सामंतै पुणु अणगारवेल  
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु  
सा सिस्सु मयच्छि गुरुहार जाय  
परिमुक्कु सिविरु सरविउलकूलि  
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि  
कणयसिरि वणिंदु सुकेउ कंतु  
उट्टेउट्टेउ दुम्मुहु सो जि भणिउ

विणु मायइ डिंभहु कवण छाया ।  
हउं तुम्हारउ पुरवरु पइट्ठु ।  
पडिवणु पुत्तु सो सच्चदेउ ।  
अमियमइअणंतमईहि धम्मु ।  
राणियइ तेम तं किउ ससंसु । 5  
पालिय जिणरायहु तणिय वेल ।  
तवु अणुपवडुकल्लाणणामु ।  
संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय ।  
सह पइणा वसइ वणंतरालि ।  
जणणहरि मुणालवइ त्ति णयरि । 10  
भवदेउ पुत्तु णं कलिकयंतु ।  
पुरवरि अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ ।

घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि ॥  
सुहकारिणि सुयमणहारिणि रइवेया रइवाहिणि ॥ १३ ॥

13. १ MB सरविमलकूलि. २ M उट्टेउट्टेउ.

11, a सेसवे ण बाल्ये.

13. 1 b छाया शोभा. 6 a अणगारवेल अनगारवेलायां भोजनवेलाकरत्वम्. 7 b अणुपवडु-  
कल्लाण शुक्लपक्षे प्रतिपत्पञ्चम्यष्टमीचतुर्दशीपौर्णमासीषु भूहारपूर्णभाजनानि सम्यग्दृष्टिभ्यो विधिना देयानि; पूर्णेषु पञ्चसु  
वर्षेषु पञ्चकल्याणीप्रतिमां प्रतिष्ठाप्य संघभोजनं कर्तव्यमिति; b वेल आज्ञा. 10 a °सोक्खसयरि सौख्यशत-  
दायके.

## 14

विमलसिरिभाउ वणि विहयसोउ  
 जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु  
 ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि  
 जइ हउं णावेसमि तावरासु  
 णिह्विणु ण गिण्हमि अज्जु माम  
 चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण  
 पच्चारिय सँक्सि णिवंधु मुक्कु  
 णित्तिसु तिक्खणित्तिसवंतु  
 मंडवि णिरुद्धु थेरीथडेण  
 गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुईउ

अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ ।  
 सूहउ सँ सोमु सोमु व सुकंतु ।  
 बारहवरिसइं मज्जाय करिवि ।  
 ता तेरी तँणुरुह देज्जसु वरासु ।  
 गउ व्वाणिज्जहि सो जाम ताम । 5  
 कण्णाहि थणयल समएण पुण्ण ।  
 सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि दुक्कु ।  
 मरु दारविं मारविं वरु भणंति ।  
 बहुवरु वि पणहु पँरोहडेण ।  
 अवलोयवि दंपइ पर्यंपईउ । 10

घत्ता—कुठि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ ॥

सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ ॥ १४ ॥

## 15

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं  
 तें रिउणा कह व ण मारियाइं  
 चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइं  
 पासेयधोयतणुमंडणाइं  
 सूरग्गामि पत्तइं बे'वि तेत्थु  
 दुँज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम

दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।  
 अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।  
 दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइं ।  
 अवलोइयमयउलभंडणाइं ।  
 आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु । 5  
 चलपावइयहं कुसुमसरु जेम ।

14. १ MB विहियसेउ. २ MB सुसोम्मु. ३ M सायरासु. ४ M णियतणुरुह. ५ MB परासु. ६ MB वाणिज्जे. ७ B सखिणिब्बंधमुक्कु. ८ MB मारवि दारवि. ९ MB मंडव. १० MB परोवडेण. ११ MBK पयगईउ.

15. १ MB दो वि. २ B omits this line.

14. 4 a तावरासु ता + अवरासु अपरस्य. 6 a चक्कवइसंख द्वादश; b समएण कालेन. 8 a णित्तिसु निर्दयः; णित्तिसवंतु खड्गयुक्तः. 9 a थेरीथडेण वृद्धासमूहेन; b परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुब्जे छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण. 11 कुठि पृष्ठे; हेवाइउ कुपितः.

15. 2 b °सीरियाइं विदारितानि. 3 a चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

दिद्वैउ दोहि वि तहिं सत्तिसेणु  
 कहिं णासहं आयउ अज्ज मरणु  
 णिसुणिवि वइयरु करमंडलगु  
 गउ णांसिवि सहसा मलियमाणु

आसंघिउ कैलभहिं णं करेणु ।  
 लइ तुज्जु पँइद्वइं वे वि सरणु ।  
 दक्खालिउ तेण किराहु भग्गु ।  
 किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु । 10

घत्ता—ण उवेक्खिउ बहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसणु ॥

धणवरिसहुं जगि सप्पुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसणु ॥ १५ ॥

## 16

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु  
 धारिणिकंतामुहरायरत्तु  
 संठिउ समीवि विरप्पवि ठाणु  
 कंतारमग्गि चारण पइट्ट  
 वेण्णि वि ठाभणिय महाजसेण  
 मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु  
 णहयलि तूरइं तियसहिं हयाइं

धरंधीरु धणेसरु सत्थवाहु ।  
 ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु ।  
 करिहरिरववहिरियसिहरिसाणु ।  
 सरणागय पविपंजरेण दिट्ट ।  
 रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण । 6  
 जोगगउ भोयणु भावेण दिण्णु ।  
 अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं ।

घत्ता—मणि ढोयहुं पुण्णु पलोयहुं पसरियमुहससिरायउ ॥

तहु केरउ पणयजणेरउ मेरुदत्तु घरु आयउ ॥ १६ ॥

## 17

तहिं तेण तासु जोएवि दाणु  
 आंगामि जम्मि महु होउ पुत्तु  
 महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्खु

धारिणियइ सहं वद्धउ णियाणु ।  
 एहउ दुत्थियकल्लाणमित्तु ।  
 ता तहिं पत्तउ पंगुलउ एक्कु ।

३ B omits this foot. ४ MB कलहहिं. ५ MB पइट्टा वे वि. ६ MB णिसुणेवि वइरु. ७ MB भज्जिवि. ८ MB णउ पेक्खिउ.

16. १ MB वरवीरु. २ MB add after this: रयणहिं सह फुल्लइ घल्लियाइं, वयणाइं मणोज्जइ वोल्लियाइं. ३ MB पसरियमुहु.

17. १ MB आगम्मि. २ B णिरिक्खु.

9 a वइय रु व्यतिकरः.

16. 1. b ध र धी र पर्वतवद्धोरः.

17. 3 a णि रि क्खु चोरः

पुच्छिउ वणिणा णियमंतिवग्गु  
सँउणिं जंपिउ अवंसउण जाय  
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं  
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु  
पवणे भज्जइ माणवहु गच्छु

भणु एयहु किं गइपसरु भग्गु ।  
एयहु भवि तेण पणट्ट पाय । 5  
उद्धिट्टु एहु कूरग्गहेहिं ।  
सँभे जँडत्तु पित्तेण सोसु ।  
भूयत्थे मंतिं पुणु पुउत्तु ।

घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहं पयईहिं पउत्तइं ॥

चिन्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥ 10

## 18

इय सँणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं  
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु  
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिंद  
बहिरंध कुट्टि वाहिल्ल भिल्ल  
अविसिट्टु दुट्टु दँप्पिट्टु कट्टु  
छिण्णेाट्टु कण्णणासाविहीण  
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील  
जरत्तीवरधर फरुसुद्धकेस  
जूयार णिसेवियणँयरट्टिट्ट  
पंगुल पँरघररपिंडावल्लुद्ध  
णउ देव दँति णउ ते हरंति

पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।  
किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।  
ता भणइ सूरि सुँणि भो वणिंद ।  
दालिदिय दूहव मूय लल्ल ।  
दँट्टोदुट्टु रुट्टु दुहघट्टु वंठं । 5  
दुग्गंधदेह काणीण दीण ।  
पलखंड सोंड चंडाल कील ।  
छोहाणलहय कंकालवेस ।  
पावेण होंति णर कुंट मंट ।  
विवरीय होंति धम्मं विसुद्ध । 10  
देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।

घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं णियमं चित्तु णियत्तिउं ॥

परदविणइ परवहुरमणइ लोयणजुयल्लु ण घत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणे. ४ M अवसवण. ५ MB सिंभे. ६ MB मंते.

18. १ M सणउं सणउं. २ MB भो सुणि. ३ M दुप्पिट्टु. ४ M दुट्टोदुट्टु. ५ B वट्टु. ६ MB णयरट्टे. ७ MB परहर°. ८ M चित्तउं; B घित्तिउं.

5. a सउणिं शक्रुनज्ञेन. 6 a भेसइणा ज्योतिर्विदा; सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशकैः. 7 a धण्णंतरि वैद्यः. 10 चिन्भावहं चैतन्यरूपाणाम्.

18. 8 b छोहाणल° क्रोधानलः. 12 °पि सुणिउं प्रतिपादितम्.

## 19

ता तहिं ओलक्खिउ तरणितेउ  
 ए एहि पुत्त दे देहि खेउं  
 सुय तुह सुहयंगइं कोमलाइं  
 हौंताइं आसि महु सुहयराइं  
 सुय तुह मुहलालाचिंदुयाइं  
 सिक्खाविओ सि सिंसुगइचयाइं  
 वीसरियउ सुय तुहं किं सताउ  
 इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु  
 पिउणा तिसुंडपविराइण  
 छिंदेप्पिणु दढयरु मोहवासु  
 सुरगुरुणा गंहिउ रिसिनु जेम्भ

भूयत्थे कोक्किउ सच्चदेउ ।  
 किं वीसरियउं महु तणउ णाउं ।  
 लगंतइं धूलीधूसराइं ।  
 णिल्लोत्टियपियकंताकराइं ।  
 हउं सुयरविं णियउरयलि चुयाइं । 5  
 सिद्धंणमाइं अक्खरवयाइं ।  
 किं बहुपं महु घरु जाहुं आउ ।  
 पडियागउ णउ णियजणणेहु ।  
 तवचरणु लइउ णिव्वेइण ।  
 तहु गुरुहि पासु णहचारणासु । 10  
 सँउणी धणंतरीणा वि तेम्भ ।

घत्ता—तं बहुवरु णवपंकयकरु सेट्ठिहि तेण समप्पिउ ॥

महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥ १९ ॥

## 20

गउ वणिवइ सोहाउरु तुरंतु  
 सो तेण णिरोविउं तासु जाम  
 माउहरि थवेप्पिणु णिययघरिणि  
 चंदिवि मुणालवइ जिणहराइं  
 गुरुहार णारि पसढलसरीर

पणवेप्पिणु पहुहि सकंतु कंतु ।  
 एत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।  
 णं विंश्लयाहरि पवरकरिणि ।  
 अवलोयवि ससुरय सिरिहराइं ।  
 सासुरयहु णउ सकइ सहार । 6

19. १ MB सुयरभि. २ MB सिद्धतमाइं. ३ MB किं तुह सुय. ४ MB सहिउ. ५ MB सउणे.

20. १ MB वणिवइ. २ MB णिरुविउ. ३ MB °पसढल°.

19. 2 a खेउ आलिङ्गनम्. 5 b सुयर विं सरामि. 6 a °वयाइं पदानि. 9 a ति मुं डेत्तादि—  
 प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारप्रविराजितेन.

20. 5 a पसढल° प्रशिथिलम्; b सहार भारसहिता.

सासुरयहु णिग्गउ भडवरिट्ठु  
घरि दिट्ठु राउ इच्छियसिवेण  
णिउ णिययणिवासहु दिण्ण धामु  
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु  
मँउ मेरुयत्तु पाँयडियसिरिहि  
पयपालणरिँदणिहित्तचित्तु

आवेप्पिणु सोहाँपुरि पइट्ठु ।  
वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।  
गोउल्लु माहिसु फलछेत्तु गाँमु ।  
तवु करिवि मंति गय कं पि सग्गु ।  
तहिँ देसि पुंडरिँकिणिपुरिहि । 10  
वणि हूयउ णाम कुबेरमित्तु ।

घत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥

व्रउं पालिवि दुक्किउ खालिवि हूइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

21

पुत्तँत्थिणि भवभाविणियाण  
गब्भेसरि सयलकलापवीण  
भवदेवें पावें पसुवहेण  
घरि अट्ठझाणें मरिवि तेत्थु  
पारावयजुयल्लु मणोहिरामु  
तं घेप्पइ खुज्जयवावणेहिँ  
णच्चइ हक्कारिउ सहु देइ  
पुच्छिउ पहुणा कहिँ पाव जंति  
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु  
तहिँ पक्खिणि हउं रइसेण णाम  
अच्छहुं कीलंतैइं बे वि जाम

सा एकूतीसघरिणिहिँ पहाण ।  
धयरट्ठगमण सहेण वीण ।  
तं वहुवरु दड्डुउ हुयवहेण ।  
जायउ पुरँसेट्ठिणिवासि एत्थु । 5  
गुंजारुणच्छुं वण्णेण सामु ।  
तं संभासिज्जइ परियणेहिँ ।  
पट्टवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।  
धम्मेण जीव किर कहिँ वसंति ।  
उद्धाइ ताइ सग्गापवग्गु ।  
तुहुं रइवरु पक्खि सँणेहकाम । 10  
सो सत्तिसेणु तहिँ मरिवि ताम ।

घत्ता—तँ वणिणा वणिसिरँमणिणा धणवइयहि सुउ जायउ ॥

सोहग्गें जणमणलग्गें रूवें णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि. ५ MB दिण्णु धाउ. ६ MB गाउ. ७ MB मुउ. ८ MB पयडिय°. ९ MB वउ.

21. १ MB पुत्तँत्थि वि. २ MB पुरि सेट्ठि°. ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिँ. ४ MB सिणेह°. ५ MB कीलंत बे वि. ६ M तं. ७ MB °सिरिमणिणा.



## 22

णं णियकुलहरकमलसिरिकंतु  
 सुमरेप्पिणु धम्माणंदजोउ  
 वत्थंगु तियसतरु भूसणंगु  
 पवहइ पुंहुच्छुरसप्पवाहु  
 णिच्चं चिय पिच्चइ सालिच्छेत्तु  
 सयमेव रणइ वीणा सवेणु  
 इय दिव्वभोयभुंजणखणालु  
 पियसेणु तेण सहयरु पउत्तु  
 इच्छइ भणु तेरउ परममित्तु  
 एक्कहिं दिणि गय उज्जाणमाज्झि  
 वैंउ लइयउ णामें एक्कपत्ति

णामें सो भणिउ कुवेरकंतु ।  
 ते मंतिदेव तहु देंति<sup>१</sup> भोउ ।  
 मइरंगु तुरिय उब्भोयणंगु ।  
 मज्जणइं पवरिसइ वारिवाहु ।  
 अवरु वि सुइसुसिर सुहेल्लिमेत्तु । 5  
 घरि चित्तिउ दुब्भइ कामधेणु ।  
 णवजोव्वणु पिउणा दिट्ठु वालु ।  
 किं बहुएं किं एक्कु जि कलत्तु ।  
 आहासइ सो णवणलिणणेत्तु ।  
 दिट्ठुउ मुंणि दोहिं वि लवलिगुज्झि । 10  
 को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि छुहपंकियघरि वणि वइंसमणसमाणउ ॥

घणवइयहि बंधवु पयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥ २२ ॥

## 23

तहु केरी णं अमिपण सित्त  
 तहि परजंमंतरि वद्धपणय  
 णं सुरयसोक्खमाणिक्कखाणि  
 णीलालिवलयसंकासकेस  
 णामें पियदत्त पसण्णदिट्ठि  
 अण्णहिं दिणि कित्तिमकुसुममाल

गेहिणि णामेण कुवेरमित्त ।  
 हूई वणलच्छि मरिवि तणय ।  
 कलहंसगमण कलयंठिवाणि ।  
 णं कामभल्लि पच्छणवेस ।  
 गुणणय णं वम्महचावलट्ठि । 5  
 कय ताइ णाइं मयणसत्थसाल ।

22. १ MB देंतु. २ MB तुरियउ भोयणंगु. ३ MB दोहिं वि मुणि. ४ MB वउ. ५ MBK वइसवण°.

23. १ MB जम्मंतरवद्ध°. २ MB कलहंसिगमण. ३ MB गुणणयणइं. ४ MB मयणत्थमाल; K मयणयत्थसाल and gloss अन्न; G in gloss मदनशन्नशाला.

22. 3 b उब्भोय णंगु उत्कृष्टभोजनाङ्गः. 6 a सवेणु वंशवाद्येन सहिता. 10 b लवलिगुज्झि चन्दनलतागृहमध्ये. 12 वइसमण° कुवेरः.

23. 5 b गुणणय गुणनता.

गय लेप्पिणु ससुरयघरु वयंसि  
तं पेच्छिवि विंभिउ इभतणैउ  
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ

पियकारिणि गइजियरायहंसि ।  
एउं<sup>६</sup> विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।  
णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुक्किउ ॥

10

मणु लैतें तेणं जलंतें ज्ञत्ति कुमारु झंलुक्किउ ॥ २३ ॥

## 24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु  
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज  
भायणइं दुतीस सँमीरियाइं  
तहिं एक्कु पंचमाणिक्कवंतु  
वणिउत्तियाउ संप्राँइयाउ  
सव्वहं वणिणाहँ भूसणाइं  
गेण्हह पभणिवि पँरिभावियाइं  
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ  
सरयणु पृयँदत्तहि करि विलग्गु  
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं  
आलद्धउ णँउ तहिं चरुयवत्तु

वणिणा पारद्धु विवाहु तासु ।  
णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।  
णिरु चोक्खभक्खपँडिऊरियाइं ।  
जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।  
वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ । 5  
दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।  
चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।  
एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।  
को लंघइ किर भवियव्वमग्गु ।  
गुणवइजसवइणामालियाहिं । 10  
हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।

घत्ता—मृगँरोलइ गिरिकुहरालइ वँर पइसिवि तँवुं किज्जइ ॥

णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ १४ ॥

५ MB °तणुउ. ६ MB एयहुं. ७MB पियदत्तइ. ८ MB संधुक्कियउ. ९ MB जेण. १०MBT झुलुक्कियउ.

24. १ B समाख्याइं. २ MB परिपूरियाइं. ३ MB संपाइयाउ. ४ B गेहं पभणिवि. ५ K पमा-  
वियाइं. ६ MB एक्केक्कउ एक्केक्कहिं. ७ MB पियदत्तहि. ८ MB भवियव्वु मग्गु. ९ MB ण वि. १० MB  
मिग°. ११ MB वणि. १२ MB तउ.

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया. 11 झ लु क्किउ संतापितः.

24. ३ a समीरियाइं प्रसारितानि. 10 a सुहालियाहिं सुखवतीभिः. 11 a चरुयवत्तु  
चरुकात्रम्.

## 25

रायहरणियडि जिणवरणिवासि  
 तवुं लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं  
 वणितणयहु सुयणुच्छाहराहु  
 वयंवालु मरेप्पिणु लोयवालु  
 देवसिरिदेवि मल्हणगईहि  
 गयजम्मघरिणि सा दिण्ण तासु  
 संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु  
 देवीउ कणयमालाइयाउ  
 जे परियण ते पव्वइय सव्व  
 एक्कु जि बुडुउ स कुवेरमित्तु

अमियमइअणंतमईहि पासि ।  
 एत्तहि वि पडहमंगलद्वणीहिं ।  
 प्रियदत्तइ सहुं विरइउ विवाहु ।  
 पयपालहु सुउं हूयउ गुणालु ।  
 वसुमइ सुय हूई धणवईहि । 5  
 पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।  
 णरणाहें लइयउ मुणिचरिच्चु ।  
 पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।  
 कोमलमइ थिय धरि घरि सगव्व ।  
 सो भावइ तरुणहं णाइं सत्तु । 10

घत्ता—चवलमइं भासिउ कुर्मइं हसहुं ण खेळहुं लब्भइ ॥

अपसत्थउ भेलावत्थउ माणुसु एम जि खुब्भइ ॥ २५ ॥

## 26

जो णिव तुह ताएं णिहिउ मंति  
 किं विहाडियकरण णियंति कञ्जु  
 मावउ अम्हहं भिउडंतु दिट्ठि  
 राउ वि कुमारु मंति वि कुमार  
 सुहिदिट्ठपरंपरु वहु सुयडु  
 अविपिक्कबुद्धि कीलणसहाउ

तहु दंसणेण अम्हहुं ण संति ।  
 हो थेरहं कम्मु ण किं पि दिज्जु ।  
 अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।  
 दीणं वि हौंति जोव्वणि वियार ।  
 वारिउ पडुणा घरु एंतु बुडु । 5  
 सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।

25. १ MB रायहरे णियड° . २ MB तउ लइउ तेहिं . ३ MB प्रियदत्तइ . ४ MB णयवालु .  
 ५ MB सिसु . ६ MB णियघरि . ७ MB चवलमइहिं . ८ MB कुमइहिं . ९ MB खेळहुं . १० MBT  
 हेलावत्थउ .

26. १ MB दंसणि अम्हइ णाहिं संति . २ MB भिउडत्त . ३ MBK दीणहु .

25. 4 a वय वालु प्रजापालः . 5 a म ल्ह ण ग ई हि मदगमनायाः . 12 भे ला वत्थउ अतिबुद्धावत्थः .

26. 4 b वियार सविकाराः . 6 a अविपिक्क° अप्रवीणा .

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइडु  
 पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण  
 बुहसिडुविसिडुगईचुएण  
 वीवीयलि अच्छइ मणि णिहिचु  
 ता तेहिं मिलिवि अंसंसएहिं  
 चिक्खल्लतल्लोलणविलोल  
 माणिकु ण दिट्टउ तेहिं केम  
 अण्णाणकिलेसं णत्थि सिद्धि

अरुणच्छवि वाविजलोहु दिट्टु ।  
 इह लोहिउ जलु किंह कारणेण ।  
 पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।  
 तहु छायइ दीसइ सलिलु रत्तु । 10  
 पाणिउं बहि घल्लिउं घडसएहिं ।  
 थिय सयल णाइं कर्यकील कोल ।  
 बहुमोहंधहिं जिणवयणु जेम ।  
 गय घरहु परिकिखय मंतिबुद्धि ।

घत्ता—गरुंगावइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥

16

वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणे सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

## 27

मंडलियमउडरुइरइयराइ  
 जो मह सिरु पहणइ णियपएण  
 ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण  
 तुह जेण दिण्णु सिरि चरणघाउ  
 तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु  
 महु सिरचूडामणि मयणसरणु  
 आविवेउ महंतउ जासु गेहि  
 संसिद्धसमगतिवग्गलिंणु  
 इय चिंतिवि णियकुलकमलमिचु  
 आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु  
 तं णिसुणिवि मामे बुत्तु एम

अत्थाणि णिसण्णे सुप्पहाइ ।  
 तहु किं वुत्तउं णरवइणएण ।  
 तेहिं वि पउत्तु सफेरुसरवेण ।  
 खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।  
 संठिउ हेट्टामुह रायहंसु । 5  
 खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।  
 दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहिं ।  
 भल्लारउ भुवणि वियडुसंगु ।  
 कोक्काविउ तेण कुबेरमिचु ।  
 अवरु वि जं सीसि पयग्गु धिचु । 10  
 पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं. ५ MB वावीजलि. ७ B असेसएहिं. ७ MB चिक्खिल्ल°. ८ MB कयलील. ९ MB गुरु°. १० MB गुरु°.

27. १ MB omits this line. २ MB फरुसें मणेण. ३ MB दिण्णु जेण. ४ B गेहि. ५ MB अवरु वि सीसें पयलगु धिचु.

9 a बुहे त्या दि— बुधैर्या शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहितः. 10 a वावीय लि वापीतले. 11 a अंसंस ए हिं संशयरहितैः.

27. 2 b णरवइणएण नीतिशास्त्रे. 13 वणु जलम्.

घत्ता—रसगिद्धेँ र्घत्तिउ गिद्धेँ तीररुक्खि मणि अच्छइ ॥

तहु छायइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पेच्छइ ॥ २७ ॥

## 28

गुरुणारीडिंभयचरणु पडुहि  
तुह पुणु जाणवि रोसंकियाइ  
तं पुज्जिज्जइ वरणेउरेण  
धणवइइ पइहि कुरुलोलिणीलि  
साहंतु व जिणधम्मोवएसु  
तं पेच्छिअवि भव्ठु कुबेरमिअ  
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहि  
जाया मरेवि मेहँरहासि  
विउल्लमइ णाम चारणमुणिंदु  
सिसु चिंतिवि पुच्छिउ तर्वु दुगेज्जु  
दाहिणपंचंगुलियउ करग्गि  
गउ मुणिवरु कालेँ पंच पुत्त  
जो सच्चदेउ मुउँ सो जि एउ

सिरिलग्गइ अण्ण ण सउलविहुहि ।  
सिरि घल्लिउ होही पउ पियाइ ।  
ता संथुउ सेट्ठि महीसरेण ।  
दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।  
जरदासिइ दूसिउ दइयकेसु । 5  
अवरु वि पव्वइउ समुददत्तु ।  
हूया सुसीसे सुविमुद्धमइहि ।  
लोगंतियँ सुर बंभंतवासि ।  
पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।  
कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्झु । 10  
वामइ क्णिट्ठ दाविवि णहाग्गि ।  
लहुएँ कुबेरदइएण जुत्त ।  
संभूउ पुणु वि पिउ बद्धणेहु ।

घत्ता—कह णिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥

सोहंती पहरई फुरंती कुंदपुष्पदंती सइ ॥ २८ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे जयमहारायसुलोयणाभव-

संभरणं णाम एक्कूणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

६ MB घित्तउ.

28. १ B पुज्जइ. २ MB सुसीसु विसुद्ध°. ३ MB हिमहारहासि. ४ MB लोगंतिय ते. ५ MB विमलमइ. ६ MB तउ. ७ MB सुउ. ८ MB पइय.

28. 1 b °विहुहि °चन्द्रस्य. 4 a कुरुलो लि° कुन्तलश्रेणी. 8 a मेहारहासि मेघया अहस्ते.  
15 पइइ प्रभया; सइ सती.

XXX

अमियमइअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥  
जिणवइगुणवइवरजसवइहिं वंधुवग्गु संबोहिउ ॥ ध्रुवकं ॥

I

लोयवालु सा वसुमइ राणी  
वारहविहदिक्खाइ समग्गइं  
खंतिहिं कहियउं धम्मु णिरंतैरु  
णिञ्चुच्छवमंगलणिग्घोसहु  
चरियामग्गे णिग्गयरायउ  
पृयदर्त्तावरइत्तं णवियउ  
तां तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ  
दोहिं विमुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं  
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ  
सलिलें सिंचिउ थियउ सइत्तउ  
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि  
सरइ संकोति पुण्णससिकंतं

पउरंदरियहि त्तयहिं समणी ।  
विण्णि वि सावयवइ दिडु लग्गइं ।  
अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु । 5  
ताम कुबेरकंतवणिवासहु ।  
जंघान्चारणजुयलउं आयउं ।  
छुडु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।  
पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।  
धम्मवुद्धि होउ त्ति भणंतहं । 10  
महिहि पडंतु णरोहिं णियच्छिउ ।  
अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।  
कहिं रइवेय महारी पणइणि ।  
किह जीवमि णिम्मुकु सुकंतं ।

घत्ता—सोहापुरि बहुवरु एउ चिरु एवहिं दंपइ णहयर ॥ 15

लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।

सिरिकुसुमदसणकइमुहणिसिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाचैरनिन्दैः etc here for which see note on Samdhi XXIX.

1. १ MB तियहिं. २ M सवाणी. ३ MBT °सिक्खाइ. ४ MB कहिउ. ५ MB णेरंतरु.  
६ MB पियदत्ता°. ७ MB ता तं पक्खिमिहुणु. ८ MB भणइ. ९ MB सुकंति; T सकुंति.

1. 4 a वार ह वि ह दि क्खा इ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया. 9 b पयरउ पदरजः. 12 a सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम्. 13 a भरइ स्मरति. 14 स कों ति पक्षिणी. 16 अलाहु अलाभोऽन्तरायः.

## 2

वसुमईइ णवपंकयणेत्तइ  
 चंचुइ पट्टियम्मि संणिहियइं  
 णहयरियहि सकंतु जाणाविउ  
 मा विहडेवि चरह म विरप्पह  
 वयणें तेण ताइं पुँणु रत्तइं  
 रुप्पयगिरिसमीवि सुरवरगिरि  
 ते तहिं जंघाचारण जइवर  
 अमयमईहि अणंतमईहि वि  
 पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा

विण्णि वि पुच्छियाइं प्रियदत्तइ ।  
 दोहिं मि गयभवणामइं लिहियइं ।  
 रइवेयागमु खयरहु दाविउ ।  
 विण्णि वि सुहुं भुंजह कंदप्पह ।  
 कणु चुणंति खेलंति पसंत्तइं । 5  
 करिदंसणविहंद्धरंजियहरि ।  
 जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।  
 जायवि संजईहिं बिहिं तीहिं वि ।  
 पारावयसंबंधु भडारा ।

घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥ 10

मुणि अक्खइ रक्खइ किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥ २ ॥

## 3

जिह वइसउलि पहूयइं बालइं  
 जिह जायउ विवाहु जिह णट्टइं  
 जिह खल्लु मग्गलग्गु णिब्भच्छिउ  
 पालिउ व्रंउं जिह सज्जणसत्थें  
 जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु  
 इयं जिह जिह साहिउ मुणिणाहें  
 तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु  
 सुहसंजोयहु सिढिलियसोयहु

रइवेयासुकंतणामालइं ।  
 जिह सामंतहु सरणु पइट्टइं ।  
 कण्णकडुयवयणेहिं दुगुंछिउ ।  
 जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थें ।  
 जिह बहुवरु पत्तउ पक्खित्तणु । 5  
 मयणहरिणविद्धंसणवाहें ।  
 लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।  
 साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ हूयउ विर्यसियवत्तइ ॥

गुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ व्रंउ मृगणेत्तइ ॥ ३ ॥ 10

2. १ MB पियदत्तइ. २ MB पट्टियम्मि. ३ MB पडिवत्तइं. ४ MB पमत्तइं. ५ MB °विरुद्धे रंजिय°.  
 3. १ MB वउ. २ MB इह. ३ MB विहसिय°. ४ MB वउ मिग°.

2. 5 b प स त्त इं प्रसत्तौ अन्योन्यरत्तौ.

3. 1 a व इ स उ लि वैश्यकुले. 6 b °वाहें व्याघ्रेण, °व्याधेन. 9 वि य सि य व त्त इ विकसितवदनया.

## 4

अज्जिय हूई सम्माइडिणि  
 अवर कुबेरसेण रायाणी  
 किंकरेण केण वि ण पलोइउ  
 गयउ कवोयजुयलु सारामहु  
 कणु चंचुइ कडुइ णयगीवइ  
 सरहुंदुरसेढामिसभोयणु  
 असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु  
 वइविवराउ झत्ति णीसैरियउ  
 पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ  
 चिरभववइरै दसणकरालें

घरु मेलेपिणु धणवइसेट्टिणि ।  
 दिक्ख लेवि थिय सुट्टु अदीणी ।  
 तं विहिविहियविहाणं चोइउ ।  
 कहिं मि भंमंतु पुरंतिमगामहुं ।  
 जाम चरइ किर वइसामीवइ । 5  
 णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।  
 उट्टेइउ तहिं जायउ मंजरु ।  
 तेण कंठि पारावउ लइयउ ।  
 णियपियपरिहवि णौरि वि कुप्पइ ।  
 कसमसत्ति खगु खड्डु विरालें । 10

घत्ता—मुइ वल्लहि दुहविहाणियए विहि बलवंतु पउत्तउ ॥

अप्पउ तणु मण्णिवि रिंछियए विसदंसहु मुहि घित्तउ ॥ ४ ॥

## 5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ  
 पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि  
 रययसेलि खगदाहिणसेट्ठिहि  
 दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु  
 तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु  
 तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेट्ठिहि  
 घडियउ तहिं राणउ विज्जाहरु  
 सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि

णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।  
 जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।  
 उंसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।  
 तेपं णं पच्चक्खु दिणेसरु ।  
 तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु । 5  
 गउरीविसयभोयपुररूढिहि ।  
 मरुरहु माहवियहि देविहि वरु ।  
 ताहं विहिं मि हूई णं जक्खिणि ।

4. १ K भवंतु. २ MB परंतिम°. ३ MB णीहरियउ. ४ K धरियउ. ५ K णारी कुप्पइ. ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु. ७ T रिंछियए.

5. १ MB उंसिरिहि. २ MBK सोक्ख°. ३ K चडिउ.

4. 5 a णयगीवइ नतग्रीवया; b वइ° वृत्तिः. 10 b कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे. 12 रिंछि-  
 यए पक्षिण्या.

5. 5 a रइवरु कामं!.



धूय पसिद्ध पहावइ णामें  
 गयउ कर्हिं वि णंदणवणकीलइ  
 तेण हिरण्णवम्मणामालें  
 पडि जं वित्तउ जम्मकहाणउं

रूवें सलहिज्जिइ सैं कामें ।  
 दिट्ठु कवोयमिहुणु तर्हिं लीलइ । 10  
 परभउ सुमारिवि लिहियउ बालें ।  
 पँक्खिरूपविरइयसंमाणउं ।

घत्ता—कई पिउणा पवरसयंवरण ताइ मयच्छिइ लक्खिउ ॥

पारावयजुयलउ गियणियडे संचरंतु सुणिरिक्खिउ ॥ ५ ॥

## 6

णियभवु बुज्झिवि णिवडिय महियलि  
 रइसेणाचरि मज्झें खामिय  
 कंचुइणा णरवइ विण्णवियउ  
 होउ सयंवरेण किं किज्जइ  
 दइयइ चित्तपट्टु पट्टाविउ  
 मंदरि जायवि गइरणु मंडिउ  
 सुरगिरि परियंचिवि उद्धाइय  
 लइयउ तं जाव सुह ण पावइ  
 जाम जणणु हरिसैं कंटइयउ  
 खेयरणियरु जाव छुडु जित्तउ

सिंचिय पाणिण्ण सिरि उरयलि ।  
 सा रइवरविरहें आयामिय ।  
 दुहियहि देहु दुरोएं खवियउ ।  
 आउ आउ खगवइ जाइज्जइ ।  
 सो वि ताइ गियहियवइ भाविउ । 5  
 फुल्लदामु जं सइं तंहि छडिउ ।  
 खयरहुं अग्गइ कुंयैरि पराइय ।  
 पुत्तिहि केरी गँइ को पावइ ।  
 मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ ।  
 ताव हिरण्णवम्मु तर्हिं पत्तउ । 10

घत्ता—पुणु माल पघल्लिय मंदरहो विण्णिण वि सह धावंतइं ॥

दिट्ठइं फणिकिंणरससिरविहिं तुरिउं पयाहिण देंतइं ॥ ६ ॥

## 7

रइवरचरु रइरहसैं चोइउ  
 तेण पडिच्छिय महिहि पडंती  
 दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि

घुलइ माल जर्हिं तर्हिं संप्राइउ ।  
 णहयलि खगकामिणि व णडंती ।  
 णं कामें संधिय सरधोरणि ।

४ MB णं. ५ MB पक्खिणिभवविरइयसंमाणउं; K पक्खिरूपु विरइय<sup>०</sup>. ६ MB कय.

6. १ MB मंदर. २ MB जं तर्हिं सइं छंडिउ. ३ MB कुमरि. ४ MB को गइ.

7. १ MB संपाविउ. २ MB खगकामिणि णिवडंती.

6. ३ b दुरो एं दुष्टरोगेण.

7. ३ a कुसुमावलि पुष्पमाला.

दोहिं वि धरियइं चपिपि चित्तइ  
 दोहिं मि दिण्णउं दलियफणिंदहु  
 गँउ वरु तहिं जोयवि मणहारिणि  
 पट्टउ ताइ तासु दैक्खालिउ  
 जोइवि बुज्झिय पक्खिकहाणी  
 ससयण पिउहरु पत्त पहावइ  
 कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं  
 दोहिं वि कंताकंतहुं एयहुं

घोलंतइं विवलंतइं णेत्तइं ।  
 दढलजंकुसु मयणगइंदहु । 5  
 तावंतरि संठिय पियकारिणि ।  
 तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।  
 एत्तहि सा खगतरुणि पहाणी ।  
 जो णाइंदहु वण्णहुं णावइ ।  
 रविगँइमारुयरहखगरायहिं । 10  
 पयलियपेवंबंधंपासेयहुं ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्ठिवियारहं ॥

दंसणसंभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंगारहं ॥ ७ ॥

## 8

अण्णहिं वासरि बे वि रमंतइं  
 हल्लियघंटाटंकारालउ  
 मोहँजालतरुजालहुयासहं  
 मुणि वम्महवम्मोहवियारणु  
 पुच्छिउ णियय तेहिं जम्मंतरु-  
 वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं  
 पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ  
 जो भवदेवबप्पु चिरु वणिवरु  
 पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ  
 गयणगमणु तवतावेँ सिद्धउ  
 पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु

पत्तइं गयणुच्छंगि चंडंतइं ।  
 सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।  
 तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसहं ।  
 पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।  
 रिसिणा कहियउ गयउ कर्हंतरु । 5  
 जाइं ताइं एवहं सुहँकम्महं ।  
 भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।  
 इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।  
 रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।  
 तइयउ णाणु विसेसँ लद्धउ । 10  
 मुक्कउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

३ G चिंधइं. ४ MB गउ वरु जोइवि वहु मणहारिणि. ५ MB दिक्खालिउ. ६ MB रविगय°. ७ MBK °पेम्मबंध°.

8. १ MB चरंतइं. २ MB मोहमहातरुजाल°. ३ MB तेहिं णियय. ४ K सुकम्महं.

11 b पय लिय पेवंबंध पा से य हुं प्रगलितः प्रेमबन्धेन प्रखेदः ययोः.

8. 1 b गयणु च्छंगि आकाशमध्ये. 10 b तइयउ णाणु अवधिज्ञानम्. 11 a रइसेणहु रति-  
 पेणस्य भट्टारकस्य.

घत्ता—गुरुवयणकुँठारें तिक्खण भवतरुवरु मइं छिण्णउ ॥

विंधंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसाबलि दिण्णउ ॥ ८ ॥

9

सुहमइ वड्डिय रमणिहि रमणहु  
मेहकूड जोइवि णिव्विण्णउ  
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्ठिउ  
थिउ णिब्भउ सत्तंगपयारइ  
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु  
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं  
सँप्पसरोवरच्चिंधु णिण्णिणु  
आयइं णियपुरवरु हक्कारिउ ।  
पईं हूवउ रिसिकुवलयचंदहु  
सहइ हिरणवम्मु चारणमुणि  
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय  
सव्वइं भव्वइं कम्मुव्विण्णइं

तं आयणिवि गयइं सभवणहु ।  
मारुयरहु पव्वज्ज पवण्णउ ।  
दिणयरगइ वि जइत्तणि संठिउ ।  
रज्जि हिरणवम्मु तहु केरइ ।  
मणहरसुयहु दिण्ण वित्तरहहु । 5  
धण्णयमालवणंतरि भमियइं ।  
विण्णि वि पुव्वज्जम्मु जाँणेप्पिणु ।  
रज्जि सुवण्णवम्मु वइसारिउ ।  
चरणमूलि सिरिपालमुणिदहु ।  
उण्णइं पावइ गुणगरुयउ गुणि । 10  
करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।  
ताइं पुंडरिंकिणि अवइण्णइं ।

घत्ता—रिसि थिउ पुरवाहिरि पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥

जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पृथदत्तहि घरु आयउ ॥ ९ ॥

10

वणिणिइ विणयपणामें रुद्धउ  
पुणु आसणु अणुंरुवु धिवेप्पिणु  
किं ण विमाणिउं पइं पइजोव्वणु  
हियपरिमियसुमहुरभासिणियइ

तं भुंजाविउ भोज्जु सुणिद्धउ ।  
ताइ पहावइ भणिय णवेप्पिणु ।  
किं तारुणइ संसेविउ वणु ।  
तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBK °कुँठारें.

9. १ MB दिणु. २ MB सच्छु सरो°, T सच्छु and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुष्येन रक्षितस्तस्येदं नाम. ३ MB सुयरोप्पिणु. ४ B सइं. ५ MB कम्मुत्तिण्णइं. ६ MB पुरवाहिरि. ७ MB पियदत्तहि.

10. १ MB भुंजाविवि. २ MB अणुरत्तु.

9. 7 K स प्य स रो व र च्चि णु यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्तिषेणेन रक्षितौ तस्य नामेदम्.

10. 3 a प इ जो व्व णु पतियौवनम्.

एत्थु जि सज्जणणयणाणंदिरि  
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं  
रइसेणाचररइवरणामइं  
प्राणिदयाहलेण मणुयत्तणु  
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ  
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि संजमधरि

अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि ।  
किं ण वियाणहि विहियविणोयइं ।  
कंठसइउक्कोइयकामइं ।  
पत्तउ दोहिं मि ते णियमिउं मणु ।  
कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।  
पियकह जिणपयपंकयमहुयरि । 10

घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहि केरउ ॥  
मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥ १० ॥

## II

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ  
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु  
णंदणवणि चलंतहिंतालइ  
वेल्लीहरि पसुत्तु विज्जाहरु  
णाहु वि तहिं जि भंमंतु पराइउ  
कोणं वंझं हंसं ईरिउ  
हूयउ गाढु विहिं विमिच्चत्तणु  
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु  
उत्तउं कंतइ एत्थु जि अच्छहुं  
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ

णियतवकारणु णिहिल्लु समासिउ ।  
भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।  
तालितालतालूरपियारइ ।  
पायंगुट्टइ लग्गउ विसहरु ।  
धाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ । 11  
गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।  
गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।  
अवलोयंतिइ बहुणायरजणु ।  
कोडुं लोउ रमंतु णियच्छहुं ।  
महु पिययमु जोइउ गंधारिइ । 10

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहएण तहि केरउ णिहलियउं ॥  
वरकुंजरचरणें चप्पियउं दिसिहिं जल्लु वुच्छलियउं ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°.

11. १ K भवंतु. २ M चप्पिय. ३ MB जलु व उच्छलियउं.

11 °वइ णि हि व्रतिन्याः.

11. ३ b °तालूर° कपित्थम्. 12 जलु वुच्छ लियउं जलमिव उच्छलितम्.

## 12

मणि पवियंभिइ जलयरच्चिंधइ  
 कचणु एहु पिययम किं किं णरु  
 तेण पउत्तउ मिच्चु महारउ  
 एण मंतु गरलंतु विहाविउ  
 वे वि समुंभियचीणवियाणइं  
 किं रक्खमि तिकखाइं णहग्गइं  
 गय पिययम मिच्छुत्तरु संधिवि  
 हा हा उरयएण हउं डंक्रिय  
 कंतं ओसहसयइं णिउत्तइं  
 महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ  
 गउ तेत्तहि तुरिपं पंजलियरु

आउच्छिउ णियवइ पेम्मंधइ ।  
 अक्खु जक्ख किं किंणरु विसहरु ।  
 वणिउ कुवेरकंतु गुणसारउ ।  
 फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।  
 कंकेलीतरुतलि आसीणइं । 5  
 फुल्लइं चीणमि पिय तुह जोग्गइ ।  
 कटएण करपल्लउ विंधिवि ।  
 णिवडिय मिच्छाविसवेयंक्रिय ।  
 पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।  
 कंतु विओय सोय संप्रौविउ । 10  
 जहिं अच्छइ उवइट्टउ महु वरु ।

यत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विसु सव्वंगइं तावइ ॥

फणिदट्ठी घरिणि महुं तणिय तुह मंतं धुवु जीवइ ॥ १२ ॥

## 13

मित्तं मित्तहु णियमणु ढोइउ  
 पइणा गरललिंगु णो लक्खिउं  
 मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि  
 एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं  
 भणइ ण खँज्जमि सविसभुयंगं

जायवि मुद्धहि वयंणु पलोइउ ।  
 खयरं मउलियवयणं अक्खिउं ।  
 हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि ।  
 सुंदरि अत्ति वइट्ठी तावहिं ।  
 हउं खद्धी पइं धुत्तभुयंगं । 5

12. १ MB पेम्मंधइ. २ MB किं पिययम. ३ MB अक्खु सक्खु किं. ४ MB समुंभियचीणवियाणइ, G समुंभियचीणवियाणइ, but gloss समुद्धतचीनाम्बरध्वजौ °वितानौ वा. ५ MB संपाविउ. ६ MB धुउ.

13. १ MB देहु. २ MB गरल°. ३ MB मउलियवयणं. ४ MB सव्वोसहि. ५ MB खद्धरु.

12. 1 a ज ल य र च्चिंधइ मकरध्वजे. 2 b अक्खु कथय. 5 a समुंभियचीणवियाणइं समुद्धतचीनाम्बरवितानौ.

जइ मम्मणमंते तणु अंचहि  
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें  
पीयलु हरिवाहणिफलु जेहउ  
वम्महसरहं कैयाइ ण भिज्जमि  
परकुलउत्ती जणणिसमाणी

जई रइरसजलधारइ सिंचहि ।  
ता पडिजंपिउ पसमियमोहें ।  
अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं ।  
संदु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि ।  
तुहुं पुणु जाँय विहिणि मित्ताणी । 10

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥

गंधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरंतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

## 14

तहु पुणु संहं महिलइ वियरंतहु  
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि  
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ  
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा  
परयारिउ लोएं णिदिज्जइ  
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु  
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ  
जइ वि लोउ णियकज्जु पँवुक्खइ  
मत्थयमुंडणु विल्लणिवंधणु  
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ

उप्पलखेडहु बहि णहि जंतहु ।  
वंदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि ।  
सार्वयमग्गु विसेसें देसिउ ।  
तहिं परयारु णिवारिउ जइणा ।  
असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ । 5  
वडुइ कामडाहु पसरइ मणु ।  
परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ ।  
संकालुहि तं ताँसु जि दुक्खइ ।  
कुखरारोहणु णासाखंडणु ।  
मुउ पुणु दूँहउ दुट्ठु णउंसउ । 10

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियए गंधारिहि मँणु तप्पइ ॥

हा हा मइं दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइं सिंचहि. ७ MB ण काइं वि. ८ MB माय बहिणि

14. १ MB महिलहि सहु. २ MB सावयधम्मु. ३ MB दंसिउ. ४ MB पवुक्खइ, T बुक्खइ  
ब्रवीति. ५ MB तासु खुडुक्खइ. ६ M दूसउ. ७ MB तणु.

13. 8 a हरि वारु णि° इन्द्रवारुणीफलम्. 10 b मित्ताणी मित्रभार्या.

14. 1 b ब हि बाह्ये. 8 a पवुक्खइ पर्यालोचयति. 10 b णउंसउ नपुंसकः.

## 15

मण्णिवि मुणिवरु वे वि पयट्टइं  
 कंतइ गुरुवयणइं चिंतंतिइ  
 कंतहु सइं अहिमाणंविणासउ  
 हउं पाविट्ठं तुहारी दोही  
 मुइ मुइ जामि देव पाँवज्जहि  
 मणु जं पइं पररइमलमइल्लिउ  
 एवहिं तुहुं महुं सुद्धं महासइ  
 जीवदयाघयधारासित्तं

णहयलणिहियपायकंदोदुइं ।  
 णारयविवरवडण संकंतिइ ।  
 कहिउ कुवेरकंतअहिलासउ ।  
 मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।  
 उत्तरु दइएं दिण्णु सभज्जइ । 5  
 तं आलोयणजलपक्खालिउ ।  
 आउ जाहुं ता बहु पडिभासइ ।  
 सुहपरिणामसमीरपलित्तं ।

घत्ता—घरमोहवहलधूमुज्झिण जइ तवजलणं डज्झमि ॥

तां तत्तसुवण्णसलाय जिह हउं भत्तार विसुज्झमि ॥ १५ ॥ 10

## 16

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की  
 वेण्णि वि ताइं तेत्थु पावइयइं  
 थिउ मुणि वाहिरदेसि रवण्णइ  
 जिह जिह सा महु कहिय कहाणी  
 तिह तिह पिययमेण आर्येणिय  
 भत्तिइ तहि पणामु विरयंतं  
 सव्वहिं जायवि हयसंसारउ  
 सकुलक्कमु गुणवालहु दिण्णउ

ता णाहेण णियंविणि मुक्की ।  
 एउं णयरु विहरंतइं अइयइं ।  
 घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।  
 गुज्झरहच्छे चारु विराणी ।  
 णिग्गच्छिवि सा तेण पमंणिय । 5  
 थुय गंधारि धीरधी कंतं ।  
 वंदिउ सो रइसेणु भडारउ ।  
 लोयवाल्लु पव्वज्ज पवण्णउ ।

15. १ MB णहयालि णिहिय<sup>०</sup>. २ णरयविवराणिवडण. ३ MB विणासिउ. ४ MB पाविट्ठ धिट्ठु वुह दोही. ५ MB पाविज्जहि. ६ MB सुद्ध. ७ M धारोसित्तं. ८ M तो; B भो.

16. १ MB ताइं तेत्थु वि. २ MB इय जिह जिह महु. ३ M गुज्झरहत्थे, B गुज्झरहत्थे.  
 ४ MBK चिराणी. ५ M आयाणिय. ६ M पमाणिय. ७ MB पमाणु.

15. 5 a मुइ मुइ मुच्च मुच्च.

16. 4 b वि रा णी विराणिणी.

पुत्तचउकें सहं भत्तारें  
लइय दिक्ख वॉलियवयभारें  
हउं कुबेरदइएं तेणच्छमि

णिप्पिहेण तोडियमयमारें ।  
मोहिय लहुययरेण कुमारें । 10  
पुत्तहि मुह पँहपहसिउं पेच्छमि ।

घत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥

पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो ॥ १६ ॥

## 17

सा कुबेरपृय तणुरुहु पुँच्छिवि  
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु  
कयलीकंदलकोमलगत्तइ  
संतहि दंतहि बहुगुणगणणिहि  
कयजयवयणावंगालोयण  
तहिं पुरि बहि मसाणि सो जइवर  
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ  
सत्तमि दियहि पवणिण पहावइ  
थिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ  
एँत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु  
णिसिहि समागय गयँवरगामिणि  
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय

इंदियसुहसंबंधु दुगुँछिवि ।  
पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।  
किउ णिक्खवणु तुरिउ पृयँदत्तइ ।  
चरणमूलि तहि गुणवइगणणिहि ।  
पुणु वि कहाणउं कहइ सुलोयण । 5  
थक्कु हिरणवम्मु लंबियकरु ।  
मुणि पडिमाजोएं संबोहिउ ।  
मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।  
जिणु थुवंति णियमणराईवइ ।  
सो णरु हूयउ तलवरकिंकरु । 10  
तासु पासि पुरँवणिवइकामिणि ।  
अज्जु सुइरु सुंदरि कहिं अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदें ॥

वंदियइं अँसेसैं पट्टणेण अम्हारएण वणिंदें ॥ १७ ॥

८ MB चालिय°, ९ MB लहुयरेण इह कुमारें. १० M मुहुं महु प्हसिउं; B मुहुं प्हपहसिउं.

17. १ MB कुबेरपिउ. २ MB पेच्छिवि. ३ MB मणुयत्तणु. ४ MB °धम्मु चारुत्तणु. ५ MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ. ६ MB पियदत्तइ. ७ MB पडिबोहिउ. ८ MB णिसियर°, ९ MB थवंति. १० MB एत्तहि वइरिउ. ११ MB वरगय°. १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि. १३ MB असेसइं.

10 a वा लिय° पालितः. 11 b प्हपहसिउं प्रभया प्रहसितम्.

17. 5 a °अवंग अपाङ्गः 9 b °राईवइ पङ्कजे.



## 18

सावयवगें वज्जियविग्घें  
 सव्वहिं संथुय जइवरपायइं  
 चिरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि  
 वयधारिणि अत्थवियइ सूरइ  
 दुम्महवम्महसरसंघारी  
 ताइं बे वि पारावयजुम्मइं  
 वणि लद्धइं खद्धइं मैज्जारें  
 बे वि विरत्तइं धरियचरित्तइं  
 ताहं णाहु गउँ वंदणहत्तिइ  
 ता णिसुणियविसदंसपवंचें  
 ताइं बे वि जाणवि महु अहियइं

गुणवइजसवइगणणीसंघें ।  
 तं पिउवणु मेल्लेप्पिणु आयइं ।  
 बुद्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।  
 एंति एंति थिय णयरदुवारइ ।  
 तणुविसग्गु विरणवि भडारी ।  
 सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइं ।  
 जायइं मणुयइं सुहसंचारें ।  
 तवतत्ताइं एत्थ संपत्तइं ।  
 तेण समागय गरुयहि रत्तिहि ।  
 भवुं संभरियउ तलवरभिच्चें ।  
 मइं जि पुव्वजम्मंतरि वहियइं ।

5

10

घत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपालित्तउ ॥

जहिं अच्छइ संजमधारिणिय तहिं पुरि बाहिरि पत्तउ ॥ १८ ॥

## 19

सा जोइवि पुणु मुणि अवलोइउ  
 पडियाएण तेण पच्चारिय  
 तुहुं महु पुव्वभवम्मि पलाणी  
 सो वरइत्तु काइं पइं मुक्कउ  
 आउ तुज्जु मेलणउं समारामि  
 एम भणेविणु खंधि चडाविय  
 आलिंगह भणेवि रइलुद्धइं  
 भीमें भीसणेण खयथत्तिहि

सिहि मसाणकट्टहिं संजोइउ ।  
 पाविट्ठेण ते वि धिक्कारिय ।  
 जेण समउ अच्छिय सुहलीणी ।  
 अच्छइ तुह रइरमणहु दुक्कउ ।  
 एवहिं हउं विवाहु अवयारमि ।  
 विरयहु णियडि विरैय संप्राविय ।  
 बिण्णि वि एक्कीकरिवि णिवद्धइं ।  
 धित्तइं धियहि जलंतजलंतैहि ।

5

18. १ MB बुद्ध विसुद्ध°, २ MB जम्मइ. ३ MB मंजारें. ४ MB जायइ मणुएं. ५ MB वदण-  
 गउ हत्तिइ. ६ MB भउ. ७ MB पुरबाहिरि.

19. १ MB अवलोयउ. २ MB रइमणहो चुक्कउ. ३ MB विरइ संपाइय. ४ B भीसतेण.

19. 3 a पलाणी नष्टा. 6 b विरय आर्या. 8 b चिय हि चितायाम्.

दडुदं विणिण वि सिमिसिमियंगइं  
रसवसवीसिढ गंधालित्तउ  
णिहंधैइयउ जंपइ वेरिउ  
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ  
पेयालइ हुंयवहेण पलीविउ

णिग्घिणु णिहणेप्पिणु णीसंगइं ।  
आवेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ । 10  
चंगउ सहुं महिलाइ मइं मारिउ ।  
रविउग्गमि जइजुयलु णिरिक्खिउ ।  
रापं पउरयणें सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चिंतिउ ताइ विलासिणिप दुक्किउ कासु कहिज्जइ ॥

इइ जम्मि अहव परजम्मि सइं पावे पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥ 15

## 20

हाहासइं रुणु णरोहै  
वहकारिहि लोएहिं गंविट्टउ  
खलु णाउं वि रूउं वि पल्लट्टिवि  
पक्कमेक्क खय करुणे लइयइं  
उप्पण्णाइं सग्गि सोहम्मइ  
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि  
आउ ताहं मुणि गणणंसुद्धइं  
उसिराणयरिहि कयपर्यायहु  
केण वि पालियसंजमणियरइं

अप्पाणउ णिंदिउ णरणाहै ।  
पायमग्गु पुंरि गंपि पइट्टउ ।  
णट्टउ भयभावेण विसट्टिवि ।  
वेणिण वि मरिवि ताइं पावइयइं ।  
मणिकूडइ विमाणि रूईरम्मइ । 5  
णं मेहहु सोहइ सोदामिणि ।  
पल्लइं पंच पमाणिवद्धइं ।  
कहिउ सुवण्णवम्मखयरायहु ।  
मारियाइं विणिण वि तुह पियरइं ।

घत्ता—सा देव पुंडरिंकिणि णयरि हुयवहजालहिं डज्जइ ॥ 10

रिसिमारय संगहयारि खलु गुणचालु वि रणि वज्जइ ॥ २० ॥

५ M जलंतजलंतिहि; B omits जलंतजलंतहि. ६ M वीसरु. ७ M णिहंधउ इय जंपइ ८ MB वइरिउ.  
९ MB हुयवाहै पउलिउ.

20. १ B गरिट्टउ. २ MB पुरु. ३ M णाउं रुउ वि; B णाउं वि रुवे. ४ M कारणे; B करणे.  
५ MB पव्वइयइं. ६ MB रइरम्मइ. ७ MB गणिणा. ८ M णामहु.

18 a पेयालइ इमशाने.

20. 8 b विसट्टिवि प्रकम्प्य. 7 a आउ आयुः; मुणि जानीहि. 8 a णियणायहु प्रजाया  
भ्यावस्य.

21

तं णिसुणिवि सहं सेण्णहिं णिग्गउ  
साहणु सिद्धकूडु संप्रौइउ  
देवे देविहि कहिउ कहाणउं  
अम्हहं मरुणु मुद्धि णिसुणेपिणु  
पुरवरु डहहुं एहु संचलियउ  
एम्ब भणेपिणु बिण्णि वि जायइं  
आसीणइं वसैहिहि पलियकं  
कंचणवम्मै बिण्णि वि भावै  
किं कुइओ सि पुत्त उवसंतइं  
सावउ विरयजुयलु किं मारइ

सो गलगज्जिवि णावइ दिग्गउ ।  
तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ ।  
तुह तणपण विइण्णु पयाणउं ।  
गुणवालहु उप्परि रूसेपिणु ।  
अम्हहुं दइववसेण जिं मिलियउ । 5  
संजमधर संजमवरकायइं ।  
वंदियाइं कुलकुमुयामियकं ।  
उत्तं मायामुणिवरदेवे ।  
अम्हइं अच्छहुं बे वि जियंतइं ।  
अज्ज वि सो पहु हियइ विसूरइ । 10

घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सव्वत्थ गवेसिउ ॥

तणुरुह गुणवालणराहिवेण अप्पउ दुक्खे सोसिउ ॥ २१ ॥

22

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइ  
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं  
वार वार भवसुकिउ पसंसिउ  
कणयवम्मु खमभावै लइयउ  
गउ णियवासहु सो खयरेसरु  
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु  
अवरु वि सा अच्छर सो सुरवरु  
जिणोदिव्वज्जुणिरंजियकण्णइं  
ता तहिं पच्छइ सयमहरामउ  
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायडु

अम्हइं बेण्णि वि भुंजियअमयइं ।  
अणिमामहिमाईहिं गहीरइं ।  
सुरमिहुणे णियरूउ पदंसिउ ।  
देवदिण्णभूसणचंचइयउ ।  
वच्छदेसि सिवघोसु जिणेसरु । 5  
अरुहदत्तु णामे चक्केसरु ।  
संथुउ संसमेण तित्थंकरु ।  
छुड छुड सव्वइं जाम णिसण्णइं ।  
अवइण्णउ सइं मीणइणामिउ ।  
किं धरयम्मविहाणे वावडु । 10

21. १ MB णाई दिसागउ. २ MB संपाइउ. ३ MB मुद्धि मरणु. ४ M वि. ५ B वसुहहि. ६ MB कंचणवण्णे. ७ M उत्तमु. ८ साविउ.

22. १ MB मुयाइं. २ MB दिव्व°. ३ GKT p संभवेण इति पाठे आदरेण. ४ M—दिण्णदिव्व°. ५ MB तो.

21. १ a कुइओ कुपितः. 12 तणुरुहःहे पुत्रः

22. ७ b संसमेण समीचीनोपशमेन. 10 b वावडु व्यापृतत्वम्.

समउ पुरंदरेण किं णायिउ  
केवलणाणपईवे दिट्ठउ

देविजुंयलु दरिसियमुहरायउ ।  
चक्कीसहु जिणणाहे सिट्ठउ ।

घत्ता—विहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि हयकम्मउ ॥

कर मउलिकरिवि आयण्णिणयउ भावे सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

## 23

लइउं वउं घरविहि परिवट्ठइ  
उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु  
वे वि धिवंति चंदरविणयणइं  
एण णिओएं गलियइ कालइ  
एक्कहि पाणिपोमि फाणि लग्गउ  
सहि णियसहियहि पासु पधाइय  
विसमविसाणलेण जलजलियइं  
दोहिं वि देरवेयणइं सरंतिहिं  
भोय्याकंखइ करिवि णियाणउं  
घराणिणाह छुइ छुइ उप्पणउ  
एयउ विणिण वि णियवइपच्छइ  
अज्जि वि णिवडिउ तणुज्जयलुलउं

जाहुं जिणिंदभवणु ण पयट्ठइ ।  
देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।  
पढमं चिय कुसुमंजलियणइं ।  
एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।  
हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ । 5  
सा वि भुयंगमेण आसाइय ।  
विहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं ।  
दिट्ठउ इंदागमणु मरंतिहिं ।  
लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।  
तेण समागयाउ सुरकण्णउ । 10  
एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।  
लोएं जोइउ गयजीउल्लउं ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहवरणणवियंगहो ॥

कंतीइ पयावे दुज्जयहो पुप्फयंतगुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्यभरहाणुमणिए महाकव्वे जिणधित्तपुप्फंजलिफलं णाम  
तिसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

६ M विण्णायउ. ७ MB णारिजुयलु.

23. १ MB लइयउं. २ B वर घर°. ३ MB जाहं. ४ MB गर° ५ MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं.

६ MB भोयाकंख करेवि. ७ M गुणचंगहो.

23. 1 a घर वि हि पुष्पत्रोटनग्रथनविक्रयादिगृहव्यापारः. 8 a सरंति हिं स्मरन्तीभिः. 11 a णिय व इ प च्छइ निजपतिपश्चात्; b क च्छइ अरण्ये. 13 पुप्फ यंत गुण तुंग हो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तयोर्गुणौ कान्तिः प्रतापक्ष तौ बुद्धौ महान्तौ यस्य.

XXXI

जिणवयणइं आयणिणवि  
मालइमालामालिउ

णियहियउल्लइ मणिणवि ॥  
सहुं कंतइ मणिमालिउ ॥ धुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणणु  
णहि विहरंतउ  
उण्णयतालउ  
णाउं पसिद्धउ  
हंसहिं धवलिउ  
चलजलहल्लिउं  
गयमयसामलु  
पत्तहिं णीलिउ  
दिट्टउ मणहरु  
मणि विण्णुरियउ  
कर्यरिसिसेवें

णवकमलाणणु ।  
काणणु पत्तउ ।  
धण्णयमालउ ।  
महिरुहरिद्धउ ।  
चक्कहिं मुहलिउ ।  
कमलहिं फुल्लिउं ।  
केसरपिगलु ।  
भमरहिं कालिउ ।  
सर्पसरोवरु ।  
भवें संभरियउ ।  
भासिउं देवें ।

5

10

यत्ता—आसि जम्मि संचियधणु  
तुहुं रँइवेगपियारी

हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥  
हौती घरिणि महारी ॥ १ ॥

15

2

दीसइ पुरि एह मुणालवइ  
णं धरियइं कह व चीरंचलइ  
इह प्राणहरणभयविहडियइं

जहिं हूई विहिं वि विवाहरइ ।  
उट्टैउ लग्गउ पच्छलइ ।  
धावंतइं विणिण वि णिवडियइं ।

1. १ B णं कमला°. २ MB काणणि. ३ M केसरिं ४ MB सच्छ°. २ MB भउ. ६ B कय-  
सिरिसेवें. ७ MBK रँइवेयपियारी.

2. १ MB गउ धरिय. २ MB पाण°.

1. ३ a सि रि मा ण णु लक्ष्मीभोक्ता.

इह नृह पयलोहितं पयलियतं  
 इह कंदू लमाड कंचुयड  
 नृह नो सरवरु खगभूसियड  
 पय्येयु जाम सो धरह खलु  
 सो सत्तिसेणु राणड सुयणु  
 पुव्विल्लड जम्मु णिहालियड  
 इय वयणु वियारिड जाम जेहि  
 अमरें विहुणेपिणु तिरकमंहे

इह मत्त अणरियणु विपलियतं ।  
 इह कौहं सि देवकणु ह्वय ।  
 अह्य अलोणु हेह सायसिअड ।  
 तावेअ हे अह्य अह्य अह्य ।  
 संभरहे इ अह्य अह्य अह्य ।  
 अह्य अह्य अह्य अह्य अह्य ।  
 अह्य अह्य अह्य अह्य अह्य ।  
 अह्य अह्य अह्य अह्य अह्य ।

यत्ता—देवि के रणपरतुहं  
 पारावपमंहे न्तरं

नेव कोहोहे ह्वयं ।  
 अह्य अह्य अह्य अह्य ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पणणं विजाहरं  
 मवंचं विडालड तलवरड  
 सो अचिं अणुड एहु जइ  
 अणुअणु अणु अणु अणु  
 अणु अणु अणु अणु अणु  
 अणु अणु अणु अणु अणु  
 अणु अणु अणु अणु अणु  
 अणु अणु अणु अणु अणु  
 अणु अणु अणु अणु अणु

हुणियरं मलाणु हुणियरं ।  
 जो होयड विर हुणियरिअड ।  
 उप्पणुं संताड विविस्तगह ।  
 किं कतह किं अमहं खमह ।  
 आसणु णिसणुड जइवरु ।  
 विधि भासह सुय सुयणाणणिहि ।  
 अणु अणु अणु अणु अणु ।  
 अणु अणु अणु अणु अणु ।  
 अणु अणु अणु अणु अणु ।  
 अणु अणु अणु अणु अणु ।

b

तिह मुणिगा सयलु पयासियउ  
पहं लइउ सिसुत्तणि तवयैरणु

तं णिसुणिवि तियसैं भासियउ ।  
भणु वइरायहु कारणु कवणु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ  
केवलिकहियउ वइयरु

मउगंभीरइ वायइ ॥

देवहु अक्खइ मुणिवरु ॥ ३ ॥

15

4

घरसिहरारूढरमियखयरि  
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ  
उव्विण्णउ णिलयहु णिद्धणहु  
जइ वंदिवि सावर्यंत्रउ गहिउं  
परवहियम्मेणुण्हियहो  
जें दिण्णउं अप्पहि तासु सुय  
ताएण सहत्थें पेळ्ळियउ  
परमैमारउ परथीदव्वहरु  
लुद्धु वि पहि बद्धु णियच्छियउ  
तेहिं वि अक्खिउं णियणियचरिउं

अर्थाह पुंडरिंकिणि णयरि ।  
णामेण भीमु णंदणु जणिउ ।  
हउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।  
घरु आयहु बप्पें णउ सहिउं ।  
व्रँउ किं सुंदरु दालिहियहो ।

5

घत्ता—जेण जीवकुलु हिंसिउ  
जेण पैरव्वसु हित्तउ

आवेहि जाहुं लहु दीहभुय ।  
मुणिवासहु हँउं पुणु चळ्ळियउ ।  
परमम्मविहट्टणु अलियसरु ।  
जणणें एक्केकउ पुच्छियउ ।  
हिंसालियवयणहिं परियरिउं ।

10

5

जो लोहकसापं भावियउ  
मइं भणिउं ताइ एयइं वयइं

सो कवणु ण विहुरें तावियउ ।  
मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।

६ MB तवचरणु.

4. १ MB °वउ लयउ. २ MB °णुण्हियहो; G णुण्हियहो and gloss निद्रारहितस्य; K णुण्हियहो but corrects to °णुण्हियहो; T उण्हियहो. ३ MB वउ. ४ MB पुणु हउं. ५ MB read in-place of this line पाणहरु अलियभासिरउ थेणु, परमहिलारउ मणमइलरेणु; T मणमइलरेणु मनसि मलं पापं रेणुश्च ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रजः. ६ MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि.

5. १ M reads this line as: मइं गहियइ वंदिवि रिसिपयइं, मइं भणिउ ताइ एयइं वयइ. २ MK ताइ. ३ MB वयइं.

4. 5 a परव हिय म्मे ण भारवाहकर्मणा; उ णि हिय हो निद्रारहितस्य.

एषं वयविवरंमुह वद्ध जिह  
तं गिसुणिवि पिउणा इच्छियउ  
गय विणिण वि णयरुज्जाणवरु  
तहु वयणे वणिवरु उवसमिउ  
दोर्गिच्चै किं वर करमि तवु  
मइं एमं णपण समुल्लविउ  
तसथावरजीवहुं कयदयइ

हउं रौं वज्झमि जणण तिह ।  
मइं देसवरिउ पडिच्छियउ ।  
पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु । 5  
घरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।  
किं णासमि लद्धउ मणुयभवु ।  
पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।  
उद्धरियइं पंचमहच्चयइं ।

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु  
दूसईदुक्खणिरंतरु

पायमूलि जिणदेवहु ॥ 10  
गिसुणिउं गियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

## 6

महु तिहुयणणाहें ईरियउ  
णिसिं चिरु भवदेवे विप्पिपण  
पुणु तं<sup>३</sup> चि वि जुयलउं लक्खियउं  
जइयहुं ताइं जि तवतत्ताइं  
तइयहुं होंतो सि तलारु तुहुं  
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ  
जाइवि अण्णेत्य वासु रइउ  
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कँउ  
लौयहु केरउ धणु चोरियउ  
तें आरक्खियउल्लु गरहियउ  
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ

पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।  
होंतेण कालकंदलपिपण ।  
मज्जारें होइवि भक्खियउं ।  
पइं धरिवि हुयँसणि हित्ताइं ।  
ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं । 5  
कह कह व ण जमउरिं पेसियउ ।  
सो णरवइ हुँउ जं पावइउ ।  
अंजणगुणेण दिच्चारु हउं ।  
पउरें रायहु पुक्कारियउ ।  
तेण वि पडियंजणु साहियउ । 10  
पइं वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

५ MB ए, ५ MB पावें, ६ MB दोगतें किंकर, ७ T एण णएण, ८ MB दूसहु.

6. MBKT शिनि and gloos in T शिनि हे भीममुने, २ M °कंदलि°, ३ MBT तं चिय जुवल्लुउं रियउं, ४ K हुयासें णिहित्ताइं, ५ MB अण्णेत्य, ६ MB हूयउ पव्वइउ, ७ MB कयउ, ८ MB हुउ; T हउ.

5. 7 a दोग गेहें दरिद्रेण.

6. 2 b °कंदलि° कलदः. 3 a तं चि वि जुयलउं तदेव पक्षियुगलम्. 4 b दिचारु इउ इट्ठिचारे इतः, भारुवो जातः.



घत्ता—कयरमणीयणकीलणि

पइं णिहियाइं जियक्कइं

कंचणयारणिहेलाणि ॥

हरिवि सत्त माणिक्कइं ॥ ६ ॥

7

तं मंदिरु दाविउ णिवणरहुं  
सोण्णारु वि मइं हक्कारियउ  
पहुणा सो पुंछिउं भोयणउं  
आणाविय मणि गेहे णिहिय  
जिम्ब खाहि छाणु जिम देहु धणु  
इय विमइहि दंहु वियारियउ  
गोमउ वि ण भक्खहुं सक्कियउ  
पडिवाडिइ सो तिण्णि वि करिवि  
तुहुं पुणु चंडालहु ढोइयउ  
कुद्धउ दोहिं मि पहु घणतिमिरि  
पइं भणिउं पाण प्राणहं हरणु

घत्ता—ता चंडालें भासिउं<sup>93</sup>

जं संसारइ पत्तउं

करवालकौतकंपणकरहुं ।

मग्गिउ ण देइ विहिवारियउ ।

तं घराणिहि भासिवि लंछणउं ।

वणिमालइ ओलक्खिवि गहिय ।

जिम्ब विसहहि मँल्ल मुट्ठिहणणु । 5

मल्लें घायहिं ओसारियउ ।

वसु ढोयइ चित्ति चवक्कियउ ।

दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।

व्रंउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।

दोण्णि वि बंधिवि<sup>90</sup> घत्तिय विवरि । 10

हउं संप्राविउ किं णउ मरणु ।

णिसुणहि कम्मु दुविल्लंसिउं ॥

मइं णियदेहें भुत्तउं ॥ ७ ॥

8

इह हौतउ गुणवालउ णिवइ

पुहई वसु णामें धीरमण

गुरुयत्तें सरिस मेरुगिरिहि

अच्छंतहं ताहं तेत्थु सघरि

राणी कुबेरसिरि सच्चवइ ।

सच्चवियहि भायर विण्णि जण ।

एक्कु जि बंधउ कुबेरसिरिहि ।

णिवकरिवरिंदु कीलंतु सरि ।

7. १ M °णराह; B णरहं. २ M °कराहं; B करहं. ३ M सोणारु; B सुणारु. ४ MBK पुच्छिउ. ५ MBK मणि मणिगणि णिहिय. ६ M मल्लि ७ MB भक्खहि. ८ MB चवक्कियउ. ९ MB वउ; K वउ but वउ in second hand. १० MB घल्लिय बंधिवि. ११ M मइ पभणिउं पाणु पाणहरणु; B मइं पहणिउं पाणु पाणहरणु. १२ MB संपाइउ. १३ MB भासियउं. १४ MB दुविल्लसियउ

8. १ MB गुरुयत्तें.

12 b कंचणयारं सुवर्णकारः.

7. 3 b लंछणउं अभिज्ञानम्. 11 a पाण चाण्डालः.

8. 2 a पुहई पृथुधीः.

वणि समवसरणि जिणदेवश्रुणि  
 अवलंविउ हिंसविरंत्तियउ  
 अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ  
 करि कवलु ण गिणहइ प्रॉणपूउ  
 ते पलपिंडउ दरिसावियउ  
 पुणु अणुणु वि सुद्धु पयच्छियउ

आयण्णवि जायउ झत्ति गुणि । 5  
 जिउं जोयवि सणियउं दिण्णु पउ ।  
 गयवालउ महिवालहु दिसइ ।  
 ता राणं पहिउ कुवेरपिउ ।  
 तं ण णियइ करि वरभावियउ ।  
 तो हत्थिदेण पडिच्छियउ । 10

यत्ता—वारणु दुण्णयवारउ

इय मइवंतु वियाणिउ

हुयउ अणुव्वयधारउ ॥

वणि पाणहु संमाणुउ ॥ ८ ॥

9

अण्णहिं दिणि णरणाहहु तणउ  
 घरु आयउ णञ्जाविय दुहिय  
 पुच्छिय राणं विरइयतिलय  
 मयणाहिविसेणुअंत्तियण  
 मुद्धइ णीराउ पजंपियउ  
 णियघरु जाणवि वणीसरहु  
 सा सुहणं पडिवयणेण हय  
 संवोहिय सहियइ हंसगइ  
 दुम्महवम्महमग्गणवहिय  
 सहि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ  
 हलि पंचमु सरंसु समालवहि  
 ते मरुउं णिरुत्तउं कहिउ मइं

णहु णट्टमालि णवतोरणउ ।  
 रसविअमहावभावसहिय ।  
 णामेणुण्णलमाला विलय ।  
 वणिवइसरुउ चितंतियण ।  
 राणं णियहियइ वियप्पियउ । 5  
 वेसाइ णिउंजिय दूइ तहु ।  
 पैणयंगणरयहु णिवित्ति कय ।  
 दुल्लहलंभेसु म करहि रइ ।  
 ता जंपइ पवरविल्लसिणिय ।  
 संभयउ वल्लहु णवणवउ । 10  
 जइ सहइउ कह व ण मेलवहि ।  
 असमन्निख रुवंवउं माउ पउं ।

२ MB हिंसविरंत्ति जिउ. ३ MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ. ४ MB पाणपिउ. ५ MB वरिवर  
 भावियउ. ६ MBK मुद्ध. ७ MB अदमइ.

9. १ MB add before this the following line:- पुणु णिवणं वृत्तिवि दिण्णु वर, मेहि  
 पउसु आणरवर, अत्तउ ( M अत्तउ ) वर भवणायाय भहु, जइया मग्गमि देवि पइ. २ MB पडिवयणं.  
 ३ MB मग्गणवणिया: K 'वणिय'. ४ MB 'विल्लमिणिया. ५ MB सरु मग्गमा'. ६ MB मुट्ट पउ मइ  
 मेलवहि. ७ MB भरमि.

४८ पडिउ प्रेरित.

9. ४ त मयणाहिं कामवपः. 5 ६ राणं राणल. 12 ६ अमम दिव्य परोरे.

घत्ता—सहि पभणइ अट्टमदिणि  
हियवइ अरुहु धरेप्पिणु

थक्कइ जिणभवणंगणि ॥  
कार्यविसग्गु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

## 10

तइयहं तुंहु संचियझाणरसु  
इय तेहिं विहिं वि आलोइयउ  
थिउं ओलंविक्करु धीरुं जहिं  
उच्चाइवि आणिवि वालियहे  
मुद्धाइ सुरयविहि सयलु कउ  
हे<sup>०</sup> णीरसत्तु दुब्बोल्लियउ  
तं राएण वि आणियणियउं  
उवहसिय वेस णर परिहरिवि

उच्चाइवि आणमि सो अवसु ।  
तां अट्टमिणत्तु पराइयउ ।  
आलिइ जाएप्पिणु तुरिउ तहिं ।  
पिउ अप्पिउं उप्पलमालियहे ।  
वरु थक्कउ णावइ कट्टमउ । 5  
जहिं अच्छिउ तहिं पुणु घल्लियउ ।  
वाणिवरहु थिरत्तणु मणियउं ।  
घरि थक्की बंभचेरु धरिवि ।

घत्ता—लूयासुत्तं बज्झइ  
वेसहि जडयणु णिवडइ

मसउ ण हत्थि णिरुंज्झइ ॥  
विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥ १० ॥ 10

## 11

तलवरसुउ अवरु वि मंतिसुउ  
तहि मत्तमहंगायगामिणिहे  
एक्कहु जि एक्कु दक्खालियउ  
परिवाडिइ दिण्णवयणणियल  
पिहिइ वि तहि विहिणा आणियउ  
जो दिण्णउ सुकियसास रसहि  
सो आणेप्पिणु महु देसि जइ  
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु

भोयालउ णिर्वभोइणिहि सुउ ।  
एए घरु आया कामिणिहे ।  
भयभावे मणु संचालियउ ।  
मंजूसहि पइसारिय सयल ।  
रइमग्गिरु तरुणिइ भाणियउ । 5  
महु तणउ हारु पइ णियससहि ।  
तो देमि<sup>१</sup> हउं मि तुह रमणरइ ।  
बीयइ दिणि उग्गामि दिणयरहु ।

८ MB काउविसग्गु.

10. १ MB तहु संचिय. २ MB तावट्टमि<sup>०</sup> ३ MB थिय ४ MB वीरु. ५ M आवेप्पिणु.  
६ MB अप्पउ. ७ MB हो णीरसु त्ति ८ MB याणियउ. ८ M विरुज्झइ.

11. १ MB णिवभोयणिहे. २ MB <sup>०</sup>महागय. ३ MB पिहिविवि. ४ MB रउ मग्गिरु तरुणिय.  
५ MB देहि. ६ K देवि.

10. २ b <sup>०</sup>णत्तु रात्रिः. ३ b आ लि इ सख्या. ९ लूया<sup>०</sup> कोलिकः.

11. १ b णिव भो इ णि हे सुउ दासीपुत्रः. ५ a पि हि इ पृथुधीनाम्ना सत्यवतीभ्राता.

जिह हारु तेण उच्छ्रवि गहिउ  
सुरयाकंखइ पडिवण्णु जिह  
माणिणिइ मंति ओहामियउ

जिह लोहिद्वे पुणरवि रहिउ ।  
रायहु विन्ततु पउच्चु तिह ।  
णिज्जीवसक्खि आणावियउ ।

10

घत्ता—गहियंगारयहत्थहिं

दासिहिं भणिउं समत्थहिं ॥

फुडु मंजूसि समासहि

मा हुयवहमुहि पंइसहि ॥ ११ ॥

## 12

तामायसवलयविहूसियए  
पडिवण्णु हारु गयेदियहि पइं  
दे देहि विहूसणु सुंदरिहे  
उप्पण्णु चोज्जु णियसिरु धुणिउं  
परधणहरगारउ साडियउ  
ते तिण्णि वि तहिं णिग्गथ कुविड  
णरणहें पुच्छिय सच्चवइ  
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु

घत्ता—खलु दुब्बयणिहिं दोच्छिवि

महिर्वइणा आणाविउ

सहसा घोसिउ मंजूसियए ।  
तुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।  
मा पडहि मंति णारयदरिहे ।  
कहिं तरु चवंति पहुणा भणिउं ।

मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ । 5

णारिहि के के णउ मलिय जड ।

सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।

मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।

ता समंति णिब्भच्छिवि ॥

तहि भूसंण देवाविउ ॥ १२ ॥ 10

## 13

आणंदु पवड्डिउ माणिणिहे  
ते<sup>१</sup> दंडणु अणु पवियप्पियउ  
भोइणि तलवर मंतिहि तणय  
सिरकमलु लुणह पुहइहि तणउं  
जइयहुं परिणामु विहावियउ  
तइयहुं जो<sup>२</sup> पइं सइं दिण्णु तरु

मणि रोसु रायचूडामणिहे ।

असहंतें एम पयंपियउ ।

तिण्णि वि धाडह दूसियविणय ।

ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।

जइयहुं कुंजरु भुंजावियउ । 5

सो अज्जु देहि णिव संतियरु ।

७ MB पडिदिण्णु, ८ M मणि णियए; B माणिणियए; ९ MB मंजूस. १० M पयसहि.

12. १ MB ता आयस°. २ MBK गइ दिवहि. ३ MB महिवइ. ५ MBK भूसणु.

13. १ MB ते दंडणाणु परियप्पियउ; ( B पवि° ). २ MB पइं जो महु दिण्णु. ३ MBT पट्टवहि.

ए परवेसहु मा पिंडवहि  
ता तहिं धरणीसें किउं करुणु  
वणिवयणु णरिदें जं कियउ  
उवयारु खलहु दोसें सरिसु  
संचितइ सो मारमि मरमि

घत्ता—पुणु गएण णइतीरए  
विज्जाहरकरवियलिय

एहु वि मा खगै खंडवहि ।  
वारिउ विदेसवियरैरणु मरणु ।  
तं पिहिविचिचु रोसंकियउ ।  
फणिदिण्णउं दुद्धु वि होइ विसु । 10  
सेट्टिहि णिग्गहु अवसें करमि ।

तेण तुसारसमीरण ॥  
अंगुत्थलिय णिहालिय ॥ १३ ॥

## 14

अंगुलियइ कय सुहदाइणिय  
किं जोयहि मंतें पुच्छियउ  
महु कामरूवधरि मुद्दडिय  
णं<sup>१</sup> पिययम णाहासिक्खविय  
पुणु मग्गियं खयरें दिण्ण तहो  
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ  
एक्कासणि चडियउ राणियहे  
सो<sup>२</sup> पेक्खइ णिययसहोयरउ  
पिसुणे<sup>३</sup> पुहवीसहु विण्णाविउं

घत्ता—णवजोव्वणमयमत्तें  
मा परुं चरु संजोयहि

ता खयरु पलोयइ मेइणिय ।  
तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।  
एत्थेत्थु मित्त कत्थइ पडिय ।  
तें तहु सा विहसिवि दक्खविय ।  
संतुट्टउ गउ णियमंदिरहो । 5  
मुद्दइ कुवेरपिउ सो जि किउ ।  
सच्चवइहि धम्मवियाणियहे ।  
जणु पेक्खइ वणि अयज्जणिरउ ।  
परमेसर तुह कलत्तु रमिउं । 10

धुउ धणवइयहि पुत्ते ॥  
जाइवि अप्पणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB <sup>०</sup>विरयणु, ५ MB चितइ सो मारमि पुणु मरमि, ६ MB ठाइवि.

14. १ MB कंपियमइणा हासें खविय, २ B मग्गिवि, ३ M सो, ४ MB वणि णिवभज्जरउ, ५ K धणजोव्वण<sup>०</sup>, ६ M पियदत्तहि, ७ M वर णर.

13. 7 a पिंडवहि प्रेषय, 13 अंगुत्थलिय मुद्रिका.

14. 4 a णाहासिक्खविय भर्त्रा अशिक्षिता, 8 b अयज्जणिरउ अकार्यनिरतः, 11 परुक्ख  
अन्यं मूलम्.

15

मायावइसत्तविलंबियउ  
दुप्पिच्छमच्छरुक्कोर्यणहिं  
ण वियाणियउ कवडरुवरयणु  
घरु जाइवि रायहु पेसणिण  
पिहिं<sup>३</sup> वी चारित्तमहिड्डियउ  
वणिवइं मारहुं णेवावियउ  
जूरइ सच्चवइ कुबेरसिरि  
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ  
अहवा लइ एउं होइ जइ वि  
तहिं अवसरि सो चंडालयहु

घत्ता—पाणें झत्ति विमुक्की  
खगलड्डि जमदूर्इ

मुद्धइ डिंभउ सिरि चुंबियउ ।  
दिट्टउ राणं सइं लोयणहिं ।  
किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।  
जमदूण व जमसासणिण ।  
पडिमाइ परिट्टिउ कड्डियउ ।  
उप्फालें जणु मेलावियउ ।  
हा किं चलु हूयउ मेरुगिरि ।  
हा किं जायउ धम्महु पलउ ।  
तहु भव्वहु सीलु सुद्धु तइ वि ।  
अप्पियउ तोलियकरवालयहु ।

वणिगलकंदलि दुक्की ॥  
सियहारावलि हूई ॥ १५ ॥

16

साहु त्ति भणिवि पणवियपयए  
सोवण्णभूमि मणिमंडविय  
णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ  
अवरेक्कहिं मच्छरणिब्भरहिं  
अण्णेक्कैइं वेउद्धाइयइं

पउमासणु किउ पुरदेवयए ।  
तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।  
भूएहिं णिवद्धउ सो पुहइ ।  
णिंदिवि सिरि चूरियउ टक्करहिं ।  
जहिं णरवइ तहिं संप्राइयइं ।

15. १ MB °वइसत्तु. २ MB °क्कोवणहिं. ३ MB पिहिविवि चरित्त°; K पिहिंवे चारित्त°. ४ MB add after this the following lines:—

पुणु हट्टहु मज्जे चालियउ  
णिजंतउ पेक्खिवि जणु रुवइ  
कु वि सवइ राउ कु वि पुहइअउ  
जो दुरएहिं तुरएहिं जंतु चिरु  
उद्धणु जेम वड्डिउ जणेण  
सो एवहिं चरणहिं चरइ किह

सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।  
कु वि थामि थामि धाहउ मुयइ ।  
सुंदरु सुसीलु दुहु पावियउ ।  
जाणहिं जंपाणहिं गुणपवरु ।  
रोवंते सयलें परियणेण ।  
दुक्कम्महिं पायउ पुरिसु जिह ।

16. १ M णिक्करणु. २ MB सिरु. ३ MB अण्णेक्के. ४ MB संपाइयइं.

15. 1 a मायावइसत्त मायावणिकत्वम्. 3 a °रथणु रचनम्. 4 b जमसासणेण यमाज्ञया. 6 b उप्फालें पटहच्चनिना.

बहु दिव्वहु अमरिसु वड्डियउ  
सो भणइ काइं मइं दोसु किउ  
मुद्दापवंचु पररुवगइ  
गुणिबंधणु रायहु भिण्णमइ  
पइवय कुललच्छि कुबेरसिरि  
गउ तहिं जहिं अच्छइ वइसवइ

घत्ता—पिसुणकवहु ण वियक्किउं  
खमहि वप्प जं दूमिउ

17

वणि भणइ पुराइउ कम्मु महुं  
तं<sup>१</sup> णासमि एवहिं तउ करमि  
पिउ भणिवि सभवणहु आणियउ  
चंडालें अट्टमिचउदसिहिं  
पुणरवि पाणें चोरहु कहिउ  
तें वइसें वारिसेणदुहिय  
दिण्णी कुबेरसिरि णंदणहु  
तहु जणणें भणिउ कुबेरपिउ  
तेण जि पउंत्तु धम्मु जि भणमि  
णिव जामि होमि हउं जइचरिउ  
सुयरक्खणु को वि णिरिक्खियउ  
पहु पुच्छहुं वणिउ पराइयउ  
घत्ता—कहिं सिणिसवु कहिं मक्खिय  
जीवहु कम्मु सहेज्जउ

पहु पायहिं धरिवि णियड्डियउ ।  
भासइ पिसायगणु धम्महिउ ।  
सुहिवंधणु परकलत्तविरइ ।  
तें तोसिय पणविवि सच्चवइ ।  
उवसामिवि गरहिवि णिययसिरि । 10  
मउलियकरु सो पत्थिउ चवइ ।  
मइं पावें किउं दुक्किउं ॥  
कसताडणहिं किलामिउ ॥ १६ ॥

णिक्कारणि जं कुइओ सि तुहुं ।  
णउ तुज्जुप्परि मच्छरु धरमि ।  
णाहेण इट्टु वहु माणियउ ।  
पालिय अहिंस दिण्णी रिसिहिं । 5  
जिह गुणवालें त्रैउ संगहिउ ।  
विण्णाणरुवलक्खणसहिय ।  
वसुपालहु भुवणाणंदणहु ।  
किं मोक्खहु कारणु क्हमि पिउ ।  
सिधकारणु अण्णु ण पैरिगणमि ।  
सो तिण्णि दियह पहुणा धरिउ । 10  
दिणि तिज्जइ एंत्तुं व लक्खियउ ।  
मच्छियहि विसंभरु धाइयउ ।  
कणाणिय किं मक्खिय ॥  
अण्णु ण किं पि दुइज्जउ ॥ १७ ॥

५ M वम्महिउ.

17. १ MB read this line as: णउ तुज्जुप्परि मच्छरु धरमि, त णासमि एवहिं तउ करमि.  
२ MB वउ. ३ MB विण्णायरुव. ४ MBK कहहि. ५ B वि उत्तु. ६ K पर गणमि. ७ MB यउ.

16. 7 b धम्म हि उ धर्महित. 9 a भिण्ण म इ संजाताविवेकमति. 13 दूमिउ उत्पादितचित्तखेदः;  
७ किलामिउ शरीरे कदर्थित.

17. 12 b वि संभरु कोलिकः. 13 सि णि सवु विषंभक्षः कोलिकः. 14 सहेज्जउ सहायम्.

18

डिभहुं सुहुं दइवु जि करइ  
 सिरिपालु सच्चवइदेहरुहु  
 दइवणुएहिं आपसु कउ  
 कह गिसुणिवि कुसुमालें दमिय  
 णरयाउसु तेणोसौरियउं  
 जं सायरसंखहिं भेलविउ  
 सिरिपालविवाहि सवंतवण  
 सो चोरु मरिवि णिवडिउ णरइ  
 बहुदियहहिं तेत्थहु णीसरिउ  
 इहु अच्छवि हउं संजमु वहमि

किं मार्येवणु चित्तिवि मरइ ।  
 होसइ चक्रवइ पडुल्लमुहु ।  
 गुणवालु सवणि मुणि होवि गउ ।  
 मइ खंतिइ संतिइ संसमिय ।  
 तइयाउ पढमि संचारियउं । 5  
 तं वरिसलक्खकोडिहिं थविउ ।  
 वसुपालें मुक्का बे वि जण ।  
 पहिलारइ भीमैदुक्खणिलइ ।  
 वणि कुंभोयरघरि अवयरिउ ।  
 जिणएवें भासिउं सहहमि । 10

घत्ता—ता देवेण समीरिउ  
 तं जइमिहुणु णियच्छहि

जं जम्मंतरि मारिउ ॥  
 ता किं रोसें पेच्छहि ॥ १८ ॥

19

किं खमहि भडारा फुडु कहहि  
 तं गिसुणिवि रिसिणा बोह्लियउं  
 तं एवहिं णिस्सल्लु जि करमि  
 ता तियसें जंपिउं गिसुणि रिसि  
 पइं पहयइं देवइं जायाइं  
 तुमहं पयजुयलउ वंदियउ

किं अज्ज वि वइरु चित्ति वहहि ।  
 पाविट्ठे जं मइं सल्लियउ ।  
 तहु हियमियवयणइं वज्जरमि ।  
 अमहइं जि ताइं विण्णि वि सबसि ।  
 इय कहिं मि भवंतइ आयाइं । 5  
 ता मुणिणा अप्पउ णिंदियउ ।

18. १ MB सुहुं दुहुं दइउ. २ K माइवणु. ३ T सवणि श्रेष्ठिना सह. ४ MB तेणोहारियउं.  
 ५ MB दुक्खभीमणिलए. ६ MB जिणदेवें.  
 19. १ MB अजे वि. २ K णीसल्लु.

18. 3 a द इ व णु ए हिं दैवज्ञैः, b सवणि सवणिक्. 4 a कु सु मा लें चोरेण, b सं ति इ विद्यमानया.  
 7 a सवंतवण स्रवन्ति व्रणानि क्षतानि ययोः.  
 19. 4 b स व सि स्ववशिन्.



हा दुहु दुहु मइं मंतियउ  
 हा दुहु दुहु मइं भासियउ  
 खंतवु कैंरहु णीसल्ल मुहुं  
 जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि खमिउं  
 घत्ता—ता दूरुज्झियमच्छरु  
 गउ गुरु वंदिवि सग्गहु

हा दुहु दुहु मइं चितियउ ।  
 हा दुहु दुहु मइं ववसियउ ।  
 एवहिं ण वइरु केणावि सहं ।  
 हउं एवहिं भण्णमि संजमिउ । 10  
 अमरु सचामरु सच्छरु ॥  
 ण ढल्लिउं जिणवरमग्गहु ॥ १९ ॥

## 20

सो भीमसाहु विहरेवि महि  
 आवेवि सिवंकरि संठियउ  
 उप्पण्णउं केवलणाणु खणे  
 तहु एक्कु छत्तु दो चामरइं  
 पोमासणु मणिमंडवु विउल्लु  
 पहुवज्जियाउ चउजक्खणिउ  
 तहिं अवसरि पवणुद्धयउ  
 विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ  
 जइणा पउत्तु मइमोहणिया  
 वसुसेण वसुंधरि धारिणिय  
 सिरिमइ असोय संती विमल  
 एयहिं अट्टहिं वि सुणिम्मियइं  
 कर्षणउ मरिवि सुहसूइयउ

वसुपालणयरि उज्जाणवहि ।  
 तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ ।  
 कंपावियसुरवरसुरभवणे ।  
 णवियइं चउविहइं वरामरइं ।  
 हेमुज्जलु छज्जइ धरणियलु । 5  
 आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ ।  
 देवीउ अट्टु समागयउ ।  
 को पइ होही जइ पुच्छियउ ।  
 इह पुरि सुरदेवहु गेहिणिया ।  
 अण्णेक्क पुहइ सुहकारिणिय । 10  
 चोत्थी घरदासि तासु विमल ।  
 वणि मुणिहि पासि गहियइं वयइं ।  
 अच्चुयवइ देविउ हूइयउ ।

घत्ता—रइसेणा सुरकामिणि  
 सुहवइ कोमलहत्थी

अवर सुसेण सुहाविणि ॥  
 चित्तसेण सुपसत्थी ॥ २० ॥ 15

३ MB करहि. ४ MB तुम्हहुं तिजग°. ५ MB चलिउ.

20. १ K पउमासणु. १ MB मणिमंडउ. ३ MB विमलु. ४ MBK omit this line.  
 ५ MB चयारि. ६ MB पवुत्तु. ७ MB सुणिम्मलइ. ८ MB कंताउ.

20. 13 a °सूइयउ °सूचिताः.

## 21

लंजियउ चयारि वि कयवयउ  
 तहिं चित्तवेय जक्खेसरिय  
 अज्जु जि उप्पण्णउ दिव्वकुले  
 सुरदेवे द्दाणु ण मण्णियउं  
 मुउ हूयँउ गद्दहु दुदंतु सदु  
 पुणु दाढाभासुर घोणसउ  
 मइं समउ आसि सो घित्तु बिले  
 जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ  
 तेण वि तहु आउ पयासियउ  
 ओसारियदूसहभवरिणइं  
 उप्पण्णउ एवहिं फुडु जि दिवि  
 सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु

संभूइयाउ वणदेवयउ ।  
 वणवइ वणदेवी धणसरिय ।  
 इह एयउ पेच्छहु गयणयले ।  
 रिसिदिज्जंतउं अवगण्णियउं ।  
 पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरदु । 5  
 पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।  
 हउं मरिवि पहूयउ णरयबिले ।  
 वउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।  
 सत्त जि अहरत्तइं भासियउ ।  
 संणासु करिवि रिसिसमदिणइं । 10  
 को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।  
 लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि  
 एत्थु जि देसि चिरंतणे

सा मरेवि तुच्छोयरि ॥  
 उप्पलखेडइ पट्टणे ॥ २१ ॥

## 22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे  
 मुणिदाणहलेण सुसीलणिय  
 तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो  
 रइसंभवसोक्खाकंखिणिहिं  
 भणु भणु भुवि को अम्हहं रमणु

उप्पण्णी पुत्ति अणिंदियहे ।  
 जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।  
 अम्हइं मुक्का बंदिग्गहहो ।  
 गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।  
 ता कहइ काममयविद्वैवणु । 5

21. १ MB चक्केसरिय. २ MB धणवइ धणदेवी. ३ MB गद्दहु हुउ. ४ M दाढीभीसणु; B दाढा भीसणु. ५ MB वि.

22. १ MB ०धम्मवालसिरिणांदियहे. २ MB मुक्कइ. ३ MB ०विद्वमणु.

21. 1 a लंजियउ दास्यः. 8 b वउलें बकुलनाम्ना चाण्डालेन. 10 b रिसिसमदिणइं सप्त दिनानि.

22. 2 b मंदरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी.

जें पाणें कय संणासगइ  
दरिसावियसीहवग्घमुहहे  
सो होसइ तुम्हहं हिययहरु

तहु तणउ पुत्तु अज्जुणु सुमइ ।  
अणसणि थिउ सिद्धसेलगुहहे ।  
वरु सूहउ णावइ कुसुमसरु ।

घत्ता—माणवदेहु मुएप्पिणु  
गाढालिंगणु देसइ

जक्खु सुरिंद हवेप्पिणु ॥  
तुम्हहं पुलउ जेसणइ ॥ २२ ॥

10

## 23

अच्चुयपडिंदु सिंगारधरु  
तें वंदिउ णियगुरु गरुयगुणु  
जक्खिहिं जाएवि जसंज्जुणहो  
आगामिउं पुणु पसंसियउ  
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु णरु  
जायाउ ताउ णिहंसणउ  
अंसहंतें विरहविरोल्लियउ  
मुउ णौगदत्तवणिवरहु सुउ

हूयउ आयउ सो वउलचरु ।  
सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।  
संणासु करंतहु अज्जुणहो ।  
तहु णियमहिलत्तणु भासियउ ।  
लगउ देविहिं पसरंतकरु ।  
विडि खुत्तउ वम्महमग्गणउ ।  
तेणप्पउ कक्करि घल्लियउ ।  
सहसत्ति पिसल्लदेउ हुउ ।

6

घत्ता—तेत्थु जि णयणाणंदणु  
गेहिणि तासु वसुंधरि

पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥  
बाहइ णौहु वसुंधरि ॥ २३ ॥

10

## 24

अणु वि फणिदत्तु णामु वसइ  
वणित्तें लोयदिट्ठिभवणु  
पुरवाहिरि पइ किसि करइ जहिं  
दहिओल्लिउं अल्लयमीसियउं

तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।  
काराविउ तेण णायभवणु ।  
अणहिं दिणि चल्लिय घरिणि तहिं ।  
भोयणु गेणहवि सुइवासियउं ।

४ MBK जें.

23. १ B बउलघरु. २ MB जसज्जणहो. ३ B अलहंतें. ४ MB °विरोल्लियउ, T विरोलउ.  
५ MB णायदत्त°. ६ MB पिसल्लउ. ७ B णाह.

24. १ MB वणित्त २ M फणिदत्तें. ३ MB ओयणु.

23. 1 b बउलचरु वकुलनामा चाण्डालः. 3 a जसज्जुणहो यशसा श्वेतस्य. 7 a °विरोल्लियउ  
कदार्थित्; b कक्करि पर्वतशिखरात्. 8 b पिसल्लदेउ पिशाचः.

24. 2 a लोयदिट्ठिभवणु लोकानां दृष्टे. सुन्दरतया भवनमाश्रयः. 4 a अल्लय° करमलम्; b सुइ-  
वासियउं कर्पूरेलाजीरकादिवासितम्.

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ  
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे  
दाणेण तेण जणसंथुयइं  
गिब्वाणहिं रयणइं घित्ताइं

आहारु ताँसु तहि ढोइयउ । 5  
भुत्तउ मुणिणा संणिहिउ करे ।  
जायइं पंच वि अच्चब्भुयइं ।  
करकब्बुरियाइं विचित्ताइं ।

घत्ता—जोइवि मँणिगणवुट्टी पणइणि तसिय पणट्टी ॥  
गय घणकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकंतहु ॥ ४ ॥ 10

25

तुह कूरकरंबउ आणियउ  
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं  
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय  
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ  
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउं  
तं णिसुणिवि हउं णट्टी सभय  
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि  
तुहुं गुणमाणिक्हं तणिय खणि  
पत्थर ण हौंति ते दिव्वमणि  
घरियउ विवक्खवइसेण धणु

जो तेण साहु मइं पीणियउ ।  
पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।  
गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।  
णउ जाणउं वज्जउं वज्जियउ ।  
अण्णेत्तहि वरिसिरघणझुणितं । 5  
ता भणइ णाहु हँलि तुहुं सदय ।  
पइ हौंतिइ होसइ मज्जु सिरि ।  
पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।  
इय भणिवि अहीहरु दुक्कु वणि ।  
उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु । 10

घत्ता—हिमगोखीराभासइ महु केरइ फणिवासइ ॥  
पडियइं रुइरहियक्कइं महु जि हौंति माणिक्हइं ॥ २५ ॥

26

इयरें पवुत्तु तुहुं खुहु खलु  
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ  
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ

महु धरिणिहि केरउ दाणहलु ।  
ता दब्बु लण्णिणु सो कुमइ ।  
को पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु, ५ B मणगणवुट्टी, ६ MB घणकसणहु.

25. १ MB ण. २ M वज्जुउ. ३ MB पेच्छिवि. ४ MB तुहुं हलि.

25. 5 b वरिसिर<sup>०</sup> गन्धोदकवर्षणशीलः. 9 b अहीहरु नागभवनम्. 10 a विवक्खवइसेण नागदत्तेन.

सो राणउ अवरु वि सो वणिउ  
जिह जिह मणि तं सीकरइ धणु  
पुरदेवियमुक्कहिं दीहरहिं  
णरणाहु वि हियवइ संकियउ  
दिण्णउ रयणोहु दप्पु गलिउ

घत्ता—अण्णहिं दिणि पण्णयघरि  
आसाइयपरवित्तं

विम्मूढगूढु लोहें वणिउ ।  
तिह तिह जि होइ इंगालगणु । 5  
भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।  
संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।  
भणु तववंतेण को ण मलिउ ।

दिट्ठुं मणि तरुकोडरि ॥  
एकु कहिं वि अहिदित्तं ॥ २६ ॥ 10

## 27

तं कड्ढिउ कह व कह व धरिवि  
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि  
पहरंतहु उच्छल्लिवि खयलि  
उग्गयखंडेण वियारियउ  
धणसंखइ ववहारेण जिउ  
धणु वड्ढिमु जायउ जेत्तिउं जि  
कुपुरिसु वसुगव्वे वगियउ  
तेणुत्तउं म धरहि भिउडिमुहुं  
पुणु तेण फणीसरु पुँच्छियउ  
मग्गंतहु किं पि ण दिण्णु वरु

घत्ता—वणि पभणइ भुर्यभूसणु  
भो भो विसहरसारा

पुणु रोसहुयासें विप्फुरिवि ।  
गुरुणं पाहाणें हुंकरिवि ।  
णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।  
वणिणागदत्तु हक्कारियउ ।  
अहरत्तु वसुंधरिवइहि णिउ । 5  
हारिउ तहिं पिसुणें तेत्तिउं जि ।  
तं दच्चु सुकेउं मग्गियउ ।  
देवाण पहायइ देमि तुहुं ।  
हउं पइं किं देव गलत्थियउ ।  
ता भणइ सप्पु भणु देवि वरु । 10

बलु सुकेउविद्धंसणु ॥  
दिज्जउ मज्झु भडारा ॥ २७ ॥

26. १ MB विम्मूढु मूढु; K विम्मूढु गूढु. २ MB पुरदेविविमुक्कहिं; K पुरदेविइ मुक्कहिं. ३ M किं किर ४ MB दिण्णउ. ५ M अहिदित्तं.

27. १ M गरुयं, B गरुणं. २. MB उग्गयखंडेण. ३ M अहरत्ति. ४ MBK जेत्तउं. ५ MBK तेत्तउं. ६ MB गव्वियउ; T वगियउ. ७ MB पत्थियउ. ८ MB भूसणु.

26. 5 a सी करइ स्वीकरोति. 6 b ढंढरहिं राक्षसै. 9 पण्णयघरि नागभवने.

27. 5 b अहरत्तु अधरत्वम्. 7 a वगियउ उद्धटो भूतः. 8 b देवाण देवाज्ञया.

## 28

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु  
 प्राणावहारु तहु को करइ  
 मइं तो वि तासु तुहुं अल्लिवहि  
 भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ  
 ता जायवि चिंतियविप्पियउ  
 किउं णियमंतु विहावियउ  
 णीसेसइं कम्मइं णट्टियइं  
 मग्गइ पेसणु उरजंगमउ  
 आणिवि भवणंगणि लहु ठवहि  
 तहिं बंधिवि खंभि सुघणघणइ  
 तुहुं तेत्थु वप्प सट्टेण विणु  
 इय णिम्मइ भणियउ जइयहुं जि .

घत्ता—ता विसहरु विहंसेप्पिणु  
 मंकडंवेसु धरेप्पिणु

द्विणेण ण जिप्पइ दिव्वघणु ।  
 जसु पुण्णु सहेज्जउं संचरइ ।  
 मज्जायवयणु एहउं लवहि ।  
 जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।  
 फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ । 5  
 अहि हियइच्छिउ कारावियउ ।  
 संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।  
 वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।  
 गरुआरउ वाणरु तुहुं हवहि ।  
 गलि संखल लाइवि अप्पणइ । 10  
 आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।  
 तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि ।

तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥  
 थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

## 29

खंभग्गसिहरि उड्ढिवि चडइ  
 अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण किह  
 णेरंतरु णिसिदियहइं गमइ  
 विसि भणइ मित्त मइं मेल्लवहि  
 ता तेण माणु अवहत्थियउ

उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।  
 सज्झायहु लग्गउ साहु जिह ।  
 लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।  
 पडिवक्खे सहुं णिम्मउ चवहि ।  
 घयणामु णवेप्पिणु पत्थियउ । 5

28. १ MB पाणाव°, २ MBT अल्लिवहि, ३ MB केउं, ४ B विसहेप्पिणु, ५ MB मक्कड°,

29. १ M अहिदित्तेण, २ MB लग्गइ, ३ MB °दिवसइं.

28. 2 b सहेज्जउं सहायम् 3 a अल्लिवहि समर्पय. 8 a उरजंगमउ भुजगः, 11 a सट्टेण वि णु शाब्देन विना.

29. 4 a वि सि नागः.

पइं मणुएं णाउं वि बद्धु जहिं  
 बुद्धीइ धणेण वि<sup>४</sup> तुहुं जि गुरु  
 तं णिसुणिवि मेळ्ळवि घल्लियउ  
 अवलोयवि दिणयरअत्थवणु  
 संसेविउ गुणहंरगुरुचरणु  
 णिम्मच्छराहि णिरु णिन्भयहि  
 दिक्खंकिय घरिणि वसुंधरिय  
 मुणिवरु सुकेउ मुउ विहुरहरे  
 थीलिंगु हणेप्पिणु णिरुवमिय  
 सम्मत्तालंकिय भव्ववर

वणिणज्जइ साहसु काइं तहिं ।  
 भो वच्चउं मेळ्ळहि णायसुरु ।  
 फणिवइ वणिणा मोक्कल्लियउ ।  
 णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु ।  
 चिंधंके लइयउ तवचरणु । 10  
 मणिणियहि पणवेप्पिणु सुव्वयहि ।  
 परिपालिवि छावासयकिरिय ।  
 उप्पणउ सग्गि सयारवरे ।  
 तेत्थु जि सुरुं हूई तासु पिय ।  
 रामासु विरारिपणामयर । 15

घत्ता—भरहजणणविण्णायइ  
 होंति ण वणभवणंतरि

अपढमइ णरयणिकेयइ ॥  
 पुष्पदंतवासंतरि ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे वणिणागदत्तसुकेउकहासंबंधो णाम  
 एकतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

४ MBK देउ. ५ MB जि. ६ MB मेळ्ळहि वच्चउ. ७ MB वणिवइ, T वणिणा. ८ M गुणहरु गुरु.  
 ९ MB गुणणिन्भराहि. १० MB गणणिहि. ११ M सुर हूवउ. १२ B विराम°. १३ M अपढमणरय; K  
 पढमइ णरय°. १४ MB मणि°.

5 b धय णामु सुकेतुः. 8 b वणिणा सुकेतुना. 15 b रामासु तिर्यग्मनुष्यदेवत्रीषु, विरायपणामयर  
 वीतरागपणामकराः. 16 अपढमइ णरयणिकेयइ अधः षण्णरकबिलेषु. 17 पुष्पदंतवासंतरि ज्योतिर्निकाये.

पिसुरासुरविजाहरसुरये अहोमै आसि सनवसरणे ॥  
गुणपालजिणिं जं भणितं जं नईं वि पईं वि सुंरि सुणितं । सुवकं ॥

1

देवि सुलोयणि विंत्तु कहाणउं  
इय जएण पुच्छिय भासइ सइ  
तेत्यु जि चारु पुंडरिक्किणिपुरि  
ससिरिपालु वसुपालु परेसर  
ता चित्तिउ कुवेरसिरिमायइ  
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ  
अण्णु वि सो कुवेरपिउ भायर  
रग्य वेणिण वि ते पुणरवि णाया  
एस भणंतिहि वामउ लोयणु  
दियवइ परमुच्छाहु ण भाइउ

घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहर  
गुणपालु देउ सुरपरियरिउ

उं इज्जहि नव्वु अहिणरउं ।  
सिरिपालु देउ गुणसंउइ ।  
वरलोहाणिजियसुरवाधरे । 5  
सहुं पिवसइ पं ललुह सुरेसर ।  
जंयिउ सुहकुहइरगयवायइ ।  
एहु पं डीलइ णाहु नहारउ ।  
तेपं णिज्जिय चंदु विवायर ।  
किं जाणहुं विहाय सिविजाया । 10  
फंदइ सुहिदंसपसंपायणु ।  
ताम संमुहं वणवालु फणइउ ।

सुणि सामिणि केवळणउव्वण ॥  
उज्जाणि महाग्गिन्दि अवररिउ । ३ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वम्मण्डाहण्टलन्दाणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरसु ।

एतेण समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

MB give it.

1. 'MBK ललं वेणसि. = MB डणु. ३ MB सिरिवालु. ४ M सिरिपालं वसुं; B सो सिरि-  
पालं वसुं. ५ K 'कुहसगय' but corrects it to 'कुहसगय'. ६ K गय ते विणिण वि.  
७ M गय B सुहं. ८ M गुणवालु.

1 10 ६ अतिनाम निवांभूताः मोक्षं गताः.



## 2

अण्णेक्कु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ  
जो कुबेरपिउ जायउ मुणिवरु  
तं णिसुणेवि देवि<sup>१</sup> रोमंचिय  
बंदणहत्तिइ गय परमेसरि  
चल्लिय सुंदर चोइय संदण  
दिट्ठ तेहिं उववाणि विहर्यायवु  
पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं  
तहु तलि जक्खु णाम जंगपालउ

घत्ता—जगपालणरिंदहु तवचरणे  
तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु

झाणवसेण णिमीलियणेत्तउ ।  
सो आयउ तुम्हारउ भायरु ।  
वेल्लि व अमयरसोहे सिंचिय ।  
हूई हयगयलालामयसरि ।  
अण्णे पंथे विण्णि वि णंदण । 5  
सदलु सहलु कोमलु वडपायवु ।  
संथुउ णाणं बुहयणवयणहिं ।  
अवरु णिहालिउ णरवरमेलउ ।

सुरु लोएं तहिं संणिहिउ वणे ॥  
वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥ 10

## 3

विण्णि वि णारिउ विण्णि वि णरवर  
तं णिसुणेवि कुमारें उत्तउं  
णरवेसेण सरलसोमाली  
तहि अवरसरि कामें सरु ढोइउ  
ढिल्लीहूयउ णीवीबंधणु  
फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ  
सुसई वयणु खलियक्खरु भासइ  
पुक्खलवइविसयम्मि सुहम्मउ  
तहिं सिरिउरि लच्छीहरु णरवइ

जइ णंचंति होंति ता मणहर ।  
देव देव मइं मुणितं णिरुत्तउं ।  
एह दुइज्जी णडइ महेली ।  
मायापुरिसैं रमणु पलोइउ ।  
परिभमंति णयणइं कंणइ मणु । 5  
केसभारु दढबंणु वि वियलइ ।  
ता कंचुइइ सुहयहु सीसइ ।  
रम्मउ देसु घणोहे रम्मउ ।  
तहु सुहकारिणि घरिणि जयावइ ।

2. १ B omits from देवि down to चल्लिय in 5 a. २ MB विहियायउ, T विहयायउ.  
३ MB पायउ. ४ B जुगपालउ. ५ MB सुरलोएं.

३. १ MB णचंत. २ MB वुत्तउं. ३ MB सरु कामें. ४ MB कंणिय तणु. ५ MB दढबंधु वि  
विलुलइ. ६ B सुसियवयणु. ७ MB कंचुइइ. ८ MB सहम्मउ. ९ MB सिरिउलि.

2. ७ a वि ह या य वु विहततापः.

3. 8 a सुहम्मउ सुहर्म्यः.

जसमइ दुहिय महिय णिवंचंदे  
 सयकंदप्पदप्पदुमकंदे  
 पुरिसवेस णच्चंती जाणइ  
 तं णिसुणिवि महु गायणवायण  
 दिट्ठउ मंतिहिं जं जिह जेहउ  
 घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं  
 णच्चावहि दावहि तणय तिह

पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिंदे । 10  
 अक्खिउ इंदभूइसवणिंदे ।  
 जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।  
 दिण्णा रापं भाउप्पायण ।  
 कच्चु पयासिउ तं तिह तेहउ ।  
 णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥ 15  
 वरइच्च णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय  
 सुय णयराउ णयरि णच्चंती  
 एवहिं एउ समागय पुरवरु  
 णयइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी  
 ताहं जुवेसं दिण्णइं वत्थइं  
 एत्थंतरि सुंदिंसुहइं जणेरउ  
 तहु वयणं चहिय विणिण वि जण  
 ताम णियच्छिउ तेहिं अरुद्धउ  
 आसु पमग्गिउ सो सिरिपाले  
 घत्ता—सो नहि कयपरिणामं णटिउ  
 आत्मणु जि सेण्णमज्झि चलिउ

ता मइं आणिय णं वणदेवय ।  
 जणु णवरससलिले सिंचंती ।  
 तुहं दिट्ठो सि होसि एयहि वरु ।  
 णडपरमेसरपुत्ति दुइज्जी ।  
 आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं । 5  
 जणणियाद पेसिउ हक्कारउ ।  
 अग्गइ अणुंसरंति जा सज्जण ।  
 णवरु चंचलतुरयारुद्धउ ।  
 दिण्णउं धणु नेव्विणु हयंवाले ।  
 सहसा कुमारु हयवणि चडिउ ॥ 10  
 हरि दुरु गंपि दुरुह्लिउ ॥ ४ ॥

5

वाहपवाहजल्लहियणयणहं  
 तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ

दाहारउ मंहेतहं सयणां ।  
 मतिवइ माउन्नमीउ समायउ ।

१० MB णिरिंदे.

4. १ MB णउ पग्गेसरं. २ MB सुद्धं णियवरउ. ३ MB अणुसरं. ४ MB पमग्गिं.

15 परि सं चि वि परि-नम.

४. 1 व णिरावय यवज्जाहउ. 1 व सहेजं सहावा. 5 व दपेमें सुग्गयेण मत्तयेण. ४ व 10 व उ अरुद्धः. 10 व व परि णामं कर्मपरिणामा.

इट्टविओयसोयतवियंगउ  
जणणि वि सोउ करंति णिवारिय  
गयइं तेत्थु जहिं जियवम्मीसरु  
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ  
भाणिउं कुबेरसिरीइ दुरासैं  
तहु भयवंत समागमु कइयहुं  
तइयहुं आयुंउ पेक्खहि बालउ  
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं

घत्ता—वेयडुमहामहिहरणियाडे  
रिउणा तुरयत्तणु परिहरिउ

णं पक्खुज्झिउ पडिउ विहंगैउ ।  
मंतिहि कह व कह व सा हारिय ।  
केवलणाणधारि जोईसरु । ६  
भत्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।  
पुत्तु महारउ णिउ मायासैं ।  
पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।  
ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।  
सिविरु मुएप्पिणु मायापुत्तइं । 10

काणणि कुसुमियतरुवरि वियडि ॥  
भीयरु रयणीयररुवु धरिउ ॥ ५ ॥

5. १ MB add after this the following lines:—

पेक्खेवि णंदणु सोयकंतउ  
अवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)  
हाहाकारु करंतउ देविए  
कहहु एहु किं मुच्छिउ णंदणु  
केण वि कहिय वत्त परमेसरि  
तं णिसुणेवि वच्छ पभणंती  
अशु समोडइ दुक्खें राणी ( B रीणी )  
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ  
किं अवहरियइं रणिण चरंतइं  
हा किं पावें हिउ महु णंदणु  
हा विहि दइव केण हरि ढोइउ  
पुहइणाहु गुणमणिरयणायरु  
जेण अणंगहु हय बाणावलि  
कसु धाहावमि को आसंघमि

सयलु वि परियणु दिट्टु भवंतउ ।  
पुच्छिय मंति जगत्तयसेविए ।  
जो जगचंदु (B जगवंदु) जेम वरचंदणु ।  
हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।  
महियले णिवडिय देवि रुअंती ।  
सप्पि व दंडाहय विहाणी ।  
केण दुरासैं हयवरु ढोइउ ।  
पक्खिणिहरिणिवराहिहि पुत्तइं ।  
तिट्ठुअणजणमणयणाणंदणु ।  
जे महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।  
हा कहं सुक्कु (Bकसु मुक्क) रुअंतउ भायरु ।  
सो पइं पुत्त ण वंदिउ केवलि ।  
हा हा दइव कवण दिसि लंघमि ।

२ MB आवइ. ३ MB मुएविणु. ४ MB रयणियरत्तउ.

5. 1 a बाह° अश्रूणि. 4 b हारिय आश्वासिता. 7 b मायासैं मायाश्वेन. 12 रयणीयररुवु  
राक्षसरूपम्.

6

उरयलविलुलियविसहरहारो  
 पंडुरपविरलदीहरदसणो  
 मंदरकंदरसंणिहंतोडो  
 सिसुससहरसमदाढाभीसो  
 णवघणसामलकुवलयकालो  
 भासइ हित्ता घरिणि महारी  
 कुद्धो तुज्झु दुरंतंकयंतो  
 भैरइ कुबेरसिरीए पुत्तो  
 एण्ह भवजलसायरतरणं  
 माँमणिओ तुरएण कुमारो  
 ता विहंगजाणियसुहिदुक्खो

कडियलवँलइयघोणसघोरो ।  
 वग्घचम्मवरविरइयवसणो ।  
 मणुयवसाचच्चिकियगंडो ।  
 जलियजलणजालाणिहकेसो ।  
 खयरो होऊणं वेयालो । 5  
 पइं गयँजम्मि सुचंपयगोरी ।  
 जाँसि इदाणी कह जीयंतो ।  
 अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो ।  
 जिणवरकमकमलं मह सरणं ।  
 इय जणवत्ताबुज्झियचारो । 10  
 पत्तो तहिं जयंपालो जक्खो ।

घत्ता—रणभैरघुरधारियकंधरहो  
 जुवरायहु काराणि दुद्धरहो

चंडासिदंडमंडियकरहो ॥  
 अब्भिद्दु जक्खु रयणीयरहो ॥ ६ ॥

7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस  
 मा णिवडहि जलंति कालाणलि  
 मा ओहइउ आउ तुहारउ  
 अमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ  
 सो रक्खेँ खग्गेण दुहाइउ

जाहि जाहि विज्जाहररक्खस ।  
 वइवसवयणविवरि जगघंघलि ।  
 मा तासहि कुमारु महु केरउ ।  
 एम भणंतु महंतु महाइउ ।  
 वणसुरवरु विहिं रूविहिं धाइउ । 5

6. १ MB °विरइय°. २ MB °संणिहंतुडो. ३ MB गयजम्मे चंपयगोरी. ४ MB तुरंतु कयंतो.  
 ५ MB एवहिं कहिं तुहु जासि जियंतो. ६ MB भणइ. ७ MB जाम णिहिउ; B सामणिओ; K माणिणिओ.  
 ८ MB °सुहदुक्खो. ९ MB जगपालो. १० M रणभरघरधारिय°; G रणभरधारिय°.

6. 10 a माम णिओ मामकः मदीयः.

7. 2 b वइवस° यमः; °घं घलि आपदि. 4 b महाइउ महादतः. 5 b वणसुरवरु व्यन्तरदेवो यक्षः.

हय विणिण वि चत्तारि समुग्गय  
 पहय चयारि अट्ट पडिआया  
 हय सोलह बत्तीस भयंकर  
 चउसट्टिहिं वेउव्विउ रूवउ  
 तं पि दुँवड्डिउ ववगयसंखहिं  
 घत्ता—रयणियरहु भुयबलु णउ कलिउं  
 किं होही कम्मं णियंतियउं

गलगज्जंत दिव्वं णं दिग्गय ।  
 अट्ट वि हय सोलह संजाया ।  
 बत्तीसहं चउसट्टि मउद्धुर ।  
 अट्टावीसँउं सउं संभूयउ ।  
 जलु थलु णहयलु पिहियउ जक्खहिं ।  
 देवहु हियउल्लउं संचलिउं ॥  
 भवियव्वु कुमारहु चित्तियउं ॥ ७ ॥

8

तं तहु हौतउ सुँहुं पडिवण्णउं  
 रुण्णयसेलहु उप्परि थाइवि  
 रिउणा घित्तउ खयलोयरियउ  
 सणिउं सणिउं सिरिसिहरइ ठवियउ  
 फलिहसिल्लायलु ढंकिउ सरवरु  
 तोयाकंखइ धवलि पँवित्थरि  
 चित्तइ बालउ विभिउं णिब्भरु  
 ता तहिं अवसरि कामकिसोरी  
 जलविवरंतरि सा पइसंती  
 तेण वि मग्गें जायवि कोमलु  
 घत्ता—धँवलेहिं चलंतिहिं लोयणिहिं  
 कलसंकियकडिइ णियच्छियउ

थिउ विरएवि रूवु पच्छण्णउं ।  
 जोयणसउ गयणंगणि जाइवि ।  
 देविंदे<sup>३</sup> लहु विज्जइ धरियउ ।  
 णिवणंदणु तहिं तण्हइ खवियउ ।  
 दिट्टउ जलु मैणिवि गउ सुंदरु । 5  
 पसरियकरयल्लं लग्गा पत्थरि ।  
 देससहावें सलिलु वि णिट्ठरु ।  
 घडकडियल संप्राइय गोरी ।  
 दिट्ठी तरुणें णीरु भरंती ।  
 रसिउ तेण सुकुसुमंरयपरिमलु । 10  
 सो महिवइ मर्यंणुक्कोवणिहिं ॥  
 पडिहँहयाइ णाउंछियउ ॥ ८ ॥

7. १ M मत्त. २ MB पडिमाया. ३ M अट्टावीसा सउ. ४ MB य वड्डिउ. ५ MB कम्मणियत्तियउ.

8. १ MB सुह°. २ MB रूउ. ३ MB देवें दलु लहु, T दललहु पर्णलघु. ४ MB °सिलायालि.  
 ५ MB मण्णेविणु सुदरु. ६ MB सवित्थरि. ७ MB °करयलु ८ MB विंभय°. ९ MB °संपाइय°. १० MB °रयपरिमलु. ११ MB चवलचलंतहिं लोयणहिं; K वलतहिं. १२ MB मयणुक्कोयणहिं. १३ MB पडिहँहय णायाउच्छियउ, T परिहाहय.

8 b मउद्धुर मंदोत्कट..

8. 3 a खयलोयरियउ आकाशादवतीर्णः. 10a कोमलु मनोज्ञम् 12 पडिहाहयाइ प्रतिभाहृतया.

9

सरत्तन्वपयत्तणिद्धइ  
 हरे जइ तो तहु चहु ण लंछणु  
 सति जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ  
 लुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि  
 मइं अवलोइउ एक्कु जुवाणउ  
 किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ  
 लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ  
 ता संचलियउ पंच कुमारिउ  
 णं कंदप्पे भल्लिउ मुक्कउ  
 भासिउ भइं धवलियगयणहिं  
 किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ  
 तं णिसुणेप्पिणु विहसिवि धिट्ठइ  
 घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ  
 सीहउरि सहइ णरवालणिवुं

आइय भवणहु भासिउं मुद्धइ ।  
 वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमंघणु ।  
 रवि जइ तो सो ण वि अत्थं गउ ।  
 तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।  
 किं जाणहु तेल्लोकहु राणउ । 5  
 सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।  
 घोळउ थणयलि णं मणिहारउ ।  
 गयहु पासि णावइ गणियारिउ ।  
 ताउ तासु आसण्णउ दुक्कउ ।  
 किं जोयहु अंडुद्धुहिं णयणहिं । 10  
 आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।  
 दिण्णु पडुत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ ।  
 पर्यडम्मि देसि दुज्जोहणइ ॥  
 लच्छीकंतइ णं लच्छिधु ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकंतहि लहुयारी  
 मयणकंत मयणवइ कुमारिहि  
 अवर वि विमल वयंसिय छट्ठी  
 अम्हहिं सहुं उववणि कीलंती  
 मग्गिउ ते<sup>३</sup> ताएण ण दिण्णउ  
 भणिउ जणणु रिसिणा पिहुबोहें

जयदत्ता एयहुं गरुयारी ।  
 जयवइ जेट्ठहुं जणमणहारिहि ।  
 असणिवेयखयरिंदे दिट्ठी ।  
 कामुयमइणेहेणुब्भंती ।  
 पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ । 5  
 एवहिं णरवइ काइं विवाहें ।

9. १ MB °समिद्धइ. २ MB कुसुमधणु. ३ MB गणियारउ. ४ MB धवलियवयणहिं. ५ MB अद्धद्धहिं. ६ MB पायडवि. ७ MB °णिउ. ८ MB लच्छिधउ.

10. १ MB मयणकंति. २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ. ३ M पहुबोहें.

9. 8 a गणियारिउ हस्तिन्यः. 14 लच्छिधउ विष्णुः .

10. 4 a कामुयेत्यादि—विद्युद्वेगविद्याधरस्य मतिः कामासक्त्या विह्वलीभूता. 6 b पिहुबोहें पृथुज्ञानेन.

गेहिणीउ होसंति पिसक्किहु  
पुणु अम्हइं मग्गइ तडिवेयउ  
चोरिवि आणियाउ णिक्करुणें  
तेण दुरासएण दुइतें

घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवच्छवि जणिउ  
अप्पउ हियवइ सोयंतियउ

तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चक्किहु ।  
पिउँवयणेण णिरुत्तरु जायउ ।  
जलयसिंगसंचोइयचरणें ।  
णिहियउ णिज्जणि रोसु वहंतें । 10  
ताल्लूरजुयलसंणिहथणिउ ॥  
सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥ १० ॥

## ॥

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं  
लइ लइ घरिणि कंत रिउचंडहिं  
भासइ सूहउ जइ वि रवण्णउं  
अण्णेक्क वि कुमारि संप्राइय  
णियडी हौंति अणंगें लुद्धी  
सवरें हय सारंगि व लोलइ  
तहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ  
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ  
सरसालाव तासु सुइ पाविय  
जं वल्लहु महुइ अवरुंडिउ  
तं दोसेण विज्ज गय णासिवि  
हुइ कामगहें विवरेरी

घत्ता—अचलत्तें णिज्जियमहिहरहु  
सिरिसिहरहु चउजोयणसयहिं

अण्णु कि णाहुहु मत्थइ सिंगइं ।  
अवरुंडहि दीहहिं भुयदंडहिं ।  
कण्णारयणु होइ णादिण्णउं ।  
रक्खसिरुवें कहिं वि ण माइय ।  
पंचहिं सरहिं उरत्थलि विद्धी । 5  
सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।  
वग्घिहि गंधें णावइ हरिणिउ ।  
सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।  
णयणँजुवल मीणा इव भामिय ।  
जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ । 10  
थिय ससिमुहि अप्पाणउं दूसिवि ।  
पुच्छइ सूहउ तुहुं कहु केरी ।

सा कहइ सवइयरु णरवरहु ॥  
रयणउरु अत्थि मंडिउ घयहिं ॥ २१ ॥

४ B णियवयणेण, ५ M णिरुत्तउ, ६ MB माल्लर°.

11. १ MB परिणि . २ MB सुहउ जइ वि सुरवण्णउं. ३ MB संपाइय. ४ MB रक्खसरुविणि  
कह वि. ५ MB लुद्धी. ६ MB पंचसरेहिं. ७ M णयणजुवल मीणी इव; B णयणक्व मीणी इव. ८ MB  
मंडइ. ९ MB ससिविमुह.

7 a पिसक्किहु बाणयुक्तस्य. 9 b जलयसिंग° मेघमस्तकम्. 11 ताल्लर° बित्त्वफलम्.

11. 1 a कि किम्. 4 a सयणमग्गु पर्यङ्कः. 9 a तासु श्रीपालस्य, सुइ कणौ. 12 a विवरेरी  
विह्वला. 13 सवइयरु स्वव्यतिकरम्.

## 12

थणियवेउ तहि अत्थि णरेसरु  
 असणिवेउ तहु पुचु पमत्तउ  
 हउं तहु तणिय वहिणि पिय तडिरय  
 किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि  
 दूरहु जोइथो सि मइं रोसैं  
 णवर हउं जि हय वम्महकंडैं  
 देँ सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ  
 एक्कवार जइ कँरि करु ढोयहि  
 तो जीवियफ़ल्लु मइं जग्गि लद्धउं  
 महुँ विणपं पारद्ध महुच्छव  
 तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि  
 ता सा गय जवेण रयणउरहु  
 मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं  
 घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ  
 जहिँ णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि

जोइँवेयदेविहि वल्लहु वरु ।  
 तेणाणेप्पिणु ईह तुहुं धित्तउ ।  
 तें पेसिय पइं णियहुं समागय ।  
 णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयलि ।  
 किर पइं हणमि णिसाँयरिवेसैं । 5  
 इंदचंदणाइंदविहंडैं ।  
 मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।  
 एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।  
 तं तहि भासिउ तेण णिसिद्धउ ।  
 जइ पइं देंति मिलेविणुँ वंधव । 10  
 कण्णासाहसेण हउं लज्जमि ।  
 भासइ भाइहि मारियवइरहु ।  
 मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं ॥  
 असहंतिइ असणिवेयससइ ॥  
 तहिँ पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

## 13

ताइ गंपि सूहउ अब्भत्थिउ  
 विज्जाहररायहिँ रइधुत्तिउ  
 सो परिणेसइ रुइहयरविरहु  
 रुवुँ तुहारउ हियवइ भावइ  
 भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ

जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ ।  
 थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।  
 चक्कवट्टि सिरिपालु महापहु ।  
 विज्जुवेय पिय दुक्करु जीवइ ।  
 होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ । 5

12. १. B जाइवेय°. २ MB तुहुं इह. ३ MB णिसायरवेसैं. ४ M दिहि. ५ MB करु करि.  
 ६ MB बहुविणपं. ७ K मिलेप्पिणु. ८ MB मारीय°.

13. १ MB सिरिवालु. २ MB रुउ. ३ MBK विज्जवेय.

12. 3 a तडिरय विगुहेगा. 13 a पलसयलइं मांसत्तण्डानि. 11 मयणवडाय मदनपताकानात्री.



जाहि दूह हउं पिययमु होसमि  
तं णिसुणिवि गय गेहहु दूई  
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि  
कुमरिउ रमणभावरसगिल्लउ

वालहि लीलालिंगणु देसमि ।  
आलोइय कुमारि किस हूई ।  
अच्छइ णरमयरद्धउ जेत्तहि ।  
संभासंतु ताउ पुव्विल्लउ ।

घत्ता—अवलोइवि सुंदरि सुंदरिउ  
णं मुणिवरवित्तिहि दुग्गइउ

वणि णट्टउ खणि छै वि कुंयरिउ ॥ 10  
णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥ १३ ॥

## 14

आय णिसण्णी णियडि खगेसरि  
चवइ सवयणु पिहेप्पिणु हत्थे  
भो मणसियकणोहवित्थारा  
हउं वि सणेहिं जांपिय पेक्खमि  
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ  
एम चवेप्पिणु मरगयतोरणु  
तहिं कुवेरसिरित्तणुरुहु णिहियउ  
अणुदिणु पंतिहिं रइरसतुरियहिं  
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेप्पिणु  
अरुणावरणच्छणु खरतोडे  
णिउ णिवचंदु रुंदगयणयलहु

णाइं समुहासण्ण महासरि ।  
एत्थु जि घोरतवह सामत्थे ।  
मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।  
तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि ।  
वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ । 6  
खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।  
रत्ते कंचलेण संपिहियउ ।  
जिह णउ धिप्पइ भूगोयरियहिं ।  
गय पणइणि पेसणु भाँसेप्पिणु ।  
मण्णिवि मासपिंडु भेरुंडे । 10  
अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आएसपुरिसणामं कधरि  
ताँ रक्खणभिच्चहिं णिम्मलहु

दूसहविओयसिहितावहरि ।  
घेरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥ १४ ॥

४ B सुंदर. ५ MBT छउओयरिउ and glass in T क्षामोदराः.

14. १ M अत्थु अ घोर°. २ MB भणेप्पिणु. ३ MB भावेप्पिणु. ४ MB सा. ५ MB घरि.

14. 3 a °कणोह° बाणौघः. 13 वप्पिलहु कच्छावतीदेगविजयाधे मेघपुरे कम्पनराजा, राज्ञी विमा-  
निनी, तयोः वप्पिला, तस्याः रत्ता सा मुद्रिका.

15

णाणारयणफुरंतपईवइ  
जाव पक्खि घराणियलि परिट्टिउ  
तसिउ खयरु उट्टिउ णहि चंचलु  
पडिउ धरहि किंकरहि णियच्छिउ  
एत्तहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु  
थुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं  
जे दिट्ठे णट्ठइ संचिउ मलु  
जे दिट्ठे कुदिट्ठि ओहट्टइ  
जे दिट्ठे उवसमु संपज्जइ  
जे दिट्ठे दुग्गइगइ णासइ  
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवारिउ  
थोत्तवित्तु कइमग्गपसिद्धउ

सिद्धकूडजिर्णाणिलयसमीवइ ।  
ता पहु अंगु वलेप्पिणु उट्टिउ ।  
तहु पयणहलगाउ गउ कंवलु ।  
जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ ।  
दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकरु । 5  
विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं ।  
जे दिट्ठे उप्पज्जइ केवलु ।  
जे दिट्ठे सम्मइ परिवट्टइ ।  
जे दिट्ठे अप्पउ परु णज्जइ ।  
जे दिट्ठे जगु सयलु वि दीसइ । 1)  
देवदेउ अरहंतु भडारउ ।  
गुणवालंगरुहे पारद्धउ ।

घत्ता--तुहं मायवप्पु तुहं संतियरु  
जिण णिममय तेरी जेहि तणु

तुहं णिरलंकारु वि हिययहरु ॥  
इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

16

इय वंदिवि जिणु गुणहिं विसिट्ठउ  
तां तहिं संपत्तउ खेयरणरु  
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ  
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि  
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु

मुहंमंडवि कुमारु उवविट्ठउ ।  
आहासइ सिरसंजोइयकरु ।  
अणिलवेउ णामे खगराणउ ।  
सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।  
पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु । 5

15. १ MB °जिणभवन°. २ M लेविणुउ दिट्ठउ; B वलेविणु तुट्टिउ, ३ MB एतएण ते दिट्ठउ.  
४ MB णिट्ठइ संचिय मलु. ५ M °णिवारिउ. ६ MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय.

16. १ MB सुहंमंडवि. २ MB उवइट्टउ. ३ MB तो.

15. 10 a दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्.

10. 1 a मुहंमंडवि रज्जमण्डपे. 5 a पणय° प्रणता श्रेययुक्ता वा.

गाढधरियसंजमसुहलीसैं  
जेणाएं विहडंति सुणिविडइं  
होसइ सो वम्महसरभत्थहि  
हउं जोयहुं राएण णिवेइउ  
णेच्छंतु वि कुमार उच्चाइउ  
चिक्कमंति पासायहु उप्परि  
सा भोयवइ तेण सुइलीणें  
एह णारि आसीविस णाइणि  
विणु आहारें एह विसूई

घत्ता--खयरहिवपुरिसाणियंविणिइ  
थणजुयलउ णिच्चाणिरुवियउं

तं जाणिवि जंपियउ जईसैं ।  
सिद्धकूडजिणभवणकवाडइं ।  
वरु तुह सुयहि सुइवपसत्थहि ।  
णरवइ तुहुं एवहिं संभाइउ ।  
णहयरु तुरिउ णहेणुच्चाइउ ।  
पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि ।  
णिंदिय बंधवसोयविलीणें ।  
एह णारि असुभक्खिणि डाइणि ।  
विणु सिहिणा वि चुरुलि संभूई ।

दुज्जणलीणइ मणैताविणिइ ॥ 15  
णियमणथइत्तणु दावियउं ॥ १६ ॥

## 17

कंदरेण विणु वग्घि महेली  
रयणि व मित्तहु पुरउ ण थक्कइ  
मईरा इव णिच्चु जि मयमत्ती  
हो हो उक्कंठिउ णिरु अच्छमि  
तो हउं जीवमि दिट्ठे णाहें  
एम भणंतु रइयरिउभेयहु  
अण्णु वि अक्खिउ जिह णउ इच्छिउ  
णियसुयणिदावायविरुद्धें

गरलसत्ति णं मारणसीली ।  
समलहु दोसायरहु पदुक्कइ ।  
साणि व दाणमेत्तकयमेत्ती ।  
मायभाउ जइ बेणिण वि पेच्छमि ।  
होउ पहुच्चइ मज्झु विवाहें ।  
दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु ।  
जिह तं णारीरयणु दुग्गुच्छिउ ।  
तं णिसुणिवि खयरसैं कुद्धें ।

४ MB सखुव°. ५ MB संभासिउ. ६ GK record a p सइलीणें इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शास्त्र-  
लीनेन वा. ७ MB परताविणिइ. ८ MB °थइत्तणु.

17. १ MB गयसत्ति व णरमारण°. २ MB मयराइ व. ३ M साणि व दाणमेत्तकय°; B साणिववाण-  
कयमेत्ती. ४ MB दुगच्छिउ.

७ a सुहलीसैं शोभनहलीषेण (हलीषेण), धुरंधरेणेत्यर्थः. 7 a जेणाएं येन आगतेन. 9 a संभाइउ  
संभावितो दृष्टः. 12 a सुइलीणें शास्त्रलीनेन. 14 a विसूई विषूचिका; b चुरुलि ज्वाला.

17. 3 a साणिव कुकुरीव.

उत्तउं उच्चाएण्णिणु णिज्जाणि  
थेरीरुवुं रएवि दइच्चें  
घत्ता--छुड्ड छुड्ड जि णिहित्तउ बालु तर्हि  
झायंतु मंतु बलणिज्जियउ

एहु गहिल्लउ घल्लउ पिउवाणि ।  
घत्तिउ सो तर्हि तेण जि भिच्चें । 10  
हरिकेउ पवणजवपुत्तु जर्हि ॥  
सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

## 18

तंबिरणेत्तइ पिंगलकेसइ  
विज्जइ वंतउं जं जं जेहउं  
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ  
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि  
सिद्धी तुज्जु वीर परमत्थें  
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें  
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु  
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ  
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणर्हि  
सुट्टु दुसज्जइ णिर्हं णिरवज्जइ  
घत्ता--बारह संवच्छर इह वसिउ  
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं

दाढाभीसणरक्खसवेसइ ।  
उट्टिवि अंजलि तं तं तेहउं ।  
सुहडच्चिनु ण वि किं पि वि भीयउ ।  
कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि ।  
तां पविलोइय वुट्टावत्थें । 5  
णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें ।  
ता पत्तउ खयरहिवणंदणु ।  
हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ ।  
सो दिट्ठो सि देव णियणयणर्हि ।  
जाणिओ सि मँइ सिद्धइ विज्जइ । 10  
फलकालि अज्ज विज्जहि तसिउ ॥  
उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

## 19

एम भणिवि गउ णहयरु जावर्हि  
गलिय रयणि उग्गामिउ दिवायरु  
रण्णि भवंतें तेण णिविट्ठी  
उग्गामिवि करु भिउंहुवि णयणइं  
चित्तइ णरवइ वर होज्जउ तणु

पहर चयारि वि णिट्ठिय तावर्हि ।  
संचल्लिउ वसुवालसहोयरु ।  
जरसीमंतिणि तरुतालि दिट्ठी ।  
देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं ।  
णउ माणुसु विणिबंधु विणिद्धणु । 5

५MB °रुड धरेवि. ६ MB जर्हि. ७ MB ता हरिपवणंजवपुत्तु तर्हि.

18. १ MB दाढी°. २ MB °भीसइ. MB वमियउं, ४ MB ताए विलोइय. ५ MB बिर्हि णय-  
णर्हि. ६ MB णिव. ७ M संसिद्धइ.

19. १ MB भवंती. २ B जरु. ३ MB भिउडिवि. ४ MB वरि होज्जइ. ५ MB णिबबंधउ णिद्धणु;  
T विणिबंधउ.

19. 4 a भिउ डु वि भ्रुकुटीकृत्य. 5 a त णु तृणम्; b विणिबंधु विनिर्गतबन्धुः; बन्धुरहितः.

हाँ किं णायरेहिं कलहिज्जइ  
ता चिरणारिइ णियतणु जेही  
तैं हत्थें णियंगु पँरिमट्टउ  
पुरुमहिलइ रायहु विण्णवियउ  
जं जिह देहि देव णिव्वत्तिउ  
तासु गवेसा पेसिय रापं  
सीहसरहसरपूरियदिप्पहि  
दिट्ठा सोलह सुहड महाबल

थेरि भणेप्पिणु एह हसिज्जइ ।  
विहिय कुमारहु तक्खणि तेही ।  
जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्टउ ।  
मइं वरइत्तचरिउ सच्चवियउ ।  
तं तिह जरसरूवु परियत्तिउ । 10  
वणि जंतें कुबेरसिरिजापं ।  
संठिय चउंदिस्सु मिलिय चउप्पहि ।  
सोलह पत्थर वट्टपवट्टल ।

घत्ता—सो तेहिं<sup>१०</sup> भणिउ सुमहुरगिरिहिं  
भो भो कुमार किं<sup>११</sup> चिक्कमहि

अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं ॥  
गोलयहु उवरि गोलउ थवहि ॥ १९ ॥ 15

## 20

इयरहं पंथिय जाहुं ण लब्भइ  
इय विहसेप्पिणु पंथिउ वुच्चैइ  
जामि बप्प किं एण पलावें  
एम्ब भणंतु वि धरिउ णिरंभिवि  
वट्टत्तिविडि वि रइय छइल्लें  
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ  
भिच्च कहंति महासिहरूढहु  
पवणवेउ णामें खयराहिउ

रायाणइ गोसिंणु णं दुब्भइ ।  
वट्टहु उप्परि वट्टु ण थक्कइ ।  
रायविणोपं मिच्छागावें ।  
हेवाइच्चें सत्तिइ थंभिवि ।  
पुच्छिय किंकर बुद्धिमहिंल्लें । 5  
वट्टहि वट्टवणु किं जुज्जइ ।  
उत्तरसेठियाहि वेयडुहु ।  
एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ ।

६ MB हा किह. ७ MB पर मट्टउ. ८ M जरसरूउ; B जरसत्तउ. ९ MB चउदिसि. १० B तेण. ११ Gकं.  
20. १ MB वि. २ BK बुक्कइ. ३ MBT वेहाइच्चें; GK record a p वेहाइच्चें इति पाठेप्यय-  
मेवार्थः; T हेवाइच्चें इति पाठेप्ययमेवार्थः. ४ MBK ०महल्लें. ५ MB महासिहरूढहु, G महासिररूढहु.

7 a चिरणारिइ वृद्धक्रिया. 9 a पुरुमहिलइ अतिवृद्धया. 13 b वट्टपवट्टल अतिशयेन वृत्ताः.

20. 5 a वट्टत्तिविडि उत्तरंडी (?); छइल्लें धूर्तेन. 8 b अक्खयराहिउ अक्षरद्रव्यस्याधिपः.

जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि  
 उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ  
 गय अणुयर णियणियरायंतिउ  
 मेहविमाणसिहंरि जोएप्पिणु  
 थळ्ळु महाणयरहुं बहि जाम्बहिं  
 घत्ता—जरकसरसिरइ लंबियथणिइ  
 हउं रीणी माइ किं पि चविउ

21

पसिढिलचम्मछिरालविवण्णी  
 णिववालहु केरउ सिरिमाणणु  
 छुहतण्हापहखेपं खीणउं  
 तिण्णि तिसाळुहपहसमणासइं  
 प्रॉसियाइं सुहणं रसेणिद्धइं  
 वसुवालहु जाइवि दरिसेसंमि  
 इय चितंतु जाम सो अच्छइ  
 ता बुड्ढइ कुंडुज्जलदंतिइ  
 महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि  
 चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि  
 जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ  
 कवणु णयरु को तुहुं के जायउ  
 घत्ता—तं णिसुणिवि भासइ चक्कवइ  
 गुणपॉल्लु राउ तहु तणउ सुउ

सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।  
 सो परिणेसइ सोलह कण्णउ । 10  
 कुवरें अग्गइ गमणु जि चित्तिउ ।  
 भूयरमणु काणणु मेळेप्पिणु ।  
 अवर वि बुड्ढ पराइय ताम्बहिं ।  
 आवेप्पिणु थेरणियंविणिइ ॥  
 कुवलीहलपिडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥ 15

तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी ।  
 दिट्टुओहंल्लिउं कमलाणणु ।  
 अंगु णिहालवि णिरु विद्वाणउं ।  
 दिण्णइं बोरइं अमयाभासइं ।  
 बीयइं चीरंचलइं णिबद्धइं । 5  
 णियपुरणंदणवणि पइरेसमि ।  
 णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।  
 देहि मोल्लु भासिउ पहसंतिइ ।  
 वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।  
 जं मग्गहि तं सयल्लु समप्पमि । 10  
 तो णिहणमि दालिहु तुहारउ ।  
 भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।  
 पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णरइ ॥  
 वसुपॉल्लु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ. ७ MB गय णर णियणियरायहं मंतिउ; T अणुयर. ८ MB °सिहर.  
 ९ MB तेण चविउ.

21. १ MB पसढिल°. २ MB °विराल°. ३ MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं. ४ MB पासियाइं;  
 ५ MB रसविद्धइं. ६ MB दंसेसमि. ७ MB किं इह. ८ MB सक्कवइ. ९ MB दिण्णरइ. १० MB गुणवालु.  
 ११ MB वसुवालहु.

11 a °रायं तिउ राजसमीपे. 14 °कसर° पाण्डुराः.

21. 1 a °विवण्णी विरूपा. 6 b पइरेसमि वप्प्यामि.

## 22

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि  
 मायाहरिवरेण पत्थाणिउ  
 गुरुविओयसंतावेँ णिट्ठिउ  
 जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि  
 भणइ बुद्धं भो तुहुं णर दीणउ  
 बोरट्टिलियउ बंधिवि लइयउ  
 परदोगेँच्छु तुहुं वि किं णासहि  
 तेरउ पुरु महियरहं अगोयरु  
 णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि  
 आरा सरु सा भणिय महीसेँ

घत्ता—णवरुल्ललिवि पयणियपुलइ

जाणिय तेण वि मायाविणिय

सुरवीणातंतिहिं गाइज्जमि ।  
 जोइसिपहिं असेसेहिं जाणिउ ।  
 अच्छमि सुट्टु इट्टुउकंठिउ ।  
 णं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।  
 एण सहावेँ होसि ण राणउ ।  
 कवणेँ दइवेँ तुहुं नृवुँ रइयउ ।  
 अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।  
 कहिं तुहुं कहिं सो तुज्जु सहोयरु ।  
 महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।  
 णासिउँ रोउ पाणिसंफासिँ ।

आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥

लइ एह खयरि मयणेँ वणिय ॥ २२ ॥

## 23

कहइ कुमारु म भउंहउ चालहि  
 कइयवेण किं पृउँ आढप्पइ  
 ता जररुउ विमुक्कउ कण्णइ  
 भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल  
 तेत्थु धोयकलहोयमहीहरु  
 राउ अकंपणु विजाहरवइ  
 णामेँ हउं भुयणयलि पसिद्धी  
 णहयरणाहहिं मिलिँवि सणिद्धउ

हो हो केत्तिउ मइं खरियालहि ।  
 सन्भावेण मुद्धि ध्रुवुँ धिप्पइ ।  
 उत्तउं, कोमलसामलवण्णइ ।  
 पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।  
 तहिं रायँउरि वसइ करिकरकरु ।  
 ससिपह गेहिणि धूव सुहावइ ।  
 सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।  
 महु विज्जाजयपट्टु णिवद्धउ ।

22. १ MB सिरिवालु. २ MB अणेयहिं. ३ MB बुद्धु तुहुं णरवर दीणउ. ४ MB णिउ. ५ MB  
 °दोगत्तु. ६ B णासमि. ७ MB °संपरिसेँ.

23. १ MB खलियारहि; T खरियालहि. २ MB कइवएण. ३ MB पिउ. ४ MB घुउ. ५ MB  
 गयउरि णिवसइ. ६ K मिलवि.

22. 10 a आ रा सरु समीपमागच्छ. 12 वणिय व्रणिता.

23. 1 b ख रि या ल हि कदर्थयसि. 2 a क इ य वे ण कैतवेन कपटेन.

को वरु ताए पुच्छिउ जइवरु  
अवरु वि णिसुणि देव तुहुं सुहहलु  
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि  
ताहं पुत्ति वण्णिल महु पियसहि

तेण वि कहिउं तासुं चक्केसरु ।  
कच्छावइवसुहहि रर्ययायलु । 10  
कंपणु खगवइ धरिणि विमाणिणि ।  
णं गोमिणिरमणिहि वल्लह महि ।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय  
डज्झइ विरहे वेल्लहल किह

सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय ॥  
दवदहणे अहिणववेल्लि जिह ॥ २३ ॥

## 24

घरु गइयहि मुहणिग्गववायइ  
को वि आपसपुरिसु तहु मुदिय  
बालवयंसियाइ ण विकप्पिउ  
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं  
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु  
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि  
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु  
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु  
सूहव तुज्झु विओएं पीडिय  
कंदइ कणइ विमुक्कत्तंसी

महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।  
पेच्छवि सुय मयणेण विमदिय ।  
मज्झु वि ताइ सहियउं समप्पिउ ।  
मेलावक्कु करमि सहु णाहिं ।  
मयणवेयसीमंतिणिरमणहु । 5  
मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि ।  
जो जोइहिं भासिउ हयहिमदलु ।  
वियलिउ तहि तरुणिहि मणि दिहिबलु ।  
विंताचक्के सा वि भमाडिय ।  
दुक्करु जीवइ मज्झु वयंसी । 10

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ  
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ

उद्दामकामकीलणरसइ ॥  
पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB तुहुं जि. ८ MB रयणायलु. ९ B गोमिणिहि णवल्लवल्लह महि.

24. १ MB घर. २ MB अमु. ३ MB वियप्पिउ. ४ MB सहिउ. ५ MB सिसिरयराहे. ६ M  
तेरउ पेच्छवि; B तेरउ पुच्छवि. ७ MB मण°. ८ MBT विमुक्कवयंसी; Gp विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः;  
Kp विमुक्कत्तसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कत्तंसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

12 b गो मि णि र म णि हि लक्ष्मीधियः. 13 तोएं प्रस्वेदेन.

24. 3 b सहियउं स्वहृदयम्. 4 a ससिरयराहिं चन्द्रसदृशेन; b मेलावक्कु मेलापकः. 10 a  
विमुक्कत्तंसी विमुक्कावत्तंसा.



## 25

तुहुं एत्थाणिउ तडिजवखयरें  
 हउं णउ पत्तियंति गय तेत्तहि  
 पर्यकुवलयसंबोहणचंदहु  
 सज्जणणयणाणंदजणेउ  
 तेण पउत्तउ सिखुभूमीसरु  
 विज्जालाहें सहुं घरि पइसइ  
 दिट्ठउ तुहें भायरु अलिकुंतल  
 सुरमहिहरसमीवि णिवसंतइं  
 कंदंतइं विमुक्कसिरकेसइं  
 पव्वइं पइसिहिति पुरि तइयहुं  
 घत्ता—णरतरु गर्यं गय जि गयागयउ  
 भो वल्लह पइं एकेण विणु

एव पजंपिउ णरवइणियरें ।  
 तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि ।  
 पर्यहिं पडिय गुणपौलजिणिंदहु ।  
 पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ ।  
 सत्तमि दिणि आवइ भाभासुरु । ७  
 पुरयणु सयलु जिं एउ जि भासइ ।  
 दिट्ठी मायरि सोयविसंतुल ।  
 हा सिरिपाल्ल देव भणंतइं ।  
 दिट्ठइं परियणसयणसहासइं ।  
 तुहुं मिलिहीसि णराहिव जइयहुं । 10  
 गणियाउ णाइं वणदेवयउं ॥  
 जणसंकुलु पट्टणु णाइं वणु ॥ २५ ॥

## 26

गिरिसरिदरिवणसयइं णियंतिइ  
 दिट्ठी मउलियच्छि लोलंती  
 विज्जुवेय तुह विरहें सोसिय  
 जइ तुह पियसंजोउ ण संधमि  
 णियभालयलि किसोयरि जाणहि  
 भोयवइहि केरी वियलियमयं  
 उत्तउं ताइ वयंसिइ दिट्ठउ  
 णिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिाविणउं  
 संतिअत्थु सयलाहिं सुअरेव्वउ

खयरावासहिं पइं जोयंतिइ ।  
 पंडुगंडघुलियालयवंती ।  
 मरणमणोरह मइं मन्भीसिय ।  
 तो विज्जाहरपट्टु ण बंधमि ।  
 अप्पउ मा ललियंमि विमाणहि । ७  
 रइयारिणि सहि तहिं जि समागय ।  
 अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्ठउ ।  
 जिणपुज्जुच्छउ परइ सण्हवणउं ।  
 सिद्धकूडजिणणिलइ करेव्वउ ।

25. १ BK णरवर°. २ MB पिय°, ३ MB गुणवाल°. ४ MB वि. ५ MB भायरु तुह. ६ MB  
 °विसंथुल. ७ MB सिरिवाल देव पभणंतइं. ८ MB सिरि. ९ MBK सव्वइं. १० M गयागजिगयागउ; B  
 गय गय जि गयागयहो.

26. १ MB °दरिपट्टणइं भमंतिइ. २ MB मन्भीसिय.

25. ३ a पय कु व ल य° प्रजा: एव कुवलयानि.

26. ३ b मन्भीसिय आश्वासिता. ५ b विमाणहि क्लेशय. ८ b परइ प्रभाते.

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ  
भोयवइहि तुहुं सहि गउरविय

अवरहुं वि लेहु मुइइ सहिउ ॥ 10  
हक्कारी तुह हउं पट्टविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि  
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ  
सत्तावीसं जोयणवत्तउ  
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ  
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ  
हउं पइं दोदियहइं जोयंती  
जाम ताम तेरी वित्थारें  
पत्थायइ तुहुं मइं अवलोइउ  
कंचुइरुउ देव मइं धरियउ  
जाणिओ सि ँणेमित्तिकिवंधें

हउं आरूढी सिरिसिहरुप्परि ।  
दिट्टउ तहिं काणणि छक्कण्णउ ।  
भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।  
मइं कारुण्णएण मृगंणेत्तउ ।  
अप्पियाउ णरवालहु धीयउ । 5  
अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।  
कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।  
मयणें पंचमु सरु मणि ढोइउ ।  
पिडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।  
कहिय पुंडरिंकिणिपुरचिंधें । 10

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥  
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे विज्जाहरकुमारीविरहैवण्णणं  
णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥

॥ संधि ॥ ३२ ॥

३ MB हउं तुह.

27. १ MB मिगणेत्तउ. २ MB पंचमसरु. ३ MBT णेमित्तिणिबंधें. ४ MB °पुरि°. ५ MB  
°विरहवण्णणं.

27. 10 a णे मि ति कि बंधें नैमित्तिकानामादेशेन.

### XXXIII

सर्वोसहिसामत्यु तरुणै तेण पयासिउं ॥  
कयउं सुहावइयाइ णियवुडुत्तु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

संसाहियविज्जासासणेण  
उद्दामकामकामणमईहि  
बेण्णि वि तारुणालंक्रियाइं  
तुह देउ महारउ प्राणइट्टु  
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम  
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि  
धरि थेररूउ सुविचित्तकूडु  
तहि वोद्वेहीउ पीवरथणाउ  
कंकेल्लिवालपल्लवमुयाउ  
ता खंधारोहणु कियउ तेण  
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु

कोमलकरयलसंफासणेण ।  
विट्ठुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।  
खगकण्णइ वयणइं जंपियाइं । 5  
तुहुं चक्कपाणि सयमेव विट्ठु ।  
ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।  
चहु खंधइ से सुहकारिणीहि ।  
आवेहि जाहुं तं सिद्धकूड ।  
मिलिहिंति अज्जु तुह पणइणीउ । 10  
अवलोयहि खेयरवइसुयाउ ।  
सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।  
संपत्तइं जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइं उग्घुट्टइं ॥

बिण्णि वि वुडुइं ताइं मुहसालहि उवविट्टइं ॥ १ ॥

15

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

विनयाङ्करशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीशुषि क्रमेण ।

भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त ( प्रसक्त ? ) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °साहणेण. २ MB पाणइट्टु. ३ MB सुहयारिणीहि. ४ MBT वोद्वेहीउ. ५ MB  
संपत्तउ.

1. 4 a उद्दामे त्या दि—उद्दामकामः श्रीपालः तस्य कामने सेवने मतिर्यस्याः सा तस्याः. 6 b विट्ठु  
विण्णुः. 8 b चहु आरोपय. 10 a वोद्वेहीउ तरुण्यः .

## 2

भोयवइ भडारी विज्जुवेय  
 मयणवइ समागय मयणलील  
 अण्णाउ मणोहरवणियाउ  
 जरसरिधुयसिरकेसासियाइं  
 अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि  
 छंडिविं जरत्तु जाणियमईइ  
 थिय पुणु पच्छणी सा कुमारि  
 वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि  
 ताइ वि बोलाविउ पिउ अणंगु  
 भोयवइइ तहिं पारद्दु हासु  
 हालि असणिवेय ससि काइं करहि

तहिं दुक्की वप्पिल णिरुवमेय ।  
 रइरमणिहि केरी णाइं कील ।  
 कण्णाउ अट्ट अवइणियाउ ।  
 कुंयरिहिं थेरइं संभासियाइं ।  
 पुणु कंचुइ थिउ विब्भंतबुद्धि । 5  
 णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।  
 दुल्लक्खचारु होएवि थेरि ।  
 भूमंगे दरिसिउ तडिरयाहि ।  
 मायाजराइ पच्छाइयंगु ।  
 बुड्डु उप्परि पेम्माहिलासु । 10  
 लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयैरायसुर्याहिं बंभु महेसरु अच्चुउ ॥

णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

## 3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु  
 विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु  
 मज्झे खीणहिं संखीणपाउ  
 कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्लु  
 णहचारकमियमंदरदरीहिं  
 आहिसेउ कयउ पुज्जापयारु

चंचलचित्तहिं गिरिथविरचित्तु ।  
 मृगणेत्तहिं ज्ञाणणिलीणणेत्तु ।  
 थद्धत्थणीहिं णित्थद्धभाउ ।  
 जणमणसल्लिहिं णिम्मुकैसल्ल ।  
 वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं । 5  
 ता वंकंगीउ णामे कुमारु ।

2. १ MB मणोरम°. ६ MB कुअरिहिं. ३ MB विसमंतबुद्धि. ४ MB छडुवि. ५ MB सो जोइउ. ६ B सस; K ससे. ७ K खगराय°. ८ B °सुयहिं.

3. १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive. २ M मिग°. ३ MB थडु°. ४ MB णित्थडु°. ५ MBK णिम्मुकु. ६ MB वंकंगीउ.

2. 11 a ससि हे भगिनि.

3. 1 b गिरिथविर° अतिशयेन स्थिरम्.

संपत्तउ सहुं णियपरियणेण  
आहरणविसेसहिं विष्फुरंतु  
ता हसिवि पउत्तउ कंचुईइ  
इय भोयवंति पुरि तिसिरराउ  
सुय तासु पहावइ जेडु पुत्तु  
एयहि रयणिहिं रंजंतसाणि  
विरइउ विज्जइ कोट्टग्गभंगु

थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण ।  
किं धावँइ णरमेलउ तुरंतु ।  
के के ण वि हय विज्जारुईइ ।  
णिवसइ रइपँहकंतासहाउ । 10  
सिंहुं णामेँ गुणमंडर्णं णिउत्तु ।  
बहुवुविणि साहंतहु मसाणि ।  
जरवेपं कंपावियउं अंगु ।

घत्ता—आवेप्पिणु पणएण भिसएं भेसहु दिण्णउं ॥

वडुंतउ जरलिंगु रायकुमारहु छिण्णउं ॥ ३ ॥

16

## 4

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ  
किह होसइ सिंसुगलउज्जुयत्तु  
सव्वोसहि सिज्जइ भुवणि जासु  
करफंसँ तहु चकेसरासु  
आवेसइ सो जिणणाहणीहु  
तहु दिवसहु लग्गिवि भडसमेउ  
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु  
अण्णेक्कु लहइ मंडलु हयारि  
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ  
ता वेज्जँ वेज्ज घोसिउ णिवेणं  
णलिर्णाहकरग्गेँ छित्तु जाम

आउच्छिउ जणणेँ वीयराउ ।  
तं णिसुणवि जइवइणा पउत्तु ।  
तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु ।  
होसइ सुयगीयाभंगणासु ।  
णामेण पसिद्धउ सिद्धैकूहु । 5  
अवयरइ पहु सररिउणिकेउ ।  
सो चुंबइ कण्णहि तणउं वत्तु ।  
ता पभणइ धीरँ परोवयारि ।  
घम्मेण करमि सामँत्थ सज्ज ।  
आरा सरु हो भासिउ णिवेण । 10  
गलँमोडि पणट्टी तासु ताम ।

M धावउ, ८ MBK तिसिर राउ, ९ MB रविप्पह°, १० MB सिउ, ११ MB °मंडणु.

4. १ M सिंसुगलु उज्जुयत्तु, २ MBK °गीवा°, ३ MB सहसकूहु, ४ MB वीरु, ५ MB सामत्थु  
ज्जु, ६ M विज्जु विज्जु; G वेज्जु वेज्जु but gloss वैद्य वैद्य, ७ MB-सिवेण, ८ MB णरणाह, ९ MB  
लमोडिय फिट्ठिय.

b ° रुईइ आमिलाषेण, 14 भिसएं वैद्येन, 15 वडुंतउ जरलिंगु प्रवर्धमानं ज्वरस्य लिङ्गम्.

4. ४ b सररिउणिकेउ स्मररिपुर्जिनस्तस्य गृहम्, 9 b सज्ज साध्यम्, 10 b आरा सरु समीप  
गच्छ, 11 a णलिणा ह° कमलसदृशेन.

गड मंदिरं तणुरुहु सरलगीड  
परमेष्ठिघरंगणसंठिण  
केण वि कंचुइणा वाहि महिय

अवलोयवि सुट्टु पंहट्टु ताड ।  
परकज्जारंभुक्कंठिण ।  
इय मंतिहिं वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता--विरइयकवडजराए ढंकियणववयकायहो ॥

15

चल्लिड तुरिड णरिंहु पासु तासु जांवायहो ॥ ४ ॥

## 5

छुड्डु छुड्डु करि चोइड दाणवासु  
अवईणणड जाम खगिंदु तिसिरु  
ता मायाविइ वंचणमईइ  
पियजीवईणणरक्खणमईइ  
पल्लुड्डु तिसिरु अपेच्छमाणु  
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु  
करसाहाणिहियइ मुहियाइ  
गय पत्त सुहावइ अवर का वि

जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।  
सुंहिसुहदंसणु पाणीयतिसिरु ।  
णिड सुंदरु णावइ मड मईइ ।  
मणिवाविहि णिहिड सुहावईइ ।  
जलहरवहजववाहियविमाणु ।  
तडिवेयायारु णरेसरासु ।  
कड माणवणयणविमईहियाइ ।  
णामेण सुहोदय जेत्यु वावि ।

5

घत्ता--णवइंदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥

पाणियवत्थअियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

10

## 6

कण्णड हक्कारइ जाम तेत्थु  
तामेक्क वि तरुणि ण दिट्टु ताइ  
एत्तहि राणं उहामतेय

जलकीलहि देतिड कमलहत्यु ।  
गइयड सरु परियाणिडं इमाइ ।  
अप्पाणडं दिट्टुड विज्जुवेय ।

१० MB मंदिर तणुरुहु ११ MB पहिट्टु. १२ MB जामायहो.

5: १ MB °दयाववासु; T ° दयाणुवासु. ३ B अइवण्णड. ३ M सुहमुहदंसणपीणीय°; B सुहिमुह-  
पाणीय°. ४ MB °धम्म°. ५ MB° विमुहियाइ.

10 जांवाय हो जामातुः.

5. 1 a दाणवासु मदवर्षः; b छज्जीवदयाणिवासु षड्जीवनिकायेषु दयायाः निवासः. 2 b °तिसिरु सतृष्णः. 3 b मड मृगः; मईइ मृग्या. 5 b जलहरवह° आकाशम्. 6 b तडिवेयायारु  
विद्युद्देगरूपम्. 7 a करसाहा° अङ्गुली.

अचणियउ समाहृप्पंगुलीउ  
 तां तहि अवसरि तहि चेडियाइ  
 धयरट्टुसिलिंधयगामिणीइ  
 जलरमणकज्जसंकेइयाउ  
 अलिचुंबियगर्यलंबियघयाउ  
 तहिं गय हउं णिहिय समीवि तुज्जु  
 कण्णाकाराणि मच्छरु वहंति  
 एहउ जाणिवि महु राणियाइ

णियरूवधारि थिउ मंतु गीउ ।  
 किं मुद्दइ हत्थहु फेडियाइ । 5  
 सुसुहावईइ मह सामिणीइ ।  
 इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।  
 अण्णेत्तहिं कत्थइ जहिं गयाउ ।  
 अवरु वि णरिंद वज्जरामि गुज्जु ।  
 असमंजसु ध्रुवुं पइं ते वहंति । 10  
 उव्वसिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वइरि खयरिंद ताहं णाणु दलवट्टिउ ॥

अंगुत्थलियइ णाह तुह सूरुवु पल्लट्टिउ ॥ ६ ॥

7

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि  
 चितेज्जसु अज्जु महाणुभाव  
 सविमाणविलंबियविविहकेउ  
 ससहोयरिरूउ णिहालमाणु  
 खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति  
 अण्णेक्कें मुणियपवंचएण  
 सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण  
 दट्टुव्वसोकखउप्पायणेहिं  
 विणु मुद्दइ कण्ण जि पुरिसरयणु  
 जं वज्जरंति गुणवंत साहु

णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।  
 वंचेज्जसु पिसुण संमुद्दराव ।  
 एत्थंतरि पत्तउ असणिवेउ ।  
 गउ सो णहेण खरमाणुभाणु ।  
 महु महु जि बहिणि सयल वि भणंति । 5  
 तावक्खिउ तहिं कुसुमंचएण ।  
 गय णयरें रुक्खारूढएण ।  
 मइं दिट्टुअ अप्पणु लोयणेहिं ।  
 सच्चउ णउ भासमि अलियवयणु ।  
 गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु । 10

6. १ MB तो. २ MB °सिलिंबय°. ३ M सुसहावईइ. ४ MB °गयलुंबिय°. ५ MB धुर.  
 ६ MB माणु. ७ M सूरुउ; B सरुउ.

7. १ M सखुद्दभाव; B खुद्दभाव; T समुद्दराव. २ MB मुद्दिइ.

6. 4 a अ व णि य उ अपनीता स्फेटिता; समा हृप्पंगुलीउ माहात्म्यसहिता मुद्रिका ७ a °सिलि-  
 धय° वालः.

7; 2 b समुद्दराव हे समुद्रघ्वने. 4 b खरमाणुभाणु तीव्रादित्यकिरणः. ७ b कुसुमंचएण  
 मालिकेन. 7 a सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण शोभनेन निजरूपेण परिस्थिते श्रीपाले यादृशं दर्शनं तत्रामूढेन  
 अभ्रान्तेन.

जो अग्गइ होसइ चक्कणाहु

णिच्छउ सो पहु सिरिपालु एहु ।

घत्ता—धम्मोरूढगुणग्गि जो आरूढउ भावइ ॥

इहु सो वम्महबाणु णारिसरीरइं तावइ ॥ ७ ॥

## 8

ता धाइय भड आहवसमत्थ  
लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अज्जु  
इय भणिवि पवेढिउ खेयरेहिं  
णं सिहरि पंलंबिरजलहरेहिं  
णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं  
जोपप्पिणु सरवरु सारणालु  
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त  
अवलोयवि रिउसेणावियारु  
णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम

हणु हणु भणंत हलमुसलहत्थ ।  
कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु ।  
णं पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं ।  
णं दिवसु दिवसणाहाकरेहिं ।  
हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं । 5  
हंसीमुहचुंबिय सिसु मरालु ।  
सा पियवयंसि मणिवावि पत्त ।  
बालइ अहंसणु किउ कुमारु ।  
अण्णणाणिपहिं सव्वण्हु जेम ।

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ ॥

10

पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु संणिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

## 9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु ।  
णियमुहओहामियचंदकंति  
धरणीसु ताइ मुहाइ रहिउ

गय सुंदरि णिययणिहेलणासु ।  
पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति ।  
णं कामु कामकामिणिहि महिउ ।

३ MB होहइ. ४ MB सिरिवालु. ५ M धम्मरूढु गुणग्गे;

8. १ MB आहवि समत्थ. २ MB पलविय°. ३ MBK दिवसणाहहं. ४ B अण्णणिइ हिंस व एहु जाम. ५ B पुव्वत्तइ.

9. १ MB णियसुणिहेलणासु, २ MB णियुमुहुं ओहा°.

12 धम्मरूढगुणग्गि धनुष्यारूढस्य चडितस्य गुणस्य दौरस्य अग्नेतनभागे.

8. 10 परिहत्थु शीघ्रम्.



अवलोयाव वण्पिल सालण  
इहु सा णरिंदु गुणैपालतणउ  
जो गिज्जइ देवेहिं धरिवि वेणु  
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ  
जिणपंगणाँउ रायाहिराउ  
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि  
कालक्खगुहहि कालाहिवासि

परियाणिउं उण्णयभालण ।  
जो पणइणीहिं संजणियपणउ । 5  
जो दुत्थियसँज्जणकामधेणु ।  
इय चित्तिवि धाइउ धूमकेउ ।  
उक्खित्तँउ गरुहँ णाइं णाउ ।  
कालइरिहि णच्चियणीलगीवि ।  
घित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि । 10

घत्ता—दाहिणँदइवारंभि सयकालेण विर्वज्जिउ ॥

सेज्जहि णाहु णिसण्णु कालभुयंगे पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु  
जिह चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ  
जिह णिउ णरचइ अण्णत्थ झ च्चि  
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु  
णँउ रक्खिउ किं आपसपुरिसु  
तावेत्तहि रइसुहल्लुद्धण  
चंदउरि णिसिहि तमजालणीलि  
ताडिउ खग्गे पुण्णु मोग्गरेण  
णउ भिज्जइ सुल्ले सव्वलेण

तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्म ।  
जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ ।  
जिह केण वि ण मुणिय पुण वि थत्ति ।  
किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु ।  
किं आउंचिउ महु हौतु हरिसु । 5  
वण्पिलमेहुणपं कुद्धण ।  
पेयालइ पहु णिक्खिउ सुलि ।  
पुण्णाहिउ णउ घिण्पइ गरेण ।  
णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण ।

घत्ता—घित्तउ जलणि जलंति तहि वि परिट्ठिउ अवियल्लु ॥

10

जिणपयपोमरयासु अग्गि वि जायउ सीयल्लु ॥ १० ॥

३ MB गुणवाल°. ४ B °सज्जस°. ५ B पंगणाहि ६ B उक्खिण्णउ. ७ MB दाहिणि. ८ MB विसज्जिउ.

10. १ B किं रक्खिउ. २ MB °लद्धण.

9. 4 a सालण इयालेन. 9 b °णीलगीवि° मयूरे. 11 दाहिण° अनुकूलम्.

10. 10 जलणि ज्वलने अग्नौ.

11

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ  
 असिघडणहुयवहुग्गमियजालि  
 जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति  
 करडयलगलियमयजलपवाहु  
 धावंतु पंतु गिरिवरसमाणु  
 रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ  
 वणगलियरुहिरुं करसडियणास  
 खँयखासजलोयरजणियसोय  
 णित्थाहसलिलि सरहयदियंति  
 माणिक्ककिरणमालाविचित्ति  
 जिणु सुमरंतहं जलयररउहि  
 जिणु सुमरंतहं मंगलइं होंति

विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ ।  
 ओवडियसुहडसंगामकालि ।  
 धीरुं वि पच्छाउहुं ओसरंति ।  
 गुमुगुमुगुमंतवल्लमहुयरोहु ।  
 उरि देतु वेहुं बद्धयविसाणु । 5  
 जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ ।  
 अविणट्टकट्टकुट्टाविसेस ।  
 जिणु सुमरंतहु णासंति रोय ।  
 करिमयरमच्छपुच्छुच्छलंति ।  
 कल्लोलंदोलियजाणवत्ति । 10  
 बुद्धिजइ ण कयाइ वि समुदि ।  
 पर्यसंखलवलयइं परियलंति ।

घत्ता--सत्तु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासरु ॥

जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु ॥ ११ ॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु  
 आसीणु सिलायलि रायहंसु  
 अइबलु णामे पुरि वसइ तेत्थु  
 णं वम्महरायहु तणिय सेण  
 मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण  
 आगय पिउवणहु तहि णिमाणु  
 चित्तिउ अणाइ जयलच्छिगेहु

सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु ।  
 णं भिसिणीदलयलि रायहंसु ।  
 विज्जाहरु विज्जाबलसमत्थु ।  
 तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण ।  
 सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण । 5  
 दिट्टउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु ।  
 ण पलित्तउ एयहु तणउ देहु ।

11. १ M सुमरंतहु; B सुमिरतहु. २ MB वीर. ३ MB पच्छामुहुं. ४ MB °वरमहुं. ५ MB लोहबद्धउ. ६ MB रुहिरु. ७ MB खरखासं; G खरखाय°. ८ MB °सलिलसरसय°. ९ MB परिसंखल°. १० MB परिगलंति.

11. 2 a असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसंघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र. 8 a ख य° क्षयरोगः. 9 a °सरहय° जलेन हताः. 12 b पय संखल° पदे शृंखलाः.

जं तं होपवउं कारणेण  
इय भणिवि महिल कोऊहलेण  
णउ दड्डी जालाचारिएण  
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि  
अइबलु गेहिणिचरणयलवडिउ  
आवेहि कंति वच्चहुं णिकेउ

काइं वं संबंधवियारणेण ।  
तहिं सा पविट्ट णवराणलेण ।  
सव्वोसहिरसहयवीरिएण । 10  
अवइण्णउ ता पिउवणणिवासि ।  
हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णडिउ ।  
ता चवइ धुत्ति संभरिवि हेउे ।

घत्ता—हकारहि णियबंधु दीवुं धरेप्पिणु गच्छमि ॥

असइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥ १२ ॥

15

## 13

ता महिलारइरसर्वेभलेण  
उवविट्ठी सइरिणि धगधगंति  
सा तेण ण दड्डी कह वि केम  
वंदिय लोएण महासईहि  
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु  
णिगंण्वसीलु को संपयाइ  
भणु सांसिउ रायपँसाउ कासु  
वसणेण ण किउ कौ जगि णिरत्थु

मेलविय बंधव अइबलेण ।  
हुयंवाहि दूसहि विद्धत्थधंति ।  
मायाविणि वेस जँडेण जेम ।  
हूयउ सिहि सीयलु सुहमईहि ।  
पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु । 5  
पारद्धिउ को सेविउ दयाइ ।  
सघरत्थु वि कं ण डहइ हुयासु ।  
असईयणौ वंचिउ को ण एत्थु ।

घत्ता—अविचंचिउ णारीहिं महियलि को वि ण वच्चइ ॥

भरहपुष्पदंतेहिं पेच्छिउ जणु जिह रुच्चइ ॥ १३ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे विज्ञाहरीमायापवंचणो

णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥

॥ संधि ॥ ३३ ॥

12. १ MB वि. २ T भेउ, ३ MB दीउ, ४ MB असइत्तणयकलंकु.

13. १ MB ०रसर्विभलेण, २ MB हुयवहदूसहि विद्धत्थवंति. ३ MB कहि. ४ MB विडेण.

५ MB णिगंण्वसीलु. ६ MB सासउ. ७ M पसाय. ८ MB किं. ९ MB जगि को. १० MB अविचंचिउ.

११ MB पेच्छिउ.

12. 1 a अहय पिं डु अनुपहतशरीरः. 7 a अणाइ अनया. 10 a जालाचारिएण ज्वलतः.

13. 2 b विद्धत्थधंति विध्वस्तध्वान्ते. 3 b वेस वेश्या 7 a सासिउ शाश्वतः, 10 भरह°

नक्षत्रप्रच्छादको.

## XXXIV

सा कवडपईव्वइय आलुंचियवय गियपियभवणि पइट्टी ॥  
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्टी ॥ धुवकं ॥

I

जियसत्तु विमलमइ देविसुय  
विज्जासंसाहणि गहगहिय  
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ  
तहु तहु तुहुं बंधवु देहि सूर्य  
ता तरुणें मंतवसिल्लियहि  
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं  
ईसावसेण रूसिवि वरहो  
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ

कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।  
आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।  
इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ । 5  
महु तणयहि करहि सणाहक्रिये ।  
पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।  
दोहिं वि अहिलासें जोइयउं ।  
गय झ त्ति सुहावइ गियघरहो ।  
आणिउ गियभवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥  
तेहिं वि पुर्यं मुद्धहिं रूँवालुद्धहिं गियणियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

तीव्रापदिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्ण प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ MB °पइव्वइय. २ MB बंधउ. ३ MB सिय. ४ MB किय. ५ MB °भुवणहु. ६ MB पिय. ७ MB सुद्धु विसुद्धहिं; B सुद्धुविसुद्धहिं.

1. 1 °पइव्वइय पतिव्रता; आलुंचियवय त्यक्तव्रता. 6 a सूर्य श्रीः. 7 b पिसल्लियहि पिशाचगृहीतायाः.

## 2

ससुरेण भणितं भो चंदमुह  
 तेण वि तहु वयणु पलोइयउ  
 हे माम ताम मइं णेहि तहिं  
 तहु मिलिवि घरमि करु सुंदरिहि  
 तं णिसुणिवि सज्जणमणु मुणितं  
 सुंदरु लएवि बहुसोअखयरि  
 ता सुहउ लएण्णिणु भमियंगेहे  
 णिसि णिवइ तिसइ सोसियवयणु  
 जलु जोयहुं चलिउ खगाहिवइ  
 ता सुक्क णिरिक्खिय तेण किह

कीरइ विवाहकल्लाणु तुह ।  
 हियउल्लउं बंधुविओइयउं ।  
 वसुपांलु सहोयरु वसइ जहिं ।  
 सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।  
 जियंसत्तुं सैलिलसेणु भणित । 5  
 लहुं जाहि पुंडरिंकिणिययरि ।  
 गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।  
 पत्तउ विमलउरुत्तुंगतणु ।  
 जा दिट्ठि कमलवाविहि धिवइ ।  
 णिण्णेह विलासिणिकील जिह । 10

घत्ता—दूसियदेहुणहइ लइयउ तणहइ धायझलक्कइ रीणउ ॥

णवसत्तच्छयतलि खगकोलाहलि जहिं अच्छइ आसीणउ ॥ २ ॥

## 3

विज्जाहरेण आसासियउ  
 आहिंडिवि देव असेसु वणु  
 इय भणिवि वेयवाहिणि सरिया  
 अइअविहयहरिणुत्तण्हियहि  
 रायाहिराय दलियावईइ  
 पिउ जाइवि मालइ ताडियउ  
 अलहंतु सलिलु विडवुंभडहु

तहिं जायवि पहु संभासियउ ।  
 मा बीहहि आणवि सिसिरु वणु ।  
 गउ दिट्ठ तेण पाणियभरिया ।  
 अणुहरिय सा वि मायण्हियहि । 5  
 सोसिय कण्णाइ सुहावईइ ।  
 तण्हाकिलेसु णिद्धाडियउ ।  
 आयउ सरसेणु सरीयडहु ।

2. १ B वसुवालु. २ MB जियसत्तु. ३ M सलिलासणु. ४ MB तुहुं. ५ MB भणिय गहे. ६ M दूणिय°.

3. १ MB आणउं. २ MB सरिय. ३ भरिय. ४ MB हरिणु व तण्हियहि. ५ MB वियडुंभडहु; T विडउंभडहु.

2. 11 धायझलक्कइ शीघ्रगमनोद्भूतौष्ण्येन; रीणउ श्रान्तः.

3. 4 a अईत्यादि—आतिशयेन विहता हरिणानां उत्तण्णा यया; b मायण्हियइ मृगतृणिकया.  
 7 a विडवुंभडहु विट्ठपाः वृक्षाः उद्भटा उत्त्रणा यत्र; b सरसेणु वारिणेणः.

छण्णइ कण्णइ बोलावियउ  
किं पाविज्जइ धरु रमणुं पइं  
एयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ  
तं गिसुणिवि सो पल्लहु णरु  
सयणहं संबंधु समासियउ  
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ

तुहुं केण बप्प वेहावियउ ।  
जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं ।  
मा करहि चिचु अहिमाणमइ । 10  
णिविसेण पराइउ णिययघरु ।  
णंइवाविजलोहउ सोसियउ ।  
हउं एत्थु कुमारिइ संपहिउं ।

घत्ता—तहि तणियइ मालिइ चलभसलालिइ पहु छुह तण्ह ण पावइ ॥

जसु धरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु किंहि आवइ ॥ ३ ॥ 15

## 4

तं गिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ  
सिरिपाल कप्पतरुवरवइहि  
एत्तहि णंदणवणि संडियउ  
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ  
चितइ कुमारु मुणिमणमहहु  
पइरत्तइ पुव्ववहुल्लियइ  
लक्खणपमाणमाणे मविउ

कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ ।  
सामत्थु पयुहु सुहावइहि ।  
णरणाहु णरहु उक्कंठियउ ।  
हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ ।  
मग्गण पडंति किं वम्महहु । 5  
णिइंसणरूवु समुल्लियइ ।  
कण्णासरूउ तहु णिम्मविउ ।

६ MB add after this the घत्ता couplet:—

घत्ता—खरतावविमीसें गिंभाविसेसें कच्छवमच्छवहूइ ॥

असिलट्टि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हूई ॥ ३ ॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवकs as 4 etc, upto 13. ७ MB रमण.  
८ M णिवसेण, B णिमिसेण. ९ MB णयवावि°. १० MB संपिहिउ. ११ MB add after this the  
following three lines: हरिणुल्लउ वहइ ससंकु जलु, संजणइ सविंबहु तेण मलु; मुहससहरु मिगणयणइं  
वहइ, अच्चंत जाहि पोढिम वहइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय. १२ MB  
मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ. १३ MBK °भसलालइ. १४ M किं.

4. १ MB सिरिवाल. २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पइसिवि पुव्ववहुल्लियइ.

4. 3 b णरहु वारियेणस्य. 4 a दुज्जियइ केनाप्यपराजितः. 6 a पुव्ववहुल्लियइ सुखावत्या;  
b णिइंसणरूवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्त्या.

चितइ चिंताउलु भुवणवइ  
महु केण कुमारिरूँवु ठविउ

संचियैसंसयसंमूढमइ ।  
विणु मुइइ पुणु किह संभविउ ।

घत्ता—तं रूँवुं णिएप्पिणु महिल भणेप्पिणु दूसहमयणें भग्गा ॥  
णियगोत्तदिवायर विणिण वि भायर विज्जाँहर तहु लगा ॥ ४ ॥

10

## 5

एक्कहि भिसिणिहि दो हंसवर  
जइ होंति होंतु ण घडइ अवरु  
एक्कहि तरुणिहि किं विणिण जण  
इय चित्तिवि रणु पारंभियउ  
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं  
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ  
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं  
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर  
रुप्पयरहरायहु तणउं घरु  
राँपं तहिं चारु वियप्पियउ

एक्कहि किसकलियहि दो भमर ।  
सरु संघउ विंघउ कुसुमसरु ।  
मउकरयलेहिं माणंति थण ।  
सुयणत्तणु बिहिं वि णिसुंभियउ ।  
अँवरोप्परु कड्डियपहरणहं ।  
बिहि पेम्मणिवंधु रउहु किउ ।  
किं पुण इह अवरहं अहिणवहं ।  
उक्खयकरवालकरालकर ।  
णियमायाकुँयरिउत्तुंगसिरु ।  
तणयाहरि सिविरे समप्पियउ ।

5

10

घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणिउं कुमारिहि एह कासु किं आइय ॥  
ता पीवरथणियइ खगँवामणियइ विहसिवि वत्त णिवेइय ॥ ५ ॥

## 6

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया  
एत्थ कामलंपडेण खेयरेण आणिया  
हारदोरभूसियंगि तारतंवणेत्तिया

पुँडरिंकिणीपुरीणराहिवस्स पुत्तिया ।  
भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया ।  
जंपण ण भाउमाउआविओयतत्तिया ।

३ M सिंचियसंपय°; B संचियसंपय°; T संचिय°. ४ MB °रूउ. ५ B विज्जाहरहो.

5. १ MB रहसेण पवाहियवाहणहं. २ MB उक्खयसुकरालकिवाणकर ३ M °कुयरिउ तुंगसिरु.  
B °कुवरिउत्तुंगसिरु. ४ B रायहु तहु चारु समप्पियउ. ५ B सवरु ६ MB खगकामिणियइ.

6. १ MB पुँडरिंकिणी°. २ MB °भूसियंग.

5. 6 b रउ हु अतिशयवान्. 10 b सि वि रु आवासः. 12 ख ग वा म णि य इ वामनीरूपया विद्याधरस्त्रिया.

ताम जक्खदेवण वड्ढिमा वियारिया लच्छिवाल चक्खवट्टि एस णो कुमारिया ।  
 खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी । 5  
 दक्खवेहि वल्लहं विलासभासियाण संगहं सुहवं समीणिणी अदीणमाणणिग्गहं ।  
 तं सुणेवि सुंदरीइ एणलंछणाणणो रूवि वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।  
 मंतिऊण चिंतिऊण दिव्वमंतसंगमं दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविब्भमं ।  
 दंसिथो बहुल्लियाण पुंडरिक्किणीवई तं पलोइऊण ताण वट्टिया मणे रई ।  
 का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।  
 पैज्जरंतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया चलंतचामरेहिं विज्जिया ।

यत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥

भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णवियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी चाला लइ थविय सा अम्हहं खुज्जई दक्खविय ।  
 सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।  
 ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियसवर ।  
 असिकणयकोतविप्फुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगाममिस ।  
 सुंदरु पेक्खवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह । 5  
 तहिं समइ खगिंदु पराइयउ जामाउ सिणेहें जोइयउ ।  
 जाणउ परमेसरु चक्खवइ संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।  
 संमाणउ कंकणकुंडलेहिं वरहारदोरमणुउज्जलेहिं ।  
 तियसाहवजयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।  
 चिंतिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं । 10

३ MB विलासहाससंगहं. ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण. ५ MBK सुणेवि. ६ MB रूव°.

७ MBK add का वि before this.

7 १ MB जक्खइ. २ MB इच्छियसवर. ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ. ५ MB तियसाहिव°.

6. ७ b अदीण° प्रचुरः. 7 a एण लं छ णा ण णो चन्द्रमुखः.

7. 9 a तिय सा हव° त्रिदशसंप्रामः. 10 a समेहलहिं उपशमवाच्छास्वीकारेण युक्ताभ्याम्; b समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्.



यत्ता—धित कण्ठाभ्ये मायाभावे रिड गणि णड संघारिड ॥

गय विज्ज पणासिधि गुणगणु दृसिधि अप्पड पर धेयारिड ॥ ७ ॥

## 8

गयविणि जं अम्महिं कलहियड  
रगणादं णव्वरु पुच्छियड  
पुणरवि संजायड पुग्गिं जुह  
तं णिमुणिवि तेण समानियड  
गड विज्जावइ णियमंदिरहु  
सुत्तुत्तु जि गयरिहिं हरवि णिड  
गुल्लगंढु रसायणु जेरिसडं  
किं घण्णामि तिहुयणमुदियड  
मुहं तामरसु व आयाससरि  
जगगरुयड गयणु विरोइयड

तं केण वि कहिं मि ण मलहियड ।  
तुहुं महिलायारु णियच्छियड ।  
वित्तंतु असेमु वि कंइहि निइ ।  
यालासामैत्थइ विलसियड ।  
णिहंगि रमिय तहु सुंदरहु । 5  
भणु कासु ण रुषइ मांणमिड ।  
सुहयहु सुहयत्तणु तेरिसडं ।  
णिजंतहु तौमुण्णियड ।  
दीसइ वियसिड चवलंबुहरि ।  
अरहंतु व तेण पलोइयड । 10

यत्ता—पुणु णियसीमंतिणि तंतिणि भंतिणि चितिय तेण सुहायइ ॥

पइं विणु मणहारिण देवि भटारिण को रक्खइ महु आयइ ॥ ८ ॥

## 9

हउं णिज्जम्वि लग्गड केण कहिं  
रधियरपज्जालियमउहमणि  
पभणइ किं जूरहि पुग्गिसहनि  
जं भणसि तं जि हलइ करमि

किं जीवमि किं धुंउं मग्गिं जहिं ।  
तौं पयट परिट्टिय णएरमणि ।  
ओहच्छमि हउं तुह विगुरहनि ।  
पलयकु वि गयणि जंतु भग्गिं ।

६ MB गव कसेवि जादियि.

8. ५ M गलहियड; B मलहियड. २ MB करयड ३ B पुग्गिं, ४ MB कइड. ५ MB णियमं  
पविलियड. ६ B सुहयणु दृ. ७ MB पणमिड; K प्राणिमिड. ८ B गंइ. ९ MBT तामु विरोइइ  
१० B मुह तामरसु. ११ MB विहारयड १२ MB विगणि; T मंदिनि.

9. १ MB विगमि; २ MB पुड. ३ MB गो.

8. ५ B उ णि इइ उ निज्जम्वि. ९ B मग्गिं मग्गिं पयड. ११ मंदिनि धंयौवपणमग्गिं  
म वि नि धंयौवपणमग्गिं पयड. ९.

9. २ B कइ मग्गिं विगमि. ३ B कइ मग्गिं पयड विगमि.

कमलवद्दहि दिण्णी दिट्ठि जहिं  
कण्णाकारुण्णे पुण वि मइं  
उच्चाइवि णंतु णिहेलणउं  
हउं णिविसु वि पिययम जइ मुवमि

ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं । 5  
विरहें जलियउ जोयंतु पइं ।  
हरिसेण करंतु व मेलणउं ।  
तो किं णिसि णिइइ सुहुं सुअमि ।

घत्ता—इह जणवइ खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि ॥

दिट्ठादिट्ठिसरीरी होइवि धीरी पइं वि भडारा रक्खमि ॥ ९ ॥

10

## 10

वल्लहंतरंगंगकंपणं  
माणिमाणवित्थारमंथणं  
जाणिऊण मयणं खलं घणं  
णहधरित्तिदिब्भित्तिलग्गओ  
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया  
झाणमेव महमुणिहिं जुंजियं  
पडिय विडवि फुडियं रसायलं  
रूवरिद्धिणिज्जियसईरई  
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा  
सइं णिरिक्खओ सुरहिपरिमलो  
लुलियवैलियपडिवलियअलिउलो  
णिययधवलिमाधोयणहयलो  
सीयरंभसिंचियदिसाणणो  
पंचदंडउच्छेहदेहओ

एम जाम जायं पयंपणं ।  
सित्थपंथसंणिहियमग्गणं ।  
सुंदरीहिं विहियं खलंघणं ।  
ताम भीमसहो समुग्गओ ।  
भयवसेण दूरं गया गया । 5  
सकलुसं मइंदेहिं रंजियं ।  
घुलिय महियेअलं भीरुभेअलं ।  
संकिया मणे सा सुहावई ।  
गयणपंगणत्थेण राइणा ।  
करडगलियओहँलियमयजलो । 10  
चरणचप्पणो णवियमहियलो ।  
बलविरुद्धजंभारिमयगलो ।  
चउविसाणणिइलियकाणणो ।  
ताण दूण परिहाणसोहओ ।

ट्टादिट्ठिसरीरी. ५ MB पइं जि.

10. १ MBT सिंथपंथ°; K सिंछपंथ. २ MB महिउलं. ३ MB भीरु वैभले. ४ MB °अविहलिय°. ५ MB वलियपयपडिय°. ६ MBKT परिणाह°.

10. 2 b सि त्थ° प्रत्यञ्चाग्रभागः. 3 b खलं घणं आकाशोल्लंघनम्. 7 b भीरु भेअलं कातराणां भयानकम्. 8 a सईरई शचीपतिरिन्द्रः.

लंबमाणचलकण्णपल्लवो  
तंबुं तालु आयंबमुहणहो  
लच्छिरमंणु सिरिपालु धाइओ

दीहतालवट्टो महारवो ।  
चिक्कवंतकेलाससच्छहो ।  
भदहत्थि गंहणे पलोइओ ।

15

घत्ता—पडिवक्खवियारणु पेक्खिवि वारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥  
णं विउलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगजंतु पधाइउ ॥ १० ॥

## 11

दावंतु दंत करु करि धिवइ  
मंणु रक्खइ मेलेप्पिणु दमइ  
सरयणु बहुरयणविहूसणहु  
चलु चउचरणंतरि पइसरइ  
लंघइ आसंघइ कुंभयलु  
दैसदिसिहिं वि हिंडइ कुंजरहु  
णिम्महइ गहीरसरेण सरु  
आकुंचियतंणु वंचणकुसलु  
बलिणा बलेण णिवूढबलु

आलिंणइ सव्वंगइं छिवइ ।  
पुणु दुक्कइ चउपासहिं भमइ ।  
अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु ।  
हक्कइ हुंकारइ णीसरइ ।  
पावइ पुच्छुप्पलु वच्छयलु ।  
पँहु विज्जुपुंजु णं जलहरहु ।  
रंगंतु धरेइ करेण करु ।  
अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु ।  
जुज्जेप्पिणु सुइरु महंतबलु ।

5

घत्ता—सो करिमयणिब्भरु लीलामंथरु णरणाहें संभाइउ ॥

10

णं पविउलकंदरु मंदरुमहिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

## 12

मयरेहासोहापरियरिउ  
तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ  
जाणेप्पिणु पुण्णपुरिसु पवरु

जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ ।  
रुणुरुणुरुणंतमहुलिहबलिउ ।  
परिहरिवि भुवणभीयरु समरु ।

७ MB तंबतालु पायंब°, ८ MB चिक्कवंतु. ९ MB लच्छिरमणे सिहरि व्व धाइओ. १० MB गयणे.

11. १ MB तणु. २ MB चुक्कइ. ३ B चउदिसिहिं. ४ MB वहु°. ५ M °तणु धारणकुसलु;  
B तणुधरधरणकुसलु. ६ M मंदरु.

15 b तालवट्ट° पुच्छम्. 17 b गहणे वने. 19 हरिवरु इन्द्रः.

11. 3 a सरयणु सरत्तः सरदनश्च. 5 b °उप्पलु पुष्करम्.

करिणा सुंदरु कंधरि थविउ

णिउ तर्हि जर्हि अच्छइ खयरवइ

कंतावइप्रियं सुकंतरमणा

वणवाला वालहुं तुहुं जि वरु

विजाहरकिंकरेहिं णविउ ।

सो पभणइ पुलयपसण्णमइ । 5

रइकंता सिरिकंता मयणा ।

जामाइउ महु जियकुसुमसरु ।

घत्ता--करि खंभि णिवद्धउ कंतिंसणिद्धउ भरहसयणसुविणीयउ ॥

सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुष्फयंतु णं वीयउ ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्फयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे महाकरिरयणैलंभं णाम

चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३४ ॥

॥ संधि ॥ ३४ ॥

12. १ MB पिय, २ MB add after this: इय पमणिवि घरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जय-  
कारियउ, ३ K °सिणिद्धउ, ४ MB पुष्फदंतु, ५ MB रयणालंभं.

12. 8 भरहसयण° भरतस्य न्वजना भृत्याः 9 पुष्फयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गजः.



## 2

धाइउ दुद्धरु	खरखुरखयधरु ।	
मरगयणिहतणु	कंपावियजेणु ।	
तंविरणयणउ	भंगुरवयणउ ।	
दसणैभयंकरु	अरिअमरिसहरु ।	
भुवणविमहे	लिहिलिहिसहे ।	5
वहिरियदसदिसु	मग्गियरणमिसु ।	
णवर णरिहे	चवलु महे ।	
णं सारंगउ	धरिउ तुरंगउ ।	
कुंकुमपिंजरु	चलु पसरवि करु ।	
भुयवलपोढे	पुणु आरूढे ।	10
रायहं पीलिउ	वग्गइ चालिउ ।	
अवलोइवि केसु	हरि हूयउ वसु ।	
पुलइयकाणं	खगसंधाणं ।	
पयडियमंगलु	घुट्टउ कलयलु ।	

घत्ता—तां बुज्झवि महिवइ अतुलवलु अहिवलेण सुरवणीं ॥ 15  
वरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिणीं ॥ २ ॥

## 3

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ	णियउ सुहावईइ णिविसे गउ ।	
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु	विउलणियंवुग्गयणवसुरतरु ।	
वे वि चारुचामीयरवण्णइं	तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं ।	
ता सखग्ग खग वेणिण समागय	णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गय ।	
महुरगिराइ पउंजियविणणं	पुच्छिय ते <sup>३</sup> वणितणयातणणं ।	5

2. १ MB °खुरखयधरु. २ M कंपावियतणु. ३ MB दंसणभयकरु. ४ MBK हिलिहिलिसहे.  
५ MB पसरियकरु; K पसरेवि करु. ६ B किंसु. ७ MB तो.

3. १ MB णिवसे. २ MB °ग्गयसुरतरुवरु. ३ B नेण तेणयातणणं.

2. 2 a °णि ह° सदशी.

3. 4 b णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ. 5 b व णितणयातणणं कुवेरथ्रीपुत्रेण धीपालेन.



## 5

जायंउ रयण सो जि ह्यगयघड  
 अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ  
 तेण भणिउ कवडें पणवेप्पिणु  
 जइ तुहुं एयइं रयणइं घट्टहि ।  
 तो ते ताँइं णिहिट्टइं रयणइं  
 सिद्धइं भँणिवि णमंसिउ लोएँ  
 अच्छिहिं अंधसहासें दिट्टउ  
 जांपिउ मूयहिं महुरालावें

जं<sup>१</sup> जिप्पंति समरि पडुपडिभड ।  
 अण्णेक्कु वि अरिणरु अवइण्णउ ।  
 एह डाँवि कुलिसमय लएप्पिणु ।  
 तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।  
 मउलावियइं दुसीलहं णयणइं । 5  
 मण्णिउं वण्णिउं दिण्णविहोएँ ।  
 बहिरहं बहिरत्तणु णट्टउ ।  
 मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।

घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिएण कुर्वलयच्छि कुवलयभुय ॥

सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥ ५ ॥ 10

## 6

विजयणयरि जसकिसलयकंदें  
 पुणु धण्णउरि धणाहिवराएं  
 उप्पण्णा सेणावइ धरवइ  
 पुणु वि सुहावईइ पँहु चालिउ  
 दससिरु मच्छरजलणुप्पायणु  
 हरगलगरलतमालु व कालउ  
 कण्णकडुयवयणाइं भणंतें  
 पच्चारिय रणि तेण सुहावइ  
 मा महु अग्गइ धरहि सरासणु

कित्तिमई वरकित्तिणरिंदें ।  
 विमलसेण ढोइय अणुराएं ।  
 सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।  
 धूमवेउ गयणाद्धि णिहालिउ ।  
 वीस पाणि परै वीस वि लोयणु । 5  
 भिउडिभंगभंगुरभालालउ ।  
 णारिवँराइं तणु व गण्णंतें ।  
 मेल्लि मेल्लि सिरिवालु रसावइ ।  
 मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।

घत्ता—जसु हियवइ भडहंकारु णवि हलि महुं हासउ दिज्जइ ॥ 10

रक्खिज्जइ पइं वि महेलियइ सो किह संदु रमिज्जइ ॥ ६ ॥

5. १ MB सो जि रयणु. २ MBK जे. ३ MB दावि. ४ MB ताम्व णिहट्टइं. ५ MB मुणिवि.  
 ६ MB लोयइं. ७ MB दिण्णविहोयइं. ८ MB °सहासहिं. ९ बहिरंतहिं. १० MB कामलच्छि कामलभुय.

6. १ B णिउ. २ MB मच्छरु; T मच्छरजलण°. ३ MBK वर. ४ MB °वराइय तणुअ गणंतें.

5. ३ a डावि मुद्रा.

6. ६ a मच्छरजलण° कोपामिः.



## 7

चवइ किसोयरि एउं णं जुत्तउं  
 सप्पमग्गु जइ सप्पु जि बुज्झइ  
 एहु धरायरु तुहुं गयेणायह  
 जइ तुह एहु किं पि आसंकइ  
 जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि  
 खल दल्लवट्टिवि हरिसैं णच्चमि  
 आउ आउ णियणाहु ण मेल्लमि  
 एम चवंति तेण सीं घाइय

रे रे धूमवेय पइं वुत्तउं ।  
 खयरें सहुं जइ खयरु जि जुज्झइ ।  
 वज्जिवि विज्जउ पसरहि णियैयरु ।  
 विवरीयाणणु पाउ वि कंपेइ ।  
 तो हउं पईसउं जलियमहाणलि । 5  
 वइरिमरि हउं णारि ण वुच्चमि ।  
 तिक्खतिसूलें पइं उरि सल्लमि ।  
 करवालेंण दुलंघ दुँहाइय ।

घत्ता—ता जायउ बिण्णि सुहावइउ उक्खेयखग्गविहत्थउ ॥

हणु हणु पभणंतिउ हुंकरिवि थक्कउ जुज्झसमत्थउ ॥ ७ ॥ 10

## 8

अक्कु वि सक्कु वि चित्ति चवक्कइ  
 दूण दूण वड्डिय संजायउ  
 वेढिउ धूमवेउ चउपासहिं  
 विप्फुरंतु जयसिरिउक्कंठिउ  
 ता वुत्तउ णिवेण मा घायहि  
 अण्णु वि मुइ मइं कहिं मि वणंतरि  
 एक्कहियय होएप्पिणु भंडहि  
 ता मुद्धइ पिउ घल्लिउ महिहरि  
 दूरु णिरुद्धचंडकिरणायवि  
 दिट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु

सुहइ हणंतु ण णिविसु वि थक्कइ ।  
 कण्णउ कण्णावेसैं जायउ ।  
 आहउ जिगिजिगंत णित्तिसहिं ।  
 सो वि जाम बिहिं रूवहिं संठिउ ।  
 बहुय होति रिउ कंज्जु विवेयहि । 5  
 आवेज्जसु पुणु जिंत्तइ संगरि ।  
 अरिसिरकमलइं खगैं खंडहि ।  
 थिउ लंबियतणु कक्करतरुवरि ।  
 बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।  
 णं गुणि संधिउ मयरद्धयसरु । 10

7. १ MB अजुत्तउं, २ MB गयणेसरु, ३ MB णियकरु, ४ MB विवरीयायणु, ५ MBK वंकरेइ, ६ MB पइसमि, ७ MB दलवट्टमि, ८ MB पेळमि, ९ MB लवंति, १० MB संघाइय, ११ MB दुहाविय, १२ MB उग्गय°.

8. १ MB चमक्कइ, २ MBT विहुअंसहिं, ३ MBK कज्ज, ४ MB वित्तइ, ५ MB संठिउ.

8. 9 a °चंड किरणायवि आदित्यातपे.

घत्ता—तं पेक्खवि वम्महबाणहय सीमंतिणि तर्हि दुक्की ॥

जंपइ पयडइं विडचाडुयइं कुलमजायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहसल्लिउ  
सुहव कह व जइ मुयहि महीरुहु  
हइइं कसमसंति भजंतइं  
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण  
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि  
भणइं कुमारवीरु किं खिज्जहि  
वरं एत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि  
वर णक्खाइं सिलायलि भग्गइं  
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि  
केसभारु वर वीएं णिज्जउ  
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ

एत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।  
तो णिवडहि णिरुत्तु हेट्टामुहु ।  
अट्टु वि अंगइं पलयहु जंतइं ।  
भो पत्थिवपउमाणण माणण ।  
घोरहु कंतारहु उत्तारमि । ६  
परपुरिसहु मणु देंति ण लज्जहि ।  
णउ परघरिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।  
णउ परणारीउरयलि लग्गइं ।  
मा खुप्पउ परवहुविवाहरि ।  
मा परपणयणीहिं कड्ढिज्जउ । 10  
मा परत्थथणेहिं पेल्लिज्जउ ।

घत्ता—णयणइं धौलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥

संताउ पवडुइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहदुवारि णिरोहु करेसइ  
लहु आलिंगिवि मुक्कणिवंधणु  
आसंकियमणु किं किर कीलइ  
अणु अणु जइ काइ वि मंतइ

पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।  
लहु उट्टइ संवरइ पइंधणु ।  
दुज्जसु धूमं अप्पउ णीलइ ।  
तो परयारिउ णियमणि चिंतइ ।

६ MB °मजायपमुक्की.

9. १ M कसमसत्ति. २ B omits this line. ३ B omits this foot. ४ M अक्खमि.  
५ MB वायइ. ६ MB परतिय. ७ MB धौलंत; 1' धौलंति.

10. १ MB गेहि दुवारि. २ MB लइ. ३ MB मुक्कु. ४ M सवरियउ; B सवरिउ. ५ MB दुज्जग.

9. ४ पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक; माणण उपभोजक. ६ a पयारमि प्रतारयामि.

10. 1 b संगहणु पुंश्रल्युगलम्. 2 a मुक्कणिवंधणु मुक्कण्ठाश्लेषः; b पइंधणु परिधानम्.

एयहिं सविवेयहिं हउं जाणिउ  
इहभवपरभवदुण्णयगारउ  
जाहि ण इच्छमि परघरसामिणि  
रमणीयइ पररमणालुद्धइ  
णरणाहे पियसाहि वणि मेल्लिय

एवहिं कहिं वच्चमि संदाणिउ । 5  
परतयरमणु सुट्टु विरुयारउ ।  
उव्वसि जइ वि रंभ सुरकामिणि ।  
तं णिसुणिंवि णहणारिइ कुद्धइ ।  
साहिसाह सा छिंदिवि घल्लिय ।

घत्ता--थरहरियपाणिपयसिरकमलु विद्धुरयालि सुहजणणियइ ॥ 10  
णिवडंतउ धरिउ सइं भुयहिं जक्खइ चिरभवजणणिइ ॥ १० ॥

## 11

वइसारिउ सोवण्णसिलायलि  
हउं तुह मायं पुत्त पोमावइ  
एम्ब चवेप्पिणु णेहपयासें  
भुक्खेतण्हणिदालसु णट्टउ  
फुरियविविहमणिक्किरणणिरंतरि  
तं णिसुणिंवि सो तेत्थु पइट्टउ  
धूमवेउ सज्जियसरजालहि  
पुणु उप्पण्णु वियप्पु विहीसरु  
गय णियवासहु वीणालाविणि

भाणिउं णिसुणिं हूई जक्खहुं कुलि ।  
पुव्वजम्मि हौती पाडलगइ ।  
बालु पसाहिउ करसंफासें ।  
तणउ पवुत्तु ताइ संतुट्टउ ।  
पइसहि गिरिगुहविवरब्भंतरि । 5  
तावेत्तहि संगामि पणट्टेउ ।  
विज्जाछेउ करंतिहि बालहि ।  
जिह देविइ उद्धरिउ णिहीसरु ।  
एत्तहि राउ रायचूडामणि ।

घल्ला—पइसंतु विसंतुलि विवरवहि सलिलमहाद्रहि पडियउ ॥ 10  
तहिं जंतु तैरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥ ११ ॥

६ MB परतिय°. ७ MB जहि. ८ MB रंभ जइ वि. ९ M सयंभुयहिं; B सयंभुवहिं.

11. १ MB पुत्त माय. २ B °तिण्ह°. ३ B पइट्टउ. ४ B धूमकेउ. ५ MB °महइहि. ६ MB उरंठ. ७ T विसंकलि.

6 a °दुण्ण य° दोषः अपकारो वा.

11. 2 a पो मावइ पद्मावती नाम् यक्षिणीजातिः; b पुव्वजम्मि सत्यवतीजन्मनि. 8 a वि हीस  
देवी वाणी. 10 विसंतुलि निम्नोचते.

## 12

तावत्थइरि सूरु संपत्तउ  
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि  
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ  
णं णवदलु णहरुक्खहु ल्हासियउ  
भाणुधिबु किरणावलिजडियउ  
मंदतमालणीलि पसरियतमि  
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं  
सिरिअरहंतसिद्धभायरियहुं  
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं

णं दिणराएं झेंदुउ धित्तउ ।  
मणि व पडंतु महण्णवखाणिहि ।  
णं चउपहर रुहिररसलित्तउ ।  
रत्तहलु व दिसंतरुणिइ डसियउ ।  
उग्गत्तेण अद्दोर्गइवडियउ । 5  
तहिं विवरंतरि रयणिसमागमि ।  
णीलसिल्लायलखंभि णिसण्णउं ।  
उज्झावहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।  
सुयरइ पडुचरणइं परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं द्वायंतहु साणंदइं ॥

10

चोरारिमारिसिहिपाणियइं उवसमंति मृगंवंदइं ॥ १२ ॥

## 13

ताम पहाइ कालि रवि उग्गउ  
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतं  
राएं णयणाणंदजणेरी  
णिव्वियार णिग्गंथ मणोहर  
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही  
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु  
सा णाहिं सरसलिल्लिहिं सिंचिये  
पुणुं जिणतणुसिरि संथुय भत्तिइ  
भैइपसत्थहत्थगुणराइय

णं महियउरु वियारिवि णिग्गउ ।  
तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतं ।  
दिट्ठीं पडिम जिणिंदहु केरी ।  
पहरणवज्जिय थोलंबियकर ।  
हउं सा भणमि अहिंसा जेही । 5  
कठिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।  
वियसियधवल्लिहिं कमलहिं अंचिय ।  
सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ ।  
ताम तहिं जि जक्खिणि संप्राइय ।

घत्ता—संभासिचि णिहिलिणीहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥

10

वइसारिवि पट्टि पयाहिवइ मंगलकलसिहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12. १ MB दिसतरुणिइ. २ MB °गडुपाडियउ. ३ MB °सिलायलि. ४ MB मिग°,

13. १ MBK पहायकालि. २ MB अववग्गहु. ३ MB संचिय. ४ B omits this line.

५ B omits this foot. ६ MB संपाइय. ७ T आहिसारिवि.

12. 3 a कुंकुमकुसुमामेलु व कुंकुमकेसरसंघात इव. 7 a णक्कचक्क° जलचरसंघातः.

13. 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य.

## 14

भूसणपरिहाणाइं रवणणइं  
 गयणगमण पाउयजुयलुल्लउ  
 ताम तहिं जि परिभमिवि समायइ  
 खँइरिइ सइरिणीइ पद्म जोइउ  
 सो पडंतु सयलु वि णिहलियउ  
 पुष्पयंतफणिफुक्कारियसरि  
 एम भणिवि ताए वित्थिण्णी  
 णवर चंडदंडे सा खंडिय

छत्तदंडरयणइं तद्दु दिण्णइं ।  
 दिण्णउ अण्णे वि जं जं भल्लउ ।  
 रयकारणसंभूयकसायइ ।  
 पाहाणोद्दु णहाउ णिवोइउ ।  
 दिव्वच्छत्तरयणे पडिखलियउ । 5  
 मइं ण रमंतु मरउ विवरंतरि ।  
 सेलगुहादुवारि सिल दिण्णी ।  
 कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय ।

घत्ता--उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयले गच्छइ ॥

णहि जंतु पुंडरिंकिणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥ १४ ॥ 10

## 15

पेच्छइ खंधावारु विमुक्कउ  
 माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ  
 तिजगबंधु मद्दु बंधउ णोइउ  
 वसुवालेण भणितं किं ससहरु  
 किं दीसइं णवसंज्ञाजलहरु  
 सोदामिणि णं णं दंडासणि  
 एम वियप्पिवि राएं वुत्तउ  
 इय पलवंतद्दु तहिं जि पराइउ  
 सुहिपरियणु हरिसै रोमंचिउ

सत्तमु दिवसु अज्जु सो दुक्कउ ।  
 मण्यवेसु णावइ मयरद्धउ ।  
 एम भणिवि जलहरवद्दु जोइउ ।  
 णं णं छत्तु एउ णं णिसिहरु ।  
 पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णरु । 5  
 तारावलि णं णं भूसणमणि ।  
 एइ सहोयरु एद्दु णिरुत्तउ ।  
 विहिणा सोक्खुपुंजु णं ढोइउ ।  
 तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ ।

14. १ M परिहाणइं बहुवण्णइं; B परिहाणइं वरवण्णइं. २ MB अवर. ३ MB रइकारण<sup>०</sup>  
 ४ MB खयरिइ सइरिणियइ. ५ MB णिवायउ.

15. १ MB मयणवेसु. २ MB णावइ. ३ MB जोयइ. ४ MBK णउ ससिहरु. ५ MBK  
 सीसइ. ६ MB ढोइयउ.

14. ३. a स मा य इ समागतया; b रइकारण<sup>०</sup>रतिसुखकार्ये (i a<sup>०</sup>स रि शब्दे.

15. २ a थणद्धउ पुत्रः.

पणविउ पट्टु णिलयणु णिय तायहु  
तेहिं बिहिं वि तेणं जिणु पेच्छिवि

जगतायहु पच्चक्खविहायहु । 10  
भवसंसरणवत्थ दुगुंछिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणवालु तहिं मउडचडावियहत्थें ॥

चंदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

## 16

जेण विणासिवि घल्लिउ ईसरु  
पुत्तु महारउ केण विह्वसिउ  
पभणइ जिणुगयजम्मि किसोयरि  
हूई काणाणि जक्खसुरेसरि  
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें  
आय सुहावइ कहिउ कुमारे  
विजाहरहं पयासियवसणहं  
एह मज्झु हूई विह्वडंतहु  
एह मज्झु हूई चिंतामणि  
एह मज्झु संजीवणि ओसहि

पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।  
चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।  
एयहु हुयमेत्तहु सुय मायरि ।  
बहुविब्भमविलास णं सुरसरि ।  
ताइ एहु पुज्जिउ बंहुणेहें । 5  
एयइ रक्खिउ हउं बलसारे ।  
मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।  
लग्गणवल्लरि अवडि पडंतहु ।  
कामधेणु कप्पहुमगोमिणि ।  
विहुरसमुहणाव णिरु पियसहि । 10

घत्ता—हउं एयइ रक्खिउ सुंदरिइ एयहि जीउ वि दिज्जइ ॥

जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहंसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

## 17

पइं संहुं महु उग्गयमुहरायउ  
जं तं एयहि तणउं विजंभउ  
तं णिसुणिवि विणपं पणयंगिय

माइ माइ मेलावउ जायउ ।  
एयहि परवैलु बालिण णिसुंभिउ ।  
सासुयाइ कुलवहु आलिंणिय ।

७ MB णिउ णिलयणु. ८ MB तेण वि. ९ MB °संसारावत्थ.

16. १ MB चिरु णेहें. २ MB दुहसलिलि णिमज्जइ.

17. १ G सुहुं. २ MB वियंभिउ. ३ B पवलवलेण.

10 a णिलयणु समवसरणम्; b °विहायहु विधातुः प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य. 11 a बिहिं वि कुबेरश्री-  
यमुपालाभ्याम्; तेण श्रीपालेन.

16. 1 a ईसरु अस्य विष्णोरपत्यं ई कामस्तस्य सरु वाण. 3 b हुयमेत्तहु जातमात्तस्य. 8 b  
अवडि कूपे.

17. 2 a विजंभउ विजृम्भितं चेष्टितम्.

पुत्ति पुत्ति पइं काइं पसंसमि  
 चक्रवट्टिलक्खणसंपुण्णउ  
 तुहुं जि पक्क महु आसाऊरी  
 जुवईमइउ हलि कहिं तेरउ  
 तुह केरउ जियकरिकुंभत्थलु  
 महु तणयहु वम्महपासा इव  
 पभणइ कण्ण पुण्णसामत्थं  
 सूलें भिण्णु ण भिज्जइ अंगउ  
 पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिउ

सिहिसिह किं रविपडिमहि दंसंमि ।  
 पुत्तु महारउ पइं महु दिण्णउ । 5  
 तुहुं संगरि सूरुहं वि सूरु ।  
 कहिं पोरिसु परवीरवियारउ ।  
 धणुगुणछणियउं जयउ थणत्थलु ।  
 तुह भुय रिउहुं कालपासा इव ।  
 गिरि चुउ धरिउ धणेसरिहत्थं । 10  
 जहिं तुह सुउ तहिं सयलु वि चंगउ ।  
 केहउं भवि सुय तहिं कम्मं णियच्छिउ ।

घत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरवीरु तवु तत्तउ ॥

चिरभवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ ॥ १७ ॥

## 18

सग्गसिहरि सुरवरसिरि भुंजिवि  
 दिव्वु देहु मेल्लेप्पिणु आया  
 वसुवालहु सिरिवालहि केरी  
 मुणि वंदिवि सयलइं संतुइइं  
 पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं  
 मुक्क सुहावइ पिययम मायइ  
 गय सुंदरि णियमंदिरु जामहिं  
 करपल्लवि लगउ रइजुत्तिहिं

जिणपडिबिबहु पुज्ज पउंजिवि ।  
 ए विण्णि वि तुह सुय संजाया ।  
 पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी ।  
 उच्छवेण णियणयरु पइइइं ।  
 चेलियरयणाहरणविसेसहिं । 5  
 धणुधारिणि सम पाउसछायइ ।  
 वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं ।  
 अट्टोत्तरु सउ णरवइपुत्तिहिं ।

घत्ता—पुणु कहइ सुलोयण णियचरिउ सइ परिपुरिसपरंमुह ॥

भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुष्पयंतसोहियमुह ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइप  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे पद्मसिरिपालसंगमो णाम  
 पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३५ ॥

॥ संधि ॥ ३५ ॥

४ MB देसमि. ५ M °सपण्णउ, ६ MB महु पइं. ७ B सूरह. ८ MB धणेसर°. ९ B सूलिण. १० MB कम्म. ११ M घोरु वीर तव, B घोरवीर तव.

18. १ MB दिव्वदेहु. २ M परंमुहं, B परमुहहो. ३ M °मुहं, B °मुहहो. ४ MB °सिरिवाल°.

18. 5 b चे लिय फाली (?).

## XXXVI

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥  
सत्तमदिणि सुहमइ पत्त सुहोवइ णविय ताइ सइं सासुय ॥ भ्रुवकं ॥

।

<p>भासिउं भइइ गुणजुत्तियउ होहिंति भणिवि मृंगणेत्तियउ संमाणहि मइं संमाणियउ ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ पुवं चिय तेत्थु पैरिट्ठियहिं हयदइवें कहिं वि विओइयउ पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय अणुं अवरउ थोरथंद्धथणिउ विरहगितावणीवावणउं दिट्ठउ करंतु सो पृंउ लल्लिउ</p>	<p>पर्यंउ तुह सुय कुलउत्तियउ । तडिवेपं गहाणि णिहित्तियउ । एवहि तुह मंदिरु आणियउ । 5 णवमालइमालावाहियउ । भूगोयरेहिं उक्कंठियहिं । मायापियरेहिं वि जोइयउ । जसवइ णामें जसकंतिजुय । रइकंताइयउ सुहासिणिउ । 10 अट्ठहिं तरुणिहिं सइं मेलणउं । गुंत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलिउ ।</p>
---	--

घत्ता—जोएवि सवत्तिहि मुंहु वणिउत्तिहि णीसंसेवि दुहहणणहु ॥

ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंघिउ घरु जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin:—

पुष्कयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सत्ति ।  
मारिउ मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिट्ठयणाकेत्ति ॥ १ ॥

BGK do not give it.

1. १ K सत्तमे दिणे, २ B सुहामइ, ३ M एयहि, ४ MB भिग°, ५ MB परिट्ठियउ, ६ MB उक्कंठियउ, ७ MB पियरेहिं विच्छोइयउ, ८ MBK पुणु, ९ MB °धइ°, १० MB पिउ, ११ MB गुणी-समिइहिं, १२ B महु, १३ M णीसेसवि.

1. 1 छ षट्पन्थाः, सा सुय सा प्रमिदा पुत्री. 6 a लच्छिइ कुवेरप्रिया. 8 a विओइयउ वियोगं प्रविताः. 10 b सुहासिणिउ शोभनवचनाः. 11 a °णीवावणउं विध्यापनम्.



## 2

सुहवईयहि तायहु वज्जरिउ  
मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं  
मेरउ मेळ्ळिवि रिउ जीवहरु  
अविसेसविवाहें किं करामि  
णउ अण्णणारिरयरंजियहु  
पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ  
अण्णणहिं कुसुमहिं दिणु गमइ  
एत्थंतरि सिरिवालें णयरि  
णालोयंतें पुणु जाणियउं  
अंइ लज्जिवि णियभवणहु गयउ  
इय चित्तिवि णहयरु एक्कु णरु  
संपत्तउ गेहुँ अकंपणहु

भूगोयरभूगोयैरचरिउ ।  
अणुरत्तइं गुणविहियायरइं ।  
पहिलउ जि किराडिहि धरिउ करु ।  
वैर णिञ्चलु कण्णावउ धैरमि ।  
आलिगणु देवि तासु प्रियहुँ । 5  
विइँ होइ सहावें चंचलउ ।  
किं एकहि वेळ्ळिहि अलि रमइ ।  
मग्गिय मृगलोयण धरि जि धरि ।  
हा पृथमाणुसु अवमाणियउं ।  
किं जंतुँ जंतु वि विरहें मयउ । 10  
पेसिउ लहु लैलिपं लेहधरु ।  
जिणचरणभत्तिभावियैमणहु ।

घत्ता—लेहें सहुं पाहुहु ढोइवि खगभहु पडिउ खगिंदहु पायहिं ॥

तुहुं मण्णिउ सज्जणु विणिहयदुज्जणु वसुसिरिवालहिं रायहिं ॥ २ ॥

## 3

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ  
तं सोहँइ वण्णहं पंतियहिं  
कंचुइवइणाइं सुणेवि सइ  
तं पालिय कुलपरिहाँ सकुलि

आलिहियउ पत्तु पलोइयउ ।  
अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं ।  
जं परिणिय वणिवरतणय मइ ।  
मणु पुणु तुह पुत्तिहि मुहकमलि ।

2. १ K °वइयइ. २ MB °भूगोयरि°, GK add second °भूगोयर° in the margin; T भूगोयरचरिउ. ३ M वरु. ४ G करउ. ५ MB देमि ण तासु. ६ MB पियहु, K पृथहु. ७ M विइ  
८ MB मिगलोयणि. ९ MB पिय°. १० MBK लइ. ११ जणु जंतु वि. १२ M ललियं. १३ MB लेहु.  
१४ B °भावियरणहु.

3. १ MB साहइ. २ MB वयणाइं. ३ MB ता. ४ MB हासमले.

2. 1 b भूगोयर° वसुपालादयः; भूगोयरचरिउ भूगोचरेषु यशस्वत्यादिषु विषयेषु चेष्टितं आचारं  
मन्यन्ते. 6 a मुइ मुञ्ज; कलमलउ ईर्ष्याजनितखेदम्. 11 b ललि एं श्रीपालेन.

3. 2 b अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं स्वयमनुवाणाभिरपि अर्थप्रतिपादनद्वारेण नुवाणाभिः. 4 a  
कुलपरिहा कुलपरिखा कुलमर्यादा, सकुलि स्वकुले.

चंपयकुसुमावलिगोरियहि  
जिह कठिणं थणत्थलु तिह पहरुं  
कण्णंतु समागय णयण जिह  
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु  
जण्णंकासणइ णिसण्णियइ  
तं णिसुणिवि णिब्भरु चित्तियउ  
तहि पिउणा तं जि पवोल्लियउं  
ताएण समउ गय कुमरि तहिं

संभरमि सुयाहि तुहारियहि । 5  
जिह रत्त रत्तरणु तिह अहरु ।  
परमारणसीला वाण तिह ।  
जिह धणु गुणमंडिउ तिह जि तणु ।  
कण्णियइ कुसुमसंरच्छणियइ ।  
महु णाहें माणु णियत्तियउ । 10  
हयगमणभेरिवलु चल्लियउं ।  
णिवसइ सूहउ वरइचु जहिं ।

घत्ता—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छिवि छणु णहंगणु ॥

गय विण्णि वि सायर संमुह भायर मग्गमाण आल्लिगणु ॥ ३ ॥

## 4

घरि आसीणाइं सणेहदय  
हेट्टामुह बहु वरेण भणिय  
घणु सोहइ एकइ विज्जुलइ  
इह सोहमि हउं एकइ पइं  
मा रूसहि सज्जणचच्छलिइ  
तें वयणें रोसणियत्तणउं  
वप्पिल संप्राइय रमणवसा  
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि  
एवट्टेसहासइं राणियहं  
पुणु पर्च्छइ णिरुवमभोयवइ

लहु अब्भागयपडिवत्ति कय ।  
किं इइं तुहुं मलिणाणणिय ।  
वणु सोहइ एकइ कोइलइ ।  
गुरुवयणु करेवउ तो वि मइं ।  
अलिणीलकुडिलमउकांतलिइ । 5  
जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं ।  
तडिरयतडिवेयहु तणिय सरां ।  
रइकंता मयणवइ तरुणि ।  
परिणियइं तेण खयरणिंयहं ।  
खगवइसुय णामें भोयवइ । 10

५ MB read for this foot: लडहंगहि मुणिमणचोरियहि. ६ M कठिणु. ७ B adds after this: महु आवइसयइं णिवारियइ, संभरमि सुयाहि तुहारियाइ. ८ B रत्तु रत्तरणु. ९ M °सीहा. १० M °सरस-  
णियइ; B °सरकणियइ; T °कणियइ. ११ B adds after this: णियपुत्तिहि मणु णीगणियउ.  
१२ MB add after this तहु सइं तिहुयणु हल्लियउ. १३ MK आल्लिगणु.

4. १ G रोसु. २ MB संपाइउ. ३ MB °वस. ४ MB सत्त. ५ MB चउवट्ट°. ६ MB राणि-  
याइ. ७ MB °राणियाइ. ८ B पुच्छइ.

१ ८ ७ णि य इ कन्यकया; °छ णि य इ भल्लियेशेण.

घत्ता—सेणावइगहंवइहयगतियमइथवइपुरोहियजुत्तइं ॥

सज्जीवइं रयणइं रंजियणयणइं सत्त तासु संपण्णइं ॥ ४ ॥

5

रोसेण सुहावइ हुंकरइ  
सुरमणियवणियवणसिरिहि  
परदासिहिं जसवइरुवु किउ  
परमेसर वणिसुय परिहविय  
तं णिसुणिवि णरवइ संचलिउ  
पइभत्तहि इत्ति महासइहि  
प्रियवयणहिं तिह तिह जंपियउ  
ईसालुय पइणा उवसमिय  
विज्जाहरि विक्रमहरिहरिहि  
पहरणसालहि सुहलियतवहु  
णवणिहिवइ जायउ चक्कवइ

ईसाइ ण पियंपुरि पइसरइ ।  
थिय भवणु रणप्पिणु सुरागिरिहि ।  
अण्णेक्कइ रायहु विण्णविउ ।  
घरलंजियवेसें घरि थविय ।  
हरिखुरधूलीरउ णहि मिलिउ । 5  
संपत्तु णिवासु सुहावइहि ।  
जिह जिह मणु मुद्धहि कंपियउ ।  
जाइवि वणितणय ताइ णविय ।  
थिय सा वि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।  
उप्पण्णउं चक्कु णराहिवहु । 10  
किं वण्णइ अम्हारिसु कुकइ ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णइ ससहरवण्णइ पडिवज्जिवि पक्कासणु ॥

जसवइयइ रायं सहुं सपसायं किउ सुहहुंहसंभासणु ॥ ५ ॥

6

अरि असणिवेउ चिरु मच्छरिउ  
घल्लिउ तंहि रययायलि विउलि  
गइलंघियणहयलजलहरहं

मायाहण हउं अवहरिउ ।  
हिंडिउ तंहिं काणणि गिरिगुहिलि ।  
दिट्ठइं कवडइं विज्जाहरहं ।

१ MB गिह°. १० MB सपत्तइ.

5. १ MB °रुउ. २ MB पइभात्तिहि. ३ MB पिय° ४ B ईसालुद्ध. ५ MB जसवइ महिराणं.  
६ MB सुहहुंह संभासणु.

6. १ MB रययालिइ तहि. २ MB °थलयरहं.

8. 11 °ति य म इ° क्षीरत्नम्.

5. 9 a विक्रम हरि हरि हि इन्द्रस्य सामर्थ्यस्फेटिका 10 a सुहलियतवहु पूर्वभवोपाजितं  
शोभनफलितं तपो यस्य.

6. 2 b गिरिगुहिलि गिरिभिर्लघुपर्वतैः निबिडे.

महं रडयइं पसरियअमरिसइं  
चलकरयललुलियेसूलमुसल  
उदहणपर्यंढपल्लयपिहिर  
दूस्रासण दुम्मंहु कालमुह  
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महं  
कीरइ रिउवलमयणिम्महणु  
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं

अवल्लोइवि णाणासाहसइं ।  
आरुट्ट दुट्ट दप्पिट्ट खल । 5  
रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।  
हरिवाहणधूमवेयपमुह ।  
ता चवइ कंत कंतेण सहं ।  
तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।  
असिचावहिं जाम ण कलहियउं । 10

घत्ता—पुरिसेण महंते एत्थु जियंते जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥

णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु नेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

7

महणविइ कज्जु णियच्छियउं  
भोयवइहि वंधवुं कुलधवलु  
अहिसिंचिवि पट्टणिवंधु कउ  
रणि जिणिवि णिवंधिवि सत्तु तिणा  
सो तुरयारुद्धउ दंडकरु  
वहलंसुजलोहियणेत्तियहिं  
णियणाहट्टु दीणवयणु लविउ  
सयल वि ने परिचड्ढियकिवहु  
राणं कारुण्णु तादं करिवि

इय पहउ राणं ईच्छियउं ।  
णामं हरिकेउ विसालवलु ।  
सेणावइ खगवइ होवि<sup>३</sup> गउ ।  
आणिय णं विसहर पवरविणा ।  
पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु । 5  
विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।  
वहिणिहिं वंधवउलु मेल्लंविउ ।  
चरणारंविद णिवडिय णिवहु ।  
पेणिय देसहु अच्मुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु ॥ 10

पयवट्टिउ ण हम्मइ मग्गं नम्मइ पउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

१ MBK 'कुलिय', २ MK फलचमिहिर; B मलयमितर; 3 एत्थमिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment, ५ MB इहह, ६ MB विम्महणु.

7. १ B पुणियवट्ट, २ MB वंधव ३ MB होट्ट, ४ MB मेल्लंविउ, ५ MB चरणारविदु, ६ H परिउद, ७ MB चरिंदद.

## 8

चउरासीलक्खइं कुंजराहं  
 छण्णवइ सहासइं राणियाहं  
 सोलहसैहसइं सिद्धहं सुरहं  
 घरि चोइह रयणइं णव वि णिहि  
 सिरिवालहु पुर्णु पवित्थरिउं  
 जं णयरायरउप्पणु धणु  
 ता सकलुसु चविउ सुहावइप  
 वसु पउ वि ण वच्चइ मरणदिणे  
 डज्जेवउं सहुं विहिं कर्पंडेहिं

तेत्तिय सहसइं रहवराहं ।  
 वत्तीस णिवहं संताणियहं ।  
 आणायराहं पंजलियराहं ।  
 महि एयछत्त अणुकूलवहि ।  
 जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं ।  
 तं जसवइ पइसारइ भवणु ।  
 लुद्धइ संत्रियउ जसोवइप ।  
 एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।  
 किं पुत्तकलत्तहिं लंपंडेहिं ।

घत्ता—ता मंति<sup>९</sup> भासिउं गुज्जु पयासिउं एवमाइ मा भासहि ॥

जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलवित्ति मा दुसहि ॥ ८ ॥

## 9

जसवइकुच्छिंहि जिणु संभविही  
 जसवइयहि जसु माहियलि भमिही  
 परियाणिवि दिव्वमुणिंदु मुणि  
 देविउ पेसणसंभाइयउ  
 वसुहार पाडिय घरंपंगणइ  
 हरि करि रवि जलणरासि जलिय  
 थिउ चंडैपुरंदरथुयचलणु  
 सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं

जसवइयहि होही परमदिही ।  
 जसवइयहि पैय इंदु वि णविही ।  
 छम्मासहिं होही एत्थु गुणि ।  
 सिरिहिरिदिहिकित्तिउ आइयउ ।  
 सुर मिलिय अणेय णहंगणइ ।  
 दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।  
 जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।  
 भावणवैतरहिं सविसहरहिं ।

8. १ M तेत्तियइं जि लक्खइं संदणाहं; B omits this foot, K तेत्तियइं सहासइं रहवराह.  
 २ MB add after this: तहु अत्थि सुट्टु संदणवराहं. ३ B सहस. ४ MB सहस संताणियाहं. ५ B  
 °सहासइं. ६ MB सुराहं. ७ MB अणुकूलविहि; K °वहि but corrects it to विहि. ८ MB पुण्ण.  
 ९ MBK कर्पण्डहिं. १० MBK लंपण्डहिं ११ MB मंतिहिं.

9. १ MB जसवइहि कुच्छि. २ MB पयइं वि इंदु णविही. ३ MBT °मुणिंद°. ४ MB घरपंगणइ.  
 ५ MBK चंद°. ६ MB सुरासुरेहिं. ७ MB सविसहरेहिं.

8. 4 b अणु कूल व हि अनुकूलपथे, अनुकूलेत्यर्थः.

9. 4 a पेसण संमाइयउ प्रेषणेन आज्ञादानेन संमानिताः.

तहिं अवसरि माणमरट्टु चुउ  
आवेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ  
दिस्स कवण सुरासहि अणुहरइ  
का पुज्ज णारि पइं माई विणु

मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।  
जसवइ सइं णविय सुहावइइ । 10  
किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।  
अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियंउ ॥

तं अमरैरपियारिइ खमहि भडारिइ मइं बालइ दुक्किउ कियंउ ॥ ९ ॥

## 10

णामेण विलासिणि रंगसिरि  
गच्छंति पलोइय वणिवइणा  
मुहयंदुज्जोइयसयलदिस  
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु  
बारहँवारिसियउ खासु किह  
पुट्टउ णं अभिणं सिंचियउ  
जसवइपयगलियजलेण जरु  
सा धूमवेय वइरिणि खगइ  
जुवैराय हवेसइ पोट्टि ताहि  
तो<sup>१०</sup> जणणिइ जणियउ तित्थयरु  
उत्तारिउ धणु ल्हिक्कविय सरं  
णिउ मेरुहि तियसहिं जिणधवलु

अकमलकरि णं सयमेव सिरि ।  
पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।  
किं णच्चहि वच्चहि पुलयवस ।  
देवीपयफैसं णट्टु महु ।  
जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह । 5  
तेणंगु मज्झु रोमंचियउ ।  
णासइ गहभूयपिसायडरु ।  
अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।  
जुयरायपट्टं बद्धउ अणहि ।  
भइयइ थरहरियउ पंचसरु । 10  
जिणजस्माणि कम्महु णत्थि धर ।  
जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

घत्ता—सइं णहवइ पुरंदरु आसणु मंदरु कायंकोडु रयणायरु ॥

जहिं णहाइ जिणेसरु तं णहवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्बण. ९ MB मुएवि अणु. १० MB जंपिउ. ११ MB अरुह°. १२ MR किउ.

10. १ M महि इदुज्जोइय°; BK मुहइंदुज्जोइय°. २ MB वच्चहि णच्चहि. ३ MB पयफंसं. ४ MB वारहवरिसियउ वि. ५ MBK जुवराउ. ६ MB °पट्टु. ७ K ता. ८ M सिर ९ MBK कामहु. १० MB कायकुंडु.

10. 11 ७ धर रक्षा. 12 ७ सिवसि रि° मोक्षश्रीः; धवलु भर्ता. 14 जइणायरु गणधरदेवः, अथवा बृहस्पत्यादिकश्वतुरः.

## 11

भावनवैतरकप्पाहिवहिं  
 गुणवालु णाउं किउ जिणवइहि  
 णवमासहिं अवरु महासइहि  
 ससहोयरु भोयवईइ सहुं  
 गउ णरवई सणरु सकरि सरहु  
 वेयडुमहीहरि संचरइ  
 साहिय फणि जक्ख वि किंणर वि  
 परमप्पउ हूयउ जासु घरि  
 भुंजंतहु कामभोयसैयइं  
 पक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ

देवहिं इच्छियसासैयसुहहिं ।  
 आणिवि अप्पियउ जसोवइहि ।  
 संभूयउ पुत्तु सुहावइहि ।  
 खयरहुं णियकेर समुदिसहुं ।  
 अरिवरहरिजूहहु णं सरहु । 5  
 विज्जाहररायहं महि हरइ ।  
 तहु भँइयइ कंपइ किं ण रवि ।  
 णिवसइ सिरि अवसै तासु करि ।  
 लक्खाइं तीस पुव्वहुं गयइं ।  
 लोयंतिपहिं संबोहियउ । 10

घत्ता—तै ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायामियकायहं ॥

पच्छइ पडिवण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं ॥ ११ ॥

## 12

चउतीसातिसयविसेसधरु  
 गुणवालु भडारउ गुणमहिउ  
 संबोहियवहुभवियंबुरुहु  
 दुयसीलक्खइं पुव्वहं सधरै  
 पप्फुल्लियवालकमलमुहहु  
 परिचितिवि जम्मजरामरणु  
 सोलहसहासधरणीसरहं  
 संसारघोरभारै लइउ

संजायउ केवलि तित्थयरु ।  
 विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।  
 जिणसूरु देउ महु मोक्खु लहु ।  
 सिरिवालु वि भुंजिवि सयल घर ।  
 सिरि पट्टे णिवंधिवि तणुरुहहु । 5  
 णियतणयजिणिंदहु गउ सरणु ।  
 तै सहुं पव्वइय मँहासरहं ।  
 वसुवालु णरिंदु वि पविइउ ।

11. १ MB °वितर°. २ MB सासयसिवहिं. ३ MB णरवइ सकरि सहरि सरहु. ४ B भइए.  
 ५ M °सुहइं; B सहइं.

12; १ M गुणवाल. २ GK °थंबुरुहु but gloss कमलम्. ३ MB सोक्खु. ४ M सकेर.  
 ५ MBK पट्ट. ६ B पर चितिवि. ७ MB महीसरहं. ८ MB पव्वइउ.

11. 4 b णियकेर समुदिसहुं निजाज्ञां समुद्देष्टुम्. 11 णीसहं निःस्वानाम्

12. 4 a सधर सपर्वता. 7 b महासरहं गम्भीरध्वनीनाम्.

सहुं पुत्तसहासैं सो सहइ  
देविहिं परमत्थवियाणियहं  
बुज्झियधम्मइ उज्झियरइए

तं संजमु तं वरुं को वहइ ।  
पण्णाससैंहासइं राणियहं ।  
तवि संठिउं समउं सुहावइए ।

10

घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमरैंहिबु हूई ॥  
णासियदुक्कम्मैं जिणवरधम्मैं घावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिहडिय  
जहिं सत्तु ण मिच्चु ण घरिणि घरु  
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ  
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं  
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु  
इय सुणिवि कहंतरु अण्णणउं  
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि  
पुणु भणिउं देवि हियवइ धैरंवि  
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ  
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ  
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि

णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।  
जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।  
जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।  
सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।  
अरहंतु करउ महु रइविरसु ।  
घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।  
रायवसविरोल्लियलोयणहि ।  
हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।  
जम्मंतरविज्जंउ आइयउ ।  
गयणयलविहारपवित्तियउ ।  
तं पेक्खवि भणइ पियंगुसिरि ।

5

10

घत्ता—हंउं जाणैंउं भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥

अलियउ जि कहंतरु भवणेरंतरु कहइ दुडु दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

९ MB वउ. १० MB देविहिं परमत्थु वियाणियहं. ११ MB °सहस रायाणियहं. १२ MB संठिय. १३ MB अमराहिउ.

13; १ MB सिरिवालु गयउ. २ MB °विरोल्लिय°. ३ MB धरमि. ४ B वज्जिउ. ५ MB जाणमि.  
६ MB भवणे णिरंतरु.

13 वि हूई विभूतिः.

13. 13 °णे रंतरु अविच्छिन्नम्.



## 14

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय  
 पइं कहिउ कहंगु ण सइहंवि  
 रमणीयणसिरैचूडामणिहिं  
 लहुभाइहि रज्जु समप्पियउं  
 हउं गच्छमि गयणे अज्जु तहिं  
 रयणालंकारहिं विच्छुरिउ  
 जं हौतउ आसि पहावइहि  
 थिय पासि सुलोयण जलयवहि  
 जणु जोयइ उद्धदिट्ठि मुयइ  
 अंतेउरु परियणु णीससइ

हउं पावसवत्ति खारहं भरिय ।  
 लइ दिट्ठउ एवहिं किं रंहंवि ।  
 णीसहु कयउ दोहि वि जणिहिं ।  
 घणघोसें सहरिसु जंपियउं ।  
 जिणु वंभु सयंभु सइं वसइ जहिं । 5  
 विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।  
 तं रूवुं धरेप्पिणु णियवइहि ।  
 बिण्णि वि उल्ललियइं झत्ति णहि ।  
 असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।  
 बंधवयणु संभरंतु सुसइ । 10

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरवरमहिहरि भद्दासालवणंतरी ॥

तं पइसइ बहुवरु चलकिसलयकरु जिणवरभवणभंंतरी ॥ १४ ॥

## 15

बिण्णि वि वंदेप्पिणु जिणधवलु  
 परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं  
 तंहिं गंदणि पुज्जिवि चेइयइं  
 पुणरावि तिसट्ठिसहसइं उवरि  
 वणु दिट्ठउ णामें सउमणसु  
 पणवेवि तहिं मि जयतिजगुत्तमउ  
 पुणु पंचतीससहसइं घणहं

तं भद्दासालु सालसरलु ।  
 तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।  
 वणि चउदिसु अकयणिकेइयइं ।  
 जोयणहं चडेप्पिणु सुरसिहरि ।  
 करिदसणाहयतरुगलियरसु । 5  
 जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।  
 पंचसयालंकियजोयणहं ।

14. १ MB पावसत्ति. २ T कहंगु. ३ MB सइहमि. ४ MB कहमि. ५ MB °सिरी. ६ MB संभु. ७ MB रूउ णिएप्पिणु.

15. १ B सालहिं सरलु. २ MB गंदणवणि पुज्जिवि. ३ MB चेइयइं. ४ MB °णिकेइयइ. ५ M पणवि तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तेहिं वि तिजगुत्तमउ. ६ B वणहं.

14. 2 a क हं गु कथास्वरूपम्; b र हं वि गोपयामि. 9 b वि ओ उ वियोगः.

15. 3 b अ क य णि के इ य उ अकृत्रिमचैत्यालयाः. 7 a घ ण हं महाप्रमाणयोजनानाम्.

लंघिवि पंदुयवणि पइसरिवि  
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय  
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु  
छ वि कुलपव्वय चोइह णइउ

अहिसेउ अरुहविंवहं करिवि ।  
चालीस जि जोयण परिगाहिय ।  
अवलोइय दहविह कप्पतरु । 10  
दिट्टउ बहुभूमिभेर्यगइउ ।

घत्ता--जहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥  
जंबूतरु जोइउ रयणुजोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि  
तणुवलइय मणिमयभूसणिय  
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु  
जहिं सुरहं वि चोळुप्पायणइं  
तवणीयविणिम्मिय णं णविय  
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे  
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं  
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि  
सवरउलणसेवियमेहलहो  
जयरूवणलिलणलंपंडि भमरि  
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु

जहिं हई सहि सिरिविंझसिरि ।  
सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।  
जंबुणयणिम्मियविमलदलु ।  
णालु वि हवेइ दहजोयणइं । 6  
कणिय गव्वूइपरिट्टविय ।  
लच्छीदेविहि अरविंददहे ।  
विण्णि वि णियमणि गंजोल्लियइं ।  
तहि तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।  
पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।  
थिर्यं पंथु णिरोहिवि तहिं खयरि । 10  
गंधारिपिंणु णामेण खगु ।

घत्ता--हउं तहु केरी सुय णवकुवलयभुय पइं णियंति जणरामे ॥  
गुणि मग्गणु संधिवि ठाणु णिवांधिवि विद्धी हियवइ कामे ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिभोय°. ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु.

16. १ MB जंबूणय°. २ MB वि पविमउ. ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि; B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि. ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय°. ५ MB °लंपड. ६ B पियपंथु. ७ MB गंधारपिंणु. ८ MB गुणमग्गणु.

16. 8 b जंबूणय° सुवर्णम्. 5 b गव्वूइ° क्रोशहयम्. 12 °रामे रमणागेन.

## 17

णमिणहयरणाहहु गेहिणिय  
 विज्जासहाससंपयधरहं  
 मइं इच्छहि सूहव अज्जु जइ  
 तं णिसुणिचि भरहसेणाहिवइ  
 ओसरु सरु पंथहु सइरिणिण  
 महु जणणिसमाणी परघरिणि  
 सो पइं सेवैउ णिरु णिग्घिणउ  
 ता रूसिवि पिंगलकेसियउ  
 सिसुससिसंणिहदाढालियउ  
 चलजीहापल्लववयणियउ  
 लंबियघोणसफणिमेहलउ

हउं जगि पसिद्ध तडिमालिणिय ।  
 रणि दुज्जय हउं विज्जाहरहं ।  
 तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।  
 भासइ तुहं सुंदरि मूढमइ ।  
 किं जंपहि वोमविहारिणिण । 5  
 जो पंइसिवि सक्कइ वइतरिणि ।  
 हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।  
 अंसइइ रयणियरिउ पेसियउ ।  
 णवघणणीलंजणकालियउ ।  
 गुंजापुंजारुणणयणियउ । 10  
 किलिकिलिसइं कयकलयलउ ।

घत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जुविलासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥  
 आढत्तु अणेयहिं पहरणभेयहिं भिण्णमहाभड्देहहिं ॥ १७ ॥

## 18

जयसीलविसुद्धि ण तेहिं हया  
 थिय णियमियचित्त सुलोयण वि  
 तो तें झेदुलियइ बुज्झियउ  
 जइ मंदरु णियठाणहु चलइ  
 मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियउ  
 गय एम भणेप्पिणु गयणयरि

हियंपं जपण गुरुखंति कया ।  
 जाणंति तो वि खल्लोय ण वि ।  
 हा किं मइं णिप्फल्लु जुज्झियउ ।  
 तो तुज्जु वि चित्तवित्ति खलइ ।  
 विज्जउ पेसिवि आयामियउ । 6  
 अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।

17. १ M दुज्जिय. २ MB पइसहुं. ३ MB गेणहुउ. ४ M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ;  
 B असईए रयणियरउ पेसियउ. ५ K विज्जुसहासहिं.

18 १ MB हय. ३ MB हियवइ. ३ MB कय.

17. 5 a ओसरु सरु पंथहु उत्सज व्रज मार्गात्. 6 b पइसि वि प्रवेष्टुम्. 12 °सर धार °जलधारा.

दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ  
तेणुत्तउ इंदे पेसियउ  
जा पइं रोहिवि<sup>५</sup> थिय घणथणिय  
तुह सीलु णिहालहुं पट्टविय

रइपहु णामे सुरवरु मिलिउ ।  
मइं तुह सुइंभाउ गवेसियउ ।  
सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।  
पइं णियजणणी विव विंत्तविय । 10

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपाधियदसँदिव्वइ ॥

चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहुं मग्गि वरु  
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु  
अवरें वरेण मैहुं कल्लु ण वि  
जहिं सोक्खु कैयाइ ण संचलइ  
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो  
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ  
तं देवपसंसइ राइयउ  
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ  
कणयमयकोणताडणखमहं  
सहेण तेण आयड्डियइं  
सुरसरितरंगससियरसियइं

तं णिसुणिवि पभणइ णरु पवरु ।  
वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।  
पुणु णिवडइ सुरवइ चंदु रवि ।  
जहिं कामहुयँसु ण पज्जलइ ।  
हउं तत्ति करैमि सुर तहु वरहो । 5  
गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।  
वहुवरु केलासु पराइयउ ।  
आसीणउ रयणसिलायलइ ।  
ता णिसुँउ सहु सुरडिंडिमहं ।  
विण्णिं वि गयाइं महियड्डियइं । 10  
जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं ॥

पयपर्णवियसीसहं तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ. ५ B रोहिय. ६ MB चित्तविय. ७ MB दह°.

19. १ MB पवरणरु. २ M सहुं. ३ MB ण काइं वि. ४ MB हुयासणु पज्जलइ. ५ B करउं.  
६ MB सुणिउ. ७ MB विण्णि वि विगयाइं महड्डियइं. ८ M जिणेसहं. ९ MB °पणमिय°.

18. 11 णाणुब्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दि व्व इ दिक्पतीन्.

19. १ b णिसुउ निःसृतः. 13 °सी स हं श्रीशानामिन्द्रादीनाम्; दिक्खा द मिय दुरा स हं दीक्षया दमिता उपशमिता दुराशा भोगाद्याकांक्षा यैस्तेषाम्.

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं  
 संभवदेवं संभवमहणं  
 अट्टुगुंछियइच्छियमोक्खगइं  
 पोमप्पहंमवि पोमाहरणं  
 चंदप्पहमहिहयचंदविहं  
 सीयलवयणंभहयंगरुहं  
 सेयंसं सेयपवित्तियरं  
 सिरिवासुपुज्जणामं णिरहं  
 वंदे भयवंतमणंतमहं  
 धम्मं दहधम्मुवदेसयरं  
 संतं संतिं जगसंतियरं  
 कुंथुं कुंथुसुं वि दयाविरयं  
 पणमामि अरं संणिहियसमं  
 मल्लिं मल्लियदामंचिययं  
 णिणमिय णमिणाहं जगसामिं

अजियं जियवम्महमुक्कसरं ।  
 अहिणंदणमहिणांदियभुचणं ।  
 सुमइं सुमइं वज्जियकुमइं ।  
 गयपासं णमह सुपासजिणं ।  
 सुविहिं सुविहिं जसपुंजणिहं । 5  
 सीयलणाहं वंदे अरुहं ।  
 वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।  
 विमलं विमलं तवतावसहं ।  
 मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।  
 पणमामि जिणं जाणियसवरं । 10  
 सोलहमं परमं तित्थयरं ।  
 बहुगंधियगंधपंधविरयं ।  
 अरमयलं मूलियमोहदुमं ।  
 मुणिसुव्वयमुणिरायं सुवयं ।  
 गुणरहणेमिं वंदे णेमिं । 15

20. १ MB मोकखरयं. २ M सुमयं. ३ M कुमयं. ४ MB पोमप्पहं पवि. ५ K सुविहं. ६ MB °पवित्तियरं. ७ MB °धम्मपयासयर. ८ MB कम्मट्टुगंठिणिण्णासयरं; T °सयरं °स्वपरम्. ९ M संतं. १० MB कुंथेसु दया°. ११ MB दयावहरं; K दयावरय. १२ MB °विहरं; T °विरयं. १३ MB अरमयलुम्मूलिय°; T °उम्मूलिय°.

20. 2 a स भवमहणं संसारविध्वंसकम्. 4 a पो मा हरणं पद्याया° केवलज्ञानादिलक्ष्म्याः धारकम्; b ग य पा सं नष्टकर्मबन्धनम् 5 a अ हि ह य चं द वि हं अभिहता तिरस्कृता चन्द्रस्य विशिष्टा भा दीप्तिर्येन. 6 a सी य ले त्या दि—शीतलवचनाम्भसा हतः प्रक्षालितोऽङ्गरुहः शरीरजो रोगः कामो वा येन. 7 a से य प वि त्ति य रं श्रेयो निर्वाणं पुण्यं वा तस्य प्रवृत्तिकरम्, b वा स व पु ज्जं इन्द्रपूज्यम्. 8 b वि म लं विगतो द्रव्यभावस्वरूपः कर्ममलो यस्य. 9 b °त म हं ज्ञानदगावरणघातकम्. 10 b जा णि य स व रं ज्ञातस्वपरम्. 12 a कुं थु सु अति-सूक्ष्मजीवेष्वपि 12 b बहुगंधियगंधपंधविरयं ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरो मिथ्यात्वसुवर्णादिलक्षणो विद्यते तेषां मिथ्यादृष्टीनां तेषां ग्रन्थाः शास्त्राणि तैरुपदिष्टा. पन्थानः स्वर्गापवर्गाद्युपायास्ते विरता विनष्टा यस्मात्, तेभ्यो वा विरतः उपरतः. 13 a सं णि हि य स मं सम्यग् निहितः स्थापितः स्वात्मनि भव्येषु च शमो रागाद्युपशमो येन; 14 b अ र मि त्या दि—अरमत्यर्थं अचलः केनचिदपि न चालयितुं शक्यः; मू लि य मो ह दु मं मूलितः उन्मूलितः मोहद्रुमो येन. 15 a णि ण मि य न्नाभिश्चक्रवर्त्यादिभिर्नमितो नतः.

पासं पासासिकं<sup>१४</sup>राण हियं  
वंदे वयवडुमाणणियमं

सत्तूण वि दरिसिय<sup>१५</sup>धम्मसूयं ।  
सिरिवडुमाणवीरं चरि<sup>१६</sup>मं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदे कुवलयचंदे वंदिय सयल जिणेसर ॥  
तिह ते जयराएं समियकसाएं पुप्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसडिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभवभरहाणुमणिए महाकवे जयसुलोयणातित्थवंदणं  
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥  
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण°. १५ MB दरसियधम्मासिय. १६ MB चरिमं.

16 b सत्तूणेत्यादि - शत्रूणामपि दर्शिता धर्माधर्मप्रतिपादनात् श्री विभूतिविशेषो येन. 17 a वयवडु-  
माणणियमं व्रतरूपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा भव्यानां स तथोक्तः.  
19 पुप्फयं त जो ई सर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च.

## XXXVII

जयरापं रयणविणिम्मियइं पसरियकरणिउंरुंबइं ॥  
तेवीसहं जिणहं अण्णायहं वंदियाइं पडिबिबइं ॥ ध्रुवकं ॥

### I

<p>वंदइ सुंदरि चेइयइं जाम ते तियसहिं गय सहं समवसरणु वहुवरइं णवेप्पिणु गुरुपयाइं पत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं वरविजयवइजयंताइयाइं तोरणइं माणंमंदरणिशुंभ सरवरपविमलजलखाइयाउ पायारु णडिंदणिहेलणाइं जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु वत्तीस सुरिंद णरिंदु एक्कु जोइसवइ आणिय चंदसूर किंणरवइ दोणिण महोरईस</p>	<p>तहिं अच्छिय मुणिवर विणिण ताम । जहिं णिसवइ रिसहु तिलोयसरणु । मग्गेण तेण ताइं वि गयाइं । 5 जिणदंसणवंदणकयमणेहिं । दौरइं चत्तारि पलोइयाइं । माणिककरुज्जलमाणखंभं । पप्फुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ । मुणिणाहघरइं सुरतरुवणाइं । 10 मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविट्ठु । भरहेसरु बीयउ णाइ सकु । सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर । ते कायमहाकायंकभीस ।</p>
---	--

घत्ता—किंपुरिसहं राणा विणिण जण कहिय पुरिस किंपुरिसं वि ॥ 15

घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि णवरविच्छवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्धवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।  
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °णितरुंबइं. २ MB तेवीसइं. ३ M अणायगइं. ४ B सुंदर. ५ B omits this foot  
६ G करुज्जलु. ७ MB °थंभ. ८ MB णरिंद. ९ MB किंपुरिसा. १० M णवरच्छवि, B अवरविच्छवि.

1. 12 a वत्तीस सुरिंद तथाहि कल्पवासिनां द्वादश इन्द्राः, भवनवासिनां दश, व्यन्तराणामष्टौ, चन्द्रादित्यौ चेति.

## 2

गंधन्वहं पद्म समविसमणाम  
 जक्खिद पुण्ण मणिभद्द भणिय  
 तहिं काल महाकाल वि पिसाय  
 बल वइरोयण दणुइंद कहिय  
 पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ  
 दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु  
 अभियगइ अभियवाहण दिसेस  
 गज्जंत एंतिं अलिणीलदेह  
 अग्गिं व अग्गि हुयवहसिहाहं  
 इय पेक्खि वि वीस वि भावणिंद

रक्खसहं भीम अच्चंतभीम ।  
 भूयाहिव रूव विरूव भणिय ।  
 दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।  
 णांइंद धरण फणिवइ ण रहिय ।  
 सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ । 5  
 उयहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु ।  
 हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।  
 थणियाहिव मेह महंतमेह ।  
 वेलंब पहंजण पवणणाहं ।  
 धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद । 10

घत्ता—विभयपूरियहियउल्लएण हरिसुप्फुल्लियवयणे ॥

जय जय पभणंते जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणे ॥ २ ॥

## 3

णाहेयपायणियडइ वइंदु  
 पुणु बीयउ गणहरु जइवरिंदु  
 दढरहु दिहिपरियरु सत्तुदमणु  
 धम्माणंदणु इसिणंदणक्खु  
 गुंणि वाउसम्मु झाणोवविट्टु  
 रिसिं अग्गिगुत्तु अण्णेक्कु गोत्तु  
 हलहरु माहिहरु माहिंदु धीरु  
 विण्णाणवंतु विण्णायणेउ

पुणु वसहसेणु गणणाहु दिट्टु ।  
 अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।  
 गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।  
 जइ सोमयंत्तु सुरदत्तु भिक्खु ।  
 देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिंदु । 5  
 तेयंसिउ सत्तुहुयासगुत्तु ।  
 वसुएउ वसुंधरु अचलु मेरु ।  
 मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

2. १ MB मुणिय. २ MB णाणिंद. ६ B हुलपहक्खु ४ MB एंत. ५ MB अग्गिवइ.

3. १ MB णिविट्टु. २ MB जसयरिंदु. ३ MB सोमयत्त. ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउसमुज्जाणो. ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु. ६ MB सत्त. ७ MB अचल. ८ M भय; B सय.

2. 7 a दिसेस दिक्कुमाराः; b सो दा म णी स विद्युत्कुमाराः.



थिरचित्तु पवित्तु धरित्तिगुत्तु  
पुणु जण्णंगुत्तु पुणु सब्वगुत्तु  
पुणु विजयभडारउ विजयमित्तु  
अवर वि परमेसर परमजोइ

सयलोसहिगुत्तु वि विजयगुत्तु ।  
पुणु संव्वत्थि आयमि पउत्तु । 10  
विजइल सिरिअवराइउ णिरुत्तु ।  
चउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहियी इव भित्तिथले झाणलीण मणधीरा ॥

जोइय जण्णं जियजमकरणं सब्व वि साहु भडारा ॥ ३ ॥

## 4

उग्गतवमहातवतत्तवहं  
तवसिद्धपुज्जविजाहराहं  
आहारयतणुलयधारयाहं  
अवियलसुयसायरपारयाहं  
पयवीयकोट्टुबुद्धीसराहं  
पंचविहणाणउप्पाययाहं  
छम्मासवरिसउववासयाहं  
कंदप्पदप्पविणिवारणाहं  
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं  
दुज्जयपरवाइगिराहराहं  
खवियक्खपक्खभिक्खारयाहं

दित्ततव तवंतहं धोरतवहं ।  
अणिमाइगुणडुहं गुणहराहं ।  
मयरहियहं मोक्खासारयाहं ।  
णग्गहं णीसंगहं णिरयाहं ।  
तेजइयरिद्धिसिहिभासुराहं । 5  
बुज्झियपयत्थपज्जाययाहं ।  
तरुंकोडरकंदरवासियाहं ।  
जलसेढितंतुणहचारणाहं ।  
पासायदीवणिच्चलमणाहं ।  
पलियंकत्थहं लंबियकराहं । 10  
चउरासीसहसइं जईवराहं ।

घत्ता—इहु सो सोमप्पहु दिव्वु मुणि इहु सेयंसु वि समियमणु ॥

इहु पेक्खुं सुलोयणि तुज्जु पिउ रायरिसिंदु अकंपणु ॥ ४ ॥

१ MB जणयगुत्तु. १० MB सच्चउत्तु आयमं. ११ MB लिहियाइ वि. १२ MB जण्ण. १३ B °करणा.

4 १ MB अविलयं. २ MB ते जायं. ३ MB °उप्पायणाहं. ४ M तवकोडरं. ५ M °सेढिय-  
तंतुं. ६ M reads this foot as 11 a. ७ M reads this foot as 10 b. ८ B जईसराहं.  
९ M सेयंसु. १० MB पेक्खि.

4. 9 b पा सा ये त्या दि—प्रासादस्थदीपवन्निश्चलं मनो येषाम्. 10 a परवाइ गिराहराहं परवादि  
वचननिरासकानाम् 11 a ख वियक्खपक्खं. निर्जितेन्द्रियाः.

## 5

इहु जोयहि भायसहासु तुज्हु  
 जेणासि सयंवरि सूरदित्ति  
 इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिंदु  
 सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं  
 एकंबरछइयथणत्थलीहिं  
 जल्लमलविचित्तंगोयरीहिं  
 सुइसीलसलिलसंगहसरीहिं  
 आसंधियवंभीसुंदरीहिं  
 अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं  
 तेत्तियइं जि लक्खइं सावयाइं  
 जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं

थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्हु ।  
 रूसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।  
 समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिंदु ।  
 णाणुग्गमणिल्लूरियरईहिं ।  
 दलवट्टियकलिमलकंदलीहिं । 5  
 विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।  
 सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।  
 लक्खाइं तिण्णि संजमधरीहिं ।  
 पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।  
 परिपालियबारहविहवयाइं । 10  
 तहिं पंचेव य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता--कागणिकेरु सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥  
 पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगहं संख को बुज्झइ ॥ ५ ॥

## 6

अच्चंततत्तवणीयवणु  
 पेच्छिवि सहमंडवि जगजणेरु  
 इच्छियभवंभमणविणिग्गमेण  
 इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण  
 जय देव दिण्णपविमलमणीस  
 जय जीवलोयबंधव दयाल

कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसणु ।  
 णं जंबूदीवहु मज्झि मेरु ।  
 सकलत्तं विलसियउवसमेण ।  
 पारद्धु थुणहुं जयपत्थिवेण ।  
 जय जिण तिहुयणचूडामणीस । 5  
 जय पुरुतित्थंकर सामिसाल ।

5. १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु. २ MB एकंबर°. ३ MB °विलित्तं°. ४ MB पंच जि लक्खइं; K चउपण्ण जि लक्खइं. ५ MB °कर. ६ MB मिगहं.

6. १ MB भवभवण°. २ T तिहुवण°.

5. 11 a °हिं साव ईहिं हिंसा आपदश्च याभिः.

6. 1 b °कुरुह° वृक्षः. 2 a जगजणेरु ऋषभनाथः. 5 b तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडा-  
 मणिमोक्षस्तस्य ईश स्वामिन्. 6 b पुरु° प्रथमः. 7 b मयतरुकरेण मृत्युतरुभज्जहस्तिन् (? )

जय कप्परुक्ख जय कामधेणु  
जय सयरायरलोयावलोय

जय चिंतामणि मयतरुकरेणु ।  
संसारमहणवतरणपोय ।

घत्ता--पइं एयाणेयवियप्पणयणाएं वारियै परमपय ॥

पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय ॥ ६ ॥ 10

7

वड्डुं वियमिच्छामोहरयइं  
पइं जिणिवि णाह जं तच्चु सिट्ठु  
सयलहं मणि णिवसइ सामलंगि  
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीथराउ  
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव  
इय वंदिवि जिणु जियतरुणिविरहु  
पहु भेल्लहि गच्छमि करि पसाउ  
तं सुणिवि चवईं रायाहिराउ  
ण पहुच्चइ जइ तुह गयउरेण  
एणं सयलेण वि सरयणेण  
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु

समयहं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं ।  
तं मुणइ ण वंभु ण रुहु विट्ठु ।  
विड संभरंति किं सत्तभंगि ।  
तुहुं इंदमउडमणिघडियपाउ ।  
हउं कैरेवी तुहारी चरणसेव । 6  
पणविवि संभासिउ तेण भरहु ।  
तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ ।  
लइ रच्चु तुहुं जि जय होहि राउ ।  
तो पूरइ किं ण धरायलेण ।  
आयड्वियणवणिहिहडधणेण । 10  
तुहुं भुंजहि महि आसाणि णिविट्ठु ।

घत्ता—मा जाहि तवोवणु चमुपमुह वेहाविउ रिउ रायहि ॥

पइं जेहउ वीरु महाभडु वि जिप्पइ विसयकसायहि ॥ ७ ॥

३ MB धारिय; T निवारिता निराकृता.

7. १ K वड्डारिय<sup>०</sup>. ३ MB मणिधिट्ठय<sup>०</sup> ( धिट्ठ ? ). ३ MB करमि. ४ B भणइ. ५ MB बइट्ठु.  
६ MB वीर.

१ ए याणेय वियप्पणयणाएं वारिय एकानेकविकल्पौ अद्वैतक्षणिकत्वभेदौ तयोर्नयास्तत्प्रसाधकप्रमाणानि ते  
न्यायेन प्रमाणोपपत्त्या निवारिता निराकृता येन.

7. 1 b समयहं मतानाम्; तेसट्ठइं तिण्णिसयइं त्रिपट्ठधिकानि त्रीणि क्षतानि. १ a जियतरुणिविरहु  
धर्मानुरागपरतया निर्जितः हृदयेऽसंप्रधारितस्तरुणीविरहो येन. 12 वेहाविउ विजयशुद्धिं नीतः.

## 8

जिण्हवणवारिधुयमंदरेणं  
 भेल्लिहिं भरहाहिव जाउ एहु  
 तियसिंदहु तं पडिवण्णु तेण  
 जं चिरु पिउणिलयहु णिग्गयाइं  
 जं सत्तिसेणपरिपालियाइं  
 जं भंगुरणहरहिं दारियाइं  
 मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं  
 वेउव्वियतणुसोहाहराइं  
 जं वाणि पच्चारिउ भीमसाहु  
 तं सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज

ता विहसिवि चविउ पुरंदरेण ।  
 होसइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।  
 णियपणइणि आउच्छिय जएण ।  
 जं णासिवि सरवासाहु गयाइं ।  
 अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं । 5  
 बिण्णि वि मज्जारें मारियाइं ।  
 जं पिउवणजलणें पडलियाइं ।  
 जायाइं सग्गि जं वहुवराइं ।  
 जं हूयउ सो तेलोक्कणाहु ।  
 साहेवउं मइं परलोयकज्ज । 10

घत्ता — आयणिवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥

आमेल्लिउ पिययमु पणइणिप रुच्चन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

## 9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं  
 अवगण्णिउं तंणु जिह पुहइरज्जु  
 हक्कारिउ पुत्तु अणंतवीरु  
 तहु पट्टु णिवांधिवि जयरेण  
 आउच्छिवि जीवाजीवभेय  
 अरिमिच्छि पउंजिवि सरिस दिट्ठि  
 दिव्वे भावेण वि मुक्कगंथु  
 जउ दिक्खंकिउ पणविउ जइहिं

दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।  
 मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।  
 गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।  
 जिणवरु जयंकारिवि घणरवेण ।  
 परियाणिवि णाणाणाणणेय । 5  
 सिरि लोउ विइण्णउ पंचमुट्ठि ।  
 णिग्गंथु णियच्छियमोक्खपंथु ।  
 अट्ठहिं सएहिं सह णरवइहिं ।

8. १ G मंदिरेण. २ MB भेल्लिहि. ३ MB पिय°. ४ MK सरवाहहु.

9. MB तिणु. २ MB हक्कारिवि पुणु. ३ MB जयरेण. ४ MB जयकारेण. ५ M दिव्वे.

9. 5 6 णा णा णा णणे य चेतनरूपं ज्ञेयं परिच्छेद्यं, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च.

तेणंगइं वारह सिक्खियाइं  
सो मुणिवरु मेह्लिवि मोहवासु

चोइह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।  
जायउ गणहरु रिसहेसरासु । 10

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥

अणुगामिणि तुंम्हहु होमि हउं संजमु धरमि भडारा ॥ ९ ॥

## 10

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं  
कयकम्मपहावै विणंडियाइं  
णियकंतइ सहुं सुहिहिययथेणु  
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ  
जइयहुं जायइं पारावयाइं  
जइयहुं उप्पण्णइं खेयराइं  
रिसिदंसणेण विंभियमणाइं  
तइयहुं लग्गिवि वहुंपइ णिरुत्तु  
णीसेसजीवसंतीयरेण  
सज्जणगुणर्गहणाणंदियाइ  
घल्लिउ सकेसु लुंचिवि सणेहु  
उम्मुक्कवियारपलोयणाइ

रिउभइयइं छड्डियमंदिराइं ।  
णासंतइं काणणि णिवडियाइं ।  
जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।  
हियउल्लउं काइं वि धम्म थियउ ।  
लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं । 6  
लीलालंधियविउलंवराइं ।  
जइयहुं सुराइं बिण्णि वि जणाइं ।  
भो तुज्जु चरित्तु जि मँहु चरित्तु ।  
तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।  
अप्पिय सुंदरिइ सुहदियाइ । 10  
व्रयसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।  
लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।

घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमाणि मंडिय ते मलमइलिय ॥

णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१० ॥

१ M तुम्हइं होमि; K तुम्हहुं होमि.

10. १ MB णिवडियाइं. २ MB तुहुं पइं. ३ M मज्जु. ४ MB °गहणे णंदियाइ. ५ MB सकेस  
६ MB वय°. ७ MB उम्मुक्कपियारयलोयणाइ.

0 b लोउ लोचः.

10. 8 a वहुंपइ वधूपती. 10 b सुहदियाइ भरताप्रमहादेव्या सुभद्रया.

## II

गंधारिगोरिपण्णात्तियाउ  
 विच्छड्डियघरवावारत्ति  
 तापियविओयसिहितवियकाय  
 हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु  
 इंदियइं पंच णेउ पीलियाइं  
 मइं पावइ काइं जियंतियाइ  
 इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि  
 मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि  
 घणरवघरिणिउ वयपयणईउ  
 एयारसंगसुयधारिणीइ  
 देवीइ अकंपणु तणुरुहाइ

चिरभवविज्जउ परिचत्तियाउ ।  
 अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।  
 जूरइ अणंतवरवीरमाय ।  
 विणु पिउणा रज्जे को मरट्टु ।  
 झाणेण ण णयणइं मीलियाइं । 5  
 पइविच्छोएं तप्पंतियाइ ।  
 णियसुयहु देति परलोयबुद्धि ।  
 थिय रायसासणाणंदधामि ।  
 अवरैउ संजायउ संजईउ ।  
 णाणापुरगामविहारिणीइ । 10  
 रैयणहि सकहंतरु कहिउ ताइ ।

घत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥

अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केत्थु सुलोयण ॥ ११ ॥

## 12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण  
 उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु  
 होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि  
 माणियगिन्वाणरईरमाइ  
 होही कर्णयद्धउ णाम राउ  
 लहिही सुहं अमरणु अकरणालु

ता भणिउं पढमतिथंकरेण ।  
 जाएसइ जउ णिन्वाणठाणु ।  
 सुइभावे भावाभावभावि ।  
 सुहं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।  
 तउ चरिवि पणासिवि रोसुं राउ । 5  
 जेवहु सलिलु तेवहु णालु ।

11. १ MB पत्तत्तियाउ; २ MB ण णिवीलियाइं. ३ MB अवर वि. ४ MB रयणिहि.

12. १ B कणयट्टु. २ MB सो सुराउ. ३ MB सुहं अमणु अकरणालु.

11. 8 b आ णं द धा मि हस्तिनागपुरे. 9 a वयपयणईउ व्रतजलनद्यः. 11 b रयण हि रत्ना-  
 श्रविकायाः.

12. 3 a अ ह मिं दु अच्युतेन्द्रः.

णिप्पज्जइ णालिणहु णत्थि भंति  
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूल्ले

जिणधम्मि पैसु वि सुरिद होंति ।  
जिणधम्मु सव्वकल्लाणमूल्लु ।

घत्ता—जिणधम्मु पर्माइवि मूढमइ जो परधम्महु लगाइ ॥

चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कर्हि णिग्गइ ॥ १२ ॥ 10

## 13

मागहमंडलपरमेसरासु  
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु  
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु  
गणहरु रिसिसंघहु तिलयभूउ  
सइंसिन्दु भडारउ दुहविणासु  
गेहिणि हूई अच्चइ सुरिंदु  
णिरसणभूसणभूसिउ अणंतु  
आयासहु णिवडइ पुष्पविट्ठि  
जर्हि पाउ देइ तर्हि तर्हि जि कमलु  
जर्हि वच्चइ तर्हि कासु वि ण दुक्खु  
सीहासैणु छत्तइं तिण्णि थंति

चेलिणिकमलिणिणवणेसरासु ।  
आर्गामितइयभवजिणवरासु ।  
गोत्तमु दियैगोत्तंवरमियंकु ।  
जयराउ एकहत्तरिमु हूउ ।  
संपत्तउ सो तिजगग्गवासु । 5  
काले महि विहरइ जिणवरिंदु ।  
दीसइ सुरयणु ते सहुं चलंतु ।  
चउअहियइं चमरइं वारु सट्ठि ।  
सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।  
जर्हि वसइ तर्हि जि कंकेल्लिरुक्खु । 10  
तिहुयणपहुत्तु णाहहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सूयरसंवरर्हि मृगमायंगतुरंगर्हि ॥

जिणणाहहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगर्हि ॥ १३ ॥

४ MB पुण वि. ५ MB मोहजालु. ६ B मुएवि.

13. MB आगम्मि. २ MB असियसंकु. ३ MB दियगोत्ते वर'. ४ MB णिवसण°; K णिवसण  
but corrects it to णिरसण°. ५ MB सीहासण. ६ MB मिग°.

4 b चहु° द्वाविंशतिः. 6 a अकरणालु अतीन्द्रियम्.

13. 13 °भा संगर्हि °भापास्वरूपैः.

## 14

सुव्वइ दुंदुहि णहि वज्जमाणु ।  
 देसाहिव उच्चायंति चरुउ  
 भामंडलु णवरविमंडलाहु  
 पुव्वंगधारि तवतणुसरीरं  
 देसावहिपरमावहिसमेयं  
 णवदिविखय सिक्खुयं संत दंतं  
 णिहंयक्खयअक्खयपयसमीह  
 जहिं गच्छइ तहिं गच्छंति भव्व  
 माणव तिरिक्ख सुवर असंख  
 झं झं करंति झुणि झल्लरीउ  
 तुंबुरु णारय गायंति मिट्टु

पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।  
 बहुकुसुमगंधपरिमल्लिउ मरुउ ।  
 गच्छंति समउं बहुमेय साहु ।  
 मणपज्जवर्णाणि सहावधीरं ।  
 केवलिकेवलंणाणेक्कतेयं । 5  
 वेउव्वियाइं बहुरिद्विवंत ।  
 कइगमयवाइ वाईहं सीह ।  
 जहिं अच्छइ तहिं अच्छंति सव्व ।  
 हू हू हुयंति चउदिसिहिं संख ।  
 णच्चंति णरामरसुंदरीउ । 10  
 भरहं दिट्टुउ पिउं सुहुं णिविट्टु ।

घत्ता—आउच्छिउ धम्मु महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥

केवलि परमप्पउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

## 15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु  
 भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि

णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।  
 सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14. १ M सुम्मइ; B सव्वइ. २ B दोसाहिव. ३ B चारु. ४ M °मलियगरुउ; B °मलिउ गारु. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलभयसयाविहीर. ६ B °णाण. ७ M दुइदहसहास. ८ M adds after this in second hand and in the margin : रिसि सयपणास विमुक्कु वास. ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरंध-सहस पयडियविवेय; B adds : सुणिरंधसहस पयडियविवेय. १० M °केवलणाणक्क°; B °केवलणाणक्क°. ११ M adds after this in second hand and in the margin : णयणग्गई चउसुण्णहिं समेय; B adds : णयणग्गई चउसुण्णसमेय. १२ MB °सिक्खिय°. १३ M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु वयभयदोएक्कु वि णिरीह. १४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व. १६ MB जिणु. १७ B सुहणिविट्टु.

15. १ MB पोग्गलु दुविहु. २ MB णिज्जर.

14. 2 a चरुउ अर्घपात्रम्. 4 a ° तणु सरीर °कृशशरीरः.

15. 9b °जलजायक्केउ मकरध्वजः कामः.



जीवहं गईउ कहियाँउ तिणिण  
 गुणवयइं तिणिण जगि जोय तिणिण  
 चउविहु चउगइ संसारसरणु  
 चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु  
 चउ ज्ञाणइं चउ देवहं णिकाय  
 चउविहु जि वंधु चउविहु जि णासु  
 चत्तारि वि वंधविणासहेउ

जगवेढणमरु गारव वि तिणिण ।  
 हयकाले भासिय काल तिणिण ।  
 वालाइउ चउविहु भणितं मरणु । 5  
 चउविहु दव्वाइउ दीसमाणु ।  
 चउभिण्णा उचविह चउकसाय ।  
 विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।  
 भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

घत्ता—सज्झाय पंच आयारविहि णाणइं पंच वैरिट्ठइं ॥ 10

णिग्गंथ पंच जोइंसकुलइं पंचेदियइं वि सिट्ठइं ॥ १५ ॥

## 16

अणगारागारिवयाइं पंच  
 आसवणिवंधहेऊउ पंच  
 संसारसरीरइं हौति पंच  
 छज्जीवकाय छकाल समय  
 छइव्वइं छावासयविहीउ  
 पयईउ अट्ट पुहईउ अट्ट  
 णव णारायण णव सीरधारि  
 णवविह पयत्थ दहभेउ धम्मु  
 दह भावणसुर भवणंतवासे  
 पयारह रुह रउहभाव  
 पच्छित्तइं अणुवेक्खावयाइं  
 वारह णरिंद पालियरहंग

पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।  
 लद्धीउ महाणरया वि पंच ।  
 गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।  
 छल्लेसाभाव वि समय वि मय ।  
 सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ । 6  
 वणदेव जीवगुण ते वि अट्ट ।  
 पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।  
 वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्मु ।  
 फणिससिसह दह दिसिगय सुहासि ।  
 पयारहविह सावय विगाध । 10  
 वारह जिणवयणाविणिग्गयाइं ।  
 वारह तव वारहविह सुयंग ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं अक्खियइं तेरह किरियाठाणइं ॥

चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥ १६ ॥

३ MB कहियाइं. ४ MB संसारगमणु. ५ MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय. ६ MB विसिट्ठइं.  
 ७ MB जोयस°.

16. १ MB °गारवयाइं. २ MB दहभेय. ३ B अणुवेहावयाइं. ४ MB वारह तव वारहविह सुयंग.  
 ५ MB रक्खियइं.

16. 6 b वणदेव व्यन्तरदेवाः. 9 b फणि ससिसह धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः.

## 17

अरहंतै सिद्धंतासियाइं  
 चउदह मल चउदह चित्तगंथ  
 चउदह रयणइं गुणिगहियणाम  
 पण्णारह कम्मधराविहाय  
 सोलह वयणइं दुहदारणाइं  
 संजम दहसत्त दहट्ट दोस  
 असमाहिणिलय वज्जरिय वीस  
 बावीस परीसह कुमुणिभीस  
 तित्थयर भणिय चउवीस ईस  
 छव्वीस समासिय वसुहभेय  
 आयारकप्प पवरट्टवीसं  
 भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

चउदह पुव्वाइं पयासियाइं ।  
 चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।  
 चउदह दक्खालिय भूयगाम ।  
 पण्णारह उवएसिय पमाय ।  
 सोलह जिणजम्महु कारणाइं । 5  
 णाहज्झाणइं एकूणवीस ।  
 कयमणमल सर्यल वि एकवीस ।  
 सुइयडुज्जयणाइं वि तिवीस ।  
 मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।  
 गुण सत्तवीस जइवरविहेय । 10  
 अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।

घत्ता—एयाहिय तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसें ॥

वत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउंचियकेसें ॥ १७ ॥

## 18

जं जलि थलि णहि पायालमूलि  
 तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु  
 गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुहु  
 णरणाहे रयणिहि सुत्तएण  
 सूयरदाढाखंडियकसेरु  
 अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिएण  
 किउ णयणगलियजलविंदुएहिं

जं थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।  
 भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।  
 गउ णिउ णियपुरु णिलयणि पइहु ।  
 सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।  
 इललुलिउ णिहालिउ तेण मेरु । 5  
 सिविणयविवरणउं पुरोहिएण ।  
 वच्छत्थल्लहारोवरि चुएहिं ।

17. १ MB सिद्धंताइयाइं. २ MB मुणिगणियणाम. ३ MB णाहाज्झाणइं. ४ MBK सवलं.  
 ५ MB सुइयज्जडयणाइं. ६ B तिणि वीस. ७ M adds after this: वयसमिदिपमुह जंपइ जईस.  
 ८ MB एयाहितीस.

18. १ MB सुविणय°. २ MB वच्छत्थल्लु.

17. 1 a सिद्धंतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि. 2 b °संथ संस्था मर्यादा.

तिद्वारयणियरिविलुक्कमाणु  
उद्धरिवि लोउ अण्णाणुं दीणु  
महि विहँरिवि पुव्वहं एक्कु लक्खु  
पावणवणकुसुमामोयमहुरु

कालाहिमहामुहि णिवडमाणु ।  
चउदह दिणं वरिससहासहीणु ।  
केलासु पराइउ णाणचक्खु । 10  
आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धसिहरु ।

घत्ता—दससहसहिं समउ महारिसिहिं कामकोहणिण्णासणु ॥

थिउ पुण्णिमदियहि जिणाहिवइ बंधिवि पलियंकासणु ॥ १८ ॥

## 19

जाणिवि<sup>१</sup> जणणहु जणणचयणु  
सुविसुद्धबुद्धिसीलावयासु  
गिरि सोहइ चुयमहुआसवेहिं  
गिरि सोहइ वियलियणिज्जरेहिं  
गिरि सोहइ णाणाविहमएहिं  
गिरि सोहइ णच्चियमोरएहिं  
गिरि सोहइ धम्मणएण जेम  
गिरि परियंत्विउ सवराहिवेण

लहुयउ ओहुँल्लिउ करिवि वयणु ।  
आयउ भरहु वि अट्टावयासु ।  
जिणु सोहइ रुद्धहिं आसवेहिं ।  
जिणु सोहइ कम्महुं णिज्जरेहिं ।  
जिणु सोहइ रिसिहिं सुणिम्मएहिं । 5  
जिणु सोहइ सुरसँरमोरएहिं ।  
जिणु सोहइ धम्मणएण तेम ।  
जिणु पणवंते भरहाहिवेण ।

घत्ता--ता णाहु समुग्घायंतरहिं दीहसमयसंताणइं ॥

वेयणियणामगोत्तइं करइ तिण्णि वि आउपमाणइं ॥ १९ ॥ 10

## 20

मुणिपवरै किउ किरियाविहाणु  
णीसारिउ दंडायारु जीउ

रुंदत्तणेण ससरीरमाणु ।  
तिजगगचरमणरयंतु णीउ ।

३ MB °पाणु. ४ MB णिविडमाणु. ५ MB अण्णाण. ६ MB °दिणु. ७ G विवरिवि. ८ MB सिद्धिसिहरु.  
९ K दह°.

19. १ MB जाणिवि जणजणणहु. २ M लइयउ. ३ MB ओहल्लिउं. ४ Tp ससमोरएहिं इति पाठे  
उपशमयुक्ताश्च ते उरगाश्च. ५ B गोत्तहु.

19. 1 a जणणहु ऋषभनाथस्य; जणण चयणु संसारत्यजनम्. 3 a चुयमहुआसवेहिं प्रवृत्त-  
मधुप्रवाहैः. 6 b °सरमोरएहिं सरमाः सलक्ष्मीकाः उरगाः तैः. 7 a धम्मणएण धर्मनाम्ना वृक्षविशेषेण;  
b धम्मणएण धर्मन्यायेन. 9 समुग्घायंतरहिं समुद्घातविशेषैः दण्डकपाटप्रतरलोकपूरणरूपैः.

20. 1 a किरियाविहाणु शरीरादात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणम्. 2 °चरमणरयंतु सप्तनरकाणां  
मध्ये नित्यनिगोदनरकं एकेन्द्रियाणां भेदस्तस्य पर्यन्तम्.

अङ्गुपसारिउ पुणु सुरीडु  
 अप्पाणउ देवें देवणविउ  
 णीसेसलोयपूरणु करेवि  
 तेजइयकम्मभोरालियाइं  
 मुणि भेल्लिवि तिज्जउ सुहुमकिरिउ  
 तहिं सुक्कझाणि आयउ अजोइ  
 थिउ देहभंतारि सामिसालु  
 अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ

णं तिहुयणघरि दिण्णउं कवाडु ।  
 रूआयारें सहस ति थविउ ।  
 विवरीएं चारें संवरेवि । 5  
 तिण्णि वि अंगइं णिच्चालियाइं ।  
 संपत्तु चउत्थु छिण्णैकिरिउ ।  
 मणवयणकायमुक्कउ विहाइ ।  
 क ख ग घ ङ समक्खरभणणकालु ।  
 फलछल्लि व जैरदेरंडवीउ । 10

घत्ता—दंसणणाणाइहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं संपण्णउ ॥

ससहावें जाइवि परमपए परमेसरु संपण्णउ ॥ २० ॥

## 21

ता सक्कें कय माणवमणोज्ज  
 सियसिवियहि णिहियउ णाहदेहु  
 भंभाभेरीझल्लरिसयाइं  
 गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं  
 घिप्पंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं  
 सहलक्खयधूर्वविलेवणेहिं  
 आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं  
 कप्पूरचंदणागुरुत्तुरुक्ख  
 अंचेप्पिणु रिसिपरमेसरासु  
 पय पणवंतहिं तंबिरतिडिक्कु

अरुहहु पंचमकल्लाणपुज्ज ।  
 कइलाससिहरि णं अरुणमेहु ।  
 सुरतूरिएहिं तूरइं हयाइं ।  
 णच्चंतिहिं फणिसीमंतिणीहिं ।  
 उब्भियउल्लोवधयावलीहिं । 5  
 भिंगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं ।  
 अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं ।  
 सल्लं विरइय खंडिवि विविह रुक्ख ।  
 तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु ।  
 अग्गिदहिं मउडाणलु विमुक्कु । 10

10. १ G सरीडु. २ M फयरायारें; B कयआयारें; T पयरायारें. ३ MB विवरीरें; T विवरीएं. T णिच्चालियाइं, ५ B छण्ण°. ६ MB भरण°. ७ MB जरदेरंड°. ८ MB वसुसमिहिं. ९ MB ङुगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ.

11. १ MB सुरतूरएहिं. २ MB धूम°. ३ B पुरुक्ख. ४ M सयल विइय खंडिवि; B सलु विय णिहिवि.

सुरीडु देवस्तवंतु देवसुतं वा. 4 b रू आया रें प्रतराकारेण. 5 b विवरीएं चारें संवरे वि प्रथमं लोक-  
 रणं कृत्वा ततो रुजकारसंवरणं ततो दण्डाकारसंवरणमिति. 6 b णिच्चालियाइं निःपरिस्पन्दीकृतानि.

11. 10 a °ति डिक्कु स्फुलिङ्गः.

घत्ता—अलहंतु णरत्तणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥

सिहि णं संसारं तौसियउ जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥ २१ ॥

## 22

उल्ललिउ धूमु घणजणियसंकु  
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ  
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ  
तिणिण वि सिहि पुज्जिय सोत्तिणहिं  
तं मणिणवि पुण्णज्जणु पविचु  
भाल्लयलि कंठि भुज्जुयलसिहरि  
भणु मुद्धएसि मउडग्गभाइ

णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।  
तणु पचु खणद्धं भप्फभाउं ।  
मुणिवर सकारिय पच्छिमाइ ।  
घय जैव तिल घल्लिवि खत्तिणहिं ।  
अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोत्तु । 5  
हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।  
जसमंडणुं जिह तं सहइ काइ ।

घत्ता—जं तुम्हहं जायउ मोक्खुं सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥

इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इदं रिसहहु केरउ ॥ २२ ॥

## 23

जेही तुह तेही होउ बोहि  
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं  
विंतरदेवहिं जोइसगणेहिं  
णंदादेवीइ महासईइ  
भरहेण दुक्खदूमियमणेण  
केसरिकिसोरसरि ासहरिवासि

अम्हहं वि भडारा माणि समाहि ।  
वंदियउ तियाउसु खेयरेहिं ।  
वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।  
वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।  
वंदियउ तियाउसु परियणेण । 5  
घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।

५ MB तावियउ.

22. १ B जलिय°, २ K भप्प°, ३ MB घय तिल जव. ४ G भायलि ५ MBK भुयजुयल°. ६ MB मुद्धएस. ७ MB मोक्खसुहुं.

23. १ MB मणसमाहि.

22. ७ b हि प्पंकइ हत्पङ्कजे हृदयकमले. 7 a मुद्ध ए सि मस्तकप्रदेशे. 9 ति या उ सु भस्म.

23. ७ a °स रि °शब्दे.

सूर्यगमि कैसणचउहसीहि  
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु  
तेलोकमंदिराधारखंभु

णिव्वुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।  
सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।  
कहिं पेच्छमि देउ जुगाइवंभु ।

घत्ता--पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुंणियउ ॥

10

उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ र्हुणियउ ॥ २३ ॥

## 24

तुहुं मज्झ बप्पु जगडिंभबप्पु  
पइं विणु को पालइ इट्ट सिट्ट  
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ  
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ  
इह सो मुउ जो मुउ गब्भिवसइ  
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवरु  
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु  
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि  
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु  
तं णिसुणिवि राणं दुण्णिरिक्खु

पइं विणु को कहइ कलावियप्पु ।  
को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ट ।  
को होइ देव देवहिं वि देउ ।  
ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।  
छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ रसइ । 5  
परमण्णउ हूयउ अजरु अमरु ।  
जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।  
जो जायहु सिद्ध तमोहु धुणिवि ।  
मा मोहें तुहुं संचहि दुक्कम्मु ।  
महुंइ साहारिउ तायदुक्खु । 10

घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥

मंडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥ २४ ॥

## 25

सोमण्णहु हयसुहदुक्खहेउ  
गय णिव्वाणहु तिज्जगुत्तिमंगि

सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।  
थिय तिण्णि वि अट्टमधराणिरंगि ।

२ MB सूर्यगमि. ३ B किसण°. ४ B सुण्णर. ५ MB ओमाहियउ. ६ MB रल्लियउ.

24. १ M दुहमलिउ. २ MB मंडइ. ३ MB हिययदुक्खु.

25. १ MB तिज्जगुत्तमंगि.

11 ओ म्मा हि य उ उत्कण्ठितः.

24. 2 a इट्ट सिट्ट इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्याः.

25. 1a हय सुहदुक्खहेउ त्यक्केष्टानिष्टविषयः.

सहं गणणाहर्हि उव्वारुएहिं  
 णिद्धाडियसाडियकम्मरेणु  
 गउ मोकखहु उव्वणरमियखयरि  
 कुंकुमविलेउ ढोयंतएण  
 अवलोइवि पंडुरु एक्खु केसु  
 णयरायरपुरवरपउरदेस  
 भूएसु भूरिपसरियकिवेण  
 परिवडइ ण चिहुएप्पाड जाम  
 हूयउ परमेट्टि परमप्पताणु  
 फेडिवि भव्वहं मणमोहयालु

णासियमयमोहमहारुएहिं ।  
 कालेण गैलंतं वसहसेणु ।  
 एत्तहि वि तेत्थु साकेयणयरि । 5  
 दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।  
 णिंदिवि णरजम्मु सुणिव्विसेसु ।  
 णियसुयहु समप्पिवि महि, असेस ।  
 तवचरणु लइउ भरहाहिवेण ।  
 उप्पणउं केवलु तासु ताम । 10  
 चउदेवणिकायहिं थुव्वमाणु ।  
 महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोकखु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणचुउ ॥  
 फेणिविसहरकिंणरपवरणरपुष्पयंतगणसंथुउ ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे सगणहररिसहणहभरह-  
 णिष्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥  
 ॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

२ MB उव्वारुएहि. ३ MB °महाभएहिं. ४ MB °सारिय°; T साडिय. ५ MB गणंतं. ६ MB उव्वणि.  
 ७ B एत्तहिं तेत्थु. ८ M परस्स ताणु; B परप्पताणु. ९ M °कम्मवेधेहिं चुउ; B कम्मबंधेहिं चुउ. १० MB  
 फणिखेयर°.

३ a उव्वारुएहिं उद्धरितैः सह. 4 a णिद्धाडिय साडियकम्मरेणु निर्घाटिताः पूर्वोपार्जिता निर्जार्णाः  
 शातिताः अपूर्वा आगच्छन्तो निवारिताः कर्मरेणवो येन. 10 a परिवडइ निष्पद्यते. 11 a परमप्पताणु  
 परात्मरक्षकः. 14 °विसहर° वृषधरा महामुनयः.

# NOTES





## NOTES

[ *The references in these Notes are to Samdhis in Roman figures and Kadavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a samdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T. Stands for Tippana of Prabhācandra.* ]

### I

[ The Poet offers homage to Ṛṣabhanātha, the first of the Tirthamkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i. e., 959 A. D.) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi ( Mānyakheta, modern Malkhed ) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaīya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava alias Vīrarāja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Ṛṣabhadeva and of Padmāvati Yakṣiṇī, the goddess of learning.

The poet proceeds : There is in the Jambūdvipa a country called Magadha with its capital Rājagṛha. King Śreṇika was one day seated

in his court with Cellanādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvīra had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1. The poet pays homage to Risaha, the first Tīrthamkara.

1. 3a सुपरिक्लिय, सम्यग् ज्ञाता, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3b दिव्यतनुं, निःस्वेदत्वादिद्शातिशयोपेत-शरीरम्, T., the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atisayas which a Jina possesses is 34. See Abhidhāna Cintāmani I. 57-64. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV. 2. 4a पयडियसासयपयणयरवहं, प्रकटितः शाश्वतपदनगरस्य मोक्षस्य पन्था मार्गो रतनत्रयरूपो येन तम्, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5a सुहसीलगुणोहणिवसहरं, शुभाः प्रशस्ताश्च ते शीलगुणाश्च तेषामोघः समूहस्तस्य निवासगृहम्, T., the home of a large number of auspicious qualities. 10a चित्तलियणहं कञ्चुरिताकाशम्, T.. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15b मत्तासमयं, the poet wants to suggest incidently the name of the metre which is मात्रासमक. 17 जासु तिथि, यस्य तीर्थे, in whose preachings.

2. The poet pays homage to the five dignitaries of the Faith, usually called पञ्चपरमोष्ठिन, viz., तीर्थंकर, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय and साधु, and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3b कोमलपयाई, कोमलानि चक्षुःप्रीतिजनकानि श्रोत्रमनःसुखदानि च, पयाई पदन्यासाः पदरचनाश्च, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5a छंद्रेण जंति, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6a चोद्धसपुव्विह्ल, चतुर्दशपूर्वैः युक्ता सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दशैः (?) पूर्वैः पूर्णपुरुषैर्युक्ता मात्रान्वये हि सप्त, पुरुषास्तत्पतेः (?) पित्रन्वये च सप्तेति, T. The goddess possesses fourteen Pūrya books, ancient texts of the Jainas, now lost; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. दुवालसंगि, सरस्वती द्वादशाङ्गैर्युक्ता, स्त्री तु—

नलया बाहू य तथा नियं च ( गिर्यं च ? ) पुट्टी उरो य सीसं च ।

अद्वेव दु अङ्गगई सेस उवङ्गा दु देहस्त ॥

इत्यष्टौ, कर्णन्तसिक्ताजयनोष्ठाश्चत्वार इति द्वादशाङ्गैर्युक्ता, T. The twelve āngas are the

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6b सत्तमंगि, सरस्वती सप्तमङ्गोपेता स्त्री तु सत्तमंगि धैर्यरहिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T. It would be better to interpret सत्तमंगि applicable to a woman as सत्त्वभाङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका.

3. 3a-b भुवणक्केरामु तुडिगु, रुग्गराजः तस्येदं विरुदम् T. We know that the Rāstrakūta kings had a number of *Birudas* ; we have in Puṣpadanta's works a few others such as Śubhatuṅga (see I. 5. 2a and note thereon) and Vallabhadeva. तुडिगु seems to be of Kannaḍa origin. 7b मायंद-गोछगोदलियकीरि, आम्रलुम्बिमिलितयुक्ते, (garden) where parrots have gathered on the blossom of mango trees. गोदलिय comes from गोंदल, a Deśī word, which means a gathering. Compare गोंधळ, गोधळी in Marathi. 9b खंड means पुष्पदन्त ; so also अहिमाणमेरु in 12a below. 14 वर or वरि, an expletive of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer.' 15 म णिहालउ सुरुगमे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked.

4. Drawbacks of royalty condemned.

4. 3a सत्तंगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल. 4a विससहजम्मइ, fortune born along with हाळाहल poison at the time of the churning of the ocean.

5. Bharata glorified.

5. 3a पाययकइक्वरसावउद्दु, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time.

6. The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa.

6. 9a देवीसुएण, by the son of Devī, i. e., by Bharata.

7. The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena.

7. 3a गोवज्जिण्हि etc. This series of epithets have double meaning : one applicable to षगदिण etc. and the other applicable to the wicked.

## MAHĀPURĀṆA

8. Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8. 7b भुङ्क्ते छण्यंदहु सारमेउ, let the dog bark at the full moon. 9b कव्वपिसल्लएण, another epithet of Puṣpadanta; compare कव्वपिसाय, कव्वरक्खस.

9. The poet, by way of modesty, shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9. 1a अकलंक etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Nāyakumārācariu, page XXIII. 13b कुडवेण मवइ को जलणिहाणु, who can measure the waters of the ocean by means of a Kudava, a small measure? 17 विवरोक्खए किं अक्खइ, why should I say at the back? i. e., I say it openly, I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomuha Yakṣa and Cakkesarī Yakṣiṇī who are the guardian deities of ऋषभ, and of the goddess of learning.

10. 14 जो णरु भसइ णिबंघहो, he who barks at my work.

11. The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagrha, its capital.

12. 9b मंधामंधियमंधणिरवाइं, मन्थेन रविकया मथिताद्विलोडितान्मन्थनीरवाः शब्दा यत्र, T., where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagrha.

13. 11b संगहु सिरिणयणजणहु णाइं, it was, as it were, a storehouse, संगह, of collyrium of श्री. The lotus flower, with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagrha.

14. 9b अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं, like ignorant people who are misled by false doctrines (कु+शासन).

15. Description of Rājagrha continued.

16. King Śreṇika described.

18. King Śreṇika receives the report of the arrival of Mahāvira

18. 6b चउदेवणिकाय, the four classes of gods are : भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक. 7a चउतीसातिसय, the Arhats possess thirtyfour atisayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmaṇi and several other works. See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Triṣaṣṭi. 9b अट्टविहपाडिहेर, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz., अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि and त्रिछत्र. 10b विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagrha. 15 पुष्कयंततेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Samdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूर्य, and the Tirthamkara of that name. The term पुष्कयंत is at times paraphrased by पुष्कदसन, कुसुमदसन etc. भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines. The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin.

## II.

[ King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvira, proceeds along with his retinue to see him. After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does.

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe. The last of these Kulakaras was Nāhi ( Sk. Nābhi ), and his queen was Marudevī. Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhanaya, i e., Kubera, to make the town of Ujjhā ( Ayodhyā ) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina. ]

1. 6b णं वररायवित्ति रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i. e. a lotus flower, is compared to royalty ( वररायवित्ति ) which also holds कुवलय, i. e., the globe of the earth, and chastises the enemies ( रिउदारिणि ).

2. 13 जणजणणत्तिहरु, ( Jina ) who removes the misery ( अत्ति-आर्त्ति ) of birth ( जणण ) of the people. 14 भुवणंभोरुहदिवसयरु, the sun to the

## MAHĀPURĀṆA

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5-11. These lines contain a long epithet of Jina वरुण...सिर-  
णमणमउडयलमणिसलिलधुयाविमलकमकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed  
by waters flowing from the gems in the coronets of वरुण and other  
gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मई णेज्जसु  
पचमगइहे, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धावस्था,  
emancipation from संसार, the first four गतिस being देव, नारक, तिर्यक  
and मनुष्य.

4. 7a णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ, there is no beginning (न + आदि) and  
no end (न + अन्त) to the list of the coming Jinas, i. e., the number of  
the future Jinas is infinite. 8-9 कालु अणाइउ etc. Time has no beginning  
and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change  
in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no  
weight. Time in abstract (निश्चयकाल) is marked by its fleeting i. e.,  
constantly passing (प्रवर्तन). 12 ववहारकालु, Time as understood in our  
daily practice.

5. 3b पियकारिणितणरं, by महावीर who is the son of प्रियकारिणी, popularly  
known as त्रिशला. Compare कल्पसूत्र, 109, where the name given is पीडकारिणी.  
10a ताडिज्जइ, गुण्यते, T., is multiplied.

6. 10a भेज्जउ, भेयः, divisible, to be divided.

8. 4-5 उच्छप्पिणि, i. e., उत्सर्पिणीकाल is defined as one in which  
strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and  
courage are on the increase; ओसप्पिणि, i. e., अवसर्पिणीकाल is one in which  
these qualities are on the decrease. 7b दहविहविडवि, the ten कल्पवृक्ष,  
enumerated in the foot-notes.

9. 3a पडिसुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4a अमममियाउ,  
having life of the length of an अमम, a large number. The other कुलकरs  
or मनुs mentioned in 9 and 10 are : सम्मइ, खेमंकर, खेमंधर, सीमंकर, सीमंधर,  
विमलवाहु, चक्सुब्भउ (चक्षुष्मान्), जसस्सि, अहिचंद, चंदाह, मरुदेव, पसेणइ and नाहि (नाभि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered  
for the first time, the functions of the sun and the moon who were  
not noticed by the people upto this time because the world was full of

the light supplied by the कल्पवृक्षs. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i. e. नाभि, discovered the method of cutting the नाल of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्षs. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17. 5b सुयवद् सुववद् णियमणि तइयहं, Indra, on learning that a तीर्थकर is to be born at a particular place, orders Dhanaya, i. e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19. 1a छुडु छुडु—Hemacandra in his grammar under IV. 422 gives छुडु as a substitute for यदि. I do not think that छुडु always means यदि; in fact the usual sense of छुडु seems to be क्षिप्रम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss. here render it as यदा but I do not think it to be correct.

### III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिरि, हिरि, दिहि, कान्ति, किन्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Rṣabha, the first Tirthamkara, a white bull). Gods attend this event. There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the



Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a कल्याण ( Sk. कल्याणक ) or more particularly जिनजन्माभिषेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puṣpadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Risaha, the first Tīrthamkara are:—

- (1) Town of birth—Ayodhyā
- (2) Parents—Nābhi and Marudevī.
- (3) Descent in the womb—as a white bull.
- (4) Date of Descent—month Āṣāḍha, dark half, second day, Uttarāṣāḍhā Naksatra.
- (5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day, Sunday, Uttarāṣāḍhā Naksatra, Brahma yoga.
- (6) Name—Risaha, Ṛṣabha or Vṛṣabha.]

4. 9a णिवप्रंगणंति, in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with र्, we get such conjuncts in Apabhraṃśī. See Hemacandra IV. 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with र् while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with ऋ such as मृग, सृय etc. 11 सइ, i. e., मरुदेवी.

5. This Kaḍavaka gives the list of sixteen objects which Marudevī sees in a dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream ( चोद्दस महासुमिण ). Compare कल्पसूत्र 4, and 32-47.

गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झसं कुम्मं ।  
 पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥  
 एए चउदस सुविणे सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ।  
 जं रयाणि वक्कमई कुच्छिसि महायसो अरिहा ॥

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

- (1) An Elephant breaking open the mountain slopes.
- (2) A Bull loudly roaring.
- (3) A roaring Lion.
- (4) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters ( दिसागम ). The Svetāmbaras designate this under अभिसेय.
- (5) Wreaths, two in number, of fresh flowers.
- (6) The rising moon.
- (7) The rising sun.
- (8) A pair of Fish.
- (9) A pair of Jars filled with water.
- (10) A fine lotus-pond.
- (11) A surging sea.
- (12) A royal seat marked with lion's head ( सिंहासन ). The Svetāmbaras omit this object from their list.
- (13) A heavenly palace or mansion-house.
- (14) A palace of snakes or of the king of snakes ( नागभवन ); this object is omitted in the list of the Svetāmbaras.
- (15) A heap of Gems.
- (16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Svetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7. 5a सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms ( भावना ) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc. These भावनाs are :—दर्शनविशुद्धिः, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिच्यारः, अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगः, अभीक्ष्णं संवेगः, शक्तितस्त्यागः, शक्तितस्तपः, साधुसमाधिः, वैयावृत्यकरणम्, अर्हद्भक्तिः, आचार्यभक्तिः, बहुश्रुतभक्तिः, प्रवचनभक्तिः, आवश्यकपरिहाणिः, मार्गभावना and प्रवचनवत्सलत्वम्. Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII. 64 ; तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI. 24.

19. 14 तहु देसहु मइं णेहि, take me to that region where there is no birth etc., i. e., to the region of the Siddhas.

21. 11a विद्यु धम्मु तेण भाइ ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth ( भाइ, भूति ) by विस्र ( वृष ), i. e., धर्म or piety.

[Prince Risaha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atisayas or excellences such as bodily purity, want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling, but being pressed by the king, agreed to be married to जसवई and सुगंदा, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky, a concert was arranged by celestial nymphs with dance, music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1. 10a उत्तानसेज्ज, lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15a दर देंते पयाइं, while walking slowly in the childhood. 16b चउसहि वि कलाउ, sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapaseṇiyasutta or Paésikahāṇayam, para 39 and my note thereon.

2. This Kaḍavaka mentions some of the atisayas which a Jina possesses.

3. 10a जो कप्परुक्खु सो कहु कहु, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14b अम्माहीरण, स्वदेशस्त्रीबालप्रसिद्धरागध्वनिना, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 होहल्लरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10a चंदोवचीणपट्टेहि छइउ, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10. 3a सुहाइ, सु + भाति shines forth.

17. 2b दुद्धुं व धोयउ, दुग्धेनेव धौतः, as if washed or bathed in milk. Note that दुद्धुं is the Inst. sing. form which is obtainable by a confusion of अनुस्वार of the Instr. (Cf. Hemacandra IV. 342) and उ of the Nom. and Acc. 4a आउज्जहुं जेण मुहेण वासु, the arrangement of the musical instruments for a concert is described here, which arrangement is

called पञ्चाहार or प्रत्याहार. 9b कम्मरवी is an act of cleaning the musical instruments. 10b उद्दिक्खणु किउ हिंदोलण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first. 11b कउ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छडय and धारा. T., adds:—समस्तनाटकार्थवर्णनादूर्णतालः, शृङ्गाररसाभिनयश्छटकातालः, वीररसाभिनयो धागतालः.

18. The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T. which I quote fully here :—चार्गी पदप्रचारः, सा द्वात्रिंशत्प्रकारा, तत्र समपादा स्थितावर्ता सकटास्या अर्ध-द्विका चापगतिः विध्यवा एलका क्रीडिता बद्धा उरुद्धृता आदिता उच्छंदिता वा जतिता स्पंदिताजिनिता अपस्पंदिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौश्र्यार्यः; अतिक्रान्ता अपक्रान्ता पार्श्वक्रान्ता अर्द्धजानुः सूची नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उद्धृता विद्युद्भ्रता आलता भुजंगत्रासिता हरिणमुता भ्रमरी चेत्येताः षोडश कांसोद्गवाश्र्यार्यः. 3b अंगवलनं अंगहारः, स च स्थिरहस्तकः सूचीविद्धः आक्षिकः कटीछेदः विष्कंभः अपरातः आव्रीडः भृश्रिकः भ्रमणमदादिविलसित इत्यादिविकल्पात् द्वात्रिंशत्प्रकारः. 4b शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति क्र र णा नि . तलपुष्पपुटं वर्तितं अपविद्धं लीनं स्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकरेचितं निकूटकं अलातं उन्मत्तं ललाटं तिलमित्याद्यष्टोत्तरशत-संख्यानि. दि ण्णु दत्तानि 5a च उ द ह वि सी स . उरुं च—

अकंपितं कंपितं च धृतं विधुतमेव च ।

परिवाहितमाधूतमथाचितनिकुंचितं ॥

××× पराहृतमक्लिप्तं चाप्यधोगतं ।

लोलितं प्ररुतं चेति चतुर्दशविधं शिरः ॥

5b भू तं ड व इं नृत्यानि सप्त—

आक्षेपः पातनं चैव भ्रुकूटिश्वतुरं भ्रुवोः ।

कुंचितं रोचितं कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिवानात्

6a ण व गी व उ । तदुक्तं—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता च निवृत्ता च श्रीवा नवविधा स्मृता. 6b छ ची स वि दि ही उ—तथाहि कांता भयानिका हास्या करुणा अद्रुता रौद्रा वीरा बीभत्सा चेत्यष्टौ रसदृष्टयः; स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा तृप्ता भयान्विता जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृष्टयः; स्तान्यांमलिना(?) श्रान्ता सलज्जा ग्लाना शक्तिता विषण्णा मुकुला अभितप्ता जिह्वललिता वितर्किता कुंचिता विभ्रान्ता विष्णुता कक्किररा(?) विक्रोसा त्रस्ता मेदिरा चेति षट्त्रिंशद् दृष्टयः. 7a अं ति मे त्या दि

शृंगार (?) बीभत्सा हास्यरौद्रभयानकाः ।

करुणाद्रुतशाताश्च.....रसा स्मृताः ॥

तत्राष्टौ रसा अंतिमरसवर्जिताः.

ज णि य भा व

रतिर्हासश्च शोकेश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा ।

जुगुप्सा विस्मयश्चाष्टौ स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः ॥

स्तंभस्तनूरुहोद्भेदा(१)द्भुदः स्वेदवेपथु ।

वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥

तनूरुहोद्भेदो रोमांचः । वेपथुः कंपः, वैवर्ण्यं म्लानता निर्वेदः, म्लानता निर्वेदमलानिः, शंकाभ्रमधृतिजडता-  
हर्षदैन्योग्राचिंतात्रासेर्ष्यामर्षगर्वाः स्मृतिमरणमदाः सप्त निद्राविबोधा व्रीडाऽपस्मारमोह शमनिरलसताऽवेग-  
तर्काविहृच्छव्याध्युन्मानादौ विषादौत्सुक्यचपलयुतास्त्रिंशदनेत्रयश्च (?) । अस्मारः उंमारी(?) । तर्कः  
विमर्शः । उवह्निथ आकारगोपनं युताः संचद्धा इति । 8a अ वे त्या दि अपराध्यपूर्वभावेभ्यो विलक्षणाः ।  
भा वा णु भा व भावानुभावेभ्योऽनु पश्चाद्भवेतीत्यनुभावाः तच्चतुर्विधा (?) मानो (?) वाग्बुद्धिशरीराश्च य  
दर्शिताः . 9a फु र ण इं स्फुरणानि शरीरगतानि . 10b छ ड्डु ण थ प ओ एं नृत्योपसहारहेतुस्ताल-  
विशेषश्छड्डुणकप्रयोगस्तेन The Ms. of T. is illegible at numerous places,  
but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

V

[ One day Jasavaī, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun, the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavaī bore a son who was named Bharaha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jasavaī bore ninety-nine more sons, Vasahasena etc., and one daughter named Bambhī. Sunandā also bore one son named Bāhubali and one daughter named Sundarī. Bharaha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of pūrva years, he was put on the throne by king Nābhi. ]

2. 8b छक्खंडं वि मेइणि, the six continents of the भारतवर्ष. The भारतवर्ष, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyadḍha (Sk. Vaitāḍhya) mountain from east to west; the rivers Gaṅgā and Sindhu

pass through it from North to South ; it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10b अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the श्रेवेयक or अनुत्तरविमान heaven.

3. 2 तिहुयणवइजयंकरेहारहियं, The loss of folds on the belly of Jasavaī, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavaī will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

5. 7a खुलुउ कीडुलुउ, a small insect ( क्षुद्रः कीटकः ).

6. 13a चित्तलेप्पसिलवरतरुक्म्मइं, painting, plaster-work ( लेप्प ), sculpture, and wood-work.

7. 2 गिरिधाणि...विसयं पयासए, explains ( to Bharaha ) the subject of governance of his consort, viz, the earth ( गिरिधाणिधराणि ) with mountains standing for her breasts.

8. 12 पढमुवाउ, प्रथमः उपायः, i. e., resolution, resolve.

9. 7a करेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV. 438. 9a अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be यवं corn three years' old. 13a जिणपडिमापूयणु, worship of the images of the Jinas. This is clearly an anachronism unless we accept that Risaha means by it not himself but the Jinas of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11. 8b कामुष्णु चउविहु दारुणु, the four व्यसनस or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting.

12. 1 एकंतरेउ मित्तु गिरंतरु सत्तु. In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरितं मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8b अट्टारहतिथ्यहं, the eighteen तीर्थस are :—

सेनापतिर्गणिकर्मन्त्रिपुरोहिताश्च वर्णा बलोर्ध्वलवैत्तरदण्डनाथाः ।

श्रेष्ठा महर्षे इतश्च महाद्यमात्योऽर्मात्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमार्थाः ॥

—Marginal gloss in K.

The वर्ण in the above list are ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य and शूद्र; the बलौघ is the fourfold division of the army, viz., हस्ती, अश्व, रथ and पादात.

18. 6a अवहंसज i. e., अपभ्रंश which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1-2 सयमह...वारिणा धुयकमङ्गमलजुयल परमेसर, O Lord, pair of whose lotus-like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6a लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5-11 पल्लव etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3-5 खेडई etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as खेड, कळवड, मडंच, पट्टण, दोणामुह and संवाहण.

22. 4 घरि उच्छुरसु,—the race was named इस्वाकु because its founder brought to his house the juice of suger-cane for drinking.

## VI

[ One day, while prince Risaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nīlamjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life. ]

2. 3 णियमंति जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kadavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5a भुंजंतहु महि तेसदि गय, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the pūrva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11-12 पुण्णारस णीलंजस—If नीलंजसा who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5. 4b णाहेयणिहेलणि, to the house of Nābheya, i. e., Risaha, the son of Nābhi. 6b वीसंगु वि पुवरंगु—The technical terms of dancing and music used in this Kāvaka and the two following are explained in T. as follows :—वी स मि त्या दि—नाटकस्थेह प्रथमप्रस्तौवनवेतारः पूर्वरंगस्तम्य च प्रत्याहारोऽवतरणा आचारंभ आश्रवणा गीतविधिरूपस्थापना परिवर्तनं रंगद्वारं चारी महाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि. 7a ति पु वृत्त रु चर्मावनद्धं वाद्यं पुष्करं तत्रिविधं उत्तममध्यमजघन्यभेदेन. 7b सो ल ह अ क्ख र उ क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षरं. 8a च उ म गु आलिप्त-अर्दिन-गोमुख-वितस्ति-भेदात् चतुर्मागं; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपनं; छ क्क र णु रूपं कृतं परिति भेदो रूपशेषी उद्यथेति षट् वाद्यकरणानि; 8b ति य ति ह्र उ समो श्रोतोगतिः गोपुच्छः चेति त्रियतियुक्तं; ति ल य उ द्रुनमध्यविलंबितास्त्रयो लयाः. 9a ति ग य उ तद्वाम नुतं उघ(1)थेनि त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचारं विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकरं. 9b ति क रि ह्र उ गृहीतोऽर्धगृहीतो गृहीतमुक्तश्चेति त्रयः. 10a ति म ज्ज ण उ मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मारवी चेति मार्जनकम्; 10b वी सा लं का र स ल क्ख ण उं अलंक्रियते वाद्यं येस्तेऽलंकाराः प्रहारास्तैः सलक्षणं मनोज्ञं चेति विंशत्यलंकाराः—चित्रः समः विभक्तः छिन्नः छिन्नविद्धः अनुविद्धः विद्धः वाद्यसंश्रयः अनुसृतः प्रतिच्युतः दुर्गः अवकीर्णः बद्धावकीर्णः परिक्षिप्तः एकरूपः नियमान्वितः साचीकृतः समेखलः सामवायिकः दृढः चेति. 11a अ ट्टा र ह जा इ हिं तथाहि—सुद्धा दुक्करणा विषमनिष्कंभितैकरूपा च पार्श्विसमापर्यस्ता समविषमकृता विकीर्णा च पर्यवसाने चितिकिसंयुक्ता संपुता तथारंभा विगतक्रम चललिगा वंचितिका चैकवाद्या चेत्यष्टादशजातिभिर्मंडितम्; 12a च च उ डु चाचपुटस्यस्रखिकलतालप्रवृत्तिहेतुः; चा च उ डु चचपुटश्चनुरस्रश्चतुःकलतालप्रवृत्तिहेतुः. 12b छ प्पि य पु त्ते वि षे(1) धिजापुत्रः(1)कोपि मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतुः; म ण हारि चचपुटीद्विप्रकारापि(1)ननोहरः; 13a इ य इत्यादि एतैश्चमुटादिभिर्वाद्यतालविषयैस्त्रिभिरलंकृता. 14a ओ ण ड् उ व ज्ज उ व णि य उ ह्थंभूतं यद्वनद्धं वाद्यं तत्रिप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति. द्विश्रुतिकाः स्वरो जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकरूपतो धैवतश्च जलि(1)षिसमसंख्यया चतुःश्रुतिकाः पहुपंचममध्यमाः. 16 च व ल हिं स्थितमुक्ताभिः; अ द्द हिं अर्धमुक्ताभिः कंमानस्वरूपाभिः; मु क्किय हिं वंशसुषिरसंधन्वराहिताभिः(1); व त्ता व त्तं गु लि य हिं उक्तविशेषणाविशिष्टाभिव्यक्तव्यक्तागुलिभिः व्यक्तांगुलि स्थितस्थितांगुलि अव्यक्तागुलि.

6. 1a प वि र इ हं इत्यादि—वांशस्वरो जातः; कथंभूते 1b व ज्जि य सु सि रे वादिन. सुषिरे; सु अ त्थ सु इ शाश्वताः श्रुतयश्च; 3a थि ये त्यादिना चतुःश्रुतिकाविस्वराणामुत्पत्तिक्रियां प्रदर्शयति, स्थितमुक्तांगुलिः स्वरो इव; सु अ द्द सु इ चतुःश्रुतिकः. 4a कंमानयागुल्या उद्गत-स्त्रिश्रुतिकः; 4b मुक्तांगुल्या जातो द्विश्रुतिकः; 5a व त्तं गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येकं चतुःश्रुतिकादीनां नामानि कथयति, व्यक्तांगुलेः सुषिरोपरिस्थितांगुलेः; 6b साम ण्ण स रं त र स णि य ए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 7b अ द्द ए मु क्क ए अं गु लि य् ए अद्दया मुक्तया अंगुल्या; सामान्य-संज्ञितः स्वरो निषादः अंतरसंज्ञितो गंधारः 9a तं ती र णि उ वीणावाद्यं तच्च द्विविधं. 9b णि क्क लु ते प्प वि निष्कलं त्रिपंच. 10a घ णु इत्यादि—त्रयं वाद्यं क्रांस्यतालयुगलादिकं. 10b स मे त्या दि-समं यौगपद्येन ह्रस्वं दत्त्वा यत्र रंगे वादितं. 12a उ ष्प ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नादः प्रथमतः उ र टा णं त र ए उरोलक्षणस्थानकविशेषे उत्पद्यते ततः कंठे नतः शिरसि. 12b वा वी स वि



सु इ उ द्विश्रुतिकयोः द्वयोः चतस्रः श्रुतयः त्रिश्रुतिकयोः षट् चतुःश्रुतिकानां त्रयाणां द्वाविंशतिश्रुतयः, 13a क स र इ य प मा ण हि क्रमोच्चरितसप्तेश्वरा(१)प्रमाणैर्नद(१), 13b व डुं तु मंद्रमध्यमतारभेदेन यथाक्रमं उरसि कंठे शिरसि च वर्धमानो नादः स्वरः श्रुतिर्मद्रादिरूपतया; 14b स र स त्त सरिगगा-दिनामानः सरसतः स्वराः सप्त ते सु तेषु सप्तस्वरेषु; दो णि जि गा म द्वावेव च ग्रामौ, षड्जग्रामो मध्यमग्रामश्च; ग्रामः समुदायः. कस्मिन्ग्रामे कियत्यो जातयः संभवन्तीत्याह 15 सु रे त्यादि सुरैः पूज्यः स ज्ज ए षड्जग्रामे; जा इ उ जातयः स त्त प उ त्त उ सप्त प्रयुक्ताः शुद्धाश्रितस्रः, जायते पुष्टिं लभन्ते स्वरा आभ्य इति जातयः. 16 म ज्झि म ए मध्यमे ग्रामे, तिस्रः शुद्धा अष्टौ संकीर्णाः.

7. 2a जा इ णि ब द्द हं तासु जातिषु निचद्धाना. 2b ल क्ख वि सु द्द हं गीतप्रयोग-विशुद्धाना. 3a अं स हं अंसाना; स उ चा ली सा हि य उ शतं चत्वारिंशदधिकं. 3b ए कु त्त रु तं पि चत्वारिंशदधिकशतं एकोत्तरं; प सा हि य उ प्रसाधिताः. तथा हि अष्टादशजातिषु यथाक्रम-संभवमेको द्वौ त्रयश्चत्वारि पंच षट् सप्त चासंभत्तो (!)मिलिता एकोत्तरचत्वारिंशदधिकशतसंख्या भवति. 4b गी य उ गीतयः शुद्धेत्यादिनामानः; पं ज उ उ ष् णि य उ पंचोत्पन्नाः, किस्वरूपास्ता इत्याह 5a b ऊयु(!)भिल्लैः शुद्धाः सूस्मेव्यकैश्च भिन्नकाः । स्वरेर्हृततरेर्गौडी हृतैरेवेति वेसराः । सर्वासा उक्थि-योगात् गीतिः साधारणा स्मृता. 6a त हिं इत्यादि तहिं मद्रादिगीतिषु तत्संबंधत्वेनापरे परियामरागाः त्रिंशद्गणिताः, तत्र शुद्धगीतिसंबंधत्वे सच(!)गणनया सप्तग्रामरागाः भणिताः, भिन्नगीतिसंबंधत्वेन व्रतगण नया पंच वेसररागाः सप्तैवमेते. 7a क मे ण जि कथितशुद्धादिगीतिसंबंधक्रमेणैव संगृहीताः समुदिता-स्त्रिंशत्. 7b उ डु मा ण ऋतुप्रमाणाः षडेव; 8a प हिलार उ तेषु मध्ये प्रथमः ढक्करायः. 8b अ णु वे क्खा स म भा स हि सा हि उ द्वादशभाषासमन्वितः; उक्तं च-कोलाहला मालववेसरा च सौराष्ट्रका च त्रवणोद्गवा च । स्यान्मालवा श्लेषविका च ताना ततः परं पंचमलक्षिता च । साषा मध्यमदेहा च ललिता व्रगरजिका । त्रवणा ढक्करागस्य द्वादशैताः. 9a अ ह्ने त्या दि—आभीरी मागधी श्लेषवी कौशिकी सौराष्ट्री गौर्जरी दाक्षिणात्या त्रवणा चेत्यादि अष्टभिर्भाषामिस्सहितः; 9b वि हि मित्यादि द्वाभ्यामेव विभाषाभ्या अंधालीभावनिकाभ्यां संविभूषितः. 10a आ वा हि ये त्या दि—आवाहिता आकारिता, मोहिता विह्वलीकृता जगद्विलयास्त्रियः. 10b हिंदोलऋश्यतसृणां मालववेसरिका गौडी छेवट्टिका कचोजी चेत्यमीषा निलयः स्थानं. 11a मा ल वे त्यादि मालवाभ्या विम्राषाभ्याम्. 12a भि ण्णे त्यादि—भिन्नषड्जोऽपि शुद्धा त्रवण(!)भांगली श्लेषवी ललिता श्रीकंठी दाक्षिणात्येति सप्तभिः भाषाभिः कलितः युक्तः. 12b क कु ह इत्यादि क्रकुभोऽपि, आभीरी रगती भिन्नपंचमी चेति त्रिभिर्भाषाभिः; सं च लि उ सचलितो युक्तः. 13 सु इ ली ण उं श्रुत्यनुप्रविष्टः. 14 म णे त्या दि मनोहरारामकृति मल्लकृतिः डौवकृतिः गौडकृतिरित्येवमादयः; दा वि य उ दर्शिताः.

8. 1-2 द हे त्यादि—दश चतुर्भिर्गुणिताश्रुत्वारिंशत्संख्या समुदिता भाषाणा भणिता तथा षडपि विभाषाः; 3b ए च्च र हे त्यादि—एकदशा एकविंशति षड्जादियामत्रये प्रत्येकं, सप्त सप्त मूर्च्छना इत्येकविंशति; मूर्च्छति उच्छ्रयमुन्नतिं लभन्तेश्वरा(१) आभ्य इति मूर्च्छना, उत्तरमंद्रा उज्जरायता रज्जनी अश्वक्रांता सौवीरी कालोपनना सुमध्यमाः पौरीवित्यादयः. 4a ए कु णे त्या दि—स्वरस्य तनूनात्प्रयोग-विस्तारत्तानाः अक्षिष्टोत्तर-राजसूय-अश्वमेध-त्राजपेयादियज्ञानामान्स्वहा(१)नेयपुण्योत्पन्ने, ते च प्रतिग्रामे मेक्रोनपंचाशद्वेदाः प्रतिपत्तव्याः, तथा हि सप्ततंत्रीणीयायां प्रत्येकमेकैकतंत्र्या सप्त-सप्त स्वराणा लननात्सप्तसप्तगणिता एकोनपंचाशद्ग्रामे तथा मध्यमग्रामादावपि उक्तं च-सप्त(१)अर्थं च सप्तानामेकैका भजते यतः । अत एकोनपंचाशत्क्रे(१)त्याटे सहोदिताः ॥ 5a सं जो य ता णु तथा हि षड्जग्रामे

सप्तसद्वृ(१)नानां षडवोडंबिता, काकलि अंतरं काकल्यंतरं; स्वरसंयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवति, एवं मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशविधं शर्षिं प्रनर्तितं प्राकृतशर्षिं च(१)र्ज्यते. 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतच्च प्रागेव व्याख्यातं. 8a ण व ता र उ न व ताराकर्माणि । तदुक्तं—भ्रमणं चलनं पातो वलनं संप्रवेशनं । विवर्तनं समुद्रतं निष्कामः प्राकृतं तथा; ॥ 8b अ ह वीत्यादि अष्टौ परिचिता दर्शनगतयः; उक्तं च-सम्मंसप्यनुवृत्तं च आलोकित प्रलोकितोल्लोकितेरवलोकित(१) सा तिर्यक्. (१) 9b णं दे त्यादि—नवनंदास्तत्प्रकारं पुङ्(१)पक्षमपटकर्म दर्शितं उन्मेषश्च निमेषश्च प्रसृतं कुंचितं सवर्तितं सस्फुरितं पिहितं सविताडितं. 10a भू स त्त भे य भू सप्तभेदा; 10b छव्विहेत्यादि—तत्र नासा षड्विधा, उक्तं च-नता मंदा विरुष्टा च सोच्छ्वासा सविफूर्णिता । स्वाभाविकी चेति बुधैः षड्विधा नासिकाः स्मृताः ॥ तथा कपोलं षड्विधं-क्षामं फुल्लं च पूर्णं च कंपितं कुंचितं सममित्यभिधानात्; तथा अधरः षड्विधः; तदुक्तं-विवर्तनं कंपनं च विसर्गो विनिगूहनं । संदष्टकं समुद्रश्च षट्कर्माण्यधरस्य च ॥ 11a स त्त वि हु चि वु उ सप्तचिबुक्तं; च उ मु ह हु रा य कुट्टनं ख(१)रागाः स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्तः समर्थानुरोधतः प्रयोजनवशात्. 11b न व गला न व श्रीवानृत्यानि उक्तलक्षणानि; च उ स द्वि वि क र ण भा व चंतुःषष्टिरपि हस्तभेदाः पताकः कर्तरमिखः अर्द्धचंद्रः आरालः शुकतुंडः खटकामुखः पद्मकोशः चतु(१)रंध भ्रमर इत्यादयः. 12a सो ल ह वि हु सर्वहस्तानां षोडशविधं कर्म । तथाहि-आकंपनं कर्षणं च उत्कर्षण-मथापि च । परिग्रहो नियग्रहश्च आह्वानं नोदनं तथा ॥ संश्लेषश्चदि(१)योगश्च रक्षणं मोक्षणं तथा । छेदनं भेदनं चैव स्फोटनं मोटनं तथा । ताडनं चेति विज्ञेयं ता(१)ज्ञैः कर्मकराश्रितं; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्तं-उत्तानः पार्श्वराश्वैव तथाधोमुख एव च । हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाद्य-वृत्तसमाश्रयः ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्तं च-अपचेष्टितमेकं स्यात् उद्देष्टितमथापरम् । व्यावर्तितं तृतीयं च चतुर्थं परिवर्तितम् ॥ 12b भु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशाधिधोऽपि रक्तः; उक्तं च-तिर्यग् ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च । आविद्धश्च प्रविद्धश्च मंडलः स्वास्तिकं तथा ॥ अजितः क्षुधिनश्चैव पृष्ठतश्चेति ते दश. 13a ऊ रु स र वि हु उरोनृत्यं शरविधं पंचप्रकारं, उक्तं च- नतं समुन्नतं चैव प्रसारितविवर्तिते । तथापसृतमेवं तु पार्श्वकर्मापि पंचधा ॥ 13b पो हु वि पा य डिय उ तं ति वि हु-क्षामं खल्लं च पूर्णं च संप्रोक्तमुदरं त्रिधा । इत्यभिधानात्. 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्पंचप्रकारा, तथा हि-छिन्नावनिवृत्ता च रोचिता कंपिता तथा । उद्वाहिता चेति कटी नाद्ये वृत्त्येव पंचधा ॥ तथा जंघा पंचधा । उक्तं च-आवर्तिता अंतःक्षिप्तमुद्वाहित-मथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पंचधा ॥ तथा क म क म ला इं पंचधा । उक्तं च-उद्ग्रहितः समश्चैव तथाग्रतलसंचरः । अंचितः कुंचितश्चैव पादः पंचविधः स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदंगहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यंगहाराश्च प्रागेव कथितानि. 16a च उ रे य य चत्वारो रेचकाः; तदुक्तं-पादरेचक एकः स्याद्द्वितीयः कटिरेचकः । तृतीयः कर(१)स्वस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थकः ॥ 16b स त्ता र ह पिडी बंध कय-ऐश्वरी वा(१)ज्जं भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी पद्मा पिंडित्यादि सप्तदश पिंडीनां बंधाः कृताः. 17a चा रि उ सो ल ह दु य सं खि य उ चार्यः षोडश द्विकंसख्या द्वात्रिंशत्संख्याः. 18a वी स वि मंड ल इं प या सि य इं अतिक्रान्तं विचित्रं ललितं संचरं आलातकं आक्रान्तं आकाशगामि इत्यादि संचोरिभिर्भावैः स्थायिभिश्च प्रागुक्तलक्षणैरुद्धृतैरनेकैर्नृत्याति.

[ The death of Nīlamjasā brought about a change in Risaha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary, helpless, solitary ; the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Risaha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Risaha then put his son Bharata on the throne of Ayodhyā, gave Poyanapura to Bāhubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Risaha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety-nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk. ]

1. 11 तृयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ, a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of passing salt over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on straw.

2. 6a पण्णारहखेत्तुम्भव, born in fifteen कर्मभूमिs, i. e., five in भारतवर्ष, five in ऐरावतवर्ष, and five in विदेह. It is in one of the कर्मभूमिs that a man is able to attain any state after death as a result of his acts. 12 तिचरणु चरिन्नु, activities of mind, body and speech ( त्रिकरणं चरिन्नम् ).

7. 11-12 पसु काडिवि etc.—If a person, i. e., a Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma ? Wait upon a hunter ( who does exactly the same things. )

10. 8a जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसाणांत जावो, i. e., I care a straw for the human life.

11. 1a तिप्पयारसंटाणयं, the world is divided into three sections each having a different shape ; the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate ( शराव ) turned downwards : the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि ; the region of gods has the shape of a मृदङ्ग. 9a मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella.

12. 4a पासुलियातुलाहिं, by beams made of ribs.

13. 4a पाणावरणिउ पंचपयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz., मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय. See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii. 4. 5a णवविहदंसणु, acts which obscure दर्शन fall under nine heads:—निद्रा, निद्रानिद्रा ( deep sleep ), प्रचला ( drowsiness ), प्रचलाप्रचला ( heavy drowsiness ), स्त्यानर्धि ( somnambulism ); चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय. See उत्तराध्ययन, xxxiii. 5-6. For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Trisasti. 13 तिगइ i. e., पाणियुक्ता, लाङ्गली and गोमूत्रिका, straight, curved and zigzag movements.

14. 12-13 पिहियासवदारहु etc.—If a person stops all sources of ~~सुख~~ and conducts himself properly, new acts do not enter the soul and those acts which long remained with it are destroyed ~~by suffering~~ sufferings as they do not get any nourishment.

15. 2b होमि दियंबरो, I shall be a naked monk. The ~~explicit~~ ~~and~~ express mention of this term here and also in 26. ~~The~~ ~~text~~ ~~in~~ several other places shows that the work is written ~~from~~ ~~the~~ ~~point~~ ~~of~~ ~~view~~ of the Digambara Jains. 10b देज्जविच्चिन्वादिन्ने ~~in~~ ~~various~~ ~~permutations~~ ~~and~~ ~~combinations~~ ~~of~~ ~~morsels~~ ~~of~~ ~~food~~ ~~by~~ ~~feeding~~. It refers to the various भिक्षुप्रतिमास in which ~~food~~ ~~is~~ ~~counted~~ ~~on~~ ~~the~~ basis of counting the दत्ति or dolê obtained ~~at~~ ~~the~~ ~~time~~ ~~of~~ ~~the~~ ~~act~~. See below 16. 3a.

16. 12-13 जिह ह्यणिज्जरणे etc.—~~The~~ ~~text~~ ~~in~~ several other places shows that the work is written ~~from~~ ~~the~~ ~~point~~ ~~of~~ ~~view~~ of the Digambara Jains. It refers to the various भिक्षुप्रतिमास in which ~~food~~ ~~is~~ ~~counted~~ ~~on~~ ~~the~~ basis of counting the दत्ति or dolê obtained ~~at~~ ~~the~~ ~~time~~ ~~of~~ ~~the~~ ~~act~~. See below 16. 3a.

done in various births are exhausted by the control of senses ( which prevents the influx of sinful acts ) and by the practice of penance ( prescribed for a monk ).

19. 1b अणुवेदस्ताओ, reflections of twelve types on the momentariness, impurity etc. see तत्त्वार्थाधिगम, IX. 7.

21. 4a सोण्देयहु, to the son of सुणन्दा, i. e. बाहुबलि. सुणन्दा is the second wife of रिसह.

24. 7b जसवइणंदउ, i. e., जसवई and सुणन्दा, the two wives of रिसह.

26. 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

### VIII.

[ Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahākaccha and his brothers-in-law, came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course, as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him ( the king of snakes ) before he ( Risaha ) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādhara, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home. ]

1. 9b मयसिमिरइं, मदस्य सैन्यानि, T. I think that सिमिर comes from शिविर, camp of the army, but is loosely used to designate army. 12b सुइवइणी, consisting of pure vows ( शुचिव्रतयुक्ता ). 19 थिउ सगहु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation ( च + अपवगहु )

2. 1-4 विसयवसा etc.—Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaha, were sinking (भग्ना) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger.

6. 7b सालरहिं, by his brothers-in-law. 9a पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु, but he has left all activities of a householder. 12a कूरमुट्टि, a handful of cooked rice.

7. From line 6 to 20 note the दामयमक or शृंखलायमक. The sets of a large number of दुवईs, constituting a kaḍavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet. The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes. 26 जीहहि दससयसंखहिं, with his thousand (tentimes hundred) tongues. P reads दुसहससंखहिं which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution.

11. 8b रसवाइ व सई णिवडियसुवण्णु, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयडू always showed gold.

12. 15b सुय दूयत्तगु हलिणिहि करंति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love-messages to their lovers.

13. 9b The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयडू which are assigned to नमि.

14. 5a The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयडू which were assigned to विनमि. The cities are enumerated from west to east (वारुणासामुहाओ).

## IX.

[Risaha then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely. He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity. He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view. The principle of his life was that food exhausts

the body, this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Somaprabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother, Seyamsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyamsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift!". Risaha thereafter proceeded with his wanderings and in due course obtained the fourth knowledge called Maṇapajjavanāna, knowledge by which minds of others are known. He then proceeded to Nandanavana, and under a banyan tree acquired the Gunasthānas, and in due course attained kevalajūāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1. 7 उज्झित आहाकम्मुद्देसहिं, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as आधाकर्म, which the marginal note explains as नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम्, but elsewhere it is explained as आवाणं आवा साधुनिमित्तं चेतसः प्रणिधानं तस्याः कर्म पाकादिक्रिया, तद्योगाद् भक्ताद्यपि आधाकर्म. 15a पाणिपत्ति, in the plate, viz., the palm. 17 ए णर, these men, i. e., his followers who became monks along with him.

3. 3a ससिष्यहाणुजम्मिणा, by the younger brother of ससिष्यह, i. e., सोमप्रभ, the son of बाहुबलि. 3b भवाणुबद्धम्मिणा, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4. 15b भुवणिबंधु, भुजनिबन्धः, arms.

5. 5a भाहृ तुम्हं मेइणि दिष्णी, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāmsa, of course through their father Bāhubali.

6. 2 सिरिमह्वज्जजंघजम्मंतरावचारो, the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as वज्जजंघ and his consort was सिरिमई. At that time सेयंस was the charioteer and knew that वज्जजंघ ( or वज्जनाम )

was destined to be the first तथिंकर. For details see Hemacandra, Triṣaṣṭi, III. 284-287 and also this work XXIV.

7. 16a सद्गुणु णव ढंचहुं सत्तहुं, i. e. faith in nine ढदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs. 18a देसचरित्तालंकिउ, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs.

9. 2 दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं, principles in essence of the classification of the donor ( दायय, दायक ), the gift ( देज्ज, देय ) and the receiver ( पत्त, पात्र ). 11-12असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñāna, which in its turn secures bliss. Compare for the objects of begging alms :—

वेयण वेयावच्चे इरियट्टाए य संजमट्टाए ।

तह ढाणवत्तियाए छट्ठं ढुण धम्मचिन्ताए ॥

—पिण्डनिर्युक्ति, 662

11. 8-9 तहु दिवसहु etc., the day on which Seyamsa served alms to Risaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called.

12. 7a ढंचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs. Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII. 4-8.

15. 10b अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अप्रमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान. This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलान्गस. The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान. 11b खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth. शुक्लध्यान is now fully developed here. 13b अणियट्टिहि छत्तीस जि जित्तउ, in the अनिवृत्तिबादरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty-six kinds of कर्म. 14a सुहुमसंपरायउ ढावेप्पिणु, having acquired the सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the संज्वलनलोभ. 15a ढुणु जायउ उवसंतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान. 16 खीणकसायचरिउ ढडिवण्णउ, he reached the क्षीणकपाय or क्षणिमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins. In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिs, viz., five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय. At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान.



20. 7a अक्षयधारिणि, अक्षयानां सिद्धाना धारिका सिद्धिवधूः, T. 14b धणए समवसरणु किउ तावहिं, at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Risaha.

X.

[ Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atisāyas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.— King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father, but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from saṃsāra went to him. To them the Jina began to describe categories of Jīva and Ajīva. He first explained the six pajjattis, i. e., faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvīpas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अइसय दह etc. The Jina had already ten atisāyas from his birth such as निःखेदत्व etc., but when he attained केवल, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3a दहकुमार i. e., ten gods belonging to the class of भवनपति.

5. 1-8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Śiva but is shown superior to him, e. g. वामाविमुक्क, god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her. 9-13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14-17 to Viṣṇu.

9. 4a चउरासिलक्खजोणिहि परिभमन्ति, तथा नित्येतरनिगोदयोः पृथिव्यप्तेजोवायुकायानां च प्रत्येकं सप्त योनिलक्षाणि, वनस्पतिकायिकाना दश, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणा प्रत्येकं द्वे द्वे, सुरनारक-तिरश्चां चत्वारि, मनुष्याणां चतुर्दशेति, तदुक्तम्—

गिञ्चेदरधादु सत्त य तरु दस विचलिंदिएसु छच्चेव ।

सुरणरयतिरिय चदुगे चोद्वस मणुए सदसहस्स ॥ T.

6-7 आहार...पञ्जाति ति भणंति एत्थु. The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development. These पर्याप्तिs are six, viz. आहार, eating food and digesting it; सरिर, body, इंदिय, sense-organs; आणापाण, breathing; भासा, speech, and मण, mind.

19. 11 सुहुमणिगोयसमुद्भवहं, of those that spring from the subtle णिगोय or निगोद; this निगोद is a physical body with infinite lives or souls.

## XI

[ The Jina proceeds further to define the functions of different sense-organs and creatures that possess them. He then mentions the duration of their life. After a general description of the Geography of the Jambūdāvīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities. He then goes on to detail the heavenly regions and gods. He explains the fourteen Guṇasthānas, the various prakṛtis of karman, the characteristics of the Siddhas and their happiness. On hearing the discourse the eighty-four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Gaṇadhāras. Similarly Bambhī and Sundarī became the first nuns of the Order. Only Marīci remained unenlightened. The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyamvayā or Priyamvadā. The first disciple to obtain emancipation was Anantavīra. ]

6. 6b वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows.

8. 9-10 मइरंगहिं etc. The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs.

9. 2b णिरूह, परामर्शान्याः, T., incapable of guessing or imagination.

10. 4 सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka. The sixteen heavens are: सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण and अच्युत. According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार.

11. 10 राम उड्डुगइ etc. The passage says that the nine बलदेवस or रामs are destined to obtain heavens while the nine वासुदेवस are destined to go to hells.

17. 8b चंगड कडलु तुज्जु वक्खाणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1a अद्धकविट्टसरिससंठाणइं, the shape of the heavenly abodes resembles the कपित्थ fruit cut into two.

25. 12 पडिचारु, attendance, service, or cure.

26. 3b अतुलसोक्खु णिहिल्लहु अहमिंदहु, all अहमिन्द्रs enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8-15 मग्गणटाणइं चोद्धसमेयइं etc. The passage gives the list of fourteen Gunasthānas. They are :—मिथ्यात्व, सास्वादनसम्यग्दृष्टि, ( सासण of our text ) सम्यग्मिथ्यादृष्टि ( मीसु of our text ), अविरतिसम्यग्दृष्टि, देशविरति ( विरयाविरउ of our text ), प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण ( अउच्चउ of our text ) अनिवृत्तिवादर ( अणियत्ति of our text ), सूक्ष्मसंपराय ( सुहमराउ of our text ), उपशान्तमोह ( उवसंतु of our text ), क्षीणमोह ( परिखीणकसाय of our text ), सयोगिकेवलि ( सजोइजिणु of our text ), and अयोगिकेवलि ( अजोइ of our text ). For details see Miss Johnson's Trisastī, Appendix III. Pages 429-436.

32. 5b अडयालीसउं सउ, i.e. one hundred and thirty-eight प्रकृतिs of कर्म. In the Gunasthānas from number four to seven, one hundred and thirty-eight कर्मप्रकृतिs are destroyed. They are : ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9, वेदनीय 2, मोहनीय 21, आयुः 3 ( i. e. नारक, तिर्यक् and देव ), नाम 93, गोत्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11a अट्टमपुहईवहि, i. e., on the सिद्धभूमि or सिद्धशिला.

35. 12b एक्कु मरीइ पेय पडिबुद्धउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनावरणीयकर्म and मोहनीयकर्म. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्यक्त्व. See Hemacandra, Trisastī, VI. 385-390.

## XII.

[ Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarṣa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tīrtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarṣa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Māgadha Tīrtha did accordingly. ]

1. 3a छुट्टु छुट्टु, immediately, quickly. 15-16 सारयमयलंछणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it (this very moon) as the simile, i. e., I would have compared the fame of the Jina to it (the moon).

5. 30 साडीणं हिमवंतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kadavakas contain a fine description of the river.

12. 12 खंधुद्रियडिंभया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them.

14. 12 गत्थि सहवाहु ओसहु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावास औषध नाही in Marathi.

19. 2a विविहणिहीसरासु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are:—नैसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शंखक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Triṣaṣṭi, IV. 574-782 and also below XVIII. 15. 6-10. 2b गियकालवट्टसंधियसरासु, to one who has fixed an arrow

to his bow named कालवृट् or कालवृष्ट. Miss Johnson's note ( see page 223 of her Tran. of Triṣaṣṭi ) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7b तो तुम्हें णउ अम्हें मि देव, my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्हीही नाही आणि आम्हीही नाही in Marathi.

XIII.

[ King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varatanu ( of Varadāma Tirtha ). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varatanu. King Varatanu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavanasamudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tirtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc., and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitādhyā mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas. ]

1. 4a सिमिरं समुद्रलङ्घ, the camp of the army is making rapid movements. 23 वङ्गयन्तिणियडे, in the neighbourhood of वैजयन्ती, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2. 13 द्विकवाडं विहडिवि थक्कं, the gates of different dvīpas or islands in the लवणसमुद्र stood opened before him, i e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4. 3a सहमंडवि वरतणुहि, in the court-room of वरतणु, the king of वरदामतर्षि. Hemacandra does not mention the name of the king in his Triṣaṣṭi.

9. 20 पहासैं, by the king of the Prabhāsa Tirtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

10. 1a सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिदि, i. e., regions standing between the Ganges ( सुरसरि ) on the east and the Sindhu on the west. 5a अज्जखंडु, the continents where the Aryans live. 14a विजयद्रु संमुहु, towards the विजयार्ध mountain. This is another name of mountain Vaitādhya as can be seen from lines 24-25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khaṇḍas on either side and crosses the continent from east to west.

#### XIV.

[ After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitādhya and encamped there. A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side. Bharata then ordered his general to do accordingly. When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents. The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months. He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness. The general of the army then took the Kāgaṇi gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon. With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas. Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further. Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha ( Clouds in the Mouth ), who began to pour down rain over the army continuously for day and night. The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army. The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata. Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers. ]

1. 12b जसवइपुत्ते पेसणु अक्खिउ, the son of Jasavaī, i. e. king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin.

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a दामयन्क.
3. 5b तगिरिदिङ्गामो, bearing the name of that mountain, viz. विजयाध. 26 आरासयफुरियज, sparkling with a hundred spokes.
5. 3 इय चितिवि etc. The general then took up the कागणि gem, and with it wrote out the moon and the sun.
6. 8b सविष्णाणिगा संकमेणं कएणं, with the help of a dam (संकम; संक्रम) or bridge built by the clever engineer, i. e., स्थपतिरत्न.

XV.

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow, but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vrsabha Mountain. He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Vaitādhya mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Nattamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Namī and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage. Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

agreed to do this and paid homage to Bharata. The Kāgaṇi gem then produced light with the help of which the army was able to proceed. Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance. On seeing him he offered him prayers. ]

2. 11b वइसाहटाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up. This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force.

4. 9b परिछेयवंताइं, well-defined, clearly written, readable. 16a जो जियइ सो जियइ etc. he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die.

6. 15 वसुमइ झेंदुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son.

7. 12b को एम ससंकि गाउं थवइ, who will, like you, put his name, i. e., write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon. 18 तुज्जु समाणु तुहुं, you are like yourself, i. e., there is nobody who is like yourself.

12. 5-14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name वाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics.

13. 2b तिमीसहि दुग्गमहे, तिमिसा or तमिसा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army.

15. 6b धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of ऋषभ, the towns to नामि and विनामि.

17. 7b अम्हं पुणु दइयंबरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks. The expression दइयंबरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens.

22. 10 महिहरु महिहरु etc. the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरुहु).



[ Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother, was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him ].

1. 2 साकेयहु संमुहु, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 12a कुकुमेण छडउळउ, sprinkling with water mixed with saffron. छडउळउ is a Deśī word. Compare सडा in Marathi. 19 सट्टिहि वरिससहसहिं, after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 12a कि किर वणिणण कंदप्पे, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Risaha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 जइ जम्मजरामरणइं हरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7b बुहसंगमु, i. e., बुधसंगमः, company of the wise. Note the appearance of रेफ in the word as sanctioned by Hemacandra, IV. 399.

18. 12a काउ कंदलावलिहि न विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death. 13a देहि कप्पु, pay tribute or homage to Bharata.

21. 4a जो बलवंतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief. A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24. 14 धवलाइं जि गिरु धवलहं, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon.

## XVII.

[ Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains. The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army. When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms. Both of them agreed to fight accordingly. But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious. When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata. Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground. ]

1. 2 णंदाणंणहो, of the son of णंदा, i. e., सुणंदा, i. e., बाहुबलि.

2. 9b पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy. 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4. 14 सरवरपंतिहिं वरुण णिबंधमि, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes (णाल्याचारहिं).

5. 13 ण एवहि मज्झमि, I do not behave well when I am with you, i. e., it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy. विसुज्झमि, shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुड्डि णाईं आलिहियईं, as if drawn in picture on a wall.

9. 3a त्रिणिण वि जण, both of you. Compare दोषे जण in Marathi. 13 णु त्रिविहु, threefold fight, viz., gazing at each other without winking; splashing water against each other so as to overpower one; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11. 5 हेद्विल्ल दिद्वि etc., The lower eye, i. e. the eye of Bharata, was conquered by the upper eye, i. e. the eye of Bāhubali, whose glance was steady, fixed and unwinking.

12. 6b भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं, in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus. 12 वियलइ उप्परि मेहलेहे, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face.

14. 5 पीलिज्जउ तेरउ उच्छुचाउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let (people) drink its juice, or let (them) eat the sweet raw sugar (गुलु, गुळ). Bāhubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 ता भणइ जहणि etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said: why do you talk in vain? why do you ridicule my bow and arrow?

15. 10a अलंभुयजुज्झविहाणसयाईं, hundred ways of wrestling.

16. 8b ता चिंतिउ चक्रु सुकंधरेण, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

XVIII.

[ Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth. ]

2. 11 हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खंविउ, I was defeated by you, and you have once ( सइ, सरुत् ) forgiven me.

3. 1-3 जइ पइं etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive? You have thus won or conquered even earth in forgiveness; you have frightened Indra ( कउसित्त, कौशिकः, i. e., इन्द्र ) by your valour. 10-11 ससि सूरहो, etc, To the sun there is a counterpart in the moon; to the Mandara mountain there is (small) Mandara; to Indra there is Pratīndra, but O son of queen Nandā ( i. e., सुनन्दा ), to you alone I do not see any second or counterpart.

5. 6 जइ एवहिं etc. If even after this ( talk ) you do not desire to have the earth, i. e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i. e. to Risaha, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6. 7 पदं मेहिवि etc. Hatred ( दोसु, द्वेषः ), having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोपाकर ( दोस + आयर, आकर ).

7. 9a वयसमिदि, i. e. five समितिः viz., इरिया, भासा, एसणा, आदाण and उच्चार. Note that the word समिदि often retains द in this book as also ठिदि in the next line. 9b आवासयजोड, practice or observance of the six आवश्यकs, viz, सामाह्य, चउवीसइरथव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्तग and पच्चक्कण.

10. This kadavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyayana Sūtra, XXXI, and also in this book in XXXVII 15-17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

( 1 ) एकहु जीवहु गुण मणि भाविय, he cultivated in his mind the quality of Jīva which is one, i. e., solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in तत्त्वार्थसूत्र II. 8 ( उपयोगो लक्षणम् ), or better still, the एकत्वभावना. In the Uttarādhyayana Sūtra however we find:

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।

असंजमे निवत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥ XXXI. 2.

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other; i. e., Jīva should abstain for असंजम, indisciplined life, and advance with self-discipline.

( 2 ) राय रोस दोणि वि उड्ढाविय, he sent away, ( lit: made to fly ) both राग and रोष. The Uttarā. however mentions राग and द्वेष which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads रोम in all Mss.

( 3 ) ( a ) तिणिण वि मल्लइं हियउद्धरियइं, he removed from his heart the three शल्यs, viz., मायाशल्य, निदानशल्य and मिथ्यादर्शनशल्य.

( b ) तिणिण वि रयणइं लहु संभविचइं, he soon acquired the three jewels, viz, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

( c ) तिणिण वि इमं मुक्कं मंत्तेव, he left quickly ( संनेवं, नक्षेपेण, शीघ्रम् ) the three types of crookedness, viz, bodily, verbal and mental. The Uttarā. has मनोदण्ड, वाग्दण्ड and कायदण्ड in place of इमं of our Text.

(d) गारव तिणिण विवज्जिय देवे, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारवस ( गौरव ), viz., रिद्धिगारव, रसगारव and सायागारव. The Uttarā. adds three उपसर्गस here:

दिव्हे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।

जे भिक्खू सहई जयई न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइकम्मणिचंधणरमियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jīva in the fourfold संसार, viz., देव, तारक, तिर्यक् and मनुष्य. The Uttarā. has :

विगहाकसायसन्नाणं ज्ञाणाणं च दुयं तहा ।

जे भिक्खू वज्जई निच्चं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथास, viz. राज्य, देश, भोजन and स्त्री; there are four कषायस, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ; the four संज्ञास are mentioned above; the four ध्यानस are आर्त, रौद्र, शुक्ल and धर्म out of which first two types are bad.

(5) (a) पंच महव्वयाइं, the five great vows of the monk, viz., अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य.

(b) पंचासवदारइं, the five sources of sin, viz, हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन.

(c) पंचिंदियइं कयाइं गिरत्थइं, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz., शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध.

(d) पंच वि णाणावरणइं ग्रंथइं, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz., श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्याय-ज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय.

(6) (a) छावासयउज्जमु सवित्सेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकस, viz., सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खण.

(b) छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz., पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and त्रंस.

(c) छह लेसहं परिणामुवइहइं, he got stopped the effect of the six लेश्यास, viz., रुष्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्ल.

(d) छ वि इव्वइं पच्चक्खइं दिहइं, he saw or realised all the six entities, viz., धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल.

(7) (a) सत्त भयाईं हयाईं गहीरें, the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz., इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीवभय, मरणभय, and अल्लोकभय.

(b) सत्त वि तच्चईं णायईं धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध and मोक्ष.

(8) (a) अह वि मय णिट्ठविय अट्ठुं, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अह सिद्धगुण भरिय वरिं, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्धs, viz.,

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुट्ठुं तहेव अवगहणं ।

अगुरुल्लहमव्वाचाहं अह गुणा होन्ति सिद्धाणं ॥

—निद्रभक्ति, २०

शुद्धात्माद्रिपदार्थविषये विपरीताभिनिवेशरहितः परिणामः क्षाधिकसम्यक्त्वमिति भण्यते । जगत्त्रयकालत्रयवर्तिपदार्थयुगपद्विशेषपरिच्छित्तिरूपं केवलज्ञानं भण्यते । तत्रैव सामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनं भण्यते । केवलज्ञानविषये अनन्तपरिच्छित्तिशक्तिरूपं अनन्तवैर्यं भण्यते । अतीन्द्रियज्ञानविषयत्वं सूक्ष्मत्वं भण्यते । एकजीवावगाहप्रदेशे अनन्तजीवावगाहदानसामर्थ्यमवगाहनत्वं भण्यते । एकान्तेन गुरुलघुत्वस्याभावरूपेण अगुरुलघुत्वं भण्यते । वेदनीयकर्मोदयजनितसमस्तबाधरहितत्वाद्ब्याबाधगुणश्चेति ॥

—परमात्मप्रकाशटीका

(9) (a) णवविहु वंभचेरु परिपालिउ, he observed the ninefold celibacy, viz.,

इत्थिविसयाहिलासो अङ्गविमोक्खो य णिदरससेवा ।

संसत्तदव्वसेवा तहिन्दियालोयणं चेव ॥ १ ॥

सङ्कारपुरङ्कारो अदीदसुमरणमणागदहिलासो ।

इद्विसयसेवा वि य णवभेदमिदं अवम्भत्तं ॥ २ ॥

—T. in Ms. K.

Devendra's Com. on Uttarā. XXXI. 10 however gives the nine rules of celibacy as follows :

वसहि कह निसिज्जिन्दिय कुड्ढिन्तरपुब्बकीलिय णणीए ।

अहमायाहार विभूसणा य नव वम्भगुत्तीओ ॥ १ ॥

(b) णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ, he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, and मोक्ष.

( 10 ) दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz.,

खन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धवो ।  
सचं सोयं आकिंन्नणं च बम्भं च जइधम्मो ॥ १ ॥

( 11 ) एयारह हयजडिमउ अवियारहं धीरहं सावयहं...पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमाs which lay disciples practise. These eleven प्रतिमाs are :—

दंसण वय सामाहय पोसह पडिमा अबम्भ सच्चित्ते ।  
आरम्भ पेस उद्धिवज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224-229.

( 12 ) बारह भिक्खुहं पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमाs of the monks. These are described in Devendra's Com. on Uttarā. XXXI 11, as follows :—

मासाई सत्तन्ता पढमा विड तइय सत्तराइदिणा ।  
अहराइ एगराई भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्षुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months; of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमाs is called upon to observe. Devendra describes them as follows :—

पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिईजुओ महासत्तो ।  
पडिमाउ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥  
गच्छे च्चिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा ।  
नवमस्स तइयवत्थुं होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ २ ॥  
वोसट्टचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी ।  
एसण अभिगगहीया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥  
गच्छा विणिक्खमित्ता पडिवज्जइ मासियं महापडिमं ।  
दत्तेग भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥  
जत्थत्थमेइ सूरु न तओ ठाणा पयं पि संचलइ ।  
नाएगराइवासी एगं व दुगं व अन्नाए ॥ ५ ॥  
दुट्टस्सहत्थिमाईण नो भएणं पयं पि ओसरइ ।  
एमाइनियमसेवी विहरइ जाखण्डिओ मासो ॥ ६ ॥



पच्छा गच्छमईं एव दुमासी तिमासि जा सत्त ।  
 नवरं दत्तीवुड्डी जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ ७ ॥  
 तत्तो य अट्टमीया भवईं हु पढम सत्तराईंदी ।  
 तीइ चउत्थचउत्थेणऽपाणएणं अह विसेसो ॥ ८ ॥  
 दोच्चा वि एरिसि च्चिय बहिया गामाइयाण नवरं तु ।  
 उक्कुड लंगडसाईं दण्डायय उड्डुं ठाइत्ता ॥ ९ ॥  
 तच्चाए वी एवं नवरं ठाणं तु तस्स गोदोही ।  
 वरिसणमहवा वी ठाएज्जा अंबखुज्जो हु ॥ १० ॥  
 एमेव अहोराईं छहं भत्तं अपाणयं नवरं ।  
 गामनगराण बहिया वग्गारियपाणिए ठाणं ॥ ११ ॥  
 एमेव एगराईं अट्टमभत्तेण ठाण चाहिरओ ।  
 ईसीपढभारगए अणिमिसनयणेगदिट्ठा य ॥ १२ ॥

( 13 ) ( a ) तेरह किरियाठाणइं मुणियइं, he understood the thirteen क्रिया-स्थानs, which are enumerated below :

अट्टाणहा हिंसाऽकम्हा दिट्ठी य मोसऽदिन्ने या ।  
 अज्झत्थ माण मेत्ती माया लोभेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूयगड II. 2.

( b ) तेरहमेय चरित्तइं गणियइं, he also counted upon the thirteen types of good conduct, viz, पञ्चास्रवसंवर, पञ्चसमिति and गुप्तित्रय.

( 14 ) ( a ) चोद्धह गंध, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T. as follows :—

मिच्छत्तवेदरागा तहासादिया ( 1 ) य छद्दोसा ।  
 चत्तारि तह कसाया चोद्धह अट्टमन्तरा गन्था ॥ १ ॥

( b ) ( चोद्धह ) मला वि समुज्झिय, he avoided the fourteen impurities enumerated in T. as follows :—

नहरोमजन्तुअट्ठी कणकोडयपूचम्ममंसरुहिराणि ।  
 बीय फलकन्दमूलानि मला चोद्धसा हेन्ति ॥ १ ॥

( c ) चोद्धह भूयगाम सइं बुज्झिय, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T. as follows :—  
 एकेन्द्रियाः सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तापर्याप्तभेदात् षट्, पञ्चेन्द्रियाः संइयसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

बादरसुद्धमे इन्दियदुत्तिचतुरिन्दियसन्नीया ।  
 पज्जत्तापज्जत्ता,.,चतुदस भूदसंगामा ॥ १ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेळ्ळेंतें, abandoning the fifteen प्रमादs or flaws, enumerated in T. as follows :—

विकहा तह य कसाया इन्दिय निह्वा य पणगो य ।

चउ चउ पण एगेगं होन्ति पमाया हु पण्णरसा ॥ १ ॥

i. e., four types bad talk, viz. राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and खीकथा, four कषायs, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक ?).

(b) पुण्णपावभूमिउ जाण्णेंतें, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz., five in each of भारत, इरावत and विदेह.

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमंते, pacifying the sixteen forms of passions. T. notes these as : कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेषु रमंते taking delight in sixteen types of expressions. T. records them as follows:—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि नव, तथा वि (?) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टपरोक्षवचनानि चत्वारिणि षोडश. The Uttarā. has गाहासोलसएहिं which refers to the sixteen lessons of the first volume of सूयगडं of which the sixteenth is called गाहज्झयणं.

(17) असंजमोह सत्तरह, seventeen types of असंयम, indiscipline ; Devendra has enumerated these as follows:—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वं चास्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेदत्वात् । यत उक्तम्—

पुढवि-दग्-अगणि-मारुय-वणफई-चि-ति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।

पेहोपेहममज्जण-परिठवण-मणो-वई-काए ॥

T. has the following explanation : पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाणाम-प्रतिलेखन (?) दुष्प्रतिलेखनापहत्योपेज्ञानि (?) जीवमनोवाक्कायाः अपहत्य (?) गृहीताण्डादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (?) उपेक्षा (?)...। अथवा—

पञ्चासवेहि विरमणं पञ्चिन्दियनिग्गहो कसायजओ ।

तिहि दण्डेहि य विरदी संजमो सत्तरसभेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयमः सप्तदशविधः .

(18) जाणिवि संपराय अट्टारह, having known eighteen types of संपराय viz., ten यतिधर्मs such as क्षान्ति etc., five समितिs and three गुप्तिs.

(19) एउणवीस वि णाहज्झयणइं, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations ( नाय-ज्ञात or न्याय ? ). This is clear-

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read ह so that our reading is नाहञ्जयणइं. This reading is supported by T. also. Uttarā. reads नायञ्जयणेतु. The change of Sk. त to ह is not unusual, compare भरह for भरत. It also appears that ज्ञात or न्याय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called नायस and are named as :

उक्खित्तनाए संघाडे अण्डे कुम्भे यं सेलए ।  
 तुम्भे च रोहिणी मल्लीं मायंदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥  
 दावह्वे उदगनाए मण्डुक्के तेयली इय ।  
 नन्दिफले अवरकङ्का आइन्ने सुंसु पुण्डरिए ॥ २ ॥

—Devendra on Uttarā. XXXI. 14.

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called नाह or णाह ; it contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below:—

1. उक्कोडणाग constituted the first अञ्जयण. The story as given in T. is as follows:—उक्कोडणाग श्वेतहस्ती । अस्य कथा । उत्तरापथे कनकपुरे राजा कनको, महाराज्ञी कनका । पुत्रो नागकुमारः तपो गृहीत्वा विहरमाणः अटव्या दावानलेन दह्यमानः समाधिना मृत्वा अच्युतेन्द्रो जातः । तदर्धदग्धकलेवरं दृष्ट्वा तुङ्गभद्रो नाम तत्रत्यो भिल्लो जातपश्चात्तापो मृत्वा तत्रैव श्वेतगजो जातः । सोऽच्युतेन्द्रेण जिनधर्मं ग्राहितः पुनर्दावानलेन दह्यमानं शशकं स्वपादतले स्थितं रक्षित्वा ( दह्य ) मानोऽपि दृढव्रतो भूत्वा मृत्वा देवो जातः. If we compare this narrative with the one in the first ज्ञात called उक्खिसज्ञात of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by अच्युतेन्द्र, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्भ—This is second in the Digambara tradition, but fourth in the Śvetāmbara one. T. gives the narrative as follows:—कुम्भ कूर्माख्यानम् । यथा कूर्मेण मुखचरणसंकोचं कृत्वात्मनो ब्राह्मणान्मरणं निवारितं तथा मुनिभिरपि पञ्चेन्द्रियसंकुचितैर्मरणपरंपरा निवारयितव्या.

3. अंड्य—This is the third ज्ञात in both the versions. T. says:—  
अण्डजकथा पञ्चप्रकारा । तद्यथा कुक्कुटकथा माताप्येका पिताप्येकः इति । तापसपत्निकास्थितशुक-  
कथा । चारणाख्यव्याकरणवेदकशुककथा । अगन्धनसर्पकथा । हंसयूथबन्धनमोचक कथा. In the  
Śvetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and  
not five as T. seems to indicate.

4. रोहिणी—This is the seventh story in the Śvetāmbara version  
while it is fourth in the Digambara one. T. reads: सुपुत्रबलदेवेन सह रोहिणी  
निष्ठतीति लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं यद्यसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शौरिपुरं वेष्टित्वा पूर्वाभिमुखं  
बहविति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम् । The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether  
different.

5. सेस—This seems to correspond to सेलरं which is the fifth narra-  
tive in the Śvetāmbara version. T. reads: शेषे शिष्यकथा यथा चेलिणीपुत्रवारि-  
षेणप्रतिबोधितः पुष्पडालः. The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different.

6. तुम्ब (and not रूम्ब as read in foot-notes)—This is the sixth story  
in both the versions. T. reads: तुम्बकथा रोषेण दत्तकटुककुभोजनमुनिकथा. The  
story in the ज्ञाताधर्मकथा is different as can be seen from its summary in  
the com. which runs as follows:—

जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुम्ब अहो वयइ एवं ।  
आसवकयकम्मगुरू जीवा वच्चन्ति अहरगयं ॥ १ ॥  
तं चेव्व तव्विमुक्कं जलोवरि ठाइ जायलहुभावं ।  
जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइहिया हेन्ति ॥ २ ॥

7. संघाद—This is called संघाड and is the second in the Śvetāmbara  
version. T. reads:—संघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्याः,  
तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागताः । सम्यग्दृष्टयस्ते केवलिसमीपे स्वल्पं निजजीवितं  
ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान ( पादपोपगमन ? ) मरणेन स्थिताः । अतिवृष्टौ जातायां  
जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः । परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गताः. The  
narrative in ज्ञाताधर्मकथा is altogether different from the above.

8. मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the  
Śvetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara  
version. T. seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would  
however reduce the number of narratives to eighteen. T. reads: मादंगि-  
मल्लिकथा यथा वज्रमुष्टिमहाभट्टमार्याया मंगि ( मादंगि ? ) नामायाः मल्लिपुष्पमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदृष्टायाः  
कथा. The narratives of the Śvetāambaras and the Digambaras do not  
at all agree.

9. मल्लि—This is the eighth narrative in the ज्ञाताधर्मकथा. For remarks see above.

10. चंदिमा—This is the tenth narrative in both the versions. T. says : चंदिमा चन्द्रावधकथा ( चन्द्रवृद्धिकथा ) Perhaps both the versions give the same narrative.

11. तावद्द्व—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्द्व which is the name of a tree in that version. T. however seems to mean a different story. T. reads : तावद्द्व—तापद्रवदेशोत्पन्न-घोटकहरणसगरचक्रवर्तिकथा.

12. तिका—It appears that this तिका should correspond with तेयली which is the fourteenth story in the ज्ञाताधर्मकथा. T. reads: तिका मनुष्यकरोडि-समुत्थितवंशत्रिकस्य कर्कण्डमहाराजरुतच्छत्रे ध्वजाङ्कुशदण्डकथा. The Svetāmbara version of तेयली does not seem to agree with the above.

13. तडाया—This seems to correspond to दहुर which is the thirteenth story in the Svetāmbara version. T. reads: तडाया तडागपाल्यामेकवृक्ष-कोटरस्थिततपस्विनो गन्धर्वारघनकथितकथा. This has no correspondence with दहुर of the Svetāmbara version.

14. किन्न ( आकीर्ण ? ) —This seems to be आङ्गण of the Svetāmbara version which is the seventeenth story there. T. reads: ब्राह्मिर्दनस्थितकर्षक-पुरुषसत्यकथा. This story also does not seem to have any correspondence with the Svetāmbara version.

15. सुसुकेय—This should correspond with सुसुमा of the Svetāmbara version which is the eighteenth story there. T. reads . आराधनाकथितसुसु-मारद्रहनिक्षिप्तपाणकथा. There seems to be no agreement between the two versions.

16. अवरकंके—This is called अवरकंका in the Svetāmbara version where also it is the sixteenth narrative. T. reads : अवरकंकनामपत्तनोत्पन्न-जनचोरकथा. There is mention of the town of अवरकंका in the Svetāmbara version, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17. नंदिकर्ण—This is called the same in the Svetāmbara version but there it is the fifteenth story. T. reads : अट्ट्यां स्थितसुभुक्षापीडितधन्वन्तरि-

विश्वानुलोमभृत्याना किंपाकफलकथा. The narrative seems to be similar in both the versions.

18. उदगनाह—This seems to correspond to उदगनाअ of the Svetāmbara version which is the twelfth story there. T. reads : उदगनाह उदकनाथ ( ? ) कथा यथा राजामात्यसमक्षगडुककथा. The story seems to be similar in both the versions.

19. पुंडरिगो य—This is the last story in both the versions. T. reads : पुंडरिगो य पुण्डरीकराजपुत्र्याः कथा. The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com.

वाससहस्रं पि जई कारुणं संजमं सुविउलं पि ।  
अन्ते किलिद्वभावो न विसुज्झइ कण्डरीउ व्व ॥  
अप्पेण वि कालेणं के वि जहागहियसीलसामण्णा ।  
साहिनति निययकज्जं पुण्डरीयमहारिसि व्व ॥

T. adds : “अथवा—गुण जीवा प्र(१)जतीपाणासायामग्गणा उ य ।  
एउणवीसा एदे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खययं जं हवन्ति दस चेव ।  
णाहज्झयणा एए एउणवीसा वियाणेहि ॥

कर्मक्षयजाः घातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः. It is clear that the names of the अज्झयणं agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely. Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T.

(20). वीसविहइं असमाहीठाणइं—Twenty types or causes of असमाधि, absence of tranquility of mind. These twenty causes are given in Devendra's com. as follows:—

1. दवदवचारी—दुयं दुयं वच्चन्तो इहेव अप्पणं पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अप्पयं सत्तवहजणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ.

2. अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

4. अहरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ.

5. राइणिए परिभवइ.

6. थेरोवघाईं—सीलाहदोसेहिं थेरे उवहणइ त्ति वुत्तं भवइ.

7. भूओवघाई-अणट्टाए एगिन्दियाइए उवहणड त्ति वुत्तं भवड.
  8. मुहुत्ते मुहुत्ते संजलइ.
  9. सइं कुद्धो य अचन्तकुद्धो हवइ.
  10. पिट्ठिमंसिए हवइ.
  11. अभिक्खणमोहारिणिं भासइ जहा दासो तुमं चोरो व त्ति.
  12. नवाइं अहिगरणाइं करेइ.
  13. उवसन्ताणि य उइरेइ.
  14. ससरक्खपाए अथंडिलाओ थण्डिलं संकमइ, ससरक्खेहि वा हत्थेहिं भिक्खं गेण्हइ.
  15. अकाले सज्झायं करेइ.
  16. असंसडसद्धं करेइ राईए वा महया सद्धेण उल्लवइ.
  17. कलहं करेइ, तं वा करइ जेण कलहो हवइ.
  18. तारिसं करेइ भासइ वा जेण सब्बो गणो झञ्झविओ अच्छइ.
  19. सूरोदयाओ अत्थमणं जाव भुञ्जइ.
  20. एसणासमिइं न पालेइ.
- 'I. also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt.

( 21 ) एकविंश सवल वि, i. e. twentyone impurities or impure and sinful acts ( शवल ). They are given by Devendra as :—

- तं जह उ (१) दत्थकम्मं कुव्वन्ते (२) मेहुणं हु सेवन्ते ।  
 (३) राईं च भुञ्जमाणे (४) आहाकम्मं च भुञ्जन्ते ॥ १ ॥  
 (५) तत्तो य रायपिण्डं (६) क्कीयं (७) पामिच्च (८) अभिहड (९) अञ्जेजं ।  
 (१०) भुञ्जन्ते सवले ऊ पच्चक्खियडभिक्ख भुञ्जन्ते ॥ २ ॥  
 (११) छम्मासट्ठभन्तरओ गणा गण संकमं करिन्ते य ।  
 (१२) मासट्ठभन्तर तिण्णि य दगलेवा ऊ करेमाणे ॥ ३ ॥  
 मासट्ठभन्तरओ थिय माइहाणाइं तिण्णि कुणमाणे ।  
 (१३) पाणाइवायाउट्ठिं कुव्वन्ते (१४) मुसं वचन्ते य ॥ ४ ॥  
 (१५) गिण्हन्ते य अदिन्नं (१६) आउट्ठिं तह अणन्तरहियाए ।  
 पुढवीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥  
 (१७) एवं सत्तिणिद्धाए त्तरफत्ताए चित्तमन्तसिल्लंलू ।  
 कोलावात्तपड्ढा कोलघुणा तेसि आयासो ॥ ६ ॥  
 (१८) नण्डसपाणत्तवीए जाव उ संताणए म्मे नदियं ।  
 दाणाइ चेषमाणे न्वले आउट्ठिणए उ ॥ ७ ॥

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुष्के य फले य बीयहरिरे य ।

भुञ्जन्ते सबले ऊ (२०) तहेव संवच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥

दस दगलेवे कुव्वं तह माइहाण दस य वरिसन्तो ।

(२१) आउट्टिय सीओदगवग्घारियहत्थमत्ते य ॥ ९ ॥

दव्वीइ भायणेण य दिज्जन्तं भत्तपाण घेत्तूण ।

भुञ्जइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

( 22 ) सहिवि दुवीस दुसज्ज परिसह, having borne twenty-two unpleasant contacts, viz., क्षुत्, पिपासा etc. For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX. 9.

( 23 ) तेवीस वि सुत्तयइइं, i. e. twenty-three chapters of the सूत्ररुताङ्ग, the second Aṅga of the Canon of the Jains, beginning with समयाध्ययन and so forth. T. reads : ससमए वेदालिजोए उवसगं इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरधुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अगमगमे समसरणं तिकालागन्धसाहयए (१) आदा तदित्था (१) पुंडरीको वीरियट्ठाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खाण अणगारगुणकित्ती सुद अत्थ णालन्दे सुदयइज्जयणाणि तेवीसं द्वितीयाङ्गश्रुतवर्णनाधिकाराश्च. It we are to trust the text of T. which is admittedly corrupt, the order of adhyayanās in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one.

( 24 ) चउवीस वि जिणतित्थइं—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas.

( 25 ) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8. T. reads : एकैकस्य परिपालनार्थं वाङ्मनोगुप्तीर्वा (१) दानसमित्यादयः पञ्च भावनाः; अथवा, त्रयोदश क्रियाः द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः.

( 26 ) छव्वीस वि पुहवीउ, the twentysix regions, T. reads : सौधर्मादि-मोक्षपर्यन्ता एका (१) पृथ्वी उत्सर्पिण्याभरतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सैव खारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रभो (१) मौखरभागचित्रादयः (१) पङ्कभागादयः सप्त नरकभूमयः इति षड्विंशतिः पृथिव्यः.

( 27 ) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz., द्वादश भिक्षु-प्रतिमाः, अष्टौ प्रवचनमातरः, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामभावश्च सप्त, T. Devendra however gives a different list :—

वयच्छंक्कमिन्दिर्धीणं च निग्गहो भविकरैणसच्चं च ।

खमंथा विरागंथा वि य मणमार्इणं निरोहो य ॥ १ ॥

कायाण छंक्कं जोगम्मि जुत्तथा वेयंणाहियासणया ।

तह मारैणन्तियहियासणा य एएण्णगारगुणा ॥ २ ॥



( 28 ) अट्त्वीस पवरायारकम्—There are twentyeight ( ? ) मूलगुणः as T. says; but Devendra gives them as : प्रकृष्टः कल्पः यतिव्यवहारो यस्मिन्निति प्रकल्पः, स चेहाचाराङ्गमेव शस्त्रपरिज्ञाद्यष्टाविंशत्यध्ययनात्मकम्.

( 29 ) एउणतीस वि दुक्कियसुत्तं, twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T. reads : चित्रकर्मादिसूत्रं गणितसूत्रं वैद्यसूत्रं नृत्यसूत्रं गान्धर्वसूत्रं पटहसूत्रं अगदसूत्रं मयसूत्रं द्यूतसूत्रं राजनीतिसूत्रं मजुरंगसूत्रं (?) चतुरंगसूत्रं गजतुरंगसूत्रं पुरुषखीगोष्महुदंगजनानां (?) लक्ष ( लक्षण ? ) सूत्राणि अंगं सरं वंजनलक्षणां च छिण्णं वीभोमंसमिणंतरकलं (?) इत्यष्टाङ्गनिमित्तसूत्राणीति एकोनविंशत्यपसूत्राणि । अथवा

अट्टारह य पुराणा सडंगविण्णा ( विज्जा ? ) य लोइयाणं तु ।

बुद्धाह पंच समया परूवणा जा सुदी लोए ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

अट्ट निमित्तंगाह दिव्वुप्पोयन्तैल्लिकलंभोमं च ।

अङ्गं सरं लक्खणं वंजणं च तिविहं पुणेक्केहं ॥ १ ॥

सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च पावसुयमउणतिसिविहं ।

गन्धर्व्वे नट्टे वत्थं औडं धणुवेयसंजुत्तं ॥ २ ॥

For still another list see नन्दीसूत्र under मिच्छासुयं.

( 30 ) तीसविहं मोहट्टाणं, thirty causes or types of infatuation. T. reads : तथा हि—व्रतविषये पञ्चप्रकारो मोहः । पञ्चप्रकारमनुष्यविषये पञ्चप्रकारमोहः । पञ्चप्रकारमनुष्याः भोगभूमिजमनुष्याः विद्याधरत्रिषष्टिशलाकापुरुषमनुष्याः पञ्चदशकर्मभूमिजचतुर्थकालोत्पन्नमनुष्याः भरतैरावतेषु दुःकर्मातिदुःपमकालोत्पन्नमनुष्याः समुद्रमध्यद्वीपोत्पन्नकर्णप्रोचरणादि ( कर्णप्रावरण ! ) मनुष्याश्च । जीवाजीवास्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षपुण्यपापानां स्वरूपे नवप्रकारो मोहः । कर्मचन्दनस्वरूपे एको मोहः । द्वादशविधतपःस्वरूपे एको मोहः । दर्शनस्वरूपे एको मोहः । नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानां सप्तनयानां स्वरूपे सप्त मोहाः । व्रतविनाशविषये एको मोहः ॥ अथवा—क्षेत्रान्त्नस्वरूपा ( 1 ) सुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यदण्डलक्षणबाह्यग्रन्थविषयो दशप्रकारो मोहः । मिथ्यात्ववेदरागादिलक्षणाभ्यन्तरग्रन्थविषयश्चतुर्दशप्रकारः । पञ्चेन्द्रियदुष्टमनोविषयः षट्प्रकारो मोहः. Devendra's list is altogether different from this for which see his com.

( 31 ) एकतीस मलवाय धुणंते, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T. as follows :—तथाहि ज्ञानावरणीयं पञ्चप्रकारं दर्शनावरणीयं नवविधं वेदनीयं सातासातरूपतया द्विभेदं मोहनीयं दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयभेदाद् द्विप्रकारं आयुश्चतुर्भेदं नाम शुभमशुभं च गोत्रमुच्चैः ( 1 ) अन्तरायाः पञ्चप्रकाराः.

( 32 ) जिणुवएस वत्तीस मुणन्ते, meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T. as follows :—

आर्वांसयंङ्गपुर्व्वं छब्बारसचोद्दसा य ते कमसो ।

वत्तीसमिमे नियमा जिणोवएसो मुणयेव्वा ॥ १ ॥

The Uttarā. XXXI. 20 mentions one more series of thirty-three terms as तैत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII. 15-17 below.

14. 9b छप्पण्णन्तरदीवहं—These fifty-six अन्तरद्वीपस are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters. For details see नन्दसिद्धटीका of मलयगिरि, pp. 102-103.

15. 6-10. These lines describe the different functions of the nine निधिs or treasures.

### XIX.

[ Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāṃsa a liberal donor, and Somaprabha a meritorious ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duḥṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणरं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12-13 धीवरिस्ररिपुत्तहं देहिंति पदुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2a पंचमजुगि, i.e., in दुष्पमा.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Siva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Maṇoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmatī (Mahāmatī), Sambhinnamati, Satamati and Saimbuddha (Svayambuddha). Now one day this Svayambuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmatī, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayambuddha refuted the doctrine of Mahāmatī, when Sambhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayambuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayambuddha refuted this doctrine also.

Svayambuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artificial blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara ( a kind of non-poisonous snake ) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing. ]

17. 2-5 अणिहणइं etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9b पउरंदरिय वित्ति, the doctrine of Purandara, i.e., Indra, who along with Brhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10-11. विणु जीवे etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 रिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12. णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयासु etc. A Tiṭṭibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI.

[ Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāranamunis. Svayambuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tirthaṅkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Srīṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Srīvarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tirthaṅkara Svayamprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a samnyāsa maraṇa. He was born in the Isāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayamprabhā and Kanakaprabhā.]

2. 12 करु णिउ सेसासयदलहो, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4b किं भव्नु अमव्नु व वज्जरह, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1a बद्धु णियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth.  
9 मणकुडिलत्ते, i. e., on account of मायाशल्य.

## XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

## NOTES, XXII.

time he died and was born as son named Vajrajaṅgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajaṅgha had been growing on the earth, his consort Svyamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Srīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Pundarikīṇī. One day when this Srīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former birth and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Srīmatī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirṇāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Srīmatī. On recollecting her

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out. ]

9. 11b सवलहणं सवलहणु व दिहिहरु, the scented paste (सवलहणं, समालम्भनम्) takes away my courage as it destroys force (स्वलहन्) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8b अतियालउ संबुद्धतियालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तियाल-स्त्रीसहित, अतियाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तियाल, त्रिकाल).

15. 6a अम्हं दहजणाई, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदिसेण, धरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz., सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिया. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare: आम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पाच जण etc. 10b मं उच्चोलि भरिय माहुरयहु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटीवस्त्र) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माठ or पोकळा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9a धम्म होइ घइ णियमुहदंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kadavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 पण्णासटुत्तरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिणामोपवासैः (परिमाणोपवासैः?) श्रुतसागरविधिर्भवाति तासामेव सप्तषष्टिभिरुपवासैः जिनगुणसंपत्तिविधिरिति, T.

XXIII.

[ The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said : In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Srīvarman and Vibhīṣaṇa to king Srīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasamca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheda as Vajrajaṅgha. ]

3. 2 सो सरसरविहिष्णु सा ण लह्ह, he, being hit ( विहिष्णु, विभिन्नः ) by the arrows ( सर, शर ) of the god of love ( सर, स्मर ), does not secure her ( सा ). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhramśa.

5. Note the शुंखलायमक or दामयमक here. Note particularly 7a which line looks apparently incomplete as there is no 7b in any of the Mss. The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that b is lost, for the चमक here °गिहे—गिह°—णियरे—णियराय° in 6b, 7a and 8a remains in tact.



8. 9b सीहणिकीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सव्वमहु in 10a ; मुत्तावलि in 9. 9a and रयणावलि in 9. 14a, कणयावलि in 11. 9a are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदात्, from the place of इन्द्र. 13a अणामिया i. e., णिण्णामिया.

XXIV.

[ In the meanwhile the wise nurse of Srīmatī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheda. There she kept the picture in the temple. Vajra-jaṅgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayamprabhā. He was unable to stand the pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṅgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmatī for him, started for Pundarīkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmatī to Vajrajaṅgha, and thus brought about the union of lovers ].

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8b को तं पुसइ णिडालइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has become a proverb in M.

XXV.

[ After marriage Vajrajaṅgha and Srīmatī returned to Utpalakheda. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarīka, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṃgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṃgha. They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz., those as Dhanaśrī, Nirnāmikā, Svayamprabhā and Śrīmatī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tīrthaṃkara, and Śrīmatī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Aṇumdhari and the young prince Puṇḍarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12. 6b दूसावासु, a camp in tents ( दूसा, दूष्य, पटगृह ).

19. 11a कंदुवि, a sweet-meat seller, a baker.

## XXVI.

[Vajrajaṃgha and Śrīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aṇinda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayambuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṃgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayamprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvīdhi of king Subhadraṣṭi and queen Nandā. Suvīdhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghoṣa. God Svayamprabha

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven.]

1. 14b कव्य पाययं—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10b विड णाणमि धाड सुपसिद्ध —The root विड् (विड in Prakrit) is widely known to mean “to know”, so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a करवाल, i. e., sword.

XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta. Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tīrthamkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Abamindra. Dhanadeva also was born as Abamindra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tīrthamkara and Dhanadeva was born prince Seyamsa. Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tīrthamkara as to how many Tīrthamkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha.]

8. Note that this kadavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन्, विद्याधरेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रजंघ, श्रीधर, सुनीधि, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थसिद्धाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyamsa are summarised here.

12. 5-8 महु णात्तिड तुह तणुरुहु मरीइ—The passage says that मरीचि, the son of मरु, will be the twentyfourth Tīrthamkara named वर्धमान.

## NOTES, XXVIII.

On hearing this prophecy मीचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Saṃsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, Triṣaṣṭi. VI. 373-390.

## XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śreṇika as follows:—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayanvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him. ]

20. 11b मेहेसरु जि हक्कारिउ राएं, king Jaya was called मेहेसर or मेयस्वर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in 28. 4a, but elsewhere we find the name as घणरव in 21. 15 ; जठहरसर in 23. 7b ; जीसूचनाय in 28 9b. Metrically मेहेसरु here is not good, but in 28. 4b it is quite right. In T. also under 30. 10b we get मेघेश्वरामित्रः .

XXIX.

[ King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaquetu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying " O, where is Prabhāvatī ? " Sulocanā also fainted saying " Rativara, where are you ? " On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Aṭaviśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktiṣeṇa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva ].

5. 2a सुयावरु, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8a पङ्कुडिहि, in the tent.

9. 10a असिआउसाइं i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेष्ठिs, viz. अरहन्त, सिद्ध, आचरिय, उवज्झाय and साहु. Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11-12 पारावइ हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravsiṇā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवेण जणु खज्जइ, people are overcome ( खज्जइ, lit. swallowed ) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. 8a अडइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि ( See 13. 7a ). 13 परमायए, by my step-mother.

16. 4a चारण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jamghācāraṇa and Vidyācāraṇa. Both the classes are capable of flying through the sky. Jamghācāraṇa acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācāraṇa does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8-9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहिं एकु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.

[ Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvati and of Jaya as Hiraṇyavarmān. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā. ]

6. 10b हिरण्यवम्मु—This name occurs elsewhere, e. g., 20. 8b, 20. 8a and 22. 4a as सुवणवम्म, कंचणवम्म and कणयवम्म.

12. 9b पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोले वर चढविणे or फिरविणे in Marathi.

15. 4b तियमइ, i. e., खीमति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

[ Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukānta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagrha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagrha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nāgadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the

## NOTES, XXXII.

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasum̐dharā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex. ]

3. 8a णवसवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 लूयासुत्ते etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1a फणिदत्तु, i. e., merchant Nāgadatta.

25. 10a विवकखवइसेण, i. e., by Nāgadatta. 12 रुइगहियक्कइं, gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5a धणसंसइ etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasum̐dharā, in point of wealth.

## XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a banyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla



did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophesied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophesied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yaksa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvati, and Vappilā.]

11. 1a-b तुङ्गं जि णाहु etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोक्यावर शिंगे असणे etc.

XXXIII.

[Sukhāvati, mentioned in the previous Samdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūtā and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvati showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvati. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaṭavaka. 13 विट्ठि वि भङ्गु वासरु, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina. 14 सगु वि कमलु सकेसरु, a sword becomes like a lotus full of filaments.

## XXXIV.

[ Sukhāvati came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍarīnkiṇī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla. ]

2. 5b जियसत्तुं सलिलसेण भणित, Jitaśatru, the father of Sukhāvati said to his son Salilaseṇa, i. e., Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. सलिलसेण and सरसेण in 3. 7b are only synonyms of वारिषेण.

9. 15 दिहादिहसरीरी, one, i. e. Sukhāvati, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

## XXXV.

[ Sukhāvati now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍarīnkiṇī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvati. In the meanwhile two Vidyādharas met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavati, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvati, who was his wife. ]

16. 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi: इच्यासाठी जीव सुद्धा द्यावा, I shall even 'sacrifice my life for her.

XXXVI.

[ Śrīpāla was thereupon married to all the girls ; but Vappilā did not like that her husband should marry so many ; hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavaī, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavaī was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavaī gave birth to the Jina who was named Guṇapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Guṇapāla, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocanā went up into the sky to offer worship to Risaḥa. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata. ]

4. 21 सज्जीविं रयणं, the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अश्व, गज, स्त्री, रथपति and पुरोहित as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8. 9a इज्जेवउं सहं चिहिं कप्पडेहिं, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

XXXVII.

[ King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasarana where Risaḥa was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from saṃsāra ].

6. 9 एयाणेयवियप्पणाए, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व. I take this to refer to the famous सप्तभङ्गीनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See 7. 3b below where we get express mention of सप्तभङ्गी.

7. 1b समयहं तेसद्वहं तिण्णि सयइ, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिर्दिसिंदं किरियाणं अक्किरियाणं च अहु बुलसीदी ।  
सत्तद्वहं अण्णाणी वेणइयाणं च होदि वत्तीसं ॥१॥

12. 6b जेवडु सलिलु तेवडु णालु णिप्पज्जइ णल्लिणहु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

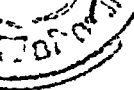
15-17. These three kadavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10-11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोग्लु वि दुविहु, णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु—गुणु जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा, मोक्खु अर्हद्वस्था सिद्धावस्था च; तउ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोग्लु अणु स्कन्धं च; णिज्जर विपाकजा इतरा च. 3a जीवहं गइउ कहि याउ ति णिण पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3b जगवेढणमरु घनोद्धि-घननिलय-तनुवाताः. 4a जगि जोय ति णिण कायवाड्मनोयोगाः. 5b बालाइउ चउ विहु भणिउं मरणु बालमरणं बालपण्डितमरणं पण्डितमरणं पण्डितपण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावात्. 6a चउ विहु पमाणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि. It is rather strange that a Jain writer should mention these four प्रमाणस्य as against प्रत्यक्ष and परोक्ष. चउ विहु जि दाणु अभयाहारौषधशास्त्रदानानि. 6b चउ विहु दव्वाइउ द्रव्यक्षेत्रकालभावाः. 7a चउ भिण्णा मन्दमन्दतरतीव्रतीव्रतरस्वभावैश्रतुर्धा भिन्नाः, चउ विह कसाय अनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8a चउ विहु जिबन्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. चउ विहु जिणासु नामस्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8b विणउ वि चउ विहु ज्ञानदर्शनचारित्रौपचारिका विनयाः. 9a चत्तारि वि बंधविणा सहेउ ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि 10 सज्जाय पंच वाचनाप्रच्छनानुप्रेक्षास्त्रायधर्मोपदेशाः. (पंच) आचारविहि ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याणि. 11 णिग्गंथ पच पुलकबकुसकुशीलनिग्रन्थस्नातकाः. जोइसकुलइं पंच सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2a आसवणिबन्धहेऊउ पंच मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकपाययोगाः. 2b लद्धीउ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि. महणरया वि पच रौरवासिपत्रकूलमलिकुम्भीयाः (?). 3a संसारद्रव्यक्षेत्रकालभवभावाः; सरीरइं होंति पंच औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणानि. 4b समयपइ दर्शनानि. 5b सत्ताहोमहीउ सत्तरकभूमयः. 6a पचईउ अट्ट अष्ट कर्मप्रकृतयः. 6b वणदेव व्यन्तरदेवाः अष्ट किन्नरकिंपुरूपमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. जीवगुणते वि अट्ट सम्यग्दर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमात्रासिप्राकाभ्येशित्ववशित्वकामरूपित्वामिति. 8b वेज्जावच्चु वि दहविहु आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसायुमनोज्ञानाम्. 9a दह भावणसुर असुरनागविद्युत्सुपर्णाभिवातस्तनितोद्धिद्धीपदिक्कुमाराः. 9b फणिससिसह दहदिसिगयसुहासि धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः अष्ट लोकपालाः.

17 1a सिद्धं तासिया इं 2a च उदह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता  
बाहुबलिकेवलज्ञानोत्पत्तिसमये व्याख्याताः .

20 6b णिच्चालियाइं निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10a  
अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had  
given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but  
it is not in any way connected with physical body. 11 वसुसमहि सिद्ध-  
गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).



## GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[ In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like *Pāiyasaddamahānava* are now available. M stands for Marathi. ]

- अइमलहइ-मन्दगमनं करोति xv. 18. 7  
 अइवत्त-अतिमुक्तक xi. 1. 8  
 अक्का-माता xvi. 25. 12  
 अद्विलिय-अस्थिका ( cf आठळी M )  
 xxxii. 22. 6  
 अन्भिद्द-अभिगत xxxii. 6. 13  
 अम्मणु-कियन्मात्रम् ( cf अंमळ M )  
 xxv. 2. 5  
 अम्माहीरथ-रागध्वनिविशेष iv. 4. 13  
 अलियल्लि-व्याघ्र xiii. 18. 9  
 अल्लय-करमल, आर्द्रक xxxi. 24. 4  
 अल्लवइ-समर्पयति, xxxi. 8. 3  
 अल्लिवइ-समर्पयति xxxi. 28. 3  
 अवहंडइ-आलिङ्गति i. 17. 13  
 अवहंडिय-आलिङ्गित vi. 5. 11  
 अवसे-अवश्यम्, xv. 22. 10  
 अविहंडिय-परिपूर्ण x. 3. 13  
 असराल-बहुल xix. 2. 4  
 आलुंखिय-आस्वादित xiii. 11. 4  
 आहुहु-अर्धचतुर्थ xi. 25. 2  
 उच्चोलि-कटीवस्त्र, नीवी ( cf ओटी M )  
 (H gives उच्चोल I. 131 ) xxii. 15. 10  
 उट्टैट-उन्मत्त xxx. 4. 7  
 उप्फाल-पटहध्वनि xxxi. 15. 6.  
 उन्भिय-ऊर्ध्वीकृत vii. 21. 18  
 उल्लुरिअ-कान्दविक ( A baker )  
 xxv. 21. 1  
 उल्लाइ-अङ्गारावस्थो भवति v. 5. 4  
 उव्वार-उद्धरण, रक्षण, xvi. 21. 11  
 उव्वारुअ-अवशिष्ट ( cf. उर्वरित M )  
 xxxvii. 25. 3  
 ओइल्ल-उपरितन xi. 5. 4  
 ओम्माहिय-उन्माथित, उत्कण्ठित  
 xxxvii. 23. 11  
 ओरालि-शब्द ( cf. ओरड M ) v. 1. 7  
 ओरालिअ-आक्रन्दन xxviii. 29. 1  
 ओलगिय-सेवित vi. 5. 5  
 ओहइइ-हीनं भवति vii. 18. 7  
 ओहामिय-तिरस्कृत iv. 4. 4; अभिभूत  
 xviii. 1. 5  
 ओहुल्लिय-म्लान vii. 10. 1  
 कउल-चावाक, कापालिक xi. 17. 8  
 कक्कर-पर्वतशिखर xxxi. 23. 7  
 कक्खड-कर्कश, निष्ठुर xi. 13. 10  
 कडप्प-संघात, समूह viii. 7. 6  
 कडिल्ल-कटिसूत्र iv. 4. 5  
 कड्डुअ-चुम्बकपाषाण xx. 19. 2  
 कणइल्ल-शुक xiii. 7. 7  
 कप्पड-कर्मट, वस्त्र ( cf. कापड M )  
 xxxvi. 8. 9  
 कब्बड-वसतिविशेष v. 21. 3  
 कयंर-धूलि ( cf. कचरा M ) xxviii. 2. 14  
 करंड-स्थागिका iv. 19. 9  
 करोडि-शिरोस्थि ( cf. करोटी M )  
 xii. 17. 8  
 कलमलअ-कालुष्य, ईर्ष्याजनित खेद ( cf.  
 कळमळ, तळमळ M. ) xxxvi. 2. 6  
 कसर-बलीवर्द, vii. 20. 4; वत्सतर viii. 2.  
 18; गोयुवा xxviii. 28. 7.



कसर-पाण्डुर XXXII. 20. 14  
 कसेरु-वृण I 3. 12  
 कंकोलि-अशोकवृक्ष IV. 1. 5  
 कंदोद-नीलोत्पल XXIX, 6 5  
 किम्मीर-विचित्र VII. 19. 3  
 किलिगिलिय-शब्दानुकार XV. 1 6  
 कुडुव-वादनकाष्ठ IV. 10. 10  
 कुढ-पृष्ठ XXIX. 14. 11  
 कुद्दीर-चन्द्र XVII. 4. 5  
 कुवलीहल-बदर XXXII 20. 15  
 कुसुमाल-चोर XXXI. 18. 4  
 कुहिणि-मार्ग XXXV. 13. 6  
 कुंड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 कुंयरि-कुमारी XXXIII. 2. 4  
 केया-वरत्रा, रज्जु XII. 11. 5  
 केर-आज्ञा XVI. 6. 9  
 कोक्काविअ-आहूत, आकारित XXIX. 27. 9  
 कोक्किय-आहूत V. 17. 15  
 कोच्छर-दक्ष IV. 18. 1  
 कोट्ट-प्राकारभित्ति (cf कोट M) XXIV. 9. 11  
 कोडु-कौतुक XIII. 6. 1  
 कौड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 खरियालइ-कदर्थयति XXXII 23 1  
 खुत्त-क्षिप्त, प्रहृत XXXI. 23. 6  
 खुप्पइ-क्षिप्यते XXXV. 9. 9  
 खुप्पंत-निक्षिपन् XIV. 7. 10  
 खुरप्प-क्षुरप्र (cf. खुरपे M) XI 1. 9  
 खेउं-आलिङ्गन XXIX. 19. 2  
 खेव-आलिङ्गन XIII. 8. 7  
 खेड-वसतिविशेष V. 21. 3  
 खेरि-वैर VIII. 1. 11  
 खोल्ल-गम्भीर (cf. सोल M) II. 13. 9  
 गणियारी-हस्तिनी XVI. 23. 5  
 गलत्थिय-कदर्थित XXXI. 27. 9  
 गलमोडी-गलवक्रत्व XXXIII. 4. 11  
 गलहत्थण-ग्रसन VIII. 5. 7

गंजोल्लिय-रोमाश्रित XIV. 12. 12  
 गाउय-गव्यूति X. 14. 10  
 गिल्ल-आर्द्र XXIX. 5. 3; ग्रस्त  
 XXXII. 13. 9  
 गीढ-युक्त IV. 16. 3  
 गोस-प्रभात I. 16. 10  
 गौछ-गुच्छ (cf. घोंस M) I 3. 7  
 गौदल-संग्राम (cf. गोंधळ M) XI 16 9  
 गौदलिय-मिलित I. 3. 7  
 घणघण-सातिशय III. 1. 6  
 घत्थ-ग्रस्त IX. 7. 3  
 घल्लइ-क्षिपति (cf. घालणे M) III. 16. 10  
 घल्लिय-क्षिप्त VII. 5. 12  
 घंघल-आपद् XXXII 7. 2  
 चक्खइ-सादति, आस्वादयति (cf. चासणे M)  
 II. 19. 4  
 चट्ट-शिष्य I. 16. 1  
 चडइ-आरोहति (cf. चढणे M) II. 16. 1  
 चडाविय-आरोपित XXX. 12. 9  
 चप्पिचि-हटात्, दृढम् VII. 13. 12  
 चप्पल-बहुप्रलापिन्, निष्फल III. 14. 24  
 चवइ-जल्पति VIII. 7. 3  
 चंग-उत्तम (cf चाग, चागले M) IX. 4. 14  
 चंगअ-उत्तम VI. 2. 12  
 चंचेल-वक्र XXIII 4. 13  
 चंदकव-मयूर XIII. 7. 10  
 चाउरि-शय्या (गादीति देशी T.) VI. 1. 6.  
 चिक्खल्ल, चिक्खिल्ल-कदम II. 13. 9  
 चिच्चि-आग्नि X. 11, 11  
 चिडउल्ल-चटक IX. 8. 14  
 चिडुइ-आर्द्राभवति (cf चिडणे M)  
 II. 20. 11  
 चिम्मक्कइ-चमत्कृतिं करोति XVI. 2. 3  
 चिम्मक्कइ-भ्रमति XXIX. 15. 3  
 चिलिच्चिल-बीभत्स (cf चिडवीड M)  
 XX. 10. 11

चुक्कइ-भ्रश्याति IV. 8. 5  
 चुणइ-भक्षयति XVI. 13. 2  
 चुणय-अरोचकव्याधि XVI. 3. 7  
 चुरलि-ज्वाला XXXII 16. 14  
 चुहुइ-लगति XVI. 7. 10  
 चेंचइय-अलंरुत III. 2. 4  
 चोज्ज-कौतुक, आश्चर्य ( cf चोज M )  
 VIII. 7. 23  
 चोवाण-याष्टि I. 16. 10  
 चौभल-त्रीभत्स, समूह ( cf चुंभळ, चुंभळ M )  
 XXVII. 27. 1.  
 छज्जइ-राजते, शोभते ( cf सजणें M )  
 I. 14. 3  
 छडउल्लअ-संमार्जन, जलादिनिक्षेप  
 ( cf सडा M ) XVI. 1. 12  
 छडयण-भ्रमर IX. 18. 4  
 छल्लि-त्वक् ( cf साल M ) XXXVII. 20. 10  
 छंडइ-परित्यजति ( cf सांडणें M )  
 VII. 19. 15  
 छाहि-छाया ( cf साहुली M ) XVII. 3. 12  
 छिवइ-स्पृशति ( cf सिवणें, शिवणें M )  
 IV. 5. 13  
 छिप्पइ-स्पृशति ( cf शिवणें M ) VI. 2. 13  
 छिक-छिक्का ( cf शिक M ) XXVI. 4. 2  
 छुडु-क्षिप्रम् II. 19. 1  
 छोडअ-छुटिका, झुटिका XXIV. 8. 1  
 छोह-शोभ, विक्षेप XVII. 1. 6; क्रोध  
 XXIX. 18. 8  
 जडिल-कुङ्कुम XXVIII. 1. 3  
 जंपाण-शिविका ( पालखीति देशी, T. ) VII. 1. 7  
 जांवाय-जामाता XXXIII. 4. 16  
 जूरण-खेदन VII. 6. 12  
 जूरिय-निर्भर्त्सित VII. 5. 5  
 जेंवइ-भुंके XVIII. 7. 11  
 जोइय-दृष्ट XVIII. 9. 4  
 जोक्खइ-तोलयति ( cf जोखणें M )  
 IV. 5. 5

जोक्खअ-तोलित XVIII. 9. 5  
 झडप्पइ-आक्रमाति ( cf झडप M ) XXX. 4. 9  
 झडप्पण-ताडन ( cf झडप M ) XXV. 4. 8  
 झडप्पिय-पतन VIII. 3. 9  
 झलक्क-पूर्णाञ्जलि ( cf चुळुक M ) XVII.  
 13. 6; औण्य XXXIV. 2. 11  
 झलझलिय-ध्वन्यनुकरणे शब्द ( cf झुळझुळ  
 वाहणें M ) XII. 2. 13  
 झलुक्खिअ-संतापित ( cf झळ M )  
 XXIX. 23. 11  
 झंपइ-आच्छादयति ( cf झांपणें, झांकणें M )  
 I. 11. 4  
 झंपड-नेत्रयोरधोन्मीलन ( cf झांपड M )  
 XII. 12. 5  
 झंपिअ-आच्छादित XXVI. 14. 9  
 झुल्लइ-कम्पते ( cf झुलणें M ) XIV. 5. 12  
 झुंबुक्क-स्तवक ( cf झुवका M ) IV. 9. 9  
 झेंडुअ-कन्दुक ( cf चेंडू M ) I. 16. 10  
 झेंडुलिया-पुंश्रली ( cf शिनळ M )  
 XV. 6. 15  
 टक्कर-शिलाशकल ( cf ठोकर M )  
 XXXI. 16. 4  
 टिट-पुंश्रली XXIX 18. 9.  
 टेंट-वृन्त ( cf देंट M ) XII. 9. 18  
 डर-भय ( cf डर M ) XXV. 8. 9  
 डंकिय-दष्ट XXX. 12. 8  
 डाल-शाखा ( cf डाहाळी, डाळी M ) I. 18. 2  
 डावि-मुद्रा, मुद्रिका XXXV. 5. 3  
 डुंग-समूह IX. 2. 27  
 डेवंत-धावन् XVII. 2. 8  
 डेंडुह-डुण्डुभ XVI. 20. 9  
 डोल्लइ-आन्दोलनं करोति ( cf डोलणें M )  
 IV. 18. 2; कम्पते xv. 18. 3  
 ढलइ-च्यवति ( cf ढळणें M ) XXXI. 19. 12  
 ढलहलिय-चालित XVII. 7. 5  
 ढलिय-सस्त VIII 9. 12

ढंकइ-आच्छादयति ( cf झांकणें M )

I. 13. 10

ढांकिय-आच्छादित XIII. 11. 1

ढांख-पुष्पपत्रफलरहिन वृक्ष XIX. 13. 5

ढांढर-राक्षस XXXI. 26. 6

ढालइ-चालयति ( cf ढालणें M ) XIV. 10. 7

ढिल्लीहूय-शिथिलीभूत ( cf ढिलें M )

XXXII 3. 5

णक्क-नक्र, जलचर XXXV. 12. 7

णग्गोर-कर्पूर XII. 10. 7

णाहल-शचर XV. 1. 9

णिक्खुत्तउं-निश्चितम् XI. 9. 7

णिक्खुब्भु-निरन्तरम् XX. 1. 7

णिच्छट्टइ-स्तलति IV. 15. 11

णिडुरिय-निष्कासित XXXV. 1. 14

णियइ-अवलोकयति V. 15. 9

णिययणी-वरत्रा, रज्जु XXV. 18. 12

णिरारिउ-अतिशयेन XIII 7. 13

णिरिक्क-चोर XXIX 17. 3

णिरु-अतिशयेन XIII. 11. 11

णिरोविय-अर्पित XXIX 20. 2

णिहेलण-गृह III. 1. 10

णिसाड-निशाचर, राक्षस XVI. 26. 8

णीवइ-विध्यापयति ( cf. निवणें M )

II. 19. 10

णेसर-सूर्य I. 1. 1

णेहीर-कुङ्कुम XXV. 9. 12

तक्कारि-साराथि XII. 13. 9

तरु-शीघ्रम् XXV. 19. 13

तलप्प-करप्रहार IV. 11. 7

तल्ल-धुद्रसरस् ( cf तळें M ) XXV. 2. 8

तंडअ-समूह ( cf तांडा M ) XVI. 22. 8

तारुअ-कर्णधार XXV. 9. 3

तिंगिच्छि-मकरन्द, पराग IX. 21. 14

तिडिक्क-स्फुलिङ्ग XXXVII. 21. 10

तिया-स्त्री I. 15. 4

तियाउस-भस्म XXXVII. 22. 9

तिंगिच्छ-मकरन्द, पराग V. 1. 10

तिंगिच्छ-मकरन्द, पराग XI. 5. 6

तृय-स्त्री IX. 22. 9

तुप्प-घृत ( cf. तूप M ) XXVI 1. 5

तुंदाहि-गण्डूपद् VII. 12. 7

तूह-तट XXIX. 8. 9

तौंड-मुत्त ( cf. तौंड M ) V. 3. 3

तौंतडिल्ल-मिश्र XXVIII. 1. 5

तौंद-उदर XX. 23. 3

थड-समूह XII. 3 19, स्तवक XIII. 6. 5

थत्ति-स्थान II. 15. 12

थद्ध-घन XII. 11. 1

थडु-धन XII. 11. 1

थरहरण-कम्पन VII. 9. 12

थव-स्तवक ( cf थवा M ) XII 9 19

थिप्पिर-गलनशील ( cf थिवकणें, ठिवकणें M )

VII. 12. 10

थेंभ-विन्दु ( cf थेंव M ) III. 14. 20

दडत्ति-ध्वन्यनुकरणे शब्द ( cf धाडकन् M )

IX 13. 2

दलवट्टइ-छिनत्ति, नश्याति XVI. 23. 6

दलवट्टिअ-त्तण्डित, नष्ट XV. 3. 5

दवक्कडी-अशनिपात VII. 14. 2

दवट्टि-शीघ्रम् XXIX. 6. 3

दह-हृद XXIX. 8. 3

दंडिखंड-शतजर्जरं जीर्णं सिवितं वल्लम्

XXII. 16. 22

दाढा-इंष्ट्र XVIII 1. 15

दविड-सर्पजातिविशेष ( cf दिवड M )

XXVIII. 9. 15

दुब्बोल्लिय-दुरूक VII. 5. 11

देहलिय-मर्यादा XIII. 10. 1

देंट-वृन्त ( cf देंठ M ) IV. 11. 11

दोर-सूत्र, रज्जु ( cf दोर M ) II. 16. 2

धण-धन्या ( स्त्री ) XX. 7. 3

धाह- आक्रोश, क्रन्दन (cf धाय) XIV. 8. 5  
 पइरिक्क-प्रचुर IX. 24. 12  
 पउलण-प्रज्वलन, पाक VII. 6. 12  
 पकल-समर्थ XIV. 7. 5  
 पच्छाउहुं-पश्चान्मुखम् XXXIII. 11. 3  
 पहुक्कइ-प्रसरति XXXII. 17. 2  
 पत्तल-सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातळ M)  
 XVII. 10. 1  
 परअ-प्रभात, परेद्युः (cf परवां M)  
 XXXII. 26. 8  
 परइ-प्रभाते XVI. 20. 12  
 परवाली-पर+चाला (परस्त्री) XI. 18. 3  
 परियंदइ-आन्दोलयति IV. 4. 13  
 परिहत्थें, परिहत्थें-वेगेन XIV. 1. 20  
 परोहड-पश्चाद्द्वार (cf परडा, परडूं M)  
 XXIX. 14. 9  
 पल्लट्टिअ-परिवर्तित XXXIII. 6. 13  
 पसंडि-सुवर्ण IX. 7. 1  
 पहल्ल-पुष्प (?), प्रभूत XXV. 8. 5  
 पंगुत्त-प्रावरण (cf पाघरूण M) I. 14. 4  
 पंगुरइ-पटेन आच्छादयति (cf पाघुरणें M)  
 IV. 15. 14  
 पंगुरण-प्रावरण VII. 23. 9  
 पाडिहेर-प्रातिहार्य I. 18. 9  
 पाण-चाण्डाल XXXI. 17. 5  
 पालिद्धय-वंशवेष्टितपताका XII. 9. 4  
 पासुय-शुद्ध, प्रासुक IX. 7. 4  
 पासुलिया-पार्श्वस्थिसंघात VII. 12. 4  
 पासेय-प्रस्वेद VII. 24. 10  
 पाहुण-अतिथि (cf पाहुणा M)  
 XXIV. 10. 7  
 पिच्चइ-पक्वं भवति VII. 14. 2  
 पीलु-हस्तिशावक XXIX. 8. 1  
 पुण्णालि-पुंश्रली XVIII. 1. 7  
 पुल्लि-व्याघ्र XXV. 16. 4  
 पेल्लावेल्लि-संभ्रम IX. 18. 16

पोल्लिय-पेरित I. 12. 5  
 पोट्ट-उदर (cf पोट M) IX. 8. 15  
 पोडुल-ग्रन्थि (cf पोटळी M) XX. 10. 12  
 पोत्ति-स्नानशाटी IX. 4. 13  
 पोप्फली-पूगीफलवृक्ष (cf पोफळी)  
 XXII. 7. 13  
 फिट्टइ-नश्यति (cf फिट्ठें M) VIII. 4. 36  
 फुल्लंधुय-भ्रमर IX. 11. 9  
 फुल्लुद्धुय-भ्रमर IX. 11. 9  
 वइसइ-उपविशाति IV. 1. 11  
 वप्प-पुत्र इति संबोधने IV. 8. 7  
 वप्पीह-चातक XII. 7. 2  
 वप्पीहय-चातक II. 13. 13  
 वाहिरि-बहिस् XVI. 3. 3  
 वुक्करइ-शब्दं करोति (cf मुंकरणें M)  
 VII. 25. 5  
 वुक्कार-भूत्कार XV. 19. 8  
 बुडुइ-मज्जति XXXIII. 11. 11  
 बुंध-मूल VIII. 7. 10  
 बोल-ध्वनिविशेष XVII. 3. 4  
 बोल्लइ-जल्पति VIII. 5. 17  
 बोल्लाविअ-भाषित IV. 4. 9  
 वोहित्थ-नौः XVII. 4. 4  
 भउंहा-भुकुटि XXII. 8. 2.  
 भम्म-सुवर्ण IV. 10. 1  
 भल्ल-भद्र (cf. भला M) IV. 5. 7.  
 भल्लारअ-शुभ, उत्तम VII. 17. 11  
 भसल-भ्रमर IX. 28. 2  
 भंडइ-कलहं करोति XXXV. 8. 7  
 भिडिअ-संमुखं गत (cf. भिडणें M)  
 XVII. 1. 1  
 भुकुइ-भपति (cf. मुंकरणें M) I. 8. 7.  
 भेल-अतिवृद्ध XXIX. 25. 12  
 भोल-मूढ (cf. भोळा M) II. 20. 7  
 मडप्पर-गर्व XV. 15. 11  
 मडह-सुन्दर XII. 12. 3

- मडहा-तन्वी, लध्वी XVI. 26. 2  
मडंब-वसतिविशेष v. 21. 4  
मडु-नालिकेरवन ( cf. माड M ) XIII. 2. 3;  
बलात्कार XIII. 2. 3  
मद्-बलात्काररण IX. 14. 10  
मळभीसिया-मा भैषीः इति उक्ता, आश्वासिता,  
XXXII. 26. 3  
मयासि-( अमृताशी ) देव XIV. 1. 4  
मरद्द-दर्प, गर्व, XVI. 16. 8  
मल्हण-मद्युक्त XXIX. 25. 5  
मंट-निरुच्यम ( cf. मट्ट M ) IX. 8. 11  
मंठ-निम्नोन्नत XII. 5. 25.  
मंडल-श्वा v. 15. 12  
मंदीरय-रविकानिरोधकलोहवलय XII. 11. 3  
मायण्हिय-मृगतृष्णिका xx. 20. 7  
माहुंडल-सर्पविशेष XVI. 9. 12  
मुसुमूरइ-द्रवति III. 3. 3  
मुसुमूरण-पिण्डीकरण VII. 6. 12  
मुंडिय-मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वय  
xv. 2. 5  
मूरविअ-तापित, कथित XII. 11. 10  
मेरा-मर्यादा VIII. 1. 13  
मेलअ-समूह ( cf. मेळा M ) XXXIII. 3. 8  
मेलावक्क-संगम XXXII. 24. 4  
मेंढअ-मेष ( cf. मेंढा M ) XVI. 9. 10  
मोक्कल्लिय-मुक्त XIII. 5 10; मोचित  
XXXI. 29. 8  
मोड्डिय-भ्रम VIII. 12. 5  
रडि-आक्रन्दन xv; 20. 4  
रवणण-रम्य II 2. 3  
रहट्ट-अरघट्ट ( cf. रहाट्ट M ) XXVII. 1. 4  
रहल्लि-तरङ्ग, वीची ( cf. लहर M )  
IV. 15. 12  
रहिअ-आच्छादित xv. 12. 4  
रंखोलिर-विलसनशील III. 2. 1  
रंगइ-जानुभ्यां चलति ( cf. रांगणें M )  
IV. 1. 11  
रंजण-मृदाजनविशेष ( cf. रांजण M )  
v. 19. 11  
रंडिय-विधवीरुत XVII. 9. 10  
रिंछ-शुक I. 14. 4  
रुंटइ-शब्दं करोति v. 1. 10  
रुणुरुंटइ-गुञ्जाति VI. 1. 14  
रुंद-विस्तीर्ण ( cf. रुंद M ) III. 7. 10  
रुंदिम-विस्तार XI. 4. 5  
रेल्ल-चालन ( cf. रेल्लें M ) XIV. 10. 1  
रेह-शोभा XI. 23. 4  
रेहइ-राजते, शोभते II. 2. 12  
रोयर-रुचिकर XVII. 12. 7  
रोल-कोलाहल XIV. 5. 9  
लइ-अतीव ( वाक्यालंकारे ) ( cf. लइ M )  
v 16. 14  
ललाविय-प्रसारित XVII. 1. 1  
लल्ल-अस्फुटवाक् IX. 8. 11  
लल्लक्क-रौद्र ( cf. ललत्कार M ) XIV. 7. 5  
लंजिया-गृहदाती XXXI 21. 1  
लाणिं- मर्यादा, अन्त IV. 5. 14  
लीह-रेखा XII. 6. 7  
लुक्क-निर्लीन IX. 14. 12  
लहसइ-पतति, संसते II. 8. 13  
वडुत्तिविडि-वट्ट+उत्तिविडी ( cf. उतरंड M )  
XXXII. 20. 5  
वडु-महत् I. 12. 6  
वडुल-शञ्ज्ञावात ( cf. वादळ M ) VII. 16 8  
वमाल-कोलाहलशब्द I. 11. 7  
वव्वीह-चातक II. 13. 13  
वावल्ल-सेल्ल, कुन्त, सर्वलोहमयायुधविशेष  
VII. 5. 11  
वाहियालि-अश्ववाहनमार्ग I. 14. 8  
विट्टल-अपवित्र, अस्पृश्यसंसृष्ट ( cf. विटाळ M )  
VII. 12. 8  
विडप्प-राहु ( विदर्प ? ) XII. 6. 3  
विडुम-भय XVIII. 13. 1

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

विदत्त-अर्जित XVI. 3. 4  
 विराल-बिडाल, मार्जार XXX. 4. 10  
 विरिक्क-विभक्त VIII. 13. 23  
 विरोल्लिय-कदर्थित XXXI. 23. 7  
 विलया-वनिता V. 4. 13  
 विसंभर-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 12  
 विसूरइ-सिद्यते XIV. 5. 10  
 विहलंघल-विह्वलाङ्ग XXVIII. 19. 8  
 वुण्ण-संकुपित XVII. 15. 12  
 वेच्छिल्ल-कोरण्टवृक्ष XXV. 5. 9  
 वेल्लहल-कोमल III. 1. 11  
 वेहाविय-वञ्चित ( द्वैधीकृत ? ) XVIII. 2. 2  
 वैमल-विह्वल XXVIII. 27. 1  
 वोद्रही-तरुणी XXXIII. 1. 10  
 वोल्इ-अतिक्रामति IX. 19. 14  
 वोलाविय-न्यक्त XV. 6. 4; अतिक्रामित,  
 निष्कासित, XVIII. 2. 2.  
 वोलीण-अतिक्रान्त II. 9. 1  
 वोक्क-यरुत् ( फलिजा T. ) XI. 24. 12  
 सइत्त-सचेतन XXX. 1. 12  
 समलहिय-अभिलिप्त VI. 1. 9  
 सल-शवशयन, चिता, XXIII. 8. 6  
 सलसलइ-सलसलध्वनिं करोति ( cf. सळ-  
 सळणें M. ) IV. 11. 10  
 सवडंमुह-संमुख II. 2. 12  
 सवलहण-समालम्भन ( विलेपन ) III. 4. 7  
 सव्वल-सर्वलोहमयी घाणी, तिलपीडनायुध  
 XI. 16. 9  
 सहइ-शोभते III. 12. 16.

संगहण-पुंश्वलयुगल, जारजारिणीयुगल  
 XXXV. 10. 1  
 संच-शरीरबन्ध VIII. 9. 12; समूह  
 XVII. 5. 2  
 साइउं-आलिङ्गन V. 15. 9  
 साड-विध्वंसक XIV. 5. 14  
 साडी-शाटी, वस्त्र XII. 5. 3.  
 सारी-उत्तमा III. 6. 1  
 सिणिसिव-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 13  
 सिप्पि-शुक्ति ( cf. शिंप M ) IV. 6. 11  
 सिप्पीर-पलाल VII. 19. 4  
 सिलिंधय-बाल XXXIII. 6. 6  
 सिलिंब-शिशु II. 13. 9  
 सिहिण-स्तन II. 16. 2  
 सीसक्क-तुष XIX. 2. 2  
 सुढिअ-दुःखित III. 17. 2  
 सेल्ल-प्राप्त VII. 5. 11  
 सेहीर-सिंह XXV. 3. 5  
 सेंभ-श्लेष्मा XX. 14. 10  
 सोण्णार-स्वर्णकार ( cf सोनार M )  
 XXXI. 7. 2  
 हट्ट-पण्यवीथिका ( cf हाट M ) I. 16. 1  
 होडि-शृङ्खला VII. 13. 8  
 हल्लइ-कम्पते ( cf हलणें M ) XIV. 5. 12  
 हल्लिय-कम्पित I. 12. 5; वलित XV. 15. 5  
 हुर-दुःख XI. 11. 4  
 हुंड-विकलेन्द्रिय XI. 1. 11  
 हल्लिय-प्राप्त VII. 5. 10.  
 हवाइद्ध-कुपित XXXII. 20. 4  
 होहल्लर-जो जो शब्द IV 4. 14

ST. LOUIS

## ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kaṭavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्भय° उद्भत°	उद्भय° उद्भृत
१५	१६	८	णं	ण
२४	७	६	भ वहि	भावाहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जंतजणेण	जंत जणेण
३९	४	११	सई	सइ
४६	१२	५	जोणयहं	जोयणहं
५२	१९	१	णंव	णवं
७७	७	१०	बुद्धदारेण	बुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुरसु सपससहु	पुरिसु सपसंसहु
१०६	१०	१०	मरंत	मरंत
१२४	३	७	एत्थु	एत्थु
१४८	१०	८	शंकाराह	शंकारहि
१६५	१	५	तुहं	तुहं
१६८	४	६	रूढएहिं	रूढएहिं
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्भुव	अद्भुव
१८९	१५	१	बइसइ	बइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय संघहु	अज्जियसंघहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१५	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कंदासिहि	कंदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	हंभ	तुंभ
३०९	६(n)	९(n)	बाहं	बाहं
३२१	८(v.l.)	१०(v.l.)	MP	MP
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वावहि	वाविहि
३७९	१	७	पंडिय भवणहु	पंडिय भवणहु
३८०	३	१	वदिय	वंदिय
३९८	१२	८	मुणिविणयं°	मुणि विणयं°



# MAHĀPURĀNA

Page	Kāvaka	Line	For	Read
४००	१५	४	सिरिसुय	सिरि सुय
४००	१५	१०	वइइदेसि	वइदेसि
४१७	१४	५	उवलोहुवि	उवलोहु वि
४२९	१२	७	दिय कविल	दियकविल
४६३	८	३	धप्पाणउं	अप्पाणउं
४६६	१३	१४	सुयमण	सुय मण
४६७	१४	७	सक्सि	सक्सि
४७१	२१	४	अट्टक्षणें	अट्टक्षणें
४७३	२४	४	जा	जो
५०२	१७	१३	कणाणिय	केणाणियं
५०६	२२	१०	जेसणइ	जणेसइ
५०७	२४	६	पडिवाणि णाय	पडिवणिणाय
५३३	५	१०	वत्थअियत्थ	वत्थणियत्थ
५३६	९	५	सा	सो
५५२	८	५	हाति	हैंति
५५७	१६	३	जिणुगय	जिणु गय
५७४	१	४	णिसवइ	णिवसइ
५८४	१५	७	उचविह	चउविह
५८४	१६	२	हेऊउ	हेऊ उ
५८४	१६	३	संसारसरीरइं	संसार सरीरइं

